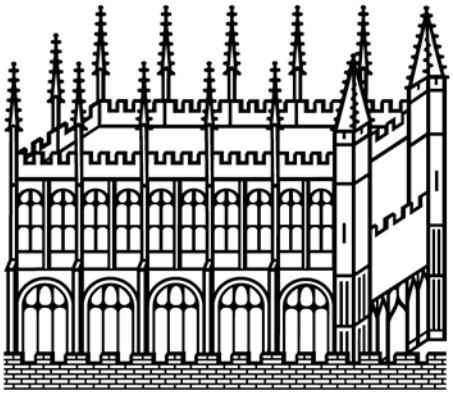

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi
Giridh 3

13.2.3.

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.



Garga-saṃhitā.

गर्ग संहिता भाषा

श्री कवि कुल शिरोमणि पण्डित गिरिधर दास

रचित

जिस में

श्री विष्णु उपासकों की प्रीति के लिये गोलोक खण्ड, वृन्दावन खण्ड, गिरिवर खण्ड, माधुरी खण्ड, मथुरा खण्ड, द्वारावती खण्ड, विश्वजित खण्ड, हलधर खण्ड, विज्ञान खण्ड, नव अंशों में श्री नरहरि हरिरूप परब्रह्म परमेश्वर सच्चिदानन्द घनश्याम स्वरूप श्री कृष्णचन्द्र आनन्द कन्द जी महाराज का श्री गर्गाचार्य्य मुख निर्मित संस्कृत गर्ग संहिता और अनेक प्रमाणिक उत्तमोत्तम ग्रंथों की कथाओं का मूल सारांश लीला विलास दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित्व आदि सुगम छन्दों में वर्णित है

वही पहली बार

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवल किशोर के छापेखाने में छापी गई॥

दिसम्बर सन् १८[illegible] ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् दिसम्बर सन् १८८० ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैय्यार हैं वह इस फेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोलभी बहुत किफ़ायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये औरभी सस्ती होगी जिनको व्योपार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
संस्कृत की पुस्तकें	तथा स्तोत्र	विष्णुहारीतस्मृति	लघुजातक	आपद्धर्म, मोक्षधर्म्म,	८ कर्ण पर्व
लघुकोमुदी	मथुरा सभा	महिम्न स्तोत्र	षट्पंचाशिका	४ हिस्सामें, शान्तिपर्व	९ शल्यपर्व, गदा
सिद्धान्तचंद्रिका	**ज्योतिष**	**संस्कृत भा-टी-स-**	सामुद्रिक	दानधर्म्म, आश्वमेधि,	व सौप्तिक पर्व, मय
अमरकोश तीनोंकाण्डस	मूहूर्त्त गणपति	**भाषा (इतिहास)**		आश्रम वासक पर्व,	योशिक व विशोक
पंचमहा यज्ञ	मूहूर्त्त चक्रदीपिका	अमरकोष	महाभारत	व मोसल पर्व व महाप्र	व स्त्री पर्व,
निर्णय सिन्धु	मूहूर्त्तचिंतामणिसटीक	याज्ञवल्क्य स्मृति	१ हिस्सामें आदि पर्व,	स्थान पर्व स्वर्गारोहण	१० शन्ति पर्व राजध-
संग्रहशिरोमणि	मूहूर्त्त मार्त्तंड सटीक	सन्ध्यापद्धति	सभा पर्व, बन पर्व,	पर्व हरिवंश पर्व,	र्म्म व आपद्धर्म्म व
भगवद्गीता सटीक	मूहूर्त्त दीपक	व्रतार्क	२ हिस्सामें बिराट पर्व,	महाभारत पर्व पर्व	मोक्षधर्म्म दानधर्म्म
दुर्गा पाठ सटीक	हरिवल्लभ सटीक	भगवद्गीताटी-हर बंश	उद्योग पर्व, भीष्म पर्व,	अलग २ भी हैं	११ अश्वमेध-आश्रम
श्रीमद् भागवत	जातकालंकार सटीक	भगवद्गीताटी-आनंदगि	द्रोण पर्व,	१ आदि पर्व	वासक-मुशल पर्व
भविष्योत्तर पुराण	जातका भरण	गीतगोविंद	३ हिस्सामें कर्ण पर्व,	२ सभापर्व	महा प्रस्थान स्वर्गारोहन
अपराध भंजन स्तोत्र	होरा मकरंद	कथा सत्यनारायण	शल्य पर्व, गदा पर्व,	३ बन पर्व	१२ हरिवंश पर्व,
दुर्गा स्तोत्र		परमार्थ सार	सौप्तिक पर्व योषिक पर्व	४ बिराट पर्व	रामायण राम विलास
व्यवस्थ कुल भास्कर	**संस्कृत उर्दू टीकास-**	शार्ङ्गधर संहिता	विशोक पर्व, स्त्रीपर्व,	५ उद्योग पर्व	रामायण तुलसीकृत
कायस्थ धर्म्म निर्णय	मनुस्मृति	धाराधरी सटीक	शान्तिपर्व में, राजधर्म्म,	६ भीष्मपर्व	रामायण सटीक मयमा-
		श्रीमबोध सटीक		७ द्रोण पर्व	नसदीपिका कोष आदि

श्रीगरोशायनमः श्री गोपीजन वल्लभायनमः ॥ सोरठा ॥ कंज सरिस अभिराम पद ललाम घन श्याम के ॥ हृदय करहु विश्राम देन हार सब काम के ॥ मम मन मनहुं मिलिंद रहत पास तव चरन के ॥ करहु कृपा गोविंद राधा रवन कृपायतन ॥ वल्लभ वल्लभ होहु मेरे कछु करिकै कृपा ॥ प्रगट करहु निज छोहु जानि दास निज आपनो ॥ विह्वल परम पवित्र देहु दया करि दुरित हर ॥ ज्ञान प्रेम द्वौ नित्र होइ सामरथ लखन की ॥ दोहा ॥ वन्दि प्रथम गन नायकहि गिरा चरन सिर नाय ॥ गर्गहि वन्दि अनन्दि उर चहत कहन हरषाइ व्यास नाम भगवान मुनि सब विधान गुन वान ॥ तिन्ह कहु विनय विनय विनय भाषत सहित प्रमान ॥ चौपाई ॥ गर्ग संहिता यह कहि भारी धरे जहां नवखराड सुधारी जा कहं गावत द्रवहि मुरारी सब विधान सबके हितकारी चहत करन तेहि मति अनुसारी पावन करन चरित भय हारी करहु कृपा खग पति ध्वज धारी जामें होइ कथा यह सारी रचे छन्द काहों विसारी जानहु ताहि याहि हितकारी दोहा अरु सोरठा सुधारी गुरु तोमर चौपाई प्यारी तोमर तोटक की छवि न्यारी अमृत ध्वनि छप्पै विचारी छन्द और मंगल वर भारी अरु कवित्त अक्षरन सुधारी ॥ दोहा ॥ और सवैया जानिये कुराडलिया कहि नाम छन्द त्रिभंगी वसु काला अहि प्रयात अभिराम ॥ १ ॥ आगे कथा यथा मति भाखौं सब विधान अमृत फल चाखौं एक समय श्री गर्ग मुनीसा नैमिष वन आए वरदीसा लखि शौनक उठि शिष्य समेता जोरि हाथ यह पूछो हेता कहहु नाथ मोहि

आतम ज्ञाना जामें संशय रहइन आना सो मुनि कहेउ गर्ग वरबानी सुनहु साधु तुम कथा पुरानी इक इतिहास
कहत हौं भारी जाकें सुनेन अघ अधिकारी मिथिला पुरवर परम विशाला तहं बहुलाश्वरहो भूपाला इक
दिन लखि नारद कह आवत सीस नाइ मे गाथा गावत ॥ दोहा ॥ कहिय कृपा करि मोहि प्रभु हरिके जे अवतार
केहि हित कितने भूमि भे कितने अंश विचार ॥ २ ॥ नारद कहे सुनहु हरि सोई रूप अनेक धरे जग जोई सो
सुनि भूप कहै यह बानी संशय एक अहै अति ज्ञानी निर्गुन जो सोकिहि हित गुन लै भये भूमि अति आनंद
मन लै नारद कहत भए वर बानी निज इच्छा प्रगटत हरि आनी करिकै काज जात पुनि सोई सब महं स:
वते न्यारो जोई कहत प्रकार कई हैं यामें परि पूरन के गुन चरचा में अंस कला अंशांश विचारो पूरन अ
रु आवेस निहारो परि पूरन तम जानहु सोई कहत भेद हम यामहं जोई ॥ दोहा ॥ कपिल बाच्छ पादिका
कला भार्गवादि आवेश मरीच्यादि अंशांश हैं अंस कहिय विधि भेष ॥ ३ ॥ श्री नरसिंह राम मख स्वामी
नर नारायण खगपति गामी स्वेत दीप बैकुण्ठ निवासी रु पूरण रवि सरिस प्रकासी परि पूरण तम सब
सुजाना श्री गोलोक कृष्ण भगवाना कोटिन ब्रह्म अण्डको नायक जानहु तुम नरनायक लायक धरि
नरदेह उहां पर आए कोटिन काज किये छवि छाये अव्यय अहो कृष्ण अविनाशी नमो निरंतर घट घट
वासी वरुनाकर गुरु आनंद राशी साधु हृदय विज्ञान प्रकाशी सुनि महीप मन मुदित महाना वन्दि विप्र

पद बचन बखाना ॥ दोहा ॥ परि पूरण तम जानिये कैसे केवल कृष्ण यह प्रभु मोहि बखानिये जानिदास कृत प्रष्ण ॥ ४ ॥ सुनि विरंचि सुत अति हरषाए कहत सुनहु जो चहत सुहाए भवको भार नसावन काजा प्रगटे प्रभु यादव सिरताजा पूरन अंश कला विकला है आवेशादि भाव सकला है जामे सकल लीन ह्वै रहहीं तेहि पटुपरि पूरन तम कहहीं एक अण्ड के जे सिरताजा ते पूरन कहवावहिं राजा सकल अण्ड अवनी के मण्डन करहु कृष्ण रवितम भ्रम खंडन प्रेम विवस कह नृप अकुलाई मोहिंसों कब मिलिहैं मुनिराई मुदित भये मुनि बुद्धि विसारद ॥ कहत महत वचनहि गुनि नारद ॥ दोहा ॥ तवहित द्विजहित देवहित ऐहैं कृपा निधान धीरज धरहु धराधि पति दीनबंधु भगवान ॥ ५ ॥ जीभ पाइ हरि भजन न करई चलत मुक्ति पथ अघखल परई सुनहु कृष्ण को चरित नवीनों कोल कलप महं जो कछु कीनों जब भो भार भूमि पर भारी तब सों कंपित गो तनुधारी रोवत अरु भाषत दुष गाथा वेदमाथ पद नाएउ माथा त्र्यंबक पास गए चलि धाता सो वैकुंठ गये हरषाता वंदि चरन भाष्यौ इतिहासा सुनि बोले हसि रमा निवासा यह हमते न सधै गो काजा चलहु कृष्ण पहं सुमन समाजा सो अखंड अंडन के मंडन सत चित सद स्वरूप खल खंडन ॥ दोहा ॥ सुनि सुर सब बोले चक्रित तुम्ह तें पर प्रभु कौन हम न सुना कबहूं श्रवन दरसावहु श्री रौन ॥ ६ ॥ सुरह्न सहित तब विष्णु सिधाए वामन चरन छिद्र ढिग आए सोई सरल सडक सुर सगरे कढ़ि हिरन्य तें बाहुर अगरे ब्रह्म ।

द्रवत तहँवर दरसायो निरखि उपद्रव दूरि परायो तामहलखे अनेकन अंडा अमरन कोगो सकल घमंडा ब्रह्मद्रव मह
लुढकहिं कैसे गिरिके सिखर विल्वफल जैसे तहतेवढि अवलोकेउ विरजा विरजा गिरिजाश्री हरि सिरिजा तहं
सोपान सोहावन सोहैं जोसोभा लखिसूरज मोहैं तहांतेज अतिही दरसाना चंडकोटि मार्त्तंड समाना ॥ दोहा ॥ लोच
नसूंदे सवन के तवहरि आज्ञापाय अस्तुति अर्पि अनेकविधि चलेदेव समुदाय ॥ ७ ॥ आगेजाइ अनंतहि देषा ध
वल वरन अति उन्नत वेषा सहस वदन प्रताप वल ओका जासु उछंग लसत गोलोका वंदिशेष कहं कीन्ह प्रवे
सा माया करन लेश नहिंदेसा द्वारद्वार पालक दरसाए वेणुवेत्र धरश्याम सुहाए रोक्यौ सुरन पार षद जवहीं तेसव
कहत भएइमि तवहीं हरिहर विधि आदिक सवदेवा आये करन कृष्णपद सेवा तव मंदिर महं खवरि जनाई
तहंते एकसखी चलिआई सतशशि वदनी ताकर नामा कह्यौ सवनसन वचन ललामा ॥ दोहा ॥ कौन अंड के अह
हुसुर भाषहु अपनो नाम तवकरिहौं मैं वीनिती भई मौन कहिवाम ॥ ८ ॥ सुनिसुर चकृत कहत भे वानी हमतौ ए
कअंड जियजानी नहिदूजे की कछु पहिचाना गूलर फलके जंतु समाना सुनिअति हँसतभई सोबाला कहत म
हत मति वचन रसाला ब्रह्मद्रव महं कोटिन अंडा कोटिन महं कोटिन सुरझुंडा जानैकौन कहांते आए पूछत
तऊन नामवताए निजघरकर नहिंजानि ठिकाना लखहु सुरह्न की वुद्धि महाना हंसी करत लखिहरि यह कहेऊ
जहांविष्णु वामन वपुगहेऊ पगते विवर अंड विस्तारे तहंके अहहिं अमर ए सारे ॥ दोहा ॥ सुनित्रिय भाषेउ कृष्ण

तें तिह्नकी आज्ञापाइ पुरमहु करहु प्रवेस निज कहेउ देवतन जाइ ॥ सोरठा ॥ चले लखत वरगैल मुदित मगनमन देवगन श्री गोवर्द्धनशैल देख्यौ वनअति पुन्यप्रद ॥ ९ ॥ छन्द ॥ वनपुन्यप्रद देवन लख्यौ गोपीविहारहि सुंदरी ॥ जहं रासमंडल परमजमुना वरनदी सुषमाभरी वृंदाविपिनि सुंदर सुवृंदा कल्पतरु छतनारहै पुनिपरम वंसीवट विराजत चारुगुन विस्तारहै ॥१॥ सुख पुंज करत निकुंज कुंजन माहिगुंजत षटपदा अतिमत्त पत्तन वैठि लत्तन ललकि धावहिं भरिमुदा कोकिल करहि किलशब्द कलअरु मोरसोर मचावहीं सरिनीर तीर समीर सुंदर कीर भीर दिखावहीं ॥२॥ दोहा ॥ वहुरि देवदेखत भये सुरभीके समुदाई विविधि वरन नूपुर चरन सोभा कहीनजाइ ॥ १०॥ अमृतध्वः ॥ सस्सस्स स्सोहैं सुभग वव्वव् वच्छ अनेक पप्पप्पप्प यपान करि छच्छ च्छट काहिनेक दद्द द्दवरि पलट्टहिं गग्गग्गोढिगसारे घग्घग्घुघुरु लटकि कंठ रूरू रूनकारे थथ्थथ्थथ्थन पिवहि वहुरि ठठ्ठठ्ठ मकै डड्डड्डगरें डगन डगर विचचच्चच्चमकैं ॥१॥ गग्गग्गल अनेकरंग कक्कक्कर मैं वेनु वव्वव्वव्वव् व्योमलौं छच्छ च्छाईरेनु सस्सस्सिरपर मोरपंख द्दद्द्दरसाई कक्कक्कंमल कंध सुभग सस्सस्सरसाई गग्गरगुंजा गरेधरे डड्डड्डोलैं तत्ततान सुजान कृष्ण वव्वव्वव्वोलैं ॥२॥ दो॰ श्याम पीत सित रक्त अरु अमित रंगकी गाई तिह्नके मधि सोहैं वृषभ सीसशृंग सरसाइ ॥ ११ ॥ संगसुभग डोलहिं गोपाला श्यामसरूप अनूप रसाला गावत सरस तान जस हरिकै डोलहिं उरअति आंनद करिकै देखेउ भवनमाहिं पुनिजाई पद्मसहस दल इक अधिकाई ॥

तामधि खोड़स वसुदल पुनिहै सिंहासन ऊपर छवि गुनिहै कौस्तुभ रचित तीनसोपाना तहंहरि सह राधिका
महाना मोहिनि आदि आठवर वामा वसुगुपाल कहि आदि सिदामा कोटिन छत्र चमर मुरछ लहै व्यजनव-
ज्र डाडीसह भलहै एहिविधि लख्यौ राधिका स्वामिहि गरुडध्वज गुनज्ञ गजगामिहि ॥ दोहा ॥ राधाके कां
धा धरे हाथ विश्वके नाथ वंशीकर वर परम अति प्रानपियाकेसाथ ॥ १२ ॥ जहं कंदर्प दर्पविनु होई पीतांबर कटि
तटपर सोई वनमाला छविचारु विशाला उरश्रीवत्स सुलक्षन माला कटिकरधनी घनी छवि होती मनी बनी विच-
विच वरजोती एहिविधि विश्वनाथ एसारे कृष्णहि तहं सानंद निहारे अति आनंद हृदय महंभीनो लोचनमहं
जलभरे नवीनो प्रमुदित सबन दंडवत कीनो मानहु मन माधव हरिलीनो सोसुनि कहेउ जनक यहवानी कृ-
ष्णहि देखि देव सज्ञानी कीह्न कहा कहिये मनखोले जनक वचन सुनिकै ऋषि बोले ॥ दोहा ॥ लषत सवन वैकुंठ
पति उठि भुज आठप्रवीन अवतारी श्रीकृष्ण महं होतभये दुतिलीन ॥ १३ ॥ पुनिनृसिंह अति विक्रम वारे कोटि सूर्य्यस-
मतेजहि धारे तुरतहि लीनभये हरिमाहीं नदीसिंधुमहं जथा समाहीं श्वेतदीप पतिपुनि चलिआए सहस भुजा
आयुध सरसाये लाख अश्वके रथपर चढ़िकै त्रियपार्षदन सहित गुनमढ़िकै भूमाभूमिकेरजोगाये सोऊ कृष्ण
के माहि समाये तवरघुनाथ साथ लियलीने लीनभये सोभारंग भीने धनुधरकंज सरिस चरववारे कोटिन कीशसा
थ निजधारे लक्षचक्र रथ तितनेइ घोरे छत्र चमर सिरढुरहिं अथोरे ॥ दोहा ॥ अर्बुद रविसम तेजधर उरआनंदन

वीन सोऊ भगवत तेज मैं भए तुरंतहि लीन ॥१४॥ यज्ञनाम हरितव चलि आए कोटि अर्क समतेज सुहाए संगद-
क्षिना नारि सुहाई कृष्णमाहिं द्रुतगए समाई तव नरनारायण चलि आये श्रुतिद्विज मुनि वपु घन द्युति छाये जटाजू-
ट रविकोटि समाना मुनिगन सेवित ज्ञाननिधाना सवके लखत समाये सोऊ अचरज करत भए सवकोऊ जानि
कृष्ण कहं सवके स्वामी अस्तुति देवकरहिं सिरनामी ॥छन्द॥ सिरनामि अस्तुति करत जय श्रीकृष्ण अव्यय श्री
पते मखनाथ राधानाथ गोपुरनाथ गोवर्द्धन धृते परिपूर्ण तमप्रभु परम परमा सहित मुनिमन मंडनं यंब्रह्म ब्रह्म
वदंति योगी तंनतोस्मि अखंडनं लक्षण तथावर वचनव्यंग उतंग वुधि ते जानना तुमरो अहै पति कठिन केशव सत्य
यहकरि मानना कोउ ब्रह्म अरु कोउ काल अरु कोउ सांख्य अरु कोउ कर्मको मानहि मुरारि मुकुंद माधव कोउ
जाप कोऊ धर्मको ॥२॥ तव चरन सेवा परम श्रेयस्करन विघ्न विनासिनी तव भक्ति ममउर रहो मांगत वारवार वि-
लासिनी सवभूत पति सव आत्मसाक्षी सर्वमय भगवान हो हमसरन तवगिरधरन जग अघ हरन वरगुन खानहो
॥३॥ जो राधिका उर परम सुंदर चंद्रहार समानहो जीवन सरिस व्रजगोपिका के गोपकुल के त्रानहो गोलोकपति
अभिराम पूरन कामहम तव सरनहैं घनश्याम आनंद धाम अवगुन हरन जिनके चरनहैं ॥४॥ वृंदा विपिन पति
अद्रि पति व्रज पति सुपूरन कामहो गोपाल वपुवृत्त नित्य चाउ विहार लीला धामहो राधापते परमायुते वंसीधर-
न छवि करनहो अरिदरन भवजलतरन आनंद भरन हमसव सरनहो ॥५॥ दोहा ॥ सो सुनिकै श्रीकृष्ण प्रभु दे-

बन दुखित निहारि मेघसरिस सुंदर गिरा बोले सुख निर्दारि ॥१५॥ तुमसब अंश अंश करि होहू यदुकुल मैं सरजू थपन्यो हौं मैं यदुकुल ह्वै भुवको भारा हरिहौं करिहौं सुखविस्तारा द्विज मुख देहगऊ मम अहई साधुहत्य तन सुरमुनि कहई ताते इनके रक्षन काजा हम अवतरब भूमिसुरराजा सोसुनिकै विछोह पतिजानी अति व्याकुल राधा बिलखानी मोहिजाहि करि बोली बानी तुम महिजात वारिसुत पानी मैंनहिं जीहौं सपथ तुम्हारी नाथ साथते तजहु न नारी पुनिपुनि सपथ सहित हमभाषा जानहु ज्ञानजान अभिलाषा ॥ दोहा इमिकहिकै व्याकुल भई गोलषि कृपानिधान धीर धरहु भाषत भए भवभावन भगवान ॥१६॥ तुमसह हम चलिहैं महिमाझीं करिहैं भलो सबन को ताहीं सोसुनि कहत भई यदुप्यारी जहंवृंदावन नाहि मुरारी गोवर्द्धन जमुना नाहिंजाहां ममममन तनक लगत नहिंताहां सुनि चौरासी कोस महीको गिरिजमुना मनवृंद सहीको पठयो भूमिमाहिं सुखकोले सबसुर सहित विधाता बोले हमअब आप और सुरसारे कहां होहिं कानामहिं धारे सोसुनि काह्यो कृष्ण वरबानी हमवसुदेव भवन महज्ञानी देवकि उदरदेव अवतारा अहिरोहिनी गर्भनिधारा ॥ दोहा ॥ लक्ष्मीह्वैहै रुक्मिनी शिवा भानु सुकुमारि अवनि सत्यभामा कही सत्या तुलसि विचारि ॥१७॥ लक्ष्मना सुदक्षिना विचारो विरिजा कालिंदी निरधारो भद्राहीह्वैहै सोजानो सुरसरिता मित्रविंदा मानो रुक्मिनि मैं अनंग अवतारा सोप्रद्युम्न नाम निरधारा तहंविधि होहु तनय तुम्हनाके नंदद्रोण वसुहोइहैं वाके धरा

यशोदा अरु वृषभानू होहिं सुचंद्र नाम मति मानू इस्त्रीतासु कलावति नामा सोमहि होइहि कीरति वामा तासु
सुता राधिका सयानी जानहु इहि प्रकार तुम ज्ञानी तवउपनंद भवन श्रीदामा सुवल तोक कृष्णार्जुन नामा
दोहा॥ अंसुनाम मेरेसखा ह्वैहै तिन्हके धाम नंद और उपनंद सव षटवृषभान ललाम ॥१८॥ विधिभे क·
हत जोरिजुग पानी लक्षन मोहि वता वहुज्ञानी कोवृषभान नंदको अहही सुनियह वचन कृष्णप्रभु कहही
गोपालहि ताते गोपाला भयेवृत्तितें नाम विशाला नवलख गऊ जाहिसो नंदा पंचलक्ष जेहिसो उपनंदा ॥
दसलख गऊ जाहि वृषभाना कोटि जाहि नंदराज महाना खर्वकोटि जाकेहैं धामा वृष रविवर कहि ताको
नामा दोनसुचंद्र नंद वृषभाना ह्वैहैं वसु एकाधि प्रधाना सुंदरि जूथव्रजे सुत होई सुनिवोले ब्रह्मा दुख
षोई ॥ दोहा॥ कृपासिंधु करुना अयन मैयह भाषत प्रश्न लक्षन वरनहु यूथको सुनिवोले श्रीकृष्ण ॥१९॥ दस
करोड को अर्बुद गावै दस अर्बुदको जूथ कहावै गोपुर वासी डिहुडी दारा सेजसवारहि करहि शृंगारा पार्षद
वृंदा विपिनि निवासी कुंज वसहि गोवर्द्धन वासी इतके एसव ह्वैहै जूथा जमुना अरु जाह्नवी वरूथा श्रीवि·
रजा मधुमाधव वाला ललित विशाखा सखी विशाला वसुषोडस वत्तिस एनारी इनको जूथ होइगो भारी श्रु·
तिरूपा ऋषिरूपा जानो मखसीता पुलिंदिका मानो मैथिन कौशल अवध निवासिनि ए अरुजे अनेक
छवि रासिनि ॥ दोहा॥ एसवकह हम वरदयो जवजव जुगजुग माहिं सव हौहैं व्रत्त गोपिका पूर्ण मनोर्थ कराहिं

२०॥ विधिमे कहत सकल सुनारी कौनपुन्य कीनोहै भारी कहिय मोहि रीमेहै तव साथा सुनिमे कहत राधि॰ का नाथा श्वेतदीप के हरिढिग जाई पूर्वश्रुतिन वरगाथा गाई हैप्रसन्न बोले भगवाना वरमागहु जो तव मनमाना श्रुतिन कह्यो सुनिलोक तुमारा जोहै प्रकृतिपरे अविकारा मोहिदेखा वहुसुनि सुभवानी लगे दिखावन सो परधानी श्रुतिसव लषन लगी परसोई जहं वृंदावन तरु तहं सोई सवविधि वर वृंदावन नामा गोवर्द्धन गिरि परम ललामा ॥ दोहा ॥ अतिउत्तम सरिता जहां कालिंदी कहिनाम अतिसुघाट रचनरच्यो जासुघाट अभिराम ॥२१॥ तहं कदंव इक परम ललामा तामधिकृष्ण सुभग घनश्यामा परम मनोहर रूपदेखाई कोटि कि काहू करउ सचुपाई सुनिश्रुति कहत भई यह वानी देषिरूप तव सकलसु॰ भानी अवहम चाहत देहु मुरारी तुमपति अरु हम नारि तुम्हारी विहरहि यहवन तुम्हरे साथा सुनिमे कहत विश्वके नाथा दुर्लभ वर मागेहु यहवाला पैयह होइहि तुम्हहि रसाला तुम्ह अस्तुति कीन्हीहै भारी तातेमाधुर छेत्र मम्हारी वृंदावन महरचिहौं रासा पूरन करिहौं सवही आसा ॥ दोहा ॥ एहि विधितें ऊ होइहै गो॰ पीकुलमाहिं श्रुतिरूपा तिन्हको काहीं औरसुनहु ममपाहि ॥२२॥ त्रेतामहं सुधर्म तवछीनो तवहम रामरूप कहं लीनो जनक स्वयंवर वरधनुतोरा सीय विवाहि कर्यो गठजोरा तहंकी तियमोहि पिय अभिलाषा कामविवस हंसि हरिगुन भषा ममभरतार होहु रघुराई हमतव तिन्हे कहा समुझाई द्वापर महं मिलि होइ विहारा तवलों क॰

रहु धर्म व्यवहारा पुनि जब कीन्ह अवध पैसारा कौशल पुरकी त्रियन निहारा मनमहं पतिहित किय अभि
लाषा तबहम तिनहिं तथावर भाषा द्वापरमहं मिलि करेहु विहारा एकवार सब करनिस्तारा ॥ दोहा ॥ मन
नगरीकी नारिसब मनते करि मोहिनाह आराधन करिवे लगी वैठिवारिके मांह ॥ २३ ॥ तेहिछन भई अना
हद वानी सुनहु सकल शुभ नारिसयानी द्वापर मह पूरिहि मन कामा अभिरामा श्यामा वरवामा जनक
वचन ते वनहि सिधारे संग सिय अरु लछिमन धनुधारे तहंके रहनहार मुनिजेते कृष्णसरूप उपासक
तेते गोपवेषके ध्यान समाने तहंहम रामसरूप देखाने तुरितखोलि दृग वाहर देखा दूजो रूप सुराम परेखा
जानि कृष्ण केरो अवतारा विविधि भांति अस्तुति विस्तारा प्रभुके कहे द्विजन वरजांचा ममवर होहु देहु
यह सांचा ॥ दोहा ॥ राम कह्यौ जोतुम चह्यौ यह दुर्लभ वारपर्म पैमेरे सतसंगते होइहि सत्य अभर्म ॥ २४ ॥ एक
नारि व्रतमोहि करिजानो तातेहम निर्धार वखानो द्वापर महं तुम ह्वैहौ नारी ममसंग केलि करेहु तवभारी
तेऊ तहं त्रिय ह्वैहै भाई पंचवटी पुनिगे रघुराई तहं पुलिंद तिय झष ध्वजभारी मरन लगी भइ व्याकुलभारी
निजहित मरत जानि रघुराया ब्रह्मचारि वन वचन सुनाया द्वापर महं होइहि कल्याना भाषिभए द्रुत अंतर
ध्याना कपिसहांय लैहति दससीसा नरपद आइ भई नरईसा सियहि काढि मख करन विचारा जातरूप तिय
किय निरधारा ॥ दोहा ॥ घनी वनी सियकनककी मखमख प्रति अमरेश मम प्रेरित तिन्ह सवन मैं कीनो

प्रान प्रवेश ॥ २४ ॥ रमन हेत रघुवर ढिग आई तिन्हैं देखि भाषा नरसाई तुमहिं करवनहिं अंगीकारा सुनिस
व सियपहं वचन उचारा मोहित्रिय विरचि यज्ञ तुमकीना अवन करत किमि भोग प्रवीना यामहं होत पाप
अधिकारा निज मतलवकी वात विचारा तव रघुवीर तिन्हैं वरदीन्हा द्वापरमहं तुमरमेहु प्रवीना अवहिन
रमव धर्मकहं लोपी तव हम प्रगट गोपतुम गोपी हेविधि इहिविधि विविधि किशोरी अवतरिहैं व्रजवीच
अथोरी रमासखी वैकुंठ रहंती ह्वैहै व्रजवर मोहि चहंती ॥ दोहा ॥ मनुज असुर सुरसर्प की मोहिपति चाह
हहिजौन वनिता सुखसनिता सकल होइ विधाता तौन ॥ २६ ॥ जवहम धरो यज्ञ वपुधारी मोहीं मोहिलषि
तव सुरनारी देवल मुनिहि वंदि कहंसोई तिनभाषा यह द्वापर होई धन्वंतर जव प्रानहि त्यागा तव औष
दिन महादुखलागा पतिहित तिन्हतप कीन्ह अपारा ह्वैप्रसन्न हरि वचनउचारा तिन्हन कहापति होहुमु
रारी हरिभाष्यौ व्रजमें तुमसारी लता होयकै करहु निवासा वनिरामा पुनि रमिहौ रासा हरिहि देखिवहुनारि
लुभाई करत भई तप पतिहित जाई नवभारति तवभई पुकारति होइहि जोतुम सकल विचारति ॥ दोहा ॥
वनि वृंदा वृंदावनहि निवसहु वाला वृंद तहांरमेहैं रासमे आनंदरास मुकुंद ॥ २७ ॥ मत्सरूप लखि सिंधुकु
मारी मोहिवर वरन कियो तपभारी पृथुहि देखि मोहीं वहुनारी तेऊ सव ह्वैहैं मुखचारी जवपृथुमहि दोहन कहं
कीन्हा तवनारिन पतिहित करि चीन्हा अत्रिहि कहा मनोरथ जाई तववुझाइ वोले मुनिराई मुनिगुनि कहा म

नोरथ एहू द्वापर होइन कछु संदेहू जिन्ह जिन पति हित मति आरंभा तेतीतव त्रिय होइहै ब्रह्मा नरनारा·
यण मोहन काजा अप्सरान पठयो सुरराजा मुनि अच्युत गुनि तिन्ह पति जांचा ह्वैहै सोऊ सत्य ममवाचा॥
दोहा॥ बामन कहं लषि सुतल त्रिय कीन्ह नाहकी चाह दीन्ह परम वरदान तिन सोऊ ह्वैहै नाह॥२८॥ संक·
र्षण लषि नागकुमारी कामविवस वरवरयो विचारी भ्रातराम हित ह्वैहै तेऊ अरुतुम सुनहु सबन को
भेऊ प्रानसूर कश्यप वसुदेवा वसुउद्धव ध्रुव देवक देवा देवकि उदति दक्ष अक्रूरा उग्रसेन मारुत अति
सूरा धनद हृदीक वरुन हनवरमा गत प्राचीन वरहि वर परमा अंवरीष ह्वैहै युयुधाना सात्यकि सो
महलाद सुजाना॥दोहा॥ क्षीरसिंधु संतन नृपति भगधनराइ नरेश दियोदास सो शल्यकहि भीष्मद्रोण वसु
भेष॥२९॥ पूरवापांडु भूप अति आयू धर्मधर्म अरु भीम सुवायू स्वायंभू मनु पारथ सोई सतरूपा अनुजा
ममहोई रविसुत करन भोरवर भेवा अश्विन सुवन नकुल सहदेवा वन्हिद्रोण धातावाल्हीका कलिदुर्यो
धन काल अनीका शशि अभिमन्यु द्रोणसुतईशा इहि विधि ह्वैहै भट जगदीशा रमासखी ते अहहि सयानी
षोड़ससहस होवइहि रानी इमिकहि कहत जोगमायाते अज्ञा अनुवर्त्ती छायाते देवकि सप्तमगर्भ निकारी
दीजो तूरोहिनि महंडारी॥दोहा॥ जवहम देवकि गर्भमहं आवैंउर हरषाउ तवजसुमति के उदरवर वासक·
रेहु तुमजाइ॥३०॥ तवविधि वंदिलोक निजआए वसुधाकहं बहुधा समुझाए नृपजानहु कृष्णहि परिपूरन

गो० १८

सवसुर प्रगट चरनकी धूरन रोमरोम रसनाजौं होई कहिनसकै तौ हरिगुन कोई मतिअनुसार कहहिं कविकैसे
नभखग उड़हिं तुल्य गतिजैसे ॥ कहिनृप किहि हित किय अवतारा। सुनिस्वयंभु सुत समुझिउचारा कंसादि-
क खल मारनकाजा सुनिपुनि प्रष्ण करतभेराजा॥ कौनकंस किमिवरनन तासू। तवबोले मुनिनारद आसू। का-
लनेमि दानव इकवारा। हरिसंगभिरो ताहितिन मारा ॥ दोहा ॥ ताहिमृतक लखिशुक्र तव भएजिवावत जाइ॥
वहुरि विष्णुसंग समर को लाग्यो करन उपाइ ॥ ३१॥ मंदर ठाड लगोतप करना। दिव्यसहस संवतइकचरना
वरमागहु यह कहेउ विधाता। तवभे कहत महत मनमाता॥ हरिहर तुमहि आदिसुर जेते। यह ब्रह्मांड निवा-
सहितेते ॥ तिन्हतेही इहि मारनकाला। वेदभाल सुनिवचन निकाला ॥ एवमस्तु मरिहौ तुम्हजाते ॥ जोपर य-
हब्रह्मांड महाते ॥ उग्रसेन गृहसो खलजायो। कंसनाम अरि गंस कहायो ॥ करत वालपनमै खेलवारा। म-
ल्लन वरदै मध्य अखारा ॥ जरासंध भूपति तेहिकाला। दिग्जय हेतुकढ्यौ विकराला ॥ दोहा ॥ व्रजते चा-
लिस कोसपर उतर्यौ जीतनकाज। तज्यौ कुवलया पीड कहं पुरप्रविस्यौ गजराज ॥ ३२॥ दौरिदौरि द्विप
दरै मकाना। कंस अखारा तेहि नियराना ॥ भागेमल्ल कंस तेहिकाला। पटक्यौ गजहि फिराहि कराला ॥ भई
कुवलया पीडहि पीडा। पुनि गहितेहि वीडासममीडा ॥ फेंक्यौचालिस कोसघु माई। विस्मय भयो मगध क-
रराई ॥ अस्तिप्राप्ति दोउसुता विवाही। दाइज महं दीह्नो गजताही ॥ अर्वुद हयगज लक्षनवीने। दासि अ-

युतत्रिलक्षरथ दीने ॥ तवभट कंस प्रबल मतवारो। दिगजीतन वे हेतसिधारो॥ एकाकी प्रचंड बल छायो। माहिषमती पूरिमें आयो॥ दोहा॥ तहंनृपके सुत मल्ल है शलतोशल चानूर। मुष्टिक कूट सुपांचए समर सूर भरपूर॥ ३३॥ तिनते कह्यो कंस यहजाई। करिकरारकहु करहु लराई॥ हारे होइ दाससो तासू। तुम हैतो न एकहम आसू॥ इमिकहि कंसभिरो बलपूरा। पटक्यो प्रथम प्रहमि चानूरा॥ मुष्टिकाकहं मुष्टिक तेमारी। दीनो द्रुतहि धरनि परडारी॥ कूटकूट समभो धरसाता। कूट्योकंस ताहिपग घाता॥ शलहिमल्यो शलभा जमजाई। काकतुंडसी भुजन चढ़ाई॥ मारिबाहुते भूमिखसायो। तोशल तोसक सरिस बिछायो॥ पांचहुकहं निजदास बनाई। गयोप्रवर्षन पर्वत धाई॥ दोहा॥ हिविदहु ते सुकरार करि करतभयो अतिमार॥ बीस दिवस करिकीस रन मारेउ महत पहार॥ ३४॥ कंसताहि ताऊपर मारयो। मुष्टि प्रहार बहोरि पछारयो॥ बहुरि भोजपति नभमहं जाई। दियो ताहि तलमारि गिराई॥ बंदर बंदर गनसह टूटो। मुखते रुधिर फुहारो छूटो॥ तेहिकरि दास बहुरि सो धायो। रिष्यमूक ऊपर चलिआयो॥ कपीनाम दैत्यतिन रहई। हय बपुतासु कौनबल कहई॥ जीतितताहि चढ़िचलो नरेसा। गयोमहेंद्राचल मटवेसा॥ गिरिउठाइ शत्रु वारहि लायो। परशुरामतव कीपहि पायो॥ प्रबल सरिसलखि राम सरूपा। कीन्ह प्रनाम समयनर भूपा॥ दोहा॥ परशुराम बोले परुष सरुष लाल करिनैन॥ रेमाछर क्षत्री अधम तोहिनेउडरहैन॥ ३५॥ लैधनु यह चढ़ाउ तै

मोरा। नातरु काल होत अवतोरा॥ इहिहरि हरिहि त्रिपुर हितदीन्हा। मैक्षत्रि नहित तिनते लीन्हा द्वै
शतभारकेर यह अहई। इहि चढ़ाउ जौ जीवन चहई॥ सुनत तुरत तेहि कंस उठावा। ज्याचढ़ाइ शतवार
वजावा॥ ताकर शब्द अब्दलौ पूरा। संभ्रम सहित भये सवसूरा॥ चलत भए दिग्गज तेहिकाला। ब्रह्म अंड
लोकन सहहाला॥ धनुधरि कंसकर्यौ सिरनामी। क्षत्री नहि मैं दानव स्वामी॥ सोसुनि राम चापतेहि दैकै
कहत वचन उर आनंद लैकै॥ दोहा॥ जाकरते यह टूटिहै ताकरतेरो काल॥ करैन कोउ सोकृष्ण विन हरि
धनु गुनहु नृपाल॥ ३६॥ चलेउ नौमिपद जीतन देसा। कंस कराल काल समभेसा॥ सिंधुनिकट अघ
असुर निहारा। सर्पसरीर कीन्ह फुफकारा॥ ताहि घुमाइ कंस महि पटक्यौ। भयो पिसान प्रानलै सटक्यौ॥
अघहि जीति प्राची दिसि जाई॥ भिर्यौ अरिष्टा सुर सोधाई॥ वृषभरूप सो शिखर उढ़ाई। कंसहि मार्यौ
क्रोधवढ़ाई॥ ॥ मारिमुष्टिकर गरदन मीची॥ जीतिगयो पुनिदिसा उदीची॥ प्राग्ज्योतिष पति भौमहि भाषा।
उठहु वेगि हमरन अभिलाषा॥ नरका सुरतव अतिरिस भीना। लरहु हुकुम यह दैतन दीना॥ दोहा॥ प्रथम
प्रलंवासुर उठ्यौ कीनो अद्भुत युद्ध॥ यथा मृगेंद्र मृगेंद्र सो भिरै भयंकर क्रुद्ध॥ ३७॥ पटक्यौ कंस ताहि गति रूरी
धेनुक भिर्यौ तवैगहि सूरी॥ पटक्यौ कंसहि भूमिभवाई। तेहि उठि गह्यौ भोज कुलराई॥ सत योजन पर पटक्यौ
कंसा। भो अप्रान समवाढ़ी संसा॥ तृनावर्त्त लैगयो उड़ाई। शतजोजन पर करै लराई॥ पटक्यौ ताहि कंस महिमा-

हीं। मानहु प्रान अहै तन नाहीं॥ उठिवक असुर चंचु निज फारी। चल्यौ कंस ढिग अति ललकारी॥ मारु मारु वक
वकत रिसावा। कंसहि तुरत कंठ मधि नावा॥ कंस गला महं मारेउ मूका। तव सो व्याकुल आतुर थूका॥ दोहा॥ व-
कुला कहं गहि कंस तव फेंक्यौ दूरि घुमाइ॥ तासु स्वसा तव पूतना लरन चली रिस छाइ॥ ३८॥ वकी वकी बहु
करुरन मोसों। कहेउ कंस लरिहों नहिं तोसों॥ त्रियसम लरहि न मटरिपु अग्नी। वकामम भ्राता तैमम भग-
नी॥ नरक कंस कहं प्रवल विचारी। तासंग कीन्ह मित्रता भारी॥ शंवर नगर भोजपति गएऊ। वरविरतांत वखा
नत भएऊ॥ सोऊ निज सम मित्र वनायो। शैल त्रिशृंग शृंग पुनि आयो॥ व्यौमासुर सूतो तित हूतो। मारेउ चरन कं
स मजवूतो॥ व्यौम व्यौम लौं वढि तेहि काला। निज गुन प्रगट भिरो विकराला॥ कंस मारि सह सकौन सोऊं। दास
होइ पगवंदे दोऊ॥ दोहा॥ पुनि मग मैं हम तेहि मिले सो मोहिं कीन्ह प्रनाम॥ पूछत मो करजोर दोउ को जग
मैं वलधाम। तव मैं तेहि भाषत भयो श्रोनित पुरतुम जाहु॥ तहं अरिकुल ससिराहु सम वानदनुज कुलनाहु॥ ३९
कंस जाइ विरतांत वखाना। वानासुर सुनि अतिहि रिसाना॥ करगहि तरुमहं पटकत भएऊ। सातपताल फोरि
सो गएऊ॥ वलिसुत कंसहि कहेउ वुझाई। याहि काढि लै आवहु जाई॥ जाइ तुरित तव तौन उठावा। सात पताल
उठत उठि आवा॥ सोर भयो भुव ऊपर भारी। वानके संभे भिरत प्रचारी॥ लरत उभय अजेय निरधारी। तुरत तहां
आये त्रिपुरारी॥ भाषेउ विना कृष्ण हेवाना। करिहै कोउन कंस मदहाना॥ दोउन मैं करवाइ मिलापू। गिरिकै-

लासगए चलि आपू ॥ दोहा ॥ बानासुरकहं मित्रकरि कंससहज सहजोर ॥ वत्सासुर देखत भयो दिसाप्रतीची ओर ॥ ४० ॥ भिरिलाते जीत्यो महिभारी । दासभयो सोप्रबल विचारी ॥ उग्रसेन आतमज बलवाना । म्लेच्छ देसमहं आइ तुलाना ॥ लखेउ कालकी सेनाठाढ़ी । कठिनकराल कालरंग गाढ़ी ॥ लक्षमारकी गदापकरिकै । आभरे कंसका लरिस भरिकै ॥ तेहिछन यादव बरबलवाना । भयोकालके काल समाना ॥ परकत भोमहि कंस चुमाई । तवहियावनी सेनाधाई ॥ गहिकर गदा तदा भटकंसा । लागेउ वारन अरिनकी हिंसा ॥ कालयमनकी सेना सारी । कालनेमि दानवने मारी ॥ दोहा ॥ विभव जामिनी जामिनी भोजमित्र अभोज्ज ॥ जीति चल्यो अमरावती दूरिकिये दुरवोज्ज ॥ ४१ ॥ उच्चपाद अति दीरघ जानू ॥ लघुकटि उरउतंग परिमानू ॥ वक्षकपाट अंस अतिपीना । भुजप्रलंब दुति दिपति नवीना ॥ मुद्गर धनु असि कवच निखंगा । धरिकर चलो सुभट सब संगा ॥ शल तोशल मुष्टिक चानूरा । कूट प्रलंब नरक कपिसूरा ॥ त्रिनावर्त्त वृष भासुर केसी । स्वरसंवर सर ओनित देशी ॥ व्योमवत्स बक अघ बलवाना ॥ इन्हन सहित सुरपुर नियराना ॥ रिपु आगमन जानि पुरहूता सुरन समेत भिरो मजबूता ॥ तिन्हते त्रिदसनते तिहिकाला । होतभयो अति समर कराला ॥ दोहा ॥ रनमहंब जूउठाइकर वासव धीर धुरीन ॥ तज्योगंभ गहि कंसपर परम गर्जना कीन ॥ ४२ ॥ तोटक ॥ गहिमुद्गर कंस प्रहारतभो । महिको मथि वज्रहि डारतभो ॥ तवरवज्र पुरंदर मारतभो । नवचो यहशब्द पुकारतभो ॥ सहि-

ताहि गदाकरमैं गहिकै। मतभागु खरो रहुरे कहिकै॥ तजिदीन्ह सुरेशहि रोसभरो। गहि कौशिक ताहि तजोनडरो॥ कृत कंस कराल महा रनमैं। भरिअद्भुत कर्म किए छनमैं॥ परिघा कहं जादव हेरिहयो सरनाह तवैगत चेतभयो॥ तवमारुत त्यागत वानघने। रथछाइ लयो अति कोपसने॥ तेहिकाटि अरी दल आड़तभो। सरछाड़त भो भय मारतभो॥ वसुरुद्र अदित्य सवै वढ़िकै। असुरान हत्यौ रिससो मढ़िकै॥ लखि भौमवली अतिजोमभरो। निजनयनन भोगके रोगकरो॥ कटितोण तुरंत तहां कसिकै। सर त्यागत घोर हृदै गसिकै। सुरके दलमे जमसो लसिकै॥ द्रुतधीर धकैत गयो धसिकै॥ दोहा॥ सुनासीर तव चढ़तभो मैगल मत्तमहान॥ श्वेतवरन घनसरिस स्वन उन्नत शिखर समान॥ ४३॥ चलेउ वितुंडहि-लावत सुंडा। गरजेउ कंसगुनी गुरुगुंडा॥ लखत भयो इमि महत मतंगा। जिमि जलधार सपेद पतंगा॥ एकमुष्टि वारन कहं मारा। झपट दूसरी क्रतुहि प्रहारा॥ गिरेउ इंद्र महि व्याकुल भारी। तवद्विप चपल चलेउ चिक्कारी॥ नृपरिसाइ तेहिलीन्ह उठाई। फेक्यौ जोजन लक्ष घुमाई॥ ऐरावत तहंते पुनिआयो॥ मारन चह्यो अतिहिं रिसछायो॥ झठउठाइ कै यादव पटका। व्याकुलभयो प्रानजनु सटका॥ उठिपुनि लीन्ह पाछिलो रस्ता। गर्जेउ कंसकोपि रनमस्ता॥ दोहा॥ गहिवैष्णव को दंडकार मेघसमानन नर्दि॥ मर्दिसुरन रन अर्दि अति जैसे कुपित कपर्दि॥ ४४॥ सोलखि सभय देवता भागे। खोलिशिखावहु डोलन लागे॥ हमसव सरन-

भोज कुलराई। देवनहार जीतितुम पाई॥ परहि पगनपर जोरहि हाथा। दीनसरिस बहु गावहिं गाथा॥ धो-
तीखोलि अनेकन दीनी। इमिसुरपुरी कंस जयलीनी॥ छत्रसिंहासन लैहरषाई। सुरपुर विजय पटह व-
जवाई॥ कंसमुदित मथुरा चलिआयो। लाग्योकारन राज छवि छायो॥ कंस विजय सुनि जनक महीपा
मुदित भये मनही कुलदीपा॥ विधिनंदन पगवंदन करिकै। कहत महत आनंद उरभरिकै॥ दोहा॥ मैथि-
ल कुलपावन कह्यौ करुनाकरि मुनिदेव॥ हमसेमनुज गृहस्थकहं कहांकथा को भेव॥ ४५॥ श्रीराधाकर
भो अवतारा। सोमोहि कहहु सहित विस्तारा॥ सुनवेहित ममम न अभिलाषा। तवहंसि वचन विप्र वर-
भाषा॥ धन्यतासु कुल जानहु भाई। जहंतुमसे सज्जन नरराई॥ हैकुल परम पुन्य पुल सोई। जहंहरि क-
था वारता होई॥ कथासुनहु जोनाशति बाधा॥ जेहिविधि जन्म लियो श्रीराधा॥ वरवृषभान गोप वर
सोई। कीरतिनाम तासु तियहोई॥ जमुना निकट रुचिर अति मंदिर॥ सुंदर सुताभई ता अंदर॥ घनछाए
तेहिछन नभआसा। सुभशीतल सरसा त वतासा॥ दोहा॥ भादोंशुदी आठय दिवस दोयपहर शशि-
वार॥ कीरति कुल कीरति भई कीरति कीरतिहार॥ ४६॥ वृषरवि द्वैलख सुरभी दीनी। सुतते सरस वधाई
कीनी॥ पलनामाहि झुलावहिं ललना। मृदुबोलनि रुनझुन महि चलना॥ नितनित बढ़त लड़ैती कैसे
शुक्लपक्ष के निशिकर जैसे॥ श्यामा श्याम प्रिया अभिरामा। रामाहृदय करहु विश्रामा॥ इहिविधि कह्यौ

जन्म सुखसाजा। सुनिहो कहा कहो नरराजा॥ कहन्नृप भो यहजो अवतारा। कलावती सुचंद्र आगारा॥ की
न्ह कौनतप असफल पावा। सुनिमुनि गुनिपुनि वचन सुनावा॥ नृपसुत भयो सुचंद्र महीपा॥ विष्णु अं
शु दिनकर कुलदीपा॥ दोहा॥ तीनिसुता जनमतभई जगत पित्र के धाम॥ कलावती अरु मेनका रत्नदा
म यहनाम॥ ४७॥ जनकहि रत्न दाम सो व्याही॥ सीतासुता सुतामनि जाही॥ मैनागिरि हिमवानहि दीना
अति उत्साह व्याहको कीना॥ भई भवानी ताकी कन्या जगत विदित जगपावन धन्या॥ दीन्ह सुचंद्रहि
आनंद भरिकै। कलावती कृष्णार्पन करिकै॥ कलावती सुचंद्र अनुरागे। गोमति निकट करन तपलागे
सहस अब्द बीते तववेधा। वरंब्रूहि भारवेउ अतिमेधा॥ मुक्तिदेहु ममतप अतितोली। कलावती पुर
तहि मुनिबोली। मोहिपोतत्यागि अन्यगतिनाहीं। तजहुन तातें निजपरि छाहीं॥ दोहा॥ जौंपति साथ
न देइहो तोहोइहै कल्यान॥ पतिताजि त्रियहिन औरगति सत्यसत्य परिमान॥ ४८॥ कहा विरंचि सत्य
सबरहू। पैमम वरन वृथा सुनिलेहू॥ प्रमुदित करिकै भोग अपारा। भरतखंड लेहु अवतारा॥ राधाज
व ह्वैहै तवकन्या। तवदोउनकी मोक्षअनन्या॥ इमिकहि गए भवन मतिमानू। तेउदोउभे कीरति वृष
भानू॥ नृपरवि देवभानुके नंदन। कलावती के बापभलंदन॥ कान कुब्ज पतिसो नृपतासू। मरवतेप्र
गट भई हरिसासू॥ कीरति नामकीन्ह नरनाहू। वृषभ भानु सो भयो विवाहू॥ तासुसुता राधाजग

जानी ॥ जाके नायक सारंग पानी ॥ दोहा ॥ राधाके पितु मातुको सुनिहै जोइतिहास ॥ ताके जन्म अनेक के-
पाप होंइगे नास ॥ अब तुमते महिपाल मनि कहत पुनीत प्रसंग ॥ कृष्ण जन्म विरतांत सब करन करोर
उमंग ॥ ४६ ॥ सूरकहे ते बुद्धि निधाना ॥ गर्ग ज्ञान मंदिर भगवाना ॥ मथुरा महं महीप गृह आए ॥ शोभा
लखत परम सचुपाए ॥ झूमहिं झुकहिं झनक्कहिं झलकहिं ॥ गज समुदाय खरे बहु बलकहिं ॥ स्यंदन
तुरग सुरंग की भीरा ॥ असिधनु सरन सजे सब वीरा ॥ चारहु दिशा सुभट समुदाया ॥ उग्रसेन नृपम-
धि दरसाया ॥ शक्र सिंहासन लसत असेसा ॥ सेवहिं सुफलक देवक कंसा ॥ गर्गहि देखि उठेउ नरपाला
वंदे दोऊ चरन रसाला ॥ सुंदर सिंहासन बैठाई ॥ कुशल प्रश्न कीन्हो हरषाई ॥ दोहा ॥ आचारज आ-
सीस दै उरआनंद अमोल ॥ देवक ते बोलत भये अति अमृत से बोल ॥ ५० ॥ सूर सुवन वसुदेव सुजाना
तिन्हहि देहु तुम दुहिता दाना ॥ वरवर वर ताते नहिं वरहू ॥ सम समधी वनि उरसुख भरहू ॥ सुनि प्रमु
दित चित तिलक पठायो ॥ लैवरात संग दूलह आयो ॥ भोदेवकि वसुदेव विवाहू ॥ सबकोभयो चौगुनो चाहू
रथ चढि चलत भए वसुदेवा । लिये दहेज अनूप मभेवा ॥ संग सोहत दोउ दुलहा दुलहिनि । सरसत प्रीति पर-
म जनु सुलहिनि ॥ सारथि भयो कंस अघधामा । करकोरालस ललित लगामा ॥ हांकत कंस मेघस्वन हांकत । चली-
सैन संग तादिशि ताकत ॥ दोहा ॥ अयुत द्विरद दासी सहस लक्ष सुरथ हय चारु ॥ द्वैलख सुरभी देतभे देवक अतिहि उदार

भेरीशंख मृदंग नगारे। वाजन लगे शब्द अति भारे॥ चलीसैन कछु कहीन जाई॥ तेहि छन अद्भुत आपद आई॥ कंस
हि कहत व्योमकी वानी। यह निज मृत्यु वहिन करिमानी॥ यासुगर्भ अष्टम तवकाला। सुनिगहि कोप कंसतेहि काला
तजिप्रतोद कर धारे कृपाना। गहि कच काटन मन अनुमाना॥ भएउ रंगमै भंगउ मंगा। चकित दुखित देखहि चतुरंगा॥
मरत जानि तेहिनीति निधाना। आनक दुंदुभि वचन वखाना॥ हेनृपहे जस धरन महाना॥ हेगुनज्ञ मतिमान सुजाना॥
दोहा॥ करुनाकर उर सभुझिकै करहुन ऐसोकाम॥ काकहि हैं लखि जीवसव नहि अवसर मतिधाम॥ ५२॥ अवला
वाला भगिनी छोटी। विन अपराध गहहु जनि चोटी॥ सुखमहं नहिं सुहात यह कैसै। दाल भातमहं मूसल जैसै॥ क
छुन कह्यो सुनि पाप निधाना। मारिहि अवसि सौरि अनुमाना॥ वोले वहुरि वचन मतिमाना। जामहं नेकहु आवइ
ज्ञाना॥ रिपुयह नहिं तव रिपु सुतयाको। जन्मतहीं लीजोतुमताको॥ सोसुनि कंस हृदय मतिरोची। दीन्ह तुरत तजि
सोचि सकोची। तीन वचन दीनो वहनोई। भवन गई वरात पुनिसोई॥ राख्यौ कैद कुटिल सरदारा। अयुत द्वार पर
चौकीदारा॥ दोहा॥ एकसुता अरु आठ सुत तिनहिं भए महिकांत॥ तासु सुनहु सवसुख सहित अघहर वरवि
रतांत॥ ५३॥ प्रथमपुत्र वसुदेवहिं जायो। ताहिकंस मंदिर पहुंचायो॥ देखिताहि कछु दया विचारी। वोलेकंस शत्रुमद
हारी॥ यहन काल मम अष्टम घाती। गृहलै जाहु तज्यौ हम थाती॥ जव वसुदेव भवन निज आए। तवहम यहकंसहि स
मुझाए॥ पूछेउ कंस वंदि मम चरना। याके मध्यमोहिं काकरना॥ तवहम कहा सत्य निरधारा। गोप सकल सुरके अ

वतारा ॥ गोपीवेद रिचाकरिजानो । यादवसव अवतारी मानो ॥ यहदेवकी देवकी नारी । यासुसुवन सव तव वधकारी
दोहा ॥ इमिकहिकै मैगृहगयो सुनि अतिकंस रिसान ॥ जादव गनके वधनको करत भयो सामान ॥ ५४ ॥ कीनो कैद
वहिन वहनोई । शिलपर पटकि हत्यौ शिशुसोई ॥ भोजनकहं वट भंजन लागो । सोलखि सवसन संशय पागो । उग्र
सेनतव परम रिसाना । डाढ्यौ सुतहि नृपति मतिमाना ॥ पितुकार कंसनेक नहिंमाना । तवयादवन कीन्ह घमसा-
ना ॥ उग्रसेन अरुकंस भटनसो । भयोसमर धरमार रटनसो ॥ मरे अमित भट आयुध धारी । श्रोणित सरित
चल्यौ कढिभारी ॥ कंसगदा गहि रिसिते पागो । जनककटक कहं कूटन लागो ॥ छिन्नभिन्न करि दिन्न कठोरा ॥
किन्न तिन्न दृगके समजोरा ॥ दोहा ॥ मरद्यौ सवहिन कंसतव अन्नहि यथाकिसान ॥ मरेपरे डगरेडरे हरे हरे लैप्रा
न ॥ ५५ ॥ मद्रिसैन सवकंस अभागो । पकर्यौ पितहिं परम रिसपागो ॥ मंत्रिन सहित अहित निज चीन्ही । दृष्टवं-
दिकी कैदीदीन्ही ॥ सिंहासनपर आप विराजा । लाग्यौ करन विश्वकरराजा ॥ षट शिसुइमि अनुजाके मारे । गर्भसात
ए शेष पधारे ॥ तवमाया माया विस्तारो । लैरोहिनी गर्भमहंडारो । सवन भयो अचरज अधिकाई । भादौं शुक्ल सर्पतिथि
आई ॥ वुधस्वाती मध्यान्ततराजू । उच्चभवन गृहपांच समाजू ॥ बरषहिं सुमन विवुध जलविंदू । प्रगटे जिमिप-
रिपूरन चंदू ॥ दोहा ॥ नंदकीन्ह आनंद अति द्विजनदीन्ह लखगाय ॥ जातकर्म आचरतभे विप्रन देत वुलाय ॥ ५६ ॥
देवलदेव रातद्वैपायन । मैवसिष्ठ गुरुज्ञान परायन ॥ मिलिमुनीश ए आनंद पागे । गए नंद गोपतिके आगे ॥ पूजि

तिन्है आसन बैठाई। पूछत व्यासहि लखि व्रजराई॥ अकस्मात शिशु भए अमोले। सोसुनि सत्यवती सुत बोले॥
यह वसुदेव देवकी जायो। मायाले रोहिनि मधिनायो॥ आदिशेष अवतारहि लीनो। हरिइच्छा बालक वपुकी
नो॥ धन्यभाग तवगृह हरिपायो। मैं तिन्हके दरसन हित आयो॥ मोहिं दिखावहु बालस्वरूपा। सुनिभे भवनजात
व्रजभूपा॥ दोहा॥ लै आए निज अंक मैं शोभा कही न जाई॥ जमि जलनिधिके गोद मैं शशि शिशु शुभ सरसाई॥
निरखि सरूप अनूप अति मुदित व्यासकुल भूप॥ करत भए अस्तुति अतिहिं मगन प्रेमके कूप॥ ५७॥ छंद॥
शेषं सुरेशं कामपालं हलधरं करुनाकरं रामं रिपुघ्नं श्रीअनंतं वासुदेव मजंपरं॥ कुवलैदृगं दशसुतमुखं शितमूर्त्ति
मद्भुत भूधरं॥ रेवतिपतिं हरि अग्रजं शंकर्षणं यदुराट्वरं॥ नीलांवरं वलभद्रमीशं मनंत मंवुज धारिणं॥ भद्रं
वलं वलभद्रकं वल्वलवलीवध कारिणं॥ कूष्मांड द्विविध प्रलंव धेनुक कूट रुक्म निकंदनं॥ तालध्वजं कुरु
राठगुरुं वसुदेव यादव नंदनं॥ करिकूप कर्ण विदारणं कालिंदि कर्षण तत्परं॥ महिमल्ल युद्ध महाकरं। व्रजमं
डनं महिमाकरं॥ गजनगर कर्षण मातिरूप धरं मकुंद मनामयं॥ वलिनं मुशलि नंदेव हलिनं वितलिनं
तलिनं स्वयं॥ तमशेषरूप विशेषरूप नतोस्मि यादव बालकं॥ गोपालकं व्रजपालकं द्विजपालकं सुरपालकं॥
वलदेव प्रीतिकरं परं अघहर मनूप मिदं स्तवं॥ श्रवणा द्विपठना द्यर्थकथना द्यस्य मुक्ति भवेद्ध्रुवं॥ ४॥ दोहा॥
इमि कहिकै गृहजात भे सत्यवती सुतव्यास॥ अवउतको पहिपाल मनि सुनहु सुचित इतिहास॥ ५८॥ हरिपरि

पूरन तनछवि छाए। श्रीवसुदेव हृदय महं आए॥ तेजरूप भे सूरकुमारा। जिमि उदयस्थ सूर उजियारा देवकि
गर्भवसे पुनि आई। ताके तनकी कांति बढ़ाई॥ देखि कंस अति जेज बहिन को। कहत भयो घरमें सबहिन को॥
यह मम काल सत्य हम जाना। होतहि हरिहौं अरिको प्राना॥ चौकी घनी द्वार बैठाई। चल्यो भवन हरि ध्यान
लगाई॥ हेनृप होहि मोक्ष पथगामी। असुर भक्ति हठते सठकामी॥ एक छिनहु हरि ध्यानन भूला। धन्य
असुर असमति अजकूला॥ दोहा॥ तहां स्वयंभू शंभुसह साथ सकल सुर आय॥ गर्भस्तुति लागे करन
निज निज सीस नवाय॥ पद्धटी॥ छप्पय॥ जयजय जगदाधारहेतु सबके सबस्वामी॥ अवतारन आदिपरम
विनता सुत गामी॥ विस्फुलिंग जिमि प्रगट अरिनतें होहिं समाहीं॥ तिमितुम परिपूरन तमजग दूजो असम
नाहीं॥ जेहि ब्रह्म कहहिं जोगी सकल अक्षर अघहरन॥ वपु कृष्ण कृष्ण करुना करन जग व्यापक हमतव
शरन॥१॥ अंश अंशको अंश काला विकला अरुपूरन॥ सबके स्वामी आपुप्रगटहै विधि परिपूरन॥ कोटि अंडखंड
न मंडन करुनाके सागर॥ नरवर परम पुनीत नीति आगर नटनागर॥ करि परम कृपा प्रभु सबन पर प्रगट धनि
गिरवर धरन। विश्वनाथ प्रभु विश्वगुरु परम धाम हमतवशरन॥२॥ जोयोगी जोजन उरमें तवदुर्लभ दरसन॥
वाहि नहिं सकत पुरान पुरान पुरुष अज मरघन॥ पदअरविंद मलिंद मोरमन संदे रहैतहं॥ देहु दया करिदुरि
त हरन यह दान सबन वाहं गोलोक निवासी जगत पति राधापति बाधाहरन॥ जय नंद अनंदन चंदसम हमच·

गो·
१५

कोरसव तवशरन ॥३॥ कंसदरन नराधरन सकल जगाभरन हरन दुख ॥ कामल वरन युगचरन परन कोमल सु-
वरनरुष ॥ नरन भक्ति अनुसरन सुभग आचरन चरन मुख । चरन चरन प्रति वृधहरन सुमिरन हरजाक-
लुष ॥ तरन तरन दुतिभव तरन वितरन सुखहित रनकरन ॥ सरन सरन तुमसरन वर सरन सरन असरन सरन ४
दो० इमिकहि विधि देवन सहित वंदिगए आगार ॥ सुमिरत कृष्णहि मुदित चित जानि परम अवतार ॥ + ॥
सोरठा ॥ इमिसुनिये महिपाल जन्मकाल गोपालके ॥ भेसुभशगुन विशाल निर्मल नभ अरु दसदिसा ॥ ६०
छंद ॥ दसदिशा निर्मल मुदित उडगन भूमि मंडल सुखछयो ॥ सागर सरित सो तासरोवर सबन उज्जल जलभ-
यो ॥ शतपत्र दसशतपत्र अरु वसुपत्र फूले पंकजा ॥ भ्रमरा भ्रमे मूले भरे मदप्रगट प्रेम उतंकजा ॥१॥ सी-
तल सुगंध समेत जहं चालत समीर सुहावनो ॥ भोप्रगट बालक विश्वपालक प्रभु घालक भावनो ॥ नव नगर
सुंदर वगर वर आराम प्रद आराममें ॥ सुर विप्र सुरभी साधु वैष्णव सबन के मनकाममे ॥२॥ सुरदे हिं दुंदुभि
सुमन वर्षहिं मुदित जयजय भाषही ॥ महिभई उन्नत मुदित चितनरु सुमन तापर नाखही ॥ गंधर्व चार-
न सिद्ध किन्नर सकल विद्याधरनहीं ॥ गावहिं वजावहिं हरष छावहिं मुदित नाचहिं दिविजहीं ॥ नाचहिं
अपसरा हरष पसरा ताल आउज बाजहीं ॥ सुरवार तियसुर भरत आनंद सुनत कोकिल लाजहीं ॥ कछु
मंदमंद फुहीसुही जिमि जुही सुमन सुहावने ॥ तिथि अष्टमी रोहिनि हरष लगनभादव भावने ॥४॥ नि-

शि अर्द्ध हर्षन योगवर संयोग सुखको कीचमें ॥ प्रभुशोरि अगदे शोरि मंदिर शोरि घरके बीचमें ॥ उरहार चार अपार छविपनि कंठ कौस्तुभ वरमनी ॥ करपर कसे चूरकंकन कीटकी दुतिहै घनी ॥ ५ ॥ सिरमुकुट सोहत जटित शोभा घटित पीतांबर लश्यौ ॥ वैजंति माल सुमाल पंकज मालमधि ममन वश्यौ ॥ की लाल सुतको सरिस लोचन लाल अतिहिं विशाल हैं ॥ शिर जुल्फ उल्लत कारन मनके जाल्फ परम रसालहैं ॥ ६ ॥ सुखकरन सबते परम करपर वेन वरकार धरतहै ॥ सुर मधुरतान वधानतें प्रभु मनहुं को मनरहत हैं ॥ सुतदेखि आतंक दुंदुभी आनंद कहं अतिकारतभे ॥ गोनियुत मनते द्विजन दीन्ही हरषतें उरभरतभे ७ ॥ दोहा ॥ जानिजगत अभिराम गुरु कृष्ण अनंत अभेव ॥ हाथाजोरि पर वंदिके कहतभये वसुदेव ॥ ६१ त्रिभंगी ॥ जगदीश मुरारी पावनकारी भवभयहारी ज्ञानभये ॥ परमेश्वरस्वामी खगपति गामी चामीकर शुति प्रगट भये ॥ मनिउज्जत जैसा रंगापर वैसा दरशत तैसा ब्रह्म यथा ॥ ब्रह्मा चतुरानन शिवपंचानन स्कंदषड़ानन जाहि कथा ॥ १ ॥ करुना कर नागर विश्व उजागर आनंद सागर विश्वपती ॥ बहु अंड प्रकाशी आनंद राशी अविनाशी अति विमल मती ॥ भवभयहारे शिशुवपुधारे पाहि मुरारे त्वशरणं त्रासत मोहिं कंसा दानव अंशा नासहु गंसासुरव करणं ॥ २ ॥ दोहा ॥ तवदेवकि करजोरि वै बोलीप्रमुदित बोल ॥ अज अव्यय आतमजकी अस्तुति अमल अमोल ॥ ६२ ॥ तोटक ॥ जयकोटिन अंड

अखंड करं सुरभी पुरथान सुजान वरं ॥ मधुमर्दन माधव दीनहिते परमेश्वर पालक विश्वपते ॥ १ ॥
दोहा ॥ हतहु कंस भयमोर अति दीनबंधु भयहारि ॥ सुनिगुनिकै परिपूर्ण तब बोले मधुरमुरारि ॥ ६३ ॥
सुनहुं समुद अपनो इतिहासा । सुतपा नाम आपतप रासा ॥ पृष्टिनाम मम मातु प्रवीना । ममसम सुत·
हित अतितप कीना ॥ मन्वंतर अनगिने बिताये ॥ तबहम पासतुम्हारे आए ॥ वरमांगहु निजजो अ·
भिलाषा । तबतुम मुदित जोरिकर भाषा ॥ तुमसम हमहिं होइ संताना ॥ सुनि विचार हम मनमें आना
ममसम और कौन जगमाहीं । हमहिं जन्म लीनो तवचाहीं ॥ प्रथम भये भगवान सुजाना । पुनि वाव·
न अवतार वखाना ॥ तीजेबेर बहुरि हम आए । लैगोकुलहि चलहु छविछाए ॥ दोहा ॥ सवदुख जै·
हैं दूरिसब मतकछु करहु विचार ॥ इमिकहि तिन्हके देखते भएछोट सुकुमार ॥ ६४ ॥ नंद भवन जनमी
उतमाया । शिशु हि सौरि पलना पौढ़ाया ॥ बेड़ीकटी कपाट खुलतभे । सोए चट चखहून मलतभे ॥ सिर
सुत धरनि सरे तिहिं काला । फुहीरसीली परत रसाला ॥ शेस सहस फल ऊपर आए । जरन्यौ शंगोरि
श्याम घनछाए ॥ आगेहरि पुनि ताहि निहारा । वाटदीन पुनिपाट निवारा ॥ लखेनंद गृह खुले किवारे
सोए सिगरे मनुजनि हारे ॥ शिसुसुताइ लैसुता सुहाए ॥ भएपूर्ववत जबगृह आए ॥ कन्या कुंवरकेर
विज्ञाना ॥ + ॥ भोन यशोदहि मोद महाना ॥ दोहा ॥ कहां वाहां रोवन लगी तहां विचारि विचार ॥ जागे

चौकीदार सब कंसहि कह्यौ पुकारि ॥ ६५ ॥ सुनतहि कंस तहां चलि आयो । भांगत सुता देखि अकुलायो ॥ कह देव·
की कृपा कहं कीजै ॥ वधिसुत सबइक कन्यहु दीजै ॥ सुनिसो ऐं चिलीन्ह द्रुति लड़की । विशद वरद विबुधनकी बढ·
की ॥ तुरतहि शिला देखि सम फड़की । पटकत कंस करन ते सड़की ॥ अष्टभुजा रथस्थ नभ कड़की । क्रांति विध बहुत
भूकसी भड़की ॥ निरखि कंसकी छाती धड़की । सुन्न समान भई गति धड़की ॥ कहत गरजिरे कंस अभागे । भोकहुं प्र·
गट काल तव आगे ॥ कहि योगिनि निशिहित अति तड़की । विंध्याचलके ऊपर खड़की ॥ दोहा ॥ सुनत दीन भन कंस
अति भगिनी मंदिर जाइ ॥ वंदि छोड़ाइ नवाइ शिर कहत साधु मति ल्याइ ॥ ६६ ॥ हम अति पापी अघके गाहक । मारे सु·
वन आपके नाहक ॥ यह सब करत काल हठि वाधा ॥ क्षमहु कृपाल मोर अपराधा ॥ सुरन कहे ते हम सुत मारा ॥ तिनहूं
गह्यौ अनृत व्यवहारा ॥ ममरिपु कहूं भयो हम जाना ॥ दुहुन कीन्ह सुनि रुदन महाना ॥ वंदि चरन पुनि रुदन सुना·
यो व्याकुल सुदर सदन तब आयो ॥ प्रातबुलाइ असुर समुदाया । सबन मध्य यह वचन सुनाया ॥ कौन सलाह कौ·
न तत वीरा । सो सुनि कहत वीरकी भीरा ॥ हरिकी भय मति करहु नरेशा । तामहं दुर्लभ बालक भेषा ॥ दोहा ॥ गोद्विज
सुर शिशु साधु कहं मारहु खोज कराइ ॥ सहित सहाय नसाय गो सत्य सत्य नरराय ॥ ६७ ॥ कंस कह्यौ यह नीक विचारा
करहु सबन कर अब संहारा ॥ सुनिते काम रूप वनि वनिकै । करन लगे अघ अतिगनि गनिकै ॥ गोद्विज देव साधु शिशु
केरे । भवभय रदन काढ़ि केरेरे ॥ हे नृप इतकी कथा रसाला । सुनहुं जहां जनमे गोपाला ॥ उत्सव भयो नंदगृह जैसो ।

भूधर भाषिसकात नहिंतैसो ॥ सुनिसुत जन्मनंद अनुरागे । उरमहँ अतिही आनँद पागे ॥ जातकर्म विधवत क-
हँ करिकै । द्विजन देतभे आनँद भरिकै ॥ दीन्ही विधवत सरस सिंगारी ॥ गोदसलाख सवच्छ दुधारी ॥ दोहा ॥
कोशभरे लौहे ममनि अन्नतके करिकूट ॥ विप्रन दीनो नंदनृप भई अलौकिक लूट ॥ ६८ ॥ वीनाशंख मृदंग
नगारे ॥ वाजहिं नर्तक नाचहिं द्वारे ॥ वंदीमिलवरनहिं तित ताका । दारकनकघट ध्वजापताका ॥ चंदन
वगर वगर महँ वगरो । महलन चहल पहल सुख सगरो ॥ गो सवत्स मनि मानिक माला । झूलत झूल रसाल
दुसाला ॥ करमहं भरभर कुंकुम थापे । रंगेरोम मधिके सरछापे ॥ नंदद्वार आवहिं गोजूहा । मधिवृष कूद-
त आनँद जूहा ॥ गोसमूह मधिनंद अगारा । कोकरि सकै वरन विस्तारा ॥ वर वृषभान की र्त्तिलै आए । व्या-
लचढ़ विशाल सुखछाए ॥ दोहा ॥ नंदऔर उपनंद तब आए षट वृषभान ॥ भेटकरहिं धरिभेट कहं गावहिं
तान सुजान ॥ ६९ ॥ पहिरे पीत वसन वनमामा । गुंजा मोरपक्ष अभिरामा ॥ वंशीवेत धरे सबग्वाला । आएउ-
र आनंद रसाला । हेरीदेत बजावत ताला ॥ गावत तान सुजान विशाला ॥ शिरपर धरे दूधदधि गगरा । भर्यौगोप
पति मंदिर सगरा ॥ सबते मिलहि मुदित नंदराया ॥ गावहिं नाचहिं सुख सरसाया ॥ ग्वालनंद कहं देहिं वधाई
आजु धन्य बासर नंदराई ॥ सुंदर सुबन वैश बड़ि पायो । दुख सबहिन को दूरि परायो ॥ दिवस आजुको देव
दिखायो ॥ बड़े भागते अवसर आयो ॥ दोहा ॥ व्रज अनूप आकाश मैं उदयो पूरन चंद ॥ सुनि अतिही आनंद

लै बोले बानी नंद ॥ ७० ॥ तुमरीसब आशीस अपारा। भयोमोहिं इहिंकाल कुमारा ॥ सुनत नंदके सदनब-
धाई आईसकल गोपिका धाई ॥ उर उनके आनंद नसमाई। गावत नाचत देत बधाई ॥ सासिसुभग सुरंग
सरसाई। वरमोतिन की मांग भराई ॥ पगपैजेब जेब अतिदेती ॥ करन फूल सोहत द्युति केती ॥ सुंदरसब
सिंगार बनाई। गावत पुनि आनंद बधाई ॥ बहुतक नंद भवन महं आवें। सुतपरतनमन रतन लुटावें ॥
केती पनिपनि लेत बलैया। वारिवारिकै तजैरुपैया ॥ दोहा ॥ भीर भवन भारीभरी शोभा अमित अपार
कहत यशोदहि गोपनिय उरआनंद विस्तार ॥ ७१ ॥ धन्य धन्य दिनहै यहभाई। जनमे सांवर कन्हाई
आई ॥ कंचन कोष मढ़ाऊथारी। सुनि भाषत मोहन महतारी ॥ तुम्हरे कृपा भयो मोहिं ढोटा। नातरु
कर्म मोर अतिखोटा ॥ कहति रोहिणी ते नंदरानी। पूजहु इन्हे विविधि सनमानी ॥ सुनिबल मातबा-
त हरषात ॥ । सबहिन समदत प्रमुदित गाता ॥ देत निछावर अंबर हेमा। प्रगट्यौ परम पुरातन प्रेमा
कृष्ण जन्म सुख कह्यो नजाई। जयजय शब्द होत अधिकाई ॥ दधिकांदव कीनो भरि प्रीता ॥ छिर-
कहिं दूधदही नवनीता ॥ दोहा ॥ बहुत गिरहि दधि कीच में प्रेम प्रगट अधिकाइ ॥ नाचहिं मंडल
बांधिकै शोभा कही नजाइ ॥ ७२ ॥ मागध सूत पुरानिका कांढ़े ॥ गावहिं विरद सरस सुख बाढ़े ॥ तिन्हहि
नंद वरषत भे ऐसे। भादव मास पुरंदर जैसे ॥ भुक्ति मुक्ति रिधि सिद्धि सुहाई। डोलहिं घरन घरन नित

धाई ॥ सुनत कुमार कपिल सुखव्यासा । दत्तपुलस्त हसत परासा ॥ हमहिं आदि आए मति संची । हंसा-
रूढ़ प्रजेस विरंची ॥ वृषचढ़िकै आए वृषगामी । रथचढ़ि रविगज सुर स्वामी ॥ यमचढ़ि महिष वायु ।
चढ़ि खंजन । जानधनद शसि मृगमन रंजन ॥ अनल चले अज शिषि सेनानी ॥ पानीपति झषशि-
त खंगवानी ॥ दोहा ॥ लक्ष्मी आईं गरुड़ पै दुरगासिंह सवार । गो सरूप महि पान चढ़ि आईं हरषि उ-
दार ॥ डोला चढ़िके मात्रिका षोड़श आईं तत्र ॥ शिविका पर वर जोगिनी चौसठ चारु एकत्र ॥ ७३ ॥
वृषभ चढ़े मंगल चलि आए । झषपर बुधवर बुध सरसाए ॥ जीवकृष्ण मृगपर आसीना । गवय चढ़े
मृग सुवन प्रवीना ॥ वनिठनि सनिसनि सुखझख बैठे । ऊंट चढ़े ग्रहद्वै मुदपैठे ॥ मूषक चढ़ि गणेश म-
द पागे ॥ ७४ ॥ मुदित नंद अस्थल अनुरागे ॥ देखि मकुंदहि वृंद अनंदे ॥ परअरविंद सवन शुभ वंदे ॥
अस्तुति बहु विधि करि छवि छाए । निज निज सदन सकल सुर आए ॥ नंदतबै बहुभेद सजाई । कंसहि
जाइ दीन हरषाई ॥ कह्यौ सकल विरतांत सुनाई ॥ आदर कीन्ह विविधि व्रजराई ॥ दोहा ॥ बहुरि मिले वसु-
देवतें कुशल प्रश्न कहं कीन्ह ॥ नंद विघन अति होइहै यह वसु सुरकहि दीन्ह ॥ ७४ ॥ नृप प्रेरित पूतना
सिधाई निजसरूप अति दिव्य बनाई ॥ श्रीनंद मंदिर अंदर जाई ॥ सवन रूप लखि गुन्यौ कुलीना । मनेन
कीना आवन दीना ॥ तुरतहि लीन्ह उठाइ सुहावन । अंक राखि पय लगी पियावन ॥ कालकूट कुचके ।

मथिजना। पीवत पिये पांचहू प्राना॥ मरीपरी करिहाहा कार डगतभयो महिमंडल सारा॥ चूरभए तरके त
रुमारे। योजन डेढ़ अंग विस्तारे॥ ग्वाल ग्वालिनी लखिभए छारा॥ शिशुशिशु कहिकै आतुर धारा॥ दोहा॥
देखेउ क्रीड़त कुंवर कहं निशिचरी के उरबीच॥ लीन्ह उठाइ लगाइ उर तनदृग जलतें सींच॥ गोपाजन गोपुच्छ
तें गोपालहि लैअंक॥ वररक्षा करिवेलगी दहद विघन के शंक॥ ७५॥ कृष्णचंद्र भगवान विश्वपति शिर
वररक्षे॥ प्रभुवैकुंठ उदार कंठकहं श्रीवर रक्षे॥ श्वेतदीप महीप करुन करुना करिरक्षे॥ नवल नासिका य-
ज्ञरूप आनंद मरिरक्षै॥ दोउदृगनगकेहरी अरि अर्दन रक्षाकरैं॥ रसना कहं रघुवंशमनि खर मर्दन रक्षा
करैं॥१॥ अधर अनूपहि सरूपहि नरनारायण रक्षै॥ वरकपोल सनकादि वेदपाराथरण रक्षैं भृकार श्वेते
सुजान भालकहं सानंद रक्षैं॥ सबभूतननें मुनिवर नारद मानंद रक्षैं॥ कपिलकृपाल महान मति चिबुका
माह रक्षाकरैं॥ दत्त विप्र अत्री सुवन उरनिबाह रक्षाकरैं॥ कंधमाहिं हरिधर्मरूप गुनसागर रक्षैं॥ हाथ जनार्द
नदेवज्ञानके आगररक्षैं॥ २॥ कमठ रूपहरि उदर सकल अघनाशन रक्षैं॥ भुजमहं पृथु पृथवी प्रगट पृथु-
सासन रक्षैं॥ धन्वंतर वर वैद्य मनि नवल नाम रक्षा करैं॥ गुह्य माहिं हरि मोहिनी सकल लाभ रक्षा करैं॥
३॥ कटितट प्रगट प्रताप महान त्रिविक्रम रक्षैं॥ पृष्ठदेस महं परमरास वरविक्रम रक्षैं॥ सत्यवती के सुवन सुभ
ग सुंदर पद रक्षैं॥ जानु माहिं बलदेव पराक्रम कीहद रक्षैं॥ दृढ़रूप भगवान हरि जंघमध्य रक्षाकरैं॥ कल्की

गुल्फ गुनज्ञवर अति अवध्य रक्षा करैं ॥४॥ दोहा ॥ कृष्ण कवच यह दिव्य अति चारु फल दातार ॥ प्रथम विष्णु विधिते कह्यो तिन शंभुहि उच्चार ॥ दुर्वासहितिन्हि दीन्ह यह नंद तियहि सोदीन्ह ॥ करि रक्षा इमि दीन बहु विप्रन दान प्रवीन ॥ इतनेहि आए नंदनृप लखि सुनि गुनि भय पागि ॥ कटि तासुतन शस्त्रते आसुलगाई आगि ॥७६॥ जरत सुगंध भई अति भारी । जनहुं जरी बन चंदन भारी ॥ दीन्ह मातु समगति भगवाना दीनबंधु प्रभु बुद्धिनिधाना । तब यह प्रश्न कीन्ह नरराई । कोयह हरीजु असिगति पाई ॥ करत बैर उत्तम पदपावा । मुनि विरंचि सुत बचन सुनावा ॥ रत्नमाल बल की सुतुमारी । इच्छा किय बावनहि निहारी ॥ अैसे सुनहि पियायोदूधा । गुनिहरि तासु मनोरथ सूधा ॥ ऐसेइ होहु दियो बरदाना । माना ताते मातु सभीना ॥ बनि पूतना पूत मति पूता ॥ दीन्ह परमगति अति मजबूता ॥ दोहा ॥ सुनहि पूतना मुक्ति जे परम भक्ति कहं धारि ॥ हरण चंद्र तेते मिलहिं सत्य सत्य व्रत धारि ॥७७॥ शौनक सुनहु चरित हरिकेरो । जाते पाप रहहिं नहिं नेरो ॥ सुनि यह सुनक सुवन मुनि ज्ञाता । बोले बचन विहंसि हरषाता ॥ कहा विदेह प्रश्न पुनि कीन्हा । उत्तर अधिक कहा मुनिदीन्हा ॥ कहत गर्ग उर आनंद ठएऊ ॥ सुनि विदेह यह पूछत भयऊ धन्यभाग मम हे मुनिराया ॥ साधु हरस अध दूरि दुराया ॥ कहिय कृपा करि सह विस्तारा ॥ पुनि का कीन्ह चरित करतारा ॥ सुनि सुनि पुनि पुनि हृदय सराही ॥ कहत महत आनंद अवगाही ॥ तीन मासके भए

कन्हाई। यशुमति कीन्ही विविधि बधाई॥ दोहा॥ असन वसन भूषन कनक दीन्ह द्विजन कहँ दान॥ शं· गायो निज सुवन कहँ पलना राख्यो आन॥ ७८॥ निकट बालकन कहँ बैठाई। काज करन हरिमाइ सिधाई॥ तहाँ रह्यो इकशकट पुराना। तामहँ दानव आइ समाना॥ उत्कच नामा कंस पठायो। बायु भूत मारन हित आयो॥ सर्व भूत पति भूपहि जाना॥ भूतहि गुनि भविष्य अनुमाना॥ मारि चरन तेहि चूरन कीन्हा। तबसो दनुज दिव्य बपु लीन्हा॥ वंदि चरन करि अस्तुति भारी। गयो धाम आनंद विस्तारी॥ शकट शब्द सुनि व्रज जन धाए। मात पिता आतुर चलि आए॥ लरिकनतें पूछहि मति माना। कैसे भयउ शकट भहराना॥ दोहा॥ कहेउ बालकन बचन तब तवसुत चरन प्रहार॥ गिरयो शकट यह भूमिपे सत्य गोप सरदार॥ ७९॥ तिनके बचन न कोऊ माना॥ हरेउ दुरित हर शिशु को जाना॥ अंक लाइ मेटे तन सूजा। दीन्ह दान बहु विप्रन पूजा॥ सुनि बकुलाश्वबचन यह कहेऊ। उत्कच नाम असुर को रहेऊ॥ जो पद परसि परम पद पावा। दुहिन सुवन सुनि वचन सुनावा॥ हिरण्याक्ष कर सुत यह भारी॥ लोमस आश्रम गो अघहारी। तरुन उखारन लागेउ रोसी। शाप दीन्ह द्विज जग तन होसी॥ सुनि सो वंदि चरन छबि छायो। कर संपुट करि वचन सुनायो॥ करिय कृपा क्षमिये अपराधू। मठ दिशि नहिं अवलोकहि साधू॥ दोहा॥ सुनि लोमस भाषत भए अतिही आरत जोहि॥ वैवस्वत मनुराज में कृष्ण देहिं गति तोहि॥

हरि प्रभाव ते सोउ गति पायो चरित श्याम को सुनहुं सुहायो ॥ अंक लिए सुत यशुमति माई। बैठी दिवस एक अं
गनाई। भयो भार मोहन को भारी। जननी दीने अवनि उतारी ॥ आँगन महँ धरि कुँवर कन्हाई। आय आपने
मंदिर जाई ॥ तेहि छन अति प्रचंड चलि आवा। तृनावर्त्त खल कंस पठावा ॥ लैगो हरिहि पूरि अँधियारी।
सूझ परै नहिं हाथ पसारी ॥ आई यसुमति विगत बवंडर। विन गोविंद लख्यो सो मंदिर ॥ खोजत बालक
व्याकुल भारी। उड़िगो मोहन कहत पुकारी ॥ दोहा ॥ सुनि धाईं ब्रज गोपिका ताडत उरदुख पीन ॥ हा मो
हन सोहन कहत खोजत महत मलीन ॥ ८१ ॥ तृनावर्त्त लख योजन गयऊ। शिशुहिं कंधपर राखत भयऊ
पटकन चह्यो क्रोधतन छायो। जगन्नाथ गहि गरो दवायो ॥ त्यागु त्यागु भो कहत अभागो। तुरत प्रानक-
ढि ऊरध भागो ॥ फिरेउ बहुरि हरि बदन समाना। गिरेउ धरनि तन सिखर समाना ॥ फटी भूमि अरु शब्द
अपारा। तापर गोपिन कुँवर निहारा ॥ तुरत उठाइ यशोदहि दीना। कहत बचन सब नारि प्रवीना ॥ तुमहिं
प्रीति नहिं नेक यशोदा। सुवन अकेल उतारेउ गोदा ॥ तो कहँ भयो अनोखो ढोडा। अपनो भाग लखत
नहि मोटा ॥ दोहा ॥ कहइ यशोदा सखिन सों कहा कहूँरी वीर ॥ शिशु भो भारी शैल सम धरि न सकी तन
धीर ॥ ८२ ॥ गोपी कहहिं बचन समुझाई। तुमहूं बोलत बचन बनाई ॥ कहँ शिशु सुमन समान सुजाना
[illegible] ॥ दीन्ह द्विजन कंचन हरषाई ॥ [illegible]

लै कुमार निज गोदा। बहुत बार दृग कहत यशोदा॥ एक सुवन बहु दिन महँ पायो॥ तासु करम विधि कहा व-
नायो॥ नित यह बचन कालके मुखतें। अभय कहां चलि बसिये सुखतें॥ तन मन धन जन सब सुत काजा॥
कोउ विधि जीवै व्रज सिरताजा॥ देवालय करिहौं हरिपूजा॥ सुत हित तजि मम हित नहिं दूजा॥ दोहा॥ एक
आँख अरु एक सुत दोऊ एक समान॥ ताहू मैं सुख ना सखी कृपा करहु भगवान॥ ८३॥ ताछिन द्विजगन
आए ज्ञानी॥ व्रजपति पूजित बोले बानी॥ नंद यशोदा सोचन करहू। हम रक्षत मन नेकुन डरहू॥ इमि
कहिलै पल्लव कुशपानी। छिरकि मंत्र बोले बिज्ञानी॥ हरिहि ध्याइ उर आनंद पागे। रक्षा रुचिर करन त-
हँ लागे॥ दामोदर पद मातु समाना। उर बिष्टरश्रवा भगवाना॥ उर हरि नभि पूर्ण तम अति मति। कटि रक्ष-
हि कृपाल राधापति॥ पीत बसन उर पातु महाना॥ पद्म नाभ प्रभु उदर बखाना॥ पृष्ठ असुर अर्दन भुज
गिर धर। द्वारकेश शिर मुख मथुरेश्वर॥ दोहा॥ सब रक्षहि भगवान तव बुध निधान सुर त्रान॥ यह रक्षा जो
करिहि नर होइ आशु भय हान॥ ८४॥ लक्ष गऊ कंचन दस गूनो। रतन सहस नव एक न ऊनो॥ दियो द्वि-
जन व्रजराज उदारा। कीन्ही विविधि जाति जेवनारा॥ जनक कहत सुनु अति गति पाई॥ त्रिनावर्त्त कोहो
मुनिराई॥ तब नारद सुमिरत सो कथा। बर विरतांत सहित सब यथा। पांडु नगर पति वैष्णव धर्मी। ना-
म सहस चष सुंदर कर्मी॥ रेवांतट सो करत बिहारा। लीन्हे संग सखी सुख सारा॥ लखि दुर्बासहि सीस

न डार्यौ ॥ असुर होहु यह मुनि उच्चार्यौ ॥ ताते वंदित बहुरि बखाना । देहै मुक्ति कृष्ण भगवाना ॥ दोहा
सोऊ तिनके शापते कृष्ण कृपा कहँ पाइ ॥ गऊ लोक गवनत भयो श्याम सुनत सरसाइ ॥ ८५ ॥ एकवार शिशु
गोद उठाई । शीस दयो मसि विंद लगाई ॥ आनन ऊपर सोहत कैसो । शशि पर मनहुं भृंग बर बैसो ॥ प-
यहि पियावति मातु यशोदा । वालु बलावति सुंदर गोदा ॥ तेहि क्षन हरि तहँ लीन्ह जभाई । मुख मधि
भई निहारति माई ॥ विश्व सकल नंद घरनि निहारा ॥ मन महँ संशय भयो अपारा ॥ सुतके मुख में जानि
वलाई । भूतल गिरी यशोदा माई ॥ उठी बहुरि मन माह विचारा । सूते हम यह सपन निहारा ॥ हे नृप अ-
हो भाग्य नंदरानी । नहि रसना तें जाइ वखानी ॥ दोहा ॥ भूप कह्यो वसु द्रोन यह कौन तपस्या कीन । जाते
ऐसो सुत भयो सुनि मुनि कहत प्रबीन ॥ ८६ ॥ बसु बसु महँ जो द्रोन सुजाना । धारा तासु त्रिय धरा समाना ॥ सुत हित
मंदिर गिरि पर सोऊ । लागे करन कठिन तप दोऊ ॥ अर्बुद बरष तपे तप भारी । वर मांगहु भाषेउ मुखचारी ॥ तबते उ-
भय उभय पदवंदी । कहत उभय करजोरि अनंदी ॥ परि पूरन तम कृष्ण कृपाला तिन सम सुत मोहिं दीन दया-
ला ॥ दोउन कर प्रन वर खगगामी । वर वर चहहिं हमे श्रियस्वामी ॥ विधि तव कहेउ कठिन वरएहू । होइहि-
पैन नेकु संदेहू ॥ द्रोन नंद अरु धरा यशोदा । भए खिलाए जिन्ह हरि गोदा ॥ दोहा ॥ नारायण हमते कह्यो य-
ह सिगरो आख्यान ॥ शैल गंध मादन सिखर गुन निधि कृपा निधान ॥ ८७ ॥ अब कह सुनिवे की अभिलाषा

तब बहुलाश्व बचन बर भाषा ॥ कृष्ण चंद अति रसिक रसीला । बहुरो कीन्ह कहा तिन लीला ॥ सुनिबो-
ले मुनि नारद आरज्ज । एक समय महं गर्गा चारज्ज ॥ शैशवि पठाए गोकुल आए । नंद अनंदित सीस नवाए
पूजि परम आसन बैठाई । बोले बचन विहंसि ब्रजराई ॥ भेसंतुष्ट पितर सुर मेरे । तव चरनार बिंद के हेरे
नाम करन लरिकन कर करिए । कृपा कटाक्ष प्रगट दुख हरिये ॥ सो सुनि गर्ग बखाने उहेता । चलहु नंद उठि-
कै संकेता ॥ दोहा ॥ नंद यशोमति सुतन सह द्विजबर बिप्रा कांत ॥ नाम करन कहं करन हित गेअस्थ-
ल एकांत ॥ ८८ ॥ पूजि हिरद मुख गर्ग सुहाए । सुंदर तेहि छन बचन सुनाए ॥ नाम रोहिनी नंदन केरे ॥ क-
हत कछुक न अहहि घनेरे । रमै सबन महं सबन रमावै । नाम राम ताते श्रुति गावै ॥ सब कर शेष शेष ताही-
तें ॥ बलधर ताते बल जग गीतें । यासु गर्भ संकर्षन भयऊ । ताते संकर्षन कहि ठयऊ ॥ नाम सुनहु अब-
अपने सुतको । सब विधान सुख सुखमा उनको ॥ को कहि सकै नामको पारा । पै कछु कहत बुद्धि अनुसारा ॥
नाम कामदायक फलचारी सबतें श्रेष्ठ सकल सुख कारी ॥ दोहा ॥ कमला कांत ककार सो रघुकुल ति-
लक रकार ॥ षट् गुणयुत सुत दीप पति सो सकार निरधार ॥ श्री नरसिंह नकार कहि यज्ञ अकार बिचा-
रि ॥ नर नारायण विंदु है कृष्ण पूर्ण अवतार ॥ ८९ ॥ यह पुरान युग युग अवतारी । श्वेत रक्त पीरे तन धारी
द्वापरांत वपु श्यामल ताको । ताते कृष्ण नाम है याको ॥ बसु इंद्री तिहि नित्य चलावै । ताते बासुदेव श्रुति गावै

राधाजो वृषभानकुमारी। सोइनकी अतिही प्रियनारी। कह त्रैलोक्य नाथ भगवाना। परि पूरण तम तेज-
निधाना॥ इत उत अहइ समान समीला। करिहै उभय अतिहि हित लीला॥ ताते राधा पतिभो नामा।
प्रगट भए पूरण जग कामा। धन्य भाग अवनंद तुम्हारे। ऐसे बारे दृगन निहारे॥ यहि विधान नन्दहि समु-
झाई। चले गरग मुनि परग बढ़ाई॥ यमुना तट मन आनंद पागे। बर वृषभान सदन अनुरागे॥ वृषभ
भानु सम भानु प्रकासा। सीस छत्र अरु पुस्तक पासा॥ एहि विधि गर्गहि गोप निरेखी। उठे हृदय आन
न्द विशेखी। बदि पदन आसन बैठाई॥ पूजहि करत भए हरषाई॥ परि करमा करि आनंद पागे। जोरि हा-
थ यह भाषन लागे॥ धन्य भाग मुनि आजु हमारे। तुम्हरे चरन सरोज निहारे॥ सुकृत कोठि जन्मनके जाहीं
दरशन होहिं साधु के ताहीं॥ दोहा॥ हे प्रभु मेरी कन्यका कोन होइ पति तासु॥ करिसु विचार उदार मति
कीजै आसु प्रकासु॥ ६१॥ सो सुनि गर्ग मुदित सुख भीनो। करते वृष रवि करगहि लीनो॥ गए कलिं-
दी तट छवि साजे। गोपराज द्विजराज विराजे॥ तब मुनि गर्ग स्वर्ग गुरु भ्राता। बोले बिहसि बिच-
रण बाता॥ यह हम कहत गरू सन कहियो। मनके मनही महँ चहँ रहियो॥ गोलोकेश कृष्ण गुरण
धामा। भए नंद सुत पूरन कामा॥ ताते बर बर बरनहि अहई। सुनि अति मुदित वृषभ रवि कहई।
अहो भाग्य है यशुमति केरो। ऐसो आत्मज अंगन हेरो॥ कहिय कृपा कर आनंद छाये। किहि हित

कृष्ण घरा पर आए ॥ दोहा ॥ सुनि गुनि उरमें गर्गमुनिपु निभेकहतउदार॥ हरन हेत भव भारके कृष्णा
लीन्ह अवतार॥ राधा तिन्हकी शक्ति पूर्णानमा आनंद अति ॥ सब गुन गनकी पंक्ति जाहिवखान हि संतश्रु-
ति॥ ६२॥ कीरति कहं वृषभान उलायो। मुनिवरको सबकह्यो सुनायो॥ करिकै मनो सत्य अनुमानी। बोलेजी-
व अनुज अति बानी॥ आपु कराइय मुदित विवाहू। मुनिभे कहत गर्ग मुनि नाहू॥ हम न सकत यह व्याह
कराई। पैवह अस्थल देत बताई॥ वट भांडीर निकट महं होई। अवधि इनन्हकी इच्छा सोई॥ तेहिक्षन म-
गल साजहि संची। जाइ करैहै व्याह विरंची॥ जासवते परदुर्लभ गायो। ताहि स्ववश व्रज वासिन पायो॥ ध-
न्यधन्य तुम सब व्रज वासी। आनंद रूप भक्तिके रासी॥ दोहा॥ सो सुनि दोऊ मुदित ह्वै जानि प्रभाव अ-
पार॥ पूछत भे श्री गर्ग सो उर आनंद निरधार॥ ६३॥ राधा शब्द अर्थ मोहि भाषो। सो सुनि गर्ग कहन अ-
भिलाषो॥ मोहि यह कथा कह्यो नारायन। गिरवर परशुज्ञान पारायन॥ रमा रकार अकार सुलीला। धा-
रा धकार आइ उनि मीला॥ अविर जाए मिलिकै ह्वै चारी। राधा उक्ति होत हरि प्यारी॥ चार शक्ति मिलि
एक इकट्ठा। राधा रसिक रूप की गट्ठा॥ राधा कृष्ण कहहिंजे प्रानी। तिन हिन दूर सकल सुख खानी॥
सुनि कन्या को सुभग प्रभाऊ। भे अति मुदित गोप कुलराऊ॥ गर्गी चारज सदन सिधाए। नृप वृष भानु
मोद अति पाए॥ दोहा॥ एक दिवस सुत अंक लै गऊ चरावत नंद। गे चलि वट भांडीर तर वृद्ध वैस आनंद

९३॥ तेहि छन भो अधार कटु वाता। घन घेरे दिन मनिन दिखाता॥ तहँ भगवान कृपाल कन्हैया। रोव-
न लगे टेरिकै मैया॥ जनक कहे वहु नेकुन माना। तव हरि सरन कहेउ गो त्राना॥ तेहि छन भानु कोटि स-
म जोती। तम नाशत पायल दुति होती॥ श्री राधिका तहाँ चलि आई। सानँद तिन्हहि लख्यौ नँदराई
नीलांवर महँ तन छवि कैसे॥ घन छपि झकत छपा कर जैसे॥ चूड़ा मनि चूड़ा पर छाजै। नील शैल पर
जिमि रवि राजै॥ उर महँ हार क तार सुहाई। नग अमोल दुति वरनिन जाई॥ दोहा॥ रूप राशि गुन आ-
गरी नवल नागरी वाल॥ रूप अनूप उजागरी पहुंची तहां उताल॥ ९५॥ उठि व्रज नायक सीस नवावा॥
कहत वचन उर सुख अधि कावा॥ यह पुरुषोत्तम पति तव अहई॥ हे वृष भान सुता श्रुति कहई॥ गर्ग-
कीन्ह मोहि गत संदेहू। मम करते नित कर पति लेहू॥ घर पहुंचावहु जहँ महँ तारी॥ रुदन करत शिसु-
अरु अधियारी॥ कह राधा मागहु जो चहई॥ मोर दरश अति दुर्लभ अहई॥ सो सुनि नंद अनंद महाना
वंदि वंदि यह वचन वखाना॥ यह माँगत दीजै दुखखोई॥ भक्ति चरन युग युग जग होई॥ सो सुनिकै पु-
नि वोली राधा। तुम कहँ भक्ति होइ गग वाधा॥ दोहा॥ वंदि चरन कह नंद तव गे गृह सहित अनंद॥ वट
तट राजत राधिका नंद नंद व्रज चंद॥ ९६॥ तहँ गोलोक भूमि तव आई। रतन मई मानिक छवि छाई॥
वृंदावन भो दिव्य सरूपा। जात रूपके वृक्ष अनूपा॥ कल्प वृक्ष से पादप नाना॥ तापर करहिं कीर कल

गाना ॥ यमुना की सब सिढ़ी सुहाई ॥ भई कनक मय रतन जड़ाई ॥ गोवर्द्धन मनिमय दरसाना । निरभार दरी शृंग मय दाना ॥ दरी जरी पन्नग तन भारी ॥ हरी हरी झांई महि पारी ॥ भोनिकुंज सुख पुंज सुभाना ॥ मंडप मंडन मंडित नाना ॥ फूले सब तरु सुखद समीरा । कूजहि केकी कोकिल कीरा ॥ दोहा ॥ घट अक्षत दुर्वादिया दधि पूगी कीलाल ॥ सामग्री सब व्याह की धरी तहां भूपाल ॥ ८७ ॥ तबै किशोर भये मन मोहन ॥ पीतांबर कटि तट अति सोहन ॥ वंसी कर मह अति छवि प्यारो । मन मथ को मन मथिवे वारो करते कर कह पकरि सुजाना ॥ चले मुदित मंडप अस्थाना ॥ सिंहासन अति उच्च अपारा ॥ बैठे तापर उभै उदारा ॥ शोभित सुंदर केशव कामिनि ॥ जिमि सुमेर परघन सह दामिनि ॥ जिमि चंद्रिका चंद्र के साथा ॥ सोभित भान सुता व्रज नाथा ॥ तेहि क्षन चतुर चतुरमुख आये ॥ प्रमुदित चित्तन सीस नवाये ॥ चारु वदन लगे महि कैसे ॥ झुकी डार महं शुति फल जैसे ॥ दोहा ॥ खड़े भए कर जोरि पुनि भरे हृदय आनंद अस्तुति तहं लागे करन जय राधा नंदनंद ॥ + ॥ ८० ॥ + ॥ राधा जगत अनादि अनादि कृष्ण भगवाना ॥ उभय सरूप अनूपहि रन्य कोटि के त्राना ॥ जब जब जैसो रूप धर्यो तुम कृपा निधाना ॥ तब तब तुमरे संग राधिका प्रगट सुजाना ॥ जब आप भए गोलोक पति तब यह लीला बाल वर ॥ वैकुंठ नाथ जब रूप धरि लक्ष्मी इन को नाम वर ॥ १ ॥ जब तुम रघुकुल तिलक भए तब यह वैदेही ॥ भूमा के अवतार नाम कमला

अस्नेही ॥ जब प्रभु यज्ञ सरूप दक्षिना इन कोनामा ॥ नर नारायण मुनिवर तहाँ शांति कहि वामा ॥ ब्रह्म रूप जब तु-
म भए प्रकृति रूप तब राधिका ॥ तुम सगुन तबै माया भई सकल काज की साधिका ॥ २ ॥ चार रूप जब भये श-
क्ति तब चारि विचारी ॥ जब गजराज विराट धरा तब यह निरधारी ॥ श्याम गौर द्वै रूप अहै सिरमौर हमारे ॥
नंद किशोर सजोर वेद वंदित निरधारे ॥ गोलोक नाथ गुन थोक प्रभु सत चित्त सुचित्त कृपा करन ॥ जय द्वैत
रूप अद्वैत प्रभु शरण शरण गिरवर धरन ॥ ३ ॥ दोहा ॥ सदा नाथ गोलोक के लीन्हो महि अवतार ॥ हु-
कुम होइ तो करौं मैं इत विवाह उपचार ॥ ९९ ॥ सवैया ॥ हरजू के कहे मुख चारि तबै सब व्याह विधान क-
रावत भे ॥ वर वेदी करी मधि अग्नि धरी सुरुवा भरि आहुति नावत भे ॥ वर मंडप मंडल मध्य लसैं दुल-
हा दुलही छवि पावत भे ॥ मुख चार उचारत मंत्र सबै श्रुति चार विचार सुनावत भे ॥ १ ॥ दोहा ॥ सात प्रदक्षिन अ-
ग्निकी कीन्हो राधा कृष्ण ॥ शोभा सिंधु सुतीर्थ महं मग्न दुहिन अति धृष्ण ॥ १०० ॥ पीढन पर दोउन बैठाए ॥ तहँ
ऐसो शुभ रूप बनाए ॥ हाथ दुहुन के ग्रीव धराए ॥ पाँच मंत्र हरिते पढ़वाए ॥ तहँ वेधा वर वेद विधाना ॥ पितु
सम दीनो कन्या दाना ॥ कुसुम देव बरषहिं तेहि काला ॥ निर्तहिं सकल देवकी बाला ॥ विद्याधर किन्नर अरु चारन
लागे जय जय शब्द उचारन ॥ बीन मृदंग शंख सहनाई ॥ दुंदुभि देव बरवानहिं गाई ॥ जय जय शब्द अब्द अति
होई ॥ बरषत कुसुम पुरंदर सोई ॥ दोहा ॥ वर माँगहु ब्रह्महि कह्यौ मुदित कृष्ण गोपाल ॥ भक्ति देहु याँचत भए

श्रुति विशाल श्रुति भाल ॥ १०१ ॥ एवमस्तु भगवान बखाना ॥ कीन्ह दंडवत प्रजा प्रधाना ॥ गए भगवन चलि मुदित विधाता ॥ तब चरित्र कीनो सुर त्राता ॥ हरि कर कीर राधिका लीनो ॥ निज गिरास भगवानहि दीनो करिकै इहि विधि दूधा भांती ॥ चले कंठ धरि भुज वर भांती ॥ कर छोड़ाइ भागे भगवाना ॥ कंहेउ पकर मोहिं तबतै जाना ॥ रहे लता की ओट लुकाई ॥ राधा पकरि लीन्ह हरि जाई ॥ मोहिं पकरि कहि हष रविकन्या ॥ धाइ चली चपला सम धन्या ॥ खोजत पाछे चले मुरारी ॥ कहत दरस रस प्यारी प्यारी ॥ पै नखोज राधाकी पाई ॥ आपुहि हँसत चली सो आई ॥ दोहा ॥ रमत राधिका रमन रुचि समन सकल संताप ॥ रूप भवन रति रणदमन मदन मदन करि थाप १०२ ॥ रास चौतरा पुनि चलि आए ॥ रमन लगे दुख शमन सुहाए ॥ नाना भांति विहार विहारे ॥ चले प्रिया सह नंद दुलारे ॥ कंदर अंदर उतरि हौ पाला ॥ कीन्हेरास विलास रसाला ॥ जुगल रूप व्रज भूप अनूपा ॥ सुंदर सोहति सरस सरूपा ॥ वारिधरसे विहार के काजा ॥ विहरत व्रजरानी व्रजराजा ॥ शतदल कमल प्रिया को ताही ॥ लै मोहन भागे जल माहीं ॥ इतसो वेरगु वेत्रपत्र पीतहि ॥ लैभागी निज जान सुवीतहि ॥ मांगत नाहि पुकारि मुरारी ॥ जावलय देहु कह्यो यह प्यारी । दोहा दोउन कह दोउन दियो हियो कियो एकत्र ॥ चले मुदित भांडीर वट लियो परम सुख तत्र ॥ १०३ ॥ तहं राधा कर कीन्ह सिंगारा ॥ उरमहं गथे अनेगन हारा ॥ चोटी गुही वसन पहिराए ॥ अंग अंग भूषन परम

वनाए॥ हरि सिंगार हित उठी लड़ैनी॥ चली मुदित मन फूल वढ़ैनी॥ नव मकंद मे वाल सरूपा॥ तजि किशोर वपु व्रजकुल भूपा॥ नंद दियो जिमि तैसेइ छोटे॥ रुदन करत धरनी पर लोटे॥ सोलखि कै वृषभान कुमारी॥ कीन्ह विलाप ताप गहि भारी॥ लखि इमि तेहि मन माह विचारति॥ नभ भारत यह भई पुकारति राधे अवहि जाहु गृह आछे॥ ह्वैहै तव मनोर्थ सव पाछे॥ दोहा॥ सुनि राधा सिसु लै चला गोकुल और अमंद॥ दीन्ह यशोमति गोद मै कह्यो कि दीनो नंद॥ १०४॥ कहत भई यसुमति महतारी॥ धन्य धन्य वृष भान दुलारी॥ विसुई की तुम अति भय टारी॥ होइहि तव कल्यान दुलारी॥ विरा भई यशुमति तें प्यारी॥ चली हृदय पति मूरति धारी॥ सरस प्रेम राधा वनवारी॥ सुनत पढ़त पावत फल चारी॥ राधा केशव विपिनि विहारी॥ करिन सहित रविसम तमहारी करत केलि नंद सदन मुरारी॥ घुटुरुन चलत घुंघुरु झनकारी॥ कछु कछु कहत सुवोल वकारी॥ रासभारि संग सुभग वकारी॥ दोहा॥ देखत वाल विनोद कहँ हलधर जननि यशोद मोदन सहित आँगन फिरत कवहु विराजत गोद॥ १०५॥ कटि कर धनी कनक की सोहै जाहि देखि दामिनि दुति मोहै॥ व्रज वालक मिलि लोटहिं अँगना॥ सिर चोटनी वनी कर कगना॥ धूरि भरो तनसोहै सघना॥ वगा पायल अरु उत्तम वघना॥ लावत कंठ कवहु नंदरानी॥ चलत पकरि करि अंगुरी कानी॥ कवहू चलत दौरि कछु पगतें॥ गिरिके उठत धूरि भरि अँगतें॥ पीत झगा तन सुंदर सोहैं॥

लखि टोपी गोपी मन मोहै ॥ कनक रतन के भूषन भारे ॥ अंग अंग दुति दुगुन निहारे ॥ लोटहिं धरनि पलोट-
हि वारे ॥ गहहिं छाह व्रजराज दुलारे ॥ दोहा ॥ नंदरानी लै बालकहि जात भई हरि पौरि ॥ डरि भाजे रोदन क
रत पकरि लीन पितु दौरि ॥ १०५ ॥ आवत जात रहहिं व्रजरानी ॥ एक वार आई तेसारी ॥ बोली वचन यशो
दहि जोई ॥ याहि दृष्टि कोउकी नहि होई ॥ दोय दांत अति सुंदर आए ॥ ऊपर के अतिही छवि छाए ॥ दोउ
मामाके ऊपर भारी ॥ सोन याहि यसुमति महतारी ॥ ताते सुतते दान करैये ॥ जाते दुख कह दूरि दुरैये ॥ सो
सुनिकै रोहिणी यशोदा । सुत हित दान दीन भरि मोदा ॥ इहि विधान दोउ व्रजपति छैया ॥ फिरन लगे
व्रज लखहि गो गैया ॥ सवल तोक मंगल श्री दामा ॥ इन संग फिरहि राम घन श्यामा ॥ दोहा ॥ एक समय ला
लन सहित ग्वालन कीन्ह विचार ॥ वालन के घर जाय कै तालन खोलि अगार ॥ १०६ ॥ खाहु दूध दधि माख
न मठ्ठा ॥ चले सोचि सव लैकर लठ्ठा ॥ सव समाज सव होइ इकठ्ठा ॥ लूट्यौ दूध कियो अति ठठ्ठा ॥ प्रभावती
उपनंद कि नारी ॥ आई देन उराहन भारी ॥ दधिकी कमी न तुमरे हमरे ॥ पै गुपाल संग वालक सगरे ॥
जव हम देत लेत नहि छोरा ॥ पाछे आइ करत भंड फोरा ॥ जौ कछु कहहु देइ तौ गाली ॥ भो अव निपट
कुचाली आली ॥ व्रजाधीश कोहै यह ढोटा ॥ करत कर्म चोरी अति खोटा ॥ सुनि दोउ मात तात नंदराया ॥ हरि
हल धरहि वहुत समुझाया ॥ दोहा ॥ कोटि गऊ हमरे सदन कमीन केशव नेक ॥ किहि हित चोरी करत

तुम निर्भय गहत कुटेक ॥ १०६ ॥ तव सुत ममसुत भेदन अहई ॥ खावै देहु जौन सो चहई ॥ पुनि जो करिहै ऊध-
म वैसी ॥ तौ मारहुँगी लखियत ऐसी ॥ जब सो गई नारि चलि सदना ॥ गेतव ताग्रह मोहन मदना ॥ सून-
सदन अति ऊंचे भाजन ॥ लखि विचार करि सहित समाजन ॥ ऊखल पर इक ग्वाल चढ़ाई ॥ ताकाँ पेचे
चढे कन्हाई ॥ लकुटि मारि इक छिद्र वनायो ॥ बहत धार मुख पियत सोहायो ॥ तेहि छिन चली प्रभाव-
ति आई ॥ भाजे सव इक गहे कन्हाई ॥ गहिलै चली परम रिस वाढी ॥ मेघ घटा सम घूंघट काढी ॥ दोहा ॥
मात मारिहैं जानि हरि लीला करी रसाल ॥ वाल भए तावालके माया करि गोपाल ॥ १०८ ॥ सो नंदरानिहि टेरि
वखाना ॥ आज कीन्ह उत्पात महाना ॥ ॥ मैं ह्याल्याई सुवन सुजानी ॥ सुनि लषि हसि भाखत नंदरानी ॥
तोरो सुत कै मेरो वौरी ॥ आज काल तोहिं कहा भयोरी ॥ सो अंवर उठाय अवरेखा ॥ लाजत उरमहँ भई विशे-
खा ॥ चकृत कहत कहा यह ख्याला ॥ चली भवन सकोच वश वाला ॥ नंद रोहिणी अरु नंदरानी ॥ हँसत प-
रस्पर संशय आनी ॥ मग महँ निज वपुधरि भगवाना ॥ प्रभावती प्रति वचन वखाना ॥ जोतैं पुनि गुन क-
है हमारो ॥ तोमैं ह्वैहौं खसम तिहारो ॥ दोहा ॥ सो सुनिकै निज गृह गई सो अवला तेहि काल ॥ घर घर
दधि चोरत फिरत माखन चोर गुपाल ॥ १०९ ॥ श्याम मनोहर सुंदर गाता ॥ वाल चंद्र सम दुति सुख दाता ॥ वल
वालकन सहित वनवारी ॥ गोकुल गोकुल गोप विहारी ॥ नव उपनंद नंद पुनि तेते ॥ पट वृष भान गोप अरु


Garga-sam

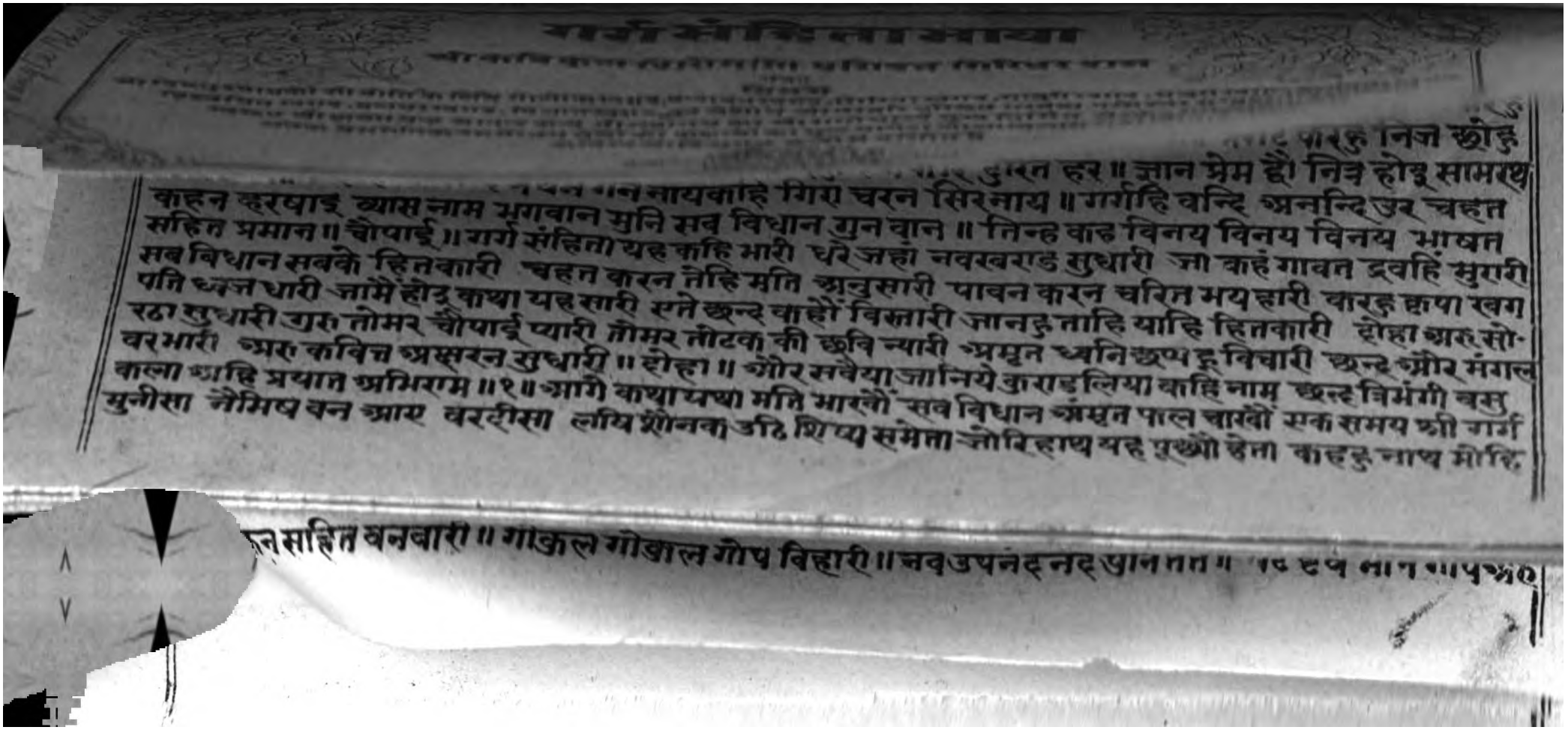

गर्ग संहिता भाषा

[illegible] पारहु निज छोहु
[illegible] दुरित हर ॥ ज्ञान प्रेम द्वौ नित्र होइ सामरथ
[illegible] नायकाहि गिरा चरन सिरनाय ॥ गर्गहि वन्दि अनन्दि उर चहत
कहन हरषाइ व्यास नाम भगवान मुनि सब विधान गुन वान ॥ तिन्ह कह विनय विनय विनय भाषत
सहित प्रमान ॥ चौपाई ॥ गर्ग संहिता यह कहि भारी धरे जहां नवखण्ड सुधारी जा कहं गावत द्रवहिं मुरारी
सब विधान सबके हितकारी चहत करन तेहि मति अनुसारी पावन करन चरित भयहारी करहु कृपा खग
पति ध्वज धारी जामें होइ कथा यह सारी एते छन्द कहौं विस्तारी जानहु ताहि याहि हितकारी दोहा अरु सो-
रठा सुधारी गुरु तोमर चौपाई प्यारी तोमर तोटक की छवि न्यारी अमृत ध्वनि छप्पहू विचारी छन्द और मंगल
वर भारी अरु कवित्त अक्षरन सुधारी ॥ दोहा ॥ और सवैया जानिये कुण्डलिया कहि नाम छन्द त्रिभंगी वसु
काला अहि प्रयात अभिराम ॥ १ ॥ आगे कथा यथा मति भाखौं सब विधान अमृत फल चाखौं एक समय श्री गर्ग
मुनीसा नैमिष वन आए वरदीसा लखि शौनक उठि शिष्य समेता जोरि हाथ यह पूछ्यौ हेता कहहु नाथ मोहि

[illegible]न सहित वनवारी ॥ गोकुल गोकुल गोप विहारी ॥ नव उपनंद नंद [illegible]

जेते ॥ धन्य भाग सबके नँदराई ॥ जिन्ह महँ विचरहिं कुँवर कन्हाई ॥ सुनि महिपाल कहै हरषाई ॥ इनके ना-
म कहो मुनिराई ॥ किए नँद उपनँद वृषभानू ॥ सोइ मुनि कहत गूढ़ गुन ज्ञानू ॥ श्रीधर सीश विमल गय मं-
गल ॥ रोग जीत सुर तापन अति भल ॥ रंग वल्लि पति मंगल ऐना ॥ एनव नंद दूसरे हैना ॥ दोहा ॥ वीतिहोत्र
श्रुति अग्नि भुक गोपति श्रीकर शांति ॥ पावन शांव व्रजेश एनव उपनंद सुदांत ॥ ११० ॥ भार्गव शुक्ल पतंग
नीति वित ॥ पुनि गोपेष्ट दिव्य वाहन हित ॥ एषट वृषभ दिनेश बखाने ॥ गऊ लोकके सकल सयाने ॥
नंद तहां के वेत्र धरैया ॥ चौकी द्वार रूप अधिकैया ॥ ए उपनंद बखाने जेते ॥ वंशी मोर पक्ष धर तेते ॥ गो पुरके सु
कोट वरदारा ॥ है उपनंद भूमि भरतारा ॥ एषट जे वृषभान गनाए ॥ तेनि कुंज रक्षक महि आए ॥ हरि इच्छा सब
को अवतारा ॥ आइ भूमि सुख लीन्ह अपारा ॥ हिलि मिलि कीन्ह कृष्ण संग क्रीडा ॥ जे लखि भई सुंरन कहँ
व्रीडा ॥ दोहा ॥ प्रभुता इन्हके भाग्य की हम कहि सकत न तात ॥ सुचित सुनहु हरि सुजस कह बहुरि भई
जो बात ॥ १११ ॥ माटी हरि खाई एक वारा ॥ यसुदहि आइ अनंत उचारा ॥ लै लकरी कर पकरि बखाना ॥ के-
हि हित मृदभ षी अज्ञाना ॥ मोहि बलदेव कहा यह आई ॥ तेरी सिगरी कान्ह ढिठाई ॥ सो सुनिकै भगवान
बखाना ॥ झूठ कह्यौ बल सकल सुजाना ॥ ज्यौं परतीति होइ नहिं माता ॥ तौ मम लखहु वदन हरखाता ॥ लषन
लगी सुख यसुमति सुतको ॥ निरख्यौ ब्रह्म अंड अदभुतको ॥ सात दीप नवखंड निहारे ॥ व्रज गोकुल निज

सदन सुभारे ॥ तुरतहि नयन मूंदि निजलीनो ॥ सभय महत शंका उर कीनो ॥ दोहा ॥ हरि मायाते बातसो मा-
यहि गई भुलाइ ॥ इहि विधि क्रीडत कृष्ण ब्रज लीला बरनिन जाइ ॥ ११२ ॥ एक दिवस उठिकै नंदरानी ॥
आनि मथानी सुन्दर पानी ॥ दही मथन लागी परभाता ॥ लखि लखि सुतहि मुदित अति माता ॥ नाच
त सनमुख यसुमति ढोटा ॥ बाजत किंकिनि घुंघुरू छोटा ॥ मांगत माखन चाखन काजा ॥ लाखन बात क
हत ब्रजराजा ॥ दीन नहीं रिस कीन किशोरा ॥ लकरी मारि कमोरी फोरा ॥ गहन लगी जननी हरि भागे ॥
पाछे यसुमति बालक आगे ॥ जो योगी खोजे नहिं पावैं ॥ सो कियसोमति के कर आवैं ॥ तदपि भक्त वत्स-
ल पकराए ॥ गहि यसुमति बहु विधि धमकाए ॥ दोहा ॥ बांधन लागी सो रसी कसी कमर मन माहिं ॥ फं
सी असी लखि जेवरी हंसी कीन्ह हरिताहि ॥ ११३ ॥ जबै लपेटै तबसो छोटी ॥ व्याकुल जननि अवनि महं
लोटी ॥ तब उर दया दया निधि ल्याए ॥ आपहि ऊखल मध्य बंधाए ॥ विधि वृष केतु रमा मरयादा ॥ को
उपर नहि असभयो प्रसादा ॥ जो यसुमतिहि भक्ति फल साधा ॥ मुक्ति करहिं निज करतें बांधा ॥ तिहि
छन आंई सिगरी गोपी ॥ देखि यशोमति ऊपर कोपी ॥ बोली वृद्ध वधू प्रति बानी ॥ नंदरानी अब कह बौरानी
हम गृह फोरहिं शिशु बहु भंडा ॥ तिन हिन देत नेक कोउ दंडा ॥ तुम ह्वै वृद्ध कौन मति कीन्हा ॥ थोरे हेतु म-
हा रिपु लीन्हा ॥ दोहा ॥ जहं बालक तहं पेखना दृगन देखना मात ॥ दई दई नहिं तोहिं दया सुनहु निर्दई

बात ॥ सोरठा ॥ अब छोरहु ते दाम सो नमान नेकहु सुन्यो ॥ प्रविशी अपने धाम गई बाम घनश्याम तजि ॥११४॥
चले नाहि घिसि आवत गोहन ॥ लगे बकुत शिशु गोहन जोहन ॥ आए तूरन तीर यमुनके ॥ तहँ दै तरु यमला
अरुजुनके ॥ ऊखल ताके मध्य फंसाई ॥ दामोदर दुत दीन्ह खसाई ॥ तिन्हतें निकरि देव दै आए ॥ दामोदर कहं
शीश नवाए ॥ करि परिक्रामा कर जुट कीन्हो कहत कथा निज आनंद भीने ॥ हम अब मुक्त शरपते पाई ॥ दे-
खि चरन तव जाँवर कन्हाई ॥ दामोदर प्रभु कृष्ण कृपाला ॥ नमो विष्णु केशव नंदलाला ॥ इमि कहि सुर
सुरलोक सिधाए ॥ नंदादिक तकधाए आए ॥ दोहा ॥ पूछन लागे शिशुन सों उरआनंद अभेव ॥ तिन्हन स-
त्य भाष्यो तवै सबै तहां को भेव ॥११५॥ सो सुनि नंद सदन देथोमी ॥ सिशुहि सप्यार अंक आरोपी ॥ पीजे सो
गोपीपर कोपी ॥ सबकी डुत कठोर नालोपी ॥ भूप कह्यो सुनि कहियैं सोऊ ॥ कौनरहे ए पादप दोऊ ॥ तब-
विधि सुवन सुमनि सुनि बोले ॥ धनद सुवन ए भवन अमोले ॥ मनि ग्रीवनल कूवर नामा ॥ गोवन नंदन सं
ग बहु बामा ॥ नगन नहात रहे जल माहीं ॥ देवल ऋषि आए चलि ताहीं ॥ तिन्हइ देखि नहि कीन्हेउ लाज
जा ॥ देवल दीन्हो शाप दराजा ॥ मोकहँ देखु रहे तरु जैसे ॥ ताते अवनि होहु तुम तैसे ॥ दोहा ॥ विगत वर-
ष शत व्रज विपिन गोकुल यमुना तीर ॥ महा विपिन महं कृष्ण कर होइहि मुक्त शरीर ॥११६॥ सोई रह्यो
शाप अति भारी ॥ भए विटप सरि कूल मझारी ॥ कृष्ण कृपाते सोऊ छूटे ॥ कृष्ण भक्ति पुनि दोऊ लूटे ॥ एक दिवस

हरिदरशनकाजा ॥ आए अत्रिसुवनमुनिराजा ॥ दुर्वासाकरिकै दुर्वासा ॥ रमणरेत कर लख्यौ तमासा ॥ नंगे शिशुन सहि-
तगोपाला ॥ लोटत दौरत चरित रसाला ॥ धूरिभरे तन खेलत मूकी ॥ लखिमति भ्रमत भई मुनिहूकी ॥ ईश्वर करैन एसीली-
ला ॥ गोपसुवन यह नहिं गुन शीला ॥ मोहभयो दुर्वासहि भारी ॥ तब आए मुनिपास मुरारी ॥ दोहा ॥ स्वांस ऐंचि केशव हँ-
से मुनि घुसिगे मुखमाहं ॥ लखेउ घोर वन विजन अति तमतें छादित ताहं ॥ ११७ ॥ व्याकुल फिरत भए गुन लीला मुनिहि
एक अजगर पुनि लीला ॥ ताके उर ब्रह्मांड निहारा ॥ कीन्ह तहाँ तप बैठि अपारा ॥ वरष कोटि सत दीन्ह विताई ॥ नैमि-
त्तिक सुप्रलय चलि आई ॥ सात सिंधु मिलि वसुधा बोरे ॥ दुर्वासा दूडत सब ठौरे ॥ सहस वरष इहि भांति बिहाना ॥ ब-
हुरि एक ब्रह्मांड दिखाना ॥ ताके छिद्र पैठि अवरेष्यौ ॥ अंड दूसरो उत्तम देख्यौ ॥ ताते निकसि चले जब नाहर ॥ ब्रह्मद्रव दे-
ख्यौ मुनि नाहर ॥ जामहँ लटकहिं कोटिन अंडा ॥ देखि दुख्यौ द्रुत दूरि घमंडा ॥ दोहा ॥ पुनि विरजा तें उतरिकै देखत भे-
गोलोक ॥ यमुना गोवर्द्धन विपिन अतिही आनंद ओक ॥ ११८ ॥ तब निकुंज निवसे मुनिराई ॥ लख्यौ गोप गोपी समुदाई
कइक कोटि रविसम दुति भारी ॥ देख्यौ राधापति गिरधारी ॥ पद्म परम पर राजत सोई ॥ मुदित भये मुनि नायक जोई ॥
हँसे छाद्म पुनि वदन समाने ॥ निकरि वहुधा नंदनंद दिखाने ॥ लोटत शिशुन सहित छवि केती ॥ राजत रुचिर रवण बर
रेती ॥ जानि पूर्ण तमसीसन वाई ॥ वोले दुर्वासा मुनि राई ॥ वाल नवीन कमल से लोचन ॥ तन घन श्याम मदन मद
मोचन ॥ सुंदरि हसनि कसनि भृकुटी की ॥ मम मन वसहु लरन लकुटी की ॥ दोहा ॥ हरि उर हरि नख ललित अति मन

सबको हरिलेत ॥ हरित नयन तन हरित मह यमुना तट छविदेत ॥११९॥ पूरन शशि सम मुख कच काले ॥ पग पेजनी माल उरडाले ॥ वलि समेत गोसेजो स्वामी ॥ हम सबशरन शरन खग गामी ॥ जोपढ़िहैं यह अस्तुति भारी ॥ तापरकरिहैं कृपा मुरारी ॥ इमिकहि मुदित मुनि दुर्वासा ॥ बदरीवन कीन्हो निज वासा ॥ इमि नारद मैथिलहि सुनायो ॥ सुनि अति मोद भूमिपति पायो ॥ कौन कथा सुनिहो अवसाचे ॥ तब शौनक मुनि नाह उवाचे ॥ कौन प्रश्न पुनि भूपतिकीना ॥ सुनि बोले गुनि गर्ग प्रवीना ॥ सुनि यह चारु कथा मिथिलेश ॥ पूछत भये प्रश्न तेहि देश ॥ दोहा ॥ महा पुरुष श्री कृष्ण प्रभु परमा धरन ललाम ॥ और चरित कीनो कहा कहहु मोहिं गुन धाम ॥१२०॥ सो सुनिके अति ज्ञान विसारद ॥ बोलत भये वचन मुनि नारद ॥ इहां रास रस खंड के माहीं ॥ कहि हौं कथा अपूरव चाहीं ॥ राधहि कृष्ण खंड यह भाषा तिन मोहिं कहा जानि अभिलाषा ॥ इहि गोलोक मध्य हरि गायो ॥ तब गोलोक खंड कहवायो ॥ ब्राह्मण पढ़ै ज्ञान अति पावैं ॥ क्षत्री वधि रिपु राज बढ़ावैं ॥ वैश्य धनद सम होहिं सुजाना ॥ अघ गत होइ शूद्र सुनि काना ॥ जोइहि कहै सुनै चित लाई ॥ सो गोलोक लोक महं जाई ॥ यह गोलोक खंड की कथा ॥ निज मति जथा तथा इहि कथा ॥ दोहा ॥ कोटि ब्रह्म अंड अंखंड पति खंडन खल पाखंड ॥ कृष्ण कृष्ण कहि कृष्ण कहि पूरन कीनो खंड ॥ सोरठा ॥ दायक वर फल चार चरनचारु गिरिधरन के ॥ मम उर करहु विहार प्रेम करन अघ हरन के ॥ १२१ ॥ इति श्री भाषा प्रकासे कृष्णप्रिये गिरधरदास विरचिते प्रेमसथर चिते गर्ग संहितायां प्रथमं गोलोक खंडं समाप्तम् शुभमस्तु ॥ ८ ॥

श्रीगणेशायनमः अथ वृंदा वन खंड लिख्यते ॥ सोरठा ॥ जल यमुना के तीर रमत राधिका संग लिये। करिसु कृपा बल वीर वास करहु मेरे हिए ॥ नयन तिमिर अज्ञान अंजन दै के ज्ञान को ॥ श्री गरु कृपा निधान दर सायो भगवानको ॥ दोहा ॥ वंदि चरन तिनके उभय सब विधि सुखदातार ॥ गोकुल पति गोपाल गो करिय शुद्ध बिचार ॥ कृष्ण कृपाल दयाल प्रभु अच्युत ईश अखंड ॥ सुमिरि कहत वह अंड पति यह वृंदावन खंड। गोकुल देखि उपद्रव भारी ॥ नंद कह्यो वह सभा मझारी ॥ सह वृष भानु नंद उपनंदा ॥ तिन महं चंद सरिस व्रजचंदा ॥ परम उपद्रव है इत भाई ॥ कह कीजै सो कहहु उपाई ॥ सुनि सच्चंद नंद महं वृद्धे ॥ बोले वचन नीति अरूढे ॥ इततें चलिये दूजे देशा ॥ जहँन उपद्रव होइ व्रजेशा ॥ नव सुत व्रज वासिन को जीवन ॥ तातें चलहु मुदित वृंदावन ॥ मोहन व्रजके प्रान अधारा ॥ तिन पर होत उपद्रव भारा ॥ बकी सकट अदिक बहु बारा ॥ आई यह बारे पर बारा ॥ दोहा ॥ वृंदावन महं चलिय अब निर्भय करिय निवास ॥ बहुरि बास इन की जियो होइ दुरित जद नास ॥ १ ॥ सो सुनि कह्यो नंद हरषाई ॥ कोजोजन को बन है भाई ॥ ताका लक्षण भाषहु ज्ञानी ॥ सुनि सच्चंद कहत मृदु बानी ॥ यह माथुर मंडल नेदराई ॥ इक इस जोजन मैं सर साई ॥ परम पवित्र अहै सुख साजा ॥ याकहँ पूजयो तीरथ राजा ॥ सकल वनन महं वृंदावन है ॥ परि पूरन तमको प्रिय बन है ॥ वृंदा वन वैकंठ अधिक है ॥ याके सेवन बिन सब धिक है ॥ तहँ गोवर्द्धन वर गिरि राजा ॥ कालिंदी तट

परम विराजा॥ वृहत सान नंदीश्वर शैला॥ षट योजन प्रमान सब फैला॥ दोहा॥ वृंदारन्य समान जग ती-
रथ अहैन अन्य॥ मुनि व्रजेश माषत भए ठाँव बतायो धन्य॥ २॥ कब व्रज पूजेउ तीरथ नायक॥ भाषहु स
न्नेंदन सब लायक॥ बोले तब जब सोए धाता॥ प्रलय निमित्तिक महँ सुर त्राता॥ शंखासुर जीत्यो सुर जूहा
लैगो वेद प्रगट अघ ऊहा॥ तब हरि झष बपु धरि रिस पागे॥ श्रुति हित लरन संखतें लागे॥ संख सूल निज
मच्छहि मारा॥ तेहि तजि चक्र विष्णु महि डारा॥ बहुरि आय कै मूका मरा॥ हरि तेहि सुमन सरिस निरधारा
गदा हरिहि मार्यौ लल कारी विष्णु तोरि ताहु कहँ डारी॥ कौ मोदकी ताहि हरि मारी॥ व्याकुल ह्वै पुनि
उठा सभारी॥ दोहा॥ तब सकोप भगवान् हरि तीछन चक्र प्रहारि॥ धरतें सीस धरा धरा कर लीनो श्रुति
आरि॥ ३॥ दीनो विधि कहँ ते सब वेदा॥ न्हाए आय प्रयाग अखेदा॥ यज्ञ कीन्ह अति आनंद लीन्हा॥
तीरथ तिलक प्रयागहि दीना॥ अक्षय बट सिर छत्र विराजै॥ मोर्च्छल चलन यमुन जल छाजै॥ च-
मर गंगजल सरिस सुहाए॥ तीरथ सकल भेट लै आए॥ गए धाम सब तीर्थ समाजा॥ भे प्रयाग इमि स-
बके राजा॥ तब हम ताढिग गए अमोले॥ पूजित विहँसि बचन यह बोले॥ वृथा तीर्थ पति पदवी लीन्ही॥
सब तीरथन भेट नहि दीन्ही॥ व्रज के तौ एकहु नहि आए॥ तुम ननेक सो उरमहँ लाए॥ दोहा॥ सुनि मम ब
न रिसाइ अति तीरथ सकल समेत॥ गोप्रयाग हरि धाम द्रुत प्रगट करन निज हेत॥ ४॥ करि प्रनाम तहँ

सहित समाज॥ कहत वचन भो तीरथ राजू॥ तुम मोहि तिलक तीर्थ कर कीन्हा॥ ब्रजके एकहु वासिन्ह दीन्हा॥ सो सुनि विहसे रमा निवासा॥ सुखते मीठे बचन प्रकासा॥ हम नहि तीर्थ तिलक तोहि दीन्हा॥ नहिं निज घरको मालिक कीन्हा॥ सो निजनिज मेरो अस्थाना॥ तुमते पूजनीय हम जाना॥ नास प्रलय महं तासु न रूरा॥ ममता लहि कह भयो गरूरा॥ सुनि नीरधन समेत प्रयागा॥ दुत माथुर मंडल अनुरागा॥ पूजि सबन सह सदन सिधायो॥ सबतें उत्तम ब्रज यश गायो॥ दोहा॥ कही कथा यह कोल हरि महि मद मर्दन हेत॥ अब कहा सुनिबे चहत भाषिय नीति निकेत॥ ५॥ सो सुनिके तब कृष्ण बखाना॥ किमि हरि हरयो भूमि को माना॥ सो सब कहिये आनंद कन्दा॥ सुनि सन्नंद कहत सानंदा॥ जब बाराह भए भगवाना॥ महि धरि रूप चले सुजाना॥ देखि दसहु दिसि अबिरल वारी॥ बोली धरनि समय अनुसारी॥ है सर्बत्र वारि अथाहा॥ कहं धरिहो मम नाह बराहा॥ कहत कोल जब विटप दिखैहैं॥ तब हम तुमहिं तहां बैठैहैं॥ सो सुनि बिस्मित भई बिवरनी॥ भाषत धरनी धरहों धरनी॥ मम ऊपर सब जग दरसाना॥ दूजो अहइ कौन अस्थाना॥ दोहा॥ इमि भाषत निररवत भई पाद पंक समुदाय॥ विस्मित बसुधा बहुरि बर बोली बचन बजाय॥ ६॥ कहो दच्छए परत दिखाई॥ सुनि सूकर प्रभु कहत सुनाई॥ यह गोलोक केर अस्थाना॥ माथुर मंडल नाम बखाना॥ प्रलय माहिं नहि याकर नासू॥ सत्य तुमहि यह कीन्ह प्रकासू॥ सो सुनिधरा मानिनिज धरा॥ ब्रज मंडल महि सबतें परा॥ ब्रज माहत्म्य सुने नर जोई॥ सो ब्रजराज भक्त निज होई॥ सुनि नृप नंद कहत भे बानी॥ धन्य बृद्ध

ब्रज मंडल ज्ञानी ॥ गोबर्द्धन गिरिराज कहावत ॥ पुनि यमुना अघ दूरि वहावत ॥ कहहु कथा इनके आवनकी ॥ सु-
निसन्नंद कहत गुनि मनकी ॥ दोहा ॥ गजपुर महँ यह हम सुन्यौ पांडु भीष्म संबाद ॥ गुनि गांगेय कह्यौ तबै करन
सकल अहलाद ॥ ७ ॥ परि पूरन तम कृष्ण मुकुंदा ॥ चले भूमि तब आनंद कंदा ॥ लखि राधाकर मनभो आधा ॥
निजहित साधा कहत अबाधा ॥ चलन कहा हरि चलहु बखाना ॥ राधा पुनि यह कहेउ सुजाना ॥ वृंदाबन यमुना ।
गोबर्द्धन ॥ जहँ नहि तहँ न लगत मेरो मन ॥ हरिके कहे कोश चौरासी ॥ आई महि महि महँ छवि रासी ॥ शाल्मलि
द्वीप द्रोन तित मंदर ॥ जन्मे तहँ गोबर्द्धन सुंदर ॥ बिबुधन बिबिधि सुमन बरषाए ॥ मेरु आदि पर्बत सब आए ॥ नौमि
पूजि सिगरे हरषाता ॥ बोले अद्रि अधिप प्रतिबाता ॥ दोहा ॥ तुम गोलोक निवास किय कृष्ण चंद्र सुखरूप ॥ परम
कृपा करि होहु अब सब शैलन के भूप ॥ ८ ॥ नाम तुम्हार भयो गिरि राजू ॥ दिन दिन अचल प्रताप दराजू ॥ धन्य-
धन्य सब गिरिके राई ॥ हम सब दास आस अधिकाई ॥ कहि गृहगे सब शैल समाजा ॥ तबतें नाम भयो गिरिराजा
करत शैलकी शैल सुहाए ॥ इक दिन तित पुलस्त मुनि आए ॥ गोबर्द्धन गिरि श्याम निहारा ॥ ऊपर तरु समुदाय
अपारा ॥ कंदर अंदर सुखद अपारा ॥ बंदरादि मृग करहिं बिहारा ॥ झील समान झरहिं बहु झरना ॥ खग मृग
चरहिं मुदित दुख हरना ॥ द्रोन पास मुनिबर चलि आए ॥ गिरि पूजित यह बचन सुनाए ॥ दोहा ॥ अहो द्रोन
तुम गिरिन मैं अहौ परम सरदार ॥ दिव्य औषधी जूह धर सुखद पुन्य आगार ॥ ९ ॥ माँगत हम काशीके बासी

देहु गोबर्द्धन गिरि सुखरासी ॥ केशव निर्मित शिवकी नगरी ॥ बगरी मुक्ति फिरै जहँ सगरी ॥ गंगा अरु विश्वे-
श्वर जहँवाँ ॥ मरतहि मुक्त होत नरतहँवाँ ॥ तहँ मैं याकहँ धरिहौं भाई ॥ हरषाई तप करिहौं जाई ॥ सो सुनि भ-
रि लोचन महँ बारी ॥ बोले पर्वत द्रोन दुखारी ॥ सुत सनेह अति पै मुनि भाषा ॥ जाहु तात जित द्विज अभि-
लाषा ॥ सुनि सो गिरि आनंद विवर्द्धन ॥ मुनि सों कहत भए गोवर्द्धन ॥ जोजन आठ लंब द्वै ऊँचा ॥ चौड चार
किमि जाउ समूचा ॥ दोहा ॥ कह पुलस्त तब बचन यह चलहु बैठि मम हाथ ॥ काशी महँ बैठारिहौं सुनिबोले
गिरि नाथ ॥ जहँ रखिहौं उठिहौं न तहाँते ॥ करि करार लै चलिय इहाँते ॥ कीन्ह सपथ मुनीश कहँ मानी ॥ राख-
ब तबन उठेहु गिरि ज्ञानी ॥ मुनि कर चढ़े पिता पद बंदी ॥ चले अद्रि सिरताज अनंदी ॥ कंदुक सम लै चले सु-
हाए ॥ ब्रजत ब्रजत मुनि ब्रज चलि आए ॥ गिरिजा ना पूरन तम स्वामी ॥ सहित स्वामिनी अंतर जामी ॥ करिहैं
बिबिधि भांतिकी लीला ॥ दान मान शिशु बपु दगमीला ॥ जीवन मुक्त ब्रजहि इतपाई ॥ मरन मुक्ति करिहौं
काजाई ॥ राधा केशव के पठवाए ॥ हम यमुना ब्रज भूपर आए ॥ दोहा ॥ इमि बिचार अति भार कहँ करत भए
गिरिराज ॥ सपथ भूलि मुनि धरिदयो भूपर भूधर ताज ॥ ११ ॥ लघुशंका करवे हित गए ॥ न्हाइ निकट चलि आ-
वत भए ॥ चलिये आसु कह्यो मुनिराया ॥ करतें पकर पकर ठसकाया ॥ अचल अचल तितनेक न डोला ॥ था-
के मुनि आचरज अतोला ॥ हारि हृदय मुनि नायक ज्ञानी ॥ कह्यो द्रोन नंदन सों बानी ॥ चलत न किहि हित भार

अपारा॥ सुनि गिरि गुनि यह बचन उचारा॥ आपुहि सपथ कीन्ह पुनि धरा॥ हम चलिहैं न त्यागि यह धरा॥ सुनि
मुनि मेहनत वृथा बिचारी॥ बोले परम कोप बिस्तारी॥ कीन्ह न मम मनोर्थ दै चितहीं॥ तातें तिल तिल घटतू नि-
तहीं॥ दोहा॥ इमि कहि कै मुनिबर गए तबतें हे ब्रजराज॥ गोवर्द्धन नित प्रति घटत तिल तिल गिरि सिरताज॥१२
जात अहैं गोलोक नित इहि बिधि कलि पैत भूप॥ जबलौं गंगा अवनि पैत बलौं शैल अनूप॥१२॥ सुनैजो अ-
चल चरित्र महाना॥ ताकहँ सकल होइ कल्याना॥ इतकी कथा सुनहु नर राया॥ महि पै यमुनहि कृष्णप-
ठाया॥ तहँतें चली उतंग तरंगा॥ मध्य मिली बिरजा अरु गंगा॥ तीनहु नदी होइ इक ठौरे॥ चलीं गऊ पुरतें
भरि भौरे॥ उज्जल आप परत बर धारा॥ प्रमुदित हरि अज्ञा अनुसारा॥ भेदत मगकी सरिता सारी॥ चलीं-
मिलाए निज महँभारी॥ बामन चरन बिबर के माहीं॥ आई प्रबिसि सबन सह ताहीं॥ देखत ब्रह्म अंड थल केता॥
बिरजा गंगा सरित समेता॥ दोहा॥ बिष्णु लोक ध्रुवलोक अरु ब्रह्म लोक सुरलोक॥ भली भाँति लंघत चली सब
लोकन के थोक॥१३॥ शैल सुमेर सिखर पर आँई॥ तहतें बहुरि बेग सों धाँई॥ दक्षिण दिसि मैं जबहि सिधाई॥ तब
गंगातें ते अलगाँई॥ गंगा हिमि गिरि ऊपर गई॥ यह कलिंद पर आवत भई॥ कालिंदी तव नाम कहायो॥ बहु-
रो बारि वेगतें धायो॥ करत कलोल लोल जिमि तांडव॥ आइ लख्यौ उत्तम बन खांडव॥ तहँ हरि पतिहित बर-
बपु धारी॥ यमुना करन लगीं तप भारी॥ दूजो नदी रूप ह्वै धाई॥ ब्रज मंडल तूरन चलि आई॥ वृंदावन मथुरा अरु-

गोकुल। पूरन कियो कूल किल सोकुल। दो॰। कृष्ण हेत कृष्णा तबै गोकुल कीन्ह निवास॥ रासके माँहिं बिलास हित सुख स-
रूप छबि रास॥ १४॥ तहँते ज्योति नील जिमि इंद्री॥ पश्चिम बाहिनि चली कलिंदी॥ तब प्रयाग के मध्य चलि आई॥ मिलि
गंगाके संग सिधाई॥ सागर माँझ होन चह न्यारी॥ गंगातें बोलीं सकुमारी॥ धन्य अहौ गंगा जग पावनि। कृष्ण चरन संभू-
त सुहावनि। हम गोलोक जात अब ऊपर तुमपति ते मिलि बिचरहु भूपर॥ करत प्रनाम बिदा मोहि देहू॥ गंग कहत सु-
नि सहित सनेहू॥ धन्य धन्य यमुना हरि प्यारी॥ विश्व मुक्ति प्रद पावन कारी॥ परि पूरन तम प्यारी यमुना॥ दरसत जा
के परसत यमुना॥ दोहा॥ हम हरिकी आज्ञा सहित जान चहत पाताल॥ आप जाहु गोलोक अब काल बियोग करा-
ल॥ १५॥ करत तुमहिं हम दंड प्रनामा॥ अब ब्रज महँ मिलिहैं अभिरामा॥ बहुरि मिलन हरि कृपा बिचारा॥ कहा
सुना सब छमहु हमारा॥ इमि कहिकै पाताल सिधाँई॥ भोगवती यह नाम कहाँई॥ यमुना चली वेग दरसाई॥ श्याम-
सरूप सरस सरसाई॥ सात द्वीप अरु सागर साता॥ भेदत बिमल बारि भो जाता॥ बहुरि अलोका चलमहँ गई॥ ऊरध
चलत तहाँते भई॥ जाइ स्वर्ग तित के दुख खोरा॥ पापन के सब पाप न धोरा॥ देखत लोक थोक हरषाई॥ मिली सूत्र
ह्मद्रव महँ आई॥ दोहा॥ देव कुसुम बरषा करहिं भाषहिं जयजयकार। बहुरि गई गोलोक कहँ यमुना नदी अपार। सोरठा
श्री यमुना को गान करिहैं जे नर ध्यान धरि॥ होइ परम कल्याण सदा त्रान भगवान हरि॥ १६॥ सुनि सन्नंद बचन श्रीनंदा
लै संग सकल गोप सानंदा॥ गोपिन सह रोहिनी यशोदा॥ चली सवाँरि बैठि सहमोदा॥ संग सकठ सुरभी समुदाई॥ गावहिं

गायक बाद्य बजाई ॥ रथ चढ़ि सुतन सहित ब्रज नायक। वृंदाबन आए सब लायक ॥ बर वृषभानु सतिय रथ चढ़िकै ॥ सुतापाल की पर सुख मढ़िकै ॥ गायक गावहिं सुंदर तानू ॥ वृंदाबन आए वृष भानू ॥ नंद उपनंद वृषभानु सुजाना ॥ सिगरे चले अनंद महाना ॥ सबन सहित उर आनंद छाई ॥ वृंदा बिपिनि बसे ब्रजराई ॥ दोहा ॥ नंदराय को कोट बर श्रुति योजन बिस्तार ॥ मुदित बसे तामहं लसे जहां घने प्राकार ॥ १७ ॥ वृषर-बि आदि गोपगन भारे ॥ तिन्हके महल विराजहिं न्यारे ॥ इहि विधि निज निज धाम बनाई ॥ कीन्ह निवास सुजन समुदाई ॥ राम श्याम लरिकन संग लीन्हे ॥ ब्रज महिं खेलहि खेल नबीने ॥ लगे लोल अति बत्स च-रावन ॥ दोऊ दूरि जाहिं ब्रज पावन ॥ कबहु कलिंदी तट सर साने ॥ कबहुं जाहिं क्रीडन बरसाने ॥ नवनि कुंज महं विहरहिं मोहन ॥ संग सखा अति सुंदर सोहन ॥ पीत बसन बसुरी बनमाला ॥ कमर किंकिनी भ्र मर रसाला ॥ संगवने गोपन के छोरा ॥ इमि ब्रज बिहरत नवल किशोरा ॥ दोहा ॥ गुंज पुंज उरमै लसत कुंज-निकुंज बिहार ॥ कबहुक लोटत भूमि महशिखी पक्ष सिर चारु ॥ १८ ॥ बदन रदन दुति कदन मदन मद ॥ चल-त पदन सुख सदन रूप हद ॥ एक दिवस नृप भोज पठायो ॥ बत्स नाम दानव तित आयो ॥ बत्स रूप सीतहि हरि जाना ॥ मारेउ चरन असुररिसि आना ॥ सटके ग्वाल वत्स के छटके ॥ झटके तिहि गोपाल महि पटके ॥ कपिथ माहि मार्यो भगवाना ॥ बछरा पछरा अवनि अप्राना ॥ कैत अशुद्ध गिर्यो भहराई ॥ आइ बालकन करी बड़ाई

सुरगन मिलि जय जय स्वन कीन्हा ॥ असुरहि कृष्ण परम पद दीन्हा ॥ सो सुनि मैथिल नायक ज्ञानी ॥ विश-
द बुद्धि बोले बरबानी ॥ दोहा ॥ कौन रह्यो सो असुर जो पाई मुक्ति ललाम ॥ सुनि पुनि गुनि भाषत भए मु-
निवर नारद नाम ॥ १९ ॥ मुरु सुत हो प्रमील सो जाई ॥ गृह बसिष्ठ के देख्यो गाई ॥ नंदनि नाम निकंदनि पापा
कामदुहा नित अधिक प्रतापा ॥ छल करि असुर विप्र वपु धारी ॥ भाग्यो मुनि ते लखेउ दुधारी ॥ कहत -
सरोष अरे छलकारी ॥ बन्यो विप्र बपु नीच सुरारी ॥ अबहि तोर पशु विग्रह होई ॥ सुनि भो बत्स प्रमील क
सोई ॥ बंदि चरन बोलेउ यह बाता ॥ कीजै शाप विमोचन माता ॥ सुनि सुरभी सह नेह बखाना ॥ द्वापर माहि
होइ कल्याना ॥ हे नृप हरि प्रभाव सो बछवा ॥ गोसुर लोक सुखी पर तछवा ॥ दोहा ॥ एक दिवश बल कृष्ण
संग बालक वृंद सवच्छ ॥ यमुना तट देखेउ असुर बकसुर दुर्ज्जय दच्छ ॥ सो गोपाल कह गिलि गयो भा-
गे लखि सब ग्वाल ॥ सुरन सहित तहं आइ कै बज्र हन्यो सुरपाल ॥ २० ॥ ताके लगे भई अति पीडा
पैन मरो न दृगन कहं मीडा ॥ ब्रह्म दंड ब्रह्मा तव हएऊ ॥ मुरछेउ अवनि पैन असु गएऊ ॥ तब त्र्यंबक त्रि
शूल निज मारा ॥ बक कर एक पंख महि डारा ॥ वाय व्यास्त्र बायु तव मारा ॥ पीड़ित भयो असुर सर दारा
यम निज दंड तज्यो रिस धारी ॥ अस्त्र गिर्यो न मर्यो बक भारी ॥ सत सर सूरज सरप प्रहारे ॥ पै बक के नहिं
प्रान पधारे ॥ धनद कोपि असि कठिन चलाई ॥ दूजो पंख दियो महि नाई ॥ ससि निज शीतल शस्त्र प्रहारा

सीत त्रसित भो वक सरदारा ॥ दोहा ॥ अग्नि अस्त्र तें अग्नि तब मार्यौ अति रिसि आइ ॥ रोम अंगके ज-
रिगये मरि नगए बकराइ ॥ २१ ॥ वरुन पासतें खैंचेउ ताहीं ॥ टूटी फासरि रसरि गर माहीं ॥ गदा भद्रका-
ली तब मारा ॥ मुरछि पर्यौ वक बड़े प्रहारा ॥ चेति उठो बसुधातें बकला ॥ सकल देखि काँपे सुर सकला
तुरत शक्ति धर शक्ति प्रहारा ॥ काटें एक पग भूपर डारा ॥ तब सकोप सो खेचर धायो ॥ गर्व सुरनको दूरि
परायो ॥ बक बक बकत बिकल सब भागे ॥ देखि कराल महा डर पागे ॥ तेहि छन सकल रुद्र गन आए
जय श्री कृष्ण चंद्र की गाए ॥ सारँग कह सारँग चर जानी ॥ खान चलो वक रिसउर आनी ॥ दोहा ॥ सब
देवन मार्यौ सरुष मर्यौ न बक बल सींव ॥ जग जीवन जा उदर मैं तासु जाय किमि जीव ॥ २२ ॥ सब
की इमि पुरुषार्थ निहारी ॥ गरमहं गिरि सब बढ़े मुरारी ॥ तुरतहि काढ़ि चल्यो बक मारन ॥ पटक्यौ-
पकरि पूँछि भव हारन ॥ करन फारि मुख करन समेता ॥ फेंकेउ दूरि सु कृपा निकेता ॥ रंभ खंभ सिं-
धुर जिमि फारे ॥ तिमि हरि कीन्ह तुंड ब्यवहारे ॥ ज्योति कृष्णके बदन समानी जय जय कहहिं अमर बरबानी
विस्मित गोपन घर घर भाषा ॥ मोहि हरि आज काल तें राखा ॥ बककी बरनहि कथा सुजाना ॥ कीन्ह कृ-
ष्ण यह कर्म महाना ॥ सो सुनि अचरज पावहिं सिगरे ॥ गुन गावहिं दुख दलतें बिगरे ॥ दोहा ॥ तब बो-
ले बहुलाश्व नृप कोसो दानव बिप्र ॥ बक रूपी विभुतें मिल्यौ वात बतावहु छिप्र ॥ ॥ २३ ॥ ॥ कह मुनि रहो

दैत्य बल धामा ॥ हयग्रीव सुत उत्कल नामा ॥ नीति सुरत क्रतु छत्रहि ल्यायो ॥ लाग्यो करन राज मद छायो ॥ करि शत बरष राज एक बारा ॥ गो सागर संगम अघ भारा ॥ जाजलि मुनिको आश्रम मारी ॥ स्वान लगो तह मच्छ निकारी ॥ लखि मुनि कह उपजी अति दाया ॥ कीन्ह मना बहु बार बुझाया ॥ मानेउ सोन तबै रिसि छाई ॥ शापहि देत भए ऋषिराई ॥ होवक रूप मच्छ आहारी ॥ कहतहि सो जैसो बपु धारी ॥ सभय सीस मुनि पद परनाई ॥ बक बपु उत्कल बरनत बनाई ॥ दोहा ॥ मैं नहिं यह जानत रह्यो तव प्रभाव मुनिराव ॥ सरल सुभाव करिय कृपा परत तुम्हारे पाव ॥ २४ ॥ साधुसंग सब विधि सुखदाता ॥ आप और अवरेषिय ताता ॥ पारसि परसि होत स्वर लोहा ॥ पैनहिं सो ताकी दिसि जोहा ॥ गंगा न्हाय रह्यो अघ कहूं ॥ कहलौं तुमतें यह गुन कहूं ॥ यह सुनिकै गुनिकै मुनि भली ॥ पुनिभे कहत विप्र जाजली ॥ द्वापर अंत भरम भूताहीं ॥ ब्रज मंडल यमुना तट जाहीं ॥ परि पूरन तम वत्स चरैहैं ॥ तुम कहं मारि तहां गति दैहैं ॥ सो बक भयो शाप कहं पाई ॥ दीन्ह मुक्ति करि कृपा कन्हाई ॥ कोउ विधि हरि महं मनहिं लगावै ॥ हे नृपसो उत्तम गति पावै ॥ दोहा ॥ इकदिन हरि बालक न सह चतुर चरावत धेनु ॥ लख्यो यमुन तट दुरित इक मुदित बजावत वेनु ॥ २५ ॥ अघ अहि असुर कंस को प्रेरो ॥ कीन्हे बदन कोश को घेरो ॥ बैठे अचल गुहा सम भारी ॥ पैठो शिशुदल बदन मझारी ॥ सुरभी बल बछरा बन चारी ॥ कंदर अंदर धसे

विचारी ॥ ताकी लगी जबै अति ज्वाला ॥ मुखमह बदन भयो गोपाला ॥ सीस फोरि गो ताकर प्राना ॥ मुख
तें निकरे श्रीभगवाना ॥ काढ़ि काढ़ि सुरभी शिशु बच्छा ॥ सबन जिवायो मुदित प्रतच्छा ॥ जय जय सुरन
कीन्ह तेहि काला ॥ सुनि बोले मुनिते महिपाला ॥ कौन उपाय यह मिल्यो हरीतें ॥ अघासुर परम पद लह-
हि घरीतें ॥ दोहा ॥ मुनिभाख्यो अघ असुर यह संख सुवन अति दुष्ट ॥ लरिकाई ते रह्यो खल परम पाप
तें पुष्ट ॥ २६ ॥ हँस्यो विप्र वसु वक्रहि जोई ॥ दीन्ह सरोष शाप तब सोई ॥ अजगर होसि अघी यह मामा
तबसों तिनकहं कीन्ह प्रनामा ॥ अष्टावक्र दया अभिलाषा ॥ द्वापर मुक्ति होइ यह भाषा ॥ कोटि मद-
न मदकदन गोपाला ॥ बधिहैं बनिके तुम्हरे काला । अष्टावक्र शापतें सोई ॥ पाई गति मुनि दुर्लभ जो-
ई ॥ वत्स बकुल अघकी सुनि कथा ॥ यसुमति सभा कीन्ह भरि व्यथा ॥ सब हरषभान नंद उपनंदा ॥ रोहि-
णी आदि सकल त्रिय वृंदा ॥ कीरति कहे पति सहित बुलाई ॥ बोली दुरित यशोमति माई ॥ दोहा ॥ कहा
कहों कित जोउ अब मोहिन उपाय सुभात ॥ नित नित होत गुपाल पर नयो नयो उतपात ॥ २७ ॥ गोकुल
तजि वृंदावन आए ॥ तबहुं उपद्रव नाहिं नसाए ॥ यह बालक मम कह्यो न मानै ॥ घूमत सब व्रज भूमहि
छानै ॥ निगल्यो इक दिन दानव बकुला ॥ सो पुनि पूर्व पुन्यतें निकला ॥ आयो वत्सल रन अघ खायो
हरि प्रताप सोइ दुरित नसायो ॥ सो सुनि नंदराय सज्ञाना ॥ मन विचारि यह बात बखाना ॥ गर्ग बचन सब-

दीन्ह भुलाई ॥ ममसुत कह भय नाहिं छुआई ॥ दान करहु संकट के हेतू ॥ यहहै सकल दुखन को जेता
तब यसुमति भूषन धन बसना ॥ अयुत दृषभ बहु गोसह असना ॥ दोहा ॥ सुतके सब भूषन सरस सात धा-
न नवरत्न ॥ सुतहित दीन्हे द्विजन कहँ प्रमुदित कीन्हो यत्न ॥ २८ ॥ गोचारन लागे दोउ भाई ॥ संग सर
सात सखा समुदाई ॥ चारिहु दिशि सुरभी के गोला ॥ हरि मुख मुदित निहारि अलोला ॥ घंटा घुंघरु
घन घन बोलत ॥ मुक्ता गुच्छ पुच्छ छवि रबोलत ॥ शिर मधि रतन फूल सुभ सोहै ॥ कनक सींग मधि
बज्र जरोहै ॥ सीस शिरोमनि सकल शिरोमनि ॥ अरु सिखि सिखा पिच्छ गुच्छनि बनि ॥ बच्छनि सहित
स्वच्छ समुदाई ॥ कोउके सीस तिलक सरसाई ॥ पीत रक्त सित हरित सियाहा ॥ चित्र बरन सुचारु नर नाहा ॥
पीता श्यामा कृष्णा हरिता ॥ कपिला बहुला नाम प्रचरिता ॥ दोहा ॥ यमुना धौरी धूमरी गांग आदि को
वृंद ॥ नामहँ बलसह बेनु धर राजत मुदित गुविंद ॥ २९ ॥ यमुना तट बहु लगे तमाला ॥ निंब निंब बट क-
दम प्रयाला ॥ जंबु पनस कचनार सुकेला ॥ कैत माधवी बेला बेला ॥ पारि भद्र नंदन मधु रथसे ॥ वृंदा
बन सब बनके गथसे ॥ जहँ गोबर्द्धन धातु प्रहारा ॥ भरत बारि मंदार बहारा ॥ चंपक बेर पलास असो-
का ॥ चंदन देव दारु के थोका ॥ अर्जुन अरु गुलाब परजाता ॥ कुंच निकुंज नवल सुखदाता ॥ कोकिल
मोर करहिं किलकारी ॥ गोचारत बन बन बनवारी ॥ वृंदाबन मधुबन बहुला बन ॥ कुमुद कामवन जहं

तरु गन घन ॥ दोहा ॥ बृहत्सानु बर सैल जहँ ॥ नंदीश्वर के साथ ॥ कोकिल कुशबन भद्र बन बिहरत श्री ब्रज नाथ ॥ ३० ॥ उपबन बर भांडीर सुजाना ॥ वंशी बट यमुना अस्थाना ॥ नट बर बेष मुकुट शिर सोहैं ॥ वंशी वेत्र विबुध मन मोहैं ॥ मोर सोर अति जोर वरनहैं ॥ नंद किशोर निरखि विहरत हैं ॥ साँझ समय आवत जब आछे ॥ लटकि चलत सुरभी के पांछे ॥ गोरज राजत गोविंद गाता ॥ वंशी मधुर बजत सुरसाता ॥ सो सुनि सुंदर तान ललामा ॥ धावहिं धाम धामते वामा ॥ साकरि खोर ओर चलि आवत ॥ हेरि हेरि हरि बेनु बजावत ॥ सो लखिकै प्रमुदित ब्रजनारी ॥ तन मन धन कहँ डारहिं वारी ॥ दोहा ॥ मदन सु मोहन गोपवर इहि विधि करत विहार ॥ बालक बच्छ अनंत सह सुंदर गुन आगार ॥ सोरठा ॥ जब आवत निज धाम करत आरती मातु तब ॥ करि ब्यारी घन श्याम सयन करत सुख अयन मह ॥ ३१ ॥ इक दिन गोचारत छवि छाए ॥ ताल विपिनि मह माधव आए ॥ धेनुक भय कोउ सकै न जाई ॥ एकाकी चलि गे बलिराई ॥ कसे कमर महँ नील पिछोए ॥ पाछे चले खान फल छोए ॥ तिहि छन दोय पहर दिन आयो ॥ बल करते गहि ताल हलायो ॥ तासु शब्द सुनि रासभ आयो ॥ कंस सखा धेनुक रिसियायो ॥ तुरतहि पिछलो चरन उठाई ॥ मारेउ रामहि रोष बढ़ाई ॥ धावत देखि कोप अति कीन्हो ॥ खरकर पश्चिम पदगहि लीन्हो ॥ तुरत ताल ऊपर तब मारा ॥ गिरेउ बिटप अति लगे प्रहारा ॥ दोहा ॥ सो गर्दभ उठि गर्दते दबर्यो गहन विचारि ॥ + ॥ पकरि जकरि

(लीन्हो)

लीन्हो बलहि घोरशब्द उच्चारि ॥ ३२ ॥ पटक्यौ योजन एक घुमाई ॥ उठि अनंत तिहि तज्यो पराई ॥ चेति छनक
महँ भो उठि ठाढ़ो ॥ तीछन शृंग चार सिर काढ़ो ॥ परम भयंकर रूप बनायो ॥ मारन ग्वाल गोल पर धायो
सो लखि दंड श्रिदामा मारो ॥ कठिन मुष्टि निज सुबल प्रहारो ॥ अंसु लकुटि अरु तोक पासतें ॥ अर्जुन
दीन्ह ढकेल पासतें ॥ ऋषभ विशाल चरन कह मारा ॥ देव प्रस्थ थप्परहि प्रहारा ॥ कीन्हो सबन आ-
पनी बारा ॥ हरि तिहि पकरि क्रोध बिस्तारा ॥ पोकेउ द्रुत उठाय गिरि शृंगा ॥ मुर्छित भयो असुर मन
भंगा ॥ दोहा ॥ उठि उठाइ लीन्हो हरिहि निज शृंगन पर दुष्ट ॥ नभगो भगो सवेग सों समर करन अघ
पुष्ट ॥ ३३ ॥ तहाँ कीन्ह रन रासभ भारी ॥ महि महँ पटक्यौ कोपि मुरारी ॥ पुनि उठि कठिन समर के
चाहन ॥ गर्जत भयो सीतला वाहन ॥ गोबर्द्धन उखारि कै मारा ॥ हरि सोइ ताहि प्रहार प्रहारा ॥ सो
पुनि हरिपै मारत भएऊ ॥ निज थल ताहि कृष्ण धरि दएऊ ॥ पुनि खरगो जहँ राम खरारी ॥ भा-
गो पिछलो चरन प्रहारी ॥ तब बल पटकि पटाका मारा ॥ झटकि प्रान सटका तिहि बारा ॥ करहिं
अमर गन जय जय कारा ॥ दिव्य रूप तब धेनुक धारा ॥ खरतनतें कढि श्याम स्वरूपा ॥ बंदेउ बल
हरि चरन अनूपा ॥ दोहा ॥ तिहि छन रथ गो लोकते आयो दिव्य महान ॥ लक्ष पारषद सहस ध्व-
ज दश शत चक्र सुजान ॥ ३४ ॥ लाख चवर मुरछल वर व्यंजना ॥ दिनकर मुखी छत्र मन रंजना ॥

होत शब्द घंटा कर भारी ॥ सकुचत मनगति ताहि निहारी ॥ वंदि उभय भ्रातन के चरना ॥ गो गोलोक अमर
दुति हरना ॥ सबन सहित केशव घर आये ॥ नारिन गाये नवल वधाये ॥ तब वहुलाश्व बखानी बानी ॥ ति
हि किमि मार्यो भूधर ज्ञानी ॥ हरिन हत्यो गोपुर गोधेनुक ॥ कथा सकल मुनिजू कहियै दुक ॥ सुनि बोले गु-
निकै मुनि आसू ॥ बलि सुत नाम साह सीतासू ॥ देश सहस्र लै साथ जनाना ॥ रमत गंध मादन अस्थाना
दोहा ॥ तासु शब्द भारी भयो भूपन बाज नगान ॥ दुर्बासा तित तपत है ताहि भंग अनुमान ॥ ३५ ॥ आये
परम क्रोध ते छाये ॥ चढे खड़ाऊ केशव ढाए ॥ क्रोधी कृश द्युति अनल समाना ॥ बोले अरे अधम
अज्ञाना ॥ रासम सरिस कर्म किय जातें ॥ खर बुप बसहु ताल वन तातें ॥ चारलाख संवत के बीते ॥ होइ
मुक्ति यह सत्य प्रतीते ॥ वल तेहि बध्यो कृष्ण नहिं मारा ॥ पूरब परम न माहि विचारा ॥ सात पिढ़ी वै-
रोचन केरी ॥ दीन बंधु अपनी दिशि हेरी ॥ बल बिनु इकदिन गाय चरावत ॥ हरि काली ह्रद तटभे आ-
वत ॥ पशु पशु पाल पान करि पानी ॥ परे प्रान परि हरि ते प्रानी ॥ दोहा ॥ तव हरि अमृत दृष्टि तें दीन्हो
तिन्है जिवाय ॥ मन विचार किय दूर अव दुरित इहां की जाय ॥ सोरठा ॥ कटि कसिकै पट पीत अति पुनी
त नवनीत प्रिय ॥ सबके लखत अभीत कूदे काली ह्रद विषे ॥ ३६ ॥ तासु सदन पगतल तें चूरन ॥ काली
उठो क्रोध करि पूरन ॥ शतफन सरस बदन कहबाई ॥ चल्यो तजत ज्वाला समुदाई ॥ बांधिलीन्ह हरिको

सब अंगा ॥ परम कोपके विवस भुजंगा ॥ वामनसी लीला हरि कीन्हा ॥ तब अहि सभय तुरत तजि दीन्हा
पुनि पन्नग धायो रिसछायो ॥ पुच्छ पकरि हरि ताहि फिरायो ॥ पटकत सर्प दर्प बिस्तारी ॥ आय हरिहि
मारी फुफकारी ॥ तब हरि मार्यो तुरित तमाचा ॥ व्याकुल नट सम नटखट नाचा ॥ पुनि विषधर-
निज बदन पसारी ॥ चलेउ चरन तब हतेउ मुरारी ॥ दोहा ॥ फनिहि फेरि मूका हन्यो भो अचेत का
लीय ॥ हरि चढि ताके सीसपै नृत्य विविधि विधि कीय ॥ ३७ ॥ नट सम नटबर मुरली वारो ॥ निजव-
स कीन्हो काली कारो ॥ वरषहिं सुमन सु सुमन ससारे ॥ बाद्य बजावहिं जस बिस्तारे ॥ ताल देहि हरि सि-
रपर पगतें ॥ कीन्ह मृतक समतेहि अंग अंगतें ॥ नाग नारि व्याकुल चलि आई ॥ कहत वंदि अतिदी-
न किनाई ॥ नमो कृष्ण गोलोक निवासी ॥ अमित अंडपति पूर्ण प्रकासी ॥ राधापति व्रजपति अ-
तिज्ञाता ॥ नंद सुवन यसुमति सुख दाता ॥ पाहि पाहि रक्षहु भगवाना ॥ जिमि अहि प्रान होइ नहि
हाना ॥ दीन बंधुपति दानहि दीजै ॥ निज दिशि लखिकै कृपा करीतै ॥ दोहा ॥ अहि सिर पर पग-
छापदै उतरे दीन दयाल ॥ वासुदेवकी कृपातें भयो व्याधि विन व्याल ॥ ३८ ॥ काली कीन्ह दंडवत
भारी ॥ सुनिकै बोले मुदित मुरारी ॥ रमनक द्वीप जाहु यह पदतें ॥ खगपति भय नहोय मम पदतें
अहि अच्युतहि पूजि चलि गएऊ ॥ सहित कुटुंब रहत तहं भयऊ ॥ हरि जल परन सुनत सवधाए

नंदादिक व्याकुल चलि आए॥ निकसे देखि नवल निज नैना॥ भयो सदन के उर अति चैना॥ नंद यसोमति हरष बढाई॥ संध्या समय जानि व्रजराई॥ सोइ नींद महं भये अचेता॥ तहँ हो बहुत बासको खेता॥ रगरि दुसह दावा प्रगटावा॥ अर्द्ध निसा सब दिग्ध दिखावा॥ दोहा॥ चट चट बोलहिं बाँस बहु सिखि लट लागि॥ अकास॥ व्याकुल नटवर तैं कहहिं होन चहत सबनास॥ ३९॥ सानिकै उठे दयाल मुरारी॥ द्रग मीड़त बोले गिरि धारी॥ कहा अनल यह भाषत बानी॥ कहत सकल सिखि ज्वाल नसानी॥ गोपन के सिगरे दुख खोए॥ सीतल सुधा दृष्टि करि जोए॥ प्रातकाल परमा नंद छाये॥ निज निज सदन गोप वर आये॥ तब बोले विदेह हरि वल्लभ॥ जोपद योगी गन कह दुल्लभ॥ सोपद भो काली शिर छापू॥ तिन कर सुहृत बरवानहु आपू॥ नारद कहा सकल सुख साजा॥ स्वायंभू मनु भेजव राजा॥ वेद सिरो मुनि तपत अपारा॥ विंध सिखर पर तप आगारा॥ दोहा॥ तहं चलि आए हय शिरा समुनि तपस्या काज॥ वेद शिरा लखि सो कुपित बोले वचन दराज॥ ४०॥ दुत मत जपहु अहै मम धामा॥ कान तुम्हें जग दूजो ठामा॥ अश्व शिरा सुनि अति हि रिसाए॥ कहत वचन लोचन अरुनाए॥ हरि तजि भूमिन कोऊ चोरी॥ दृष्या वकत तैं मेरी मेरी॥ लेत सर्प सम स्वास कराला॥ नाते रहिहि सदा तन व्याला॥ वेद शिरा सकोप कह प्रेमे॥ कोकी कारत कारक सम कैसे॥ होइहि तेरो काक सरीरा॥ आए विषणु जानि जन भीरा॥ दोउन कहे बहु भाँति बुझाये सुधा

सरिस सरस्वती सुनाये ॥ तुम दोऊ सम भक्त हमारे ॥ कीन्हो कलह वृथा अविचारे ॥ दोहा ॥ वेद शिरा तबही-
शापउ जब परिहै मम पाव ॥ अहि तव तोहि नसाई भय मुदित सदन निज जाव ॥ ४१ ॥ उरगहि कहि हरि
मोद बढ़ायो । तुरग शिरा काकहि समुझायो ॥ होइहि तुम्हे ज्ञान अधिकाई ॥ कहिगे श्रीपति घर हरषाई
नील सैल पर हय शिर नामा ॥ भेभुसुंडि बायस बुधि धामा ॥ रामभक्ति विज्ञानहि पावा ॥ रामायण जिन
गरुड़हि गावा ॥ दक्ष प्रजापति परम प्रवीना ॥ ग्यारह सुता कश्यपहि दीन्हा ॥ कद्रू भई रोहिणी नामें ॥ शेष
रामके जनमे जामे ॥ कद्रूके कुमार बहु सर्पा ॥ विषधर बली दहद बर दर्पा ॥ वेद शिरा मुनि ताके जायो
काली नाम नाग कहवायो ॥ दोहा ॥ कद्रूके पहिले सुवन सहस चरन श्रीशेष ॥ हेमदीप तिनकी कथा ।
सुनहु सचैन विशेष ॥ ४२ ॥ एक दिवस नारायण स्वामी ॥ कहेउ अनन्तहि अंतरजामी ॥ महि मंडल धर
सकै न कोई ॥ ताहि धरहु तुम निजसम जोई ॥ जगहित काज करहु यह भाई ॥ सो सुनि कह्यो सेष अहिराई
अवधि बरसानिय धारन केरी ॥ तब धारउ इच्छा यह मेरी ॥ तब हरि कहेउ अवधि जौं चहहू ॥ सहस नाम
मम नित तब कहहू ॥ होउ जाइ जब मम सब नामू ॥ तब महि धरेहु करेहु विश्रामू ॥ सो सुनि यह अनंत
उचारा ॥ होइहै कौन हमार अधारा ॥ विन आधार रहौं जल कैसे ॥ चक्रपानि बोले मुनि ऐसे ॥ दोहा ॥
मैं तुम्हरे तर कमठके करिहौं बर आधार ॥ धरहु धरनि धर धरनि कहं सुनि गहि हर्ष अपार ॥ ४३ ॥

गे पाताल शेष सुख सींचे ॥ तहँहूँतें लख योजन नीचे ॥ धरनी धर धरनी धरनीके ॥ राजे राजे सकल अहीके ॥ शेष रहे अरु विधिके भावे ॥ अहिगन अधोलोक अभिलाषे ॥ अतल वितल अरु सुतल महातल ॥ बहुरि तला तल और रसातल ॥ कोऊ रमनकदीप सिधाए ॥ जिन्ह कहं जहं मुख चारि पठाए ॥ चाहत सुनन कथा अब कौना ॥ सुनि बोले विदेह बुधि भौना ॥ रमनक निवसहि सर्प विशेषा किमि कालीके शत्रु खगेसा ॥ कहहु कथा करुना कर सोई ॥ बोले विप्र प्रेम अति जोई ॥ दोहा ॥ रमनक महं व्यालारि नित तक्षत सहसन व्याल ॥ देखि समय बोले सभय सुनिये नभचर पाल ॥ ४४ ॥ हरि वाहन कछु कृपा करीजै ॥ बाँधि प्रमान अहारहि लीजै ॥ हमहुं मरैंन उदर तव भरई ॥ जामहँ नहि यह देशउ जरई ॥ सुनि सो मानलीन्ह सर्पारी ॥ नित प्रति कीन्ह एक करपारी ॥ एक एक के जाहिं अगारा ॥ बैठि खाहिं खग चारि प्रकारा ॥ सर्प काल काली गृह आए ॥ खगपति बलि बलात सो खाए ॥ पन्नगारि अति रिसि विस्तारी ॥ मारेउ चरन करन दुखभारी ॥ मुरछि परेउ तुरतहि महि काली ॥ वदन वायसत दौरयौ हाली ॥ परम कोश वस ज्वाला माली ॥ ग्रसेउ खगहि काली जिमि काली दोहा बहुरि पकरि पटके अहिहि वैनतेय बलवान ॥ खगके द्वै पर सर्प तव नाचि लीन्ह नर त्रान ॥ एक मोर अरु दूसरो नीलकंठ भो होत ॥ विजया दसमी दिन दरश तिनको सब दुखखोत ॥ ४५ ॥ अमृत ध्वनि।

वव्यव्विनतासुत पकरि दद्दद्दल्यो घमंड ॥ पप्पप्पप्पन्नग डस्यो खग्खग्ग खगहि प्रचंड ॥ झझ्झ झ्झपटि झाट
क्कत धद्धद्धर निपट क्कत ॥ कक्क क्कुपित दप दद्द क्कर मारि सटक्कत ॥ चच्चच्चुंच कराल लोल पप्पप्पटफफ्फन
भभ्भभ्भिरत तत्तन छेदन घघ्घघ्घघ्घन ॥१॥ दोहा ॥ भागि चल्यो काली तबै पाछे चले खगेस ॥ सात दी-
प नव खंड में भ्रमत भयाकुल भेस ॥ ४६ ॥ भूअरु भुवर स्वर्ग अस्थाना ॥ महर सुतप जनलोक सुजाना ॥
आगे अहि पाछे अहि काला ॥ भयउ चक्र दुर्वास ह वाला ॥ तब काली अघलोक सिधायो ॥ काल लख-
त उताल भय छायो ॥ शत मुख वंदि सहस मुख चरना ॥ वेपमान विरतांतहि वरना ॥ धरनि धरन अनं-
त जग नायक ॥ कृपासिंधु करुना कर लायक ॥ शरण शरण भय हरण तुम्हारी ॥ काल सरिस आवत व्या-
लारी ॥ सो सुनि फनी मनी धर बोले ॥ घनी वनी बुधि विमल अतोले ॥ कहूं न होइहि तुम्हरी रक्षा ॥ क-
रिहैं खगाध्यक्ष द्रुत भक्षा ॥ दोहा ॥ वृंदा वन महं मुनि रहे सौं भरि सो जल माहं ॥ अयुत अब्द अति तप
कियो झख विहार लखि ताहं ॥ करि इच्छा विवाह कहं कीन्हा ॥ शत मंधात सुता कहं लीन्हा ॥ तप प्रभा-
व अति विभव बढ़ाई ॥ स्वसुर मुदित भे निरखि निकाई ॥ तिनके आश्रम जाइ खगेसा ॥ चाख्यो सफरी
स्वाद विशेषा ॥ देखि दयाधर विप्र रिसाए ॥ सरुष आप उठि साप सुनाए ॥ इत जौं खैहौं पुनि कोउ जीवा
तौ तब जीव तजै तन सीवा ॥ अभय तहां काली तुम जाहू ॥ इहि विधि कहा नागकुल नाहू ॥ सो सुनि कुटं-

Garga-saṃhitā.



गर्ग संहिता भाषा

श्री कवि कुल शिरोमणि पण्डित गिरिधर दास

रचित

जिसमें

श्री विष्णु उपासकों की प्रीति के लिये गोलोक खण्ड, वृन्दावन खण्ड, गिरिवर खण्ड, माधुरी खण्ड, मथुरा खण्ड, द्वारावती खण्ड, विश्वजित खण्ड, हलधर खण्ड, विज्ञान खण्ड, नव अंशों में श्री नरहरि हरिरूप परब्रह्म परमेश्वर सच्चिदानन्दघनश्याम स्वरूप श्री कृष्णचन्द्र आनन्द कन्द श्री महाराज का श्री गर्गाचार्य मुख निर्मित संस्कृत गर्ग संहिता और अनेक प्रमाणिक उपमोत्तम ग्रंथों की कथाओं का मूल सारांश लीला विलास दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित्त आदि सुगम छन्दों में वर्णित है

[illegible]

स्थान लखनऊ

[illegible]

[illegible] सुधारी गुरु तामर [illegible]
वर भारी अरु कवित्त अक्षरन सुधारी ॥ दोहा ॥ और सवया [illegible]
काला अहि प्रयात अभिराम ॥१॥ आगे कथा यथा मति भाखौं सब विधान अमृत फल चाखौं एक समय श्री गर्ग
मुनीसा नैमिष वन आए वरदीसा लषि शौनक उठि शिष्य समेता जोरि हाथ यह पूछ्यौ हेता कहहु नाथ मोहि

व सहित चलि काली ॥ रह्यौ यमुन जल मैंधसि हाली ॥ रमा रमण रमणक पुनि भेजा ॥ चल्यो मुदित थि-
र करे करेजा ॥ दोहा ॥ यह हम सकल कथा कथ तुम्है सहित विस्तार ॥ अब कह सुनिवे चहत हौ सुनि
कह भूभरतार ॥ ४८ ॥ हरि जसतें नहि मन अकुलाता ॥ जिमि अलि अब्ज सुरस मन राता ॥ वट भांडीर
निकट हरि राधा ॥ कीन्ह विलास रास रससाधा ॥ जब शिशु रूप भए भगवाना ॥ तब राधहि नभगि-
रा वखाना ॥ वृंदावन पुनि होइ विहारा ॥ सो सुख कहिये सुबुधि अगारा ॥ सो सुनि सत चित बोले नार-
द ॥ सुनिये नरपति नीति विसारद ॥ एक दिवस सखियन संग सोऊ ॥ ललिता ललित विशाखा दोऊ
आइ राधिकहि वचन सुनावा ॥ जो तव मन मन मोहन भावा ॥ सो इत नित आवत गोचारन ॥ रहत जबै
कछु निसा सधारन ॥ दोहा ॥ ताविरियां चढ़िकै अटा तुमक्यौं देखति नाहिं ॥ सुनिसुराधिका इमि कहत म-
हत मुदित मन माहिं ॥ ४९ ॥ तासु चित्रदुति आनहु आली ॥ देखहु गी अबहीं वनमाली ॥ हरि कर चित्र
दीन्ह तब हाली कण्ठ लगायो वृष रवि लाली ॥ काम विवस सय्या पर सोई ॥ सपन लख्यो मन मोहन त्योंई ॥
वन भांडीर रच्यौ जहँ रासा ॥ चटक मटक लटकन मृदु हांसा ॥ उचटि नीद खोले निज नैना ॥ लख्यो कहूं ति-
त केशव हैंना ॥ भो दुख जो सोक हो न जाई ॥ जिमि जिमि सो सर्वरी सिराई ॥ प्रात काल झुकि झकत झरो-
खे ॥ लखन लगी ललना रुख चोखे ॥ गऊ चरावत सखिन देखायो ॥ राधा हृदय मोद अति पायो ॥ दोहा ॥

बाढ्यौ और अनंगको उत्कंठा अधिकाइ ॥ कबमैं मिलिहौं मित्र सों नित्र नीर अधिकाइ ॥ ५० ॥ ॥ जब
कढ़ि कृष्ण गए तब राधा ॥ तुरतहिं दुखित अंग भो आधा ॥ अति व्याकुल वृषभानु कुमारी ॥ सकीन सो-
दुख भार सँभारी ॥ सोलखिकै अपनो मुख खोली ॥ ललिता ललित बचन बर बोली ॥ किहि हित अ-
तिहि दुखित हौ स्वामिनि ॥ जो निज पतिहि चहत गजगामिनि ॥ होइहि सकल मनोरथ मोटो ॥ किहि
हित करत जीव कहं छोटो ॥ सो सुनिकै गुनिकै गत बाधा ॥ बोलीं मधुर बचन तब राधा ॥ जौंन मोहि
मिलिहैं बनमाली ॥ तौनहि प्रान रहै तन आली ॥ सो सुनिकै ललिता चलिगई ॥ कृष्णहि नवल निहार-
त भई ॥ दोहा ॥ जानि अकेले यमुन तट ललिता चंचल नारि ॥ कहत भई तुम्हरे बिना राधा दुखित मु-
रारि ॥ ५१ ॥ जादिनतें तव रूप निहारा ॥ पलनहि कलनंदराज कुमारा ॥ कटु फुलेल पवि भूषन बसना ॥ गृ-
हबन अरु माहुर सम असना ॥ ससि ग्रीषम रबि फूल सुताते ॥ मिलिये माधव तातैं ताते ॥ प्रणत आ-
र्त्ति अर्दन तव नामा ॥ करहु मनोरथ पूरन कामा ॥ सुनिकै बिहँसि हुलसि भगवाना ॥ सुधा सरिस सुभ
बचन बखाना ॥ धीरज धरहु तजहु मति प्रेमा ॥ मैं मिलिहौं करिहौं सब छेमा ॥ जिमि भांडीर तीर भोरा-
सा ॥ तिमि करिहौं बहुबार विलासा ॥ राधा मेरी प्रान पियारी ॥ एक रूप द्वैतन निरधारी ॥ दोहा ॥ हम
राधा दोउ एक बपु नेकन है संदेह ॥ पुनि मिलिहैं धीरज धरहु हे ललिता गुन गेह ॥ ५२ ॥ राधा कृष्ण

माहिं जन जोई ॥ भेद करहिं सब ज्ञानहिं खोई ॥ तिन सम नहि जग कोउ अधकारी ॥ इहि बिधान जब कह्यौ मुरारी ॥
तब ललिता राधी ढिग आई ॥ कहत बचन उर हरष बढ़ाई ॥ जस तुम चाहत तस भगवाना ॥ सम चाहना सरस सुखमा
ना ॥ पै मिलिबे हित करहु उपाई ॥ पूजहु कोऊ देवहिं माई ॥ सुनि अति मुदित सोई अभिलाषा ॥ चंद्रानना सखी सो
भाषा ॥ मोहिं धर्म कोउ देहु बताई ॥ जामे मिलैं नाथ यदुराई ॥ कथा सुनी तुम गरग बदन तें ॥ कहहु श्रेय गुनि पुन्य
सदन तें ॥ दोहा ॥ सो सुनि उडपति आनना कहत सुमति अवगाहि ॥ तुलसी पूजहु श्रेय जग यासम औरहु नाहि
५३ ॥ दरसन परसन कीर्त्तन ध्याना ॥ सिंचन पूजन नाम बखाना ॥ रोचन रक्षा करन विचारी ॥ तुलसी नवधा भक्ति पिया-
री ॥ जे नर करहिं भक्ति तुलसी की ॥ हरि हुलास कर मनहु लसी की ॥ तिन सम सत्यन नर जग दूजो ॥ जिन हरि प्रिया तु-
लसि कहं पूजो ॥ जिमि जिमि वृंदा बढ़त अगारा ॥ तिमि तिमि जारत पाप पहारा ॥ जब मंजरी पत्र दरसाई ॥ अनघ
मनुज हरिपद सरसाई ॥ सब फल फूल पत्र फल पावै ॥ जौं तुलसी दल एक चढ़ावै ॥ सत सुबर्ण की देवै भारा ॥ ता
को चौगुन रजत बिचारा ॥ दोहा ॥ इनहि पूजि सो फल मिलै नितको कहि सक कौन ॥ जामहं वृंदा वृक्षबर यमन
लखै सो भौन ॥ ५४ ॥ जो तुलसी रोपहिं गृह माहीं ॥ तिन सम धन्य और जग नाहीं ॥ तुलसी दहत पाप कहं कैसे
तूल रासि कह पावक जैसे ॥ पुष्करादि गंगादिक तीरथ ॥ सुरहरि आदि बसहिं तुलसी अथ ॥ मरत बार तुलसी सु-
ख जाके ॥ यमगन आवहिं पास न ताके ॥ जातन तुलसी चंदन सोहैं ॥ तादिसि पाप आप नहि जोहैं ॥ तुलसी तरु

तर छाया माहीं ॥ पिंड देहिं ताकी क्षय नाहीं ॥ तुलसी गुन कहि सकै न कोई ॥ चार पांच सहसानन सोई ॥ तुलसी
हरिपद राखै जोई ॥ इच्छित वस्तु लहै जग सोई ॥ दोहा ॥ तातें तुम तुलसी तरुहि पूजहु सहित बिधान ॥ ताप
दाप तव बिवसह्वै रहिहैं श्रीभगवान ॥ ५५ ॥ सो सुनि तुलसी पूजन काजा ॥ दुत उद्योग कियो नरराजा ॥ केतिक
बन महं वनई क्यारी ॥ शत कर कर मंडल रुचिकारी ॥ मनिमय परम मनोहर सोहै ॥ देखि सुरेस सिंहासन
मोहै ॥ कनक केतु बहु बनक बनाए ॥ चारु थाव लाथाप लगाए ॥ इबिधि बिरचि वृंदा कहं थापा ॥ पल्लव हरि-
त निकंदनि पापा ॥ अभिजित नखत माहिं कियो पूजा ॥ गर्ग प्रोक्त बिधान नहिं दूजा ॥ मास मास अति पूजि
प्रबीना ॥ इषुतें मधुलौं पूरन कीना ॥ जल पय ऊख दाख अरु कमला ॥ मिसरी पंचामृत इक ममिला । दोहा
एक वस्तु प्रति मास यह पूज्यो परम प्रबीन ॥ माधव प्रति पद प्रथम पख उद्यापन कहं कीन ॥ ५६ ॥ द्वै लख
द्विज छप्पन पन कारा ॥ भूषन बसन अनेक निहारा ॥ लक्ष भार मोतीके भारी ॥ गर्गहि दीन्ह राधिका प्यारी
कोटि भार भरि कनक नवीना ॥ एक एक ब्राह्मन कह दीना ॥ सो सब सुनहु भूमि भरतारा ॥ मोती शत शत कंचन
भारा ॥ दिबि महदेवन दीन्ह नगारे ॥ जयजय भाषि प्रसून पवारे ॥ चढ़ि खगेस तुलसी तब आई ॥ पीत बसन
भुज चारि सुहाई ॥ मन मोहन मन मोहन प्यारी ॥ हृदय मनोहर माल सुधारी ॥ तुलसी रूप अनूप अतिलसी ॥
[illegible] ॥ दोहा ॥ मिलिकै राधा सों तबै मुदित उदित जिमि चंद ॥ श्री वृषभान कुमारि सों बोले

विहसत मंद ॥ मैं प्रसन्न तव ऊपर राधा ॥ माँगिलेहु बर बर गत बाधा ॥ तुमतौ हौ कल्यान सरूपा ॥ पैहौं तुमक-
ह देत अनूपा ॥ होइहि सकल मनोर्थ तुम्हारा ॥ पूजन बिधि सह कीन्ह हमारा ॥ सो सुनि बंदि देवतहिं राधा ॥
कहत मुदित लखि इष्ट अराधा ॥ मोहि गोबिंद चरनरति होई ॥ तुम जानत मम मनहै जोई ॥ सो सुनि एव मस्तु
कहि वृंदा ॥ गई बिदाह्वै घर सानंदा ॥ जो बर दान दीन्ह यह तुलसी ॥ सुनि गुनिकै राधा अति हुलसी ॥ सुनै रा-
धिका चरितहि जोई ॥ पुन्य तासु कहि सकै न कोई ॥ दोहा ॥ इमि यह कथा तुम्हे कही काटन कलुष कलेश ॥ सु-
नि सुन वेइच्छा गहत कहत भए मिथिलेश ॥ ५८ ॥ सुनि यह कथा मोद भो भारी ॥ अब मोकहँ कहियै व्रत धारी ॥ कि-
मि राधा हरि कीन्ह विलासा ॥ सुनि नारद यह बचन प्रकासा ॥ तुलसी सेव जानि छबि छाए ॥ बरसाने मन मोह-
न आए ॥ करि स्वरूप सुंदर युवती को ॥ तैसोइ अभरन अंबर नीको ॥ नवकेसर उरहार हमेला ॥ करन फूल कचमले
फुलेला ॥ लहँगा सारी चोली भारी ॥ प्रबिसे वृष रबि धाम मुरारी ॥ चारदुआरे उन्नत भारे ॥ करिबर बहु झूमत
मतवारे ॥ घोरे उज्जल बरन अथोरे ॥ भूषन धरे भरे सब ठौरे ॥ दोहा ॥ वृषन सहित वृषभानु गृह बहुत गऊ के वृंद
जात रूपके आभरन जात रूप आनंद ॥ ५९ ॥ इमि देखत अगिरी छबि छाए ॥ अंतःपुर महँ माधव आए ॥ कनक क-
पाट अजिर अभिरामा ॥ ललना लोलसु ललित ललामा ॥ बीना ताल मृदंग बजावैं ॥ राधाप्यारीके गुन गावैं ॥ उप-
बन आम कुंद मंदारा ॥ दाड़िम केतकि निंब निहारा ॥ मालति माधुरि माधुरि महकै ॥ सुख सरूप समीर जहँ लहकै

पद्म पराग सुबास सुहाई ॥ डोलहिं सिली बदन समुदाई ॥ कोकिल सारस सुवा मयूरा ॥ रूरा एव दशहुँ दिसि पू-
रा ॥ बारिज बने बारिजा नीचे ॥ पहल सकल गुल जलतें सीचें ॥ दोहा ॥ कोटिन तिय भूषन धरे बसन बने बहु
रंग ॥ पास खवासी मैं खरी मुख प्रकास सउमंग ॥ ६० ॥ तिनमहँ राजत वृष रविकन्या आतम हरिपद लगीं अ-
नन्या ॥ तनक समीर समीर सुहाई ॥ चारहु दिसा प्रगट सुखदाई ॥ अतिसोभा सोभाके आगे ॥ लज्जति तातें चा-
हति भागे ॥ छबि निधि तहँ पहुंचे भगवाना ॥ सुंदर पन सबकेर ढपाना ॥ नूतन नवला नारि निहारी ॥ प्रमुदि-
त भई सकल उरभारी ॥ मुदित राधिका अंगमलाई ॥ सोछबि लखि सुर रहे लोभाई ॥ बहुरि कनक आसन बैठाई ॥
राधा कहत महत हरषाई ॥ तुम्हरो कहा नाम अरु ठामा ॥ धन पबित्र कीन्हो मम धामा ॥ दोहा ॥ तुम सम सुंदर रू-
प हम कबहुन देखा बाल ॥ तुम निवसत सो धन्य थल उदय सुभाग्य विशाल ॥ ६१ ॥ कहहु हेत आवन को काहे ॥
हम सब करब तुमहि जो चाहे ॥ तब स्वरूप हरि सरिस लखावै ॥ नारि मेषते अचरज आवै ॥ तुम अवनित
आवहु मम पासा ॥ जामह होइ सकल दुख नासा ॥ नंद नंदन मम मनहि चोरावा ॥ तातें कछु जग मांहि न
भावा ॥ जो तुम रहिहौ पास हमारे ॥ नहि देखै दुख दिशा हमारे ॥ जो तुम नहि ऐहौ मम पासा ॥ तौ दुख दशगु-
न करिहि प्रकासा ॥ सो सुनिकै राधाकी बानी ॥ बोले सुंदर वचन सयानी ॥ नंद भवन तद निवसत वामा ॥
गोपदेवता है मम नामा ॥ दोहा ॥ तब स्वरूप को सुजस सुनि ललिता मुखतें बाल ॥ आई देखन हौं तबै तुम्हरे

निकट उताल ॥ ६२ ॥ देखि तुम्हे मन मुदित हमारा ॥ हमहु चहत नित दरस तुम्हारा ॥ अहा कहा कहिये नक-
हाई ॥ तोहिं लखि सुंदर सुंदरताई ॥ हे नृप इमि दोउ मिले सुजाना ॥ सखी स्वरूप कह्यो भगवाना ॥ दूरभवन मम
जैहौं आली ॥ प्रातकाल कल ऐहौं काली ॥ सो सुनि मुरछि परी सुकुमारी ॥ सहि न सकी वियोग सो भारी ॥ च-
कित सखी सब सो लखि धाई ॥ सीचेउ चंदन अतर मिलाई ॥ जबकछु चेत राधिका आनी ॥ गोपदेवता बो
लीबानी ॥ मोहि गो गोरस सपथ अपारा ॥ ऐहो अबसि भाम भिनुसारा ॥ दोहा ॥ इमिकहि माया बाल वपु
गोकुल आए श्याम ॥ पुन्य धाम अभिराम प्रभु रूप निकंदन काम ॥ ६३ ॥ बहुरि प्रात प्रभु तियतन धारी ॥ आए
जहं वृषभानकुमारी ॥ लखि उठि आसन पैबैठाई ॥ बात बरबानत कीरति जाई ॥ तुम आवत तबमुख मोहि होई
तुमबिन दुख जानहि सबकोई ॥ ममसुख दुख तुम्हरे आधीना ॥ सुखी करहु करिकृपा प्रबीना ॥ सो सुनि सो
चुपरही नबोली ॥ खेदभेद कहकहा नखोली ॥ गोपदेवतहि देखि उदासा ॥ वृषभानि कन्या वचन प्रकासा ॥ मातु
कह्यो कछुकै कछु भर्त्ता ॥ सासु निठुनि कटु वचन उचर्त्ता ॥ सबति दोषकै अरु कोउ केरो ॥ ऐसो देखि समय मनमे
रो ॥ दोहा ॥ कैकछु आवत खेदभो दूरि अहै आगार ॥ कहहु मोहि किहि हेतुहै विवरन वदन तुम्हार ॥ ६४ ॥
सोकछु चहै लेहु तुमसोऊ ॥ गजहय अरु रथ पैदल कोऊ ॥ असन वसन मनि मंदिर सुरभी ॥ जोचाहहु सोलेउ अबु-
रभी ॥ तनहित धनलज्जा हित तनको ॥ तीनहु तें रक्षे मित्रनको ॥ एसब मित्रकाज हित अहहीं ॥ जोकुमित्र कपटी कै

रहहीं ॥ ताहि नरकहू नाहिं ठिकाना ॥ सत्य वचन हम तुमहिं बखाना ॥ सो सुनिकै भगवान कृपाला ॥
बरवाला प्रति बचन निकाला ॥ हम सखि बृहत्सानु जो सैला ॥ दधिलै जात रही सो गैला ॥ तहाँ साँकरी
खोरि मैं आई ॥ मारग रोक्यो ढीठ कन्हाई ॥ दोहा ॥ अति निलज्ज मम हाथ गहि माँगत सबको दान ॥
मैसाचर्य चितैरही कहत हृदय भयमान ॥ मैंनहि दैहौं गोरस तोही ॥ सुनि अँगुठा दिखाइ कै मोही ॥ लै
लाठी मारत भो छटकी ॥ झटकी मम मटकी महि पटकी ॥ नंदीश्वर तट नागर नटकी ॥ निरखि ढीठ तामें
द्रुत सटकी ॥ कुटिल नंद सुत हे ब्रज नारी ॥ सतकारो कारो विषधारी ॥ तिनसो तुम कीन्हो है हेता ॥ तज
हु तुरित मम मानहु एता ॥ निरमोही सो अहइ असीला ॥ तुम सुसील पथ प्रीति असीला ॥ सो सुनिकै
वृषभान कुमारी ॥ कहत कोपिउर दुख विस्तारी ॥ जाहि अहर्निसि हर विधि ध्यावैं ॥ कबहुं दरश द
रजे नहि जावैं ॥ दोहा ॥ दत्त कपिल शुक अंगिरा जीव गर्ग अरु व्यास ॥ तप साजहि नित दरस हित यो
गी जोग प्रकास ॥ ६६ ॥ कृष्ण आदि अज पुरुष कृपाला ॥ लीला वपुधरि भे गोपाला ॥ भुवको भार
हरन भगवाना ॥ तिहि अस मूर्ख कहत नहिं जाना ॥ गोपालहि गोरज तन धारे ॥ गोप रसन गो नाम उ
[illegible] गोपति चहई ॥ गोपति कर सरवस गो अहई ॥ जेहि लखि भे उनमत्त कृपाली ॥
[illegible] हरिहि कंठ बैठायो ॥ वल्लभ की कंठी जनु

बाँधी ॥ वैष्णव भए सकल सुख साधी ॥ रमा शंभु विधि पारन पावा ॥ शेष सहस्र वदन नित गावा ॥ दो-
सकट सर्प खर वत्स वक त्रिनावर्त्त वक भग्नि ॥ मुक्त किए द्वैतरुन कहं अच्युत अघ वन अग्नि ॥ ६७ ॥
भक्ति हेत लीला कृत स्वामी ॥ नमो कृष्ण विन तासुत गामी ॥ चूड़ामनि सबके भगवाना ॥ माधव के
शव ज्ञान निधाना ॥ मुक्ति देत सबकहं श्री नायक ॥ ताहि कहत अस वचन अलायक ॥ सोसुनि
बोले केशव तबहीं ॥ जोइत प्रगट होइसो अबही ॥ तब तब होइहि वचन प्रमाना ॥ कुंद मकुंद ततरु
हम जाना ॥ सुनि बोली यह कीर्त्ति कुमारी ॥ अहैं इत घन श्याम मुरारी ॥ जो हारै सो सब निज देई ॥
हम तुमते करार अब एई ॥ इमि कहि वंदि हरिहि मन माहीं ॥ बैठी मूंदि दृगन निज ताहीं ॥ दोहा ॥
लोचन मोचन करत जल लखि करुना निधि श्याम ॥ वामरूप तजि उरुष भे आनंद धाम ललाम ॥
६८ ॥ लखि अचरज सबनारिन पायो ॥ राधातें मोहन यह गायो ॥ हे प्यारी के हरि कटि वारी ॥ रूप
अनेक मदन मदहारी ॥ तुमज़न मोहिं टेरयो मैं आयों ॥ तूरन बड़ी दूरते धायो ॥ तजी सकल सुरभी
व्रज माहीं ॥ ग्वाल बाल कहं छाँडेउ नाहीं ॥ वंशी वट में धायो आयो ॥ किहि कारन तुम आसु बो-
लायो ॥ कहो अहै सो सखी सुजाना ॥ सरतन किमि अनुसरत अज्ञाना ॥ लखि नंदलाल मुदितचि
तराधा ॥ वंदे पद हृद प्रेम अगाधा ॥ इहि विधि हरि को चरित अपारा ॥ सुनत होइ भवसागर पारा ॥

दो-

दोहा॥ जनक भूपभाषत भए इमिदै दरशन श्याम॥ वहुरि रासकै सो कियो मुनि कह मुनि मति धाम॥ माधव
माधव मासमह मधुर माधुरी युक्त॥ पाँचैं तिथि वृंदा विपिनि शशितें दिसि तम मुक्त॥ ६९॥ यमुना उपवन
मैं वनवारी॥ रास रचायो रसिक विहारी॥ आई गऊ लोक तें भूमी॥ मनि मय कनक वनक वनि भूमी॥ दि-
व्य रूप वृंदावन धार्यौ॥ हरितपता सह लता सुधार्यौ॥ मनसी पान सहित वर पानी॥ रुचिर विराजी रविजारा-
नी॥ रतन धातु मय राजत सैला॥ निर्भर श्रृंग वदरि सों फैला॥ तरुन तरुन सह नवल निकुंजा॥ कोकिल कि-
लकल कूजहिं कुंजा॥ पारावत सिखि सारस हंसा॥ पूरि शब्द सव नासहि गंसा॥ कहिन जाइ सरवर की शोभा
जिहि लखिकै सुरसरवर लोभा॥ दोहा॥ उपजे वर अरविंद वहु महकत अति मकरंद॥ मनहु नदी हरिद-
रस हित प्रगट किए दृग वृंद॥ ७०॥ शीतल वहइ वयारि पियारी॥ तहँ वाँसुरी वँजइ वनवारी॥ सो सुनिकै सिगरी
व्रज वाला॥ चलीं चतुर मराल की चाला॥ द्वार द्वार शृंगार करैया॥ पलग सँवार पारषद अैया॥ गोवर्द्धन वृं-
दा वनवारी॥ आईं आप सकल नवनारी॥ इहि विधि इनके यूथ सुजाना॥ आए जहां कृष्ण भगवाना॥ यमु-
ना यूथ वहुरि चलि आयो॥ नीलवरन अरु वसन वनायो॥ गंगा आईं यूथ समेता॥ अंवर स्वेत अंग छवि
देता॥ आईं रमा यूथ निज लैकै॥ अभरन वसन धरे निरभैकै॥ दोहा॥ पुनि आईं मधु माधवी सुमन सिंगार
[illegible] ॥ ७१॥ विरजा यूथ लस्यो तहँ भारी॥ हरित वसन

गोरी सवनारी ॥ ललिता और विशाषा माया ॥ तीनयूथ औरहु चलि आया ॥ इमि वसु षोडश वत्तिस जूहा ॥ म-
धि मोहन शशिके समरूहा ॥ राधा सहित रमत वनवारी ॥ रूप रुचिर राजत रुचिकारी ॥ कवित्त ॥ नूपुर नवल
पग परम जरायन गछरी गुन भरी धरी वांसुरी समेत हाथ ॥ काछनी कमर कसी किंकिनी ललाम लसी देखि
थोरी थोरी हँसी लाज रहै रतिनाथ ॥ कुंडल कपोल गोल राजत अमोल लोल सोहत निचोल तन अतर सुगं
धसाथ ॥ भृकुटी मटक तान खटक लटक जान नटके समान चट चटक मुकट माथ ॥ दोहा ॥ यमुना तट त्रिय
कर झटक हरिगे विटप लुकाय ॥ चपल छवीली राधिका गह्यौसु औचक जाय ॥ ७२ ॥ प्यारी अगरि चलीं
हरि धाए ॥ पकरि न पावत पैरथकाए ॥ जहँ जहँ दुरत चंद्रमुख वारी ॥ पायल धुनि सुनि जात मुरारी ॥ मोहन
प्यारिहि पावत नांही ॥ चाहत गहिकै अैचन वाही ॥ जिमि दामिनिहि गहन घन धावै ॥ तिमि श्यामा घन
श्याम सुहावै ॥ मकरध्वज रति लीन्हे संगा ॥ तिमि श्री रंग करत तितरंगा ॥ सखिन मनोहर मंडल कीनो ॥ मधि
मोहन मोहिनि कहँ लीनो ॥ केलि करत छवि लागति कैसी ॥ कनक माल महँ सनि मनि जैसी ॥ वेनु मृदंग चंग
कट ताला ॥ आवज ताल उपंग रसाला ॥ दोहा ॥ यमुना मह मोहन कियो कोटिन भाँति विहार ॥ सुमन सडारहिं
सुमन कहँ जय जय जगदा धार ॥ ललित लोल ललना लए कालिंदी कल्लोल ॥ कहिन सकत अहि राज छवि
उपमा अतिहि अमोल ॥ ७३ ॥ वारि विहार विहारी करिकै ॥ गोवर्द्धन आए मुद भरिकै ॥ तहाँ कंदरा परम निहारी

रास कीन्ह सुखरास मुरारी ॥ सिंहासन लखि अति छविदेना ॥ बैठत भे प्रभु प्रिया समेता ॥ तहँ सखियन अँखियन सुख काजा ॥ राजा कहं सिंगारउ राजा ॥ इक इक अभरन अवलन दीनो ॥ यमुना नूपुर नवल नवीनो पायल दीन्ह जन्हु की जाई ॥ रमा दीन्ह कर धनी सुहाई ॥ मधु माधवी हार अतिभारी ॥ चंद्रहार विरजा रुचिकारी ॥ ललिता अँगिया आगे राखा ॥ गल बंदहि दीनो वैशाखा ॥ दोहा ॥ कंकन एका दृष्टि दियो माया मुँदरी दीन ॥ बाहु बंद चंद्रानना मधुमति बाजु नवीन ॥ ७४ ॥ आनंदादि सखी समुदाई ॥ भूषन वसन दीन्ह छवि छाई ॥ बंदी अरु ताटंक हि दीना ॥ सखियन मिलिसब आनंद कीना ॥ चंद्रकला वेना अभिरामा ॥ पद्मावती दीन्ह वरदामा ॥ सीसफूल नग जटित नवीना ॥ चंद्रकांता वनिता दीना ॥ हंदा हंदा वनपति जोई ॥ बाकी भूषन दीन्हो सोई ॥ इहि विधि भयो शृंगार सुजाना ॥ सो सोभा को सकइ बखाना ॥ तब हरि सबन सहित छवि छाए चंद्र सरोवर आइ नहाए ॥ क्रीडा कीनी विविधि विधाना ॥ आए तबै सोम भगवाना ॥ दोहा ॥ सरसिज अरु शशि कांत मनि द्वैद्वै परम प्रवीन ॥ करुना निधि कह भेंट धरि चंद्र दंडवत कीन ॥ ७५ ॥ बकुला वन वनबारी आए ॥ मेघ मलार राग कह गाए ॥ मंद बतास चली तिहि काला ॥ बरषत भयो सुरद की लाला ॥ भई तबै गरमी अति नरमी ॥ हरषे हृषीक अमानुष करमी ॥ ताल विपिनि पुनि लालन आए ॥ कीन्हो राम रसिक छवि छाए ॥ जलयंत्र तहां भयो श्रम भारी ॥ होरी खेलि सिधारी नारी ॥

हम प्यासी ॥ काछुक उपाय करहु छविरासी ॥ तुम कर्त्ता भर्त्ता जग केरे ॥ कीजै कृपा मनोहर मेरे ॥ सोसुनि वेत्र अवनि हरि मारा ॥ निकरी निर्मल जलकी धारा ॥ दोहा ॥ नाम वेत्र गंगा भयो सीतल सुखद स्वरूप ॥ जा दरशन अघ कटत है परसन हरिपद भूप ॥ ७६ ॥ तहाँ विविधि विधि कीन विहारा ॥ बालन सहित गोपाल पियारा ॥ कृष्ण कुमुद कानन चलि आए ॥ तहँ प्यारी बहु पुष्प मंगाए ॥ हरि सिंगार की करी तयारी ॥ रुचिर रचे भूषन ब्रजनारी ॥ चंपा कर कटि वसन बनायो ॥ कानन कमल कुसुम सटकायो ॥ पीत चमेली अंगन सोहै ॥ कदम किरीट विश्वमन मोहै ॥ वर मंदार जलज की धोती ॥ तुलसी माल अधिक छवि होती ॥ इहि विधान मोहन शृंगारे ॥ बहुरि रासकी रची कतारे ॥ आवज बीना वेनु मृदंगा ॥ मिले बजहिं संग चंग उपंगा दोहा ॥ भैरव मेघ मलार श्री मालकोश हिंडोल ॥ दीपक सह षट राग कहँ गावत गुनी अमोल ॥ ७७ ॥ अष्टताल सुरसात समेता ॥ तीन ग्राम गति लेत सुचेता ॥ गावत हरिहि रिझावत गोपी रास विलास हास रस चोपी ॥ माधव शशिकी छटा अपारा ॥ वनिता वल्लभ करहिं विहारा ॥ शीतल सरस समीर झकोरत ॥ सुमनडारते झुकि झुकि तोरत ॥ कुंद कदंब मालती महकत ॥ बकुल चंपा कमल मिलि लहकत ॥ केलाकुटज पनस मंदारा ॥ पीपल श्रीफल निंबु अनारा ॥ आम करील दारु वट तुलसी ॥ केतकि केवड़ा तनी मिलि हुलसी यामुन चंदन वेला सोहै ॥ चंप चमेली कनइल जोहै ॥ दोहा ॥ विविधि विटप वेली बहुत सुमन पत्र फल युक्त ॥

दरस करहि भगवान को जानहु जड वपु मुक्त ॥७८॥ काम विपिन महँ आइ मुरारी ॥ करत भए मुरली धुनि भा
री ॥ सुनि सो मुरछि परीं व्रजबाला ॥ मोहि लयो मन नंदको लाला ॥ थिरभे जंगम जंगम थिरभे ॥ मरजादागत
सब तिहि थरभे ॥ भो हरि चरन चिन्ह तिहि ठावैं ॥ जिहि लखि मनुज परम गति पावैं ॥ वृहत सानु नंदीश्वर के
तट ॥ विहरत व्रज मंडल नागर नट ॥ भो अभिमान त्रियन को भारी ॥ प्यारी सहत व दुरे मुरारी ॥ व्याकुल भई स
कल व्रज नारी ॥ मुखतें कहत हाय गिरधारी ॥ कितगे प्रभु प्रणतार्त्ति निवारन ॥ रक्षहु करिसु कृपा जग कारन
दोहा ॥ जहाँ तहाँ खोजत फिरत हा प्रीतम यह वैन ॥ पूछत सब पादपनतें विरह विकल सुधि हैन ॥७९॥ जिमि
धन पाइ होत अभिमाना ॥ ताके नसे निपट ही हाना ॥ तैसे प्रथम कीन्ह न विचारा ॥ अब हरि विनय हाल ह-
मारा ॥ सब गोपी दुख सागर धसीं ॥ अति वियोग के कीचड फँसीं ॥ ज्ञानी नृपति बखानी बानी ॥ दुरेसु कैसे सा
रंग पानी ॥ बहुरि तिनै किमि दरशन भयऊ ॥ सुनि नारद भाषन मन दयऊ ॥ हरि संकेत सुवट तट जाई ॥ कीन्ह
सिंगार हृदय हरषाई ॥ प्यारी प्रियको कीन्ह सिंगारा ॥ बहुरि चले उर हरष अपारा ॥ भद्र खदिर अरु विल्व वि-
पिन मैं ॥ विपिनि कोकिला चारु सघन मैं ॥ दोहा ॥ गोपी हरिके चरन कहं देखत भई सुजान ॥ चिन्ह तासु नरपा-
ल मनि सुनहु सुचित सुज्ञान ॥८०॥ यवध्वज चक्र छत्र घट निंदू ॥ सथिया तिल अंकुश अध इंदू ॥ पद्म वज्र झष
धनु वसु कोना ॥ तीन कोन गोखुर अति लोना ॥ शंख नाभि अरु ऊरध रेखा ॥ चिन्हित चरन श्याम कर देखा ॥५॥

मोरज सीस धरेउ करि प्यारा ॥ पुनि प्यारीके पदहिं निहारा ॥ केतु कमल पाठीन पहारा ॥ शक्ति शंखवरख ऊरधधारा ॥ चक्र अर्द्ध ससि अंकुस गदा ॥ लवंग लता सिंहासन मुदा ॥ छत्र और है बिंदु सुजाना ॥ प्यारीके चरनहिं पहिचाना ॥ बहुरि चलीं सिगरी व्रजबाला ॥ आई कोकिल विपिनि रसाला ॥ दोहा ॥ तब हरि राधातें कह्यो आवत सिगरी बाल ॥ तुमकहँ हमकहँ पकरिहैं तातें चलहु उताल ॥ ८१ ॥ सोसुनि परम गहरहि आनी ॥ बोली कृष्ण चंद्रप्रति बानी ॥ मैं अति थकी सकत चलिनाहीं ॥ तुम मोहिं भरमावत बन माहीं ॥ सुनि हरि गुना ताहि अभिमाना ॥ पंरवा कीन्हो कृपा निधाना ॥ कहत भए करतें करथांभी ॥ कछुक दूरलौं चलिय तहांभी ॥ सुनि बोली मति देहु सवारी ॥ भाषि पीठि कहँ पोरेउ नारी ॥ तब हरि कहेउ चढ़हु मम काँधा ॥ और सवारी है नहिंराधा बैठे हरि लखि त्रियमन महँगा ॥ तबराधिका उठायो लहँगा ॥ आउ जानिमे अंतरध्याना ॥ मान दमन गुन निधि भगवाना ॥ दोहा ॥ नाथ विगत तब राधिका कीन्ही उच्च पुकार ॥ व्याकुल अति धरनी गिरी हा व्रजराजकुमार ॥ ८२ ॥ रोवत तहाँ राधिकहि जानी ॥ विकल सकल बाला बहुरानी ॥ कोऊ तनमें चंदन लावे ॥ कोऊ बैठी व्यजन डुलावै ॥ राधामुख सुनि हरिकी लीला ॥ कीन्ह परम दुख झुंडन मीला ॥ करतें पकरि कान कह डरही ॥ परम दीन चित विनती करहीं ॥ बैठी सकल प्रेमतें पागी ॥ गोपी गीतहिं गावन लागी ॥ सहित सकल सुरताल मिलाई ॥ भजत अनन्य एक यदुराई ॥ छंद ॥ लोकाभिराम मनुष्य भूषन विश्व दीप कृपा करम् ॥

कंदर्प मोहन भक्त संकट हरन परमेश परं॥ आनंद कंद मुकुंद नंद कुमार गोकुल चंद्रमा॥ गोविंद प्रभु
अरविंद लोचन रमापति धृति अति क्षमा॥ गोविप्र साधूकेव रक्षक दुष्ट अर्दन हे विभू॥ हरि पाहि पूरन प-
रम परमा धाम परि पालय प्रभू॥ गोपाल सागर मध्यमनि गोपाल गिरि महं धातुवत्॥ गोपाल जल
अरविंदवत् प्रभु पाद पंकजपातुवत्॥ राधा वदन पद्मालि राधा वदन चंद्र चकोरवत्॥ राधा हृदय श
शि हार करुना गार राधा प्रेमभृत्॥ श्री रासरंग निवास गोपति प्रानपति परमा मयं॥ कुरु कृपाकृ-
ष्ण कृपाल दीन दयाल परमेश्वर स्वयं॥ अच्युत अनादि अनंत अद्भुत अजर अमरपते प्रभो॥ श्री
कृष्ण विष्णु मुकुंद माधव ईश श्री नायक स्वभो॥ तव रहित प्रान पयान इच्छत दास रक्षा कुरूपते॥
आधार प्राणा धार विश्वा धार गोवर्द्धन धृते॥ सौदास नलश्री राम वामहि पूर्व दुःख अभूद्यथा॥ तव रहित हे-
हित रूप व्रजपति अधिक व्रज वालन व्यथा॥ आरत हरण व्रज वंश भूषण विश्व पति केशव हरे॥ अवलो
कि स्वदिशि सुजान सुंदर कुरु कृपासु कृपाकरे॥ श्रीकृष्ण पति जग साधुतेहिं अभिमान नहिं आश्चर्य है॥
मम गर्वनास्यो गुन प्रकास्यो कुरु कृपा यह अर्य है॥ जग विदित पति है भक्त वत्सल सत्य कीजै नामको॥ गुन
खान पाप कृशानु विश्व प्रधान अति अभिरामको॥ ६॥ दोहा॥ इमितिन कहँ रोवत निरखि प्रगट भए घनश्याम
जिमि निहारतें दिवस पति परमा परम ललाम॥ ८३॥ मस्तक मुकुट मनोहर वेखा॥ गोपिन नैन पिये इमि देखा

ग॰सं॰ ८२ लपटीं अंग अंग महँ कैसे ॥ तरु तमाल महं वेली जैसे ॥ तिनमहँ नृत्यन लगे विहारी ॥ संग लिए जिन राधा-प्यारी ॥ जितनी गोपी तितने हरी ॥ यह अद्भुत इक लीला करी ॥ तिहि छन हाथ जोरि व्रजवाला ॥ भाषत सकल प्रेमकी माला ॥ मोहितजि आप गए कित स्वामी ॥ सुनिभं कहत पक्षिपति गामी ॥ दधि सागर महँ हंस मुनीसा ॥ करत वृद्ध तप लखि ममदीसा ॥ द्वैम न्वंतर तिन कहँ वीते ॥ तपकहँ करत सकल दुखरीते ॥ दोहा ॥ दोय कोसको मच्छ इक लील गयो तिहि काल ॥ और मच्छ इक ताहि कहँ निगल्यो आइ विशाल ॥ ८४ ॥ मैं द्रुत जाइ असुर झखमारी ॥ मुनिकहँ अरितैं लीन्ह उवारी ॥ स्वेत दीप महँ मैं पुनि जाई ॥ सयन कियो निद्रा चलि आई ॥ तव आयो मैं तुम्हरे पासा ॥ सत्य कहत यह वचन खुलासा ॥ मम भक्तन कहँ दुख नहि होई ॥ मोर प्रतिज्ञा जानहुँ सोई ॥ सो सुनि कहत भँई व्रज नारी ॥ किमि कीन्हो तित सयन मुरारी ॥ सो स्वरूप मोहि दरश करावो ॥ तव हरिसोई वपु सरसावो ॥ आठ भुजा भेहरितेहि काला ॥ रमाभई राधिका रसाला ॥ क्षीर सिंधु प्रगटो अतिभारी ॥ लहर वहर कर कहर अपारी ॥ दोहा ॥ शेष गेंरुडी मारिकै तहाँ विराजे आय ॥ छत्र सरिस आनन सहस मनिन जटित दरसाय ॥ ८५ ॥ तापर सोए कृष्ण अवाधा ॥ लागी चरण चाँपिवे राधा ॥ लखिवंदना कीन्ह व्रज नारी ॥ मुदित भईं मनमाहिं विचारी ॥ कीन्ह जहाँ यह लीला भारी ॥ सो अति तीर्थ भयो व्रत धारी ॥ तजिसो रूप अपन वपु लीन्हा ॥ कालिंदी महँ क्रीडा कीन्हा ॥ राधा करतें कमलहि लैकै ॥ हरि जल

वृं॰ १२

माहिं दुरे सुख छैकै ॥ लकुटी बनु [illegible] ॥ लै राधा जल अंतर सरकी ॥ हरि माँग्यो निज बस्तु न आ [illegible]

नी ॥ बारि बिबिधि बिहरे सज्ञानी ॥ दोहा ॥ माधव माधव मास इ [illegible]

यनके लखि छबि चित्र बिचित्र ॥ ८६ ॥ बेणु बजावत मदन गुपाला ॥ आए बन भांडीर रसाला ॥ तहँ प्यारी

कर बर शृंगारा ॥ करते भए बिश्व कर्त्तारा ॥ राधा हरि शृंगार बनायो ॥ फूलन को अति सो सरसायो ॥ लोह

बिपिनि आए भगवाना ॥ जहँ सुगंध आवत बिधि नाना ॥ बालन सहित रमन गोपाला ॥ करत अनेक ख्या

लि के ख्याला ॥ अलि समूह मिलि बिधि चलि आवहिं ॥ कलि कलि बैठहिं कुल कल गावहिं ॥ तहँ बाधा

प्रगटी इक जानो ॥ दाल भात महँ मूसर मानो ॥ शंख चूड इक सखा धनद को ॥ यक्ष बली बर पूरित मद की

दोहा ॥ तासम नहिं संसार मैं गदा धरन क्षिति रौन ॥ सो मोतें पूछत भयो ममसम भट जग कौन ॥ ८७ ॥

भयंकर धीर ॥ मूकहि मूकत अंग जब मूक होत सहपीर ॥ ८८ ॥ ऋषि कर दिवस भयो रनभारी ॥ रिसि करि करि दोउ भिरहिं प्रचारी ॥ पोकेउ यक्षहि कंस उठाई ॥ शत योजन नभ दिशि रिसि आई ॥ तिहि पुनि बारिज चूड उठाई ॥ फेक्यो व्योम जोम अधिकाई ॥ कंस आसु गिरि बदन सभाख्यो ॥ चरन मारि तिहि धरनि पछाख्यो ॥ शंख चूड कंसहि तिमि कीन्हा ॥ इहिबिधि अमिरे उभय प्रबीना ॥ तिहि छन आइ गर्ग गुरु ज्ञाना ॥ बोले यादवपति प्रति बाता ॥ रन जनि करहु नफा कछु नाहीं ॥ जीतहुगे कोउनहिं महि माहीं ॥ तुम्हरे मूकलगे ऐरावत ॥ दूर दुख्यो द्रुत सहित महावत ॥ दोहा ॥ याहि व्यथा कछु नहि भई सुनिये कारन तासु ॥ हरबर अहइ अजेय यह तातें है नह रासु ॥ ८९ ॥ यक्ष तुमहु जनि संगर करहू ॥ यह अजेय तुम सम पुनि बरहू ॥ सो सुनि मिले परस्पर दोऊ ॥ मित्र भए जानहिं सब कोऊ ॥ चले उ यक्ष मग सुना सुजाना ॥ गोपिन कर मन हरबर गाना ॥ आसु रासु मंडल महं आयो ॥ हरिहि निरखि महत हरखायो ॥ राधाकंध बाहु छवि छावत ॥ मुसुकनि चोज मनोज लजावत ॥ चारु दिशि व्रजबालक तारी बंशी अधरधरे गिरिधारी ॥ जानि सबहि सठ तृण समाना ॥ चलेउ पाप गहि हे नर आना ॥ तब नृप कहा कहासो कीन्हो ॥ जो भाषत अघ उरमहं लीन्हों ॥ दोहा ॥ सो सुनिकै भगवान मुनि नारद ज्ञान निधान ॥ भाषत बारिज चूड अरु बारिज कर आख्यान ॥ व्याघ्र बदन तनश्याम अति ऊचो चौदह ताल ॥ तडित जिह्व अति भीम स्वन देखि

[illegible] ॥ हरिहि त्यागि दस दिसि अनुरागी ॥ बिधु बदना बालाक

दुरी सबबाल ॥ ८० ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

हँ लेई ॥ चलेउ निशंक यक्ष जगजेई ॥ रोवन लगीं सखी तबै भारी ॥ [illegible] ॥ तहँ तहँ पृष्ठ प्रतक्षक

लाल शाल तरु धारी ॥ ह्वै बिकराल चले ललकारी ॥ जहँ जहँ यक्ष दक्ष चलि जाई ॥ तहँ तहँ पृष्ठ प्रतक्षक

न्हाई ॥ व्याकुल हिमि परबत ढिग जाई ॥ तजि गोपी कहँ बिटप उठाई ॥ ॥ चलेउ कोपि हरि कहँ ललकारी ॥

मारेउ शाल पुकारि बकारी ॥ परेउ युहुमि करि घोर चिकारा ॥ उठिकै कृष्णहि भूका मारा ॥ दोहा ॥ कृष्ण झप-

टि झट दपटि दठि पटक्यौ ताहि फिराय ॥ कंबु चूड अवनी गिरो गो असुआसु पराइ ॥ ८१ ॥ फोरि सीस चूडा

मनि तासू ॥ लीनो रबि समान दुति जासू ॥ तासु ज्योति कढ़िकै अधिकाई ॥ श्री दामाके बदन समाई ॥ कृष्ण-

रासमंडल महँ आई ॥ चंद्राननहि दीन्ह हरषाई ॥ दै मनि ताहि कृष्ण अनुरागे ॥ रास रमन रमनिन संग लागे

जोवैं॥ जनम जनमके संकट खोवैं॥ कोउ हरिसें खेलत फाग गोंदा॥ कोउ पहिरावत हार सपेदा॥ कोउ करत अ-
धरामृत पाना॥ कोउ अलिंगन करत सुजाना॥ कोउ सन्मुख नाचत बिधिनाना॥ कोउ बाल करत कलगा-
ना॥ कासमीर मुद्रित भगवाना॥ रमत रसज्ञ रास रुचि साना॥ दोहा॥ कोउ बीना मुरली पटह चंग मृदंग
उपंग॥ झालरि झांझ बजाय कै गावहिं तिनके संग॥ ६३॥ कोउ नृत्यहि हरिके संगा॥ निज हित अति जा-
नहि श्रीरंगा॥ कोउ धीमिसुर गावहिं रव्याला॥ कोउ कंठलगावहि लाला॥ कोउ कर बेसरकच अरुझायो। झटप
टलटनें ताहि छोडायो कोउ मुहमहं नावति बीरा॥ कोउ हरषति देखिसरीरा॥ कोउ कृष्ण कपोलहि छूवत॥ मान-
हु सुखके बीजहि बूवत॥ कोउ आई हरिबेष बनाई॥ कहत कि हमतुमते अधिकाई॥ कोउ राधाकर रूप बनाई॥ गा
इरिझावत जादव कन्हाई॥ कोउ सबकी सोभा अवरेखे॥ कोउ केवल श्रीकृष्ण परेखे॥ दोहा॥ कोउ मुनिसम ध्यानहि
धरे निरखत श्रीमुख चंद॥ कोउ लटकत गहि कै लता लखत ललित नंदनंद॥ ६४॥ इहि बिधान बिलसत भगवाना
गोपिन दीन्हे सुख बिधिनाना॥ जो सुख भयो इन्हहि महि पाला॥ सोइ दुर्लभ योगिन कहं रव्याला॥ अहो सुधन्य
भाग्य इनकेरे॥ निकट मुकुट मंडित हरिहेरे॥ तहां भयो इक चरित अनूपा॥ चिंतवै ताहि सुनहु सुखरूपा॥ रहे महा
मुनि आसुरि नामा॥ नारद गिरि निवसत तपधामा॥ सदा ध्यान महं मग्न सुहोवैं॥ नित प्रति हरिकी लीला जोवैं॥ एक
दिना नहि सोदरसाए॥ तबसो मुनि अति अचरज पाए॥ व्याकुल लागे करन बिचारा॥ आजकौन अपराध हमारा॥ दोहा॥

[illegible] अपार ॥ ९५ ॥ लोकालोका चल पुनि [illegible]

बदरी बनकहँ मुनिगय कारक दरस [illegible]

आए ॥ तहां शेषको दरसन पाए ॥ स्वेत दीप पय सागर गए ॥ तहां न विष्णुहि [illegible]

न कहा नहिं जानत जितहैं ॥ इहि विधान चिंतत मुनिराया ॥ कहा करउं कछु उर नहिं आया ॥ गै बैकुंठ हरिहिं अव-

रेखन ॥ तहं नहिं लखे चारि भुज भेषन ॥ पुनि मनमैं बिचार तप ओका ॥ सबतें परे गए गोलोका ॥ वृंदावन निकुंजके

माहीं ॥ देख्यो कहूं कृष्ण कहं नाहीं ॥ पूछेउ व्योरा तहां के जनतें ॥ तिन्हन तबै भाषा सो मुनितें ॥ दोहा ॥ बामन के ब्रह्मांड

मैं प्रभु लीन्हो अवतार ॥ सुनि सोइत आवत भए आसुरि मुनि सरदार ॥ ९६ ॥ कैलासस्थ शिवहि अवरेखा ॥ कृष्ण ध्यानउ-

र करत परेखा ॥ नौमिहरहि मुनिबर यह बोले ॥ आपु मोहिं भाषहु सब खोले ॥ गोलोकादि अंड सब देखे ॥ कहूं न कृष्णहि न-

यन निरेखे ॥ सो सुनिकै करि ध्यान त्रिलोचन ॥ बोले बचन भक्त भयमोचन ॥ धन्य धन्य तुम बैष्णव भाई ॥ हरि दरसहि चा-

यहमानसरोवर न्हाइ दोऊ ॥ बनकै त्रियजाहुन रोक कोऊ ॥ ३ ॥ सुनि सो भव आसुरि न्हाइ भले ॥ बनिता बनिकै भरिप्रे
मचले ॥ जहँ कंचन की धरनी बरनी ॥ तरूकी सह फूलन डार घनी ॥ ४ ॥ शशि शोभित उज्जल अंबरमैं ॥ जिमि हीरध
र्यौ कोउ अंबरमैं ॥ यमुना सरकी मनि हेम सिढ़ी ॥ छवितासु अनूप अपार बढ़ी ॥ तहँ हेम चबूतर चारु बने ॥ बररत्नज
डाउके खंभघने ॥ दशहू दिसिमें भवरे दवरे ॥ भवरे द्रुमबैठिकरैं हवरे ॥ ६ ॥ तहँ मोहन सोहन राजत हैं ॥ जिहि देखिमनो
भव लाजतहैं ॥ चहुँ ओर त्रिया बहु छाजतहैं ॥ उरमैं शशिके सम भ्राजतहैं ॥ ७ ॥ मुरली सुरसात समेत बजै ॥ शिर ऊ
परचारु किरीट छजै ॥ धनुके सम नोक बनी भृकुटी ॥ पट पीत धरे करमैं लकुटी ॥ ८ ॥ पग नूतन नूपुर बाजतहै ॥ क
टि किंकिनि सुंदर छाजत है ॥ मनमोहनसे मनमोहनसै ॥ लखिकै शिव आसुरि प्रेम फमै ॥ ९ ॥ दोहा ॥ बंदि चरन ब
लबीरके उभय सुमुनि त्रियरूप ॥ हाथ जोरि लागे करन अस्तुति भूप अनूप ॥ ९८ ॥ छप्पै ॥ ॥ कृष्ण बिष्णु योगी
श जगत्पति देव देव हरि ॥ दामोदर खगराज केतु परि पूर्ण कंस अरि ॥ कंज नाभ नंद नंदन कंज बिलोचन गिरधर
बासुदेव प्रभु हृषीकेश बिभु धरनि भारहर ॥ जगदीश जनार्द्दन जगत गुरू सबतें पर प्रनतार्त्ति हर ॥ सब लोक थो
क खाली किए ब्रज बिहार कर बिश्व बर ॥ १ ॥ कलासु बिकला पूर्ण अंश अंशांस भागकर ॥ तुम परि पूरन तम अनेक
ब्रह्मांड खंड धर ॥ गोबर्द्धन नग यमुना सरि वृंदा कानन बर ॥ नित्य केलि कृत कोटि काम मद हरन रूपधर ॥ गोबिंद
गोप ब्रजचंद प्रभु राधा मन फंदन करन ॥ करुना कर रूप रसाल धर नट नागर हम तव शरन ॥ २ ॥ दोहा ॥ सो सुनिकै राधा

सहित बोले कृष्ण प्रवीन ॥ तासु बास [illegible]
हु करि उभय विचारा ॥ सो सुनिकै शिव आसुरि बोले ॥ निज मनको बि[illegible]
सा ॥ देहु मोहिं वृंदाबन बासा ॥ सुनि हरि तिन्हहि दीन्ह बरदाना ॥ वृंदा बिपिनि रास अस्थाना ॥ यमुना तट बंशी बट पा
सा ॥ जहँ निकुंज सुखपुंज प्रकासा ॥ आसुरि ईशहि तहाँ बसायो ॥ भयो दुहुन के मनको भायो ॥ इहि बिधि रच्यौ
रास भगवाना ॥ गोपिन अति सुख दीन्ह सुजाना ॥ निशि षट मास भई छबि छाई ॥ पल समान सम तियन बि-
ताई ॥ दोहा ॥ प्रात समय सिगरी गईं निज निज गृहको बाम ॥ नंद नंदन नंद घरगए राधा वृषरबि धाम ॥ १०० ॥
यह हरिकेर रास अख्याना ॥ सुनै पढ़ै लावैं जो ध्याना ॥ अतिही चारु चारि फल पावैं ॥ दुख अघ औगुन धोइ-
बहावैं ॥ अब कह सुनन चहत नरपाला ॥ सुनिकै तिन यह बचन निकाला ॥ जिहि जिहि कृष्ण कीन्ह असु नाही

यहमानसरोवर न्हाइ दोऊ ॥ बनकै त्रियजाहुन रोक कोऊ ॥ ३ ॥ सुनि सो भव आसुरि न्हाइ भले ॥ बनिता बनिकै भरिप्रे
मचले ॥ जहँ कंचन की धरनी बरनी ॥ तरूकी सह फूलन डार घनी ॥ ४ ॥ शशि शोभित उज्जल अंबरमैं ॥ जिमि हीरध
र्यौ कोउ अंबरमैं ॥ यमुना सरकी मनि हेम सिढ़ी ॥ छवितासु अनूप अपार बढ़ी ॥ तहँ हेम चबूतर चारु बने ॥ बररत्नज
डाउके खंभघने ॥ दशहू दिसिमें भवरे दवरे ॥ भवरे द्रुमबैठिकरैं हवरे ॥ ६ ॥ तहँ मोहन सोहन राजत हैं ॥ जिहि देखिमनो
भव लाजतहैं ॥ चहुँ ओर त्रिया बहु छाजत हैं ॥ उरमैं शशिके सम भ्राजत हैं ॥ ७ ॥ मुरली सुरसात समेत बजै ॥ शिर ऊ
पर चारु किरीट छजै ॥ धनुके सम नोक बनी भृकुटी ॥ पट पीत धरे करमैं लकुटी ॥ ८ ॥ पग नूतन नूपुर बाजतहै ॥ क
टि किंकिनि सुंदर छाजत है ॥ मनमोहन से मनमोहनसै ॥ लखिकै शिव आसुरि प्रेम फमै ॥ ९ ॥ दोहा ॥ बंदि चरन ब
लबीर के उभय सुमुनि त्रियरूप ॥ हाथ जोरि लागे करन अस्तुति भूप अनूप ॥ ९८ ॥ छप्पै ॥ ॥ कृष्ण बिष्णु योगी
श जगत्पति देव देव हरि ॥ दामोदर खगराज केतु परि पूर्ण कंस अरि ॥ कंज नाभ नंद नंदन कंज बिलोचन गिरधर
बासुदेव प्रभु हृषीकेश बिभु धरनि भारहर ॥ जगदीश जनार्द्दन जगत गुरू सबतें पर प्रनतार्त्ति हर ॥ सब लोक थो
क खाली किए ब्रज विहार कर बिश्व बर ॥ १ ॥ कलासु बिकला पूर्ण अंश अंशांस भागकर ॥ तुम परि पूरन तम अनेक
ब्रह्मांड खंड धर ॥ गोबर्द्धन नग यमुना सरि वृंदा कानन बर ॥ नित्य केलि कृत कोटि काम मद हरन रूपधर ॥ गोबिंद
गोप ब्रजचंद प्रभु राधा मन फंदन करन ॥ करुना कर रूप रसाल धर नट नागर हम तव शरन ॥ २ ॥ दोहा ॥ सो सुनिकै राधा



सहित बोले कृष्ण प्रवीन ॥ तासु बास [illegible] तस तप कीन ॥ ९९ ॥ तातें दरसन भयउ हमारा ॥ बरमांग [illegible] भक्त खला

हु करि उभय विचारा ॥ सो सुनिकै शिव आसुरि बोले ॥ निज मनको [illegible]

सा ॥ देहु मोहिं वृंदाबन बासा ॥ सुनि हरि तिन्हहि दीन्ह बरदाना ॥ वृंदा बिपिनि रास अस्थाना ॥ यमुना तट बंशी बट पा

सा ॥ जहँ निकुंज सुखपुंज प्रकासा ॥ आसुरि ईशहि तहाँ बसायो ॥ भयो दुहुन के मनको भायो ॥ इहि बिधि रच्यौ

रास भगवाना ॥ गोपिन अति सुख दीन्ह सुजाना ॥ निशि षट मास भई छबि छाई ॥ पल समान सम तियन बि-

ताई ॥ दोहा ॥ प्रात समय सिगरी गईं निज निज गृहकों बाम ॥ नंद नंदन नंद घरगए राधा वृषरबि धाम ॥ १०० ॥

यह हरिकेर रास अख्याना ॥ सुनै पढ़ै लावैं जो ध्याना ॥ अतिही चारु चारि फल पावैं ॥ दुख अघ औगुन धोइ-

बहावैं ॥ अब कह सुनन चहत नरपाला ॥ सुनिकै तिन यह बचन निकाला ॥ जिहि जिहि कृष्ण कीन्ह असु नाही

[illegible] ॥ श्रीदामा के बदन समानी ॥ कारन तासु बताइय आसू ॥

मनिकेरे ॥ कोटि भानु द्युति दश दिशि घेरे ॥ दश अर्बुद सखि संग सुहाई ॥ बिरजा बाम धाम चलि आँई ॥ श्री
दामा चौकी पर रहेऊ ॥ मानेउ सोन बहुत बिधि कहेऊ ॥ गोपिन केर शब्द सुनि भारी ॥ अंतर ध्यान भएगि
रिधारी ॥ नदी भई बिरजा नर राटा ॥ कीन्ह कोटि योजन कर पाटा ॥ दोहा ॥ तब राधा घरमैं गई लखेन श्री
भगवान ॥ मम भयतें सो बहि गई ॥ नदी होइ अनुमान ॥ १०२ ॥ सखिन सहित निज भवन सिधारी ॥ हरि
पुनि तहँ चलि गए बिचारी ॥ भए पुकारत नाम सुनाई ॥ धरि स्वरूप बिरजा तब आई ॥ रमन करत आनं-
द अधिकाए ॥ बिरजासात सुवन तब जाए ॥ एक दिवस बड छोटे हि मारा ॥ सो मातातें सरन पुकारा ॥ तिन
हिं बुझावन मैं मन दीना ॥ हरिभे अंतर धान प्रबीना ॥ तब सकोप दिय पुत्रन सापा ॥ बामन अंड होहु
तुम आपा ॥ हरितें मोर बिछोह करायो ॥ तातें मोहि महत दुख आयो ॥ लघुको जल नहि पीहै कोऊ ॥ सा-
त प्रकार सात तित होऊ ॥ दोहा ॥ सदा बिलग रहिहौ सकल मिलिहौ परलै माँह ॥ ॥ भए प्रिय ब्रत सुरथ तें
सात सिंधु नर नाँह ॥ १०३ ॥ लवण इक्षु मदिरा घृत जानो ॥ दधि पय शुद्ध बारि परिमानो ॥ लख योजन तें दुगु-
न बखाने ॥ द्वीप द्वीप परते सरसाने ॥ हरि बिरजहि भाषेउ दुख गोई ॥ तुमकहँ मम बियोग नहिं होई ॥ पुत्र-
न कहँ रक्षहुगी बिरजा ॥ समय पाय उज्जल जल बिरजा ॥ एक दिवस हरिलै श्रीदामा ॥ राधा सदन गए अभिरामा
लखि निज गोलक पोल फुलाई ॥ कहत बोल पति निदरि रिसाई ॥ जाहु तहाँ जहँ नूतन नेहू ॥ किहि हित आए

॥ ॥ ॥

रन हरन उदार ॥ सरन सरन गिरिधर धरन नरन चरन सुरत सार ॥ १०७ ॥ सोरठा ॥ कृष्ण कृष्ण कहैं भाषि-
कीन्हो खंड अखंड अति ॥ सत्य कृष्ण पद सारि तिनकी कृपान मोर मति ॥ १०८ ॥ इतिश्री

भाषा प्रकाशे कृष्ण प्रिये गिरधर दास विरचिते प्रेम पथ रचिते गर्ग संहितायां
द्वितीयं वृंदावन खंडं समाप्तम् शुभमस्तु श्री राधा बल्लभायनमः

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीसीतारामाभ्यांनमः ॥ श्रीदीनबंधु आयदेवनमः ॥

॥ दोहा ॥ सिरधरि श्रीदीनबंधु पद आयदेव मुनिराय ॥ भाषा करौं सुगीतकी सुमिरि सारदा माय ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय श्रीदीनबंधु जी ॥ जय जय जय करुणा के पुंजी ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ११ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ३१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ३३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ३५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ३६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ३७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ३९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ४१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ४२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ४३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ४४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ४५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ४७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ४९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ५० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ५१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ५२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ५३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ५४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ५५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ५७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ५८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ५९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ६१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ६२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ६३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ६४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ६५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ६६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ६७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ६८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ६९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ७१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ७३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ७५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ७६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ७७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ७८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ७९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ८० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ८१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ८२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ८३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ८४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ८५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ८६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ८७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ८८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ८९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ९० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ९१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ९२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ९३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ९४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ९५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ९६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ९७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ९८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ९९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १०० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १०१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १०२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १०३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १०४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १०५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १०६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १०७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १०८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १०९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ११० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १११ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ११२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ११३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ११४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ११५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ११६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ११७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ११८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ ११९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १२० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १२१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १२२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १२३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १२४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १२५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १२६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १२७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १२८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १२९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १३० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १३१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १३२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १३३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १३४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १३५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १३६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १३७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १३८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १३९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १४० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १४१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १४२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १४३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १४४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १४५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १४६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १४७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १४८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १४९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १५० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १५१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १५२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १५३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १५४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १५५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १५६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १५७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १५८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १५९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १६० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १६१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १६२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १६३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १६४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १६५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १६६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १६७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १६८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १६९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १७० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १७१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १७२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १७३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १७४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १७५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १७६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १७७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १७८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १७९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १८० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १८१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १८२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १८३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १८४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १८५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १८६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १८७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १८८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १८९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १९० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १९१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १९२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १९३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १९४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १९५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १९६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १९७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १९८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ १९९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २०० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २०१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २०२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २०३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २०४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २०५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २०६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २०७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २०८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २०९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २१० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २११ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २१२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २१३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २१४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २१५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २१६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २१७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २१८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २१९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २२० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २२१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २२२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २२३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २२४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २२५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २२६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २२७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २२८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २२९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २३० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २३१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २३२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २३३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २३४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २३५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २३६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २३७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २३८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २३९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २४० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २४१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २४२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २४३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २४४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २४५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २४६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २४७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २४८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २४९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २५० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २५१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २५२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २५३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २५४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २५५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २५६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २५७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २५८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २५९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २६० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २६१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २६२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २६३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २६४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २६५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २६६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २६७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २६८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २६९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २७० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २७१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २७२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २७३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २७४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २७५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २७६ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २७७ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २७८ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २७९ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २८० ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २८१ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २८२ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २८३ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २८४ ॥

॥ दोहा ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ २८५ ॥

॥ चौपाई ॥ जय जय जय जय जय जय जय ॥ जय जय जय

तुम लखत अहारा ॥ मम मन तौ यह होत विचारा ॥ करहु आपजो और सुहावै ॥ सुनि सन्नंद गोप गुनि गावैं तु
म सज्ञान सुजान कन्हैया ॥ हरि तजि गिरिकी करहु पुजैया ॥ पूजा कर तुम कहहु विधाना ॥ सुनिकै कहत भए
भगवाना ॥ गिरिकी महि गोमयते लीपी ॥ सामग्री सब साजि समीपी ॥ सहस्र शीर्षा मंत्रहि गावैं ॥ मानस गं
ग यमुन जल नावैं ॥ पंचामृत कपिला पयडारी ॥ चंदन चरचि बहुरि सरि वारी ॥ भूषन बसन फूल अरु माला
दीपा वलित न राग रसाला ॥ दोहा ॥ भो पर दक्षिन दंडवत करिकै विविधि प्रकार ॥ हाथ जोरिकै तब करै यह
मंत्रहि उच्चार ॥ सोरठा ॥ जय वृंदा विपिनांक कृष्ण छत्र गोपुर मुकुट ॥ द्युति बहु कोटि मृगांक गोवर्द्धन गिरि-
पति नमो ॥ ३ ॥ पुष्पांजलि आरति सरसावै ॥ घंटा शंख मृदंग बजावै ॥ गिरिके ऊपर गऊ खेलावै ॥ तब अनाज
को कूट बनावै ॥ चौसठ गिनिकै धरै कमोरा ॥ पाँच पंक्ति मधि भात अथोरा ॥ छप्यन भाँति भोग कहँ राखै
गो द्विज धेनु अग्नि मुह नाखै ॥ खाय खवावै भोजन सारा ॥ स्वपचहुँ कहँ प्रसाद अधिकारा ॥ जहँ गोवर्द्धन नहि व
रमंदर ॥ तहँ गोमयको विरचै सुंदर ॥ तरु अरु सुमन सींक सह गाडै ॥ विविधि भाँतिके मंगल माडै ॥ शैल सिलान
कहूं लैजावै ॥ जो असकरै सो रौरव पावै ॥ दोहा ॥ देवै पाथर भर पुरट तबलेवै निःसंक ॥ इहि विधान पूजै गि
रिहि नर वर बुद्धि उत्तंक ॥ ४ ॥ शालग्राम यथा तिमि पर्वत ॥ नर भव त्रास त्रसित कहँ सर्वत ॥ गिरि पूजहि जेस
हित विधाना ॥ विधिन सकहि सो पुन्य बखाना ॥ बरष बरष प्रति पूजै जोई ॥ जीवन मुक्त जानियै सोई ॥ सो-

मुनि नंदादिक आनंद मुदित हुई
दाय दोउ दोहन लीन्हे ॥ संग गर्ग गुरु आनंद भीने ॥ चली उभय दु
ता ॥ नंद और उपनंद सुजाना ॥ सब वृषभान चले मति माना ॥ दोहा ॥ निज निज परिवारहि लिए चलत शैल
की गैल ॥ पैल रह्यो सुख गैलमहं दूरि किए दुख मैल ॥ ५ ॥ वर वृषभान त्रियालै साथा ॥ चले चढे गज उन्नत
माथा ॥ संग सोहन सुरभी समुदाई ॥ चले सजाई परम सुजाई ॥ सहस बालु रविज्योति थालकी ॥ चली संधि
का प्रिया लालकी ॥ ललिता विधुवदना वैशाखा ॥ इनहि आदि कोटिन्ह संग राखा ॥ सखी यूथ महं कीरति
कन्या ॥ शोभित भई सकल दुति धन्या ॥ विरजा रमा माधवी नामा ॥ कृष्णा गंगा वाम ललामा ॥ इनहि आदि
सखि सहित समाजा ॥ पूजन चली शैल सिरताजा ॥ बसु षोडश वत्तिस व्रजनारी ॥ चली भवन सोहन तनसारी

गिरिजा सहित प्रेमभरि पूरा ॥ गर गर दरसत भांग धतूरा ॥ दोहा ॥ बर बैषणव चढि वृषभ पर हरकर डमरु बाज ॥ गमन सहित सिर गंग धर गए जहाँ गिरि राज ॥ ब्रह्मर्षी सुर ऋषी नृपषी ॥ आवत भए शैल सुख पषी ॥ योगी सिद्ध विप्र अरु देवा ॥ आए लखन तहां को भेवा ॥ मेरु हिमादि अचल एसारे ॥ निज निज दिव्य सरूप हि धारे ॥ लैलै भेंट भेट के काजा ॥ आए गिरि सब जित गिरिराजा ॥ गोवर्द्धन भे स्वर्ण सरूपा ॥ नग महं नगके शृंग अनूपा ॥ दरी चारु छवि करी अपारा ॥ इविधि सवन नग नाह निहारा ॥ द्विजते सब पूजन करवायो ॥ ब्रज वल्लभ विधि सकल बतायो ॥ सब सामगी राख्यो आगे ॥ ढाढे जोरि करन मुद पागे ॥ दोहा ॥ नंद और उपनंद गन वृषभ सूरज समुदाय ॥ गोपी गोप सचोप मिलि नाचहिं हरष बढ़ाय ॥ ८ ॥ बरषहिं सुमन स सुमन सुजाना ॥ प्रमदा सकल करहिं कल गाना ॥ कहिन सकै कोउ सोभा सोई ॥ भूप भई तेहि छन तह जोई ॥ तेहि छन कृष्ण रूप करि दूजो ॥ प्रगटे तहंतें जहँ तिन पूजो ॥ श्याम सरूप बाहु बहु धारे ॥ अन्नकूट भोजन विस्तारे ॥ खात जात अरु स्वाद बतावत ॥ बोले विहँसि प्रेम सरसावत ॥ बर बर कह मांगहु ब्रज वासी ॥ देत तुमहि तुम आनंद रासी ॥ तेसब कहत भए सिरनावे ॥ यह सब भयो कृष्णके भावे ॥ दिन दिन गोधन बढ़ै हमारे ॥ होइ भक्ति तव द्रोन दुलारे ॥ दोहा ॥ सुखी रहै घनश्याम बल ए ब्रजके हग दोय ॥ बरष बरष प्रति हरष सों ऐसी पूजा होय सोरठा ॥ सुनि नभ जग मग ज्योत कहत महत वचनहि विहँसि ॥ ऐसेइ होइ उद्योत कहि इमि अंतर धान भे

नंद प्रधानू ॥ नव उपनंद और ब्रज वासी ॥ हलधर गिरध

[illegible] चारु अपा-

६ ॥ वर वृष भान सकल वृषभानू

र आनंद रासी ॥ सिद्ध देव द्विज वपुधर शैला ॥ वंदि गिरि हेलो

रा ॥ पर्वत पूजा सब सुख सारा ॥ सुनै पढै सो सब सुख पावै ॥ कष्ट लोक छवि ओक सिधावै ॥ मम मुखत

सुनि दूजी पूजा ॥ ऋतुके हृदय क्रोध अति कूजा ॥ संवर्तक गन घन बुलवाए ॥ जोर घोर ब्रज ओर पठाए

करत नाद भरि सागर पानी ॥ ब्रजपै चले भृकुटि निज तानी ॥ दोहा ॥ कृष्ण पीत पांडुर हरित वार वधू समदक्ष

केते नील विचित्र वहु चले धुनत निज पक्ष ॥ १० ॥ गज सम बुंद लगे वरषावन ॥ गरजि गरजि घन घोर

मचावन ॥ धार सकल ससतीर समाना ॥ वात उडावत विटप मकाना ॥ तड तड तडित टूटि महि परई ॥ अंबर महं

कठोर कड कडई ॥ भयो भयंकर शब्द दिसनमें ॥ सूझिन बूझि परै सोछनमें ॥ सात लोक विल सह अति कंपे

[illegible]

जिमि गज मुंड कमल सरसायो ॥ अरिके शीस बोझ धरि दीन्हा ॥ जासु उपान तासु शिर कीन्हा ॥ बहुरि सबनतें कह्यौ पुकारी ॥ आवहु लैसंग गोनर नारी ॥ भो सुनि सकल गोप हरखाए ॥ कृष्ण कहे गिरि अंदर आए ॥ ब्रज-बाला बछरा गोग्वाला ॥ मुखते भाखहि जयनंदलाला ॥ दोहा ॥ तब बहु बालक लकुटि लै गिरिमहं रहे लगाइ जामहं हरि के हाथतें इतउत नहिं डगि जाइ ॥ १२ ॥ जब जल भयो बगल तें आवत ॥ तब हरि भए शेष कहँ ध्यावत ॥ बैठे आइ सरीर सकेला ॥ गिरि प्रमान जिमि सागर बेला ॥ ऊपर राखो चक्र सुदर्शन ॥ अति द्युति करत बारि कहँ कर्षन ॥ सात रात दिन बरष्यौ बारी ॥ प्रलय कालके सम व्रत धारी ॥ शक्र वक्र ह्वै गज चढि धायो ॥ सदल चक्र धर मैं रिसियायो ॥ वज्र उठायो मारन काजा ॥ ऊरध अचल रह्यौ कर राजा ॥ तब सब घनन सहित सुरराई ॥ भगेउ स्वान सम दुमहि दबाई ॥ उए अर्क अंबुद छितराए ॥ सरिता सीतल पंक बिलाए ॥ दोहा ॥ निर्मल नभगत तिमिर दिशि सुंदर बहइ बतास ॥ खग मृग सब बोलन लगे भो शुभ सरद प्रकास ॥ १३ ॥ हरिके कहे तबै नरनारी ॥ कढे शैल तर तें सुख धारी ॥ शिशुन कहा यह हमन उठावा ॥ तब हरि निजकर नेक दबावा ॥ त्राहि कह्यो जब मरिबे लागे ॥ बहुरि उठायो करुना पागे ॥ जब सब निकरि गए निज गैला ॥ जहँको तहँ तब राख्यौ शैला ॥ तब हरि सब ग्वालन ढिग आए ॥ गिरिधर नाम परम प्रिय पाए ॥ अच्छत गंध धूप अरु दीपा ॥ पूजेहु कृष्णहि सबन महीपा ॥ नंद यशोदा बल अरु बूढे ॥ सन्नंदादि ज्ञान आरूढे ॥ कंठ माहि गिरधरहि

लगाए॥आशिष दीन परम छवि छाए॥ दोहा॥ कोउ गावत नाचत कोऊ चढ़े चौगुने चोप॥ छवि छावत आवत भए निज निज गृह सब गोप॥१४॥ पुनि सुमन सन सुमन बरषायो॥ नंदन तें नव विविधि मँगायो लागीं करन अपसरा गाना॥ जय जय भाषहिं देहि निसाना॥ निज सँग सब सुर यूथ लेवाए॥ तेहि छन तहँ चलि वासव आए॥ हरिके चरनन परधरि माथा॥ अस्तुति करत जोरि दोउ हाथा॥ तोटक॥ जय पूर्ण पुरान कृपाल हरे॥ अरि खंडन श्री गिरिराज धरे॥ प्रकृती पर दैवत देवनके॥ परमेश्वर भेवसु भेवनके अवतार धरे दश आपवरे॥ परि पूरण तामह कृष्ण परे॥ खल कंद निकंदन हेतु सोई॥ जिमि भूतल धर्म प्रकाश होई॥ व्रजनारि निवास प्रकाश अती॥ भगवान अनेकहि रन्यपती॥ झष केतु विमोहन वेनु धरे वृषभानु सुतापति रूपवरे॥ अज विष्णु अनादि मुकुंद प्रभो॥ सुरभी पुर नायक विश्व विभो॥ अरि अर्दन अच्युत गुंज गरे॥ जन आरत को सुख देत खरे॥ दोहा॥ कृपा कीजिये दीन पर जानि आपनो दास॥ तव माया वसमे कियो यह कुकर्म अघरास॥१५॥ जौन सक्र की अस्तुति पढ़ई॥ सोनर भवसागर ते कढ़ई॥ इमिकहि सुरन सहित तेहिकाला॥ वंदेउ चरन कमल गोपाला॥ तव सुरनाथ काम गोपयतें॥ करत भयो अभिषेक विनयतें॥ नभ गंगा जल भरि गेसवत॥ निज सुंडन तें भयो चढ़ावत॥ देव यक्ष किन्नर छवि छावत॥ मुदित भये सब अस्तुति गावत॥ गिरिमे मुदित जानि अभिषेकू॥ सूखी घास रही नहि नेकू॥ हरि

गिरि परनि जवर कहँ धारा ॥ भयो चिन्ह सो तीर्थ अपारा ॥ पदक रहै तित चीन्ह प्रवीना ॥ परसत जाहि सकल अघ छीना ॥ दोहा ॥ ऐरावत के चरन को चिन्ह तहाँ नरपाल ॥ सुरभी को पद देखियत तितही परम रसाल ॥ १६ ॥ नभ गंगा को पानी जोई ॥ भई मानसी गंगा सोई ॥ गोविंदहि अस्नान करायो ॥ सो गोविंद कुंड कहवायो ॥ कोऊ काल जल सो पय होई ॥ परसत अघ कहँ करषत सोई ॥ वंदि प्रदक्षिन करि क्रतु गयऊ ॥ सुरंग सुमन वर षावत भयऊ ॥ जो यह सुनै कृष्ण अभिषेका ॥ लहै दश ॥ श्वमेध सविवेका ॥ जो गिरिवर श्रीकृष्ण उठायो ॥ सो संदेह सवन कहँ आयो ॥ अति रिसाइ सव गोपी ग्वाला ॥ जाइ नंद ते वचन निकाला ॥ तव कुल कोउ नहि अद्रि उठायो ॥ तुमहूं शिलन सकत टसकायो ॥ दोहा ॥ कहँ अग कहँ सुकुमार अँग लखि अति अचरज फैल ॥ शुन संगी भयतें धर्यौ शुन मुत्ता सम शैल ॥ गौर वरन तुम नंद हो गौरि यशोदा वाम ॥ परम विलक्षन तव तनय केहि हित भो अति श्याम ॥ १७ ॥ वल वल करै तो संशय नाहीं ॥ शसिकुल छत्र सिरोमणि आहीं ॥ कासु तनय यह देहु वताई ॥ करव जाति वाहर नत भाई ॥ सो सुनि विकल यशोदा भारी ॥ वोले वचन नंद व्रत धारी ॥ गर्ग वाक हम भाषव भाई ॥ जामहँ संशय दूर पराई ॥ कमला पति रघुपति मति माना ॥ श्वेत दीपपति नहरि सुजाना ॥ यज्ञ सुनर नारायण जाने ॥ आदि अखर मिलि कृष्ण वखाने जेहँ खट पूरन लीनहि पाए ॥ परि पूरन तम सोक हवाए ॥ श्वेत लाल पीरे जुग जुग मैं ॥ भेकलि आदि कृष्ण कलियुग

मैं ॥ दोहा ॥ वसुइंद्री को कहत कवि तासु देवि आधार ॥ वासुदेव तातें विदित द्रव्य देव निरधार ॥ १८ ॥ वृष रवि सुता रा
धिका जोई ॥ तिनकी अहै नारि प्रिय सोई ॥ अमित अंडपति कृष्ण कृपाला ॥ परिपूरन तम दीन दयाला ॥ भुवकर
भारन भावन काजा ॥ भए कंस अरि व्रज सिरताजा ॥ बाँचेउ गर्ग नामकी पत्री ॥ नक्षत्री यह पै नक्षत्री ॥ ताते मोहि
न नेकु संदेहू ॥ सुनि पुनि सवन कहा गुनि एहू ॥ जब तब भवन गर्ग मुनि आए ॥ सकल नामके अर्थ बताए ॥ तब
तुम हमहिन दीन्ह बुलावा ॥ रहइन जाति मनुज छवि छावा ॥ इमि कहि सकल उठे रिसि आए ॥ वर वृषभान
भवन चलि आए ॥ दोहा ॥ राधा जनकहि देखिकै जात जात भद गोप ॥ कोप तोप छाड़न लगे करि मुख चोपहि
लोप ॥ १९ ॥ हे वृषभान तजहु नंद राजहि ॥ गोप जाति ते छली दराजहि ॥ बोले वृषभ भानु यह बानी ॥ कौन दोष
व्रजपति मह ज्ञानी ॥ गोप मुकुट मम प्रिय नंदराई ॥ सुनि बोले ते दृग अरुनाई ॥ सुनियत तुम चाहत संबंधा ॥
कबहुन करेहु भूलि अस धंधा ॥ नंद संगी तूमहूँ कहँ तजिहौं ॥ पैन जाति महँ कृष्णहि भजिहौं ॥ पितु सम वपुनहि
बल बहुताई ॥ सुनि बोले वृषभान बुझाई ॥ भाषत हम जीवानुज बानी ॥ जामहँ होइ सकल भ्रम हानी ॥ अमि
त अंडपति गोपुर वासी ॥ सबते पर प्रभु आनँद रासी ॥ दोहा ॥ भूके भार उतारिबे आए विधिके बैन ॥ कंसादि
क कहँ मारिहैं अच्युत आनँद ऐन ॥ २० ॥ कृष्ण केरि पटरानी जोई ॥ मग गृह प्रगट राधिका सोई ॥ होइहि
इनको चारु विवाहा ॥ वट भांडीर निकट सउछाहा ॥ श्रुति मुख ताहि करैहैं आई ॥ यमुना तट सब साज सजाई ॥

तांते राधा हरिकी प्यारी ॥ रमा उमाकी करिवे वारी ॥ हस आभीर सकल व्रज वासी ॥ गऊ लोकके अहहि
निवासी ॥ इमि कहि गए गर्ग आगारा ॥ तब हमसत्यहृदय निर्द्वारा ॥ वेद ब्रह्म जय अहइ प्रमाना ॥ नतमस्क
रहु जस तुममन माना ॥ सो सुनि विस्मित संशय छोड़ी ॥ बोलत भए सकल मुख मोड़ी ॥ दोहा ॥ यह राधा
हरिकी प्रिया सत्य कहेउ वृष भान ॥ तव घर अवतै भव बहुत शोभा सरस सुजान ॥ २१ ॥ जान महस अरु
कोटिन घोरे ॥ डोली अरु गजराज अथोरे ॥ कोटिन सुरभी हेम विभूषित ॥ मंदिर सुंदर दुखते दूषित ॥ दि
नदूनी बढ़ती दुख हरई ॥ देखि तेज तव कंसहि डरई ॥ कान कुब्ज पति भए भलंदन ॥ सोतव स्वसुर दरिद्र नि
कंदन ॥ तव समवै भव नंदहि नाहीं ॥ कृषी करत गृह गऊ रहाहीं ॥ जो परि पूरन तम सुत तासू ॥ तो मोहि
देहु परीक्षा आसू ॥ सो सुनि वर वृष भान विचारी ॥ मोति माल मगवायो भारी ॥ कोटिन दाम बड़ी अरु
छोटी ॥ भरि भरि राखी किसी मोटी ॥ दोहा ॥ सबके देखत दाम सो दीन नहीं पठवाइ ॥ अपनो चाकर साथ करिक
हिदीन्हो समुझाइ ॥ २२ ॥ तेसव गरिव नंदके आगे ॥ सीस नाइ यह भाषन लागे ॥ व्याह जोग लरिवकै निज
कन्या ॥ वर वृषभान गोप कुल धन्या ॥ चारु रूप गिरिधर सो छोटा ॥ सात वरषको सुंदर छोटा ॥ अतिउत्तम
विचारिकै जोरी ॥ भए मुदित संबंधहि जोरी ॥ भेज्यो तिलक दाम भरि बहँगी ॥ तुमहु सुता हित साजहु
सोहगी ॥ है यह जाति रूप अनुसारी ॥ विस्मित भए नंद सुनि भारी ॥ तेसवसो यसुमति ढिग आए ॥ लगे

विचारन संशय छाये ॥ मुक्ता होइ बात तब रहई ॥ अधिक नहीं तौ समतौ चहई ॥ दोहा ॥ नतस हँसी अ-
ति जगत मैं कीजै कौन उपाइ ॥ कैसे वदन दिखाइए ब्याह व्याधि यह हाइ ॥ २३ ॥ नंद करत अति सो-
च महाना ॥ अंतरिक्ष आरा भगवाना ॥ सत माला निज करन उठाए ॥ खेती होत रही तहँ आए ॥ इकइ-
क काढ़ि हारते मोती ॥ वोए सकल नखत की ज्यौती ॥ नंद तबै शत माल सहेजा ॥ घट्यौ जमा महतेस
तरेजा ॥ सोचत औरहु हानि भई है ॥ आह दई कस विपति दई है ॥ वलकै केशव लीन्ह उठाई ॥ इमिचिंत-
त आए यदुराई ॥ सो विरतांत व्रजेश वखाना ॥ तबै विहँसि बोले भगवाना ॥ हम केदार माहिं तेहि डारा
जामहं उपजै तौन अपारा ॥ दोहा ॥ सो सुनि नंद रिसाइकै चले सुवन के साथ ॥ श्याम सोई थल लै गए
पकरि बाबाको हाथ ॥ २४ ॥ लखे विटप कोटिन मोतिन के ॥ हरित सुपल्लव शशि ज्यौतिन के ॥ लटकि
[illegible] अति गुच्छा ॥ लगत नखत लच्छा सम अच्छा ॥ तामुक्ताते मुखता जानी ॥ हरषे नंद सुवन पहिचानी ॥ को-
[illegible] महँ भरिकै ॥ भए पठावत आनंद करिकै ॥ वृत वृषभ रवि सन्मुख आए ॥ समधीको विरतांत सुना-
[illegible] सारे ॥ कृष्णहि पूरन तम निरधारे ॥ राधाकृष्ण एक ह्वै रूपा ॥ निश्चय सबन कीन्ह नर भू-
[illegible] ॥ भयो सरोवर सो छवि युक्ता ॥ दोहा ॥ तहँ इक मोती दान कहँ जोनर करत न-
[illegible] ॥ २५ ॥ गिरि उत्सव जो सुनै सुनावै ॥ मनइच्छित अविरल फल पावै

नृपतव कह्यो गोवर्द्धनमाहीं ॥ ९ ॥ कहिये कितने तीरथ आहीं ॥ मुख्य मुख्य मोहि कहिय बखानी ॥ सुनिबो ले गुनिके मुनि ज्ञानी ॥ तीरथ रूप शैल यह अहई ॥ वृंदावन मोपुर महं रहई ॥ गोपी गोप कृष्ण प्रिय सोई ॥ पूरनब्रह्म छत्र सम होई ॥ जेहि पूज्यो श्रीनंद किशोरा ॥ कर धरि इंद्र जोर कह तोरा ॥ राधापति परि पूरन स्वामी ॥ कोटि अंडपति खगपति गामी ॥ लै अर्भकन जहां भगवाना ॥ क्रीडा करत भए विधिनाना ॥ दोहा ॥ गंगा कहिये मानसी जहं नित श्याम विहार ॥ तहां कुंड गोविंद वर चंद्र सरोवर चारु ॥ सोरठा ॥ राधा कुंड सुजान कृष्ण कुंड नरत्रान पुनि ॥ कुसुमा कर परिमान बहुरि कुंड गोपालको ॥ २६ ॥ कृष्ण मुकुट नहं देवै जोई ॥ देव मुकुट पद पावै सोई ॥ चित्र लिख्यो जहं मदन गुपाला ॥ चित्र सिला सो अहइ कृपाला ॥ जहां बजायो शिला मुरारी हैवादिनी नाम अघ हारी ॥ जहं हरि खेल्यो कंदु बनाई ॥ कंदुक तीर्थ अहै सो भाई ॥ स्वर्ग दिखायो जहं घन श्यामा ॥ लोटि तहां पावै हरि धामा ॥ जहं अंबर गोपिनके चोरे ॥ वसन तीर्थ सो सुखद अथोरे ॥ तहं इक दिन बनिता समुदाई ॥ दधि बेचन निरख्यो यदुराई ॥ दोहा ॥ नूपुर केरो शब्द सुनि आगेठाढ़े श्याम ॥ कर वंशी कटि पीत पट लकरी लये ललाम ॥ २७ ॥ बोले अैंठि अनंग लजावत ॥ मोहिं दधिदान देहु मनभावत ॥ सुनत कह्यो व्रजबालन ऐसो ॥ दधि लंपट गँवार तू कैसो ॥ यशुदहि जाहि कहूं तो मारै ॥ सुनत कंस गहि नगर निकारै ॥ बोले तब सकोप भगवाना ॥ कहा कंस खल जियत अप्राना ॥ छनमहं वधि तेहि यमपुर दैहौं ॥ हम

इतके दानी दधि खैहैं ॥ भाखि मंडुकि गहि झटकी पटकी ॥ खायो गोरस नटसम लटकी ॥ मटकी गिरे ग्वालिनी मटकी ॥ भला भला कहिकै गृह सटकी ॥ तब हरिलै मंडुली निकटकी ॥ काटत डारि करन दधि टटकी ॥

दोहा ॥ छटकि चटकि सुंदर लटकि भ्रमुदित राधारौन ॥ कदम पलास के द्रोन कर गटकि गए द्रुत तौन ॥ २८

तहँ तरु महँ निकरहिं नृप दोना ॥ द्रोन तीर्थ विश्रुत अघखोना ॥ जो दधि देइ खाइ तित भाई ॥ सो गोलोक परमपद जाई ॥ आरव मिचौली खेली माधव ॥ कोकिक तीर्थ कहहिं तेहि साधव ॥ तहाँ कदम खंडी कवि छाजन ॥ नर लखि जाहि होत नारायन ॥ जहँ शृंगार कीन्ह हरि प्रियको ॥ सो शृंगार मंडल प्रिय जियको ॥ जास रूपतें हरि गिरि धारो ॥ सो तित छप्यो नरेस विचारो ॥ वसु सत चार सहस कहि संवत ॥ जैहै कलि तव गोवर्द्धन धन ॥ स्वतः सिद्ध तव आकस्माता ॥ कढ़िहै गुफा बीचते नाता ॥ दोहा ॥ देव दमन श्री नाथ अरु गोवर्द्धन धरदेव ॥ तिन्ह कह हरिजन कहहिंगे वर वल्लभ पद सेव ॥ २९ ॥ जो करिहैं दरसन श्रीजीको ॥ तिन्हको जन्म हरिहते नीको ॥ बद्रीनाथ द्वारका नाथा ॥ रंगनाथ पुनि श्रीजगनाथा ॥ चार चार दिसिके पति गाए ॥ मधि श्रीनाथ परम छवि छाए ॥ पंचनाथ कलि पावन जोई ॥ निरखे नर नारायण होई ॥ चारनाथ दरसे नहिं श्रीजी ॥ ताकी यात्रा वृथा कहीजी ॥ श्रीनाथहि देखे जन जोई ॥ पाँच नाथ दरसन फल होई ॥ अरु ऐरावत पद तित अहई ॥ परसि ताहि नर वरगति लहई ॥ हरिकर चरन चिन्ह वर तहँवा ॥ लखि जन जान जगत

पति जहवाँ ॥ दोहा ॥ इन्हहिं आदि तीरथ सकल शैल गंग प्रति आहिं ॥ जेहि दरसे परसे परम गतिकहं मानव जाहिं ॥ ३० ॥ तबनृप कह्यौ गोवर्द्धन माहीं ॥ तीर्थ अंग प्रति कौन रहाहीं ॥ तब नारद नामक मुनि ज्ञाता ॥ बोले वर विदेह प्रति बाता ॥ हेनृप ब्रह्म सरिस गिरिकेरे ॥ अंगनहैं प्रमान करि नेरे ॥ सब दिसि अहैं असंशय होहू ॥ कहत सहित प्रमान हम तोहू ॥ छप्पै ॥ मंडल वर शृंगार केर गिरि कर मुख नर पति ॥ अन्नकूट जहं कीन्ह देत सोभा थरसो अति ॥ नयन मानसी गंग नासिका चंद्र सरोवर ॥ चिबुक कृष्ण को कुंड अधर गोविंद कुंड वर ॥ रसना राधा कुंड किल ललता कुंड कपोल कहि ॥ कुसमा कर पुनि कन पटी कान कुंड गोपाल चहि ॥ मुकुट चिन्ह जो प्रगट सोई गिरि मुकुट मनोहर ॥ ग्रीव वादिनी शिला चित्र शिल सीस नृपति वर ॥ कंदुक तीरथ कोष वसन तीर कटि जानहु ॥ द्रोन तीर्थ हरि पीठ उदर कौ किक पहिचानहु ॥ उर कदंब खंडी परम मन सुचिन्ह हरि चरनको ॥ शृंगार मंडली जीव गनि इमि समुझहु गिरि वरन को ॥ २ ॥ दोहा ॥ गोपद ताके पक्षहै हरिकर चरन सबुद्ध ॥ गजपद महं सबकेर पद तामहु गिरहु प्रसिद्ध पुच्छ कुंडसो पुच्छहै वत्सकुंड वलसोध सक्र सरोवर काम कहि रुद्र कुंड गिरि क्रोध ॥ धनद तीर्थ उद्योगसो यमतीरथ हंकार ॥ ब्रह्म तीर्थ सुप्रसन्नता इमिनग अंग उदार ॥ ३१ ॥ परम मनोहर अघहर सारे गिरिके अंग माहिं विस्तारे ॥ गिरि विभूति जे सुनहिं सुजाना ॥ तामहं होइ सकल कल्याना ॥ हरिके उरते प्रगट

गिरीता ॥ परम पुन्य प्रद हैं नरईशा ॥ कीन्ह प्रश्न तव भू भरतारा ॥ किमि हरि उरते गिरि अवतारा ॥ तब नारदवो
ले वर बाता ॥ प्रफुलित नहि उर हरख समाता ॥ गऊ लोककी उतपति सुनिये ॥ पै अघकी अति तस्कर गुनिये
पुरुष अनादि कृष्ण परिपूरन ॥ वहुगुन प्रकृति रहित श्यामल तन ॥ दोहा ॥ स्वयं ज्योति अनिमा जगत परम नि
रंतर रूप ॥ जहँ न काल चालत कवहुँ श्रुति जेहि भाषत भूप ॥ ३२ ॥ माया गुनन रह्यो जगमाहीं ॥ मन चित अहं
कार यह नाहीं ॥ इच्छा सोइ साकार विचारा ॥ प्रथम शेष जानहु अवतारा ॥ तिनके संग भयो गोलोका ॥
जेहि लखि नाहि पापके थोका ॥ अमित अंग प्रगटेस उमंगा ॥ दक्षिण प्रगते निकरी गंगा ॥ वाम चरन अगु
ठातें यमुना ॥ प्रगट परस जेहि परसत यमुना ॥ भएउ गुल्फते कनक जराऊ ॥ दिव्य रास मंडल नरराऊ ॥ समाचा
रु जित पादप नाना ॥ जहँ अलि अवलि करहिं कल गाना ॥ नवनि कुंज जंघाते भएऊ ॥ जिन्हहि देखि भव सं
शय गएऊ ॥ दोहा ॥ वृंदावन भो जानुतें सववन को सिरमौर ॥ उरते लीला सर भयो पुनर्जन्म को चोर ॥ ३३ ॥ कटि
तें धरनि रोमतें वेली ॥ प्रगट कृष्ण मन इच्छित केली ॥ भए नाभतें पंकज राजा ॥ जो जलको छवि देहि दराजा
वायु त्रिचलितें निकरो सुथरा ॥ जंघातें द्वारावति मथुरा ॥ करतें श्रीदामादिक ग्वाला ॥ नंद भये मनिवंधरसा-
ला ॥ करतलतें उपनंदन जानो ॥ भए कंधते षट वृषभानो ॥ मनतें भई गाय नरपाला ॥ वुधितें वृंदा विपिनि
रसाला ॥ वाम अंगते श्री भू विरजा ॥ लीला चारि त्रियहि हरि सिरजा ॥ लीला सोइ राधा कहवावै ॥ सवतें हरिहि

जौन अति भावे ॥ दोहा ॥ प्रगटी राधा हसनें ललिता आदिक बाल ॥ अबरु रोमनतें भई सोजानहु नरपाल ॥
३५ ॥ इहि विधान गोलोक बनाई ॥ निवसे प्रियासमेत कन्हाई ॥ करत विहार अनेक प्रकारा ॥ परि पूरन तम परम
उदारा ॥ एक दिवस निर्तत रसरासा ॥ चारु भाकोरत पवनसुवासा ॥ वर मालती चहूं दिसि महकत ॥ यमुन लहर
तट लहलह लहकत ॥ ताल मृदंग चंग धुनि होई ॥ सो सोभा कहि सकै नकोई ॥ भौंरे बहु दौरे बौराने ॥ राधाप
तिहि स्ववस करिजाने ॥ करि कटाक्ष उत्तम अति प्यारी ॥ कहत एक वर देहु मुरारी ॥ सोसुनि विहंसे कृपा निधाना
बहत वचन सुख गहत महाना ॥ दोहा ॥ तुमहि कहा नहि देईहै अहो चैन की ऐन ॥ तजि संशय मागहु सकल क
ह्यौ प्रिया सुनिवैन ॥ ३५ ॥ वृंदावन निकुंज के माही ॥ रास योग कोउ सुथल वृहाही ॥ विचरहु अति रमनीक मु
कुंदा ॥ जामहं जाइ दूरि दुख द्वंदा ॥ सोसुनि हरि निज उरहि निहारा ॥ जानि अंग महं सबते प्यारा ॥ सबते लघ
न सुनहु नृप उरतें सजल तेज भो निकलत उरतें ॥ बढ़त भयो सो शैल समाना ॥ रतन धातु मय वर दरसाना ॥ वकु
ल कदंब अंब तरु लागे ॥ निरझर झरहिं दरीके आगे ॥ बढ़त चल्यो सो परम प्रयोजन ॥ लाखो गयो कोटि शत
जोजन ॥ सहस सीस उन्नत दरसाई ॥ योजन शत लख कोटि उचाई ॥ दोहा ॥ कोटि दिवाकर सरिस द्युति सकल रत
न अरु हेम ॥ योजन कोटि पचीस है उन्नत ताको नेम ॥ ३६ ॥ गोवर्द्धन शत शृंग कहायो ॥ बढ़ति बढ़त हित सोउ
मदायो ॥ तब व्याकुल गोलोक निहारी ॥ तापर कर मार्यो गिरिधारी ॥ कितनो बढ़ि है एअब भाई ॥ लोक रहैके

जाइ न साई ॥ मुदित भई तेहि लखिवकै राधा ॥ नित्य तहाँ विहरत गत बाधा ॥ कृष्ण तनय वपु कृष्ण सुजाना जग मगनग अघ दृग जग जाना ॥ दीप शाल्मली मै गिरि द्रोना ॥ तापर प्रगट श्याम सलोना ॥ व्रज महं तिहि पुल

सिलै आए ॥ सोहम पूरव तोहि सुनाए ॥ मुनि जाना गोलोक समाना ॥ महि महं बढिहै शैल महाना ॥ दोहा तातें दीन्हो शाप यह तिलभरि घटहु मुनिन्न ॥ इहि विधान तुमतें कह्यो शैल कथा सत चिन्न ॥ ३१ ॥ सुनहु एकद्र तिहास सुजाना ॥ जाके सुने होइ अघहाना ॥ वित्त नाम द्विज कोउ एक राजा ॥ आयो मथुरा हो कछु काजा ॥ फिरि गृह चल्यो काम निज करिकै ॥ शनै शनै उर आनंद भरिकै ॥ गोवर्द्धन कर असम उठायो ॥ चिकनो छोटो लखि मनभायो ॥ मगमद निरख्यो निसिचर काला ॥ षट भुज तीन चरन विकराला ॥ उर महं मुख कर भरकी नासा सातहाथकी जाम निकासा ॥ ओठ तीन करिकै अति मोटे ॥ दंत चोट कर बाहर खोटे ॥ तिहि लखि विप्र डरयो मन माहीं ॥ कीन्ह विलाप सबयो चलिनाहीं ॥ दोहा ॥ निसिचर धायो खान हित तब द्विज सो पाखान ॥ मार्यो राक्षस दुष्ट कहँ तासु सिधार्यो प्रान ॥ ३२ ॥ श्याम सरूप कमल सेलोचन ॥ भयो निशाचर जग दुख मोचन ॥ कुंडल मुकुट वेनु वनमाला ॥ पीत पट परम रसाला ॥ कामदेव को मोहन हारे ॥ बोलो वचन वंदि पद प्यारे ॥ धन्य विप्र तुम अति हितकारी ॥ राक्षस पनते दह निकारी ॥ परसत असम भरम भो पापू ॥ नसत जन्म भरि हो परितापू ॥ सुनि द्विज कहत भयो यह बानी ॥ मोहि सामर्थ्य भयो यह ज्ञानी ॥ पाथर कर फल भारवह भाई ॥ बोलो अमर हरष कह पाई ॥ यह

गिरिराज कृपाकररूपा॥ दरसन करत तरत नरभूपा॥ दोहा॥ गंधसुमादनशैल पर करत जात राजोइ॥ फल तातें शत लक्षगुन गिरिके दरसन होई॥ ३८॥ छप्पै॥ मनुज जाइकेदार माहि तप करै अपारा॥ संवत पाँच सहस सोइ फल गिरि दरस विचारा॥ एक भार जो कनक मलय गिरि ऊपर देई॥ इतना को फल कोटि गुनित मासा महँ होई॥ पर्वत मंगल प्रस्थ पर पुरट पुरुष जो देतहै॥ मुक्ति होत सो शैल यह चौगुन देत सुहेत है॥ १॥ ऋषभ कूट गिरि वट्टविकोलगिरि जोनर जाई॥ सुवरन सींग मढ़ाय कोटि संकल्पे गाई॥ होत पापतें मुक्त पूजि सुर पितर सुजाना॥ तातें इतनेवगु नो होत दै इक गोदाना॥ पुन्य क्षेत्र महँ पुन्य जो करै मुदित तप पालतनि॥ तातें इत वट्ट गुनित फल सबतें उत्तम शैल भनि॥ २॥ सत्य शैल ऋषि मूक देव गिरि मूक पहारा॥ जहँ जात्रा करि तरैं जगत हम सत्य उचारा॥ गोवर्द्धन की फेरि करि लाखगुन फल लेई॥ श्रीगिरि विद्याधर सर माहि न्हाहि जन जेई॥ तप करि फल सत याग को तौनलहत है महत मति॥ पुच्छ कुंड गिरि राज महँ इक दिन फल सत लाख सति॥ ३॥ व्यंकट गिरि अरु विंध्याचल क्षत स्वानु विप्रवर महँ करि शत नर परम कुलिस धर॥ करिमु एक सोइ यज्ञ गोवर्द्धन पै छवि छाई॥ नाक नाक पर रासविलात हरि पुरसो जाई॥ चित्र कूट महँ जाइके न्हाइ राम नवमी दिवस॥ अक्षय त्रितिया जाइ गिरि पारि पात्र दिवि केहवस॥ ४॥ कंकुभगिरि महँ अचला ऋषि तिथि परसहि मज्जन॥ माधव पूनव द्वादसी के दिन मज्जन॥ गोदावरि गुरु सिंह कुंभकेदार नहाना॥ पुष्कर पुष्य नक्षत्र फाल्गुन नैमिष जाना॥ कुरु क्षेत्र विग्रहन में चंद्र ग्रहन वाराणसी

मधुपुर जहँ जन्माष्टमी करत राति अघकीनसि॥ हरिवासर कातिक के मधि अति पुन्य स्वरूपा॥ सूकर छत्र
नहाय पुन्य सो अक्षय रूपा॥ खंडव वन द्वादसि दिन दिनकर मकर प्रयागे॥ कर्तिक पूनो के दिन वटवटेश
अनुरागे॥ वैधृत मे म हिष्मती अवध नगर रघुवर नवमि॥ अहहिं पुन्य अक्षय सकल ठौर ठौर महँ हरि न
वमि॥ ६॥ दोहा॥ स्नान दान मख श्राद्ध को होत सकल फल जौन॥ दरसन महँ गिरिराज के नर पावत वरतौ
न॥ ४०॥ जो नर गोविंद कुंड नहाई॥ हरि सा पुज्य लहै द्विजराई॥ सतनृप पसू सहस हय मेधा॥ मानस सरिसम
नहि अतिमेधा॥ तुम दरसन परसन किय नगको॥ को अस वड भागी नर जगको॥ मोसम होन कोऊ अघहा
री॥ सिला परसि यह दशा हमारी॥ सुनि वोले द्विज विस्मित वानी॥ पूर्व जन्म महँ तुमको ज्ञानी॥ कहो कथा सो
उत्तम ताता॥ सिद्ध सुनत वोले वरवाता॥ हमहै वैश्य धनी सुत पापी॥ द्यूत निरत खल साथ सुरापी॥ सदा देत रंडिन
कहँ लडुवा॥ मेरे मित्र रहे सव भडुवा॥ ॥ दोहा॥ एक दिवस मातहि पितहि हम मार्यो विष देइ॥ कीन्ह सीस विनना
रि निज कर असि तीछन लेइ॥ ४१॥ लैगनिका कहँ धन सव साथा॥ पुरतें निकरि गए द्विज नाथा॥ वार वधू वधि
कूआ डार्यो॥ सहस नजन भरि लालच मार्यो॥ शत व्रत धर द्विजगनि वधि डारे॥ छत्री वैश्य सूद्र वहु मारे॥ गोसि
कार हित कीन्ह पयाना॥ काटेउ सर्प गए कढ़ि प्राना॥ यमगन मोहि वाँधेउ अरु मारा॥ मुद्गर पास कृपाण कुठारा॥ क
कुंभिपाक मन्वंतर एका॥ कल्पत प्रेमहि अंगहि सेंका॥ नरक लाख चौरासी माहीं॥ इक इक अब्द रह्यो मैं ताहीं॥ तवमैं

गिरिराज कृपाकररूपा॥ दरसन करत तरत नरभूपा॥ दोहा॥ गंधसुमादनशैल पर करत जात राजोइ॥ फल तातें शत लक्षगुन गिरिकै दरसन होई॥ ३८॥ छप्पै॥ मनुज जाइकेदार माहि तप करै अपारा॥ संवत पाँच सहस्र सोइ फल गिरि दरस विचारा॥ एक भार जो कनक मलय गिरि ऊपर देई॥ इतना को फल कोटि गुनित मासा महँ होई॥ पर्वत मंगल प्रस्थ पर पुरट पुरुष जो देतहै॥ मुक्ति होत सो शैल यह चौगुन देत सुहेत है॥ १॥ ऋषभ कूट गिरि बहुरि कोलगिरि जोनर जाई॥ सुवरन सींग मढ़ाय कोटि संकल्पे गाई॥ होत पापतें मुक्त पूजि सुर पितर सुजाना॥ तातें इत लखगुनो होत दै दूक गोदाना॥ पुन्य क्षेत्र महँ पुन्य जो करै मुदित तप पालततनि॥ तातें इत बहु गुनित फल सबतें उत्तम शैल भनि॥ २॥ सत्य शैल ऋषि मूक देव गिरि मूक पहारा॥ जहँ जात्रा करि तरैं जगत हम सत्य उचारा॥ गोवर्द्धन की फेरि करि लखगुन फल लेई॥ श्रीगिरि विद्याधर सर माहि न्हाहि जन जेई॥ तप करि फल सत याग को तोनलहत हैं महत मति॥ पुच्छ कुंड गिरि राज महँ इक दिन फल सत लाख सति॥ ३॥ व्यंकट गिरि अरु विंध्याचल क्षत स्वानु विप्रवर जहँ करि शत नर परम कुलिस धर॥ करिसु एक सोइ यज्ञ गोवर्द्धन पै छवि छाई॥ नाक नाक पर राखि लात हरि पुरसो जाई॥ चित्र कूट महँ जाइकै न्हाइ राम नवमी दिवस॥ अक्षय त्रितिया जाइ गिरि पारि पात्र दिवि केहवस॥ ४॥ कंकुभगिरि महँ अचला ऋषि तिथि परसहि मज्जन॥ माधव पूनव द्वादसी के दिन मज्जन॥ गोदावरि गुरु सिंह कुंभ केदार नहाना॥ पुष्कर पुष्य नक्षत्र फाल्गुन नैमिष जाना॥ कुरु क्षेत्र विग्रहन में चंद्र ग्रहन वाराणसी

मधुपुर जह जन्माष्टमी करत राति अवकीनसि ॥ हरिवासर कातिक के मधि अति पुन्य स्वरूपा ॥ सूकर छेत्र नहाय पुन्य सो अक्षय रूपा ॥ खंडव वन द्वादसि दिन दिनकर मकर प्रयागे ॥ कर्तिक पूनो के दिन वटवटेश अनुरागे ॥ वैधृत मे म हिष्मती अवध नगर रघुवर नवमि ॥ अहहिं पुन्य अक्षय सकल ठौर ठौर महँ हरि नवमि ॥ ६ ॥ दोहा ॥ स्नान दान मख श्राद्ध को होत सकल फल जौन ॥ दरसन महँ गिरिराज के नर पावत वरतौन ॥ ४० ॥ जो नर गोविंद कुंड नहाई ॥ हरि सा पुज्य लहै द्विजराई ॥ सतनृप पसू सहस हय मेधा ॥ मानस सरिसम नहि अतिमेधा ॥ तुम दरसन परसन किय नगको ॥ को अस वड भागी नर जगको ॥ मोसम होन कोऊ अघहारी ॥ सिला परसि यह दशा हमारी ॥ सुनि वोले द्विज विस्मित वानी ॥ पूर्व जन्म महँ तुमको ज्ञानी ॥ कहो कथा सो उत्तम ताता ॥ सिद्ध सुनत वोले वरवाता ॥ हम है वैश्य धनी सुत पापी ॥ द्यूत निरत खल साथ सुरापी ॥ सदा देत रंडिन कहँ लडुवा ॥ मेरे मित्र रहे सव भडुवा ॥ ॥ दोहा ॥ एक दिवस मातहि पितहि हम मार्यो विष देइ ॥ कीन्ह सीस विनना रि निज कर असि तीछन लेइ ॥ ४१ ॥ लैगनिका कहँ धन सव साथा ॥ पुरतें निकरि गए द्विज नाथा ॥ वार वधू वधि कूआ डार्यो ॥ सहस नजन भरि लालच मार्यो ॥ शत व्रत धर द्विजगनि वधि डारे ॥ छत्री वैश्य सूद्र वहु मारे ॥ गोसिकार हित कीन्ह पयाना ॥ काटेउ सर्प गए कढ़ि प्राना ॥ यमगन मोहि वाँधेउ अरु मारा ॥ मुद्गर पास कृपाण कुठारा ॥ ककुंभिपाक मन्वंतर एका ॥ कल्पत प्रेमहि अंगहि सेंका ॥ नरक लाख चौरासी माहीं ॥ इक इक अब्द रह्यो मैं ताहीं ॥ तवमैं

कोल भयो दसवारा ॥ सात जन्मके हरिकर वारा ॥ दोहा ॥ जन्म सहस विषधर भयों सत्य सुनहु द्विज दक्ष ॥ अवकठोर वनमहँ भयो राक्षस भयद प्रतक्ष ॥ ४२ ॥ सूद्र सीस चढ़ि मैइत आयो ॥ चहत रह्यौ वृँदावन जायो ॥ कृष्ण बरन भुज द्वै छवि भारे ॥ कृष्ण पार्षदन मारि निकारे ॥ जब तुम मोहि छुआई बटिया ॥ तब ममऐसो रूप प्रगटिया ॥ इतनेइक हत महत रथ आयो ॥ अयुत अश्व ध्वज सहस लगायो ॥ घन समान ध्वनि करत सुजाना ॥ गऊलोक तें आइ तुलाना ॥ द्विजके लखत सुरथ चढ़ि सोई ॥ चलेउ कृष्ण पुर अति छवि होई ॥ तेज बढ़ो कछु कहो न जाई ॥ दसहु दिसा प्रकास अधिकाई ॥ कृष्ण लोक सो आयो राजा ॥ जो सबते पर परम विराजा ॥ दोहा ॥ विप्र मुदित फिरिकै बहुरि गिरिकहँ पूजेउ जाय ॥ गुनि प्रभाव आनँद भरे इहि विधान नरराइ ॥ यह मैं कह्यौ महीप मनि शैलराज को खंड ॥ जाकहँ पढ़ि सुनिकै मनुज सुखतें रहत अखंड ॥ करहि कानतें पानजे विश्व त्रान को गान ॥ नंद सरिस सानंद सो रहत सत्व परमान ॥

सोरठा ॥ धारि कृष्ण को ध्यान कह्यौ शैल आख्यान यह ॥ पुरयो श्रीभगवान ज्ञान न कछु मम बुद्धि महँ ४३ ॥ इतिश्री भाषा प्रकासे कृष्ण प्रिये गिरिधर दास विरचिते प्रेमपथ रचिते गर्ग संहिता यां तृतीयं गिरिराज खंडं समाप्तम् शुभ मस्तु श्रीराधा कृष्णाय नमो नमः

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीमद्गिरधरो जयति ॥ अथ माधुर्यखंड लिख्यते ॥ सोरठा ॥ करत कोटि ब्रह्मंड अति अखंड करुना करन ॥ कहत माधुरी खंड वंदि प्रथम गिरिवर धरन ॥ दोहा ॥ खंडे माधुरी लतन में मधुर माधुरी खानि ॥ श्याम परम पर माधुरी धरन माधुरी जानि ॥ चौपाई ॥ जनक महीपति वचन निकाला ॥ शुतिरूपादि भई जेवाला ॥ तिनकर मोहिं कहिये इतिहासा ॥ मुनि विरंचि सुत गिरा प्रकासा ॥ श्रुति रूपा ब्रजमें सब जाई ॥ गोप भवन गोपी कहवाई ॥ इंदा सखिहि तिन्हहि यह भाखा ॥ प्रभु पूजहिं मेरी अभिलाखा ॥ इंदा तिन्हहि दीन्ह वरदाना ॥ तिन्हके भवन जाहिं भगवाना ॥ एक दिवस आधी निशि गए ॥ हरि तिन्हके गृह आवन भए ॥ उठि प्रमुदित पूजेउ श्रुति रूपा ॥ कहत कृष्णा तें वचन अनूपा ॥ किहि हित आज अवेर लगाई ॥ ताहू में अतिव्यग्र कन्हाई ॥ दोहा ॥ कृष्णा कह्यो जो जासु हित सोनदूर त्रिय इंद नभ दिनकर कहलखि उदित इत फूलत अरविंद ॥ १ ॥ मम गुरुदुर्वासा इत आए ॥ हैं भांडीर निकट छवि छाए ॥ परब्रह्म विधि हर हरि गुरुहैं ॥ गुरु सबतें जहान में गुरुहैं ॥ तिमिर अज्ञान अंध जग हेरी ॥ किय भल ज्ञान सलाका फेरी ॥ गुरु समान जग अहैन कोई ॥ सकल देव मैं गुरुतन होई ॥ तातें हम तिन गुरु कहें पूजी ॥ आएइत अवार नहि दूजी ॥ सो सुनिते सिगरी सिरनाई ॥ कहत महत संशय उरछाई ॥ परि पूरन तमके गुरु जोई ॥ दरशन करन चहत हमसोई ॥ अबहीं जैहें हे गिरिधारी ॥ आधी निशा ओर पदचारी

दोहा ॥ मध्य नदी यमुना अहैं कैसे ह्वै है पार ॥ सोउपाइ मोहि भाषिये बोले नंद कुमार ॥ २ ॥ जादू कहो य
मुना तें नारी ॥ जोजन्मैते हरि ब्रह्म चारी ॥ तोमोहि राह बीचमें देहू ॥ गोपी चकित भई सुनिगेहू ॥ करनलीन्ह
कंचन के थाला ॥ साजे छप्पन भोग रसाला ॥ चलीं तहां ते सिगरी बाला ॥ कह्यो नाहिहि जो कह गोपाला ॥ ३ ॥
यमुना तबै मध्य मग दीन्हा ॥ बालन गवन विप्र ढिग कीन्हा ॥ वट तट लख्यौ जाइ दुर्वासा ॥ कीन्ह दंडवत स-
हित हुलासा ॥ बैठीं घेरि सकल श्रुति रूपा ॥ धरयो निज निज थाल अनूपा ॥ प्रथम खाहु मम यह सब कह
हीं ॥ सहित प्रसाद प्रसादहि चहहीं ॥ दोहा ॥ तुमि सबकहं लखिबकै कह्यौ दुर्वासा मुनि नाथ ॥ परम हंस मम
तृप्तिहै खातन अपने हाथ ॥ ४ ॥ तुम डारहु जो इच्छा होई ॥ पायो वदन भाषि तुमि सोई ॥ निज निज था
ल उडेरहिं नारी ॥ सब समात लखि अचरज भारी ॥ जोजो नावा सोसो खावा ॥ मुखमहं कोटिन भार समा
वा ॥ कंदर अहै मनहु त्रिय जाना ॥ भान मतीके कुंभ समाना ॥ खाली थाली लै सबनारी ॥ खडी भईउर वि-
स्मय भारी ॥ हाथ जोरि करि मुनिहि प्रनामा ॥ बोलीं वचन सकल ब्रज बामा ॥ मुनि मग नाहि जाहिंकिमि
पारा ॥ आई जिमि तिमि सकल उचारा ॥ यमुना अहहिं मध्य मह जाता ॥ सुनि पुनि गुनि मुनि भनि कह
बाता ॥ दोहा ॥ जादू कहहु तुम भानु जहि मेरे ऐसे बैन ॥ आसुराह जो देइहै परम सत्य की रैन ॥ ५ ॥ दुर्वासा
दूर्वा जल त्यागी ॥ जो कछु खातन अरु वैरागी ॥ तो मग मोहि देहु हे यमुना ॥ सुनिते सकल चलीभरि अमुना

गोपाला ॥ बैठी सकल श्यामके पासा ॥ निज सब संशय कीन्ह प्रकासा ॥ हम पायो दुर्वासा दरशन ॥ कहि
जात कछु विस्मय परसन ॥ जैसे गुरु तैसेई चेला ॥ तैसोइ छली यमुन जलरेला ॥ तुमरे संग बहु कोटिन नारी ॥
कैसेके कहिये ब्रह्म चारी ॥ दोहा ॥ कुंभ करन के सम भखे मुनिमन अमित अनाज ॥ दुर्वाहारी किमि कही सु-
निबोले ब्रजराज ॥ ५ ॥ अहंकार आदिक गुन हीना ॥ निष्कलंक निरुपाधि नवीना ॥ अच्युत सर्वग परभगवा-
ना ॥ मोहि जानहु यह सत्य सुजाना ॥ तैसेइ अहहि साधुजन मेरे ॥ इंदी जित गत रागवडेरे ॥ तजे प्रपंच हि
पंडित सोई ॥ सगन तत्व मसि के महि होई ॥ ज्ञान सरिस पवित्र जगमाहीं ॥ और वस्तु है एकहु नाहीं ॥ तिन्ह
हिन लगे कर्म जग कैसे ॥ घृत घट महं जल विंदू जैसे ॥ इच्छा एकहु नहि तिन्ह माहीं ॥ संत खवारन तेतर वाही
तव इच्छा दुर्वासा रवायो ॥ पैनतिन्हे कछु भूख सतायो ॥ दोहा ॥ सो मुनि गत संशय भई श्रुति रूपा महिपाल
इहि विधान इन्हकी कथा भारवी भली रसाल ॥ ६ ॥ ऋषि रूपन कर चरित अपारा ॥ सुनहु भूप अघ अर्दन हारा
वंग माहि मंगल इक गोपा ॥ नवलख गोनहं सवदुख गोपा ॥ तहं नृप कछुक काल कहं पाई ॥ सिगरी संपत
श्रासु नसाई ॥ भूप लीन्ह कछु चोरन चोरा ॥ इहि विधि नष्ट भयो चहुं ओरा ॥ जाते धनहि होनहे पाऊ ॥ हे नृप
कहा हवाल सुनाऊ ॥ पांच सहस त्रिय ताहि सुहाई ॥ तामहं लाख न कन्या जाई ॥ तेसव ऋषि रूपा नरपाला ॥

मनते मंगल कहत बिहाला ॥ कहाँ जाउँ कहँ करउँ रखवाला ॥ अपनु नहि तहँ कहँ धन आसा ॥ दोहा ॥ ताते कोउ
भूप कहँ सौंपे सुता समाज ॥ निज हित कछु करि लेइगो येतोंरखाहि अनाज ॥ ७ ॥ मथुरा बासी बृक जय नामा ॥
तहँ आयो महि फिरतलालामा ॥ जय गुपाल करि जै गोपाला ॥ मंगल ने यह कह्यो हवाला ॥ नंदराय सबकोउ
जगनाहीं ॥ सुनि मंगल चलि गयो तहाहीं ॥ तिन कहँ सुता सौंपि सब दीन्ही ॥ भाषि कथा निज विनती कीन्ही
राखेउ नंद विदा तेहि कीन्हो ॥ कन्यन रहन हेत गृह दीन्हो ॥ तेसब रहन लगीं हररवाई कृष्णा होहिं पति यह उर
आई ॥ करत भई यमुना को सेवन ॥ आइ कह्यो तिन्हते वर भेवन ॥ वर माँगहु जो इच्छा होई ॥ सुनि पद वंदि
कहत भइ सोई ॥ दोहा ॥ कृष्ण होहि पति देहु यह मोकहँ भानु कुमारि ॥ एव मस्तु कहि सो गई तिनकहँ मिले
मुरारि ॥ ऋषि रूपाकी इमि कथा तुम्हकहँ कही पृथीस ॥ मैथिल गोपन की सुनहु सुरव प्रद विश्वेवीस ॥ ८ ॥
दसहय मेध पुन्य प्रद कथनी ॥ रघुवर वरमन मथमन मथनी ॥ एसव जन्मी व्रज महँ जाई ॥ भवन नंद नवके
नरराई ॥ मम पति कृष्ण होहिं यह काजा ॥ मारगशीर्ष प्रथम दिन राजा ॥ कात्यायनि कहँ पूजन लागीं ॥
उठहिं प्रभात सकल मुदपागीं ॥ न्हाइ यमुन जल हरिगुन गावत ॥ चारु मृदा की देवि बनावत ॥ वसन विगत
इक दिन जल माहीं ॥ न्हातिरहीं हरि गरउ तहाहीं ॥ तिन्हके सिगरे वसन उठाई ॥ बैठे कृष्ण कदम पर जाई ॥
तेसब देखि लज्जात उघारी ॥ सीत विवस कंपत व्रज नारी ॥ दोहा ॥ मोहन यह कह्यो आवहु कढ़िकै नारि

तव सुत अंबर देउ गो माखन रहहु उघारि ॥ दोहा ॥ चलमहँ कौन सखीत आहि सनय सरमात लखि ॥ हँसे
चोर नवनीत तव वनिता बोलत भई ॥ ९ ॥ कवित्त ॥ नंद जू के नंद वृज चंद हौ अनंद कंद अंबर हमारो जल
माँहि डारिदीजिए ॥ दासी निज जानो गुनरासी उरदया आनो अबला को जानिऐसो गारि नाहि कीजिए ॥
सुनैजो निसंस कंस धंसकरै गंस गहि गोप वंश अवतंस सत्यवो पतीजिये ॥ कंपत हमारे अंग मोर पच्छ
बरे प्यारे पाथरहू पाथहोत आपना पसीजिए ॥ दोहा ॥ हरि बोले जो अहहु तुम दासी तो काढ़ि आउ लेहु
वसन सब मागिके सब संकोच दुराउ ॥ १० ॥ सो सुनि तेसब हृदय विचारी ॥ करवुच भगके ऊपर धारी ॥
निकरी सकल प्रेम पहिचानी ॥ अंबर दीन्ह दिगंबर जानी ॥ सारी पहिरि पहिरि निज सारी ॥ ठाढ़ि भई
प्रमुदित व्रजनारी ॥ लाजित तिन्हहि देखि गोपाला ॥ अतिरसाल मुख वचन निकाला ॥ जेहि हित देवी
कहँ आराधा ॥ होइहि सो निश्चै गतबाधा ॥ दोय दिवस महँ यमुना तीरे ॥ रास करोंगो धीर समीरे ॥ तुमि कहि
कै गृह गए मुरारी ॥ सुंदरि सिगरी सदन सिधारी ॥ अब कोशला नारि अहबाला ॥ चितवै सकल सुनहु
महिपाला ॥ दोहा ॥ रघुवर के वरदानते कोशल की त्रिय आइ ॥ व्रजमहँ नव उपनंद सों व्याही गई सचाइ ॥
११ ॥ गुन कोशल सब कोशल नारी ॥ तिन्ह निजयार कियो गिरिधारी ॥ नेह बढ़ायो पतिहि विसारी ॥ ति-
न्हते ठढ्ढो करत मुरारी ॥ अंचल गहत देखि मगमाहीं ॥ आलिंगत आनंद सरसाहीं ॥ क्षण क्षण भाषहि

सबनिता॥ मत्त समान प्रेम रस सनिता॥ महि जल तेज वायु नभ माहीं॥ देखत हरिहि रहित कछु नाहीं
आठ भावते पूरित सोई॥ प्रेम त्यागि गति और न कोई॥ परम हंस समझै तजि घरको॥ पूछत फिरहिं
सकल नट वरको॥ जड़ चैतन्य केर नहि ज्ञाना॥ क्षण त्यागि मुख कहत न आना॥ दोहा॥ जब मग
मिलत मुकुंद प्रभु लेत कंठमहं लाइ॥ आतुर मुख चुंबन करत प्रेम विवस नरराइ॥ १२॥ एक क्षण
तन्मय सब भामा॥ तजि प्रभु दरस और नहि कामा॥ तिन्हको भाग्य लहै को पारा॥ त्यागेउ सकल
विश्व व्यवहारा॥ अति पवित्र मति ज्ञानहु ज्ञानी॥ धरनि धरन नहि सकहि बखानी॥ योग सांख्य क-
र्म्म अरु कर्मा॥ इनते क्षण मिलहि यह मर्मा॥ श्रीभगवान भक्ति वश अहहीं॥ प्रेम विवस हरिपहं
श्रुति कहहीं॥ जो शिव विधि सपनेहु नहि पावा॥ सोब्रज नारिन नाच नचावा॥ अवधनिवासिनि जितनी
नारी॥ तिन्हकी कथा सुनहु व्रतधारी॥ सिंधु देश महं चंपक नगरी॥ विमल भूपसो पालत सगरी॥
दोहा॥ नेता जोता विष्णु जन विमल विमल मतिमान॥ परम पवित्र महीप मनि पुरी चंपिका जान॥ १३॥ तिहि घटसह
स भई बरनारी॥ रूपरासि गुनगनन संवारी॥ पैनरही कोऊ संताना॥ चिंता विमलहि भई महाना॥ याग वलक्य
मुनि इक दिन आए॥ भूपति पूजि तिन्हे बैठाए॥ चिंता वश विमलहि अनुमानी॥ याग्यवल्क्य बोले वर ज्ञानी॥
किहि हित सोच करहु भूपाला॥ है नकोऊ तोहि कष्ट कराला॥ बोले विमल जोरि जुग पानी॥ अहहु आप सब

जानत ज्ञानी ॥ पै भाषत जो आप बखाना ॥ मोकह है न एक संताना ॥ सुनि मुनि धरि ध्यानहि दृग बोले ॥ राजहि सुखद शुभग वच खोले ॥ दोहा ॥ सुनत एक तव करम महँ पै कन्या सत लक्ष ॥ काल पायकै होइ है विमल कहत सुनि दक्ष १४ ॥ सुत विन देव पितर ऋषि केरो ॥ रहत ऋणी यह शोच घनेरो ॥ सुत विन सुखन होत है ज्ञाता ॥ याज्ञवल्क्य मुनि बोले बाता ॥ करहु न खेद सुता निज सारी ॥ कृष्णहि दीजो नीति विचारी ॥ तातें तीनहु ऋन मिटि जैहैं ॥ मुक्त सहित कुल तुम्हरी ह्वैहै ॥ तब नृप हरष कह्यौ वरभेसा ॥ हरि प्रगटै गे कौने देसा ॥ कैसो रूप किते दिन बीते ॥ याज्ञवल्क्य मुनि कहहिं सप्रीते ॥ द्वापर अंत होइ हरि साँचा ॥ रहै अब्द जब शत दश पाँचा ॥ यदुकुल मथुरा मह अरि कर्षन ॥ भाद्र कृष्ण आठै बुध हर्षन ॥ दोहा ॥ अर्द्धरात्रि रोहिनि तखत वृषसु लग्न अँधियार ॥ देवकि अरु वसुदेव गृह बासुदेव अवतार ॥ १५ ॥ होहिं काठते अग्नि समाना ॥ रमा चिन्ह तन श्याम सुजाना ॥ श्रुति भुज पीत वसन भुज माली ॥ दीजो ताहि सुता गुन साली ॥ इमि कहि मुनि निज भवन सिधाए ॥ विमल विमल मति सुनि हरषाए ॥ अवध निवासिनि यह वर पाई ॥ कन्या भई भूप गृह आई ॥ जानि तिन्है सो उर अभिलाषा ॥ दूत बोलाइ वचन यह भाषा ॥ मथुरा जाहु सूर सुत धामा ॥ देखहु तिनके सुत घनश्यामा ॥ कैसो तिनकर अहइ स्वरूपा ॥ पीत वसन भुज चारि अनूपा ॥ तबहि दूत मथुरा चलि आयो ॥ पुर वासिन तें वचन सुनायो ॥ दोहा ॥ सो सुनिकै वृत्तांत सो तेहि लैगे एकांत ॥ कंस डरन तातें कह्यौ लागि लागि क्षिति कांत ॥ १६ ॥ सौरि सुवन सब कंस मरायो ॥ कन्या इक

तेहि व्योम पठायो ॥ आनक दुंदुभि दुखित इहाँही ॥ पै कोउ ते पूछेउ असनाही ॥ जो यह खबरि कंस सुनि पैहैं ॥ तौ
द्रुत कारागार पठैहैं ॥ अतिहि अधम निसंस अघकारी ॥ साधु विप्र दुख दायक भारी ॥ जन्म्यो कंस हंस कुल
कागा ॥ विष्टा हारी पतित अभागा ॥ सो सुनि दूत चंपिका जाई ॥ बोलेउ विमल चरन सिरनाई ॥ तहँ वसु देव
दीनहै भारे ॥ तिन्हके सब सुत कंस सँहारे ॥ एक सुता सोउ व्योम सिधाई तइहि विधि तहाँ खबरि हम पाई ॥ दोहा ॥
वृंदावन महँ जब गये देख्यौ ढोटा एक ॥ फिरत रह्यौ कोउ गोपको संग गुवाल अनेक ॥ १७ ॥ उर श्री वत्स कंठ वन
माला ॥ द्विभुज श्याम तन परम रसाला ॥ सुनिकै विमल कीन्ह अपसोसू ॥ जात और भुज कर गुनि दोसू ॥ मुनि
न झूठ भाषहि जगमाहीं ॥ कहो करिय संशय की नाहीं ॥ इतनेहि मैं भीषम कुरु राजा ॥ आये तितहि विजय के
काजा ॥ तब नृप विमल मिले बढ़ि सुखसों ॥ लाए भवन प्रीति की रुखसों ॥ भेट राखि भीष्महि बैठाई ॥ बोले वि-
मल विमल मति ल्याई ॥ याज्ञ वल्क्य मुनि मोहिं वरवाना ॥ सौरि भवन ह्वैहै भगवाना ॥ मथुरा महँ औरै कछु
सुनेऊ ॥ समुझि समुझि संशय उर गुनेऊ ॥ दोहा ॥ तुम वसु उत्तम धनुष धर जित इंद्री गांगेय ॥ परम परा वर
पुज्य प्रभु ज्ञान निधान अमेय ॥ १८ ॥ सो सुनिकै संतनू कुमारा ॥ बोले विहँसि बुद्धि आगारा ॥ हे नृप गूढ़ चरित
यह अहई ॥ सुना व्यासतें हम सब इहई ॥ सुर हित असुर निकंदन हेतू ॥ भए शौरि गृह यदुकुल केतू ॥ अर्द्धनिशा
वसुदेव उठाई ॥ नंद भवन दीन्हे पहुँचाई ॥ लाए सुता भवन मति माना ॥ माया सोइ गई असमाना ॥ सोइ गोपाल

वपु वृंदावनमें ॥ रहैं वरष ग्यारह व्रज जनमें ॥ कंसहि मारि प्रगट तब कैहैं ॥ तुमरी ए सब कन्या जैहैं ॥ सो सब अवध निवासिनि अहहीं ॥ पूरव वरतें हरि कर गहहीं ॥ दोहा ॥ इन्ह कह तिन्हहि विवाहेहु इमि कहिगे कुरु वीर ॥ दूतहि विमल पठायउ मुदित जहां वलवीर ॥ सोरठा ॥ सो देख्यो हरिजाइ एकाकी वृंदा विपिनि ॥ पद परशीश नवाइ बोल्यो चाकर विमल कर ॥ १६ ॥ त्रोटक ॥ परि पूरण माधव ब्रह्म स्वयं ॥ वृषभान सुता पति ज्ञान मयं ॥ द्विज देव पुरान स्वभक्तहिते ॥ करुना कर कृष्ण उदार मते ॥ जग नायक कंस विनासन है ॥ गुन रासि महा गरुडासन है ॥ व्रज वासिनि वालन धन्य अहैं ॥ जनको वनको वरभाग्य कहैं ॥ प्रगटे जहं माधव दीनहिते ॥ पग पावन आपग कूल कृते ॥ मन मोहन धर्म निधान प्रभो ॥ सुरभी पति सुंदर सील स्वभो ॥ वहु अंड विमंडन नीरदभा ॥ करुना कर चंद्र समान प्रभा ॥ दरसो हम विश्वहि दुल्लभजो ॥ तजि काम सबै घन श्याम भजो ॥ दोहा ॥ सिंधु देस चंपा पुरी तहां विमल भूपाल ॥ भक्त तुम्हारो विमल मति ज्ञानहु दीन दयाल ॥ २० तुम्हरे हित वहु मख जप दाना ॥ कीन्ह धरम धरनी शसु जाना ॥ ताकहं कन्या कोटि मुरारी ॥ जाइ देहु दरसन भयहारी ॥ श्रीसम सो स्वरूप की खानी ॥ दृढ़ नव चरन भक्ति रस सानी ॥ वरहु तिन्हे दुरव हरहु कृपाला ॥ पुरवहु पावन करहु दयाला ॥ नृप वहु विनय कीन्ह करजोरी ॥ जाइ चंपिका लहिय किशोरी ॥ सुनि अति मुदित भए गिरिधारी ॥ छन महं गए अकाश मुरारी ॥ उतरत दूत सहित भगवाना ॥ विमल यज्ञ सुंदरदर-

साना॥ श्रीवत्सांक श्याम वनमाली॥ पीतांबर वर परमा शाली॥ दोहा॥ देखि विमल उठि विमल मति कृष्णहि सहित अनंद॥ पस्यो चरन जय जय करयो मुदित निरखि नँदनंद॥ २१॥ सिंहासन पर हरि बैठाई बैठे विमल चरन सिरनाई॥ सुता निरेखहि चढ़ी अगोखे॥ बोले कृष्ण भक्ति परितोषे॥ हे नृप हौ तुम चाहत कहा॥ सो सुनि विमल वंदि पद कहा॥ ममम न अलि अंबुज नव चरना॥ निवसै यह दीजै दुख हरना॥ इमि कहि दै सब कन्या दाना॥ धन गृह कोश राज सामाना॥ आत्म समर्पन हरि कहँ करिकै॥ त्यागी प्रान ध्यान कहँ धरिकै॥ जय जय कार भयो तहँ भारी॥ सुमन स फेकहिं सुमन मंझारी॥ नृपश्री कृष्ण रूप कहँ पायो॥ रवि ते अधिक तेज सुख छायो॥ दोहा॥ चढ़ि खगेश परतियन सह कृष्णहि कीन्ह प्रनाम॥ सुरनहि गो वैकुंठ सो विमल विमल वरधाम॥ २२॥ लै सबकहँ हरि आनँद छाए॥ छन-महँ श्री व्रज मंडल आए॥ काम विपिन रारयो भगवाना॥ जितने मंदिर वर सामाना॥ जितनी श्यामा तितने श्याम॥ नित प्रति विहरत सबके धाम॥ तिनके रास पसीना भयऊ॥ नाम विमल सर ताको ठयऊ॥ देखै॰ पीवै न्हावै जोई॥ गऊ लोक कहँ पावै सोई॥ अरु जो यह सुनिहैं इतिहासा॥ ताहू कहँ गति अहै खुलासा गोपीमख सीताकी कथा॥ सुनहु होइ जामें अघ वृथा॥ नगर उशीर सु दक्षिन माहीं॥ तितगाद अब्द भयो जलमाहीं॥ दोहा॥ नंदराय की लै कृपा धनी गोप समुदाय॥ त्यागि उशीरहि सब बसे गाँव सु गोकुल

आय॥ २३॥ तिन्हके गृह रघुवरवर पाई॥ यज्ञ सिया सब जननमी आई॥ कृपा करउ पति यह उर आना॥ हरष रवि कन्या
हि बचन बरबाना॥ हे राधा बताउ मोहि ऐसो॥ जाम हैं होहिं नाथ मम कैसो॥ अहै तुम्हारे बस नंदलाला॥ सुनि बर
बाला बचन निकाला॥ हरि हित हरि बासर व्रत करहू॥ ह्वैहैं बस अवश्य अनुसरहू॥ बोलीं ते सिगरी यह बानी॥
मोहिं बिधान बतावहु एनी॥ अरु सबकेर बतावहु नामा॥ सुनि बोले श्यामा अभिरामा॥ अगहन कृष्ण नाम उत्प-
न्ना॥ कोटिन पुन्य रासि संपन्ना॥ दोहा॥ चौबिस बारह मासकी पुरुषोत्तम की दोय॥ नाम सुनहु छब्बीस के नास
रास अघ होय॥ २४॥ मंगलं॥ उत्पन्ना अरु मोक्षा सफला जानहु॥ सुत दा षटतिल जया सु बिजया मानहु॥
आमर्दकि अघमोचनि काम प्रदायिनि॥ बहुरि बरूथिनि मोहनि नाम कहायिनि॥ निर्जल योगिनि सुरसेनी
कामा पुनि॥ बहुरि कामिका नाम दायक गुनि॥ पुत्रप्रदा अरु अजा अनूप बखानिय॥ पद्मा अरु इंदिरा अघा
कुश जानिय॥ रमा प्रबोधिनि चौबिस संबत महं भल॥ हरिवल्लभा पुत्रदा होय मास मल॥ इमिजो इनको नाम
सुनै जग सुख धरि॥ सोफल पावै व्रतको सिगरो दुख दरि॥ दोहा॥ नेम एकादशि को सुनहु परम पुन्य दातार॥
जिन इंद्री दशमी दिवस एक बार आहार॥ २५॥ छप्पै॥ ब्रह्म महूरत उठै नेम नेहिछन नें करई॥ अधम कुंभ अस्ना-
न कूप मध्यम अनुसरई॥ उत्तम बहुरि तड़ाग नदी अति उत्तम जानो॥ क्रोध लोभ तजि श्वेत बसन सिर तिलक
सुहानो॥ द्विज निंदक पारंबद रत अनृत बचन परनारि रत॥ परधन हारी कुटिल नें बधसभावन करहु मत॥१

हरि कहँ पूजै धूप द्वीप नैवेद्य लगाई ॥ कथा सुनै पुनि द्विजन देइ मन मोद बढ़ाई ॥ निसा जागर न करै कृष्णपद सुंदर गावै
इहि विधान एकादशि व्रत वैष्णव सरसावै ॥ कांस मांस कोदव चना शाक परान्न मसूर मधु ॥ मैथुन भोजन द्वितिय
यह दश दशमी दिन तजहि बुध ॥ २ ॥ दोहा ॥ दतुवन क्रीड़ा द्यूत अरु निद्रा हिंसापान ॥ पर निंदा पै सुन्य ऋषि रतिसु
झूठ शिव जान ॥ कांस मांस रति औषधी मसुर तेल व्यायाम ॥ पुनि भोजन मधु अनृत रिसि हिंसा द्वादश नाम ॥
इहि बिधान एकादशी करै सुचित चित होइ ॥ तातें मिलहिं मकुंद प्रभु परम हितू निज जोइ ॥ २६ ॥ गोपिन कह्यौ व-
चन तब ऐसे ॥ याकर काल बतावहु कैसे ॥ और कहहु फल परम अगाधा ॥ सुनि यह कहत सुंदरी राधा ॥ पचपन
घटि पल ऊपर होई ॥ दशमी तौ बुध त्यागहु सोई ॥ द्वादशि व्रतहि करै नत पापा ॥ सुरा बिंदु परि जिमि घट आपा
द्वै एकादशि आवैं जबहीं ॥ दूजे व्रतहि करै नर तबहीं ॥ एकादशी कथा सुनि काना ॥ वाजपेय फल मिलै महाना
सबसहि दान करै नर जोई ॥ यामहँ सहस गुणित फल होई ॥ एकादशि भयसागर तरनी ॥ अघ तमरासि
महा कहँ तरनी ॥ दोहा ॥ व्रत करि करै सु जागरन जो एकादशि बीच ॥ विष्णुलोक सो जात है कैसोउ अघ
करि बीच ॥ २७ ॥ तुलशीतें पूजै हरि जोई ॥ हरि सानिध्य लहै जनसोई ॥ सत नृपसूय सहस हरिमेधा ॥ या
सम फलन सोउ अनिमेधा ॥ दशपितु दशनारी दशनाना ॥ होत उधार पिढ़ी परिमाना ॥ शुक्ल कृष्ण दोउ सम
करि जानो ॥ गोपय फल सम भेद न मानो ॥ मेरु सरिस अघ दहत महाना ॥ तूलराशि कहँ सिखी समाना ॥

द्वादशि दिनजो दानहि देई ॥ होत कोटि गुन अक्षय सेई ॥ जो हरि कथा सुनै चित लाई ॥ पावै फल महि दान सुहाई ॥ द्वारावती न्हाइ हरि देखै ॥ सोऊ फल याके महँ लेखै ॥ दोहा ॥ कुरुक्षेत्र वारानसी बदरी अरु केदार ॥ पुष्कर क्षेत्र प्रभास पुनि सूरय ग्रहण विचार ॥ २८ ॥ चारलाख संक्रांति नहाई ॥ नहिं एकादशि के समताई ॥ अहि महं शेष गरुड द्विजमाहीं ॥ सुरमहँ हरि बरनन द्विज आही ॥ तुलसि पत्र महँ तरुमहँ पिप्पल ॥ तिमि व्रत महं एकादशि अतिभल ॥ अयुत वर्ष जो ध्यान लगावै ॥ नहिं एकादशि सम फल पावै ॥ इमि एकादशि फल हम भाषा ॥ ॥ तुमरी अहै कहा अभिलाषा ॥ गोपी कहत भई यह बानी ॥ आप महान ज्ञान की खानी तुम सम नहि कोउ जाननि हारो ॥ संशय एक और निरवारो ॥ किन्ह किन्ह कीन्ह व्रतहि कह पायो ॥ सुनि भगवान भाष्यो गायो ॥ दोहा ॥ प्रथम कीन्ह व्रत वज्र धर गयो रह्यो जवराज ॥ जीत्यो असुरन सुरन सह जगजस भयो दराज ॥ ॥ २९ ॥ वैषानस नृप पितु हित कीन्हा ॥ सहित वंश तिन्ह सुरपुर लीन्हा ॥ लुंपक राज भ्रष्ट सठ पापी ॥ करि व्रत भयो महीप प्रतापी ॥ केतुमान सुतहित व्रत कीन्हा ॥ सुतभो पितहि स्वर्ग निज दीन्हा ॥ नर अवलहि सुर अवलन दीन्हा ॥ फल नाते सो सब सुख कीना ॥ मालवंत अरु पुष्यवती दोउ ॥ शाप पाय व्रत करि छूटे सोउ ॥ रामचंद्र व्रत करि अरि मारा ॥ सीता लै निजपुर पगुधारा ॥ विधिसुर सहित भए व्रत करतें ॥ पायो परम पदहि सुख भरतें ॥ मेधावी व्रत करि तरि गएऊ ॥ शाप रहित सो निजतन भएऊ ॥ दोहा

धुंध मार अरु सगर नृप मांधाता मुचकुंद ॥ एसब करि करि तरि गये परसे चरन मुकुंद ॥ ३० ॥ ब्रह्मकपाल शंभु
तें छूटो ॥ एकादशि व्रत फल जब लूटो ॥ धृष्ट बुद्धि बनिया अति पापी ॥ व्रत करिगो वैकुंठ सुरापी ॥ रुक्मांग
द करिकै हरि वासर ॥ गए विष्णु पुरभरि आनँद उर ॥ अंब रीष व्रत कीन्ह बुलासा ॥ जग जद दुर्वासा इतिहासा
यामहँ निर्णय प्रगट दिखायो ॥ महिजित नृप करि व्रतसुत पायो ॥ बहुरि विष्णुके लोक सिधायो ॥ नृप
हरिचंद कियो व्रतभारी ॥ लह्यो राज अरु स्वर्ग सुखारी ॥ दोहा ॥ सोभन अजहू लसत हैं मंदर गिरि महि
पाल ॥ शशिभागा ताकी तिया व्रतसु प्रभाव रसाल ॥ ३१ ॥ सुनिराधा वचनहि सबनारी ॥ कीन्ह एकादशि
को व्रतधारी ॥ हरि प्रसन्न ह्वै रास रमायो ॥ मारग पूनो दिवस सुहायो ॥ अब पुलिंदि कन कर वर वरनन ॥ कर
वसुनहु नृप जो अघ अर्दन ॥ विंध्याचल पर वसहि पुलिंदे ॥ तहँके नृपते झगर हिरिंदे ॥ विंध्यभूप चढ़ि
अक्षोहिनी ॥ घेरेउ भीलन अमर खसमनी ॥ सर असि असनि शूल कहँ डारो ॥ राज दूतसु पुलिंदन मारो ॥
तबहि कंस ढिग दूत पठायो ॥ भीलन सो सुनि भोज रिसायो ॥ नृपसन लरन हेत उमदायो ॥ बली प्रलंबा
सुरहि पठायो ॥ दोहा ॥ काल मेघ द्युति कर गदा ऊँचो जोजन दोइ ॥ कीस कीस कुंडल करन सर्प हार छ
विहोइ ॥ ३२ ॥ लह लहात जिव्हा अतिभारी ॥ आयो मनहुँ काल वपुधारी ॥ निरखि प्रलंबहि नृप भय
पागो ॥ सदल आसु कढ़ि तहँते भागो ॥ तब प्रलंब लै भीलन साथा ॥ गोचलि जहाँ भोज कुल नाथा ॥

भए कंसके नौकर भीला ॥ इहि विधि सुनहु भूप वल शीला ॥ तिन्हके गृह पुलिंदिका जाई ॥ जिन्ह
इ दीन्ह वर श्री रघुराई ॥ सोहरि कहं लषि दृगन लोभाई ॥ पदरज सीश धरे छवि छाई ॥ सोऊ रमी रास -
महं आई ॥ परिपूरन तम कुँवर कन्हाई ॥ जोरज दुर्ल्लभ शेष महेशनि ॥ अवला धन्य धरहि सिर देशनि
शिवपद विधिपद इंद्रपद सर्व भौम पद त्यागि ॥ जे लागहिं भगवान पद नृपतेई वड़ भागि ॥ ३३ ॥ सबतजि
हरि भजु सार यहीहै ॥ मिथ्या सब संसार सहीहै ॥ हे नृप भक्ति करी तिन पायो ॥ नहि उत्तम कुल इहां
गनायो ॥ दूजी गोपिन केर बयाना ॥ सुनहु होइ जाते अघ हाना ॥ दिव्य बाह गोपेष्ट मतंगा ॥ मार्गद शु-
क्ल नीति बिदसंगा ॥ षट वृषभान भवन भइ कन्या ॥ उर्ध विष्णु पद बासिनि धन्या ॥ रामा सखी जल
सुता सुजाना ॥ श्वेत दीप की त्रियनर त्राना ॥ श्री लोका चल वासिनि जोई ॥ और अजिन पदकी प्रिय
सोई ॥ हरि हित कीन्ह माघ व्रत भारी ॥ चिंतत चरन शरन सवनारी ॥ दोहा ॥ माघ शुक्ल की पंचमी
हरि धरि योगी भेस ॥ करन परीक्षा जातभे वर बरसाने देश ॥ ३४ ॥ तन विभूति हरि चर्महि धारे ॥ जटाजू-
टसिर सरस सवाँरे ॥ मग आवत मुरली धुनि कीना ॥ आनि धाय व्रज बाल प्रवीना ॥ हसीं परस्पर हरिहि
निहारी ॥ वोलीं सुनहु साधु व्रत धारी ॥ सिद्धिनाम अरु नाम कहाहै ॥ ठाम कहाँ अरु काम कहाहै ॥
कृष्ण चंद्र तव वचन प्रकाशा ॥ अहइ नाम मम स्वयं प्रकाशा ॥ वसत मानसर असन विहीना ॥ मोहि

त्रिकाल ज्ञान हरिदीना ॥ भव्य भूत वर्त्तत सो गोहन ॥ उघटन थंभन मारन मोहन ॥ वसीकरन जानत हमनीके ॥ सुनि त्रिय-
कहहि मनोरथ जीके ॥ दोहा ॥ वसीकरन आवहि अबतो सिद्ध अहौ तुम आप ॥ जेहि चिंतत हमसों अबहि आवैं प्रगट प्रता
प ॥ ३५ ॥ तौतो सिद्ध अहौ हम जाने ॥ सोसुनि सिद्ध प्रसिद्ध बखाने ॥ यह अति दुर्लभ दुर्घट भाषा ॥ पैकरिहौं जो तव अभि
लाषा ॥ मूंदहु आँखि सकल ब्रजबाला ॥ होत तुम्हारे मनको ख्याला ॥ मूंदेउ सबन आँखितेहि काला ॥ योगीभे भोगी
नंदलाला ॥ खोलि दृगन तिन्ह हरिहि निहारे ॥ सो सुखको जन सकल उचारे ॥ माघ मासके चारु रासमें ॥ तिन संग हरि
विहरे हुलासमें ॥ सुनहु कथा अरु गोपिन केरी ॥ उपनंदन की सुता घनेरी ॥ त्रिगुण और आदिव्या दिव्या ॥ तेसब जनमी
आइ पृथिव्या ॥ दोहा ॥ वीति होत्र श्रुत अग्नि भुक गोपति श्रीकर शांत ॥ पावन शांव ब्रजेशए नवउपनँद ब्रजकांत ॥ ३६
सो सब सखी राधिका केरी ॥ रूपराशिगुनगनन बड़ेरी ॥ मान सहित राधिकहि निहारी ॥ बोलीं वचन आय ब्रजनारी ॥ हेसुंद
रि नववैस किशोरी ॥ सुनहु वचन गोरी तियभोरी ॥ अहइ फागु को अवसर एहू ॥ आवत हरि भरि हृदय सनेहू ॥ उत तें
अविर गुलाल उडावत ॥ झाझ पखावज डफहि बजावत ॥ चारु कपोल अलक छवि छाई ॥ पीत बसन पर माल सुहाई
लोचनलाल लसत मद भीने ॥ चलन गयंद थकित करिदीने ॥ मोर मुकट कुंडल सरसाई ॥ बेसर मोति ज्योति दरसाई ॥
दोहा ॥ इंद्र धनुष घनमाहि जिमि तिमि भृकुटी द्वै देखु ॥ करमहँ पिचकारी भरत अँग अँग मोहन भेषु ॥ ३७ ॥ तव आसा
अवरेखत ठाढ़े ॥ ग्वाल गुपाल गुनी गरु गाढ़े ॥ तजहु मान तजि भान दुलारी ॥ लेहु सुयस फागुन को भारी ॥ चलि देखउ

सबसाथ सँजोवा ॥ बुक्का केसर चंदन चोवा ॥ उठहु उठहु बैठी कहि हेता ॥ खेलहु ब्रजघन श्याम समेता ॥ फिरि फिरि स
मयन जानहु ज्ञानी ॥ बहते पानी धोवहु पानी ॥ सो सुनि उठि करि प्रीति दराजा ॥ लगी सजन होली को साजा ॥ बुक्का
अबिर अरगजा धूरी ॥ चंदन अरु केसर कस्तूरी ॥ थाली भरे चली सब आली ॥ हँसी करहिं अरु गावहि गाली ।
दोहा ॥ तनसारी सारी लसै सारी बाल रसाल ॥ अबिर उडावत तालदै घेरलयो नँदलाल ॥ ३८ ॥ कवित्त ॥ ॥
तालदैदै धावैं औ उड़ावैं लै गुलाल गोपी मदन गोपाल तें बिसाल बर जोरी है ॥ जुवती ब्रज बालते तेभए नंद
लाल तहाँ डारत रसाल काश्मीर नीर घोरी है ॥ टूटी बनमाल गाल चोवा बिंदु दरसात चलत सुचाल भालसर
सात रोरी है ॥ गोरी गोरी नवल किशोरी दोरी दोरी फिरै झोरी लै चलावै मुखगावै आज होरी है ॥ दोहा ॥ दीन्ह
पीत पट कृष्ण तब प्रमुदित आए धाम ॥ इहि विधि विलसत फागु हरि संग भानु पुर बाम ॥ ३९ ॥ सुनहु त्रिदश
त्रिय बरनन राजा ॥ सब सुख करन भवाब्धि जहाजा ॥ मालव देश दिवस पति नामा ॥ नंद गोप इक रह्यो ललामा ॥
सहसतियन सह तीरथ करतें ॥ आयो गोकुल सुख विस्तरतें ॥ मिलिकै नंदराय ते सोई बसत भयो सुवास अति
जोई ॥ जोजन द्वैको घोष बनायो ॥ बसे दिवस पति थल मनभायो ॥ सुता ताहि बहु भई नरेशा ॥ माघ नहान कीन्ह
बरभेसा ॥ नव किशोर हरि हित नित जाहीं ॥ गावहि गीत सप्रीत नहाहीं ॥ मुदित आइ हरि भाखेउ बानी ॥ बरमा-
गहु सुनि कहत सयानी ॥ दोहा ॥ दुर्लभ योगी यूथ कहं कोटि अंडपति आप ॥ लोचन अंतर होहु जनि हरहु बिश्व

परिताप ॥ ४० ॥ एवमस्तु भाषेउ भगवाना ॥ तिन्ह संग रास कीन्ह विधिनाना ॥ पीत बसन कटि सीस मुकुट बर
श्याम सरूप नवाए कंधर ॥ लकुट बेनु नट बेष कपट तजि ॥ रेमन कोंन नंद नंदन भजि ॥ भक्ति बिबस जानहुं गिरि
धारी ॥ गोपी यासु प्रमान विचारी ॥ भक्ति त्यागि वश हो तनहरी ॥ जिमि तालहि तें चालति धरी ॥ जालंधरी
भई जो नारी ॥ सुनहु कथा सो पावन कारी ॥ गोपरंग जित नाम महाना ॥ रह्यो रंग जित को नर जाना ॥ धृतरा-
ष्ट्रहि अर्बुद आसरयो ॥ देतरह्यो इक संवत सरकी ॥ दोहा ॥ परम बीर दीन्हो नहीं करवर संवत एक ॥ कुरुन
कोप कीन्हो तवै जानि ताहि अविवेक ॥ ४१ ॥ अयुत शस्त्र धर धीर पठाए ॥ बाँधिताहि कौरव ढ़िग ल्याए ॥ अ-
ज्ञा दीन्ह तवै नरराजा ॥ कैद करहु इहि सहित समाजा ॥ बहुरि भगि सो निजपुर आयो ॥ कुरु वरकर कर नाहि
पठायो ॥ अक्षोहिनी तीन तव भारी ॥ भेजत भे धृतराष्ट्र हंकारी ॥ भीतव समर भयंकर राजा ॥ चले शस्त्र बाजे
बहु बाजा ॥ असिशर भिंडिपाल शरपट्टा ॥ भट्ट करहिं सरपट्ट झपट्टा ॥ लख्यो बहुत दिन कुरुन प्रचारी ॥ रंगोजि
त निज हारि निहारी ॥ दूत बोलि मधुपुरी पठायो ॥ कंस सरन में यह कहिगायो ॥ दोहा ॥ दूत बंदिकै कंस को क
हत भयो सबबैन ॥ रंगोजित नृपरंग पुर अहहिं महा मति ऐन ॥ ४२ ॥ चेह्यो तिन्हे कौरव न जाई ॥ तुम्हरी शरन
अहै सोराई ॥ तुम्ह प्रभुदीन दुरव के हंता ॥ अहहु महाबल वसुधा कंता ॥ सुर अरु असुर जीति वस कीन्हो ॥
तीन लोक महँ डंका दीन्हो ॥ शशिहि चकोर रविहि अरविंदा ॥ पपिहा कों सेवति करविंदा ॥ भूखे अन्न तृषित

की लाला ॥ रंग जितहि तिमि तुम नरपाला ॥ सो सुनि कंस दयाल बिचारी ॥ चले साथ कोटिन अमरारी ॥ सुंद
र रंजित महत मतंगा ॥ मस्तक मस्त डुलावत संगा ॥ श्वेत बरन सिकरा पग भारे ॥ कंस चढ़े अरि जीतन हारे ॥
दोहा ॥ केशि व्योम वृष लंब अघ बक मुष्टिक चाडूर ॥ सबन सहित गोरंग पुर कंस कठिन अति सूर ॥ ४३ ॥
मिलि यपति वंशी तेहि काला ॥ समर परम भे करत कराला ॥ कंस गदा कर लै तेहि पलमें ॥ धस्यौ काल सम कौ
रव दलमैं ॥ मर्दन लग्यौ भयंकर भारी ॥ कर पग सिरधर तलन प्रहारी ॥ गजते गज हयते हय तजि तजि ॥
मारत कंस बीर विधि सजि सजि ॥ पकरि घने कहँ भूमि मरद्दत ॥ बहुतन नभमहँ फेकि नरद्दत ॥ व्योम बढ़्यौ
सत व्योम उचाई ॥ वृषभो दलत सत्रु समुदाई ॥ केशी कीन्ह सत्रुगत केशी ॥ प्रलय कालके केशी केशी ॥ दोहा ॥
देषि तिन्है यमराज सम भागी कौरव सैन ॥ जिमि छूटे बंदूक के नभचर एक रहैन ॥ ४४ ॥ रंग जितहि लै देत
नगारे ॥ मथुरा दिशि मथुरेश सिधारे ॥ सुनि यदु जीत दशन दल कौरव ॥ रहे भौन गहि राखे गौरव ॥ नगर
वर्हिषद व्रजके पासा ॥ रहेउ रंगजित तितहि खुलासा ॥ ताके गृह सब जालंधरी ॥ भई आइकै हरि वर धरी ॥
ते सब व्याही गोपन माहीं ॥ जार सरिस हरि लखत सदाहीं ॥ चैत्रमासमहँ रास रचाई ॥ तिन्ह कहँ सुख अति
दीन्ह कन्हाई ॥ व्रजमहँ गोप एक धनवाना ॥ पाँच सहस तिय ताहि सुजाना ॥ ताहि भईं बहु सुता प्रवीना ॥
जिन्हहि पूर्व पृथु झष वरदीना ॥ दोहा ॥ वर्हिष्मती भई सबै अरु अप्सरा नरेस ॥ सुतल वासिनी अहिसुता

पूरव कथित विसेस ॥ ४५ ॥ दुर्वासा मुनि तिन्ह कह दीन्हा। यमुना कर पचांग प्रवीना ॥ ताप्रतापते मिले मुरारी ॥ एक दिवस वृंदावन भारी ॥ तहां डोल अति उत्सव कीना ॥ यमुना के तट रचेउ नवीना ॥ झूलत डोल श्याम अरुराधा ॥ जाहि देषि भागत भवबाधा ॥ कवित्त ॥ लोलदोऊ लोचन निचोल तनपीत सोहैं जटित अमोल नगभूषन सुडोलहैं ॥ करत कलोल ब्रजबालाबोलैं मीठे बोलैं उपमा अतोल देखि रविह अडोलहैं ॥ घोल घोल केसर कपोल मैं लगावैं आली सोभाके हलोल राग गावत हिडोल हैं ॥ डोलडोल कुंजन ब्रजेश मनरंजन सों झोललै उडावैं औझुलावैं फूल डोल हैं ॥ दोहा ॥ इहि विधान इनको कह्यौ नृपति तुम्हे इतिहास ॥ सुनै पढ़ै जाकह मुदित होइ सकल अघनास ॥ सोरठा ॥ सपे सुताही जौन रासकीन्ह वलदेव संग ॥ + ॥ मैथिल पृथिवी रौन अब सुनिहौ कह सो कहहु ॥ ४६ ॥ सुनि वहुलाश्व कहा यह वानी ॥ कहहु मोहि कृष्णके ज्ञानी ॥ पांच अंग हे सुवन विरंची ॥ सुनि वोले करधरे विपंची ॥ इत इक अहइ महत इतिहासा ॥ मांधाता नृप रहे खुलासा ॥ इक दिन खेलत विपिन सिकारी ॥ गै शौभरि आश्रम व्रत धारी ॥ वंदि दमादहि आसन पाए ॥ खग वंशी यह वचन सुनाए ॥ कहहु मोहि कछु जग अघहारी ॥ हरि पुर प्रद कोउ साधन भारी ॥ तुम समहैन कोऊ अज्ञाता ॥ सुनि वोले सौभरि सुनि वाता। यमुना पंच अंग हम भाषत ॥ जेहि पढ़ि नर हरिपुर अवला खत ॥ + ॥ दोहा ॥ + ॥ कवच सुतव पद्धति पटल

सहस नाम एयाँच ॥ अंग कलिंद कुमारिके अघ ईंधन कहँ आँच ॥ ४७ ॥ सुनहु अहै क्रमतें सब अंगा ॥ प्रथम कवच यह
करन उमंगा ॥ रथासीन कृष्णा भुजचारी ॥ अंबुजई क्षन अच्युत प्यारी ॥ ध्यान धारि तब कहुँ चहि धारै ॥ न्हाइ पूर्व सुख
मौन सुधारै ॥ सिखा बद्ध कृत संधि कुशासन ॥ करि आचवन पढै अघ नासन ॥ छप्पै ॥ यमुना मे शिर पातु पातु कृष्णा
ममलोचन ॥ वाम अंश संभूत कृष्णाके वतु शुनि दोउ धन ॥ परमानंद प्रदाक पोल वतु पाप विनासिनि ॥ श्याम वतु भूर्भंगना
कवतु नाक निवासिनि ॥ कालिंदी वतु अधर में चिबुक सूर्य कन्या सदप ॥ कंधर पातु जमश्वसा महानदी वतु मम हृदय ॥
१ ॥ कृष्णप्रिया वतु पृष्ठ पातु तटनी भुजदोई ॥ श्रीरणी वतु स श्रोरणी कटिसु दर्सना जाई ॥ रंभोरू उरपातु अब्धि भेदनि व-
तु जानू ॥ रासेश्वरि वतु गुल्फ चरन अघनासिनि जानू ॥ अघ ऊरध भीतर वहिर दिसि विदिसा सब कालमैं ॥ वतु परि
पूरण तमप्रिया भाषेउ कवच रसालमैं ॥ २ ॥ पढै याहि दसवार निधन होवै धनवाना ॥ व्रत धरि त्रिमास होइ सब भूमि
प्रधाना ॥ शतपर दशनित पढै एकशत वीस दिवसलौं ॥ तेहि कहँ कहँ नहि होइ अवशि मनके रह वसलौं ॥ नित्यप्रात उ-
ठि जो पढै सर्वतीर्थ फल सो गहैं ॥ परंधाम गोलोक जो अंग योगि दुर्लभ अहैं ॥ ३ ॥ दोहा ॥ मांधाता पूछत भए अस्तव
यमुनाकेर ॥ चतुर्वर्ग प्रद सिद्ध कर बोले सौंभरि फेरि ॥ ४८ ॥ छंद ॥ हरिवाम अंश प्रभूत कृष्णा नमो कृष्णा स्वरूपिनी ॥ अघ
हरन तुम्हरे चरन पंकज वरन त्रियव्रज भूपनी ॥ जे कुटिल कामी कूर तुम्हरो नाम कवहुँ न लेतहैं ॥ जो मुनिन दुर्ल्लभ जात
सोइ पद जीति जग अघ जेतहैं ॥ १ ॥ तव उर्मि माहीं कुर्मरूपी मत्स्यहैं आवर्त्त मैं ॥ प्रतिविंदु श्री गोविंद कृष्णस्वरूप कृष्णा

प्रवर्त्तनैं॥ घन सघन समद्युति जघन विस्तृत वेग अति लीलावती॥ ब्रह्मांड तें गिरि दुर्ग भेदत भूमिमाला आ
वती॥ २॥ तव भ्रात जो यमराज सुनितव भक्ति तुरतहि तजतहैं॥ सोदंड परम प्रचंड तासु स्वरूप देखत लजत
हैं॥ जाकहे जगदुख जात अरु मूकहे मुद सजत हैं॥ नाकहे नारायण वनत विधि शंभुवंदित छजतहैं॥ ३॥
डोरी अहै जगकूपकारन पाप दाप विदारनी॥ सिरमाल सम नंदलाल के व्रज वृहत सोभाकारिनी॥ हैध-
न्य तिकके भागजे जनमजहिं दरसहिं परसहीं॥ गोलोक औ वैकुंठ वारे हूघने जन तरसहीं॥ ४॥ गोगोप
गोपी गुनी गोकुल सुखद श्री गोपालकी॥ व्रजभूषना अघ दूषना गोलोक पुरहित पालकी॥ प्रति रोम
रसना पाय कीरति कहै केशव वालकी॥ नहि पार सत्य विचार ललना ललित श्री नंदलालकी॥ ५॥ गिरिक-
लिंद नंदनि अघ निकंदनि विबुध बंदनि सुरसरी॥ यमुना कहे यमुनागहैं हरिकी प्रिया करुना करी॥ जो पढ़ै
यह तवराज तवतौ तवन पुरतब लहतहैं॥ जहँ कृष्ण वृंदावन गोवर्द्धन गोपगो सह रहतहैं॥ ६॥ दोहा॥ वहुरि
कह्यौ यवनाश्व सुत धरिपद ऊपर माथ॥ पटल पद्ध तेहि भाषियै भाषतभे मुनि नाथ॥ ४८॥ पटल सुनहु
यमुना कर भूपा॥ सुनि पढ़ि मनुज होहि हरि रूपा॥ प्रणव पूर्व भावै नरपाला॥ माया वीज कहै सुर साला॥ रमा
वीज अरु अततन वीजा॥ कालिंदी पुनि कहै सुभीजा॥ यमुना देवी नमः वखानै॥ तव यह मंत्र कहै मन मानै॥
लक्ष एकादशि मंत्रहि कहई॥ सिद्ध होइ जव सवकछु लहई॥ षोडश दल अंवुज के माहीं॥ सिंहासन भगवान

तहाँही ॥ कालिंदी समेत बैठावै ॥ दल प्रति सहित रूप कर कावै ॥ ॥ गंगा विरजा शुचिरता बानी ॥ शशिभागा गो-
मती वरवानी ॥ दोहा ॥ चैनि सिंधु गोदावरी कौशिक सरजू नाम ॥ वेत्रवती वेदस्मती शतद्रू बहुरि ललाम ॥ ॥
ऋषि कुल्या सुक क्रिमिनी पृथक पृथक बैठाइ ॥ इरावन इरा तुलसि गोवर्द्धन सरसाइ ॥ नाम सहित पूजन करैं
वंध्यो प्रेमके तंत्र ॥ सुनहु सुजान महीप मनि सो पूजा को मंत्र ॥ ५० ॥ छप्पै ॥ प्रणाव नमो कहि भगवत्यै क-
लिंद नंदिन्यै ॥ सूर्य कन्यकायै भावै यमराज भगिन्यै ॥ श्रीकृष्ण प्रिया यै यूथी भूलायै स्वाहा ॥ पढ़ि यह
मंत्रहि षोड़श विधि पूजै नरनाहा ॥ दूहि विधान भाख्यो परत परम चतुर तुमसो सुनहु ॥ अब पद्धति भा-
षत अहों अवगा लावूसो सब सुनहु ॥ दोहा ॥ जबलौं पूरो होय नहिं पुरश्चरन महि पाल ॥ ब्रह्म चारि
मौनी व्रती जब आहार रसाल ॥ महि शयी अरु यम भुग जित मानस जित क्रोध ॥ लोभ मोह कामहि तजै
राखै आत्मा सोध ॥ ॥ ५१ ॥ भक्ति सहित उठि बड़े सवेरे ॥ यमुना ध्यान धरैते हि वेरे ॥ न्हाइ नदी तट संध्या
करई ॥ तीनहु काल कालना टरई ॥ नियम समाप्त जबै नृप पावै ॥ द्विज गृहस्थ दल लाख जेवावै ॥ भू-
षन वसन असन धन नाना ॥ देइ दक्षिणा सहित विधाना ॥ श्रद्धा सहित करै चित लाई ॥ यथा शक्ति
यह पद्धति भाई ॥ नव नृप सहस नाम अभिलाषा ॥ ० ॥ सो सुनिकै पुनि सोभरि भाषा ॥ ८ ॥ छप्पै ॥ प्रणाव
[illegible] ॥ करै सोइ मंत्रस्य सोभरि ऋषि आनद गहि ॥ श्रीयमुना देवता

अनुष्टुप छंद वखानै ॥ बहुरो माया बीज मिती कीलकं सुजानै ॥ रमाबीज मिति शक्ति तव श्रीकलिंद नंदिनी कहि ॥ प्र
साद सिद्धार्थे जपे विनियोगहि भाषै सुचहि ॥ छंद ॥ श्यामासु अंबुज अच्छ घन द्युति चारु कंचन करधनी ॥ केयूर कं-
कन माल । मनिमय करन कुंडल छविघनी ॥ तन लील अंबर लसत वरशिर गुथी चोटी सुभवनी ॥ अभिराम क्रांति
ललाम ध्यावै अघ हरनि रविनंदिनी ॥ कवित्त ॥ कालिंदी यमुना कृष्णा कृष्ण रूपा सरस्वती कृष्ण वाम अंस भूता
परनंद रूपिनी ॥ वृंदावन मोदिनी गोलोक वासिनी सु श्यामा राधा सखी रासलीला करुना की स्वरूपिनी ॥ वल्ली रंग
वल्ली मनोहरासु नाम कहि य रासमंडलाख्य मंडनी त्रिया अनूपिनी ॥ माधवी निकुंज यूथी भूता हरि प्रिया जानि
गऊ लोक वासिनी ॥०॥ गभीरा ब्रज भूपिनी दिव्यानि कुंज तल वासिनी बालाका वरन दीर्घ उर्मि घनश्यामा पूर्णमेघ पालि
नी ॥ परिपूरण तमापरापर ब्रह्म प्रिया पुष्य वल्लव स्वरूप मेघ मामा शत्रु घालिनी ॥ महानदी मंदगती महा वेग
वती वेगा निर्गता निकुंजते विरजा वेगशालिनी ॥ अनेक ब्रह्मांड गता ब्रह्मद्रव समाकुला गंगा मिश्रा निर्जला भानिर्ज
ला विशालनी ॥ रत्न वद्ध उभै तटी ब्रह्मलोक गता ब्राह्मी निर्मल पानीया नदी हंस पद्म संकुला ॥ वैकुंठ परखी भूता
ब्रह्म अंड पावनी सुस्वर्गा स्वर्ग निवासिनी उद्दत्र संति आकुला ॥ प्रोत्ययंति मेरु माला गंडशैल विभेदिनी शिखरनी
महोज्वाला कृष्ण प्रेम व्याकुला ॥ परिखा श्री गंगा आभताप हरिणी सुजान भूमि मध्य गाक कलिंद नंदिनी सु
भाकुला ॥ मार्त्तंड तनुजा सरि देशा न्युनंति गच्छंति वाहंती सु माधवी वरंती चारु दर्शना ॥ यमस्वसा मंदहासा पद्ममुखी

मूलधर्षना॥ मुद्ध जात पथ्थरंति कूजच्चूपुर सुजान भांडी विभाषिनी वन्या सकल दुख धर्षना॥ ४॥ षट्रागी परंगता
मल्हारागी रतभूषा स्वसुखा साधी स्वकीया भक्त स्वार्थ साधिनी॥ नवलांगा वला मुग्धा कामलोचना वरांगना॥ कृष्ण
वर्णिच्छनी विमुद्ध्व्यापवाधिनी॥ सोभाभायरमा कीर्त्ति प्रौढ़ापौढ़ी प्रगल्भ का मध्या मध्यगा नवोढ़ा अच्युत अ-
रागिनी॥ ज्ञाते यौवना अज्ञात यौवना मुदीनाप्रभाधीरा धैर्यधरा ज्येष्ठा श्रेष्ठा कांति व्याधिनी॥ ५॥ श्रेष्ठकुल अंग
ना सुरूपी द्युती छनप्रभा विद्युत्सौदामिनी चला का चंचलारता॥ स्वाधीन पतिका तडित स्वाधीन पतिका पुष्टा ल-
क्ष्मी इच्छा कश्मिपुस्था दिव्यशय्या आरता॥ कलहो तरि ता भीरु मानस गोविंद हृत पोत कंठिता पुरा अखंड सोभा
धारता॥ विप्रलब्धा खंडिता भिसारिका विरह आर्त्ता नारी विरहिनी प्रज्ञा मानदा विचारता॥ ६॥ प्रोषित पतिका ज्ञा-
ता मानिनी मानत्तकारी मंदार विपिन वासिनी भाकारी मेखला॥ कांचनी श्रीकुंडा व्योमहासनी श्रीहासिनी सुपद्म हा-
रा मुक्ता मुक्ता प्रदा कालनी कला॥ रक्तकंचुके यूरा कंचुकी सुकंचु मपिदर्पना फुरद अंगुली अंगठी चंचला॥ वृंदावन
लता माध्वी वृंदावन विभूषना दर्पिनी विभूता दुष्टदर्प नासिनी भला॥ ७॥ कंबु ग्रीवा कंबुधरा नादंकिनी टंकधरा
ग्रैवेयक विराजिता वृंदावन वासिनी॥ सिरवाभूरवा वालपुष्पा मनिभूमिगता देवीरेवता द्विविहारिणी वृंदा श्री-
विलासिनी॥ नासामोती सोभिता कनककर्णपूल युता सौंदर्य्य लहरी लक्षा काम्या रम्या भाविनी॥ विश्रांत गोकुल

सुभ मथुरा निवासिनी सुरमणस्थल सोभाख्या प्रणता प्रकाशिनी ॥८॥ तीर्थराज गतिर्गोत्रा भारती प्रोन्नता सृष्टा भारतार्चिता लठुंती सात सिन्धु भेदिनी ॥ लोला सप्तदी पुगता वला तत्सैल भिद्यंती गंगासिन्धु संगमासु काचिनी प्रभेदिनी ॥ कनकी भूमिभाता कनक भूमिलोक दृष्टिलोका लोका चलार्चिता स्वर्गगता मेदिनी ॥ शैलहुता वृंदावनी वनध्यक्षा रक्षाकक्ष्या तटी जटी स्वर्ग पूजिता महाघ छेदिनी ॥ ९ ॥ असि कुक्षगता कक्षा स्वच्छन्दोच्छलिता दिशा पापां कुशा स्वर्गार्च्चा स्फुरंती वेग वत्तरा ॥ पापद्रुम कुठारी पापसिंही पुन्य संहाहै कहु रस्थारय प्रस्था पुण्य वर्द्धनीवरा ॥ पस्थ छाते तरात्वरा अंबुछाद दर्दुरा भादर्दुर स्वरूपा चारु रूपा दर्दुरोदरा ॥ मधुवन नदी मुख्यातुलाताल वनस्थिता कुमुद वन नदी कुब्जा पुण्यदासु दर्दुरा ॥१०॥ सावरूपा वेगवती सिंहसर्पादि वाहिनी कुंड कृष्ण जलप्रिया रूपपरम सुंदरा ॥ कुमुदाजै वर्द्धिनी सु वहुली वहुदा वह्नी राधाकुंड कलाराध्या वहुला वन मंदिरा ॥ ललिता कुंड गाधराटामंडिता विशाषा कुंडगोप कुंड तरंगिनी सु कंतल सकेसरा ॥ श्रीगंगा क सुमाकर भावनी मानसी गंगा गोवर्द्धनी गोवर्द्धना सारसी शुभासरा ॥११॥ कृष्णदेह समुज्वला निलया गोविंद कुंड नीलकुंजवर्ना नीलकुंड आभा मानिनी ॥ नीलपद्म आढ्या नीलपद्म आभ नीलाभा नील कंज शालिनी नीलकंज धरा चांदिनी ॥ नीलवल्ली नागपुरी नागवल्ली दलार्चिता मकरंद मनोहरा चर्वाओ प्रमानिनी ॥ केसरनी पान चर्चिता कज्जला भाल भाकेश पाश सोभिता प्रिया जहांन त्राननी ॥१२॥ गिरिराज प्रसूर्भूरि दिव्यौषधि निधिसृती पारदी पारद मयी पर्भा नारदी

भृंगा मकरंद मना... पत्रा त्रात्र पत्रनी सु गोदंती सुकामा काम कानना त्रयाम्बुती ॥ कामारवी नंदनंदी नंदयाम
महीधरा नंदीश्वर संयुता दहन सानुधृध्रुती ॥ लोहार्गल प्रदाकारा कोकिली भांडीर कुश कौशला कोकिल मयी रत्न
रंजनीस्मृती ॥ १३ ॥ काश्मीर वसना दत्ता वर्हिया दीर्घेण पुरी शूरसेन पुरांधिका नानारत्न रंजिता ॥ नानारत्न समोज्व-
ला नानामर्म सोभा त्राढ्य नारीनरी कदंबाढ्यरंगा सवरोग भंजिता ॥ ललिता रत्न निलया स्त्रीरत्नरंग भूषाढ्या राज्यवि-
द्या राजगुह्या रंगिनी सु गंजिता ॥ जगात्कीर्ति घना घना नानाजल समन्विता रंगमही रुहरूपा त्रंगासु प्रभंजिता ॥
१४ ॥ चंटा विलोल ताम्बाल स्नानाढ्यवसनधरा त्रारक्त चरनासु त्रीनगरा सु कुंतला ॥ कज्जलाक्षा कज्जल चलित त्रंजना
सुजान श्रीखंड मंडिता वरकुशला कुशांतला ॥ पाढीर कन कामनी जटाभासि रुचावरा त्रगार गुरु गंधाक्षा शांतिमयी कुंत-
ला ॥ तालपत्र सिंदूर सुरुचिर गंधतैल कुं तातालि पातिव्रत पारायण सु संकुला ॥ १५ ॥ सूर्य्यप्रभा सूर्य्यकन्या सूर्य्यदेह समुद्भ-
वा कोटि सूर्य्य प्रतीकाशा संज्ञाश्रित मारुता ॥ सूर्य नंदिनी रविजा संज्ञामोद प्रदायिनी संज्ञासुता स्वेछायानैश्चरानुजाधी धृता ॥
चंद्रवंशा विवर्द्धनी सावरार्य नुभवावीरा कीलासौख्य दायिनी सुचडवा महद्धिता ॥ संज्ञापुत्री स्वरुच्छाया चंद्रावलि चंड-
लेख्या तापकारनी नयनी चंद्रकांतिका स्मृता ॥ १६ ॥ त्रनुगा भैरवा थूला चंद्रवंशा वधूचंद्रा चंद्रावलि सिंहायिनी भारीयामि
पिंगला ॥ लीलावती सधीनिश्री गंधारी देव गंधारी टोड़ी त्रासावरी त्रंधकारी गौरी मंगला ॥ गुर्जरी विचित्रा जयकारनी
वैरारी नाम स्वर्मरिण गुरण वर्द्धिनी तैलंगी तालिका मला ॥ व्रजमलारी रागिनी वैशाखी त्रचला चारु तालस्व रानागा ॥

क्रियामान कारिका भला॥१७॥ गौर बाटिका कल्यानी चतुश्चंद कलाहेरी विजयावती कुमारी सोरठी विहागरी॥ जलधारिका घ-
टासुगौड़ औकल्याण मिली कामाकरु कमनीया शीसुराट घूंधरी॥ मंदारिका काम रूपिणी सुरास संजीवनि हेला चंद्री
कामधेनु विभासी सुसागरी॥ मारुती सारंगी होटा कामबादिनी सुजान काम लता सुधारास मंडली उजागरी॥१८॥ क-
ल्पवृक्षस्थली स्थूला सुधासौधनिवासिनी सुभूकाम प्रदाशृंगा यष्टिद्वार पालिका॥ शृंगार प्रकारश्वच्छ शृंगोपकरका प्रे
ष्यागोवर्द्धन तटीभवा विरजाप्रनालिका॥ ललिता विशाखा रामा कुंजपुंजा भृन्निकुंज सुमुखी पार्षदा एका सखी शुक्ला
कालिका॥ मधुमाधवा अनका वृंदावन पालिका सुगुजा भरण भूषिता शुक्ला हरितालिका॥१९॥ श्रुतिरूपा ऋषि रूपा-
सखी मध्या महामना यज्ञसीता पुलिंदिका अजित्यदा श्रिता॥ श्वेतदीप सखी रमा वैकुंठ वासिनी जना अवध निवासिनी
अदिव्या दिव्या देवता॥ मैथिला कौशला दिव्य अंगा नाग कन्यका॥ सुभूमिगोपी देवनारी परा औषधिलता॥
जालंधरी वर्हिष्मती दिव्यांवरा अप्सरा सुतौतला श्रीसखी सागरोद्भवा महीधृता॥२०॥ परंधाम परब्रह्म ऊ-
र्ध्व गऊलोक वाशी श्रीलोक अचल वासी प्रवृत्ती गुणाकरी॥ श्रीसखी समुद्र उद्भवा तटस्था पौरुषीसु व्याप्ता-
तीनि गुण वृति गीता गुणाभा करी॥ गुणा गुण मयी दृष्ट्या गुणभू सदृश माला महत्तत्त्व अहंकारी मनो
बुद्धि नागरी॥ पृथु प्रवर्त्त तादृष्टि चेतो वृत्ति स्वांतरात्मा चतुर्व्यूह चतुर्मूर्त्ति रसा चतुराक्षरी॥२१॥ व्योम वारिदा
जला चतुर्धास्पर्श गंधरुप महीशब्द कर्ममई द्विधा औ अनेकधा॥ कर्मइंद्री ज्ञानइंद्री ज्ञानात्रिधा अधिदैवा

अध्यात्म कारास्वधा ॥ ज्ञानशक्ति क्रियाशक्ति सर्वदेव अधिदेव विराट मूर्त्ति वेद मूर्त्ति
धारणा मयीसुधा ॥ धारणा संहिता गर्ग पाराशरी पर्महंसी याज्ञवल्की भागवती सु वाशिष्ठिका मिधा ॥ २२ ॥
रामायण मयीरम्या पुराणं पुरुष प्रिया पुरायंगा पुराणमूर्त्ति भागवत अर्चिता ॥ धिषणा मनीषा बुद्धि वाणी
धीषे मुखेमती साम मूर्त्ति महान्नता विधातृका शोभिता ॥ गायत्री सावित्री वेद पार्वती ब्रह्माणी दुर्गा सत्या
चंडिकां विकापर्नाशिनी जगद्धिता ॥ तत्या ब्रह्म लक्षणा सु आर्या दाक्षी दाक्षायनी दक्षयज्ञ घातनी पुलोम
जा सचीहिता ॥ २३ ॥ वायुना धारनी धन्यादेव देव वरार्चिता यमानुजा संयम नाता सूर संयुता ॥ संगाछाया
पुरत्प्रभा रत्नदेवी रत्नवृंदा वायवीसु वेगमा इंद्राणी रम्या विश्रुता ॥ रुचिप्रशा तिक्ष मासी भादया वक्षद्युति
स्त्रिया तलतुष्टि विभापुष्टि सुसंतुष्टि औहृता ॥ चतुर्भुजा चारुनेत्रा तुष्टि भाव नाष्ट भुजा शंख हस्ता पद्महस्ता
द्विभुजा वलास्मृता ॥ २४ ॥ चक्रहस्ता गदाधरा गरुडारूढा रथस्या वंशीधरा कृष्ण वेषा कृष्ण हृदयस्थिता ॥ शृंगी
वनमालिनी निषंग धारनी सुभटा चर्मखड्ग धनुर्धरा योधी दैत्यराट जिता ॥ धनुशब्द कारिणी किरीट धारिणी सु-
याना मंद मंद गतिर्गतातन्वी करुणायुता ॥ भैष्मी भीष्म सुता भीमा चंद्र कोटि प्रतीकाशा सत्यभामा जामवंती कृ-
ष्णरूपिनी स्मृता ॥ २५ ॥ सत्या भद्रा सुदक्षिणा मित्रवृंदा सखीवृंदा वृंदावन ध्वजोर्द्धगा रुक्मिनी औ लक्ष्मणा ॥ तिति
खे छास्मृति स्पर्द्धा स्वधास्पर्धा स्वनिर्वृत्ति ईर्षा तिष्णा प्रीति हिंसा शृंग भूप चक्षणा ॥ शृंगदाखु गासु शृंगा कारणी

शृंगार कृषी आमा निद्रा योगनिद्रा माताल्लमा लक्षणा ॥ योगिनी प्रतिष्ठा निष्ठा योगदा युता सुमती उत्तमा
प्रकृती सत्व सात्विकी विलक्षणा ॥ २६ ॥ तमः प्रकृति दुर्मर्षा रजः प्रकृति रंजंती क्रिया क्रिया कृति र्म्लानि
वृषा औ अध्यात्मकी वृत्तिसेवा सिखामणी आहुती सुमती द्युती रज्जु द्युम्नी षट वर्गा संहति सु आत्मिकी
उक्ति प्रोक्ति देशभाषा पिंगलो द्भवा प्रकृति नागभूषा नगभूषा नागा परमात्मिकी नौ नौ काभा व्याभवनाभव
समुद्र सेतुका नगरी नागरी सौख्य दायिनी सभात्मिकी ॥ २७ ॥ मनोमयी दारु मयी सैकती सिकता मयी लेख्या
लेपगमनी मयी प्रतिमा नीरांजनी ॥ शैली शील भवाशीला शील रामा चला चला अस्थिता सुस्थिता शूली
हेम निर्मिता मनी ॥ वैदिकी तांत्रिकी संध्या संध्यकाशा विधिवेद संधि सुधामयी प्रह्वी वेणु वादिनी ॥ सूक्ष्मा
जाव कलाकृती महा विद्या आत्मभूता शिखा मेध्या भाविता सु कंदली सायतनी ॥ २८ ॥ विपुला प्रतिष्ठा पू-
जा कार्य साधनी पुनंति शुक्ल शक्ति मौक्तिका भवेणी परमेश्वरी ॥ कंज कर्णिका प्रतीति विराजोष निक्
विराट वेणुका आवर्त्तनी सुवारता प्रदेश्वरी ॥ वर्त्ता वार्त्त विमानमा राशि रोषिनी रासाढ्य गोपा गोपीश्वरी
गोपी रासमंडलेश्वरी ॥ गोचारनि गोपनदी गोपानुगा गोपवती गोपानंद प्रदायिनी सवरी सरितेश्वरी
२९ ॥ यसेव्यदा गोपसेव्या गोगना वृता गोकोटि गोविंद पद पादुका गौत्तमी सरस्वती ॥ राधावृष भानु
सुता कृष्ण वस कारिनी सु कृष्ण प्राणा धिका गंगा रसिका वृहद्मती ॥ अवटोदा ताम्र पर्णी कृत माला

विहायसा दक्षिणगा अग्निरथी तापीरं सगती ॥ तुंगभद्रा चंद्रभागा सहाय्यका वज्रवती ऋषिकुल्याक कुब्जनीको-
शिकी महामती ॥ ३० ॥ गोदावरी रत्नमाला वानगंगा मंदाकिनी सिन्धुसिद्धिका सुवेला स्वर्नदी सुहावनी ॥ गोपी
गोपवंदिताब्जबालबिषाणपदी प्रोच्या सिंधुसिंधु संगिता समुद्रा रत्न दाधुनी ॥ भागीरथीस्वर्धुनीभू श्रीबामन पदच्यु-
ता वैषाद्री सु मंगला यनारमा मुनीगुनी ॥ लक्ष्मी विष्णु वल्लभा भाव्यसीता जानकी अर्चिभार्गवी कलंक रहि-
ता ध्वजाधरा पुनी ॥ ३१ ॥ कृष्णापार पद्म भूता कलामाता विश्व धरा त्रीनपथ गामिनी धरा अनंता औषिरा ॥
भूमिधात्रि क्षमापयी धरिनी धरित्री उर्वीशेष फनास्थिता सर्वी कोशिली श्री मथुरा ॥ राघव पुरी अयोध्या र-
घुवंश जासु जान पदवी माथुरी पंथाध्रुव पूजिता गिरा ॥ मायपु बिल्वनी लक्ष्मा गंगाद्वार बिनिर्गता कृष्ण वर्त्तमयी
श्रीव्या काशी शेवा अंगिरा ॥ ३२ ॥ बिंध्या शिवपुरी शिवा बारानसी देवपुरी ध्रुव मंडले गता अवंतिका कुशस्थली
उज्जयनी प्रोज्वल महापुरी आकुशा भूता द्वारावती द्वारकामा महापुरी है भली ॥ सप्तपुरी नंदिग्राम थलस्थिता ।
शालिग्राम शिला श्री अदित्या याम शंभलाख्य आवली ॥ वंशगोपालनी सिप्राशक्र पस्थ गामिनी मुहरि मं-
दिरवर्त्तनी गजाह्व पी शाकली ॥ ३३ ॥ पौष्करी पुष्करी पसदाडिमी सैंधवीजंबू कुरुजांगल मुकाली मद्रदीश
हारनी ॥ नैमिषी सपेद कोल धारिनाख्य सर्वतीर्थ मयी तीर्थाहै मवत्या बुधा अघ्रिचारनी ॥ उत्पल आवर्त्त
गता हाषिनी संपदा सर्वकील क्षेत्र विदिता तिथीन तीर्थ कारनी ॥ गर्भबास कृंतिनी गोलोकधाम धर्मनी सुराज्ञ

बर्द्धनी सुसाक्षात् सर्वपुन्य धारनी ॥ ३४ ॥ सर्वोत्तमा कुंज ओनिकुंज मईनी सुजान सब तीर्थ अधिदेव नाना॰ निमिषाद्दना ॥ सुभगासर्व सौंदर्य्य शृंगला महात्मिका सुसर्व तीर्थ ऊपर गना सुपावनी द्दना ॥ महारूपा महा पुरुषा सर्वोत्तमा हंससुना कृष्णप्रिया सर्वपुरा सुंदरी जगद्दना ॥ कालिंदी सहसनाम भाख्यो भूमिबुद्धि धाम देतअर्थ धर्मकाम मोक्ष विश्व विश्रुना ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ एकबार जौं पढ़ै निसि होइ चोर भयनाहिं ॥ दोय बार॰ इहिपढ़ै मगडा कूहतै नानाहि ॥ ५२ ॥ हितियातें पुनिबासी नांई ॥ पढ़ै मनुज दसबार सदांई ॥ रोग नसय बंधन॰ सब जाई ॥ तनय होइ विद्या सरसाई ॥ मोहन बसीकरन उच्चाटन ॥ सोषन दीपन थंभंन घातन ॥ उन्मादन ताप॰ ननिधि दर्शन ॥ होत सकल चिंते आकर्षन ॥ द्विज द्युतिवान छत्र नृपहोई ॥ वैश्य धनी अपरन सुख सोई ॥ नित शतबार पढ़ै इक संवत ॥ पद्मति पटल कवच तव विधिवत ॥ सप्तदीप कर होइ महीपा ॥ जोनिष्काम पढ़ै कुलदीपा ॥ ॥ जीवन मुक्त सुहात करसोई ॥ तासम नहिं महिके मधिकोई ॥ दोहा ॥ जहं निकुंज यमुनापुलिन द्दावन गिरिराज ॥ गऊलोक सो जातहै सत्य मनुज सिरताज ॥ ५३ ॥ मुनि पंचांग मुदित मांधाता ॥ वंदि अयो॰ ध्या गेनरत्राता ॥ यह हम गोपी चरित सुनायो ॥ पाप हरण सु पुरण्य प्रदगायो ॥ कह मुनिहो अबहरि रंगाचे तव विदेह बहुलाश्व उचाचे ॥ तवमुख सुना कथा गोपिनकी ॥ हरि प्रियलोक लाज गोपिनकी ॥ यह पंचांग सुना सुखदाई ॥ सबल कृष्ण प्रभुगोपुरराई ॥ आगे करत भए कह लीला ॥ सुनिबोले विधिसुवनसुशीला ।

दूसरो खेलन साथा ॥ वट भांडीर निकट नरनाथा ॥ खेलत रहे सुखेल सुहायो ॥ निज निज पालाप-
रम बनायो ॥ दोहा ॥ खेलैलो नचढ़ावई जीतेसो असवार ॥ जबलौं हदनहिं जायसो तबलौं नाहिं निहार ॥ ५३ ॥
तहाँ पठयो कंशकी चनिके ग्वाल प्रलंब ॥ खेलत मोसो कंधलै चलो बलहि अतिलंब ॥ ५४ ॥ कबित्त ॥ धर-
नी धरन हारे शत्रुके दलन हारे ताकहं उठायो देखो कैसो बड़ो वीरसो ॥ कज्जल पहार पै द्विजेश विराजमान
लोहा दृढ़ा ऊपर जटित नगहीरसो ॥ जान्यो बलदेव भेव तान्योकर मूकाबाध सीसमध्य मार्यो सो अनार
माहि नीरसो ॥ लंबाभो प्रलंबा भूमिप्रान अवलंबा बिनफूटगो कपार जैसे फूटसु समीरसो ॥ दोहा ॥ तासु
ज्योति बलदेव महं लीनभई तेहिकाल ॥ अमर करत भे सुमन झरि जयजय शब्द रसाल ॥ ५५ ॥ कहा
सुनन चाहत अबभूपा ॥ सुनिबोले नृप प्रेम सरूपा ॥ कौन असुर यह पूरब रहेऊ ॥ केहि हितमुक्त हलीति
लहेऊ ॥ नव मुनि नारद बचन सुनायो ॥ उपवन एक कुबेर लगायो ॥ ताके फूल पत्र फल जेते ॥ एक देव
पूजाहित तेते ॥ कहेउकि जोयाते कछु लैहै ॥ आसु अवश्य असुर सोहवै है ॥ राजराज इहि भांति बखानी ॥
यतन सहित राख्यो सबज्ञानी ॥ ॥ दूइ तनय बिजय गंधर्वा ॥ इक दिनसो आयो तेहि पर्वा ॥ विद्या मद
सो गावत ज्ञाना ॥ नहँने तोरयो सुमन अजाना ॥ दोहा ॥ लगोशापको दापतेहि भो बहुव्याकुल आप ॥ पुनि
सब शाप हवाल सुनि लग्यो तापको बाप ॥ ५६ ॥ तब कुबेरके शरण गयोसो ॥ निज अजान पन कहत भयो

सो ॥ बोलेहँसि तुमहीदासा ॥ सोचपोचत्यागहु गुनरासा ॥ द्वापर मुक्ति होइ बलकरतें ॥ हलधर खलदल दलबल करतें ॥ सोइ प्रलंब मुक्ति बरपाई ॥ अबहरि चरित सुनहु नरराई ॥ सबन सहित इक दिवस मुरारी ॥ गए महद्वन सघन निहारी ॥ मुंजपुंज मह लागेउ दावा ॥ प्रलय समान दसहु दिसि छावा ॥ व्याकुल भए गोप शिशुझारी ॥ त्राहि कहहिं कोउ रोवहि भारी ॥ कितनन तें नहिं कढ़तव कारी ॥ तवदृग मूदहु कहेउ वकारी ॥ दोहा ॥ सुनिग्वालन तें सइ कियो पियो अग्नि भगवान ॥ जिमि सिसु शीतल पय पिवै हरषे ग्वाल सुजान ॥ ५७ ॥ तबतिन्ह सहित कृष्ण छवि छाए ॥ यमुन पुलिन अशोक वन आए ॥ भूखे सकल गोपतेहि काला ॥ कहेउ कि प्रान जात नंदलाला हरि सिखाय मधुपुरी पठायो ॥ जहँ अंगिर सुयज्ञ सरसायो ॥ द्विजन वंदि बोले यह ग्वाला ॥ इतखेलत आए गोपाला ॥ हम हन सहित क्षुधित गिरिधारी ॥ भोजन देहु विप्र मखकारी ॥ सुनि जवाब नहिं विप्रन दीन्हा ॥ तिन्ह पुनि प्रभुते विनती कीन्हा ॥ तिन्हन दीन्ह तुमकह कछु मोहन ॥ नहि यह नंदराय को गोहन ॥ गुनि मुकुंद पुनि वचन प्रकासा ॥ अब मागहुं द्विज नारिन पासा ॥ दोहा ॥ चौवे त्रिय ढिग जाइकै भाषेउ सीस नवाइ ॥ खेलत आए कृष्ण इत संग ग्वाल समुदाय ॥ ५८ ॥ तिन्हकहँ लगी भूख अति भारी ॥ सुनित्रिय सारी भरिभरि थारी ॥ चलीं भली विधि भोग सवाँरी ॥ बढ़ीलालसा दरसन केरी ॥ देख्यौ हरिहि खरी सबघेरी ॥ धरिधरि थार भरे नगदाना तब यह तिनहि कहेउ भगवाना ॥ तुमसम भक्त अहै नहिं कोई ॥ भवन जाहु पति भयनहिं होई ॥ तुमसंग तें ते

सब भरता ॥ गऊ लोक जैहै मुद करता ॥ इमि कहिकै हरि खायो सोई ॥ तेगृह गई विदा कहँ होई ॥ तिन्ह सब
कह तिनके पतिजेते ॥ वंदत भे बखान करितेते ॥ दोहा ॥ यज्ञ किए यज्ञेश ढिग गएनते नरराय ॥ आयो अहि नहिं
पूजई बाँवी पूजन जाय ॥ ५९ ॥ सवैया ॥ जब ब्रह्मको जानानही पंडित भयातो क्याभया ॥ जब बात को बूझानही
कुछ कहदियातो क्याभया ॥ जब रागको चीन्हा नहीं गानी भयातो क्याभया ॥ जब कृष्णको ध्यायानहीं ज्ञानी
भयातो क्याभया ॥ दोहा ॥ सबन समेत गोपाल तब आए अपने धाम ॥ और सुनहु इतिहास अब जनक महा
मतिधाम ॥ सोरठा ॥ एकदिवस नंदराज व्रत करि एकादसीको ॥ गेनहान के काज निशाशेष यमुना सरित ॥ ६० ॥
बरुन दूत नंदहि गहिलीन्हा ॥ स्वामिहि सौंपिजाइ सोदीन्हा ॥ भयो कोलाहल नंदहिराने ॥ तबहरि यमुना माहि
समाने ॥ परम कोप प्रभुकोप तहाँहीं ॥ लगी आग पानीके माहीं ॥ देख्यो हरिहि तेजकी रासी ॥ नौमि जोरिकर बो-
लेउ पासी ॥ नमो कृष्ण परिपूरन स्वामी ॥ अमित अंडपति अंतरजामी ॥ चारव्यूहपति सर्वाभासा ॥ शिवविधि
वंदित स्वयं प्रकासा ॥ कोउ नोकर मम मूरख भारी ॥ कीन्ह अवज्ञा क्षमहु मुरारी ॥ मैतवशरन दयानिधि लीन्हा
इमिकहि बहुविधि पूजन कीन्हा ॥ दोहा ॥ विदाहोय के बरुनते संगलिए निज बाप ॥ ब्रजआए आनँदमय ता
न्यौसबन प्रताप ॥ ६१ ॥ गोपन तबै कृष्णते भाषा ॥ हम तवपुर दरशन अभिलाषा ॥ दृग मूंदहु भगवान बखाना ॥
कैसी सबनकीन्ह नरत्राना ॥ खोलि आँख वैकुंठ निहारा ॥ जहँ सहस्र भुजके सरदारा ॥ उच्च कनक आसन ॥

आसीना ॥ सेवहिं ब्रह्म शिवादि प्रवीना ॥ ठाढ़े श्रुति भुज सुर समुदाई ॥ अतिशोभा कछु कही न जाई ॥ गोपन
कहलषि चौकीदारा ॥ बरेखरे रहु बचन उचारा ॥ करहु दंडवत बकहुन नेको ॥ तकहु चरन अरु ध्याननने
को ॥ तुम गँवार वैकुंठ न देखा ॥ नईसाध पशपालक भेषा ॥ दोहा ॥ तेसव तैसेइ भेखरे सभय कहत कछु नाहिं
जिमिनव खगन पकरि धर्यौ कनक पींजरा माहिं ॥ ६२ ॥ भेकुंठित वैकुंठहि आई ॥ याते भलो अहै ब्रजभाई ॥
यह विचारते मनमह ल्याए ॥ कहा कृष्ण भाषहि घबराए ॥ तुरतहि तिन सह हरि छवि छाए ॥ आए ब्रजको
भेदन पाए ॥ इकदिन नंदादिक ब्रजवासी ॥ गए अंबिका वन छवि रासी ॥ भद्रकालि पशु पति कह पूजी ॥
रहे रातिउर आनंद पूजी ॥ अहिइक आइ नंदपग गहेऊ ॥ व्याकुल कृष्ण कृष्ण यह कहेऊ ॥ वातीलै धाए
सब देखा ॥ कृष्ण आइ अजगरहि परेषा ॥ मारेउ चरन मरेउ सो अजगर ॥ तुरतहि भयो चारु विद्याधर ॥ दो॰
हाथ जोरि पग वंदिकै बोलेउ गिराललाम ॥ विद्याधर मैं रूपनिधि अहौसुंदर सतनाम ॥ ६३ ॥ अष्टावक्रहि
लखिकै हँसेऊ ॥ शापदीन मुनिसोइ अघ फसेऊ ॥ ढेढ़े अंगन भयद भुजंगा ॥ तवप्रताप गति लहेउ अभंगा ॥
देखि चरन युग पंकज वरना ॥ भयो मुक्ति मैं गहितव शरना ॥ जयजय दीनबंधु करतारा ॥ मैंतुम कहं वंदत व-
हुवारा ॥ इमिकहि गो सो वैष्णव लोका ॥ जहँ मनेक दुख सवसुख ओका ॥ सवन समेत नंदब्रज आए ॥ क-
हत कृष्ण गुण आनंद छाए ॥ औरकथा अवसुनहु महीपा ॥ विहरत विपिन गोपकुलदीपा ॥ चोरसाहुकी

[illegible] बल मोहि न मिलि आँखि मुँदउ बल ॥ दोहा ॥ [illegible] मातुल प्रेरित आइ ॥ पकरि पकरि
ग्वालन धर्यौ गुफा माहिं नरराइ ॥ ऊपर राख्यौ शिला महाना ॥ व्यौमहि कृष्ण आसु अनुमाना ॥ कोपि प्रबल पट-
केउ महि माहीं ॥ प्रान रहा छनहू तन नाहीं ॥ तासु ज्योति हरि मध्य सुहाई ॥ घनमह यथा बलाका जाई ॥ मारि व्यौ
म कहँ करि गुन तासू ॥ काढेउ कृष्ण गुवालन आँसू ॥ तब यह प्रश्न कीन्ह छिति रवना ॥ पूरब रह्यौ असुर यह कवना ॥
जो माधव मुख मध्य समायो ॥ सुनिके नारद वचन सुनायो ॥ काशी भूप भीमरथ नामा ॥ बैष्णव दानी मखी ल-
लामा ॥ सुतहि राज दै मल यहि जाई ॥ संवत लक्ष कीन्ह तप भाई ॥ दोहा ॥ ताके आश्रम मह गये शिष्य न सहित पु-
लस्त ॥ नयो न अरु पूजो नहीं तप मद ग्रस्त सुमस्त ॥ ६५ ॥ दैत्य होहु ऋषि सरुष बखाना ॥ परेउ चरन तब नर
कुल त्राना ॥ कह मुनि आनि दया मन माहीं ॥ द्वापर मह अस्थान जहाँहीं ॥ मुक्ति होइ है संशय नाहीं ॥ सोई
भो अरु मर्यौ तहाँहीं कथा सुनहु अरु नृपति सुजाना ॥ एक दिवस ब्रजमह बलवाना ॥ वृषवपु अरि अरिष्ट
चलि आयो ॥ गर्जत पगतें धरणि कपायो ॥ चलेउ बवंडर खग मृग भागे ॥ गे जगदीश वृषभ के आगे ॥ सींग
पकरि के ठेल्यौ पीछे ॥ सोउ उरित भयो विधि आछे ॥ पूँछ पकरि पटका हरि कैसे ॥ लघुक मंडलहि अर्भक जैसे
दोहा ॥ उठेउ अरिष्ट गरिष्ट अति परम वरिष्ट अरिष्ट ॥ शिला उठायो सींगतें दानव मध्य बलिष्ट ॥ ६६ ॥ बैल
शैल हरि ऊपर डारो ॥ तापर फेरि कृष्ण सोइ मारो ॥ तातें व्याकुल ह्वै अति डकरो ॥ मारत सींग भूमि जल निकरो

पुनिप्रभुतेहि फिरायकै पटक्यौ ॥ कढ़िकै प्रानव्यौम दिसि सटक्यौ ॥ तुरतहि वृषभ विप्र वपु धरिकै ॥ कृष्णहि कहत वंदना करिकै ॥ शिष्य वृहस्पति के हमसाँई ॥ वैठे गुरु ढिगपग फैलाई ॥ गुरुतव कहा वैलसम अहई ॥ ताते आसु वैल वपु लहई ॥ वंदिदेस महँ वृषभ भयोहै ॥ तहाँ असुरके संग ठयोहै ॥ वृषते असुर भयोमैस्वामी ॥ अव तव कृपा परम गति पामी ॥ दोहा ॥ श्रीगोविंद प्रणतार्त्तिहर वासुदेव भगवान ॥ कृष्ण तुम्है वंदत अहै कृपा करहु सज्ञान ॥ ६७ ॥ सवैया ॥ इमिभाषत आसप्रकासत सो यदुनायक के वरधाम गयो ॥ सुरग्वालन ने नंदलालन कौं कहि धन्य सुजान निसान हयो ॥ महिपाल सुनो यह प्रेमभरो वरमाधुरी खंड समाप्त भयो ॥ पढ़िकै सुनिकै गुनिकै यह कोन कोमन होत अनंद भयो ॥ दोहा ॥ जेहि सुमिरे भय भगतहैं खंडहोत पाखंड ॥ अमित अंड मंडल करन दलन विश्व अघचंड ॥ नगवर धर जगमग वदन नगवर मुकुट जराव ॥ जगदुख हरसुख कर परम सजग सुचित यदुराव ॥ सोरठा कृष्ण कृष्ण जपि नाम माधुरि खंड समाप्त किय ॥ तिन्हकह कोटि प्रनाम जेवैठे मेरेसु हिय ॥ ६८ ॥ ॥ इति श्री भाषा प्रकासे कृष्ण प्रिये गिरधरदास विरचितेप्रेम पथ रचिते गर्ग संहितायां चतुर्थ माधुर्य्य खंडं समाप्तम् शुभमस्तु सिद्धिरस्तु श्रीराधाकृष्णाय नमोनमः

श्रीगणेशायनमः श्रीमद्गिरधरो जयति ॥ अथ मथुरा खण्ड लिख्यते ॥ सोरठा ॥ विरचित कीटिन [illegible]
हरन ॥ बरनत मथुरा खंड बंदिदेव गुरुगिरि धरन ॥ दोहा ॥ देवदेव बसुदेव सुत दलन कंस चाणूर ॥ देवकि आनंद पद प्रभु
बंदे प्रिय अक्रूर ॥ चौपाई ॥ पुनि महीप इमि कहेउ प्रबीना ॥ मथुरा माहिं कृष्ण कहं कीना ॥ किमि मार्यो कंसहि भगवा
ना ॥ बेद बदन सुत बचन बखाना ॥ एक दिवस हम हरिके प्रेरे ॥ मथुरा गये कंस के नेरे ॥ देखत भये समेत समाजा ॥
शक्रसिंहासन राजत राजा ॥ परम भयंकर कह्यौ न जाई ॥ मोहिं लखि सो अति कीन्ह पुजाई ॥ बैठे हम तिन मोते पूंछा ॥
मैं तेहि कहा जानमति छूंछा ॥ बसु सुर सुवन कृष्ण बलदेवा ॥ देवकि रोहिणि ते यह भेवा ॥ तब भयसुतहि नंद कहँ दी-
न्हा ॥ सो निज करिकै बिश्रुत कीन्हा ॥ दोहा ॥ पूतनादि मारे सकल असुरन हे छितिपाल ॥ सोई तुम कहँ मारिहैं नेकु
न चीन्हत काल ॥ १ ॥ सौरि हतन हित कैसे रिसाना ॥ चलेउ क्रोध बश काढ़ि कृपाना ॥ हम निवारिकै भवन सिधाये ॥ कं-
स कैद महँ तिन्हहि नवायो ॥ रामकृष्ण मारन के काजा ॥ केशी कहँ पठयो यदुराजा ॥ चाणूरादिक कहँ बुलवाई ॥ कहत
कंस उरगंस बढ़ाई ॥ सुनहु सकल नारद निरधारे ॥ रामकृष्ण हैं काल हमारे ॥ आवहिं इतत तव तुम सब भाई ॥ मारेहु क-
रिकै कुटिल उपाई ॥ रंगद्वार पर राखेहु नागा ॥ रहैं सुभट सब रिपु त्रिन आगा ॥ चौदशि दिवस धनुष मख होई ॥ मल्ल
समर अम्मावस सोई ॥ दोहा ॥ इमि कहि मंदिर जाइकै अक्रूरहि बुलवाइ ॥ सादर ढिग बैठाइ कै कहत भोज कुलराइ
२ ॥ हे मंत्री मम हित अन सरहू ॥ प्रात जाइ ब्रज कारज करहू ॥ तहँ है सौरि सुवन मम काला ॥ अहैं कह्यौ यह नारद

हाला ॥ रंगभूमि बिरतांत सुनावो ॥ तिन सह सब गोपन लै आवो ॥ गज अरु मल्लनतें मरवैहैं ॥ पुनि नंदहि यम लोक पठैहैं ॥ वृषभ पतंग नंद उपनंदा ॥ देवक सूर शौरि मति मंदा ॥ उग्रसेन खल जन कहं मारा ॥ करिहौं यदु कुल कर संहारा ॥ एसब सुर मम रिपुहैं भाई ॥ शकुनि दैत्य ममहित अधिकाई ॥ वृक शंबर सं मूत संताप न ॥ काल नाभ मह नाम महाप्रन ॥ दोहा ॥ हरिश्म श्रुवा नरद्विविद एमम मित्र महान ॥ जरासंध मेरो स्वसुर परम बीर बलवान ॥ ३ ॥ बान नरक अति मित्र हमारे ॥ जिन रन माँह पुरंदर हारे ॥ धनदहि मेरु गुफा महँ नाई ॥ लै धनुराज करौं गो भाई ॥ तुम अति कवि गुनवान सुजाना ॥ लावहु रिपु यह काज महाना ॥ सुनि सुफलक सुत बोले बानी ॥ दुर्लभ यह मनोर्थ तवज्ञानी ॥ हरि इच्छाते होइहि पारा ॥ सुनत सकोप कंस उच्चारा ॥ जे रोगी तें ऐसेइ कहहीं ॥ होइहि सोई हरिजो चहहीं ॥ मेरो सिद्ध मनोरथ होई ॥ हमन आलसी निश्चै सोई ॥ इमि कहि कछुक कोप उरधारी ॥ कीन्ह भवन महँ गवन सुरारी ॥ दोहा ॥ इतकेशी हयरूप खल परम चंड अति जोर ॥ वृंदाबन महँ जाइकै गरजेउ कुटिल कठोर ॥ ४ ॥ टापलगे गिरि गिरहि गरारे ॥ नभ घन सरकहिं पूँछ प्रहारे ॥ देखि भयाकुल सब ब्रज बासी ॥ कृष्ण शरण भे कहत उदासी ॥ अभय तिन्हहि करि कटिपट कसिकै ॥ चले लरन हित केशव रिसिकै ॥ हरिकहँ हरि पश्चिम पद मारो ॥ डगत भूमि नभ मंडल सारो ॥ गहि पद हरि श्रुति कोस समूंचा ॥ फेकेउ बाय कमल समऊंचा ॥ बहुरि आयसो पूछ घमाई ॥

मारेउ हरिहिं असुर रिसि आई ॥ हरिगहि सत्तजोजन नभ ऊपर ॥ तब्यौपुच्छने गिरी समूल ॥ पुनि पुनि ठोक मार्यो भुज-
समसोरा ॥ कालसरिस करालसह जोरा ॥ दो० उठि कै निज मस्तक भयो चालत असुर महान ॥ बात बेगने फूल सरिस म-
हि महँ गिरे बिमान ॥ ५ ॥ छन्द भुजंग प्रयात ॥ महा कोपके मुष्टिका कृष्ण मारो ॥ धरी दैत्य चैने नहीं दैत्य धारो ॥ उ-
ठायो हरीको गयो व्योम धायो ॥ अठीलाख कोसे हदैमें रिसाई ॥ भयो अश्वनें युद्ध आकाश ऐसो ॥ लरे हत हत्रारि
लैकोक जैसो ॥ उठायो घुमायो हयै भूमिनायो ॥ लट्ट्यों कोऊ बालकोदो फिरायो ॥ भुजा कृष्णकी कोप कैसी चबायो
कियोरोध तापेट बीचै बढ़ायो ॥ भयो वंदबाजू महा घब्बरायो ॥ तबैतासुको आसु आस्त्र परायो ॥ दोहा ॥ उदर फाटेभो अ-
असुर तन मुकुट विराजत शीश ॥ बंदि हरिहि भारवत भयो सुनिये श्री जगदीश ॥ ६ ॥ हमत्रानु अनुचर कुमुद सुजाना
ऊब फिरावत जहँ सुरत्राना ॥ हत्यहते हत्याके काजा ॥ बाजि मेध कीनो सुरराजा ॥ हमतब भरव हय लीन्ह चोराई ॥ अ-
तलगयो चढ़ि सभय पराई ॥ मरुतनते पकराइ सुरेशा ॥ दीन्ह शापते होहरि भेशा ॥ द्वैमन्वंतरलौं यहदंसा ॥ अबसो
शाप तुमहिं लखि नासा ॥ दीनदया पालक भगवाना ॥ मोकहँ किंकर करहु अपाना ॥ इमि काहि सोहरिके समरूपा ॥
चढ़िकै चलो बिमान अनूपा ॥ बंदिहरिहि हरि पुरसों गएऊ ॥ कुमुद कुमुद हरिमुख हरि भएऊ ॥ दोहा ॥ कंससुरथ चढ़ि
कै चले गोकुलको अक्रूर ॥ हरिदरसन गुनि मगन मन कौनकहै गति भूर ॥ ७ ॥ पुनि पुनि पुलकत करत बिचार ॥ आज
प्रगट अति सुकृत हमारा ॥ भारत कीन्ह कौन असकरनी ॥ नयन चयन होइहि व्रज धरनी ॥ जिनसे वननीरथ महँ बासा

जाने लरिवहौं रमा निवासा ॥ कौन सुतप हम हरि हित कीन्हा ॥ जो होइहि सुख प्राप्त प्रवीना ॥ जोगिनि कहु दुर्लभ सोइ म·
रशन ॥ होइहि हमहि पदुम पद परसन ॥ सोइ जग जीवन सफल बखाना ॥ जोदरसै परसै भगवाना ॥ जोदरशन करि ५८
पूरिहि स्वारथ ॥ अहो आज हम होब कृतारथ ॥ लोचननें मोचत जलधारा ॥ गोकुल सौंफ कीन्ह पैसारा ॥ दोहा ॥
हरिपद चिन्हित भूमि लखि अंकुश कुलिस समेत ॥ जोइ लेभ ब्रह्मा शिवहि कूदे प्रेम अचेत ॥ सोरठा ॥ लोटन लगे सु-
जान नंदराय ढोटन सुमिरि ॥ करि भव चोटन हान झोटन हरिपद रज मिल्यौ ॥ ८ ॥ छन्द ॥ पुनि सुरथ चढ़ि अतिमगन
मन नंदराज घर चलि आइयो मगमाहिं सखन समेत श्री बलराम कृष्णहि पाइयो ॥ जिमि शरद पावस मेघ हंस मयूर
हीर लसलियो ॥ सुपुराण पुरुष प्रवीन परम परेस की छबि गूनियो ॥ १ ॥ सिर मुकुट अरु लट लटक पटकी चटक मन-
कहँ हरतहैं ॥ नटवर प्रगट घट घट निवासी अधर मुरली धरतहैं ॥ सोनिरखि चाचा प्रेमराचा भईबाचा गदगदी ॥ सद
बिम्ब काँचा कृष्णसाँचा जानिपरसे पदपदी ॥ २ ॥ बीचहि उठाइ लगाइ लीन्हो कंठहरि सनमानिकै ॥ बलदेवतें मिलि नंद
के गृह गए उरसुख मानिकै ॥ उठिनंद सहित अनंद आतुर मिलि कुशल कहँ करतभे ॥ बैठे समेत समाज सिगरे सूलमनको
हरतभे ॥ दोहा ॥ कहत नंद तुमहो कुशल कंस दुष्टके राज ॥ जिन्ह मारे भगिनी सुवन नेकन आईलाज ॥ ९ ॥ हरिलब कह्यो कु-
शल दूत अहई ॥ कहहु कुशल निज जो मोहिं चहई ॥ शौरिकेरि अरु यदुगुन केरी ॥ दसा बतावहु खलकी पेरी ॥ कह्यो अ-
क्रूर सुनहु कल कंसा ॥ शौरि बधन चाल्यो गहि गंसा ॥ नारद तहँ समुझाइ बचायो ॥ कोपिकै दरबारे महँ लायो ॥ यादव जन

तहँ गए परोइ ॥ अरि दसा जिन [illegible] बुलाय [illegible] ॥ यह आभार मारसो भाखे ॥ रस सिगरे गोपा ॥ चलहु काल आनंद अरीपा ॥ सो सुनि नंद चलन अभिलाखे ॥ यह आभार मारसो भाखे ॥ दोहा ॥ हम अरु बर वृषभान बुध सकल नंद उपनंद ॥ षट वृषरबि अरु गोपगन चलहु काल्हि सानंद ॥ १० ॥ गोरस नेक रहै नहिं भाई ॥ राखहु सबको सकट भराई ॥ प्रात मधूपुरी जाइ अखेटा ॥ लैलै चलहिं गोप निज भेटा ॥ इमि कहि सुफलक सुतहि जेवाई ॥ घरघर सैन दीन्ह नंदराई ॥ नंददूत घरघर यह भाखा ॥ सुनि गोपन सोई अभिलाखा ॥ तनक भनक जब अबलन पाई ॥ कहँहि परस्पर जात कन्हाई ॥ बर वृषभान भवन सुनि राधा ॥ परी सोकके सिंधु अगाधा ॥ प्रान नाथ मथुरा पुर जाहीं ॥ मोरे प्रान कि रहइ इहाहीं ॥ चिंतति गिरी अवनि पर कैसे ॥ गिरि परतें मतवाला जैसे ॥ घर घर सब गोपी बिकल परी मारकी मार ॥ यार हमार मुरारि हरि चलन चहत नृपद्वार ॥ ११ ॥ प्रभु गोविंद कृपाल गोपाला ॥ परदुख हरन दीन प्रतिपाला ॥ त्यागि त्यागि गृहके सब काजा ॥ कृष्ण कृष्ण कहि रोवहि राजा ॥ अतिहि क्रूर अक्रूर कहायो ॥ सुफलक सुवन असुफलक जायो ॥ देखहु निरमोही नंदलाला ॥ को जानै सखिताको ख्याला ॥ भीतर औरै ऊपर औरै ॥ देवन जानहि नरइक ठौरै ॥ हाय चलतहू कहान सोई ॥ जीवन बिन किमि जीवन होई ॥ मम नैननतें जीवन जाई ॥ हा अपार यह आपद आई ॥ दोहा ॥ इमि गोपी व्याकुल सकल जान्यौ श्रीभगवान ॥ सोइ रात सबके सदन गए भक्त

सुखदान॥१२॥जेती नारी तिते मुरारी॥घरघरगे समुझावन भारी॥लख्यौ राधिकहि निज गृह मुरछी॥बनशी
श्याम बजायो तिरछी॥चौकि उठी देख्यौ गिरिधारी॥निज लोचन तें मांचत बारी॥ससिहि देखि कुमुदिनि सम
सोई॥आसन दिय गरुडासन जोई॥देखि बदन प्रियके रमलीना॥फिकिर जिकिर कहँ केशव कीना॥हमहिं
जात सुनि तुम दुख कीन्हा॥ताहि तजहु जो संशय लीन्हा॥बिधि बिनये हम तुम भुव आए॥भार उतारन हेत
सुहाए॥तातें हम मथुरा पुर जाई॥ऐहैं करि कारज अधिकाई॥दोहा॥सो सुनिकै अति दुखित ह्वै रहीं भूमि मुर
झाइ॥यथा लुआर प्रहारते महि चंपा ह्वै जाइ॥१३॥कहत बहत दृग महत मलीना॥सुनिय चहत हम जो मत की
ना॥है बियोग तुमरो अति भारी॥सहि रहि सकत न प्रान मुरारी॥तव दुख अग्नि प्रान मम पारा॥उडिजैहैं जोध
रहु पिठारा॥केशव कह्यौ शाप श्रीदामा॥भूलि गई के जानत बामा॥सत संबत मम होइ बियोगा॥नहि संशय
पैबर को योगा॥मास मास प्रति दरशन होई॥यह हम सत्य बखानत सोई॥तब राधा भरि लोचन बारी॥कहत
बचन उर शाप बिचारी॥मास मास प्रति जो नहि ऐहौं॥सत्य न तौ मोहि जीवत पैहौ॥दोहा॥जग भूषण अभिराम
मति विश्व दीप दुखहारि॥यदुनंदन नंद नंद प्रभु सुख सागर भयहारि॥सोरठा॥सुनि राधाके बैन बुद्धि ऐन
राधा रवन॥बोले मोहन बैन सत्य आयहैं हैन छल॥१४॥छन्द॥मोहिं सौंह अहै सुरभी गनकी॥इत आवहिंगे तहतें
झपटी॥दुखकी बड बात अहै बनिता॥त्रिन आग लगे अति ज्यौं दपटी॥ दिनतीस गए घनश्याम प्रभू॥दुख

मै नरको एक बात अहै ॥ तेहि त्यागिदयो तब काह रह्यौ तन चंचल प्रान रहै नरहै ॥ जब बैन गयो तब चैन कहा यह-
तो अतिसार सबेद कहै ॥ जिन झूठ कह्यौ तिन नर्क लह्यौ सुख दूरि बह्यौ नहि शर्म लह्यौ २॥ दोहा ॥ कारन सब
मन को अहै जानहु तुम करि गौर ॥ प्रेमसार संसार को सत्य बिचारन और ॥१॥ । जिमि भांडीर बिपिन के माहीं ॥ भ
यो मनोरथ सकल तहांहीं ॥ तिमिह्वै है संशय नहि करहू ॥ काहे हृदय वृथा दुख धरहू ॥ हम तुम महं जे जानहिं भेदा ।
तिन हिन ते यह बरनत बेदा ॥ होहिं तौन यमके अधिकारी ॥ किहि हित करत सोच अति प्यारी ॥ जिमि रबि रश्मिसिं
धु अरु लहरी ॥ बिलग लए दोउ नाम न बहरी ॥ काल सूत्र सुनरक महं गर्का ॥ तेनि बसहि जबलौं शशि अर्का ॥ इमि
राधादि गोपिकन कहिकै ॥ आए लेन भवन सुख गहिकै ॥ प्रात गोपाल तहां के सगरे ॥ नंदादिक मथुरा दिसि अगरे
दोहा ॥ आगे नंदादिक गये संगलिये सब ग्वाल ॥ पाछे यादव सुरथ पै बल औ श्री गोपाल ॥१६॥ कोटिन गोपी सब
दिसि धाई ॥ करत सोररथ छेकेउ आई ॥ रेरे क्रूर क्रूर यह कहिकै ॥ लीन्हे छेकि महा रिस गहिकै ॥ तजि लाजहि गहि
गहि कर लाठी ॥ मारन लगी सुरथ पर माठी ॥ छोरि हयन कहं दीन्ह भगाई ॥ सूतहि रथतें ऐंचि सुताई ॥ कवित्त ॥ क्रोध
उर पूर पूर दूरजाति भागि गोपी दीन्हो है गिराय भूमि व्याकुल अनूरभो ॥ कंकनतें करतें बिदंतन तें पावनतें घात करें
बातनतें नयन जल पूरभो ॥ जानलै चढाए जान जान चाहै हम जान जान नहि दैहैं देखि मोहिं दुख भूरभो ॥ चूर चूर

करिकै अक्रूर की निकारी धूरि चोढ लागी भरपूर क्रूर मस हूर भो ॥ दोहा ॥ गोपिन कहँ समुझाइ है संध्या ऐहै भाखि ॥ च
ले बायुसम जोति रथ तापर चाचहि राखि ॥ १७ ॥ कवित्त ॥ स्यंदन की ध्वजा प्यारी नारी ते निहारी रही कहत मुरारी
जूहमारी आस पूरहू ॥ वह जात मोकहं लखात दरसात छत्र बातके कहत बात समजात दूरहू ॥ गिरी एक बेर झर
बेर कीसी ढेर झरी टेर कहैं एरी ना दिखात अब धूरहू ॥ रोवत लुगाँई आई भवन नसाँई सारी आय है कन्हाई सांझ
आसलाई भूरहू ॥ १ ॥ दोहा ॥ सुरथ जाइ अक्रूर को रुक्यौ जमुनके तीर ॥ मथुरा को उपबन निरखि उतरे यादव बीर
१८ ॥ यादव दोउन रथ बैठाई ॥ प्रविसे जल महँ ध्यान लगाई ॥ तहँ दोउन कहँ लखि अक्रूरा ॥ बाहर पुनि रथ लख्यौ
सुसूरा ॥ बहुरि धसे जल तहाँ निहारो ॥ सर्प सहस मुख गेडुरि मारो ॥ ताके गोदी गोपर द्युति घन ॥ यमुना गोबर्द्धन
वृंदाबन ॥ अमित कोटि रबि सरिस प्रकासा ॥ तहँ राधा हरि करहिं निवासा ॥ परि पूरन तम पुज्य परेसा ॥ बंदहि
बहुबिधि सेष महेसा ॥ कृष्णहि कृष्ण जानि तेहि काला ॥ देह ते सब संदेह निकाला ॥ धन्य भाग्य गुनि गोदनि
नंदन ॥ बोले करि कृपाल पद बंदन ॥ दोहा ॥ नमो कृष्ण करुनाय तन ओक जासु गोलोक ॥ परिपूरन तम अंड
पति शोक भाँड महँ झोक ॥ १९ ॥ तोमर ॥ श्रीराधिका पति चारु ॥ ब्रजमाहि नित्य बिहारु ॥ श्रीदंद नंद उदार ॥
यसुदा कुमार कुमार ॥ देवक सुता सुत ईश ॥ बसुदेव पुत्रन फीश ॥ गोबिंद जग बिश्राम ॥ यदुनाथ नाथ ललाम ॥
जगदीश पुरुष पुरान ॥ जिहि बदत वेद पुरान ॥ यह देहु मोहिं गुनि दास ॥ तव भक्ति उरकर बास ॥ तव बदन देखैं

नैन॥ पगजाहि तुम्हरे ऐन॥ कर करैं सेवाचारु॥ श्रुतिसुनै सुजस अपारु॥ तव चरन कंज पराग॥ नासा सुधबुधा
ग॥ जेते हमारे अंग॥ तवहेतहे श्रीरंग॥ होवै हमै बरदेहु॥ करिकृपा केशव एहु॥ श्री कृष्ण यह तव नाम॥ मम उर
करहु बिश्राम॥ दोहा॥ कृष्ण कृष्ण रसना रटै घटैन नेकहु प्रीति॥ हटैन मनकी बासना दीजै प्रेम प्रतीत॥ २०॥
इमि अक्रूर जब अस्तुति ठाना॥ भेजलते प्रभु अंतर धाना॥ नौमि हरिहि नित को कृत करिकै॥ स्यंदन बैठि चले
सुख भरिकै॥ पिछले दिवस रहे सो जाना॥ मथुरा उपबन आइ तुलाना॥ उतरे तहाँ गोप समुदाई॥ काकाते भेकह-
त कन्हाई॥ जाहु आप मथुरा रथ लैकै॥ हम ऐहैं सब सँग निरभैकै॥ सुफलक सुत यह बचन प्रकासा॥ कीजै कृ-
पा जानि निज दासा॥ बल बालक नँदराज समेता॥ मम गृह निबसहु कृपा निकेता॥ होइ पबित्र आजु अस्था-
ना॥ सुनिभे कहत बिहसि भगवाना॥ दोहा॥ मारि कंस कहँ आयहौं तव गृह सरवन समेत॥ जाहु जात हम नंद
पहँ अबहीहै कछु हेत॥ २१॥ गे अक्रूर कंसके पासा॥ उपबन आएउ कहेउ खुलासा॥ कंस करत भे आदर भारी
निज गृह गए अक्रूर बिचारी॥ सहित सरोबर बारे बारे॥ कृष्ण नंदतें बचन उचारे॥ हम पुर देखन चाहत ताता॥
लखन भाष्यौ ब्रज त्राता॥ पौऊ धमन करेहु सुनि काना॥ ग्वालन संग चले भगवाना॥ बल मिलि भल बिधि नगर
निहारा॥ रतन रचित राजहि आगारा॥ अमरावती सरिस अस्थाना॥ यमुना महँ मनि केसो पाना॥ सबन सहित
प्रमुदित गिरिधारी॥ राजमार्ग राजे बनवारी॥ दोहा॥ सुनि आए दोउ नंदसुत ब्रज बनिता तजि काज॥ जहाँ तहाँ

देखन चली कहहि सुकृत अति आज ॥ २२ ॥ कबित्त ॥ आँगन कुमार डारे पलँग भतार डारे दूरि व्यवहार डारे सुधि भूली काजकी ॥ हाथमेको हाथमे है मुखमेको मुखमे है थारमेको थारमे है दसायों समाजकी ॥ केतीहैं झरोखे केती महल अनोखे चढी खिरकी मैं गलीमैं बजार ब्रजराजकी ॥ शोभासिंधु आए सुनिधाँई नारि आपगासी लहरदराज मैं जहाज बूडी लाजकी ॥ १ ॥ दोहा ॥ देखिरूप ब्रजकी त्रिया दियतन दसा भुलाइ ॥ बलि मोहन सोहैं लसैं छबि बरनी नहिं जाइ ॥ २३ ॥ तोमर ॥ प्रमुदित लुगाइ ॥ सुखउरन माइ ॥ मोहन निहारि ॥ मोहीं सुनारि ॥ गोविंदरूप अतिही अनूप ॥ लखि मुदित गात ॥ यह कहहिं बात ॥ जहँ रहहि श्याम ॥ सोधन्यठाम ॥ तेधन्य बाम ॥ ब्रज बसहिं गाम ॥ नित लखत नैन ॥ जिन्हके सचैन ॥ जिन जित्यौ मैन ॥ बररूपऐन ॥ इमि सुनत बैन ॥ हरि जगत जैन ॥ तहँके नृनाथ ॥ शिशु लगे साथ ॥ इमि चलेजात ॥ आनँद बिभात ॥ मथुरा गलीन ॥ पूर्यौ अलीन ॥ दोहा ॥ एक रजक देख्यौ तहाँ बोले कृपा निधान ॥ अंबर मोकह देहु कछु सुनि सोकहत रिसान ॥ २४ ॥ सवैआ ॥ पट माँगतहैं भाटसों मुखतें सुरभी कहँ चारि मही अटते ॥ जेहि बाप पिता मह नाहिं लख्यौ नहिं आवत लाज कह्यौ ठटते ॥ पुनि भाषत तौइक धौल लगौ सब पहुति दूरि दुरै नटतें ॥ यदु होइ कहा कोउ भूत लग्यौ सुनतै नृप प्रान हरै घटतें ॥ दोहा ॥ सुनि सकोप भगवान हरि निज कर अग्र प्रहारि ॥ धरतें मस्तक धरायै निधरक धरा उतार ॥ २५ ॥ लीन भयो तहँ धोबी सोबी ग्वालन पीठ दियो द्रुत बोबी ॥ भागि गये अनुचर सब ताके ॥ ग्वाल भए पट लूटत बाके ॥ जिन जो पायो तिन सो

लीना ॥ अस्तव्यस्त तन धारन कीना ॥ नील [illegible] दोऊ ॥ पीर परम कृष्ण यदुराऊ ॥ [illegible]
लपेटा ॥ हरिबल सह गोपन के बेटा ॥ तहँ दरजी हरिकी गुन मरजी ॥ बगा बना यों हरिजन बरजी ॥ सब कहँ शीघ्र
सुखद पहिरायो ॥ सोसमाज सोभा अति पायो ॥ तब हरि ताहि रूप निज दीन्हा ॥ लक्ष्मी दै धनाढ्य बल कीन्हा ॥
दोहा ॥ बंदि चरन भगवानके बानक गो अस्थान ॥ सोभा सागर चलत भे उर आनंद महान ॥ २६ ॥ ग्वालन सहित
सुमन हित हाली ॥ माली भवन गए बनमाली ॥ उठि बंदे दोउ चरन सुदामा ॥ सिंहासन पर धरि बल श्यामा ॥ चौ-
की फूलन केरि बनाई ॥ कहत सुमाली सीस नवाई ॥ धन्य जनम कुल भवन हमारा ॥ पीढ़ी सात भई उद्धारा ॥ मातु
त्रियाकी तितनी पीढ़ी ॥ पुरुषा चढे कृष्ण पुर सीढी ॥ भूमि भारके नासन काजा ॥ ब्रज प्रगटि दोउ यदु सिरताजा ॥
करिसु कृपा मम भवन पधारे ॥ धन्य भाग प्रभु आज हमारे ॥ इमि कहि कुसुम सुभूषन भारे ॥ रचि द्रुत दोउ बल
कृष्ण सिंगारे ॥ दोहा ॥ सब ग्वालन कहँ सजि दयो शोभित तिन्ह महँ श्याम ॥ सुमनस सुमन सनाथ जिमि सानुज
सुमन सुठाम ॥ २७ ॥ हरिमे कहत गरी यसि मेरी ॥ भक्ति होई सायुज्य बडेरी ॥ बलदै श्रीतेहि उठि सह साजा ॥ चले
नगर अवरेखत राजा ॥ मग कुबजा इक चंदन लीन्हे ॥ लखि हरि कह्यौ समुद मनकीने ॥ कोतुम कासु प्रियाकहि
एहू ॥ अंगराग यह मोकहु देहू ॥ तूरन तोर होइ कल्याना ॥ कंस चेरि सुनि बचन बखाना ॥ मैदासी तब कुबजा नाऊं
चंदन नित प्रति नृपहि लगाऊं ॥ पै अब दासी भई तुम्हारी ॥ देखि मनोहर मूरति प्यारी ॥ सबन लगै हौं तुम्हरे काजा

चंदन नँद नंदन ब्रजराजा॥ दोहा॥ जग बंदन कै अंगमै चंदन दीन्ह लगाय॥ परम महीन प्रबीन त्रिय अति सुबास सरसाय॥ जेते बालक संगरहे तेते अरचित देह॥ जानि कृष्ण आनी दया कीन्ह उपाय बिदेह॥ ॥२७॥ कबित्त॥ दोऊ पगएक ढिगताके करि कृपासिंधु तापै श्रीचरन निज धार्यौ भाँति खूबरी॥ थाबिकै चिबुक कर एकराखि पीठपर उझकि अनूप करि दीन्ही महबूबरी॥ माली जैसे लटकती लता को उठाय लेत तैसे बनमाली डालीकीन्हीहै अजूबरी॥ दूबरी मुटाई पाय परशु गुपालजीको रतिके समान रूपमान भई कूबरी॥ सवैया॥ ॥ बलोकति सो अपने तनको नँद कूबर कूबर चोर लयो॥ गठरी सुहरी गठरी मनकी यह अद्भुत तस्कर कर्मठयो तुरतै करथाँबि कह्यौ प्रभुजू अबजात कहाँ हम बाट धयो॥ तनकों मनकों धन चंदन कों हरिजान चहौ हरिसो नभयो॥ दोहा॥ जबऐसे कुबजा कह्यौ करताली दै ग्वाल॥ हसन लगे बलदेव सह सकल कहहिं भलख्याल॥ २८॥ ताते कहत भए भगवाना॥ नहीं नगर मथुरा सम आना॥ लखि शोभा इतकी अतिभारी॥ तब गृह आवत सुन सति नारी॥ चले बहुरि उर आनँद पागे॥ बहुत बैश्य जन देखे आगे॥ पूजि हरिहि दधि अच्छत लाजन॥ बोले सहित समाज महाजन॥ जब प्रभु होइहि राज तुम्हारा॥ जानेहु दास हमन निरधारा॥ बनि कन्ह भक्ति देइ भगवाना॥ कहेउ बताबहु धनु अस्थाना॥ तिनतब सोथल दीन्ह बताई॥ जहाँ धनुष उत्तम सरसाई॥ मथुराबालक मंत्रि कृपाला॥ जाइ लख्यौ को दंड कराला॥ दोहा॥ अष्ट धातु चित्रित बन्यौ चामी [illegible]

भांति धनु सोई ॥ चौदस दिवस सोई सुख होई ॥ पांच सहस भट रक्षहि भारे ॥ तहां आपु श्री कृष्ण पधारे ॥ मग
महं मृगपति सम सरसाई ॥ बासुदेव धनु लीन्ह उठाई ॥ छन्द ॥ धनु लीन्ह मंडन कीन्ह सबकी ओरिवेहि छन
ढपगई ॥ तेहि तानकान प्रमान शब्द महान धरनी कंपगई ॥ दैदूक तुरतहि कीन्ह देखिकै खल मंडली अति
चपगई ॥ त्रैलोक्य कंपा मान सोर महान जिमि तडिलपगई ॥ १ ॥ जिमि चढ़न गज लघु तरनि तिमि महि गि
रन लागे भूधरा ॥ भेबधिर सकल समाज चटिका होय चेतहि नहिं धरा ॥ अहि कंपत कूरम चपत सूकर रहल
पत तिहु पुरडरा ॥ उच्छलत सागर नीर बाढ़ी पीर जग खरभर परा ॥ २ ॥ सोशब्द रूपी बान निकरि कमानते
तिहि कालमैं ॥ धरि गयो कंस कठोर उरमहं भोसभय दुख जालमैं ॥ सिरतें परयो महिकेतु संकठ हेतु लखि
जंजालमैं ॥ भो कंस मोहित मोहि असगुन सम्भ्रम हृदै उतालमैं ॥ ३ ॥ भट चेति पांच सहस्र मारहु धरहु यह
भाषत भए ॥ दोउदूक धनुको कृष्ण बल निज हाथ महं राखत भए ॥ तेसकल धाए शस्त्र धरिबहु शस्त्र कह नाशत
भए ॥ प्रभु प्रतापं अपारतें यमलोक अभिलाषत भए ॥ दोहा ॥ तेहि छन भागे मनुज सब भयो भयंकर सोर ॥ ध
नुटूटो यदुनाथको तोरयो नरकिशोर ॥ संध्या समय निहारिकै ग्वालन सहित गोपाल ॥ नंदरायके दिगगए चलत
सुचाल उताल ॥ ४ ॥ हरिहि देखिकै मथुरा नारी ॥ मुग्धा कहहि विचारि विचारी ॥ याहि देखि मनमोर लुभाना

ग॰सं॰ १७८

किमि पति होइ कहहु सोबाता ॥ मनमन मथत सुमन मथ आली ॥ कुशल नारि कहहि सुनि हाली ॥ हम सब अहहिं प्रमानिक नारी ॥ नहिं मगमहँ छेड़हि अबि चारी ॥ यह सुंदर सब त्रियके काजा ॥ मथुरा जनम लीन ब्रजराजा ॥ एक चहै कै मोरहि होई ॥ अहै बिचार ठीक नहिं सोई ॥ जामहँ सबको होइ गुजारा ॥ सोइ ठीक मति एहु हमारा ॥ कबहु कृपा हमहूं पर करिहैं ॥ सबके मन इमि आनँद भरिहैं ॥ दोहा ॥ मन मोहन मोहन अहै धीरज धरहु सुजान ॥ अकसर मीठो खाइबो उचितन सत्य सुजान ॥ ३२ ॥ कहिकहिभवन गई हित अपना ॥ कंसरात यह देख्यो सपना ॥ जेहि हरि लगन लगै अभिरामा ॥ सोदेखै नृप आठहु जामा ॥ रजक धनुष रक्षक कर नासा ॥ भंग धुनष धुनि पूरन आसा ॥ असगुन होन चलन अँगवाए ॥ कंस सपन महँ यह दरसाए ॥ तेल रक्तनंगो सँगप्रेता ॥ रासभ महिख चढ़्यौ दुख हेता ॥ दक्षिन जातमाल हुड़ हुड़की ॥ उठा प्रात लागी दुख हुड़की सबन बुलाइ कहा समुझाई ॥ मल्ल भूमिकहँ साजहु भाई ॥ हेम सभा मंडपके आगे ॥ रच्यौ अखारा संशय पागे दोहा ॥ तनेउ बितान महान दुति अतिउन्नत नृप मंच ॥ मनि मंडित तापर धर्यौ सिंहासन सुचिसंच ॥ ३३ ॥ छन्द ॥ सुचि संच सिंहासन बिराजत छत्र सिर अवदातहैं ॥ पंखा चमर सूरज मुखी बहु मोर छल सरसातहैं ॥ तापर बिराजेउ कंस आसन सक्रके रबिभातहैं ॥ लखि जासु अतुलित तेज देव समाजहू सरमातहैं ॥ १ ॥ नाचहिं त्रियाबहु रंग राचहिं बिबिध बाजन बाजहीं ॥ भेरी मृदंग नगार दुंदुभि अति अवाजहि साजहीं ॥

म॰ १८४

को॥ बैठेसु अपने मंच पर देखत तहाँके ख्यालको॥ ३॥ शंबर जरासुत भौमबान महीप सिगरे अति बली॥ बैठे-
बडे रणधीर तित सब साज सजि उपमा भली॥ यदुराज केरी बर सभा नरराज तहँ शोभित भई॥ भारो अखारो मल्ल
राजहि कंसउर संशय भई ४ दो०॥ इतनेहि मैं लरिकन सहित राम कृष्ण दोउ वीर॥ रंगभूमि के देखते आए पुलक
शरीर॥ ३४॥ देखेउ द्वार कुबलिया पीड़हि॥ मत्त मतंग करत किल क्रीड़हि॥ कस्तूरी चर्चित मुख मूला॥ लसत
सुमनि दुकूल मैं झूला॥ देखि गजहि बसुदेव कुमारा॥ गज बानहि एहि बिधि ललकारा॥ हस्तिहि खल हटा
उ मैं जाऊं ननतरु मारि जैहौं नृप ठाऊं॥ ताहि महावत भयो चलावत॥ चलेउ बितुंड सुंड फय लावत॥ हरि भुज
दंड झपटि गहि सुंडहि॥ खींचलीन्ह कछु दूरि बितुंडहि॥ तबहि मतंग उमंग बिहाई॥ दंत हनन की करी उपाई॥
तजि सुंडहि कराल इक मूंका॥ करि बर शिर महँ हतेउ अचूका॥ दोहा॥ ताते भिरेउ महान गज चलेउ श्याम दि-
सि मस्त॥ हस्त भरे को बीच मधि डोले नगर समस्त॥ ३५॥ भो पुर माहिं कोला हल भारी॥ रंग द्वार पुनि गए
मुरारी॥ पग हरि हतेउ बहुरि गत ब्रीड़ा॥ भई कुबलिया पीड़हि पीड़ा॥ दंती कहँ हरि झपटि लपटि कै॥ सुंड गह्यौ
अति वेग दपटि कै॥ पकर्यो पूँछ दूतै बल दाऊ॥ खींचन लगे दोऊ गुनि दाऊ॥ जिमि नर डोर कूप की खींचैं॥ तिमि दोउन

बल कीन्ह नगीचैं ॥ तिन महँ व्याल बिकल भो कैसे ॥ द्वै खगपति महँ व्याकुल जैसे ॥ सात महावत तबहिं रिसाई ॥ चढ़िगे तापर दाँव देखाई ॥ अंकुश माथो कुंज प्रभाका ॥ मनहुं मेघपर महत चलाका ॥ दोहा ॥ तब सकोप गरज्यो रदी सुंड गह्यो भगवान ॥ पट्क्यो भूमि भ वाइ के कीन्हेउ प्रान पयान ॥ ३६ ॥ ज्योति कृष्ण के चरन समाई ॥ अचरज भयो सबन अधिकाई ॥ गिरि गिरि मेरु महावत सारे ॥ बायु बेग जिमि मेघ बिचारे ॥ रद होऊ उखारि कै होऊ ॥ चले कंध सरि अति छबि सोऊ ॥ भाजे जेहैं और महावत ॥ यथा मेघ गनि सरदहि आवत ॥ दंत धरे भगवंत कृपाला ॥ पबिसे रंग भूमि तेहि काला ॥ जोहि जस भाव रह्यो महिपाला ॥ तिन्हतैसो देख्यो नंदलाला ॥ कवित्त ॥ मल्ल न सुमल्ल जान्यो मित्र न अशल्य जान्यो नंदराय पुत्र जान्यो हरष विशालहै ॥ नारिन अनंग रूप अतुल अनूप जान्यो यादवन जात जान्यो परम रसालहैं ॥ जोगिन सुतत्व जान्यो ब्रह्म जान्यो ब्राह्मनन ग्वालन सुमित्र जान्यो व्यापक दयालहै ॥ नृपन महीप जान्यो खलन कराल जान्यो देवदेव पाल जान्यो कंस जान्यो कालहैं ॥ दोहा ॥ जिनकी जैसी भावना तिनतैसो हरिदीख ॥ निराकार साकार प्रभु बेद पुरान सुलीख ॥ ३७ ॥ कान कानमें कहहिं सभाजन ॥ यह परमेश्वर उभय महाजन ॥ शंभु स्वयंभु भजहि नित जाही ॥ शेष सहस मुख रटहिं सदाहीं ॥ धन्य भाग हैं आज हमारे ॥ लोचननैं खगकै तु निहारे ॥ इतने माहिं मल्ल चाणूर ॥ कहत कृष्णसे भोरिसि पूरा ॥ तुम बल कृष्ण दोऊ बलवाना ॥ हम सँग कुस्ती करहु महाना ॥ ह्वैहै मुदित भूमि भरतारा ॥ करिहैं आदर अतिहिं तुम्हारा ॥ तब हरि कह्यो नृपति के जोहन ॥ ऐसी नीति तुमहिं नहिं सोहत ॥ कहँ तुम पबल कहाँ

बरबिक्रम बिख्यात ॥ ३८ ॥ जब इमि [illegible] ॥ तुब कूदे दोउ भ्रात अखारा ॥ भिरे कृष्ण चाणूर दपटिकै
बल मुष्टिक रन कीन झपटिकै ॥ आकर्षन मर्दन भुज बंधन ॥ दाव करत भे कर धरि कंधन ॥ चाणूरहि भगवान उठावा
पटक्यौ तबसो अति रिसि आवा ॥ उठिकै कीन्ह कुटिल ललकारा ॥ भिरे बहोरि भूमि भरतारा ॥ झपटहिं लपटहिं दपटहिं
चपटहिं ॥ सपटहिं रपटहिं छपटहिं कपटहिं ॥ छुटि छुटि जुटि जुटि तुटि तुटि बीरा ॥ सानुज बल दोउ मल रण धीरा ॥ यदु मं
डन मुख भयो पसीना ॥ लखि नृपद्वार कहहिं सब दीना ॥ दोहा ॥ अहो अधर्म अपार इत होत जहाँ नरभूप ॥ कह कठोर
ए कुलिश सम कहाँ अर्क फल रूप ॥ ३९ ॥ यह सब हमरे भाग खोटाई ॥ धनि गोकुल के लोग लुगाई ॥ इकतौ दर्शन दुर्लभ
रहेऊ ॥ देखेतऊ अधिक उर दहेऊ ॥ दुष्ट महीप कहा बौराना ॥ शिशु की दिसि देखहु भगवाना ॥ जामहँ मारि शत्रु समुदाई ॥
सुख पावहिं बलराम कन्हाई ॥ अबलन की इमि दया निहारी ॥ भिरे प्रचारि खरारि मुरारी ॥ गहि चाणूरहि कृपा निधाना
फेक्यौ नभ शिशु सुमन समाना ॥ गिर्यौ गगनतें तब चाणूरा ॥ उठि मूकहि मार्यौ रिसि पूरा ॥ हरि तेहि गहि महिमा हल थेरा
तिमि रंगरेज सुरंग बखेरा ॥ दोहा ॥ झरिगे रदन सुमल्लके बहुरि उठ्यौ रिसि आइ ॥ द्वै मूका मारत भयो परम कोप उरल्याइ ॥
४० ॥ तब हरि गहिकै चरन घुमायो ॥ जिमि चकई कर गोल रचायो ॥ पटकत पृथवी फूट्यौ माथा ॥ मुखते रुधिर वमत नर
नाथा ॥ जब चाणूर भयो गत प्राना ॥ तब बल मुष्टिक सन रन ठाना ॥ हरि समान करि भट बिधि घाता ॥ प्रान लीन्ह उर हर्ष

बिभाता ॥ कूटहि बहुरि मूक बल मारा ॥ जिमि कूटहि क्रतु कुलिस प्रहारा ॥ शलकह कृष्ण पटकि महि भारो ॥ तो
शलकह बहोरि ललकारो ॥ कंस राजके आगे मारा ॥ जिमि साषहि मतंग मतवारा ॥ पाँचहु मरे मल्ल सर मारा ॥ तेज
वान श्रीनंद कुमारा ॥ दोहा ॥ तिन्हके भागे अनुग सब उरभय धारि बिचारि ॥ बहे जाहिं हाथी जहां चिउंटी पूछै
बारि ॥ ४१ ॥ तबश्री दामा दिक के साथा ॥ कुस्ती करन लगे ब्रज नाथा ॥ मुकुट धरे सिर परम अनूपा ॥ ललित
लरहिं लरकन संग भूपा ॥ बिना कंस सबके आननतें ॥ जैजै शब्द भयो जाननतें ॥ कंस तबै बाजन करि बंदा ॥
बोलो गरजि काल बस मंदा ॥ यह दुर्बुद्धि शौरिके छोरा ॥ काठहु पुरते संकठ घोरा ॥ गोपन के रस कलधनु ह-
रहू ॥ नंदहि आसु आसु गत करहू ॥ उग्रसेन बसुदेवहि मारहु ॥ यादव रहित भूमि करि डारहु ॥ दोहा ॥ सुनि
दोऊ बसुदेव सुत गए मंच पै कूदि ॥ अजहि देखि द्वै सिंहसे माधव मनमहं मूंदि ॥ ४२ ॥ मृत्युहि देखि चर्म अ-
सिधारी ॥ उठा रिसान मियान निकारी ॥ हरितब गहेउ कंस कहँ जाई ॥ सर्पहि गहै यथा खगराई ॥ करि छल
निकस्यो खल ललकारी ॥ करि कृपान बिद्वत द्युतिभारी ॥ लगे परस्पर लरन प्रचारी ॥ बहुरि गए नभ सकल बि-
चारी ॥ बाज बाज सम बाजे सोऊ ॥ यदुबर सो यदुबर एदोऊ ॥ गहि भुजतें भोजे सहि स्वामी ॥ लगे घुमावन अंतर
जामी ॥ ताकों तौन मंच परनावा ॥ टूटि गयो सिंहासन पावा ॥ उठि सो भिरो कृष्ण सो कैसे ॥ मत्तद्विरद केहरि सो जै-
से ॥ बहुरि साथ चोटी गह्यौ छाती भए सवार ॥ रंगभूमि फेंक्यौ तुरित कंसहि नंदकुमार ॥ ४३ ॥

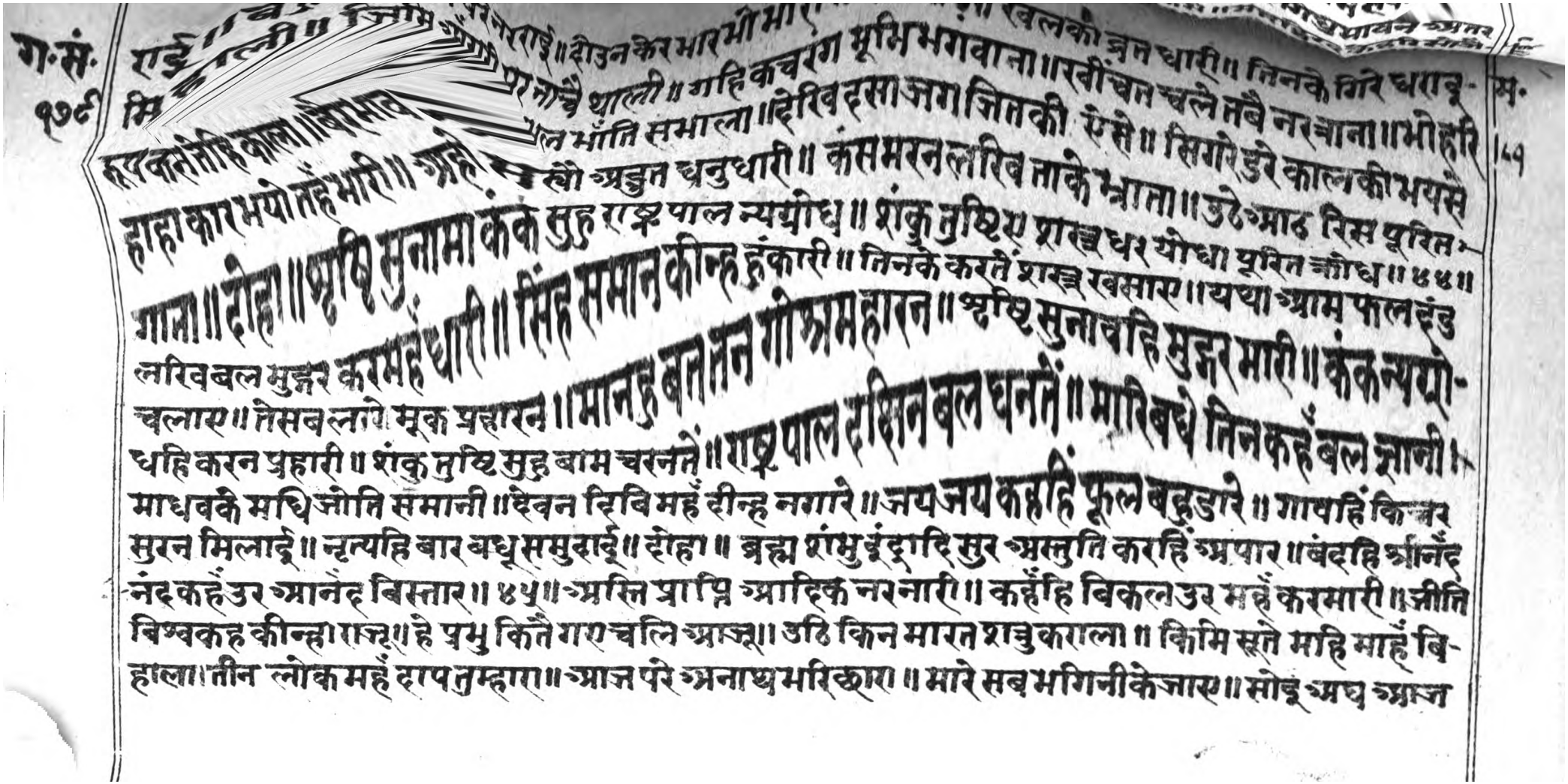

राई ॥ ब[illegible] ॥ जिमि [illegible] नरराई ॥ दोउन केर भार भो भारी [illegible] खलको व्रत धारी ॥ तिनके गिरे धराद्र-
मि [illegible] पर नाचै थाली ॥ गहि कचरंग भूमि भगवाना ॥ खींचत चले तबै नरत्राना ॥ भो हरि
रूप कंस तेहि काला ॥ बैर भाव [illegible] ल भाँति सभाला ॥ देखि दसा जग जितकी ऐसे ॥ सिगरे डरे कालकी भयसे
हाहाकार भयो तहँ भारी ॥ अहो [illegible] खो अद्भुत धनुधारी ॥ कंस मरन लखि ताके भ्राता ॥ उठे आठ रिस पूरित
गाता ॥ दोहा ॥ शृष्टि सुनामा कंक सुहु राष्ट्र पाल न्यग्रोध ॥ शंकु तुष्टिए शस्त्र धर योधा पूरित क्रोध ॥ ४४ ॥
लखि बल मुद्गर करमहँ धारी ॥ सिंह समान कीन्ह हुंकारी ॥ तिनके करतें शस्त्र खसाए ॥ यथा आम फल दंडु
चलाए ॥ तेसब लागे मूक प्रहारन ॥ मानहु बत तन गोश्रम हारन ॥ शृष्टि सुनावहि मुद्गर मारी ॥ कंक न्यग्रो-
धहि करन प्रहारी ॥ शंकु तुष्टि सुहु बाम चरनतें ॥ राष्ट्र पाल दक्षिन बल घनतें ॥ मारि बधे तिन कहँ बल ज्ञानी ॥
माधवके मधि जोति समानी ॥ देवन दिवि महँ दीन्ह नगारे ॥ जय जय कहहिं फूल बहु डारे ॥ गावहिं किन्नर
सुरन मिलाई ॥ नृत्यहि बार बधू समुदाई ॥ दोहा ॥ ब्रह्म शंभु इंद्रादि सुर अस्तुति करहिं अपार ॥ बंदहि श्रीनँद
नंद कहँ उर आनँद बिस्तार ॥ ४५ ॥ अस्ति प्राप्ति आदिक नर नारी ॥ कहँहि बिकल उर महँ करमारी ॥ जीति
बिश्व कह कीन्हा राजू ॥ हे प्रभु कितै गए चलि आजू ॥ उठि किन मारत शत्रु कराला ॥ किमि सूते महि माहँ बि-
हाला ॥ तीन लोक महँ दाप तुम्हारा ॥ आज परे अनाथ भरि छारा ॥ मारे सब भगिनी के जाए ॥ सोइ अघ आज

प्रगट फल पाए ॥ काल काल किय कालन चीन्हा ॥ अबलन आजु अतुल दुख दीन्हा ॥ करुना सिंधु जगत जित बीरा ॥ परे भूमि गत प्रान शरीरा ॥ स्वामी सुख दायक हितकारी ॥ रांड़ आज यह नारि तुमारी ॥ दोहा ॥ इहि बिधान बिलपहिं सकल नगर रह्यौ सुर पूर ॥ तिन्है बुझायो बिबिधि बिधि सूर सुवन सत सूर ॥ ४६ ॥ बिधि यत नृपकी क्रिया कराई ॥ चंदन चिता सुचारु बनाई ॥ करिकै दाह तिलांजुलि दीना ॥ लौकिक रीति प्रेत विधि कीन्हा ॥ गेबसुदेब देवकी पासा ॥ कृष्ण चंद्र उर पूरि हुलासा ॥ टूटि गई बेरी तिन केरी ॥ बडी दुहू दिसि प्रीति बनेरी ॥ ॥ उरसत भाव अनूपम आनी ॥ नाथ सहित देवकि बिलखानी ॥ नहिं सनेह तिनको कहि जोई ॥ जनु आजुहि जनमे दोउ आई ॥ उग्रसेन की बंदि निवारी ॥ राजदीन्ह सहसाज मुरारी ॥ भागे रहे सुयादव जितने मथुरा सकल बसाए तितने ॥ दोहा ॥ जान लगे नंदराय घर बिदा होत भरि प्रेम ॥ बोले हरि बल देव दोउ छेम रूप कहि छेम ॥ ४७ ॥ आप चलहु ब्रज गोपन लैकै ॥ हम इत राज काज निरभयकै ॥ करिहैं आय आपको दरशन ॥ अहहु जनक मम गुरु अघ मर्षन ॥ सुनि गुनि गर्ग बचन दुख छाए ॥ मिलि शौरीते गोकुल आए ॥ तब बसुदेव नियत गो दीन्ही ॥ पूरब जौन संकलप कीन्ही ॥ गरग बोलाइ सबिधि भरि प्रीता ॥ हरि बल कर किय मख उपबीता ॥ सांदीपन ढिग पुनि दोउ भाई ॥ बिद्या पढ़न गए नरराई ॥ बिद्या निधि सब बिद्या लीन्हो ॥ गुरुकी सुंदर सेवा कीन्हो ॥ जब दक्षिना हेत अभिलाष्यो ॥ मृतक पुत्र [illegible]



दोहा [illegible] रथपर भए असवार ॥ [illegible] हरन उदार ॥ ४८ ॥ उरि समुद्र लै रत्न
अप[illegible] बहुबारा ॥ तब हरि माँग्यौ गुरु संताना ॥ सरित प्रान यह बचन बखाना ॥ हे प्रभु मैं न हर्यौ शि-
शु [illegible] न होई ॥ लैसो गयो बधहु भगवाना ॥ तातें मिलिहै गुरु संताना ॥ सुनि हरि पटतें
कछुना काछु ॥ कूटे तित झटौ [illegible] धि आछी ॥ हरिके गिरे शब्द भो भारी ॥ आयो दानव शंख सुरारी ॥ शूल बज्र
सम हरि कह मार्यो ॥ अबन बचन इहि बिधि ललकार्यो ॥ ताहि पकरि हरि फेरि चलायो ॥ व्याकुल होइ अ-
सुर मुनि छायो ॥ दोहा ॥ उठेउ कोपि पुनि पंचजन मारेउ हाथ उठाइ ॥ तब हरि ताके शिर हत्यौ मूक महत रिसि आइ ४९
ताके मरे उदर कहँ फारी ॥ शंख रह्यो सो लीन्ह निकारी ॥ कीन्ह असुर कहँ निज महँ लीना ॥ नहिं देखे गुरु सुवन प्रवी-
ना ॥ पुनि रथ चढ़ि दोउ भ्रात सुहाए ॥ संजमनी अति आतुर आए ॥ आसु पंचजन कंबु बजायो ॥ यम पुर शब्द पू-
रि थह रायो ॥ चौरासी लखके अघ कारी ॥ भक्त भए सुनि नाद सुखारी ॥ दुरि यम आय पूजि हरि दोऊ ॥ बोल्यौ हा-
थ जोरि कै सोऊ ॥ देव पुरान पुरुष अबिनासी ॥ कृपाकरन प्रभु घट घट बासी ॥ अज्ञा होइ करौं मैं सोई ॥ तब हरि क-
हत भए जम जोई ॥ दोहा ॥ गुरु सुत लावहु बेग तुम सुखी करहु इतराज ॥ नीति सहित शुभ रीति सब अहो प्रेत कुल
ताज ॥ ५० ॥ लै शिशु दीन्ह गुरुहि हरि जाई ॥ बिदा भए बर आसिष पाई ॥ चढ़ि रथ पुर आए दोउ भाई ॥ और कथा
सुनिए नरराई ॥ इक दिन सानुज बल हरषाई ॥ गे अक्रूर सदन सुख दाई ॥ लखि चाचा उठि सीस नवाई ॥ कनक सिंह

सन परबैठाई॥ बिबिधि भाँति ते कीन्ह पुजाई॥ कहत जोरि कर प्रेम बढ़ाई॥ युगल चरन हम नमत सदाई॥ परि
पूरन तम परम गोसाँई॥ जग कारन अभिराम सोहाई॥ जग हित जगत दीप यदुराई॥ गोद्विज साधु देव सुखदाई॥
यदुकुल प्रगट प्रेम सर साई॥ दोहा॥ कंसादिक के बधन हित जन्म लीन्ह इत आय॥ भारत भूमि पवित्र किय अप-
ने चरन लगाय॥ ५१॥ हरिभे कहत तनय हम तुमरे॥ नहिं तुम कहा ज्ञान कछु हमरे॥ बड़े लघुन कहँ देहिं बड़ाई॥
पय एक काम करहु अब जाई॥ पांडव कुशल देखि द्रुत आवो॥ धृतराष्ट्रहि बहु बिधि समुझावो॥ सुनि अक्रूर
सुरथ चढ़ि धाए॥ आसु हस्तिनापुर चलि आए॥ सबते मिले हवालहि बूझा॥ हरिते कह्यौ आवू जो सूझा॥ बिन
तुम्हरे प्रभु पंडु कुमारन॥ अहै अहूँ एकौ आधारन॥ अंध सुवन तें दुखी बिचारे॥ अहहिं आपकी आसा धारे॥
सुनि अक्रूर बचन भगवाना॥ दीन दयाल सकल अनुमाना॥ दोहा॥ आधो राज कुरुन को तिन्है दीन्ह दिलवा-
य॥ एक दिवस कुबजा भवन गेउ द्रुवहि लवाइ॥ ५२॥ कुबजा उठि पूज्यौ बिधि नाना॥ तासु रूप नहिं जाइ बखाना॥
तहँकी अद्भुत बनी तयारी॥ को कहि सकै तौन छबि भारी॥ परिपूरन तम जाके नाथा॥ को कह तासु भाग की गाथा॥
आठ दिवस तित रहे कृपाला॥ पूरन कीन्ह मनोर्थ दयाला॥ यह मथुरा हरि चरित रसाला॥ श्रवन सुखद अघकुल
कर काला॥ चारपदारथ पित नरपाला॥ कह सुनिहौं अब कथा रसाला॥ सुनि बिदेह पुनि बचन निकाला॥ अब
इच्छा यह मोहिं बिशाला॥ सबकी पूरब कथा सुजाना॥ हम पूछा अरु आप बखाना॥ दोहा॥ रह्यौ रजक पूरब कुवन।

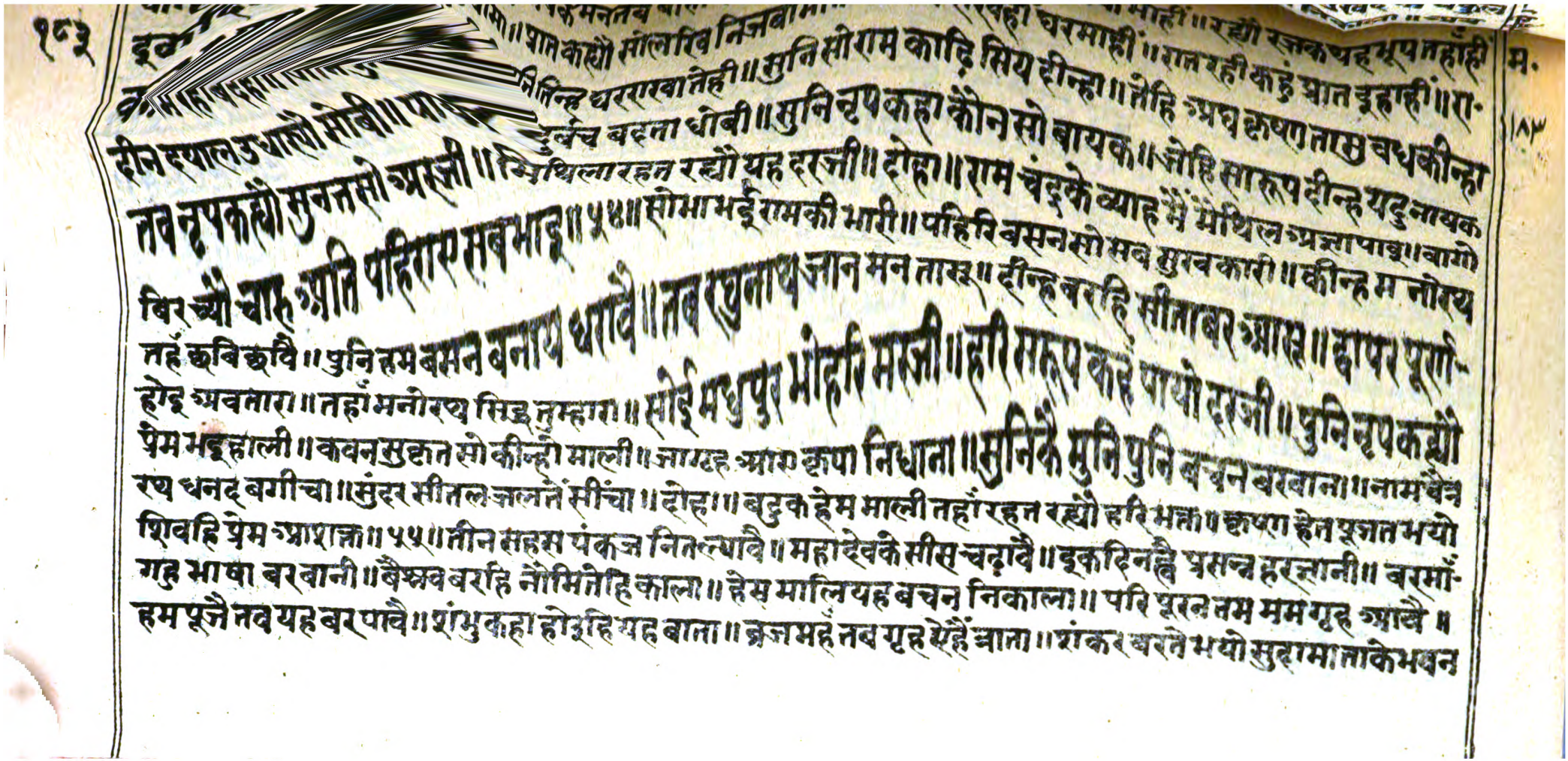

[illegible] ॥ प्रात कह्यौ सोलखि निजबामा ॥ [illegible] घरमाहीं ॥ रह्यौ रजक यह भूप तहाँही
[illegible] निन्ह घरराखा तेही ॥ सुनि सो राम काढ़ि सिय दीन्हा ॥ तेहि अघ कृष्ण तासु वध कीन्हा ॥ रा-
दीन दयाल उधारयौ सोबी ॥ [illegible] दुर्बच बदना धोबी ॥ सुनि नृप कहा कौन सो बायक ॥ जेहि सा रूप दीन्ह यदुनायक
तब नृप कह्यौ सुनत सो अरजी ॥ मिथिला रहत रह्यौ यह दरजी ॥ दोहा ॥ राम चंद्र के व्याह मैं मैथिल अज्ञा पावु ॥ बागो
बिरच्यौ चारु अति पहिराए सब भाइ ॥ ५४ ॥ सोभा भई रामकी भारी ॥ पहिरि बसन सो सब सुखकारी ॥ कीन्ह मनोरथ
तहँ छबि छावै ॥ पुनि हम बसन बनाय धरावै ॥ तब रघुनाथ जान मन तासू ॥ दीन्ह बरहि सीताबर आसू ॥ द्वापर पूर्ण-
होइ अवतारा ॥ तहाँ मनोरथ सिद्ध तुम्हारा ॥ सोई मधुपुर भो हरि मरजी ॥ हरि सरूप कहँ पायो दरजी ॥ पुनि नृप कह्यौ
प्रेम भइ हाली ॥ कवन सुकृत सो कीन्हो माली ॥ जा गृह आए कृपा निधाना ॥ सुनिकै मुनि पुनि बचन बखाना ॥ नाम चैत्र
रथ धनद बगीचा ॥ सुंदर सीतल जलतें सींचा ॥ दोहा ॥ बटुक हेम माली तहाँ रहत रह्यौ हरि भक्त ॥ कृष्ण हेत पूजत भयो
शिवहि प्रेम आशक्त ॥ ५५ ॥ तीन सहस पंकज नित ल्यावै ॥ महादेवके सीस चढ़ावै ॥ इक दिन ह्वै प्रसन्न हरज्ञानी ॥ बरमाँ-
गहु भाषा बरबानी ॥ बैश्रव बरहि नौमि तेहि काला ॥ हेम मालि यह बचन निकाला ॥ परि पूरन तम मम गृह आवै ॥
हम पूजै तब यह बर पावै ॥ शंभु कहा होइहि यह बाता ॥ ब्रज महँ तब गृह ऐहैं त्राता ॥ शंकर बरते भयो सुदामा ताके भवन

गए बल श्यामा ॥ दीन दयाल मुक्ति कहँ दीना ॥ दुर्ल्लभ जो मुनि कहँ गुन पीना ॥ तब बहुलाश्व बहुत हरषाए ॥ कहत भ-
हत मति सीस नवाए ॥ दोहा ॥ कवन रही कुबरी तवन जवन भवन गे श्यास ॥ तब नारद भाषत भये परम बुद्धि के धाम ॥
५६ ॥ पंचबटी सुंदर लखि रामा ॥ मोहत भई सुपनखा बामा ॥ रावन सुसा रामते भाषा ॥ पुनि सीता भोजन अभिला-
षा ॥ सो सुनि लषन उठे तेहि डांटी ॥ लीन्हेउ नाक कान कहँ काटी ॥ कहि रावन कहँ पुस्कर जाई ॥ हरि हित तप कीने-
उ अधिकाई ॥ महादेव कहँ जपत सदाहीं ॥ आयुत अब्द ठाढ़ी जल माहीं ॥ तब त्र्यंबक प्रसन्न होइ आए ॥ बरंब्रूहि
यह बचन सुनाए ॥ सूपनखा बोली यह बानी ॥ मम पति होहिं राप धनु पानी ॥ सो सुनि धूरि जटी भगवाना ॥ रावन
भगनिहि बचन बखाना ॥ दोहा ॥ पूरन होइहि अर्थ तव युग द्वापर के अंत ॥ कृष्ण कंत तब होइहैं भाषि गए भगवंत
५७ ॥ हरबर सूरपनखा सुहाई ॥ भइ कृष्ण पटरानी आई ॥ जनहित करन कृष्ण यदुराई ॥ ॥ सुनि पुनि प्रष्ण करत
भे राजा ॥ रह्यौ कुबलया पीड मतंगा ॥ कहहु कवन सो सहित उमंगा ॥ तब नारद मुनि नाह सुजाना ॥ मैथिल नृप
तें बचन बखाना ॥ बलि सुत असुर मंदगति नामा ॥ लक्ष नाग बल मद को धामा ॥ गयो रंग जात्रहि एक बारा ॥
मरदत नरन गरूर अपारा ॥ त्रित मुनि गिरे तहाँ कर बेगा ॥ काढ़्यौ कोप कोप को तेगा ॥ गज सम चलत गिरा-
वत रस्ता ॥ होसि मतंग बढ़्यो जो मस्ता ॥ दोहा ॥ इहि बिधान त्रित के कहे होत भयो गत तेज ॥ अहि कंचुक
समतन गिर्यौ मन भो दुखते रेज ॥ ५८ ॥ तब सो दैत्य बंदि पद डरिकै ॥ बोलो जल लोचन महँ भरिकै ॥ हे मुनि करुना

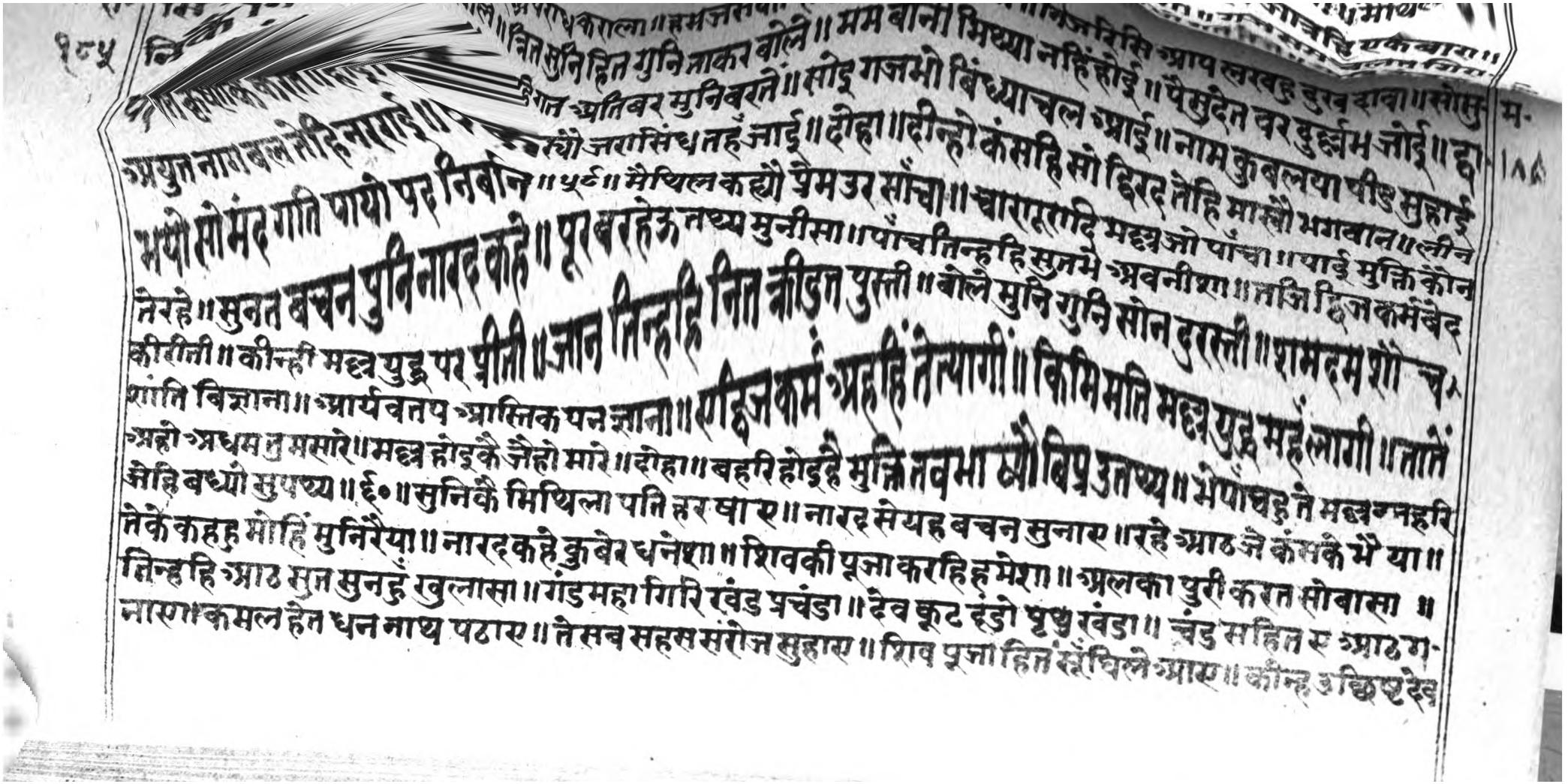

...अपराध कराला ॥ हमजस... ॥ मम बानी मिथ्या नहिं होई ॥ पै सुदेत वर दुर्ल्लभ जोई ॥ द्वा-
...नित सुनि हित गुनि ताकर बोले ॥ सोइ गजभो बिंध्याचल आई ॥ नाम कुबलया पीड सुहाई
...गत अतिबर मुनिबरते ॥ सोइ गजभो बिंध्याचल आई ॥ नाम कुबलया पीड सुहाई
अयुत नाग बल तेहि नरराई ॥ ...स्यौ जरासिंध तहँ जाई ॥ दोहा ॥ दीन्हो कंसहि सो द्विरद तेहि मास्यौ भगवान ॥ लीन
भयो सो मंद गति पायो पद निर्बान ॥ ५९ ॥ मैथिल कह्यौ प्रेम उर साँचा ॥ चारापूरादि मल्ल जो पाँचा ॥ पाई मुक्ति कौन
तेरहे ॥ सुनत बचन पुनि नारद कहे ॥ पूरबरहेऊ तथ्य मुनीसा ॥ पाँच तिन्हहि सुतभे अवनीशा ॥ तजि द्विज कर्म बेद
कीरीती ॥ कीन्ही मल्ल युद्ध पर प्रीती ॥ जान तिन्हहि नित क्रीडत पुस्ती ॥ बोले मुनि गुनि सोन दुरस्ती ॥ शमदम शौच
शांति बिज्ञाना ॥ आर्यवतप आस्तिक पन ज्ञाना ॥ एद्विज कर्म अहहिं ते त्यागी ॥ किमि मति मल्ल युद्ध महँ लागी ॥ तातें
अहो अधम तुम सारे ॥ मल्ल होइ कै जैहो मारे ॥ दोहा ॥ बहरि होइ है मुक्ति तव भाष्यौ बिप्र उतथ्य ॥ भे पाँचहु ते मल्ल नहरि
जेहि बध्यो सुपथ्य ॥ ६० ॥ सुनिकै मिथिला पति हरषाए ॥ नारद से यह बचन सुनाए ॥ रहे आठ जे कंसके भैया ॥
तेके कहहु मोहिं मुनिरैया ॥ नारद कहे कुबेर धनेशा ॥ शिवकी पूजा करहि हमेशा ॥ अलका पुरी करत सोबासा ॥
तिन्हहि आठ सुत सुनहु खुलासा ॥ गंड महा गिरि खंड प्रचंडा ॥ देव कूट दंडो पृथु खंडा ॥ चंड सहित ए आठ ग-
नाए ॥ कमल हेत धन नाथ पठाए ॥ ते सब सहस सरोज सुहाए ॥ शिव पूजा हित सूँघिले आए ॥ कीन्ह उच्छिष्ट देव

कीपूजा॥ तातेभे नहिं कारन दूजा॥ दोहा॥ मुक्ति तीसरे जन्म मैं दीन्हो श्रीभगवान॥ आठ कंक आदिक अनुज प्रग॰ टकंसके जान। ६१। सो सुनि बहुरि जनक यह भाषा॥ शंख कथा सुमिरे अभिलाषा॥ तब नारद बिज्ञान सरूपा॥ कहत भए सो कथा अनूपा॥ पूरब निज तन तेज निकारी॥ आयुध बनए सकल मुरारी॥ पाँच जन्य जब शंख बनायो॥ ताके उर घमंड अति आयो॥ एक दिवस सो शंख महाना॥ गरजि सबन महँ बचन बखाना॥ मोहि बजाइ रन जीतत हरी॥ हम मुह लगुआ आठो घरी॥ मुख पंकज परहंस समाना॥ हस राजत हरि सुखद महाना॥ जो हम पियत अधर रस सोई॥ दुर्लभ सदा रमा कहँ होई दोहा॥ तीन जलज जब होत है एक जगह सुखरूप॥ कंज कुमुद गजसुंड सम सोभा तौन अनूप॥ ६२॥ रपा कोप करि दीन्हो शापा॥ होसि असुर घमंड ज्यों दापा॥ सोई असुर हत्यौ भगवाना॥ पुनि कर धर्यौ शंख सुजाना॥ शंख शंख मदते फल पाया॥ शाप बिगत हरि कर पुनि आया॥ पुनि नृप कह्यौ जोरि दोउ हाथा॥ तब कह चरित कीन्ह यदुनाथा॥ सुनि सो बीना पानी ज्ञानी॥ बोले बानी आनँद आनी॥ एक दिवस ब्रज कीन्हो पादा॥ लोचन माहिं भरे जल जादा॥ तब माधव ऊधवहि बुलायो॥ बैठि एकांत बिबिधि समुझायो॥ तात जाहु तुम गोकुल धाई॥ जहँ गोपी गोधन समुदाई॥ दोहा परम रम्य अस्थान सो बहु बन उपबन जत्र॥ यशुदहि राधहि पितहि पुनि प्रथक दीजियो पत्र॥ युबती तहँ की गोपिका चिट्ठी सबहि सुजान॥ दीन इकट्ठी करि कृपा दीन बंधु भगवान॥ ६३॥ मम पितु नंदराय अरु माता॥ मम बलके बिन अति बिलखाता॥ समुझायहु कहि सुंदर बानी॥ जामहँ [illegible]



॥ ताके उर दुख अहइ अगाधा ॥ ह ऊधव तिनके दिग जाई ॥ बहुत बुझायहु ज्ञान दृढ़ाई ॥ श्रीदामा-
दि ब्रजवासी जेते ॥ अतिही शोक बिवस तिन तेते ॥ तिन्ह कहं समुझायहु बहुभांती ॥ आवन श्याम कहेहु दै पा-
ती जनावहु अवधहि ॥ दोहा ॥ तिन्ह कर दूजी आस नहिं अतिही रहत उदास ॥ तनमन धनपति सुत गृह त्यागी ॥ केवल मेरेप-
रकाश ॥ ६३ ॥ जोरय चीठि आए हम भाई ॥ तापर बैठि जाहु हर धाई ॥ तुमि कहि निज कुंडल बनमाला ॥ मु-
कुट पीत पट परम रसाला ॥ बंसी छरी गुंजकी माला ॥ चंदन लायो अंग गुपाला ॥ भूषन बसन प्रसादी दीने ॥
कौसुभ सहित कंठ कहं कीने ॥ निज समान सब रूप बनायो ॥ बहुरि प्रेम भरि कंठ लगायो ॥ बिदा कीन्ह सोइ रथ
बैठाई ॥ ऊधव चले बंदि यदुराई ॥ जब ब्रज मंडल महं चलि आए ॥ लषि तहं की सोभा सुख पाए ॥ कोटिन ×
गऊ फिरहिं संग बच्छा ॥ मोरपच्छ सिर सोहत अच्छा ॥ दोहा ॥ घंटा घुंघुरू पैंजनी रतन जड़ाव विषान ॥ हार
सिंगार ललाम अति सोभा सरस सुजान ॥ ६५ ॥ स्याम लाल अरु धूमर धौरी ॥ चित्रा कपिला श्यामा गौरी ॥ सि-
धु समान महान दुधारी ॥ मृगसी चपल लसे थनभारी ॥ दीरघ शृंग वृषभ बहु साथा ॥ तिन्हके मधि डोलहिं
नर नाथा ॥ साथ सरस सोहै गोपाला ॥ सिषि परबंसी गुंजा माला ॥ गावहिं कृष्ण भजन सुख सारे ॥ करलला-
म लकरी कहं धारे ॥ श्रीदामादि ऊधवहि देखी ॥ कहन लगे मन कृष्ण परेखी ॥ नंद सुवन यह लागत भाई ॥

तैसोइ बरन बसन सरसाई ॥ तैसी मुकुट लटक मन मोहै ॥ गुंज माल बन माला सोहै ॥ दोहा ॥ सोई रथ पर आपुहै मनमोहन घनश्याम ॥ पैन साथ महँ रामजू एकाकी अभिराम ॥ ६६ ॥ इतनेहि कहत निकट रथ आयो ॥ लखि ऊधव हरि भ्रमहि नसायो ॥ कहहि परस्पर ने व्रजबारे ॥ को यह कृष्ण सरिस बपुधारे । सुनि ऊधव बोले यह बाता ॥ सोच करहु मति तुम सब ज्ञाता ॥ दीनो कृष्ण पत्र सो लेहू ॥ आवत आसुक ह्यो पुनि एहू ॥ करि यदुगन को काज रसाला ॥ ऐहैं यह भाष्यो नंद लाला ॥ सो सुनि पढ़ि पत्रहि तेरवाला बोले गदगद सुर नर पाला ॥ निरमोही अति नंद कुमारा ॥ पाइ राजश्री गरब अपारा ॥ पठवत पत्र समय यह आई ॥ यहाँ रहो नहिं छिन इक जाई ॥ छन युग एक घड़ी मन बीते ॥ एक जाम जनु कल्प बिती ते ॥ इक दिन है पराई समजाई ॥ हरि बिन सत्य सुनहु मोहि भाई ॥ दोहा ॥ हम सम करि जान्यो सदा नहि जान्यो कछु भेद ॥ ताते निवसे दूर प्रभु उरगहि कै कछु खेद ॥ ६७ ॥ तब ऊधव अचरज सब त्यागी ॥ बोले बचन हृदय अनुरागी ॥ हम हरिदास अहैं हरि केरे ॥ आए सुनहु तुम्हारे नेरे ॥ पुनि हम जाय बंदि दोउ चरना ॥ बहु बिनवैंगे जन दुख हरना ॥ करि प्रसन्न निज सुरथ चढ़ाई ॥ लेहौं बेगि सबेग लिवाई ॥ सोचहि तजहु भजहु भगवाना ॥ दीन बंधु प्रभु कृपा निधाना ॥ इमि कहि सबन सहित तब ऊधो ॥ गए नंद गृह गहि मगसूधो ॥ अस्त भये रवि तेहि छन नंदा ॥ मिले प्रेम भरि व्रजनभचंदा ॥ बहु बिधान भोजन

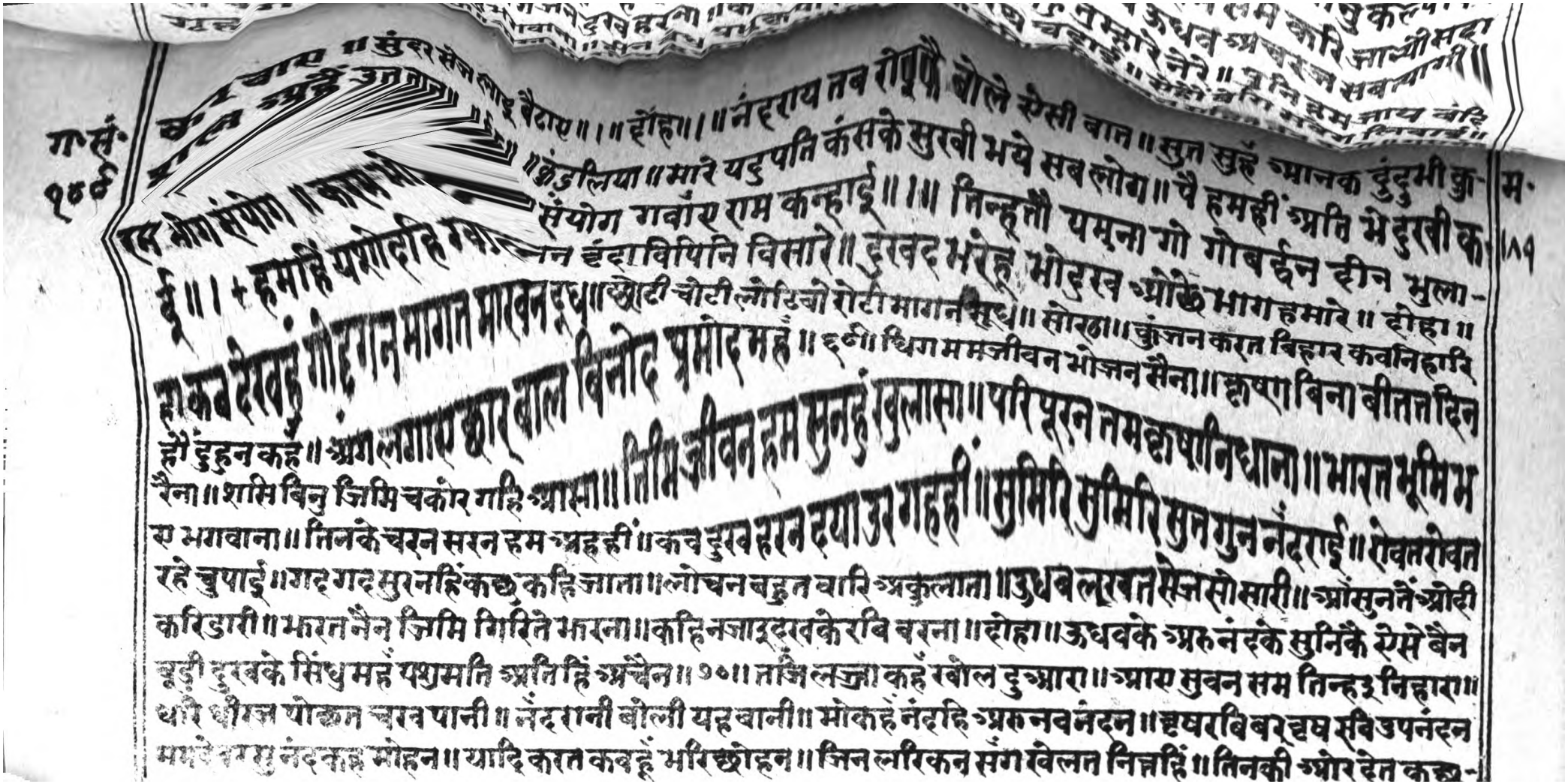

॥ दोहा ॥ ॥ नंदराय तब रोपुपै बोले ऐसी बात ॥ सुत सुहृ आनक दुंदुभी कु-
॥ छेड़लिया ॥ मारे यदुपति कंसके सुखी भये सब लोग ॥ चै हमहीं अति भेदुखी क-
संयोग गवांए राम कन्हाई ॥ ॥ तिन्हतौ यमुना गो गोबर्द्धन दीन भुला-
न इंदा विपिनि विसारे ॥ दुखद भरेहु भोदुख अोछे भाग हमारे ॥ दोहा ॥
कब देखहुं गोदुहन मागत माखन दूध ॥ खोटी चोटी लोटिबो रोटी मागन सुध ॥ सोरठा ॥ कुंजन करत बिहार कवनिहारि
हौं दुहुन कह ॥ आग लगाए छार बाल विनोद प्रमोद महं ॥ दंडी धिग मम जीवन भोजन सैना ॥ कृष्ण बिना बीतत न दिन
रैना ॥ शशि बिनु जिमि चकोर गहि आसा ॥ तिमि जीवन हम सुनहुं खुलासा ॥ परिपूरन तम कृष्ण निधाना ॥ भारत भूमि भ
ए भगवाना ॥ तिनके चरन सरन हम अहहीं ॥ कब दुख हरन दया उर गहहीं ॥ सुमिरि सुमिरि सुन गुन नंदराई ॥ रोवत रोवत
रहे चुपाई ॥ गद गद सुरनहिं कछु कहिजाता ॥ लोचन बहुत वारि अकुलाता ॥ उधव लखत सेज सो सारी ॥ आंसुननें ओदी
करिडारी ॥ झरत नैन जिमि गिरिते झरना ॥ कहि न जाइ दुखके रवि चरना ॥ दोहा ॥ ऊधवके अरु नंदके सुनिके ऐसे बैन
बूड़ी दुखके सिंधु महं यशुमति अति हिं अचैन ॥ १० ॥ तजि लज्जा कहं बोल दुआरा ॥ आए सुवन सम तिन्हइ निहारा ॥
धरि धीरज पोछन चरन पानी ॥ नंदरानी बोली यह बानी ॥ मोकहं नंदहि अरु नवनंदन ॥ हरषरवि बरहष सविउपनंदन
मम सुत बरु नंदकह मोहन ॥ यादि करत कवहूं भरि छोहन ॥ जिन लरिकन संग खेलत निन्हहिं ॥ तिनकी अोर देत कछु-

चिन्तहिं ॥ मोहि सुत एक भयो बहु नाहीं ॥ सोऊ द्रुत चलि गयो तहाँही ॥ हाय करौं कह जावौं कैसे ॥ बिनदेखे जल सफरी जैसे ॥ प्रातहोत नित माखन मागै ॥ देतदेत पग पटकन लागै ॥ दोहा ॥ मीठे मीठे बचन तेरवाइ सवाद बरबान ॥ सोकि मि सुनिहौं कानतें किमि लखिहौं वह बान ॥ ७१ ॥ ब्रज बासी जीवन गोपाला ॥ सबको हित शुभ चित नंदलाला ॥ छि न समान दिन रह्यो बितातो ॥ अबसो कठिन कल्प सम जातो ॥ जोन कोस आधे पर जाई ॥ सो मधुपुरी गयो चलि थाई ॥ बिना श्याम कहँ अंकलगाए ॥ नितनित नंदजात दुखराए ॥ इक दिन हम बाँधातेहि भाई ॥ समुझि समुझि सो मन पछिताई हाहम धिगजीवन बिन ताके ॥ वचन रहे अमृत समजाके ॥ बिन मुकुंद के रहत पराना ॥ अहउ वज्र समकठिन महाना ॥ भूमि बिलपत लखि नंदनंदरानी ॥ चकित कहतभे ऊधव बानी ॥ दोहा ॥ धन्य धन्य हरि भक्त धर दोऊ अतिहि जईपा ॥ रोमन रसना पाइकै करिन सकत तारीप ॥ ७२ ॥ प्रेम लक्षरण हरिमहँ कीन्हा ॥ जाहि स्वयंमुशंभु नहिं चीन्हा ॥ तीरथ यो गकिए मवदाना ॥ करि नहात जासो तुमजाना ॥ सुनहु ब्रजेश सत्य ब्रज रानी ॥ करियादव को कारज ज्ञानी ॥ बल समेत ऐहैं रथ चढ़िकै ॥ आसु अवशि मथुरानें कढ़िकै ॥ पारि पूरन तम यह भगवाना ॥ जिन्ह कहँ तुम निजसुत करि जाना ॥ विधिजब कीन्ही विनती भारी ॥ प्रगटे पुरुष पुरान विचारी ॥ होतहि कीन्ह विविधि विधिलीला ॥ अव्यय अविनाशी गुन शीला ॥ हति पूतना प्रभंजन भंज्यो ॥ तृनावर्त वधि तरु द्वै गंज्यो ॥ दोहा ॥ मुख महँ दीन दिखाइकै यशुदा कहँ ब्रह्मांड ॥ बत्स असुर बक अघ बध्यो जिमि मूषिका को भांड ॥ ७३ ॥ धेनुक कहँ बलदेव संहारयो ॥ हरि काली कहँ यमुन पठारयो ॥ दावा नल-



कहँ कीन्हो पाना ॥ बल प्रलंब कर लीनो प्राना ॥ सबके लषत गिरिंद उठायो ॥ जिमि जग कमलहि सुंड च-
ढायो ॥ शंख चूड कहँ बधि मनि लीन्हा ॥ वृषभहि अश्वहि यमपुर दीन्हा ॥ व्योमा सुरहि बधेउ भगवा-
ना ॥ मथुरा कीन्ह चारत पु[illegible] नाना ॥ रजकहि मारि शीस महि डार्यौ ॥ तूरि कंस धनु दूरि पवार्यौ ॥ बध्यौ
कुवलया पीडहि कैसे ॥ मारहि बकरा जैसे ॥ मुष्टिक तोशल शल बधि डार्यौ ॥ बहुरि कूट चारा-
रहि मार्यौ ॥ दोहा ॥ कीन्ह कंस कहँ प्रान बिन नभ उछारि महि डारि ॥ जिमि बाजी गरको छुरा फेकत ग-
हत पछारि ॥ ७४ ॥ तापर गिरे शैल सम आई ॥ सो अप्रान तित मर्यौ दबाई ॥ कंस अनुज कंकादिक आठा
बध्यौ तिन्है जिमि हरि गज पाठा ॥ गुरु दक्षिना देन हित गये ॥ असुर पंचजन मारत भये ॥ अद्भुत चरित
करत गुन धामा ॥ करत तिन्हहिं हम कोटि प्रनामा ॥ कहत कहत इमि निशा सिरानी ॥ तिन्हतेहि छन समान
करि जानी ॥ ब्रह्म महूर्त उठीं सब नारी ॥ लीपि भवन अरु दीप सवांरी ॥ धरि धरि दधि अरु मुदित मथानी ॥
मथहिं कृष्ण को चरित बखानी ॥ बोलत कंकन कुंडल झलकैं ॥ गिरत फूल महि छूटी अलकैं ॥ दोहा ॥ चंद्र
मुखी बनिता सकल करत कृष्ण गुनगान ॥ यह शोभा देखत भले ऊधव नदी नहान ॥ ७५ ॥ जहँ तहँ फिरहिं ग-
ऊ अति जोई ॥ दूध दुहन को स्वन अति होई ॥ गोपिगीत दधि गंथन धुनी ॥ गली गली महँ उद्धव सुनी ॥ कह

अस्नाना ॥ प्रातसमय सिगरी ब्रजनारी ॥ कहहिं परस्पर रथहिनि हारी ॥ अरी अहै रथकासु सुहायो ॥ पुनि
तौ नहीं क्रूर वह आयो ॥ यामम प्रानहिं हरिलै गयऊ ॥ सोइ रथहै सोइ आवत भयऊ ॥ अबलैजैहैं नंद
यशोदहि ॥ जाना सत्य तासु मन मोदहि ॥ दोहा ॥ अहइ सखा यह कंसको महा दुष्ट सिरताज ॥ क्रिपाक-
रै गोमित्र की मारि हमन कहं आज ॥ ७६ ॥ निज मनमें यह बात दृढ़ाई ॥ आपुहि घेर्यो रथहि लुगाई ॥
सबन तबै सारथि तें पूँछा ॥ यापरको आयो मति छूँछा ॥ तिन्ह ऊधव कर नाम बखाना ॥ गये अहैं
सो यमुन नहाना ॥ सखिन लख्यौ द्रुत जाइ तहाँई ॥ अति सरूप जिमि कृष्ण गुसाँई ॥ कवित्त ॥ घनकीसी प्र-
भा चारु हीरन केहै सिंगार कटितट पीत पट बैजयंती मालहैं ॥ बेन अरु बेत लीन्हे कंधर नमित कीन्हे क-
मल सुभग हाथ तिलक सुभालहैं ॥ कुंडलकी झलक घुँघुरारी अलक सोहैं मुकुट मनोज मान हरन र-
सालहैं ॥ श्यामको सरूप जानि अतिही अनूप मानि नंदलाल आये मानौ प्रेमके दलालहैं ॥ दोहा ॥
मंद हँसत चितमै बसत जान्यौ गिरधर दास ॥ मुदित होइं ब्रज सुंदरी आई ऊधव पास ॥ ७७ ॥ तिन्हतें कहि
सब अरु सब सुनिकै ॥ गुप्तबार तामन मै गुनिकै ॥ सब बाला ऊधवहि लवाई ॥ कदली कानन महँ चलि-
आई ॥ जहँ राजत राधा सुकुमारी ॥ व्याकुल हरि वियोग की मारी ॥ जिमि तुषार ते हनके दारा ॥ तिमि राधा बाधा बिस्तारा ॥
जहाँ रंभुके पादपलागे ॥ चिक्कन खंभ सजल अनुरागे ॥ बर मंदिर मंडित कालिंदी ॥ जहाँ लसत कोई अरु इंदी ॥ तहाँ गए ३

...धव पास ॥ ७७ ॥ तिन्हें कहि ...
...कदली कानन महँ चाल-
...सज्ञानी ॥ माधव को सँदेश अनुमानी ॥ तहँ व्रज तियन खबर तब दीन्हा ॥ सुनि हरि सखा बुलाइ सो लीन्हा ॥ दोहा ॥
...सन पर बैठाइ ... स्वागत भाषि ॥ तापर कीन्हो प्रेम अति कृष्ण सखा अभिलाषि ॥ सोरठा ॥ देखि वियोग समेत
...नीति निकेत अस्तुति भाषत जोरि कर ॥ ७८ ॥ छप्पय ॥ कृष्ण चंद्र परिपूर्ण देव देवी
परिपूरन ॥ नित्य लील हरि ली... वति तुम भव भय चूरन ॥ भूमा श्रीभगवान इंदिरा तुम गति बाधा ॥ हरि ब्रह्मा तब
गिरा रूप तुम राजति राधा ॥ शिव स्वरूप जब कृष्ण भे शिवा तबै तुम अति शिवा ॥ विष्णु रूप तब वैष्णवी वर देवी सुष
उद्भवा ॥ हरि कुमार अवतार सु तुम स्मृति ज्ञान विवरनी ॥ जब हरि भए बराह तबै तुम बर बपु धरनी ॥ देव ऋषी जब कृष्ण
तहा बीना बपु लीना ॥ नर नारायण कृष्ण शांति तन तुम तहँ कीना ॥ कपिल देव जब कृष्ण भे तब तुम सिद्धि प्रसिद्धि यह
दत्त भए जब देव हरि ज्ञान मई तव रूप तहँ ॥ २ ॥ यज्ञ भए जब कृष्ण दक्षिना तुम कहवाई ॥ जबै उरु क्रम रूप जयंता तब
तुम गाई ॥ जब पृथु भए कृपाल अर्चि तब तुम श्री राधा ॥ मत्स कृष्ण तब श्रुति स्वरूप तुम ज्ञान अगाधा ॥ कूरम जब त-
व बासुकी शक्ति सु तुम गुन भवन अति ॥ धन्वंतर पुरषेंद्र प्रभु तब तुम औषधि रूप यति ॥ ३ ॥ हरि नृसिंह जब भए आपु
तब तिनकी लीला ॥ जब बामन भगवान आपुकी रति बर शीला ॥ परशुराम घनश्याम तबै तुम धार कुठारा ॥ व्यास जबै
जगदीश वेद गति रूप तुम्हारा ॥ संकर्षन श्रीकृष्ण जब तबहि भई तुम रेवती ॥ हरि जब बुध तब बुद्धि तुम सदा नाथ पद-



तब आप प्रभा कहवाई ॥ बासव जब बलबीर सची तब तुम सरसाई ॥ जबहि रन्य रेता प्रभू तब तुम हेति हिरन्मई ॥ राज
राज बुजराज जब तब तुम निधि प्रकृति भई ॥ ५ ॥ छीर सिंधु जब कृष्ण लहरि तब आप अनूपा ॥ परब्रह्म जब कृ-
ष्ण तबै तुम प्रगट सरूपा ॥ जौन जौन हरि रूप भए तहँ तहँ तुम जाई ॥ जबै नंद सुत कृष्ण तबै राधिका कहाई ॥
दोउ लीला कर परम अति कहिन सकत श्रुति सत्य यह ॥ परम पुरान परंस ए सबते पर अरु सबन महँ ॥ ६ ॥ दोहा ॥
हरि स्वामी तुम स्वामिनी सब सुख दायक चारु ॥ तुम रति तव अति मति भई जब मन मोहन मारु ॥ ७८ ॥ इमि कहि
पत्र दीन्ह छवि छाई ॥ लीजै आप्यौ आप कन्हाई ॥ अरु शत पत्र लेहु तुम एहू ॥ पृथक पृथक प्रति याकहँ देहू ॥ ऐ-
हैं आशु कह्यौ भगवाना ॥ आरत हरन विश्व सिरत्राना ॥ राधा लोचन लायो पाती ॥ बाँचि लाय छाती बिलखाती ॥ व्या-
कुल ह्वै वृषभान कुमारी ॥ गिरी अवनि तन चेत बिसारी ॥ तब चंदन गुलाब छिरकायो ॥ चेत राधिका के तन आ-
यो ॥ देखि ऊधवहि रोवन लागीं ॥ दुखके अंकुर बोवन लागीं ॥ दोहा ॥ दृग जलते प्रगटत भयो लीला सो नरपा-
ल ॥ न्हाए निरखे पीवते छूटै यम जंजाल ॥ ८० ॥ इहि बिधान राधा दुख भारी ॥ सुनहु कथा नरपति ब्रत धारी ॥
सुनि ऐहैं पुनि परम कृपाला ॥ यादवते यह बचन निकाला ॥ कब देखिहौं मन मोहन प्यारे ॥ मनसे बोल अंग द्यु-
तिधारे ॥ हम चकोर शशि यदुकुल शशी ॥ हम सिषि घन मूरति मन बसी ॥ उनके बिना एक छिन मोहीं ॥ होत
कलप सम कल्पत ओहीं ॥ बिना गोबिंद इंदु मुख बारे ॥ मम लोचन तें बहत पनारे ॥ कबहूँ ऐहैं मम दिसि हेरी ॥



तैसी इच्छा है तिनकेरी ॥ आजुहि आवत कहि गय ऐसे ॥ एते दिवस बिताए कैसे ॥ दोहा ॥ जैसे सीतहिं सुखद भे लंक
जाय हनुमान ॥ तिमि तेरो आए प्रान मम ऊधव चतुर सुजान ॥ ८१ ॥ आसा दै ब्रज नाथ सिधाए ॥ आवन भाषि गए
नाहि आए ॥ नहिं जाकी जुबा है साँची ॥ काफल ताके पत्रहि बाँची ॥ ऊधव कह्यौ तहाँ मैं जाई ॥ तुमरी दशा कहौं
समुझाई ॥ तुमरी शपथ सत्य करि जानो ॥ लैहौं कृष्णहिं झूठ न मानो ॥ राधा मुदित प्रीति अति कीन्ही ॥ शशिकी वस्तु
ऊधवहि दीन्ही ॥ चंद्रकांत द्वै मनी सुहाई ॥ अरु द्वै कमल अमल नरराई ॥ छत्र सिंहासन चामर दीन्हो ॥ मनते प्रग-
ट जाहि हरि कीनो ॥ दिय ऐश्वर्य ज्ञान बिज्ञाना ॥ कृष्ण संयोग सुकारन जाना ॥ दोहा ॥ भक्ति भाव निर्गुन सगुन
अरु बैराग्य सुजान ॥ तुम कहँ अक्षर होइहै राधा बचन बखान ॥ ८२ ॥ शंख चूड़के रोमनि भारी ॥ देत भई शशि
बदना नारी ॥ तथा सकल गोपी हरषानी ॥ दीन्हे बहु मनि भूषन आनी ॥ प्रेमानंद भगन ब्रज बनिता ॥ कहत ऊ-
धवहिं आनँद सनिता ॥ पुनि पुनि तिनकी पुलकत छाती ॥ आई आजु ईशकी पाती ॥ जो जो लिख्यौ कृष्णया-
माहीं ॥ अरु तुमतें जो कहा तहाँहीं ॥ सो सब मोहिं बखानहु ऊधो ॥ अतिही अहै मोर मन सूधो ॥ ऊधव कह्यौ सुनहु
सो छेमा ॥ तिन्ह कह तुमतें अतिही प्रेमा ॥ इक दिन मोहिं बोलाइ भगवाना ॥ कहेउ कहेहु तुम तिन्है सुजाना ॥ दोहा
गुन है बंधन मनुज को ताते निर्गुन होइ ॥ तौनहि दुख संसार में उत्तम ज्ञानी सोइ ॥ ८३ ॥ स्वयंब्रह्म परतें परस्वार-

दृगसोई ॥ धन छीजत नहिं मालुम होई ॥ तैसेइ जीव ब्रह्म मधि माया ॥ तमनासे सोइ ब्रह्म दिखाया ॥ सो साधन अति सुखद बिचारा ॥ सांख्य केर जानहु निर्धारा ॥ हे गोपी अब योगहिं करहू ॥ ममता अरु भ्रमता परिहरहू ॥ भोग रोग कहं जोग दवाई ॥ करहु यथा यह दुख मिटि जाई ॥ ऐसे मोहिं भगवान बखाना ॥ मन महँ करहु हमारो ध्याना ॥ दोहा सुनि बिहँसी सब नागरी लै निज मनको भाव ॥ पृथक पृथक भाषन लगीं जस जाके उर आव ॥ श्रीगोलोक निवासिनी भई रहीं जेबाल ॥ तेसिगरी भाषत भई ऐसे वचन रसाल ॥ ८४ ॥ कवित्त ॥ आपुतौ सिधारे मधुपुरी मैं हमारे प्यारे आवत हौं आज काहे मग रथ रूंधोजू ॥ जायकै पढ़ाई पाती ऐसे हैं बिश्वास घाती पढ़िना फटत छाती देखि काल ऊधोजू ॥ कूबरी को भोग जोग हम दुख दूबरी को आए समुझि तैसे तुमहूं ख्याल सूधोजू ॥ जानत नावक की कुटिलता बिचारे बिना मछली को मार धीर धारै पग ऊधोजू ॥ दोहा ॥ सो सुनिकै गोलोक की द्वारपाल का जौन ॥ प्रेम बिवस बोली सबैं सुमिरत कृष्णहि तौन ॥ ८५ ॥ कवित्त ॥ अरे आली तूं तो नहिं जानत खियाल वाको बनमाली जन्मके कपट साली जानेहैं ॥ चाहत चकोर चंद खात है अंगारहू को कंज देखि सूरको मुदित मन मानेहैं ॥ घनको निहारै मोर स्वाती बूंद चातक हूं दीपमें पतंग जाय देत निज प्रानहैं ॥ हमकरैं चाह ताको नेक पर बाह नहिं आह एक अंगी प्रीति दाह दुख आनेहैं ॥ दोहा ॥ परम बिकल शृंगार की करन हार सब बाल ॥ ऊधोतें भाषत भई उरकरि शोक बिशाल ॥ ८६ ॥ कवित्त ॥ चंद्र अति शीतल सुधाकर कहात जौन ताको मित्र आगको अंगारालै चबात है ॥

कहा दोषताको पै अभागसो चकोर ऐसो जीवन जगत अन्ध अम्मृत समात है ॥ नंदलाल नाम लेत दुखकी नलेस रहै तिनकी सरवीन को दुख दासात है ॥ ऐसीही बिधाता दुख दाता अनरीति करै नेह करनाता नेह दीपसो दुखनहै ॥ दोहा ॥ जैनित रही सवारती हरिकी सेज सुजान ॥ तिनको जस बरनै कहा पै मनि कहत महत दुख आन ॥ ८७ ॥ कवित्त ॥ व्याधा बानमारि जोहत जीव जीवन को तोऊ सो बिचार लेत आज एते मारेहैं ॥ भौंह धनु तान बान चितवनि तीरवे अति एकमें कड़ोड़न को आसुमारि डारेहैं ॥ जानि निरजीव लैकै स्वादहूते छाड़ि दीनो निपटनिठुर जन्महीते निरधारेहैं ॥ मरोकोऊ जीवोसो बलायते गोपालजूकी आपुही गईथी टेरि बेनु को पुकारेहै ॥ दोगऊ लोककी पारषद जे जनमी भूपाल ॥ ते सिगरी भाषत भई ऊधवते तेहिकाल ॥ ८८ ॥ कवित्त ॥ कहिकै कन्हाई ओ कन्हाई तुमकरो छोह ताके तोहिं साव हँसी यह है ठिठोलियां ॥ नाम जाको मोहन है मोहन निपट आली जोग क्यों न कहै सो कृपान कीसी बोलियां ॥ दुखजाहि लागयो न कहै सो कहा गिरधर जानतचतुर आय ब्रजबालभोलियां ॥ जाके पाव फटै नबिबाई सो क्या जानै पीर हीरा और काँच दोऊ एक भाव तोलियां ॥ दोहा ॥ ॥ वृंदाबनकी नारिसब जेही चौकीदार ॥ तिनन्ह तहाँ ऐसे कह्यो सुनिये भूभरतार ॥ ८९ ॥ कवित्त ॥ उनकी तो बात नेक जीवमें बिचार करो जोग ना कहायो यह कहरायो हांसीहै ॥ नेह कह छोरयो ब्रज नारिन ते मुख मोरयो अबतो पियारी अति भई कंस दासीहै ॥ कूबर कुरूप अति कुटिल कलंक बान दुखकी समूह दुख मति जासु नासीहै

नासी मरजाद ब्रजबासिनकी गिरधर जग पुन्यरासी और कौन कुबजासी है ॥ दोहा ॥ गोबर्द्धन बासिनिस-
कल करि जल पूरित नयन ॥ ऊधवतें बोलत भई दुखते भीजेबयन ॥ ९० ॥ कबित्त ॥ बिषयीसदा को और सि-
षई अहीरन को कहा जानै जोग कैसो मूरख गुपाल सो ॥ सुनि लीनो कहूते बताइ दीन्हो जोग इन्है जानत
नगिरधर ताकर जंजाल सो ॥ एकतो रह्योई ऐसो कुबजा को साथ मिल्यौ जैसे तित लोकी को चढ़ायो नी-
मडाल सो ॥ भैंसको बजायो बाजा देषि कूदी चारों पाँव मूरष बखान्यौ कैसो जान्यौ सब ताल सो ॥ दोहा ॥
कुंज निबासिनि नागरी भरिलोचन की लाल ॥ ऊधव ते भाषत भई सुमिरि देवकी लाल ॥ ९१ ॥ कबित्त ॥
हाय हाय मोते न कही जायबात कछु जाहि देख्यौ दृग ताकी पाती आज आई है ॥ जान्यौ न मेरो दुखता-
तें है पठायो जोग कहा भयो घनेदिन रहे नियराई है ॥ कैसेकै जाइये और दरस हरिजूको पैये अतिही न-
गीच नाहिं मूरति दिषाई है ॥ डूबि दुख ऊबिकैसे पारलगे गिरधर छाती पर गिरधर भए दुख दाई है । दोहा
तबै निकुंज निबासिनी बोली ऐसे बात ॥ हे ऊधव धवतें कहेउ मेरे बैन बिभात ॥ ९२ ॥ कबित्त ॥ वृंदाबन बी-
च भान नंदिनी निकट आली चलत मराल चाल देखेऊ दृगनतें ॥ बलदेव साथ लीने मुकुट नमित कीने
बांसुरी बजावैं गावैं तान को सुरनतें ॥ सोछबि सुजान और ईछन की तीछनता ताछनतें काछन पिछौरी
बसी मनतें ॥ गिरधर रूप नहि बिसरत नेकु मोको साकरी गलीतें गली आजुलौं यातनतें ॥ दोहा ॥ यमुना

केरो यूथ तब बोलो ऐसो भूप ॥ सुमिरि सुमिरि सो मोहनी मूरत परम अनूप ॥ ९३ ॥ कवित्त ॥ बापुरो बिधाता कहा साचहू बौरायगयो ऐसोहै रचत खेल दुखको लखवाकरैं ॥ जाहि आँख खोल देखयो ताहि आँखि मूँदि देखैं मोहन को भोग खाय मृतका भरवा करैं ॥ जाकेदेखे अतिही अनूप अंगभरे रूपता को कैसे काटि ध्यान ब्रह्मको रखाकरैं ॥ जीवन खसम के ओलगावैं भसम अंग ऐसी रसम कौन भूजिकर खाकरैं ॥ दोहा गंगाकेरो यूथ तब बोलत भयो महीप ॥ सुनि ऐसो तिनको बचन श्रीपति सरवा समीप ॥ ९४ ॥ कवित्त ॥ कुबजा जोरही ही कुरूपा सोभई सरूपा सुनत हरीजू पीठपे की गाँठरी हरी ॥ दासीकी उदासी अविनासी ने बिनासो सब गिरधर पटरानी रूप रंगमे भरी ॥ कंसहू नसायो मजूरिन हजूरिन भई आजकाल दसा मेरी दूर कर्मते टरी ॥ कोऊ दिन ऐसोहैहै ताहूको बिचारि देखो सदा कोऊ डाल फूली नारही ओना फरी ॥ दोहा ॥ रमा यूथकी नागरी यमा कियो जो दुःख ॥ ताहि तबै काढ़त भई लखिऊधव को मुख ॥ ९५ ॥ कवित्त ॥ एकदिन ऐसेई हमारे बस श्याम रहे आज काल कूबरी की दसा अतिभारीहै। सोचजो कबहूं हमारो ऐहै गिरधर हमहूं करैंगी ऐसीसवत खुआरीहै ॥ अपने नसीब के वसुजीब होत काम सब मोहन अजीब रूपबिश्व हित कारीहै ॥ सदाना बसंत रहै पूरोरा का कंत रहै कहांलौ रहैगी नावकागद सुधारीहै ॥ दोहा तबै सखी मधुमाधवी करसु यूथ बर जोन ॥ अपने मनकेरी बिथा अवन सुनावत तोन ॥ ९६ ॥ कवित्त ॥

ऊधोजूदोष कछु माधवको अहै नाहिं जाइकै अकेले माहिं बुझायो ऐसे कूबरी॥ जोग जोन गोपिको कह ह्वै हौ गिरधरतो मैना करोंगी भोग गुनन अब दूबरी॥ सोई कहवायो उननही नंदलाल गुन ताते है कराल काल आपद अजूबरी॥ तेरोहै नसीब दुष्ट तैहू करमन मानौ मेरोदिन ऐहै जब समुझौगी खूबरी॥ दोहा॥ बिरजाकेरो यूथ तब ऐसो कहत सुबोल॥ व्याकुलबूड़ो बिरह तें सुमिरि श्यामदृग लोल॥ ९७॥ कबित्त॥ अहो श्री मुकुंद कुंद मालवारे नंदलाल दासी पति होय आजकल कछु कुंदभे॥ भोग केरो रोग मोहिं जोगकी दवाई देत औरहू कुपथके बढ़ाइबे को तुंदभे॥ कोऊको विआह और गीत गावै कोऊ केर चातक पै दाया कीनी मघा मेघ बुंदभे॥ ऊधोजी बुझावौ तौ सुझावौ औ बुझावौ आग गिरधर काहे हेत द्वंद दै अदुंदभे॥ दोहा॥ ललित सुललिता यूथ तब ऐसे बरनत बात॥ कृष्ण चंद दुख तापते तपत कंज समगात॥ ९८॥ कवित्त॥ अरे आज कूबरी को नई बदनामी देत रामजूके राजमें अकाज कीनो बढ़िकै॥ बनमे निकारि दीनो दसरथ को प्रान लीनो रानीको अजस दीनो भूति नासी चढ़िकै॥ सोई यह कूबरी को ऐसोई असर जानो ब्रह्मा बिष गाठि दीन्ही चाम माहिं मढ़िकै॥ कंसको नसायो औफसायो ब्रज अवतंस हमन पठायो जोग कान मंत्र पढ़िकै॥ दोहा॥ सुनि तिनके ऐसे बचन भरे सबनके नैन॥ यूथ बिशाखाको तबै बोलो ऐसो बैन॥ ९९॥ मैतों नहिं दोसु कोऊ केर देत कर्म तजि एक घनश्याम मेरे चित्तमें लगे रहैं॥ गायको चराय नंदरायके भवन आय मंदमंद गाय मन आनंद पगे रहैं॥ ग्वालन के साथ आछे गऊ पाछे गिधर काछे पटबाछे घने कामहूं ठगे रहैं॥ ईछनके तीछन निरीछन तिहीछन सो सीस मोर पीछन परीछन जगे रहैं॥ दो॰

माया यूथन की सखी बोली तबै महीप ॥ अपने मनकी कामना प्रगटत परम समीप ॥१००॥ कवित्त ॥ मोकोतौ निहा-
री बन गहबर मुरारी जबप्यारी यों पुकार लीनी सारिकों पकरिहाथ ॥ कंठ लीन्हो लाय औ मल्हायके सुबोले बो-
ल अति लोल गिरधर सोहै मोर पिक माथ ॥ भूलत नबात सोक बूलत बचन सत्य दूलत दृगन आगे तैसेई स्वरूप सा-
थ ॥ एक बार ऊधोजी विचारि आनि दया भरी देवै दरशन आय वृंदाबन प्रान नाथ ॥ दोहा ॥ आठ सखी बैठी रहीं
मुख्य सुनहु नरपाल ॥ तिनतब ऊधवते कह्यौ ऐसे वचन बिशाल ॥१०१॥ कवित्त ॥ कहा कहा कहिये की न कहि-
ये विचारो जू गुनहैं अपार प्यारे राजिव नयनके ॥ रोमरोम जीभ पाय कहै तौ कह्यौ नजाय जानत ब्रजेश सब म-
र्दन मयनके ॥ सूधी यह बात जानो गिरधरतें बखानो सौंकि सीधी एक यही दायक चयनके ॥ धारिये चरन सुख-
अयन जयन बिश्व टारिये महान दुख बनिता बयनके ॥ दोहा ॥ तब षोड़श सखिसुंदरी मनमैं बात विचारि ॥ कहत
चहत दृग महत दुख चहत दरस गिरधारि ॥१०२॥ कवित्त ॥ अटक रहत मन चलन चटक पर नयन मटक बरनग
धर परघट ॥ घट घट रमत दमत अघ अयगन नमत अमर गन बदन सरस झट ॥ झटकत अनतन मरदत बर-
धत हरष कर ष मन परखत बरनट ॥ नटखट सब मन हरत नवल नव चढ़त बढ़त रट लखन अवस अट ॥
दोहा ॥ बत्तिस बर ब्रजनागरी तिन्हकहँ मरदेउ मारु ॥ कृष्ण सखातें कहि हँते बानी अतिसय चारु ॥१०३॥ कवित्त
प्रीतितें मनैये मित्र नीतितें मनैये शत्रु लोभीको सु धनदै मनैये वस आइहै ॥ गुरुको प्रनाम कीजै आदर द्विजन

दीजै रसिकन को रसतें अतीह सरसाई है ॥ नमस्कार सूरज को धूरजटि जल धार गिरधर पर उपकार ते म-
नाइ है ॥ पाथर पसीजै कहा कंज पात भीजै कहा निरमोही संग प्रान विथाही गँवाइ है ॥ दोहा ॥ श्रुतिरू-
पा गोपी तबै करत कृष्ण को ध्यान ॥ ऊधवतें ऐसे कहत लोचन बहत सुजान ॥ १०४ ॥ कवित्त ॥ बिश्व को
करन हार दुख को हरन हारो एक ईश सब बीच व्यापक ललाम है ॥ घट घट में प्रगट प्रकाशत कूट रूप
मायापति परब्रह्म परंतत्त्व नाम है ॥ इद्री मन कर्म बानी जाहि ना सकत जानी दीन दुख दरन प्रबीन
सुख धाम है ॥ श्याम पति मेरो करि दया दासी ओर हेरो फेरो दरसन दीजै कोटिन प्रनाम है ॥ दोहा ॥
ऋषिरूपा अबला सकल कहत याद वहि देखि ॥ दुख कांदव के मधि परी कृष्णहि परम परेषि १०५
कवित्त ॥ परंब्रह्म परंतत्व पररूप परंधाम परम परेस पुज्य पाल श्रीगुपाल हैं ॥ जाकी एक छाया मा-
या जगत रचाया भाया पार नहिं पाया गाया शेश श्रुति भाल हैं ॥ गोपी नाथ गिरधर कंस दर केशीदर
दुखहर दयातर चतुर कृपाल हैं ॥ जानि निज दासी पर कासी दया ब्रज बासी कीजै निज पासी मैं ख-
बासी क्यौन हाल है ॥ दोहा ॥ तबै देव रूपा सकल भूपति बोली बयन ॥ बड़ो विषाद बियोग को सु-
मिरत नीरज नयन ॥ १०६ ॥ कवित्त ॥ अंस और अंसहू के अंस छठे अंश पुनि विकला कला सुजान
पूरन अवेश हैं ॥ जेते अवतार ते बिचार गाए बेदन मैं परिपूर्णतम एक कृष्ण ग्वाल भेश हैं ॥ जाहि भनै

चारिमुख पाँचमुख षटमुख दशशत मुखशेष अतिही विशेषहैं॥ नाशत कलेशलेशकेशव परेसदेव गिरधर परममेरोम मस्तकहमेसहै॥दो॥ तबैयज्ञ सीता सबै परम विनीता नारि॥ कहत बचन सरबज्ञ मति उर आनंद बिस्तारि॥१०७॥कबित्त॥ कुंज ओनिकुंज सुख पुंजगरे गुंज धरे हरे हरे लताके बिहारी बनवारीहैं॥ राधाके हृदय बासी सुखरासी परकासी अविनासी दीनबंधु बरगिरधारीहैं॥ कंसमदहारी बेरगुधारी बिश्वहितकारी कारी मुमूरत हमारी अति प्यारीहैं॥ नारीए बिचारी सारी दासीहै तुम्हारी प्यारी दुख कीजे छारी दीजे दरस दुखारीहैं॥ दोहा॥ तबहि रमा बैकुंठकी रहन हार सब बाल॥ ऊधव तें ऐसो कह्यो सुमिरत श्री गोपाल॥१०८॥कबित्त॥ रासको रचायो ओम चायो खेल रूप रास अगिनतें बचायो कृष्ण कानन अनूपमें॥ सुखमा सचायो ओब चायो दसा कामकेरी लीक को खचायो तीन लोक देवभूपमें॥ कारन सबनके बिदारन महान दुख गिरधर गिरधारयो ऋतु कोप रूपमें॥ काढ़िकाढ़ि शोक सिंधु सरिता सरोबरन्ह कृपासिंधु काहेको डुबाओ दुख कूपमें॥ दोहा॥ स्वेत दीपकेरी सखी व्याकुल करत बिलापु॥ ऊधवतें भाषत भई करत तरुन अतिताप॥१०९॥ कबित्त॥ लीन्होहै उठाय गिरि गिरिधर मेरेहेत भूलतनबातसोई डुलत दृगनमें॥ झूलतहै शूल दुख आनंद अनुकूलत फूलतहै शोक फूल आपके लगनमें॥ छूलत करे जोरेजो होतहै पियारे बिना खूलतन संकठकेबार भारतनमें॥ तातें कृपासिंधु दीन हेत प्रभू आर्ति हर राखिये अनाथ नाथ नाम पोथियनमें॥ दोहा॥ तब ऊधव बैकुंठकी बासिनिबिल कुल व्याल॥ व्याकुल बरनत इमि भई ऊधव सुनहुँ रसाल॥११०॥कबित्त॥ देख्यो जिनहैतको अहैत ताके

आगे कहा घन श्यामरंग मेरे आँख आगे छायोहै ॥ इहाँतो बियोग अहै योगको कहत तुम त्यागिकै बिशेष घटा कौनको सुहायोहै ॥ बिना गिरधरलाल छूटै कैसे दुख जाल पायो जाहि सुगम सोन जात ऐसोधायोहै खाय रह्यो माल पूआ बैठिजो समाज बीच ताहि कहा पीसबो पछोरबो सुहायोहै ॥ दोहा ॥ अजित पदाश्रितकी सकल बोलीं अबला बैन ॥ सुमिरत राजिव नैनकों जिन्हकह चैन अहैन ॥ १११ ॥ कबित्त ॥ जाको मंत्र ताहि सोई सकत उतारि आली जाको रच्यो इंद्रजाल ताहीतें नसातहैं ॥ काट्यो जाहि सर्प बिष सर्पही उतारत है खायो विष जौन सोतो बिषहीते जातहैं ॥ ताते समुझाय दी जो ऊधवजी माधवकों आइ काटै मोह गिरिधर जगतातहै ॥ देखियै विचारिकरि आपहू बिज्ञान रूप नातो नातो प्रेमको सो प्रान पै बिसातहै दोहा ॥ लोकाचलकी तित रही जितनी ललना भूप ॥ तेसिगरी बोलत भई बानी अतिहि अनूप ॥ ११२ ॥ कबित्त ॥ कृष्णके चरन बीच लागे मेरे नैन दोऊ त्यागि जाहिं सूझत नबूझत कछू अहैं ॥ जैसे अरबिंद मकरंदको मिलिंद ज्ञातातैसेई गोबिंद मेरे सुखदहि येलहैं ॥ मोहन के छोहन छरीसी भई सूखि आली अबतो भईसोभईताकीतौ कहाकहैं ॥ लीजिये बचाइ और दीजिये दरश आय गिरधर एकरूप आपकोंसदा चहैं ॥ दोहा ॥ बोलीं सिगरीश्री सखी सुमिरत श्री श्रीनाथ ॥ गाथ महादुखतें भरी अरथ आपनेसाथ ॥ ११३ ॥ कबित्त ॥ जसको नसावैहै कृपिनताई विश्वबीच क्रोध सब गुनको नसावै अतिहालीहै ॥ मित्रता

नसावै हासी खरच नसावै धन नासकरै कुलको कुचाल जो संभालीहै ॥ गिरधरको दरस नसावै है सारो
पाप प्रानको नसावै जो भुजंग त्रियकालीहै ॥ प्रीतहू नसात कीन्हे कपट कुटिल बात आली सोई बात मैं नि-
पुन बनमालीहै ॥ दोहा ॥ तबै मैथिला नारि सब बोलीं ऐसे बात ॥ बिछुरे श्री ब्रज नाथके दुखते पूरित गा-
त ॥ ११४ ॥ कवित्त ॥ धनदै सभारैं तन तनदै सभारैं मित्र सबतें सुमित्र अति उत्तम कहातहैं ॥ सोई हम कीनो
सबदीनो गिरधरजूको सोतो त्यागि नातो साथ दासीके बिभातहैं ॥ कहा अबकीजै काकहीजै मनलीजै
बोध तोलिए कहा जहां नपसंगो अटातहै ॥ दोऊ हाथ ताली बाजै नाह खाली चोट लागै नेहके सभारे कोऊ
छोट होइ जातहै ॥ दोहा ॥ कौशल पुरकी कामिनी दुखमें अतिही मग्न ॥ तेसब बोलीं भूमि पति लगीं कृष्णपद
लग्न ॥ ११५ ॥ कवित्त ॥ कोऊ नहिं जानत वियोग की दशा कराल मरत पतंग सोऊ दीपक को हांसीहै ॥ मोहन
के हेत हम अतिही अचेत रहैं तिनको गिरधर और कछु भासीहै ॥ औरहू पठाय दीन्हो जोग करो सोगहरो
भोगहेत भई मेरे प्यारी कंस दासी है ॥ पीरतौ नजानी धर्यौ नोन जरे अंगपर बूड़त करन बीच बांधी और फा-
सीहै ॥ दोहा ॥ अवधनगरकी नागरी भईराम बर जौन ॥ ऊधवतें ऐसे कहत सजल नयन करि तौन ॥ ११६ ॥ कवित्त
आसा दैकै देखत तमासा आप दूत भेजि आसातो दिखावन चहत यमराजकी ॥ आशा लै थम्हायो हाथ
आधेको बतायो मगबीच कीनो विवर सुकैसी बात लाजकी ॥ बांधि नेह पांसा बीच पांसा धर्यौ तीन काने

पासनहि आए सास अवधि दराजकी ॥ छलीसों चहिय छल नाभली सो गिरधर बूड़त खबर लेहु ललना
जहाजकी ॥ दोहा ॥ तब पुलिंदिका नारि सब रहीं कृष्ण प्रियजौन ॥ ऊधव माधव के सखा तिनतें बोली तौ-
न ॥ ११७ ॥ कवित्त ॥ एही कृष्ण राम जब भए दसरथ धाम देखि रूप आई सूपनखा ललचायकै ॥ पतिके
करन काज बीनती नमित कीनी वृथा ताकी नाक कान लीन्हो कटवायकै ॥ भलोहू करत दसा ऐसी भई
गिरधर ऐसेई सदा दुख दायक सुभायकै ॥ तुमरी औहमारी तौ आबरू बचीहै अजौ नातौ कौन जानै
कहा करते रिसायकै ॥ दोहा ॥ अबला सुतल निवासिनी भईरहीं जेभूप ॥ तेसिगरी ऐसे कहहिं परम
दुःखके रूप ॥ ११८ ॥ कवित्त ॥ बामन को रूपधर ब्राह्मणभएहे एही जाइकै दनुज नाथ द्वापर पै कह्योतबै
दीन्हो बलि दान ताको कीन्हो बलि दान समतन मन धन धाम छनमें लियो सबै ॥ तीनि पैर भाखिती-
नलोक नाप्यौ गिरधर ताहूपर बाँधि मार्यौ और नारह्यौ जबै ॥ जन्मही के कुटिल कलंकी औनिसंस
ऐसे आली मित्रद्रोह एक इनको सदा फबै ॥ दोहा ॥ तबै सकल जालंधरी भरी भयंकर शोक ॥ बोली ते
सुमिरत हरी हेनृप सिगरो थोक ॥ ११९ ॥ कवित्त ॥ पूरवभयो कराल हाटक कशिपु दैत्य प्रहलाद हेत
नरसिंह रूप धार्यौहै ॥ खंभतें प्रगट्ट झट्ट कटा कट्ट अट्टहास सट्ट चमकत अट्ट बीमै मारडार्यौहै ॥ दा-
सको बचाय लीनो सीसपर हाथ कीनो सोई कृष्ण रूप होय लीला बिसतार्यौहै ॥ क्रोधरूप दया सिंधु

शांतिरूप भेकठार कहा जानै कहा गिरधरने बिचार्यो है ॥ दोहा ॥ भूमि गोपिका सकल तब आनि कृष्ण को ध्यान ॥ बो
लीं ऐसे कौपिके ऊधवते मति मान ॥ १२० ॥ कबित्त ॥ निरमोही अतिही लगै है मोही काम मोही फिरत कहा तौके नहीं
धौं अवरेषिये ॥ आज काल कुबजा को अहइ महात्म आली भाग आपनोही ओछो तिन्है क्यों परेषिये ॥ पाती
कों पठाई येहु बड़े भाग जानि लेहु कारे सारे कुटिल कहाँलौं लीक लेषिये ॥ देवता न जानै तहाँ लेषो कानरनके
रोखोटो निज दाम ताहि कैसेकै सरेषिये ॥ दोहा ॥ बरहिष्मती महामती हतीं तहाँ तिय सर्ब ॥ बोली ऊधव को निरखि
पृथिवी पतितेहि पर्ब ॥ १२१ ॥ कबित्त ॥ लषहु दयाल के चरित्र को अनारि नारि कोल रूप धारी सारी धराकों उबारी-
है ॥ सोई जब बीज कों बिनाश कीनो गिरधर पृथु होइ दोहि लीनो औषधी सुसारी है ॥ जब जब पाप भयो तब तब
रूप लयो दुख कहँ हयो नयो धर्म निरधारी है ॥ कौनसी हमारी चूक भारी अबकी सुपारी देखिकै अनारी न्यारी त्यागि
गिरधारी है ॥ दोहा ॥ लता रूप सब गोपिका भाषत ऐसे बात ॥ नाथ होहिं ब्रजनाथ जिमि आइ दयाल बिभात ॥ १२२
कबित्त ॥ भए जब बैद सिंधु बीचतें श्री गिरधर नाम धनवंतर जगत बीच गायो है ॥ ऐसेई अनेक रूप मोहिनी बराह
कच्छ मच्छ राम भृगु राम श्याम नाम पायो है ॥ टेर्यौ जब नाग त्यागि गरुड़ सिधाये तहाँ चक्र कों चलायो नक्र शशि महिना-
यो है ॥ बेदन हमारी भोरी हरत मुरारी क्यौंन दीन के दयाल नाम बेदन में गायो है ॥ दोहा ॥ नाग सुता अति दुख युता
केशव सखा निहारि ॥ दृग बहती कहती भई चहती चतुर मुरारि ॥ १२३ ॥ कबित्त ॥ कूबरी की देखो तो लगन गिरधर बीच

पहिले जनम नाक कान कटवायोहै ॥ भ्रातन मरायो कियो जौन राम मन भायो कंसदासी होय पटरानीपद पा-
योहै ॥ तुमतौ जौं एक दिन आवैना मुकुंद प्यारे कैसे कैसे मान करि बदन फुलायोहै ॥ भक्ति बस श्याम आठोंजा-
म गुनधाम आली आपनो कसूर हरि वीच ठहरायोहै ॥ दोहा ॥ तबै सिंधु सुकमारि सब भई रहीं जेतीय ॥
बोलीते कमनीय अति चहत हीयते पीय ॥ १२४ ॥ कबित्त ॥ चंचला बखानी जौन रमा विश्वरानी तौन एकपलं
कोऊ ठाम थिरहोय नारही ॥ तिनके चरन त्यागि जातसो कहूँ न भागि हमतौ कह बहम ऐसी कातिन्है नही ॥
आवैं जो कृपाल स्वामी दीन बंधु गिरधर कृपा सिंधु नाम ताते जो कहो सोई सही ॥ दासी कमलासी ताहि कहाए
अहीर नारीभागको निहारो मेल हेम आस्मकोकही ॥ दोहा ॥ तबै अप्सरा अंगना बोली दुखते पूरि ॥ बड़ी चतुर
चालाक चित जानतहै विधि भूरि ॥ १२५ ॥ कबित्त ॥ ऊधोजी माधव कह्यौ जोसो करेंगी सब अंग मैं बिभूति
आछी भाँतिसों लगावैंगी ॥ पहिरेंगी मृगछाल मुद्राकान वीचडारि हाथमैं कमंडल सकल सरसावैंगी ॥
होय अबधूत त्यागि देस औ सुहाग भेष अलख अलख भाषि खल काजगावैंगी ॥ एक बात पूँछ आवो कैब-
ताओ आप ज्ञाता आछत खसम कैसे मूड़को मुडावैंगी ॥ दोहा ॥ तब दिव्या बोलत भई ऐसे बचन अनूप ॥ वे-
हरिगुन जानहिं सकल बात सुनहु सोभूप ॥ १२६ ॥ कवित्त ॥ बामन भए हे बलि पास मै गए हे जब पहिले तो दी-
न्हो दुख करुना निधानने ॥ पाछे अति आछे कियो अतिही अनूप भूप राज दीन्हो बरदीन्हो गिरिधर त्रानने

सोधिलेत पहिले सुहास कौंरमा निबास जैसे नीम खाय रोग जाय सत्य जानने ॥ कहा जानै कौन चूक परी है
हमारी आली जाते ऐसी खींचकीनी प्यारे भगवान ने ॥ तदनु अदिव्या नारि सब बोली ऐसे बात ॥ ऊधोते
सूधो बचन संकट उरन समात ॥ १२७ ॥ कवित्त ॥ मनु सत रूपा जबै कीन्हो हरि हेत तब दैत्यके समूह तबै लीन्हो
तिन्है घेरिकै ॥ देखिकै अचल कीन्हो नास दुष्ट समुदाय दीनबंधु कृपा सिंधु दास दिसि हेरिकै ॥ सदाईतें ऐसे
आए करत कृपा निधान बिना ताउ दिये हेम लेवै कैसे फेरिकै ॥ पैहो दीना नाथ कृपा कीजै मोपै गिरिधर रा-
खिए चरणबीच नारि निज चेरिकै ॥ दोहा ॥ सत्य व्रत बारी तबै बनिता बोली बैन ॥ ॥ आस एक भगवान की
कियो चैन गति मैन ॥ १२८ ॥ कवित्त ॥ ध्रुव प्रहलाद अंबरीष आदि भूमिपाल ध्यान धरि कृष्ण को परम पद
को गए ॥ दीनके दयाल को भजन करि ब्रह्मा शंभु पूजनीय देवता तें देवता पती भए ॥ जैसो जिन ध्यायो तिन
तैसोई प्रसाद पायो दीन बंधु गिरिधर दुख को सदा हए ॥ करनी न मेरी कछु बरनी कृपा निधान धरनी धरन
दीजै दरस प्रजा मए ॥ दोहा ॥ रजो वृत्ति की नारि सब बारी गिरा ललाम ॥ ऊधवते अबरेखि हित सुमिरत श्री घन
श्याम ॥ १२९ ॥ कवित्त ॥ हेमांगद हरीचंद अदिजे भए महीप दैदै दुख सबन बहोरि करुणा कियो ॥ तैसेई निहा-
रत हैं नारिन को गिरिधर पै न फाटजात मेरो कठिन महा हियो ॥ ऐसी नाहिं कीजै निज ओर नेक देखि लीजै कहा
विश्व नाथ भाव मूरख न मैं छियो ॥ ताते प्राणप्यारे जू दरश दीजै दीन बंधु साधु गुन लेत कहूं औगुन नहीं लियो

दोहा ॥ ब्रज बनिता तब तामसी बोली बचन महीप ॥ क्रूर बचन श्रीकृष्ण के कर्म प्रगट कुल दीप ॥ १३० काका
वृंदा जिन छली ताहि छलि लीन्हो कंस दसी देखो तो कन्हाई कैसे काम में अरूझाहै ॥ कुबजा तीन टेढ़ी औ त्रि-
भंगी भलो जोड़ मिल्यो एक धार असि काटै क्यों न प्रान जूझाहै ॥ देखो जब ताहि सोवत हारते सचिन्ह उर गिर-
धर निरमोही जन्मही तें सूझाहै ॥ ऊधोजी विचारि देखौ दूरि राखौ जोग लेखौ जानि लीनो भेव तात वाजी राग-
बूझाहै ॥ दोहा ॥ इमि भाष त मुरछित भई सिगरी नारि महीप ॥ कृष्ण कहत अवनी गिरी यादव मुख्य समी-
प ॥ १३१ ॥ तबै सबन बहु भाँति बुझाई ॥ ऊधव राधहि कहत सुनाई ॥ परिपूरन तम प्रिया सुजाना ॥ आज्ञा देहु-
चहत मैं जाना ॥ दीजै उत्तर की लिखि पाती ॥ जिमि मैं कहेउ हरिहि बहु भाँती ॥ सुनि राधा लेखनी मगाई ॥ लि-
खन लगी कागज पर स्याही ॥ जेते अक्षर तेते आँसू ॥ लिखि न जात लखि बाढ़ा गाँसू ॥ ऐसी दसा देखि मति-
माना ॥ कृष्ण सखा पुनि बचन बखाना ॥ केहि हित पत्र लिखत महरानी ॥ हम कहिहैं सब यथा जुबानी ॥
सो सुनि बाल दीन्ह तेहि काला ॥ ऊधव धन्य सु बचन निकाला ॥ दोहा ॥ राधाजू के चरन कहँ ऊधव करिसु
प्रनाम ॥ बिदा होय सब सखिन ते रथ चढ़ि चले ललाम ॥ १३२ ॥ नंद राय आगारहि आए ॥ जिमि तिमि क-
रि सोरैन बिताए ॥ प्रातनंद पद सीस नवाए ॥ यशुमति तें भए बिदा सुहाए ॥ मिलि वृषभान नंद उपनंदन
चले सखन ते कहि चढ़ि स्यंदन ॥ साथ लगे जे तिन्हहिं फिराई ॥ ऊधव गे मधु कानन धाई ॥ अक्षय बट तट

कृष्ण निहारा॥उतरि प्रनाम कीन्ह सुख सारा॥गद्गद गिरा ज्ञान सब भूला॥कहत कृष्णतें लखि अनुकूला॥
कहा कहौं ब्रजकी सब गाथा॥चलहु आजु ब्रजमें ब्रजनाथा॥हम सुखतें हारे तव आवन॥कृपासिंधु सोचहि यपु-
रावन॥दोहा॥रुकमांगद प्रहलाद ध्रुव अंबरीष षड्वांग॥जिमि इनके वचनहिं करे तिमि यह करहु शुभांग॥
१३३॥सुनि ऊधवके बचन गुपाला॥चलन चहे ब्रज दीन दयाला॥राजभार दैके बल हाथा॥बैठे रथपै ऊधवसाथा
दोउ समशोभा अति छवि छाए॥नंद घोष आतुर चलि आए॥गोधन गोकुल यमुना देखत॥बाढ्यो परम सुख
प्रेम परेखत॥कोटिन गऊ हरिहिं लखि धाई॥बच्छ सहित चेरयो समुदाई॥पूछ नचावत बदन उठाई॥अस्तनतें
पयधार बहाई॥हरितिन कहं पोंछ्यो विधिनाना॥चले संग गोदल दरसाना॥दस दिसि ग्वाला बीच गोपा-
ला॥आवत सोभा भई रसाला॥दोहा॥देखि सुरथ महं श्याम कहं घेरहिं सुरभीनाहि॥लखि श्रीदामा दिक
सखा कहहिं चकित चित चाहि॥१३४॥यह रथ रुचिर अहै अतिभारी॥जाके दस दिसि गऊ कतारी॥लैहवा
लहरि सखा सिधायो॥सुनि सो नंदराय सुत आयो॥फरकत दक्षिन कर अरु लोचन॥करहिं सगुन एसोच
न मोचन॥इमि कहि सब स्यंदन ढ़िग आए॥देखि मुकुंदहि अति हर पाए॥कृपि जानतें कृपा निधाना॥
मिले परस्पर सुख अधिकाना॥गद गद कंठ निकर नहिं बाचा॥सबके हृदय प्रेम अति राचा॥तहं हरि कहि
कहि कोमल बानी॥सबन बुझायो बहु सनमानी॥दोहा॥ऊधव कहं पठवत भए नंदराय आगार॥जाय

खबर कीन्ही प्रथम आयो आपकुमार॥१३५॥सुनि अति मुदित भए व्रज वासी॥ चले लेन हित हरष प्रकासी॥ भेरी शंख मृदं
ग बजावत॥ मंगल साज अनेक सजावत॥ यसु मति सहित नंद छबि छाए॥ सुतनें मिलन हेत मग आए॥ कीरति बर वृ-
षभानु सुजाना॥ गज चढ़ि प्रमुदित चले महाना॥ बहु विधि गोपी करत बधाई॥ देखन चली हरष अधिकाई॥ नंद और
उपनंद महाजन॥ षट वृषभान बजावत वाजन॥ शिशु अरु तरुन वृद्ध व्रज वासी॥ चले लखन हरि आनंद रासी॥ गा-
वहिं नाचहिं करहिं अनंदा॥ पीत वसन सोहत सब वृंदा॥ दोहा॥ मोर पक्ष गुंजा धरे बंशी लकुटि ललाम॥ शोभित ब्र
जके गोप सब सुमिरत श्री घन श्याम॥१३६॥ राधासुनेउ कृष्ण आगमनू॥ भादुख दूरि भयो सुख भवनू॥ चढ़ि शिविका
पर चली सुजाना॥ मनकर मोहन जाइ बखाना॥ बसु षोड़श बत्तिस व्रज बाला॥ अरु सत यूथ रसाल नृपाला॥ चली सकल
नारी हरषाई॥ सुख सागर उमड्यो अधिकाई॥ जैसी रही सुतैसी धाई॥ कछुक बनाव कियो नरराई॥ मगमहँ आवत
हरि अविनासी॥ इतते बढ़ि भेंटे व्रज बासी॥ नंदराय कहे लखि घनश्यामा॥ आठ अंगते कीन्ह प्रनामा॥ यशुमति के
पदु बंदे दोऊ॥ हेनृप छबि कहि जानत सोऊ॥ दोहा॥ नंदराय लायो हृदय बहुरि यशोमति माय॥ भीजे अंबर आंसु
ने बढ़यो प्रेम अधिकाइ॥ अरु जेते हे गोप तिते तरुन वृद्ध अरु बाल॥ तिन्ह सबते भेंटे तुरित यथा जोग गोपाल॥१३७
रथ चढ़ि चले श्याम मन मोदा॥ गज पर राजत नंद यशोदा॥ अरु सब लोग गऊ समुदाई॥ पुर प्रविसे उर सुख अधि-
काई॥ सुमनस सुमन भए बरषावत॥ जय जय गावत पटह बजावत॥ लावा और दूब दधि डालत॥ भए हृदय आनंद पसा

रत॥ धन्य सखा ऊधव यह कहहीं॥ जा प्रसाद हम यह फल लहहीं॥ प्रान दान दीन्हो तुम भाई॥ एहि विधान सब कर
हिं बड़ाई॥ हे नृप हम यह कहा सुनाई॥ जिमि व्रज महँ आए व्रजराई॥ जो सुनिवे की इच्छा होई॥ भाषहु मोहिं कहब
हस सोई॥ दोहा॥ कहत भूप कीन्हो कहा चरित बहुरि भगवान॥ राधा दिक व्रज त्रियन कहं किमि दिय दरस सुजान
सोरठा॥ इनके मनहि पुराय पुनि कैसे मथुरा गए॥ यह इच्छा अधिकाय सुनि मुनिबर बोलत भए॥ १३८॥ साँझ सम
य राधा बुलवाए॥ कृपा सिंधु कदली वन आए॥ रम्भ परस्पर जहँ परिरम्भत॥ नूतन हरित पत्र आरम्भत॥ तहँ दु-
ख ग्रसित बिराजत राधा॥ पुष्ट प्रेम नहिं नेक उपाधा॥ तहँ सत यूथ त्रियन के आए॥ इतने मै मोहन दरसाए॥ उठि-
कै अरघ सु आसन दीन्हा॥ बिबिधि बचन कहि पूजन कीन्हा॥ पूछत कुशल कहै नहिं बानी॥ गद गद कंठ दृगन
बह पानी॥ राधा कर दुख दूरि पराना॥ ब्रह्म जानि जिमि गुन कर हाना॥ हरि सिंगार कहँ राधा कीनो॥ अँग अँग
महं अनंग रस भीनो॥ दोहा॥ चंदन नहिं ताम्बूल नहिं नहिं भोजन नहिं सेज॥ हाँस कबहुँ नाहीं कियो मनकी ना-
हिम जेज॥ १३९॥ पति पर देस बिसन बिन प्यारी॥ बोली बचन बड़ी सुकमारी॥ रहि नगीच किमि पुनि नहिं आए॥
कै कुटिला गुन मोहि बिसराए॥ दमयंती मैथली समाना॥ मैं तुम बिन दुख लह्यौं महाना॥ अरु तुमरी गोपी जे अ-
हहीं॥ तुम बिनते छन एक न रहहीं॥ ऊधव तुमरो सखा सुजाना॥ सो तुम कहँ लायो मति माना॥ नातरु तुम आवत
हम जाना॥ भे किमि कोमल कुलिश समाना॥ इमि रोवत बहु बोल सुनायो॥ बासुदेव तव कंठ लगायो॥ धीरे ते अति

कोमल बानी ॥ बोले बिधु आनन बिज्ञानी ॥ दोहा ॥ राधामति सोचहि करौ हम आए तव हेत ॥ दोउन महनहिं भेदहै वृथा जियहि दुखदेत ॥१४०॥ जिमि पय होइ धवलता साथा ॥ तिमि हम तुम जान हुं सति गाथा ॥ तुम तटस्थ हम ब्रह्म परेसा ॥ भेद रहित बुध भजहि हमेसा ॥ जिमि अकाश बायु महि पानी ॥ तेज तत्व एपांचहु ज्ञानी ॥ भीतर बाहर रहहिं सदाहीं ॥ तिमि मोकहं जानहु सब माहीं ॥ यह बिचारि सब दुख परि हरहू ॥ मोमहं भिन्न भाव जनि करहू ॥ जबलौं दोय भाव जग माहीं ॥ तबलौं बंधन छूटत नाहीं ॥ गुन बंधन जग अहइ कराला ॥ बिन छूटे किमि भजै गोपाला ॥ मोर एक प्रेमी अधिकारी ॥ तातें करहु सोई निरधारी ॥ दोहा ॥ दृग दिवि महं रविदोय है दृगतें दिविको सूझ ॥ ताबिन जग अंधेर सब नेकहु परै न बूझ ॥ सोरठा ॥ मनजौं शुद्ध सुजान तौदेखौ भगवान कहं ॥ नातरु अंध समान ताते करहु न शोच तुम ॥१४१॥ सो सुनि मुदित भई अति प्यारी ॥ साधु भाषि पूज्यौ गिरिधारी ॥ कातिक शशि तिथि स्याम सुहाए । रास चौतरा महं चलि आए ॥ मुरली बजत तजत मन धीरज ॥ लजत काम लखि लोचन नीरज ॥ जितनी गोपी जितने मोहन ॥ नृत्य करत सुखमा भरि सोहन ॥ नूपुर नवल वसन वन माला ॥ कमल हार सिर मुकुट रसाला ॥ कुंडल करन लसै कर वेनू ॥ तन पर पग पट कनकी रेनू ॥ कौस्तुभ कंठ क्रांति कोसदना ॥ सक्र सची जिमि रति अरु मदना ॥ घन चंचला सहित सो सोभा ॥ जाहि देखि उपमा उरलोभा ॥ दोहा ॥ वृंदाबन बिहरत सु इमि हरष रास बररास ॥ बाजत ताल मृदंग मिलि बिच बिच बेनु प्रकास ॥१४२

लखि गोपिन कहं मान महा तित ॥ राधा सह हरि भए तिरोहित ॥ रोहित अचल दीय दस कोसा ॥ आए हरि तहं
तें भरि रोसा ॥ लता कुंज महं बिचरत माधव ॥ परम रम्य जहं आपु न व्याधव ॥ तहं सुर सरबद्रीश बतावा ॥ पीन
कच्छ पाठीन न छावा ॥ सहस पत्र पंकज न समेता ॥ परम मनोहर गंध निकेता ॥ राधा सहित कृष्ण भगवाना
लखेउ सु मुनि तप करत महाना ॥ धरत निरंतर हरि को ध्याना ॥ एक चरन रिभु नाम बखाना ॥ छाछठ सहस
बरष तप कीन्हा ॥ नेक अन्न अरु जल नहिं लीन्हा ॥ दोहा ॥ राधा ते केशव कह्यौ पुलकि सप्रेम शरीर ॥ ध-
न्य भक्त कहि जगत गुरु गए विप्र के तीर ॥ १४३ ॥ हे रिभु टेरि कह्यौ भगवाना ॥ सुन्यौ न ध्यान विवस नरत्राना
तब हरि उरते ध्यान नसायो ॥ ध्यान हि तज्यौ सुमुनि घबरायो ॥ देख्यौ राधा सहित मुरारी ॥ भो आनंद उर अं-
तर भारी ॥ करि परिकरमा बंदेउ चरना ॥ गद गद बचन कहत बर बरना ॥ नमो कृष्ण कृष्णा हरि राधा ॥ परि
पूरन तम तमा अगाधा ॥ श्याम नमो श्यामा रस रासिनि ॥ रासईस अरु रास बिलासिनि ॥ लीलाकर लीला
वति अति मति ॥ अंड करन जय अंड प्रभागति ॥ जगन्नाथ गरुडध्वज ज्ञाता ॥ जय जय जोति राधिका माता ॥
दोहा ॥ भूमि भार के हरन हित जग हरि राधा होय ॥ अमित भाँति लीला करी नमो नमो पद दोय ॥ १४४ ॥ इमि
कहि राखि चरन परमाथा ॥ तनहि त्यागि कीन्हो मुनि नाथा ॥ जोति कढ़ी अति अर्क समाना ॥ कृष्ण चरन
महं अंतर ध्याना ॥ सो लखि कृष्ण भए अति सोचत ॥ प्रेम अंबु अंबक तें मोचत ॥ हरि पद ते पुनि मुनि प्रग

टाने ॥ हरि सरूप धरि दिव्य लखाने ॥ हरि तिन्ह कहं तब कंठ लगायो ॥ पुनि मुनि प्रभु चरनन्हि सिर नायो ॥ गऊ लोक तें स्यंदन आयो ॥ लखि मुनि पुनि पुनि सीस नवायो ॥ चढ़ि तापै रवि सरिस प्रकाशा ॥ गे गोलोक बिभासत आसा ॥ राधा उर अति विस्मय आयो ॥ प्रेम वितान प्रगट कै छायो ॥ दोहा ॥ कहत भई निज नाथ ते धन हरि भक्ति प्रभाव ॥ तुम सरूप पहि मुनि लह्यौ करि बिश्वास सुभाव ॥ १४५ ॥ याकी जो यह अहइ सरीरा ॥ क्रिया तासु करिये बल बीरा ॥ इतनेहिं कहत सुनहु नृप ज्ञानी ॥ सो सरीर ते निकस्यौ पानी ॥ कछु छन महं सरि भई सरीरा ॥ राधा कहत खड़ी तेहि तीरा ॥ किमि मुनि को सरीर भो बारी ॥ यह मम संशय हरहु मुरारी ॥ तब हरि कह्यौ बचन यह आसू ॥ भयो प्रेम तें तन जल यासू ॥ पाथर पाथ प्रेम तें होई ॥ जगत प्रेम सम अहै न कोई ॥ हमहु भए पूरब जलरूपा ॥ सुनि राधा भाष्यौ यह भूपा ॥ सारंग पानी हे किमि पानी ॥ कथहु कथा सो आनंद आनी ॥ दो॰ प्रान प्रिया के बचन सुनि गिरधर लाल दयाल ॥ बिहसि बचन बोलत भए सुनिये बसुधा पाल ॥ १४६ ॥ पापहरन यह कथा सुहाई ॥ सुनहु सुखद राधा मन लाई ॥ मम प्रसाद तें भए बिधाता ॥ लागे करन सृष्टि सुरत्राता ॥ भए उछंग प्रगट तब नारद ॥ बीन धरे हरि गान बिसारद ॥ इक दिन बिधि नरदहि समुझावा ॥ करहु सृष्टि मम मन यह भावा ॥ नारद कहा न करिहौं याही ॥ शोक मोह अति है जामाहीं ॥ करिहौं कृष्ण गान कहं दादा ॥ तुमहु तजो यह सृष्टि बिषादा ॥ शाप दीन्ह तब बिधि हे खर्बा ॥ गावत दुष्ट होसि गंधर्बा ॥ एक कल्पलौं नारद ज्ञानी ॥ उपबरहन नामक भे गानी ॥ दोहा ॥ त्रियन नचावत ब्रह्म

ऋषि इक दिन गो विधि धामा॥ विगत ताल गायो तहं भई सभा लखि छामा॥१४७॥ पुनि विधि कहा मृदु मै हांसी॥ जनमे मुनि जनमी अति डोसी॥ करि सत संग विरंचि कुमारा॥ पुनि मुनि भए ज्ञान आगारा॥ मुनि मति मम मन नारद नामा॥ प
रम भागवत बुद्धि ललामा॥ इक दिन गावत आनंद छाये॥ सुमुनि दूला हूत खंडहि आये॥ जंबू नदी बारि अति लोना॥
होत जहां जंबू नद सोना॥ वेद नगर तह परम ललामा॥ बहु नर नारि रहहिं गुन धामा॥ गुल्फ जानु पद हाथ विहीना॥ह
राउर कुब्ज सुवावन हीना॥ कंध उदर सिर पीठ विनाके॥ लखे पंगुतन मनुज तहांके॥ दोहा॥ तब विस्मित पूछत भए नारद ति-
नते बात॥ कौन किसिमके नारि नर तुम सब दूटे गात॥१४८॥ नर हौके सुर अहहु असुर हो॥ कौनुम अति संकठते पुरहो
तुम सब मोहिं बतावहु भाई॥ सुनिके कहत राग समुदाई॥ अति दुख अहै कौनते कहिये॥ दूर करै असमनुजन लहिये
हम सब अहहिं राग हन अंगा॥ हे मुनि ताकर सुनहु प्रसंगा॥ नारद विधि सुत गावै एका॥ काल ताल करतेहिन विवेका
वृथई टर टर करत अयाना॥ ताके किये अंग मम हाना॥ सो सुनि नारद संशय छाए॥ रागन सों यह वचन सुनाए॥ काल ज्ञा
न किमि मोकहु आवै॥ ताल भेद पुनि किमि सरसावै॥ दोहा॥ काके चेला होहिं हम सो मोहिं देहु बताइ॥ तब बोले तेरा-
गसब सो सुनिये मुनिराइ॥१४९॥ हरिकी नारि गिरा गुन वाना॥ सोदेहैं गायन को ज्ञाना॥ सुनि नारद आए गिरि श्वेता॥ तिन
तप कीन्ह भारती हेता॥ निरजल वरस दिव्य सत रहे॥ ध्यान सरस्वति दरसन चहे॥ सुभ नाम तजि नारद नामा॥ भयो शैल
सोचारु ललामा॥ आई गिरा हंस असवारी॥ वीना पानि श्वेत भुज चारी॥ देखि गिरा कहं उठे मुनीसा॥ बोले शिव चरन

परसीसा ॥ सीस मुकुट सोहत करवीना ॥ श्वेत वरन अरु वसन नवीना ॥ पग नूपुर मराल असवारा ॥ नमो गिरासु ज्ञानदाता
रा ॥ दोहा ॥ सब दिसिते अवदात तुम वीना पुस्तक हाथ ॥ नारि पियारि मुरारिकी वरवेदन की नाथ ॥ १५० ॥ कृपा करिय दी
जै वरदाना ॥ होइ अद्वैत गान कर ज्ञाना ॥ गो लोकहु हम गावहिं भाई ॥ ऐसी बुद्धि होइ मोहिं माई ॥ यह अस्तुति हम कीन्ह
ललामा ॥ जाड्या यह है पाकर नामा ॥ याके पढ़े जाड्य सब जाई ॥ नरकह फुरै ज्ञान अधिकाई ॥ गिरा मुदित तव वीजादी
ना ॥ सुर विभेद युत रुचिर नवीना ॥ राग रागिनी सुतन समेता ॥ देस काल ताड़न कर हेता ॥ छप्पन कोटि भेद सब दीन्हो ॥ अंतर
भेद असंख्य न चीन्हो ॥ याम नृत्य वादित्य वतायो ॥ वहुरि मूर्छना भेद लखायो ॥ दोहा ॥ अद्वितीय करि नारदहि वानी वुद्धि नि
धान ॥ वैकुंठहि आवत भई उर आनंद महान ॥ १५१ ॥ शिष्य करउ मुनि हृदय विचारा ॥ गे गंधर्व नगर वरभारा ॥ तुंवुर नाम गंधर
व एका ॥ ताकहं निज सम आप विवेका ॥ नारद चले सुनावत गाना ॥ पहिले गए शक्र अस्थाना ॥ देखि राज कर काज अपारा
नारद गे अदित्य आगारा ॥ दौरत व्यग्र तिन्हहि अनुमानी ॥ शंकर लोक गए चलि ज्ञानी ॥ तिन्ह कहं देख्यौ ध्यान लगाए ॥ ब्र
ह्मलोक चलि नारद आए ॥ देखे पितहि कुम्हार समाना ॥ विरचि रहे सुवस्तु विधिनाना ॥ करि विचार तव मुनि सुख छाए
विष्णु धाम वैकुंठहि आए ॥ दोहा ॥ विश्व ईश परमेश प्रभु जग कारन भगवान ॥ भक्त हेत लागे रहे कारज करत महान ॥ १५२ ॥
तिनके पद कहं करि परनामा ॥ मुनि गोलोक चले मति धामा ॥ निकरे ब्रह्म अंडतें सोई ॥ देख्यौ अंड अमित तहं जोई ॥ पुनि
विरजा के पास सिधाए ॥ वृंदावन लखि अति हर षाए ॥ यमुना नाम नदी अति भारी ॥ गोवर्द्धन द्विज वरहि निहारी ॥ जहां वसंत

रहत सुखपुंजा ॥ नारद तब चलि गये निकुंजा ॥ पूछ्यो सखिन कौन दूत आए ॥ सुनिके विधिसुत वचन सुना-
ए ॥ हम दोऊ अति अहहिं गवैया ॥ आए हरिहित राग कवैया ॥ कहहु बीनती बिबिधिविधाना ॥ करिकै कृपा
सुनहि मम गाना ॥ दोहा ॥ सखिन आय हमते कह्यो मम अज्ञा कह पाइ ॥ नारद तुंबुरु कहगई निज अस्था-
न लवाइ ॥ १५३ ॥ देखेउ तुम समेत मोहि तहंवा ॥ कौस्तुभ कर सिंहासन जहंवा ॥ श्वेत छत्र शिरचमर सुहाई
शोभाचारु कही नहिंजाई ॥ मोकहं देखिदोऊ तेहि काला ॥ फेरीकरि पद वंदि रसाला ॥ मम अज्ञालै बैठ दोऊ
गावन लगे सरस सुरसोऊ ॥ कहि नजात जो नारद गावा ॥ हम प्रसन्न होइ सीस डुलावा ॥ पानी सम प्रवाह हम
पायो ॥ सोई ब्रह्म द्रव कहवायो ॥ जामहं ब्रह्म अंडए सारे ॥ लुढ़कहि जेहि तुम दृगन निहारे ॥ जब वामन नि-
ज चरन लगावा ॥ फूटेउ अंड वारि मधि आवा ॥ दोहा ॥ रहे अनेकन अंडपै जाके मधि महं छेद ॥ ताही महं आ-
वत भए गावहिं जाकर वेद ॥ १५४ ॥ जबसो यह अंडा महं आयो ॥ गंगा नाम तासु सब गायो ॥ मंदाकिनी कहहि
दिवि नामा ॥ भागी रथी भूमि अभिरामा ॥ जेजन गंगन हावै जाही ॥ अस्व निरध फल पग पग माहीं ॥ गं-
गा गंगा जोजन भाषै ॥ सोवैकुंठ रूप निज राखै ॥ दरसत सत पीवत जल दूना ॥ दस सत न्हात होइ अघदूना ॥
तासु सुफल महि जन्म अभंगा ॥ जेनर जीवत देखहि गंगा ॥ तैसेइ विरजा नदी वखानी ॥ तिनके साथ सुवन पुनि
ज्ञानी ॥ वेनी हरहरि कृष्णा जाना ॥ विधि ककुद्मिनी तिमि पहिचाना ॥ दोहा ॥ भई गंडकी अपसरा भरिकै

प्रेम प्रवाह ॥ तिमिरिभ ऋषि सरिता भए जानहु सहित उछाह ॥ १५५ ॥ जो यह कथा सुनहि गत बाधा ॥ ते मम लोक जात चलि राधा ॥ इमि कहि लिए राधिका साथा ॥ आए वृंदावन व्रज नाथा ॥ हरि बिन तहं व्याकुल सब गोपी ॥ कीन्ह विलाप सकल सुखलोपी । अबलन कर जब मान हिराना ॥ तब तिन महं प्रगटे भगवाना ॥ संग लिये वृष दिनकर कन्या ॥ मिली प्रेम बस उठि त्रिय अन्या ॥ तहं तब रास रचायो भारी ॥ कमल नयन कर बेनु सुधारी ॥ सुनिके मुरछि परी व्रज नारी ॥ खगन उडैन चलै सरि बारी ॥ मौन देवता दप भे पानी ॥ सूतेउ जगत नींद अधिकानी ॥ दोहा ॥ इहि विधान करि रास हरि ब्रह्म मुहूरत जानि ॥ नंद राय सदनहि गए मदन कदन अनुमानि ॥ राधा वर वृषभान घर गई रातिके सेश ॥ निज निज अंगन अरु त्रियन भूपति कीन्ह प्रवेस ॥ १५६ ॥ कछु दिन रहि गोबर्द्धन धारी ॥ मथुरा पुरकी करी तयारी ॥ अपने ससुर आदि वृष भानन ॥ नंद उपनंद गोप निज त्रानन ॥ सबतें मिलि भे बिदा बुझाई ॥ चतुर सिरोमनि श्री यदुराई ॥ तुरत सुरथ चढ़ि चंचल चारू ॥ चले मधू पुर गुन आगारू ॥ लागे संग घने व्रज बासी ॥ तिनहिं बुझावहि आनंद रासी ॥ हरि दरसन पावै सोइ जानै ॥ पुनि देखे बिन मनहि न मानै ॥ देखि मुकुंदहि ते सब ग्वाला ॥ कहत प्रेमते बचन रसाला ॥ फिरिकै झटित सुदरसन दीजो ॥ जानि दास निज कृपा करीजो ॥ दोहा ॥ तुम यशुदा सुख प्रद सदा नंद सुवन राधेश ॥ जग मोहन कुल दीप प्रभु व्रजधन सुखद हमेश ॥ १५७ ॥ सीत त्रसित कहं अग्नि समाना ॥ रोग त्रसित कहं औषधि जाना ॥ मृत कहि अमृत

सम अधिकाई ॥ ताप तपे कहं नीर सुहाई ॥ तिमि तुम व्रजके जीवन स्वामी ॥ आवत जात रहेउ खग गामी ॥ पूर-
ब जन्म पुन्य फल भारी ॥ पावत तुमरो दरस मुरारी ॥ तुम कहँ निर्गुण बेद पुकारन ॥ निज जन हेत सगुन पग धा-
रन ॥ तुमहि भक्त सम प्रिय जग माहीं ॥ बिधि शिव रमा अहहिं ए नाहीं ॥ इमि कहि कहि ते रोवन लागे ॥ कृष्ण-
कृष्ण भाषहिं दुख पागे ॥ लखि निरास सिगरे व्रज बासी ॥ बोले बासुदेव अबिनासी ॥ दोहा ॥ तुम सब मेरे प्राण
हौ मैं व्रज तजि नहिं जात ॥ प्राण इहाँ औ तन उहाँ दुःख चलहु दरि तात ॥ १५८ ॥ मास मास प्रति ऐहौं भाई ॥
नहि संशय यह नेम सदाई ॥ उतहि जरासुत आवत होई ॥ ताते जात यदुन दुख जोई ॥ इमि कहि नंद यशोदहि-
मोहन ॥ दूजे रथ बैठायो छोहन ॥ श्रीदामादि सखा कह श्यामा ॥ तीजे रथ बैठारि ललामा ॥ तीनहुँ रथले मथुरा [illegible]
ए ॥ व्रज बासिन समुझाय पठाए ॥ सुनहु भूप भवसंकट हारी ॥ अहहि यदपि यह पावन कारी ॥ जो जन पढ़हि सु-
महि चित लाई ॥ सो गोलोक सुरथ चढ़ि जाई ॥ बहुरि बिदेह प्रश्न यह कीन्हा ॥ व्रज महँ श्री गोपाल प्रबीना ॥ दोहा ॥
मथुरा मह बल देवने कीन्ह कहा मति मान ॥ सो सुनि कै बोलत भए नारद नीति निधान ॥ १५९ ॥ सुनहु चरित हम
कहत उदारा ॥ बल इक दिवस अश्व असवारा ॥ साथ कछुक लै जन समुदाई ॥ मृगया हित बनगे नरराई ॥ कौशाम्बी
पुरीके बासी ॥ काल दुःखते त्रसित उदासी ॥ आवत रहे मधू पुरि सारे ॥ मग लखि बल कहं नौमि उचारे ॥ प्रभु हम दीन
सरन तव आए ॥ करिय कृपा दुख दरिय सुहाए ॥ कोल असुर एक कंस सखा है ॥ मोहि निकारि मन माहिं मखा है ॥

प्रेम प्रवाह ॥ तिमि रिभ ऋषि सरिता भए जानहु सहित उछाह ॥ १५५ ॥ जो यह कथा सुनहि गत बाधा ॥ ते मम
लोक जात चलि राधा ॥ इमि कहि लिए राधिका साथा ॥ आए वृंदावन ब्रज नाथा ॥ हरि बिनु तहँ व्याकुल सब
गोपी ॥ कीन्ह बिलाप सकल सुखलोपी ॥ अवलन कर जब मान हिराना ॥ तब तिन महँ प्रगटे भगवाना ॥ संग
लिये वृष दिनकर कन्या ॥ मिली प्रेम बस उठि त्रिय अन्या ॥ तहँ तब रास रचायो भारी ॥ कमल नयन कर बेनु
सुधारी ॥ सुनिकै मुरछि परी ब्रज नारी ॥ लगन उठैन चलै सरि बारी ॥ मीन देवता रूप भे पानी ॥ सुतेउ जगत
नींद अधिकानी ॥ दोहा ॥ इहि विधान करि रास हरि ब्रह्म मुहूरत जानि ॥ नंद राय सदनहि गए मदन कदन अ
नुमानि ॥ राधा वर वृषभान घर गई राति के सेश ॥ निज निज अंगन अरु त्रियन भूपति कीन्ह प्रवेश ॥ १५६ ॥ कछु
दिन रहि गोवर्द्धन धारी ॥ मथुरा पुर की करी तयारी ॥ अपने ससुर आदि वृषभानन ॥ नंद उपनंद गोप निज त्रा
नन ॥ सबतें मिलि भे बिदा बुझाई ॥ चतुर सिरोमनि श्री यदुराई ॥ तुरत सुरथ चढ़ि चंचल चारू ॥ चले मधुपुर
[illegible] ॥ [illegible] बासी ॥ तिनहिं बुझावहि आनंद रासी ॥ हरि दरसन पावै सोइ जानै ॥ पुनि देखे वि
[illegible] ॥ फिरिकै झटित सुदरसन दीजो ॥

हँपढ़ि पढ़ि के मन
दूने रथ साजी ॥ धन अर्बुद सत लख
अस्नान कीन्ह हल पानी ॥ रामतीर्थ तेहि गावहिं ज्ञानी ॥
होई ॥ तब नृप कहा मुदित अति होई ॥ तितते कितो दूरहै सोई ॥ नारद कह
ते ॥ शरकरते बायव तितनोई ॥ नलते पाँच कोश सुगनोई ॥ कैनखेत्र सेहै षट कोश ॥
॥ दोहा ॥ तीरथ वर भुवि केशते हठ केशते भूप ॥ पूरब जोजन पवन पर वर तीरथ सु अनूप ॥ १६५ ॥ सुनहु कथा अ

हम कौंडिण्य नगरके वासी॥ चाहतहैं तव शरन उदासी॥ मम महीप गंगा तट तपई॥ श्रीबलदेव सरन यह जपई॥ दोहा॥ जबलौं जीवत कोलहै तबलों मरौं न कंस॥ तातें करि मगपै दया करहु तात विध्वंस॥१६०॥ सुनि बलदेव सुमगतें बगरी॥ तुरत गए कौशांबी नगरी॥ बल आगमन सुनेउ जबकोला॥ लैदल चलेउ करत अति रोला॥ दस अक्षोहिनि दानव ध्वजिनी॥ मनहु भयद भादव की रजनी॥ हय तरंग रथ नक्र महाना॥ संगर सरित वेग अधिकाना॥ सोलखि करिकै बलकर सेतू॥ मुशल प्रहारेउ यदुकुल केतू॥ केते भए चरन करहीना॥ भगहि वीर लीवे जम सम पीना॥ कोल कोल कुरा कीचर माहीं॥ बलते भिरो सकोप तहाहीं॥ सिर सिंदुर चर्चित कस्तूरी॥ सोहत सुवरन सिकरी रूरी॥ दोहा॥ चार दंत अरु श्रवत मद उन्नत मेघ समान॥ करत गर्जना गाजे चढ़ो सूकर अति बलवान॥१६१॥ तोमर॥ बाराह अतिहि रिसाइ॥ अंकुस प्रहारि चलाइ॥ बलदेव सन्मुख जाइ॥ मारन लग्यो चिचि आइ॥१॥ बल तमकि मूशल मारि॥ गज बधिदियो महि डारि॥ सो कोल मुरव रवल कोल॥ गिरि उठेउ बोलत बोल॥२॥ निज तज्यो शूल घुमाइ॥ नहिं बचत बचन सुनाइ॥ निज मुशल राम प्रहारि॥ बहुधा दियो महि डारि॥ तब गदा मार्यो घोर॥ गुरु सहस भार अथोर॥ तिहि सह्यो बल बलवान वारनहि कंज समान॥४॥ पुनि मुशल घोर पसारि॥ गहि लीन्ह ताहि खरारि॥ सिर मुशल मारि महान॥ गर्जत भए बलवान॥५॥ दोहा॥ मुशल लगे महिपर पर्यो उठेउ कुशल पुनि कोल॥ मूका मारि अनंत कहं अंतर गति भो जोल॥१६२॥ की न्ह महत माया पुनि नाहक॥ धावन लगो सबाल बलाहक॥ भो अंधार सूझा नहिं कोहू॥ चरसत मेद मांस अरु लोहू॥

सुरामूत्र पाथर वरषाए॥ लखिकै सिगरे जीव डेराए॥ हाहाकार भएउ नर नाहा॥ तप बल को कह नासन चाहा॥ अष्टधा-
त मय मुशल महाना॥ सतजोजन जौं उच्च प्रमाना॥ त्यागि दीन्हें ताकहं समुझाया॥ फिरि फिरि लग्यौ नसावन माया॥
जिमि रवि दूर करत अँधियारा॥ तिमि तब बिगत भूमि करि डारा॥ जिमि नर काटत जलकी काई॥ कर लकरी लै फिर-
त फिराई॥ दोहा॥ तब सकोप बल भुजनतें गह्यौ ताहि भरि जोर॥ सूकर तू सूकर तहै दुष्ट द्विजन सिर मौर॥ १६३॥ पटक्यौ
महि महँ ताहि घुमाई॥ कढ़्यौ प्रान अतिही दुख पाई॥ धरकी धरा परे धरताके॥ एक मुहूरत दिग्गज भाके॥ कूटे दाँत के-
स महि छूटे॥ भई मोक्ष अविरल सुख लूटे॥ जय जय नीचे ऊपर भयऊ॥ पुष्पनते महि मंडल छयऊ॥ इमि ताकहँ ब-
धिकै सह साजा॥ दीन्ह तहाँके राजहि राजा॥ बहुरि गए बल गंग नहाना॥ संग गर्ग आदिक सु महाना॥ दोहा॥ त-
हँ पढ़ि पढ़िकै मंत्र द्विज बल देवहि तेहि काल॥ अन्हवावन लागे मुदित सत्य सुनहु महिपाल॥ १६४॥ लाख द्विरद
दूने रथ साजी॥ धन अर्बुद सत लख पुनि बाजी॥ धेनु कोटि मनि हाटक नाना॥ दीन्हो राम द्विजन कहँ दाना॥ जहँ
अस्नान कीन्ह हल पानी॥ रामतीर्थ तेहि गावहिं ज्ञानी॥ कातिक ससि तिथि न्हावै जोई॥ हरि दुआर ते अति फल
होई॥ तब नृप कहा मुदित अति होई॥ तिततें किती दूर है सोई॥ नारद कह्यौ तबै नृप बरते॥ शुति योजन कौशांब नग-
रतें॥ शूकरतें बायव तितनोई॥ नलतें पाँच कोश सुगनोई॥ कैन छेत्र सेहै षट कोशा॥ अग्नि दिसा महं फलकर को-
शा॥ दोहा॥ तीरथ बर भुवि केशते वृद्ध केशतें भूप॥ पूरब जोजन पवन पर बर तीरथ सु अनूप॥ १६५॥ सुनहु कथा अब

नीति निकेता॥ भएउ दृढ़ास्व बंग नृप जेता॥ लोमस कहँ लखि हसेउ समीपा॥ शाप दीन्ह भरि कोप मुनीपा॥ को-
ल बदन दानव दुख दाई॥ सोइ मुनि शाप भएउ इत आई॥ बलके करते मरिकै सोई॥ शुद्ध भयो भवके मल धोई
तब बलदेव अतिहिं हर षाए॥ तन्हुतीर्थ तहँतें चलि आए॥ रहे तीन निसि गंग नहाए॥ दैकै द्विजन दान हर
षाए॥ तहतें पश्चिम भोज स्थाना॥ जाय बसे निसि दीनो दाना॥ तहँते इक जोजन पुनि गए॥ ऋषि मंडूकहि
देखत भए॥ दोहा॥ ध्यान धरत बलदेव को ऊर्द्ध बदन मंडूक॥ एक पाव धरनी धरे मगन लगन बस मूक १६६
तब बलभद्र पुकार्यो ताही॥ उठि देख्यो बलतेहि थल माहीं॥ नील बसन राजत तन गोरे॥ कुंडल एक करन
झक झोरे॥ मुशल पानि वर सुरथ सवारी॥ परेउ चरन कर अस्तुति भारी॥ वर माँगहु भाख्यो हल धारी॥ तब
बोले मांडूक विचारी॥ मोहि शुक कथित भागवत दीजै॥ जाके कहत सुनत अघ छीजै॥ तब बलदेव कहत
दुख मथिनी॥ ऊधवते मिलिहै यह कथनी॥ सो सुनि मुनि मांडूक बखाना॥ कब मिलिहै सो वर अख्याना॥
याकर मोहि बतावहु भेवा॥ सुनि पुनि गुनि बोले बल देवा॥ दोहा॥ देखहु मेरे पासए ऊधव कृष्ण समान॥ रूप
अनूप सुबुद्धि धर जानहु मुनि मति मान॥ १६७॥ हैं ताके आचारज भाई॥ पैन अबहि कहि हैं मुनिराई॥ ऊधव
जब गोपिन सुख दीना॥ निज सम तिन्है कृष्ण तब कीन्हा॥ गुन सुभाव बुधि सील स्वरूपा॥ निज सम कीन्ह
कृष्ण ब्रजभूपा॥ तब ब्रज मैं ब्रज जीवन गए॥ कीन्ह निवास परम सुख मए॥ परम मंत्र विध उत्तम ज्ञाता॥ ॥

जानि वून्है हरि मति अवदाता ॥ अंतर धान समयके माहीं ॥ दैहैं वर भागवत तहाहीं ॥ परम ज्ञान मय भानु
समाना ॥ जेहि पढ़ि गयो अंध अज्ञाना ॥ तब ह्वैहै ए अति मति माना ॥ नीति निपुन विज्ञान निधाना ॥ दो॰
हरे युधिष्ठिर कष्टको करे किरीटी वोध ॥ तौन समय की बारता तुम्है सुनावत शोध ॥ १६८ ॥ वज्र नाम तव होइ
महीपा ॥ मधुपुरमें यादव कुल दीपा ॥ हरिसुत कोप उत्र गुन धामा ॥ कौरव भूप परिक्षित नामा ॥ तासु सुवन
जन्मे जय होई ॥ पितु अरि मेध करै गो सोई ॥ तहँ ऊधव ह्वैहै गुरु ताके ॥ जो गुण विद्यालय गुरु ताके ॥ सो सुनिहै
पुराण विधिनाना ॥ पूरन करिहैं यज्ञ सुजाना ॥ तब द्विज गन कह पूजै सोई ॥ शत शत ग्राम देइ भल जोई ॥ पुनि
जैहै सो गुरु समेता ॥ सूकर तीरथ तीरथ हेता ॥ तहँ देइहै दान बिधि साजी ॥ गोगज रथ धन धाम सुवाजी ॥ दो॰
पुनि तहँते चलि गुरु सहित इत आवै मुनि नाथ ॥ पुर बर चार सयान महँ ताकी सनुहु सुवाथ ॥ १६९ ॥ साम-
ग्री करिकै विधिनाना ॥ अश्व मेध सो करै महाना ॥ एक छत्र होइहि बर राजू ॥ गुरु आज्ञा सुख करन दराजू
इतते पाँच कोश पै तबहीं ॥ होइ भागवत सुनिहै सबहीं ॥ परम भागवत कथा अनूपा ॥ होइहि भवभय निर्भ
यरूपा ॥ धरम समाज नीति मति माना ॥ कहिहैं ऊधव ज्ञान निधाना ॥ तहँ तुमहू सुनिवे हित जैहौ ॥ ऊध
वतें मन इच्छित पैहौ ॥ तुम मम हेतु कियो तप भारी ॥ तब हम कहा जानि अधिकारी ॥ इमि वरदै बलदेव
सिधारे ॥ कंटकतें दिसि उत्तर भारे ॥ दोहा ॥ एक कोश दक्षिण तवै पुष्पवती ते जाय ॥ द्विजन दान देते

भए संकर्षन हर षाय॥ १७०॥ हय दस सहस सहस गज अच्छे॥ रथ सत अयुत गऊ सह बच्छे॥ तहँ के देव
ऋषी सब आए॥ पूजा बहु विधि बलहि चढ़ाए॥ नमो कोल खर मर्दन हारे॥ हल धर मुशल पानि बल
धारे॥ ताल केतु जय रूप निधाना॥ इमि अस्तुति कीन्ही बिधि नाना॥ बल भाषेहु तुम मांगहु बरको
तिन्ह तब कहा देखि हल धरको॥ जब जब हम सुमिरैं बलदाऊ॥ तब तब संकट दुरै सदाऊ॥ सुनि बल
देव कहा मुसकाई॥ ऐसेइ होइ तुमन कहँ भाई॥ यह बर याथल के मधि दीन्हा॥ तुमरो कहो मानि हम
लीन्हा॥ दोहा॥ संकर्षन तीरथ प्रगट होइहि याकर नाम॥ जो इतन्है पै देइहै विप्रन दान ललाम॥ १७१॥
पूजै बिष्णु सुरन हर षाई॥ ताकर जन्म सुफल जग भाई॥ मन इच्छित तिनको सब होई॥ इमि बलिक-
ह्यौ सुजन कहँ जोई॥ बहुरि सबन सह सुष मा छाए॥ मथुरा नगर माहिं चलि आए॥ जो यह कथा सु-
नै हल धरकी॥ तजि मग गहइ राह हरि घरकी॥ कह नृप और कहहु मुनिराई॥ मथुरा जौन पुरी सर-
साई॥ तीरथ तहँ के ते सुख दाई॥ कोपति को रक्षत हर षाई॥ कौन कौन तप करि तित तरिगे॥ कौन देव
के ध्यान हि धरिगे॥ सुनिकै पुनिकै नारद नामा॥ ब्राह्मण बोले बात ललामा॥ दोहा॥ परिपूरन तम
कृष्ण प्रभु सोमधु कानन नाथ॥ मंत्री कपिल बराह द्वै रहहिं रमापति साथ॥ १७२॥ रावन श्वेत सूक
रहि लायो॥ लंका महँ पूजत सुख छायो॥ राम जीत तेहि इन्ह कहँ ल्यायो॥ अवध माहिं पूजत छवि छायो॥

शत्रुदमनलै सोइ बराहा॥ मथुरा धरि पूजेउ नरनाहा॥ आदि बराह कपिल मुनि माना॥ है मंत्री हम तुमहिं बखाना॥ भूते
श्वर भवहै को नवाला॥ मथुरा सुखद पापके काला॥ दुर्गा महासु विद्या नामा॥ उत्तरखंहि चढ़ि सिंह ललामा॥ मैहोंचा-
रराधिका वरकी॥ हरि अधिकार दियो सुख करको॥ मध्य रहत मथुरा सुभ देवी॥ देत सबन कहं नेगजलेवी॥ दोहा॥
डोलहिं हरिके पारषद दस दिसि सुनहु महीप॥ श्याम बरन अरु चारु भुज देत सु मुक्ति समीप॥ १७३॥ हरिके मन
नें उपजी नगरी॥ मरदन रास पापकी सगरी॥ प्रथम बिरंचि कीन्ह तपभारी॥ सत संबत निर्जल व्रत धारी॥ चारुक-
षाको ध्यान लगायो॥ तव सुत स्वायंभू मनु पायो॥ भूतेश्वर सत संबत बैठे॥ तपत मकुंद ध्यान महं पैठे॥ हरिनगा-
री प्रतापने हाली॥ पाई मथुरा की कीरति चाली॥ हम करि तप बर पाउ महाना॥ भए चारु तिनके नरजाना॥ दुर्गाकरि
तपभई पहरुआ॥ हतु तपि भए सुधाम ठहरुआ॥ मनु कुबेर पासी दिन नायक॥ करि करि तपहि भए सबलायक॥
दोहा॥ तप करि ध्रुव ध्रुव पद गए बिदित कथा जगबीच॥ अंबरीष इत पूजिके भए गोविंद नगीच॥ १७४॥ शत्रुदमन
इत तप बिस्तारा॥ लवनि नाम रजनीचर मारा॥ मधुकरि तपहि भयो बलवाना॥ मधुसूदन सन तिनरन ठाना॥ सात-
ऋषिन तित अति तप कीना॥ सिगरी योग सिद्धि लै लीना॥ अगो गोकरन वैश्य तप कियो॥ बहुत द्रव्य पायोबहु जियो
इत तप कीन्ह दशानन योधा॥ जीते उ सुरन समर भरि क्रोधा॥ कीन्ह राज अतुलित प्रभुताई॥ बेरजटा तिन जगत बनाई॥
संतनु नृपतप कीन्ह महानन॥ पावत भए भीष्म संतानन॥ जेजे सिद्ध भए महि माहीं॥ तेते करिके सुतपु इहाहीं॥ दोहा

तब विरह बोलत भए मोकहँ कहहु मुनीश ॥ फल बर मथुरा नगर को जहँ निवसत जगदीश ॥१७५॥ तब बोले नारद विज्ञाना ॥ धरनी धरो कोल भगवाना ॥ मथुरा केर महातम भारी ॥ पूछेउ पतिते भूमि बिचारी ॥ तब शूकर गोविंद सुजाना ॥ उरबीसोंयह बचन बखाना ॥ मथुरा कृष्ण नाम दोउ समहै ॥ गावत सुनत जपत नहिं कमहै ॥ छुवत साधु दरसन फल मनसो ॥ सूँघत तुलसी दल सूँघनसो ॥ देखत हरि दरसन फल होई ॥ महा प्रसाद मृदा समसोई ॥ सेवै हरि सेवा फल पावै ॥ जात चरन प्रति तीरथ गावै ॥ गोत्र त्रिलोक बिप्र त्रिय मारै ॥ मथुरा बसि मुनि गति निहारै ॥ दोहा ॥ धिग पद नहिं मथुरा गयो धिग दृग लख्यो न याहि ॥ धिग श्रुति सुना महात्म नहिं मुख धिग कहा न चाहि ॥१७६॥ तीरथ नव ग्रह चौदह कोटी ॥ रहत कितहकी महिमा छोटी ॥ इक इक ग्रहहि मुक्ति के दाता ॥ कौन कहै सो पुरकी बाता ॥ परि पूरन नम कृपा निधाना ॥ निज निज रूप धरे बलवाना ॥ कौन तहाँ की करउ बड़ाई ॥ शरन देहु मथुरा महँ माई ॥ जाके मग महँ पग पग माहीं ॥ मोक्ष आदि पावत को नाहीं ॥ तातें दूढ़ी बसुधा सगरी ॥ यासम ग्रह दूसर नगरी ॥ काशी आदिक स्नान बखानी ॥ सबते अधिक मधुपुरी जानी ॥ मृतक मुक्ति वारानसि ग्रहई ॥ जीवत मुक्ति इहां नर लहई ॥ दोहा ॥ पुरी कृष्णकी भूमि पति पुरी सदा फल चारु ॥ मोक्ष प्रदा ग्रह धर्म मय मथुरा मम न्यारु ॥१७७॥ सुनै महातम मथुरा केरो ॥ सो पावै हरि चरन बसेरो ॥ व्रज यात्राको सब फल मिलई ॥ इक इक अक्षर अघ कहँ गिलई ॥ मथुरा खंड भूप यह ग्रहई ॥ सुनि सुनाइ नर सब कछु लहई ॥ जीवत मुक्ति सोई जग जानो ॥ ताके चार पदा-

रथ मानो॥ एकहु बार सुनै जो कोई॥ ताकहं अतिहि संपदा होई॥ धनकुटुम्ब अरु अघ की हानी॥ सकल मि
लत जो चाहो ज्ञानी॥ विप्र वेद विद क्षत्री शूरा॥ वैश्य धनी शूद्रहि फल रूरा॥ सुनिके नारि होहिं अहि वानी॥
सब कहं सब सुखहै सब भांती॥ दोहा॥ जात मनुज गोलोक सों अतिही आनंद ओक॥ शोक थोक कहं ना-
शिकै दूरी करत दुख नोक॥ नगधर वर सुर मुकुट मनि दरन कंस नंद लाल॥ श्याम बरन पंकज
चरन सुमिरि जात जंजाल॥ सोरठा॥ जपत कृष्ण को नाम कीनो मथुरा खंड कहं
तिन्हकी कृपा ललाम जेहि चहि बहु ब्रंड कहं॥ १७८॥ इति श्री
भाषा प्रकासे कृष्ण प्रिये गिरिधर दास विरचिते प्रेम पयोधरचि
ते गर्ग संहितायां पंचम मथुरा खण्ड समाप्तम् शुभ
मस्तु श्री राधा कृष्णाया नमो नमः

श्रीगणेशायनमः श्रीगोपीजनवल्लभायनमः ॥ अथ द्वारिकाखंड लिख्यते ॥ सोरठा ॥ देवकि सुवन सुजा
न बासुदेव गोबिंद हरि ॥ कृष्ण नंद संतान ममउर बसियै कृपा करि ॥ दोहा ॥ मंडन अंड अनेक के खंडन खल
दल चंड ॥ तिन्हहि बंदि बरनन चहत चारु द्वारिका खंड ॥ चौपाई ॥ पुनि मैथिल नृप बोले बानी ॥ मथुरा खं-
ड सुन्यौ सब ज्ञानी ॥ कहहु द्वारिका खंड सुजाना ॥ हरिके किते ब्याह संताना ॥ अहइ अलौकिक कथा सुजा-
ना ॥ तब बिरंचि सुत बचन बखाना ॥ अस्ति प्राप्तिपति मरे दुखारी ॥ कहेउ जनक ते दुख बिस्तारी ॥ सो सुनि
जरासंध रिसियाना ॥ यदि पुर ऊपर कीन्ह पयाना ॥ तेइस अक्षोहिनि लै सैना ॥ मधुपुर घेरि लियो जग
जैना ॥ सो सब खबर कृष्ण सुनि काना ॥ संकर्षण ते बचन बखाना ॥ तात निपातहु याकर सैना ॥ पैनबधे-
हु मागध बल ऐना ॥ दोहा ॥ जरासंध रण धीर अति जौ जीहै तौ आय ॥ सकल सैन मरवाइकै दंत बजाइ-
बजाइ ॥ १ ॥ इतनेहि कहत उभय रथ आए ॥ दिबिते दिनकर से दुति छाए ॥ चढ़ि तापै मोहन बलदाऊ ॥ चले
सैन कछु संग जुझाऊ ॥ दस अक्षोहिणि दल कहँ साजा ॥ भिरेउ जरासुत मागधराजा ॥ अक्षौहिणी पांच
लै भारी ॥ भिरेउ सुयोधन सुभट हंकारी ॥ बिंधिनाथ तितनेइ दल साथा ॥ अभिरो क्रोध बिबस नर नाथा ॥ तीन
अक्षोहिनि लै दल भारी ॥ भिरेउ बंगपति अरि मदहारी ॥ यहि विधि सब महीप भिरि भिरिकै ॥ परम युद्ध
कीनो थिरि थिरिकै ॥ गिरिधर सारंगहि ढंकारयौ ॥ जरासंध कहं गरजि प्रचारयौ ॥ दोहा ॥ ब्रह्म अंड उगतो भयो

कंपे दिग्गज चार॥शेष भए संका सहित भोभय अति व्यापार॥२॥छंद॥ भय भयो अति व्यापार रुधिर समान अति संकट भए॥गज अश्व रथ भट ऊंट सिगरे दश दिशा महं भगि गए॥ षट कोसलौं चतुरंग भागी सभय लखि भगवान की॥तेहि काल सुभट पचारि दश दिशि लगे डारन बाण को॥१॥करकटे अरु पगकटे मस्तक कटे महिं डोलहीं॥धरु मारु मारु भाषहिं मरहु बीर बहु बिधि बोलहीं॥बहु छत्र सुंदर हार कुंडल परे महि मह टूटिकै॥गोमायु कंक समाज मिलिकै रहे रण रसलूटिकै॥२॥तेहि काल परम बिशाल निकरी लाल श्रोणित की नदी॥नर अंग जलचर बिबिध सोहत दशहु दिशि अति ही लदी॥खर ऊंट नभ सिर बिगत तेसब लसहि सरि का धार से॥शिशुमार रथ अरु सर्प वर भुज केश बेष सिवा रसे॥३॥सब रतन रेती चमक देती उभय दल बेला लसै॥द्विप मुरिस द्विप मंथि महत राजैं बीर कर मन तहं बसै॥बहु मरे घायल मारु बोलहिं बिगत सिर डोलहिं घने॥कर शक्ति शूल भुसुंडि परिघा परशु मारहिं भट बने॥४॥वैताल भैरव भूत योगिनि अट्टहास उचारहीं॥कर मारहिं खप्पर समर डोलहिं मुंड माल सवारहीं॥चढ़ि सिंह ऊपर भद्र काली डाकिनी बहु संग लिए॥पीवत रुधिर प्रमुदित गरजत शूल असि महं कर किये॥५॥अपसरा विद्याधरी चढ़ि चढ़ि यान हेरहिं भीर को॥लैजाहिं निजनिज धाम सगरी मरद वीर सुधीर के॥बहु सुभट बढ़िकै प्राण त्याग्यो बिष्णु पुरते जातभे॥सोदेखि संगर करन

महँ सब सुभट अति उमदातभे ॥ ६ ॥ दश दिशन छाए शस्त्र धुनि धरु मार धरनी भरि रही ॥ यदु बीर मागध बीर दो
ऊ सैन झुकि झुकि लरि रहीं ॥ बलदेव तब गहि मुशल हलतें भटन कहँ मरदत भए ॥ गत प्राण अमित प्रधा
न कहँ तेहि काल भरि रिसि करि हए ॥ ७ ॥ सो देखि मज पुर बंग बिंध महीप व्याकुल भागते ॥ सब सुभट भयते
त्रसित बलके बलहि लखि अति ठगतभे ॥ तब जरासंध रिसाइ सन्मुख आइ धनु कहँ धुनतभो ॥ सर अमित अर्बुद
त्यागि तुरत अनंत को बध गुनतभो ॥ ८ ॥ हलते पकरि रथ मारि तूरण मुशल चूरण करतभे ॥ तब मल्ल सरिस महा
न बल बलदेव मागध लरतभे ॥ कर करन चरण सुबरण उरते उर बदनते बदन कों ॥ करि मेल बिबिध बिधान
अभिरहिं चहत दोउ अरि कदन कों ॥ ९ ॥ करि गर्जना अति तर्जना दोउ सिंह वारन से लरे ॥ तिनके लरत अहि कोल
कच्छप धरणि के सह थर थरे ॥ बल लेन चाहे प्राण अति रिसि यान दृग अरु नाइ कै ॥ तित जाइ तब भगवान दीन्ह
बचाइ ताहि बुझाइ कै ॥ १० ॥ दोहा ॥ अति गलानि जरा सुवन करन चह्यौ तप घोर ॥ मंत्री बिबिधि बुझाइ कै लैगे घर
की ओर ॥ ३ ॥ जीति जरा सुत कहँ दोउ भाई ॥ लूटेउ धन वाहन समुदाई ॥ यादव गण सब देत नगारे ॥ बंदेते बंदित प्रभु
प्यारे ॥ मागध कहहिं कि मागध भारो ॥ जय जय कार होत अति भारो ॥ मंगल गावत आवत नारी ॥ नावत अक्षत दू
ब सुपारी ॥ इहि विधि संग सुभट समुदाई ॥ मथुरा महँ प्रबिसे यदुराई ॥ उग्रसेन कहँ बंदेउ जाई ॥ राखेउ भेट हवाल
सुनाई ॥ तिनको सुख कछु कह्यौ न जाई ॥ जय जय कार होत अधिकाई ॥ इमि मथुरा निवसे सुख छाई ॥ सबके हृदय

हरष सरसाई ॥ दोहा ॥ जरासंध पुनि तेतनी भिरयो सैन लै आइ ॥ पुनि जीतो यादव सकल हरि भरि गयो
पराइ ॥ ४ ॥ प्रभु प्रताप यदुवंस सुखारी ॥ तिन्हकी बढ़ी विभव अति भारी ॥ जब जब जीतहि जरासुमारा
तब तब लूटहि द्रव्य अपारा ॥ बाढ़ो धन कछु कह्यो नजाई ॥ मानहु बसे कुबेर बहु आई ॥ सतरह बार म-
गध नृप हारा ॥ पुनि चह आवन कोप अपारा ॥ मेरे कहे काल तेहि काला ॥ घेरि लियो मधुपुरी रखाला
कोटि जवन लै तवन गरोरा ॥ ठाढ़ो लाल विशाल सुधारो ॥ इतहि मराधदल उतहि मलीछा ॥ द्वै अरि लरिव
करि कीन्ही इच्छा ॥ सिंधु मध्य नगरी बन बाई ॥ विश्वकर्मा तें परम सुहाई ॥ दोहा ॥ काबरनन ताको करिय
शोभा कही नजाय ॥ पुर बासिन को रात मैं दीन्ह तहां पहुंचाइ ॥ सोरठा ॥ कोउन जान्यो ख्याल कीन्ह जो-
न गोपाल जू ॥ बलहि त्यागि नंदलाल निकरे पुरतें शस्त्र बिन ॥ ५ ॥ काल यमन गोपाल निहारे ॥ मेरे
कथित सुरूप बिचारे ॥ चलेउ निरायुध पाछे धाई ॥ भागे कृष्ण लखहिं समुदाई ॥ बीच बीच महं हो-
कर भरको ॥ चलेउ यमन लखि गिरवर धरको ॥ माधव एक शैल महं जाई ॥ चतुर चार बपु गए लु-
काई ॥ तहं सूतो मुचुकुंद महीपा ॥ जिन जीत्यो अरि असुर समीपा ॥ देवन कह कीन्हो जप दाना ॥ वर
मांगहु तब सबन बखाना ॥ मांधाता सुत बोलो बैना ॥ बहु दिन जाउ करउं मैं सैना ॥ मोकहं जाउ जगावै
जोई ॥ देखत मात्र भस्म सो होई ॥ दोहा ॥ उठउं होउ हरि दरश तब सोइ बरदानहि पाउ ॥ सूतो सूतो देखि

तेहि हरि पद दीन्ह उढ़ाइ ॥ ॥ सत युग को महिपाल बर भक्त जानि भगवान ॥ नृपति नहाँउ लुकि रहे आ- उ जवन कुल ज्ञान ई ॥ काल काल वस मारेउ लाता ॥ जानेउ तिन्हे कृष्ण रिसियाता ॥ उठि आलस बस नृपति निहारा ॥ तुरत तहि जवन भएउ जरि छारा ॥ नृपभो काल जवन कर काला ॥ तव प्रगटे तित दीन द- याला ॥ चार भुजा सुंदर बन माला ॥ उर श्री वत्स विराज रसाला ॥ तव मुचु कुंद मुकुंद हि जाना ॥ मस्तक धरयो चरन अस्थाना ॥ कर जोरे भरि लोचन पानी ॥ अस्तुति विविधि भांति तेहि आनी ॥ तोमर ॥ बसुदेव नंदन ईस ॥ श्री कृष्ण हरि जगदीस ॥ गोविंन नंद कुमार ॥ प्रभु शुद्ध गुन आगार ॥ जय जलज नाभ गो- पाल ॥ जय जलज माल रसाल ॥ जय जलज लोचन श्याम ॥ जय जलज पानि ललाम ॥ परमेस अ- च्युत कृष्ण ॥ जय केश हर बपु कृष्ण ॥ बहु रूप कीर्ति अनंत ॥ बहु नाम वेद भनंत ॥ कर अमित अरु बहु चरन ॥ गुन धाम बहु जुग धरन ॥ मम सरिस नहिं अघ वान ॥ तुम समन करुना खान ॥ कीजै कृपा श्रीनाथ मम माथ मृकिय हाथ ॥ हम दीन तुम दीनेस ॥ तम पाप हरहु रमेस ॥ दोहा ॥ सुनि मुकुंद मुचकुंद के बच- नरचन आनंद ॥ कहत भये भव दुंद हर केशव करुना कंद ॥ ७ ॥ धन्य भूप तुम ज्ञान निधाना ॥ बदरी बन तप करहु महाना ॥ तित तपिकै ब्राम्हन वपु धारी ॥ ह्वैहो मुक्त नृपति रिपु हारी ॥ विना प्रेम नहिं मुक्ति नि- हारी ॥ इमि भाख्यो भगवान सुधारी ॥ सो सुनि बंदि चरन कुल दीपा ॥ चलेउ गुहा ते निकरि महीपा ॥ ताल

द्वा· १११

वृक्ष सत ऊँच निहारी ॥ भागी प्रजा तहाँकी सारी ॥ तिन्हइ अभय करि सत युग भूपा ॥ बदरी बनकहँ गएउ अनूपा ॥
मन मोहन मथुरा पुनि आए ॥ तहँते निकरि चले रिसि छाए ॥ मर्दन लगे यावनी सैना ॥ इतनेहि जरासिंध जग जैना
दोहा ॥ बिप्रन्ह तहँ बुलवाइकै साइत सुभ निकराइ ॥ तिनके भवन पठाइ धन राखेकै दकराइ ॥ सोरठा ॥ जो जीतहुँ
अरिसैन तौ छोरहु गो पूजिकै ॥ जौ मोहिं जीति मिलैन तौ मारहुँ गो इमि कह्यौ ॥ ८ ॥ लै शुभ साइत मागधराजा ॥ गो
मथुरा बजवावत बाजा ॥ भरारहा उर दुख अधिकाई ॥ जरा कुमार तबै रिसियाई ॥ तेइस अक्षोहिनि संग सैना ॥ जरा
क्रोधतें सो अरिजैना ॥ गुनि ब्राह्मन की गिरा गोपाला ॥ भजे यमन दल तजि तेहि काला ॥ संग मलेछन लै मगधेसा
पाछे चल्यौ भयानक भेसा ॥ देषत भए प्रबर्षन शैला ॥ चढ़े उभय तापर गहि गैला ॥ भागध तामहँ आग लगाई ॥ जस्यौ
शैलनभ आँच सिधाई ॥ राम कृष्णह्वै अंतर ध्याना ॥ गेद्वारिका शत्रु नहिं जाना ॥ दोहा ॥ सिगरे भूधरके जरे मुदित
भयो मगधेस ॥ जानि शत्रु को नास द्रुत प्रमुदित गो निज देस ॥ ९ ॥ जैजै करत दुंदुभी देई ॥ गो गृह परम विजय कहँ
लेई ॥ सत्य बचन द्विज यह अनुमाना ॥ पूज्यौ दैद बलत बिधिनाना ॥ तुम्है कहा यह शत्रु बिदारन ॥ द्वारावती बास
कर कारन ॥ सुनहु बिबाह प्रथम हलधरको ॥ अघहर बर सुख कर अरि दरको ॥ भो अनर्त्त भूप बलवाना ॥ जासु नामकर
नगर सुजाना ॥ सिंधु मध्य पुर परम बसायो ॥ रैवत ताको सुवन सुहायो ॥ सुता तासु रेवती बखानी ॥ उत्तम पति चाहत गु-
नखानी ॥ इक दिन सुता सहित नरपाला ॥ रथ चढ़ि चलत बायु सम चाला ॥ दोहा ॥ बेद बदन के लोक गो रेवत बर गुन

धाम॥समासीन बिधि कह लख्यौ कीन्ह प्रबीन प्रनाम॥१०॥बिधि तहँ रहे सुनत कल गाना॥ तहाँ महूरत एक बिता-
ना॥ तब सखकीन्ह भूप दिसि सोई॥बंदि कह्यौ रैवत दुख खोई॥ तुम प्रभु पर पुरान जग दीशा॥ परमेश्वर सब महँ वि-
भु ईशा॥ करहु भरहु अरु हरहु दयाला॥मुख श्रुति हृदय धर्म हस काला॥ अंगदेव पद असुर सुजाना॥ पीठि अध-
र्म बुद्धि मनु माना॥ हस्ता मलक खलक यह अहई॥ पलक झलक विरचर जो चहई॥ इंद्रादिक जे भे पुर पाला॥
सो सब आप कृपा श्रुति भाला॥ गुन अनंत सुर जेष्ठ कृपाला॥ बिधि बिश्वेश विश्व प्रति पाला॥दोहा॥ यह कन्या क-
हँ करि कृपा बर बताइये ईस॥ बर सब महँ बर बुद्धि महँ सुंदर बिश्वे बीस॥ ११॥सो सुनि हँसे जगत पर दारा॥ बोले बचन
सहित मरयादा॥ तुमहिं खरे इतहे नृप ज्ञानी॥सत्ताइस चौकरी बितानी॥ अबन बसंत बउर धन धामा॥ द्वापर युग य-
ह गुनहु ललामा॥ राम कृष्ण पूरन तम स्वामी॥ भे बसुदेव सदन खग गामी॥ परम पुरान परे सुर सोई॥ तिनके सम जग
अह इन कोई॥ रहत द्वारिका मैं करि गेहू॥ बलदेवहि निज कन्या देहू॥ सुनि रैवत बलके ढिग आई॥ दीन्ह सुता सब
कथा सुनाई॥ सहस अश्व युत स्यंदन दीन्हा॥ योजन भरकर जौन प्रबीना॥ दोहा॥ मनि धन भूषण बसन सब दाइज
दैकै भूप॥ करि बिवाह बदरी विपिन आए तपन अनूप॥११॥इत उत्सव कीन्हो सब कोऊ॥ बल रैवती बिराजे दोऊ॥ सु-
नइ कथा जो यह अघहारी॥ ताके हाथ पदारथ चारी॥ कृष्ण बिबाह सुनहु भूपाला॥ पाप हरन सुख करन रसाला
मधि बिदर्भ कुंडन पुर नामा॥ तहँ कर भीष्मक भूप ललामा॥ भई रुक्मिनी तासु कुमारी॥ श्री गुनवान मनोहर भारी॥

एक दिन हमरो नृपके पासा ॥ रही सुता तहं चंद्र प्रकासा ॥ हरि कर गुन सब बरनन कीऊ ॥ बैदर्भी मनते प्रभु वरेऊ ॥ भू
प कीन्ह यह चारु बिचारा ॥ सबहिन कह भलकीन्ह भुआला ॥ दोहा ॥ तासुतनय युवराज बल रुकमी दीन निवारि ॥ ब-
रिशत्रुपालहि बरन भो दैके कृष्णहि गारि ॥ १२ ॥ तबै रुकिमनी छोड़ि उदासा ॥ पठयो दूत द्विजहिं हरि पासा ॥ सोमुकुं
द मंदिर महं आयो ॥ ताहि जिवाहि कृष्ण बैठायो ॥ पूछि कुशल हरि की रुख पाई ॥ ब्राह्मन पठयो पत्र हर बाई ॥
स्वस्तिश्री गुन सकल निधाना ॥ उपमायोग अनंत महाना ॥ कुशल इतै चह कुशल तुम्हारी ॥ नारद मुख गुन सु
निकै भारी ॥ सब जानत परि पूरन प्यारे ॥ व्याहहु मोहिं वसुदेव दुलारे ॥ मृगपति बलि मृग गहैन जैसे ॥ करिय कृपा
करि केशव तैसे ॥ जब हम देवी पूजन आवैं ॥ तब हरि हरि सम हरिलै जावैं ॥ दोहा ॥ रुकिमनिके यह बचन सुनि प्रभु
लोचन जल छाइ ॥ चेरिलै आवहु मम सुरथ सूतहि कह्यो बुलाइ ॥ १३ ॥ दारुक दिवितें रथलै आवा ॥ कहिन जाइ
अति रुचिर बनावा ॥ मेघ पुष्प सुग्रीव बला हक ॥ सेव्य चारु हयरथके बाहक ॥ द्विजसे चढ़े कृष्ण मनभाए ॥ तूरन कुं
डन पुर चलि आए ॥ उतरे उपवन मे भगवाना ॥ यह सुधि प्रात मुशल धर जाना ॥ तुर तहि सिंगारी सैन सजाई ॥ आए
तहाँ जहाँ यदुराई ॥ देउंका कर शब्द घनेरा ॥ सोउ उपवन महं कीनो डेरा ॥ तहँते कुंडन नगर दिखाई ॥ जोजन सात गोल
सरसाई ॥ सन धनु नापि सुदाई रवाई ॥ सरित समान वारि अधिकाई ॥ दोहा ॥ कर पचासकी जहँ लसै ऊची चारु दिवार ॥
महल घने मनिके बने ऊचे कठिन किवार ॥ १४ ॥ मोर कबूतर भ्रमहि पुरीमे ॥ सुंदर अगर कपूर धुरीमे ॥ चैद्यहि भीष्म-

कदैहै कन्या॥ बिदित नगर यह औरन अन्या॥ मंगल गीत होइ नृपधामा॥ सकल सिंगारहिं रुक्मिनि बामा॥ द्विज-
न दक्षिना बहु विधि दीन्हा॥ दान अरिष्ट निवारन कीन्हा॥ हेम भार लष दूनो मोती॥ गोषट् अर्बुद दससत धोती॥ द-
शलख रथ दश कोटि तुरंगा॥ गुड तिल परवत अयुत मतंगा॥ सहस सुवर्न पात्र बहु गहना॥ दीन्ह नृपति जो सोका कह
ना॥ शिशु पालहिं दस घोष महीपा॥ कीन्हो बहु मंगल कुल दीपा॥ दोहा॥ नहि पूज्यौ हेरंब कह किये सकल उप-
चार॥ शिशु पालहि बाध्यौ मउर जामा पीत सुधार॥ १५॥ छंन्द॥ जामा सुधारि सवारि कंकन गीत मंगल गावहीं॥
तन श्याम चोटी हार उर शिशु पाल तिलक करावहीं॥ दम घोष नृप बजवाइ दुंदुभि सुतहि गज बैठाइकै॥ साजी बरात
सुहात चलतसु दुंदुभी बजवाइकै॥ रद वक्र जरा कुमार शाल्व बिदूरता दिक भूपजे॥ अरु पैद संग सहाय सैन समेत
आपसमीप लै॥ एहि भांति स्यंदन अश्व बारन साजि सुभट समाज को॥ प्रबिस्यौ नगर बजवाइ बाजन सजे सुंदर साज
को॥ २॥ हम कहि दियो यह प्रथम इत श्री बासुदेवहु आइहैं॥ तेहि हेतु तुमसब सजग रहियो सुता हरि लैजाइहैं॥ बैदर्भ
पति तिन जाइकै शिशुपाल कर पूजन कर्यौ॥ बहु भेट हाटक रतन अंबर गज तुरंग सन्मुख धर्यौ॥ ३॥ समधी सकल पुनि
मिले प्रमुदित दुहूं दिसि दुंदुभि बजी॥ कीन्ही निछावरि छाइ आनंद सकल तैयारी सजी॥ जनबास बहुरि महीप दीन्हो बा
स सब जनकरत भे॥ शिशुपाल व्याहो जात प्रातहि बात यह उच्चरत भे॥ ४॥ दोहा॥ सुनहु भूप इत रुक्मिनी हरि बिन व्याकुल
चित्त॥ अतिही दुख महं डूबिकै कहत बचन निज हित्त॥ १६॥ अहोन आवत किमि भगवाना॥ यह संशय कर काल महाना

हौं अरु नाकछु मालुम नाही॥ फिरउन द्विजजो गो प्रभु पाही॥ हरि यदुबंश विभूषन जोई॥ तिनमह कछु कलंक कह जोई॥ नहि आए करि हृदय उदासी॥ गुनि मम सम गृह कोटिन दासी॥ हा हम परन कृपा कोउ कीन्हा॥ हम हू नहि संकट हरि लीन्हा॥ एक दंत द्विज सुरभी गोरी॥ पूज्यो इन्हहि फूल भरि होरी॥ कोउन सहाय होत मुहि काला॥ चिंतति भ्रमति भवन मह बाला॥ तबभे फुरत बाम सब अंगा॥ भयो हरष लखि सगुन सढंगा॥ दो॰ हरि प्रेरित सो बिप्र तब गयो रुक्मिनी पास॥ कह्यो कृष्ण आए निकट अरु बलको इतिहास॥ १७॥ होम मुदित दीन्हो बिधि नाना॥ बिदा कीन्ह करि बिनय महाना॥ सुना भूप हरि हलधर आए॥ ब्याह लखन अति आनंद छाए॥ भीष्मक द्विजन सहित अधिकाये॥ हरिकी स्वागत करिवे आये॥ कोदिन घट मधुपर्क सजाए॥ पूज्यो बिधिवत प्रेम बढ़ाए॥ भूषन बसन भेट धरि आगे॥ नृपति प्रीति चित बिनवन लागे॥ निज कन्या सम बरहि बिचारी॥ बंदि गए गृह नृप ब्रत धारी॥ सुनि आए बसुदेव कुमारा॥ गए मिलन नागर सरदारा॥ देखि देखि सो रूप अनूपा॥ प्रमुदित होहिं प्रजा सब भूपा॥ दोहा॥ इनते होइ बिबाह जौ रुक्मिनि सों भगवान॥ या सम उत्तम बात नहिं कोउ जग बीच सुजान॥ सोरठा॥ जौ होइहि ससुरार तौ कबहू ऐहैं इते॥ होसुख हमन अपार इमि भाषहि पुर लोग सब॥ १८॥ भीष्मक सुता चली तेहि बारा॥ पारबती पूजन निरधारा॥ उर अति बढ़्यो कृष्ण सों हेता॥ सोहत सुंदरि सखिन समेता॥ बाजहिं भेरी शंख मृदंगा

बंसी मागध गावहि संगा ॥ वार बधू नाचहिं बहु भाती ॥ जैजै धुनि दश दिशन बिभाती ॥ कोटि इंदु सम आनन सोहा ॥ भूषन सजे क्रांति रवि मोहा ॥ छत्र चमर पंखा सखि हाथा ॥ मुदित डोलावहि नेनर नाथा ॥ सुरथ अश्व अरु सुभट मतंगा ॥ चहु दिशि घेरि रहे भरिरंगा ॥ रक्षा करन हेतु मद पूरे ॥ आयुध धरे करन महँ रूरे ॥ दोहा ॥ देवी मंदिर जाइकै धोइ चरन अरु हाथ ॥ करत बिनय यह रुकिमनी राखि चरन परमाथ ॥ १८ ॥ दुर्गे सुत समेत भवहारिनि ॥ पद प्रणावत संतत सुख कारिनि ॥ मम पति परिपूरन तप होऊ ॥ त्यागि कृष्ण के औरन कोऊ ॥ सो सुनि सखिन बहुत बिधि बरजा ॥ असन कहहु कत उलटी अरजा ॥ मांगहु बर शिशुपाल रसाला ॥ तुमि कहि कहत अंबकहि बाला ॥ यह अजान छमियो अपराधू ॥ परम सुशील शांति चित साधू ॥ तुमि कहि पूजा कीन्ह अनूपा ॥ अच्छत गंध बिभूषन धूपा ॥ बसन फूल फल भोग सुदीपा ॥ राखि बिबिधि बिधि भेट समीपा ॥ करि प्रनाम अरु कीन्ही फेरी ॥ वर मागेउ यदु बर कह फेरी ॥ दोहा ॥ तुहिं बिधि जब पूजन कियो हरि दरसन अह्लाद ॥ तबै तहां की नारि यह दीन्हो आशिर्वाद ॥ २० ॥ सवैया ॥ सत रूप समान सरूप तुम्हे अरु शील सुजान शिवा समहै ॥ पति व्रत्त अरुंधति तुल्य अहै रिय तुल्य छमा नव कमहै ॥ बर भाग्य सुलक्षन नारि यथा सब के सम वैभव उत्तमहै ॥ तव बानि गिरा सम ज्ञान मई प्रतिभक्ति हरी जगसी गमहै ॥ १ ॥ दोहा ॥ एहि बिधि आशिर्वाद सुनि भवउरमे आनंद ॥ भव पत्नी कर बंदि पद

चली द्विरद सम मंद ॥ २१ ॥ चारहुं दिसा सखी समुदाई ॥ भासुरवसो कछु कहा न जाई ॥ कोटि इंदु सम लखि कै वदना ॥ सबकहँ भूमि गिरायो मदना ॥ गजी रथी अश्वी पद चारी ॥ गिरे भूमिपर चेत विसारी ॥ काम धनुष ते सर कढ़ि कढ़ि कै ॥ भेदत भए भटन वढ़ि वढ़ि कै ॥ तेहि छन हरि निज सुरथ वढ़ाया ॥ वायु कंज बन महँ जिमि धावा ॥ चले मीन सम काटत काई ॥ घुसि दल महँ जलदी यदुराई ॥ वैदर्भी की बांह पकरि कै ॥ रथ पर बैठायो सुख भरि कै ॥ बहुरि बढ़े तहँ ते भट भेसा ॥ जिमि पियूख हार्यो पत गेसा ॥ दोहा ॥ मोहित लखि पर सैन कह सारंगहि टंकारि ॥ निज दल महँ आवत भए द्रुत दुरितारि मुरारि ॥ २२ ॥ छंद ॥ दुरितारि द्रुतहि मुरारि जब निज सन महँ आवत भए ॥ तेहि काल यादव देव नभ महि भेरि बज वावत भए ॥ जय शब्द अंबर होत नंदन सुमन बरसावत भए ॥ अपसरा नाचहि प्रेम राचहि गंध रव गावत भए ॥ १ ॥ दोहा ॥ एहि विधान रुक्मिनि हर्यो रुक्मिनि रमन कृपाल ॥ रुकुम रचित रथ पै हरिहिं लख्यो लखन तेहि काल ॥ १३ ॥ कवित्त ॥ जरासंध आदि हे महीप मद अंधजे ते चकित वखानै गोप कीन्हो कर्म भारो है ॥ सिंहन मै श्यार भागि लै गयो उठाय आज ताहि ना छुड़ायो धिक पौरुष हमारो है ॥ मारि लेहु मारि लेहु भागिवे न पावै जामै गिरधर कुटिल महान माया डारो है ॥ कारो आज बीरन को कारो मुख करडारो रुक्मिनी निकारो ज्यौं गरल धर कारो है ॥ दोहा ॥ इमि कहि कहि भूपति चले साजे सैन कुरूप ॥ पौंडक है अक्षोहिनी तीन विदू रथ भूप ॥ शाल्व तीन अक्षोहिनी पांच लिए रदवक्र ॥ दस अक्षोहिनि दल लिये मागध बरनर शक्र

अरु जेते महिपाल तित निज निज धनु टंकारि ॥ भिरे भयंकर यदुनतें बारंबार प्रचारि ॥ २४ ॥ भएउ भयंकर संगर राजा
देवासुरके सरिस समाजा ॥ तुमल मचो कछु भाषि न जाई ॥ पैदल पैदल करहिं लराई ॥ रथते रथ हयते हय वाहा ॥
गजते गज नृपतें नर नाहा ॥ सभै देखि त्रिय समै निहारी ॥ अभय कीन्ह समुझाय मुरारी ॥ गहि धनु गद हरि अनुज
रिसायो ॥ दुष्ट दलन हित सुरथ चलायो ॥ अंबुद सम बरख्यौ सर धारा ॥ शत्रु सैन महँ प्रलय पसारा ॥ गिरहि मनुज
महि खाइ पछारा ॥ नदी बेगि जिमि गिरै करारा ॥ स्यंदन वारन काटे घोरे ॥ भागे सभय देखि निज ओरे ॥ दोहा ॥
टंकारत को दंड कहँ गदसु गदा धर भ्रात ॥ भयो सवन गदराज सम प्रान हरन रिसियात ॥ २५ ॥ तोटक ॥ तव शा-
ल्व गदा धरि मारत भो ॥ गद बीरहि धीर प्रचारत भो ॥ गद व्याकुल ह्वै तव भूमि पर्यौ ॥ उठिकै धनुकों रथ बीच ध-
र्यौ ॥ लखि भारमई गहि हाथ गदा ॥ रिसि छाइ चल्यौ गद गर्जि तदा ॥ तव साल्वहि तौन प्रहार कर्यौ ॥ महिपाल
क मुर्छित भूमि पर्यौ ॥ मगधेश विदूरथ पौंड्र कहूँ ॥ रद बक्र भिरे मिलि चारतहूँ ॥ तव कंतित भूप ध्वजा गदकी ॥
दुत काटि दियो छविके हदकी ॥ रद बक्र गदा तजिकै तबहीं ॥ रथ डारेउ तोरि लख्यौ सबहीं ॥ बधि सूत विदू रथ
कोप भयो ॥ हयकों बधि मागध डारि दयो ॥ पुनि चरन्ह यादव घेरि लियो ॥ बहु मारि सुव्याकुल ताहि कियो ॥
सर शूल परश्वध खड्ग गदा ॥ सब आयुधते गद बीर लदा ॥ दोहा ॥ तब बलकर महँ लै मुशल तमकि कोपकरि
घोर ॥ दंत बक्र मुख महँ हन्यो सुभट सहज सह जोर ॥ २६ ॥ दंत गिरे महि परसब आई ॥ दंत निकारि हसे यदुराई ॥

रुक्मिनि सहित मुदित भगवाना ॥ यदु दल सहित हँसे अहिचाना ॥ मुखतें निकरो अरि रद जहँवा ॥ मुखतें निकरो
सबरद तहँवा ॥ पौंड्रक जरा कुमार बिदूरथ ॥ इनकहँ मार्यौ मुशल मुशलहथ ॥ तीनहु गिरे मृतक सम आई ॥ तब
बल अपनो हल फैलाई ॥ मारि मारि मूशल बलवाना ॥ छनमहँ हरे भटनके प्राना ॥ दश योजन लौ श्रोनित पूरा
कटे परे रथ हय गज सूरा ॥ तेहि छन ऐसी दसा निहारी ॥ भगी नृपनकी सैना सारी ॥ दोहा ॥ जरासंध आदिक नृपति
शकल बैद्य ढिगजाइ ॥ आंसु पोछि भाषत भए बहु बिधान समुझाइ ॥ २७ ॥ तजहु शोक कहँ अब नर नाहा ॥ एक
छोड़िशत होहिं बिबाहा ॥ अबहिं कृष्ण बलदेवहिं मारौं ॥ यादव रहित भूमि करि डारौं ॥ चढ़ि हारावति पहँ सह
साजा ॥ कहि निजराज गए सब राजा ॥ शिशु पालक दम घोष समेता ॥ गए सदन उरलै दुख केता ॥ बहिन हरन भि
न्नन करहारी ॥ बोला रुकमी सभा मझारी ॥ जौमैं बधौ कृष्ण कहँ नाहीं ॥ तौ नहिं आवौं कुंडिन माहीं ॥ इमि कहि
पहिर्यौ कवच महाना ॥ सिंधु देश निर्मित सिर त्राना ॥ धनुसौ बीर देस कर भारी ॥ यमन देसकी असी सुधारी ॥ दोहा
गुरज राटकी लैगदा परिघ बंग को धार ॥ मेरट की शक्ती गह्यौ कमर निखंग सुधारि ॥ २८ ॥ चढ़ेउ सुरथ पर भट
बल ऐना ॥ संग उभय अक्षोहिनि सैना ॥ चलेउ रुक्म कर करको दंडा ॥ रुक्म रथी रन धीर प्रचंडा ॥ बल देख्यौ
अनीक पुनि आई ॥ भिरे सदल दुंदुभी बजाई ॥ तजि सैनहि बढ़ाइ रथ रुक्मी ॥ गयो कृष्ण ढिग दुःसह हुक्मी ॥
कहत भयो निज धनु टंकारी ॥ फिरु रे फिरु तस्कर अघकारी ॥ त्यागु बहिन मम मरिहौं नातो ॥ तासें राखु प्रान कौं

नाम्यो॥ गोपय यानि शरण पद्मन कादर॥ भगो यमनते हय तव कादर॥ इमि कहि तानि कानलौं चापा॥ हरि उर मा- द्वा॰ रयो शर भरि दापा॥ दोहा॥ सारंगहि टंकारि हरि तीछे तीर प्रहारि॥ दीन प्रतिज्ञा कादि कै नातो तासु पुकारि॥ २८॥ धनुष चढ़ाइ दूसरी डोरी॥ दश सर हन्यो हरिहिं बर जोरी॥ भेद्यो कृष्ण एक शर भारी॥ सो गरज्यो सत बान प्रहारी॥ कृष्ण एक शर हनि तेहिं डारो॥ शरन समेत सरासन कारो॥ मार्यो महा शक्ति तड़िता सी॥ भाषन यह तव यमकी फांसी॥ तब हरि अपनो गदा प्रहारो॥ शक्ति समेत सूत बधि डारो॥ चूरन सुरथ हयन सह भ- ग्यऊ॥ तबसो कूदि धरा पर गयऊ॥ रुक्मी गदा कृष्ण कहँ मारा॥ मारि सुदर्शन तहि मग मारा॥ परिघ घुमाइ हरिहि ललकारो॥ बज्र समान कंध महभारो॥ दोहा॥ सोइ परिघा गहि कृष्ण तब मोउ ताहि प्रचारि॥ सो तब कछु व्याकुल भयो उर संभ्रम बिसारि॥ ३०॥ चलेउ कोपि धरि चरम कृपाना॥ तब तेहिं लखि विहंसे भगवाना॥ असि ते असि काट्यो तेहि काला॥ हस्त त्रान सिर प्रान निकाला॥ कवच काटि दीन्हो महि डारी॥ चलेउ रुक्म असि मूठ- हि धारी॥ पकरि कृष्ण करते कर तासू॥ महिके मध्य गिरायो त्रासू॥ चढ़ि ताकि छाती पर राजा॥ रवड़ निकास्यो मारन काजा॥ लखि रुक्मिनी क्षोभ उर आनी॥ उतरि सुरथ ते बोली बानी॥ हे अनंत अज ईश्वर ईसा॥ करिसु दया देखहु ममदीशा॥ शालहि मन मारिय भगवाना॥ करि कछु दंड तजहु जग त्राना॥ दोहा॥ देखि नारि कहँ विकल अति तजो रुक्मिनी प्रान॥ कटि कसिताकी बाँधि कै लीला करी विधान॥ ३१॥ असि सित धार धारि यदुनाथ॥ मूड़त भए अधो

अरिमाथा॥ इतनेहिं बधि अरि दल बल आए॥ तासु दशा लखि तुरित छोड़ाए॥ हरिहि कहत यह अनुचित कीन्हा॥ का
कहि हैं जग लोग प्रवीना॥ शाल हँसी अस होइ न भाई॥ नाता महँ न चहिय निठुराई॥ देखहु रुक्मिनि दिसि पदुराई॥ इमि
कहि तिनते कहत बुझाई॥ हे नृप सुता करहु मति खेदा॥ यह सब करत काल निरबेदा॥ मेघ बायु सम कालहि जानो बि-
ष्णुहि काल रूप करि मानो॥ हम तुम भाव जगत को बंधन॥ याके रहित मुक्त सोई जन॥ दोहा॥ शत्रु मित्र सुख दुख सकल
अहहि काल आधीन॥ तातें कोउ परदोष नहिं यामहं लषहिं प्रबीन॥ ३२॥ इमि कहि राम कृष्ण दोउ भाई। गये द्वा-
रिका हरष बढ़ाई॥ भीष्मक सुत गुनि दशा आपनी॥ तप करिबो चाह्यो अभिमानी॥ तब मंत्रिन समुझाइ फिराई॥
बसेउ भोज कट नगर बसाई॥ लै रुक्मिनी श्याम छवि छाए॥ पुरमहँ आए परमा छाए॥ अगहन महँ करि बेद बिधा-
ना॥ निज बिवाह कीन्हो भगवाना॥ सो शोभा नहि जाइ बखानी॥ राजा कृष्ण रुक्मिनी रानी॥ द्वारावती बिराजत कैसे
अमरावती इंद्र की जैसे॥ जो रुक्मिनि मंगल कहँ गावैं॥ अच्युत पद मजाय क्षिति पावैं॥ दोहा॥ और कृष्णके व्याहकों
भूप सुनहु आगान॥ पाप हरन भवनिधि तरन करन सकल कल्यान॥ ३३॥ यादव सत्राजित रवि दासा॥ तेहि मन दी-
न्हो जगत प्रकासा॥ नामस्यमंतक अतिहि सुछेमा॥ देवै आठ भार नित हेमा॥ इकदिन मनिहि पहिरि सो आयो॥ हरि
तातें यह बचन सुनायो॥ यह मनि उग्रसेन हित देहू॥ लालच बसन दीन्ह बुधि गेहू॥ तासु अनुज प्रसेन इकबारा॥ प-
हिरि मनिहि गो बिपिनि सिकारा॥ तहँ केहरि तेहि हति मनि लीन्हा॥ चलेउ हृदय अति आनँद कीन्हा॥ जाम वंत

रीछन कर राई॥ हति केहरि लैगो मनि भाई॥ इत सत्राजित सबन सुनायो॥ वधि भ्रातहि मनि कृष्ण चुरायो॥ दोहा॥ जिमि तिमि यह पहुंची खबर वासुदेव के पास॥ कृष्ण यादवन संगले जंगल गए उदास॥ ३४॥ लखेउ ताहि हरि सह हरिमारा॥ हरिय प्रान पुनि हरिहिं निहारा॥ सबन भाखि निज चोरी काजा॥ रीछ बिवर प्रविशे यदुराजा॥ लखि पग चिन्ह सोई मगजाना॥ तहां महल देख्यो भगवाना॥ जमवंती पलना परसोई॥ ताके झूलनमह मणि सोई॥ कृष्ण लीन्ह मनि चोर पुकारा॥ आइ रीछ कीनो लल कारा॥ दिवस अठाइस भा रन भारी॥ रीछराज तब पायो हारी॥ जानि कृष्ण कह हरि अवतारा॥ विनय करत भे विविधि प्रकारा॥ हरि कर व्याह सुता संग कीन्हा॥ दाइज मणिं स्यमंतक दीन्हा॥ दोहा॥ लैविय आए धामहरि ताहि रत्न सो दीन्ह पोच शोच संकोच बश सत्राजित लै लीन्ह॥ ३५॥ निज कलंक हित हृदय विचारी॥ सुता सत्यभामा अति प्यारी हरिहिं व्याहि मणि दाइज दीन्हा॥ द्वैमि तीजे बिबाह कह कीन्हा॥ जिमि तिमि करि सो बात सवारी॥ नातरु अतिहि रही धिक्कारी॥ रुक्मिनि जामवती सति भामा॥ भई तीन केशव करि वामा॥ गे हरि पांडु सुतन के पासा॥ इंद्र प्रस्थ महं कीन्ह निवासा॥ अर्जुन सह चढ़ि रथ इक बारा॥ गये मुना तट करन सिकारा॥ तहं तप करत लखी इक बामा॥ पूछेउ पार्थ हवाल ताभा॥ कहेउ कि कालिंदी मम नामा॥ तपतह हिं पति मम घन श्यामा॥ दोहा॥ अर्जुन ताकहं लाइके हरिने दीन्ह मिलाइ॥ विधिवत कीन्ह बिबाह कहं अपने पुर महं

जाइ ॥ ३६ ॥ नृप अवंति पति ही अति भारी ॥ तासु मित्र वृंदा सुकुमारी ॥ ताहि स्वयंबर ते हरि हरेऊ ॥ रुक्मि
निसम बिवाह पुनि करेऊ ॥ सत्या सुता नग्न जित केरी ॥ रूप निधान रमा सम हेरी ॥ तासु जनक कीन्हो पन एहू
सात वृषभ नाथै तेहि देहू ॥ ते वृष सात मतंग समाना ॥ नाथ सके न कोऊ बलवाला ॥ तब तहं आप गये य-
दुनाथा ॥ सात सरूप होइ तेहिं नाथा ॥ करि बिवाह अति आनंद छाए ॥ नगर द्वारिका के मधि आए ॥ भ-
द्राकै कय भूप कुमारी ॥ यमुना सम तेहि बर्यो मुरारी ॥ दोहा ॥ बृहत्सेनु नृपकी सुता रही लक्ष्मना नाम ॥
मत्स भेद व्याहत भए ताकहं आनंद धाम ॥ पटरानी ये आठ इमि जानहु जनक नरेश ॥ रानिन्ह की सुनि
यै कथा गहि उर हरष बिशेस ॥ ३७ ॥ षोड़श सहस एक शत कन्या ॥ भौमासुर के गृह ही धन्या ॥ तिन की
आर्त्ति जानि भगवाना ॥ लीन्हो जाइ नरक कर प्राना ॥ ताके सुत कहं दैकै राजा ॥ लखेउ सुता कर जाइ समा
जा ॥ लाए तिन्हहिं सुपुर निज चाहे ॥ एक मुहूरत माँहि बिवाहे ॥ तितनेइ आप पिता अरु माता ॥ द्विज प्रोहित
सम्बंधी भ्राता ॥ यादव मंत्री सकल समाजा ॥ तितने द्वार सुवाजन साजा ॥ मंगल भएउ कह्यौ नहि जाई
केशवकी सुंदर प्रभुताई ॥ तितनेइ सुंदर महल बनाए ॥ रहे दीन हित आप सुहाए ॥ दोहा ॥ इक इकत्रिय
महं होत भे दस दस सुत तन श्याम ॥ येक येक कन्या भई शोभा अति अभिमान ॥ ३८ ॥ रुक्मिनि सुवन काम
भगवाना ॥ धर्यो नाम प्रद्युम्न सुजाना ॥ दशई निशि शंबर हरि लीन्हा ॥ सुतहिं डारि सागर महं दीन्हा ॥

ताकहं गयो एक झष खोई॥ केवट लीन्हो जाल फासाई॥ पुनि शंबर कर दीन्हो जाई॥ भोजन शाला दीन्ह पठाई॥ मेरे कहे ब्राह्मनी होई॥ पति हित रहत रही रति सोई॥ काटि मच्छ कहं नाथहि पावा॥ करिसु यतन यदु बीर बढ़ावा॥ अपनो सो वृत्तांत बखाना॥ कहा कि तुम्हरे पितु भगवाना॥ अहहिं द्वारका अतिहि दुखारी॥ हमरति पूर्व जन्मकी नारी॥ दोहा॥ शंबर लायो हरिइतै हरिसुत मारहु ताहि॥ इमि कहि दीन्हो अस्त्र सब शस्त्र नाथ कह चाहि॥ ३९॥ बधि शंबर कहं अंबर मगतें॥ रति संग गए द्वारका रंगतें॥ नभ तें उतरि धाम जब आए॥ मात पिता कह नाहि चिन्हाए॥ मिले बहुरि जानत हरि ज्ञाता॥ भा विवाह तिन को तब ताता॥ पुनि रुक्मी की सुता बिवाही॥ तासु प्रान कीन्हो बल नाहीं॥ ताते भो प्रद्युम्नहि बेटा॥ सो अनिरुद्ध गुनज्ञ अखेटा॥ चार व्यूह कर इमि अवतारा॥ कहेउ कृष्ण कर मंगल सारा॥ ताप हरन अति आयू करई॥ सुनत पढ़त सिगरो दुख जरई॥ भे बहुलाश्व कहत इमि बचना॥ धन्य द्वारका सब सुख रचना॥ दोहा॥ जहं निवसत भगवान हरि इनके अंग संभूत॥ किमि इत आई कहहु सो अहो विप्र पुर हूत॥ ४०॥ सो सुनिकै मुनि ज्ञान बिशारद॥ बोले बचन विहंसि कै नारद॥ मनु सुत भूप भयो शर याती॥ अयुत बरष किय राज विभाती॥ तब उत्तान बरहि आनर्त्ता॥ भूरि सेन त्रइ सुत भूभर्त्ता॥ तीनहु कह दिसि तीनिसु दीन्ही॥ पूर्व उतान बरहि कहं चीन्ही॥ भूरि सेन कह दक्षिन दीशा॥ आनर्त्तहि पश्चिम अवनीशा॥ यह मम राज

साज सह पाला तिमि तुम की जो राज रसाला ॥ सो सुनि मध्यम सुवन अनन्ता ॥ बोलेउ बचन ज्ञान पथ पन्था
नहि तव महिन हि तुम इमि पाला ॥ नहि तुम निज शत्रुन कह घाला ॥ दोहा ॥ महि है प्रभु श्री कृष्ण की ति-
न्हही पालन कीन्ह ॥ सोई मार्यो शत्रु सब सोइ जग महं बल पीन ॥ ४१ ॥ सोई करै मरै अरु हरहीं ॥ ब्रह्म
काल बनि सोइ अनु सरहीं ॥ सोइ बाहर भीतर दरसाना ॥ बिष्णु विश्व व्यापक जग जाना ॥ जाभय रविश-
शि चल दिनराती ॥ जाभय बायु बहत बर भाती ॥ परि पूरन तम कृष्ण मुकुंदहि ॥ भजहु भूप तजि ममता
दुंदहि ॥ पितु कह बात जहर सम लागी ॥ बोले हृदय परम दुख पागी ॥ रेशठ रहुन राज मेरे में ॥ है अति दुष्टपनो तेरे में
देहै कृष्ण दूसरी उरवी ॥ गुरके सरिस बुझावत गुरवी ॥ सो सुनिकै आनन्द बरवाना ॥ रहिहों नहि तुम्हरे अस्थाना ॥
दोहा ॥ निकरि नहाने सिंधु धसि नयन लगो गहि बन्ने ॥ अयुत अब्द अति आपमे अच्युत आँचे अनन्ने ॥ ४२ ॥ भक्ति
जानि भे मुदित मुरारी ॥ वर मांगहु बोले हित कारी ॥ सुनि आनन्द उठेउ आनंदी ॥ बोलेउ बासुदेव पद बंदी ॥ बासुदेव
संकर्षन शुद्धहि ॥ नमः प्रद्युम्न और अनि रुद्धहि ॥ बाप निकार्यो मोहि तुम जाना ॥ महि तजि दूसर देवहिकाना ॥ तव
प्रसाद ध्रुव ध्रुव पदपायो ॥ हेदुख हरन शरन मे आयो ॥ सो सुनिकै प्रणतार्त्ति निवारन ॥ बोले विहंसि विहँग ध्वज
धारन ॥ नहिं दूजी दुनिया है भाई ॥ पैकरिहो तव हेतु उपाई ॥ शत योजन बैकुंठ मही को ॥ देतोहि रैहो राज तहीं को ॥ दोहा
इमि कहिके लावत भए भूमि चारु भगवान ॥ रविव सिंधु महं चक्र कह कीन्हो अचल सुजान ॥ ४३ ॥ धरा धरा ताके आधारा

तिलक आनर्त्त श्रीद पुनि सारा॥ भो आनर्त्त नाम पुर सोई॥ चक्रांत भयो जनक सुत जोई॥ लाख बरष किय राज सुजाना॥
रैवत भए तासु संताना॥ सौ श्री शैल सुतहि लै आना॥ पुर आनर्त्त बीच बैठावा॥ तातै भोगि दि रैवत नामा॥ कुशस्थ-
ली पुनि रची ललामा॥ सोइ रैवत निज सुता प्रवीना॥ संकर्षण भगवानहि दीना॥ मोक्ष द्वार गुनि यह सुख पागे॥ द्वा-
रावती कहन सब लागे॥ कासु निवे की इच्छा अहई॥ सो सुनिकै विदेह नृप कहई॥ दोहा॥ द्वारावति तीरथ मई परम
पुन्य की ऐन॥ मुख्य तहां तीरथ किते सुनि बोले मुनि बैन॥ ४४॥ आप्रभासने करि मरयादा॥ कीन्ह पुरी विस्तार कुशदा
देखि जाहि नर नर हरि होई॥ मरे परम पद पावै सोई॥ इक दिन रैवत भक्ति निहारी॥ हरि दृग भरयो प्रेम को बारी॥ सोइ
जल नदी गोमती जाई॥ जाहि लखे द्विज हत्या जाई॥ न्हाती बेर गोमती गावै॥ सो अज्ञान सहस फल पावै॥ दिन कर
मकर प्रयाग नहावै॥ सोशत अश्व मेध फल पावै॥ तासु सहस गुन गोमति माहीं॥ गुन कहि सकत जासु विधि नाहीं॥
गोमति चक्र तीर्थ यति नाना॥ पूजियते सब चक्र सुजाना॥ दोहा॥ चक्र तीर्थ महं द्वादशी दिवस न्हान हरषाय॥ शक्र शी
ष्णेर चरन धरि चक्रपानि पद जाय॥ दोहा॥ कोटि जन्म अघ नसत है चक्र तीर्थ सोपान॥ चढ़त बढ़त आनंद अति कट-
त दुःख सुमहान॥ ४५॥ गोमति नीर मृदा सिर धारै॥ सो शत जन्म पाप कहँ जारै॥ सुनि नरेश बोले यह बाता॥ भो किमिव-
क सुतीरथ ज्ञाता॥ तब नारद ब्रह्मा के लड़का॥ बोले बचन बुद्धि महं बड़का॥ इह इतिहास अहै इत भारी॥ सुनि नर होत
परम पद चारी॥ धनद कीन्ह जब वैष्णव जागा॥ हरि पद प्रगट परम अनुरागा॥ आये हरि सिर मुकुट विराजा॥ ब्रह्माण्ड

वरुण सुर राजा ॥ रविशशि अनिल अनल इसि दक्षा ॥ अप अर सिद्ध गंधरव यक्ष ॥ सुर ऋषि ब्रह्म ऋषी सब आये
तहं कुबेर सनमान रचाये ॥ दोहा ॥ नल कुबेर धनपति भए पूजा पर हुत बाह ॥ मरुत परोसन हेतु सब सेवापे
गन जाह ॥ ४६ ॥ रक्षत बीर भद्र बल जादा ॥ पार्श्व मौलि अरु घंटा नादा ॥ ये मंत्री तिनके अभिमानी ॥ धन
पति कीनो धनपति ज्ञानी ॥ यज्ञ अंत अस्नानहि कीन्हा ॥ देव द्विजन मन मांगत दीना ॥ तेहन दुर्वासा च-
लि आये ॥ दंडी सन्नी जटा बढ़ाये ॥ क्रोधी किशलघु उदर अबाढ़ी ॥ चढ़े पादुका दीरघ डाढ़ी ॥ वर मृगच-
र्म कुशा सन लीने ॥ आए योग रंग महं भीने ॥ लखि धनेश उठि कीन्ह प्रनामा ॥ दै आसन पुज्यो अभि
रामा ॥ तब संतोष सहित है सोई ॥ बोले बिहँसि धनद दिसि जोई ॥ दोहा ॥ तुम कीन्हो बैष्णव भरवहि दी-
न्ह द्विजन कहं दान ॥ देवन कहं पूज्यो बिबिधि मुदित भए भगवान ॥ ४७ ॥ हम कबहूं नहिं तुमते मांगा ॥ अ-
ब मांगनमम मन अनुरागा ॥ देहौं तौ सुख सब जग सारवी ॥ ननरु जारिके करिहो रारवी ॥ जितनी निधि तु-
म्हरे गृह अहई ॥ देहु हमें कछु पासन रहई ॥ सुनि कुबेर सो ज्ञाता दाता ॥ देहु द्विजहिं बोले यह बाता ॥ तब
ते होऊ सहित विषादा ॥ बोले धनपति गत अहलादा ॥ एक बिप्र लोभी कह राजा ॥ देहुन सब धन सुर सिर
ताजा ॥ देशन सह सद्रव्य मति माना ॥ विदा करहु याकह हम जाना ॥ सुनि तिनकी बानी दुर्वासा ॥ परम भयंकर
कीय प्रकासा ॥ दोहा ॥ उगत भयो ब्रह्मांड सब दुर्वासा के क्रोध ॥ कहत उभय मंत्रीनते गहतन नेकहु बोध ॥

४८॥ घंटा नाद दुष्ट संतापी॥ ग्राह होसि धन ग्राहक पापी॥ पार्श्व मौलि तोहि सूझत मस्ती॥ ताते होसि मस्त अति हस्ती॥ तिनहि शापदै लै निधि सारी॥ बोले बचन बिहँसि ब्रत धारी॥ याहिलेहु अरु दूनी होई॥ कहि दूमि राखि गये धन सोई॥ ते दोउ मंत्री दुखित अतोले॥ बंदि बिष्णु कहँ तहँ यह बोले॥ कृपा करहु हम शरन तुम्हारे॥ तब दयाल अच्युत उच्चारे॥ मम मख भयो शाप यह भारी॥ द्विज बानी नझूठ निरधारी॥ ताते तुमह्वै हो गज ग्राहा॥ मम कर मरि गति लहेहु सुचाहा॥ दोहा॥ तबते दोऊ मंत्रि बर जन्मे मकर मतंग॥ प्रथम कथा भूली नही उत्तम फल सत संग॥ ४९॥ पार्श्व मौलि रैवत गिरि माही॥ भोगज रूप जात कहि नाही॥ चार दंत तन श्याम समूचा॥ बिहरत कानन धनु शत ऊँचा॥ चंपक चंदन पनस मदारा॥ बीज पूर अर्जुन कचनारा॥ पाटल कौकन कुंद अनारा॥ पीपर बट प्रयाल निरधारा॥ केला आम उदुंबर ताला॥ बेन बेल अरु तिमि सतमाला॥ माधव मास सकल बन फूला॥ दंती मुदित भ्रमत सुख मूला॥ गयो गोमती गंग नहावै॥ साथ घना करिनी सरसावै॥ नाग नहाय सुंड फैलाई॥ केलि करै जल महँ अधिकाई॥ दोहा॥ ताही छन मै आयकै महा ग्राह गहि दाँव॥ ग्रसत भयो गजराज कहँ महा कोप करि पाँव॥ ५०॥ लरे ग्राह गज खींचहिं दोऊ॥ करहि जोर नहि जीतहि कोऊ॥ गज बहु सुंड परस्पर जोरी॥ खींचहि नहि त्यागै बर जोरी॥ एहि बिधि लरत करत बर रावन॥ बीतत भए बरष पंचावन॥ तब बिचारि गज व्याकुल भारी॥ टेर्यौ त्राहि कृपाल

मुरारी ॥ कृष्ण कृष्ण वपु कृष्ण कृपाला ॥ कृष्णा पद अति थिरण दयाला ॥ विष्णु जिष्णु प्रिय पूरन पावन ॥ पुन्य कीर्त्ति प्रभु विभु भव भावन ॥ परमेश्वर परेशजय वावन ॥ आरति हरन आनंद बढावन ॥ पाहि पाहि बर कीरति रानी ॥ त्राहि त्राहि सब हृदय निवासी ॥ दोहा ॥ पुष्कर नेत्रे पुष्कर हि पुष्कर नेहि सने भूप ॥ पुष्कर दृगटेरत भयो मुनि सो श्याम सरूप ॥ ५१ ॥ कवित्त ॥ आरति निवारि वे को कुंजर उबारि वे को गिर धर लाल सोइ काल मै सचेत भे ॥ धाए घहरात हहरात पर फहरात पदमाहि ठहरात रवगे त्यागि देत भे ॥ आरत पुकारत विचारत गोपाल उर देखि दुरव दीना नाथ दुखी दास हेत भे ॥ मारयो चक्र चक्र अति नक्र को विदारयो पीपा पाक आदि अमर आनंद उर लेत भे ॥ दोहा ॥ चक्र नच्यो पुनि मुदित चित गोमति के मधि जाय ॥ ताके परसे अस्मसब वक्र भए नरराइ ॥ ५२ ॥ चक्रतीर्थ सो अगम अपारा ॥ परसि होत नर भव जल पारा ॥ तवतन त्यागि ग्राह गज सीउ ॥ भेकुवेर के मंत्री होउ ॥ करि दंडवत परम मुद छाए ॥ राज राजके राज सिधाए ॥ सुर पूजित अरु सुरन समेता ॥ गोनिकेत निज कृपा निकेता ॥ जो यह कथा सुने अरु गावै ॥ चक्र मुनीरथ कर फल पावै ॥ जो गज ग्राह उधारहि धारै भव समुद्र के पार सिधारै ॥ शंखोद्धार माहि देदाना ॥ जान विष्णु पुर सो सज्ञाना ॥ कनक देहि महिमा अधिकाई ॥ ताकी कथा सुनहु नराई ॥ दोहा ॥ कृष्ण भक्त जित नाम पुनि तीरथ करत सुजान ॥ आय महि आनन्द महतीरथ किय अस्नान ॥ ५३ ॥ सेवन करन लगे सुख चहेऊ ॥ पायस आप शंख संग रहेऊ ॥ तिनको शिष्य शुकक्षी वाना ॥ शंख चु-

रायो गुरुतेहि जाना॥ बोले बचन क्रोध उर आनी॥ जानि ताहि लालच बिज्ञानी॥ जोमम शंख चुरायो सोई॥ तुरतहि शंख
शंख बपु होई॥ कक्षीवान शंख जब भएऊ॥ सभय शरन तब गुरुकी गएऊ॥ मुनि हंसि कहा तहम यह जाना॥ तुम्हहीं चो
र्यो शंख सुजाना॥ बचन न झूठ होइ दुख तजहू॥ दुःखनिकंदन कृष्णहिं भजहू॥ गे मुनि शंख सरोवर रहई॥ कृष्ण कृष्ण
आननते कहई॥ दोहा॥ शत संवत गत कृष्ण प्रभु आइ सरोवर तीर॥ शंख शंख टेरत भए शंख पाणि बलबीर॥ ५४॥ सो मुनि
शंख मोद उर छाई॥ पाहि पाहि भो बोलत आई॥ तब कर नाइ निकार्यो ताही॥ जलतें जलज जलज दृग चाही॥ तुरत दिव्य भा-
रूप महाना॥ हाथ जोरि बंदेउ भगवाना॥ कहत किमै अति शंख कृपाला॥ तव प्रताप इह दशा रसाला॥ छंद॥ द्वारावति स्वामी ख
गपति गामी गोविंद नामी गिरिधारी॥ ध्रुव ध्रुव पद दाता बलि सुख नाता काया धवत्राता भारी॥ द्रौपदि पट बर्द्धन धरन गो-
बर्द्धन जनदुख अर्दन जगदीशा॥ गुरु सुवन दिवैया नृपउ धरैया कृष्ण कन्हैया अवनीशा॥ मगधेश विनाशन कृष्ण खगासन
संकर्षन करुनाकारी॥ प्रद्युम्न सकामा रूप ललामा विप्र सुदामा दुखहारी॥ अनिरुद्ध अनंता श्रीभगवंता राधाकंता गुणरा-
शी॥ तुमही पितु माता सहचर भ्राता विद्या नाता अविनाशी॥ दोहा॥ इमि करि अस्तुति घान चढ़ि दुति धरि कक्षीवान यादवके
निरखत कियो केशव लोक पयान॥ ५५॥ जहाँ उपद्रव अहइ न एको॥ तहँ चलि गयो रुको नहि नेको॥ शंखोद्धार कीन्ह भगवा-
ना॥ शंखोद्धार नाम जग जाना॥ जो यह कथा सुनै अरु गावै॥ सो तित न्हावे को फल पावै॥ सुनहु प्रभास महातम राजा॥ अ-
घ कहँ हरत पुन्य कर ताजा॥ गोदावरि गुरु सिंह नहाई॥ कुंभ माहि हरि क्षेत्र सुहाई॥ कुरुक्षेत्र दिनकर उपरागा॥ चंद्र

ग्रहण काशीबड़ भागा ॥ जोफलदान नहान प्रकासे ॥ तातें शत गुन पुन्य प्रभासे ॥ दक्ष शाप पीड़ित शशि न्हाए ॥ भला सरूप कलानिधि पाए ॥ दोहा ॥ जहँ सरस्वती सरित बर पुन्य तमा विख्यात ॥ जाके बीच नहायकै जीव ब्रह्म ह्वै जात ॥ ५६ ॥ पीपरबोध नामता पासा ॥ ऊधवते जहँ हरि समभासा ॥ तहाँ नौमि पूजै विधि नाना ॥ अवशि सुनै भागवत पुराना ॥ एक पाद आधो अश्लोका ॥ सुनिकै लहत कृष्ण करलोका ॥ भादवशशि दिन उर सुख लेई ॥ सोना सहित भागवत देई ॥ जिन्हन सुना भागवत पुराना ॥ ताकर जन्म वृथा जग जाना ॥ नहीं कान भागवतहि पीया ॥ अर्चन नहीं भगवतहि कीया ॥ धरा अमर कहँ अन्न न दिया ॥ वृथा जन्म धरनी पर लिया ॥ तहाँ गोमती सागर संगम ॥ न्हाइ जाइ जहँ हरिपुर जंगम ॥ दोहा ॥ अश्वमेध फल शत लहैं गंगा सिंधु नहाय ॥ तातें इत दस शत गुनो सुनहु सत्य नर राय ॥ ५७ ॥ इक इतिहास अहै एक रूढ़ा ॥ सुने नशत अघ भूड़ा कूड़ा ॥ गजना पुर महरह्यौ महाजन ॥ धन निधान खल अघको भाजन ॥ वैश्य कुवैश्य न भड़ुअन साथा ॥ जूवा खेलै झूठी गाथा ॥ लोभ मोह मत्सर तें भीना ॥ ऋषि द्विज देवन कह नहि दीना ॥ सुनि हरि कथा भगै खल सोई ॥ सुतहिं त्रियहिं धन दीन्ह न कोई ॥ तजि पतनी रंडा संग रमई ॥ धन सब गयो लीन जो गमई ॥ नृप अरु धरनि बार त्रिय चोरा ॥ धन हरि हरि करि दीन्हो कोरा ॥ लक्ष्मी जगत पुन्य तें बढ़ई ॥ हे नृप आसु पापतें कढ़ई ॥ दोहा ॥ वसु विन कस बिनने कह्यौ कस बिन धन को सेठ ॥ तब लागो चोरी करन सब पापिन तेजेठ ॥ ५८ ॥ तब नृप संतन ताहि निकारा ॥ आवै पुर नहिं चोर अपारा ॥ बनभो बसत जाइ गति

सत्या॥कीन्ह श्रमितजीवनकी हत्या॥बारह बरसन बरसेउ पानी॥तबगो पश्चिम दिशि अभिमानी॥हत्यो सिंह मृगमामज
बृता॥मारत बाँधि चले यम दूता॥ताकर मांस गिद्ध लैलीना॥चलेउ चुंच पट अंतर कीना॥चिल्ह गिद्ध बहरी अरु बाजा
चेरि करत भे शब्द दराजा॥उड़ेउ बेगते तेसब धाए॥खरन लगे कोऊ नहिं पाए॥गोमति सिंधु संग मधि आई॥गिरेउ
मांस जलमे नरराई॥दोहा॥जुरत पांस टूटी सकल चिते रहे यमचार॥चार भुजा धरि सो गयो विष्वा धार अगार॥
गोमति सिंधु महातम कहैं सुनै पढ़ै नर जोन॥दहि पापहि आनंद गहि जाहि विषा पुरनोन॥पूर्व फल्गु द्वारावति सागर
केरा॥सुनहु पुन्य प्रद हरष बसेरा॥वैसाखी दिनजो नित न्हाई॥बलदेवै पूजे हरिराई॥तातन निवसहिं तीनहु देवा॥
ताकर दरसन अति जग मेवा॥तेहिं परसे द्विज हत्या जाई॥संगत किए मुक्ति सर साई॥रैवत शैल महातम सुनिये॥
पाप हरन दुख वितरन गुनिये॥गौतम सुत मेधावी नामा॥दस लख बरस तप्यो अभिरामा॥बिंध्याचल परतपत निहा-
री॥सु मुनि अपांतर तम व्रतधारी॥ताके देखन हित चलि आये॥सो न उठे नहिं सीस नवाये॥दोहा॥देखि अपांतर तम
क खो बैठो शैल समान॥ताके सोई होसितें कीन्ह विप्र अपमान॥६०॥ भो श्री गिरि सुत मोहरि दासू॥जानत निजपूरब
इति हासू॥मेधावीते हम इक काला॥कहेउ द्वारका वरन रसाला॥सो सुनि द्विज मन कीन्ह विचारा॥रहौं नहीं अघ दहौं
अपारा॥मोते भाख्यो सहित उछाहू॥तुम रैवत राजा दिग जाहू॥सो तितको नृप मोहि लैजाई॥रहि हौं अहह पुन्य अ
धिकाई॥हम तब जाइ रैवतहिं आवा॥नृपहु नाहि रखवन अभिलाषा॥कीन्ह प्रतिज्ञा जलनहि पावौं॥भुजबलतेंजौं

गिरि नहिं लाघो॥ इमि बिचारि कै रैवत राजा॥ लावन चल्यो शैल निज काजा॥ दोहा॥ मै कल ह प्रिय जाय तब श्रीतें कहेउ
सुनाइ॥ रैवत सुतहि चोराइ है तेरो इतसों आइ॥ ६१॥ सो सुनि सुत सनेह उर आना॥ तेहि जन जाहु बखानेउ नाना॥ इमि
सुमेरु कै शर नहि जाई॥ रोवत विपदा सकल सुनाई॥ मोहि सुत एक दूसरो हैना॥ ताहि चहत नृप रैवत लै-
ना॥ सुवन बिदेश कलेश अपारा॥ तातें रक्षहु गिरि भरतारा॥ सो सुनिके हिम मेरु रिसाए॥ लाख शैल लै
तहँ चलि आए॥ इत रैवत लै श्री संताना॥ चलत भयो हनुमान समाना॥ सो लखि शैल शस्त्र धरि धाए॥
मारु मारु अतिशोर मचाए॥ तबहुं कार कीन्ह नर राई॥ आयुध गिरे भूमि भहराई॥ दोहा॥ भिरे भयंकर शै-
ल सब तब आयुध गत आइ॥ मारु मारु धरु मारु कहि मारन लगे रिसाइ॥ ६२॥ हे नृप भा तहँ परम तमासा
इक नृप लरहि लाख गिरि पासा॥ ते सब कर पग उदर प्रहारी॥ व्याकुल कीन्ह नरेशहिं भारी॥ इक कर गि-
रि अरु इक कर खाली॥ सावस ताहि सुनहु बल साली॥ करै लाख परवत तें भारी॥ धरान अपनो बचन वि
चारी॥ तब हम आये बिष्णु तें भाषा॥ दीन बंधु रक्षन अभिलाषा॥ नभ महँ आइ दीन बल भारी॥ उरन कर-
हु कहि गये मुरारी॥ जब हरि गे दै धीरज ऐसो॥ अति बल बल त्रिय पितु तन पैसो॥ लागे लरन नगन सो
कैसे॥ वायु प्रचंड नगन ते जैसे॥ दोहा॥ लगे सकल भहरान गिरि धर धर पकर प्रचारि॥ भूधर अरु भूधर-
न सो भयो समर अति भारि॥ ६३॥ तब नृप मूका मेरुहि मारा॥ परेउ धरनि तल दुखित अपारा॥ थप्पर इक

हिमाँचलहि दीना ॥ मुरछि परा महि बेग बिहीना ॥ बिंध्यहिं मार्‍यौ चरन अपाना ॥ दंड लगे फल समघ
हराना ॥ अरु जितने नग सन्मुख आये ॥ कर पगतें हति भूमि गिराये ॥ कूदि कूदि गिरि धावहिं भारे ॥ सी-
रन गिरहिं मूकके मारे ॥ पाथर के रबि छोपा थरना ॥ नृपकर मोद जाइ नहिं बरना ॥ जिमि घृत अरु पिसान
को पिंडा ॥ फूटै कर प्रहार तें कुंडा ॥ श्री गिरि भिरेउ भयद पुनि आई ॥ मारि ताहिं नृप दीन्ह भगाई ॥ दोहा ॥
अमित मरे बहु महि परे डरे खरे थहरात ॥ अंग अंग चूरन सकल जीति लियो नर तात ॥ ६४ ॥ अमृत ध्वनि ॥
झ ह्र ह्र ह्र ह्रपटि कै पप्प प्यूरै गैल ॥ ध ध्ध ध्ध ध्ध ध्धरनि पै छच्छ च्छाए शैल ॥ छच्छ च्छाए शैल ल्लपटि म-
हीप प्यद्दल ॥ टट्टट्ट करि झपट्ट ट्टलत प्रगट्ट ट्टट्टल ॥ दद्द द्दवरि इकठ्ठ ठ्ठम कहि डडु डोलत ॥ भ भ्भभ्भिरत
ततच्छन बक्क न्नजोलत ॥ दोहा ॥ जीति गिरिन कह भूप तब लै ताकह मति मान ॥ राखेउ अपने देश-
मह वैष्णव जान महान ॥ ६५ ॥ रैवत नाम बिराजत सोई ॥ जा उर बिष्णु भक्ति अति होई ॥ देखि ताहि द्विज
हत्या जावैं ॥ परसत शत मख को फल पावैं ॥ करि परि करमा द्विजन जिवावैं ॥ सो नृप बिष्णु परमपद पा-
वैं ॥ रैवत यज्ञ भूमि महं जावै ॥ करि मख कोटि गुनित फल पावै ॥ तहं कप टंक तीर्थ अघहारी ॥ ॥ कपितन
तें प्रगट्यौ अतिभारी ॥ नरक सखा इक द्विविद विपिन चर ॥ मारेउ तहां ताहि मूशल धर ॥ सो जल तीरथ
उज्जल राजा ॥ आवहिं तहं सुर असुर समाजा ॥ बिंकट यात्रा कोटि गऊ पाल ॥ दूनौ दंडक कानन मैं भल ॥ दोहा

चौगुन सैंधव बिपिनि मै भूप गुनहु मन माहिं ॥ ताते कहिये पंच गुन जंबु मार्ग जे जाहिं ॥ पुष्कर बन महँ जा-
इ जो ताते दश गुन पुन्य ॥ बर उत्पल आवर्त्त मह तातें हू दश गुन्य ॥ नैमिष बन सह दश गुनित फल ताते ग-
त शंक ॥ तातें हू शत गुन लहै जो जावै कपि टंक ॥ ६६ ॥ अरु नृग कूपं तहाँ अति अहई ॥ जेहि लखि द्विज
हत्या द्रुत दहई ॥ हे नृप नृग दानी अतिभारी ॥ कोटिन सुरभी दीन्ह दुधारी ॥ गऊ विप्र दूजे की आई ॥ धो-
खे बरहिं दीन्ह नर राई ॥ तिनके शाप विकल भे राजा ॥ कृष्ण उधार्यो लखत समाजा ॥ भय चारु भुज नृ-
ग नृप दानी ॥ कार्त्तिक दिवस तहाँ नृप ज्ञानी ॥ न्हाइ देइ इक सुरभी दाना ॥ सहस गुनित फल होहि सु-
जाना ॥ कोटि जन्म कर पातक नाशै ॥ भानु समान मरीच प्रकाशै ॥ गोपी चंदन केर महातम ॥ सुनहु भानु सम
नाशन अघ तम ॥ दोहा ॥ गोपी गन निबसी जहाँ गोपि अंग सो तात ॥ चंदन हो अरु भूमि सो गोपी भुवि वि-
ख्यात ॥ ६७ ॥ कवित्त ॥ गोपी अंग राग जो चढ़ावै अंग बीच भूप गंग सिंधु आदि अस्नान फल होत है ॥ छाप को
लगावै पाप दाप को दुरावै दूर दान व्रत तीर्थ ताको सकल उदोत है ॥ शत राज भूप दश शत अश्व मेध फल
बन्योई रहत सब काल ताके पोत है ॥ गोपी नाथ बसै शोभा लखै ताके पास सदा हरि दास देखे पाप रास आसु खोत है ॥
दोहा ॥ गंगा रजतें दुगुन फल चित्र कूट रज होइ ॥ पंचवटी रज दस गुनित तातें कहिये सोइ ॥ तातें सत गुन चार फल
गोपी चंदन माहि ॥ वृंदा बन रज सम अहै दोउ कोउ कम नाहिं ॥ गोपी चंदन लाइ कै करै करारन पाप ॥ ४ ॥

यम अंचर अड़कै नहीं जात कृष्ण पुर आप ॥ ६८ ॥ दीर्घ बाहु नृप भा अधिकारी ॥ सिंधु देश महँ कुमति सिधारी ॥ बार त्रिया रत शत द्विज मारा ॥ दश गुर्विनी नारि संहारा ॥ कपिला गऊ हत्यौ सो पापी ॥ इक दिन चढ़ि हय द्विज संतापी ॥ बिपिन गयो मंत्री तहँ तासू ॥ मारि कृपान कियो गत आसू ॥ मरो देखि यमगण तेहि बाँधी ॥ दीन्ह यमन उर सुख अति साधी ॥ यम तब कहा कहहु का होई ॥ चित्र गुप्त बोले सुनि सोई ॥ सकल नर्क मह डारहु याही ॥ जबलौं रबि शशि पृथिबी माहीं ॥ यहिं खल कबहुं पुन्य नहि कीना ॥ परत्रिय रत प्रजा न दुख दीना ॥ दोहा ॥ यहिं दस गर्भवती हत्यौ शत द्विज कपिला गाइ ॥ अरु अपराध बिना हत्यौ कीन्हो अति अन्याय ॥ ६९ ॥ भूसुर सुर निंदक अघ कारी ॥ डारहु नर्क न संशय भारी ॥ सो सुनि दूत तुरत तेहि डारा ॥ कुंभि पाक मह अग्नि अपारा ॥ श्रुति दश शत सकोस को भारी ॥ शीतल भयो मनहु सरि बारी ॥ भो प्रहलाद सरिस सब ऐसो ॥ गणन कहा यम ते यह कैसो ॥ मंत्रिन सहित प्रेत कुल नाहा ॥ यह अचरज की करत सलाहा ॥ इतने इमै दोइ पायन आयन ॥ यम बैठायन बचन सुनायन ॥ यहिं खल कबहु धर्म नहिं चीन्हा ॥ गुनि हम कुंभि पाक महँ दीन्हा ॥ भो शीतल यह अचरज भारी ॥ सुनि बोले मुनि व्यास बिचारी ॥ दोहा ॥ सूक्षम गति अति धर्म की सत्य सुनहु यमराज ॥ ब्रह्म यथा सब बिश्व में सूक्षम लखहि समाज ॥ ७० ॥ दैव योग भो पुन्य सहाई ॥ तातें पीड़ा सकल नशाई ॥ कोउ करतें गोपी तन रागा ॥ गिरेउ मरत याके तन लागा ॥ ता प्रभाव यह भो अघ नासा ॥ यासम नहि जग सत्य खुलासा ॥ सो सुनि यमराजा तेहि लाये ॥ चार भुजा बिमान बैठाये ॥ बिदा कीन्ह हरि पुर सिर नाई ॥ इमि हम तुम कहँ कथा

॥ गोपी चंद्रावली सती कथा ॥ मंजुल लहन दे हरी पुर पंथा ॥ सिद्ध श्राम महाली नृप सीनी सीखलीया
॥ दोहा ॥ दिन दिन मम मति वीस मन कंचल देत श्रनंद ॥ ॥ ॥
॥ दोहा ॥ मम हित श्रति धन-
॥ दोहा ॥ मम हित बहु कीन्ह तहाँही ॥ मम हित श्रति धन
॥ हरी मारी ॥ इत वारा उत्तरी श्राई ॥ दोहा ॥
कीह हरी मारी ॥ इत वारा उत्तरी श्राई ॥ दोहा ॥
सब वामनसी कहत विराम ॥ कायाधीं सुंदर हम नारी ॥ हरी मम हित बहु कीन्ह तहाँही ॥ मम हित श्रति धन
मम श्रीती व्यारी ॥ सिद्ध श्राम नहान हित श्राई ॥ नामय डारहि यह सतसंगा ॥ मेरी सीख मान सहित सनेहा ॥ श्रम प्रिय मंडन
मा ॥ कहहु श्राप मरम तुम सीधारी ॥ मोरी वचन विहंसि वनवारी ॥ कहि निज सत कहि जानि लीला ॥ इत प्रिय मंडन
कली कथा की नारी ॥ हंसि बोली वचन विचारी ॥ कासु किया यह कौन सुजाना ॥ कहि निज सत कहि जानि लीला ॥ इत प्रिय मंडन
दोहा ॥ यादव गति चाहत रहे तिन थान तहँ गोप ॥ चलीहि राधिका के नर नाथा ॥ माधव मास रही जब पूरी ॥ गोप वधू श्राई तिन सबी ॥ कीर्तन
गोप श्रहि धरि साथा ॥ श्राए तहँनहान नर नाथा ॥ चलीहि राधिका सब पास पूथा ॥ छरी धरी बात बहुथा
कीर्तन मथा ॥ श्राए तहँनहान नर नाथा ॥ माधव मास रही जब पूरी ॥ गोप वधू श्राई तिन सबी ॥ कीर्तन
॥ पास संचल गन सहित उमंगी ॥ चलीं पूथ पासी निज संगा ॥ चढ़ि पालकी महा मुद छाई ॥ सवन सहित सिद्ध श्रम श्राई ॥ हरी निज जान
॥ चलीं पूथ पासी निज संगा ॥ चढ़ि पालकी महा मुद छाई ॥ सवन सहित सिद्ध श्रम श्राई ॥ हरी निज जान
राधा चाही करन पयाना ॥ चंद्रा नना कथा सब गाई ॥ चलत मई राधिका सुहाई ॥ पास संचल गन सहित उमंगी
॥ जानी महातम मुनिके काना ॥ ॥ ॥ दरशनी सब
॥ दोहा ॥ दरशनी सब
॥ दोहा ॥ दरशनी सब
॥ नहात लहि श्रमीप कहे वामि सा सुख श्रनंद ॥ ॥ ॥ जानी महातम मुनिके काना
॥ नहात लहि श्रमीप कहे वामि सा सुख श्रनंद ॥ ॥ ॥ जानी महातम मुनिके काना
राधा चाही करन पयाना ॥ चंद्रा नना कथा सब गाई ॥ चलत मई राधिका सुहाई ॥ पास संचल गन सहित उमंगी
चलीं पूथ पासी निज संगा ॥ चढ़ि पालकी महा मुद छाई ॥ सवन सहित सिद्ध श्रम श्राई ॥ हरी निज जान
कीर्तन मथा ॥ श्राए तहँनहान नर नाथा ॥ माधव मास रही जब पूरी ॥ गोप वधू श्राई तिन सबी ॥ कीर्तन
गोप श्रहि धरि साथा ॥ श्राए तहँनहान नर नाथा ॥ चलीहि राधिका सब पास पूथा ॥ छरी धरी बात बहुथा
दोहा ॥ यादव गति चाहत रहे तिन थान तहँ गोप ॥ चलीहि राधिका के नर नाथा ॥ माधव मास रही जब पूरी ॥ गोप वधू श्राई तिन सबी ॥ कीर्तन
कली कथा की नारी ॥ हंसि बोली वचन विचारी ॥ कासु किया यह कौन सुजाना ॥ कहि निज सत कहि जानि लीला ॥ इत प्रिय मंडन
मा ॥ कहहु श्राप मरम तुम सीधारी ॥ मोरी वचन विहंसि वनवारी ॥ कहि निज सत कहि जानि लीला ॥ इत प्रिय मंडन
मम श्रीती व्यारी ॥ सिद्ध श्राम नहान हित श्राई ॥ नामय डारहि यह सतसंगा ॥ मेरी सीख मान सहित सनेहा ॥ श्रम प्रिय मंडन
सब वामनसी कहत विराम ॥ कायाधीं सुंदर हम नारी ॥ हरी मम हित बहु कीन्ह तहाँही ॥ मम हित श्रति धन
कीह हरी मारी ॥ इत वारा उत्तरी श्राई ॥ दोहा ॥
॥ हरी मारी ॥ इत वारा उत्तरी श्राई ॥ दोहा ॥ दिन दिन मम मति वीस मन कंचल देत श्रनंद ॥ ॥ ॥
॥ दोहा ॥ मम हित श्रति धन-
॥ दोहा ॥ मम हित बहु कीन्ह तहाँही ॥ मम हित श्रति धन

॥ गोपी चंद्रावली सती कथा ॥ मंजुल लहन दे हरी पुर पंथा ॥ सिद्ध श्राम महाली नृप सीनी सीखलीया

अहि भय हरत नहिकु कालको रूप ॥ ७३ ॥ याहीते यह वैभव सारा ॥ हम हरि रहत गरुड़ असवारा ॥ भौमासुर कहं हम जब भाषा ॥ तब तेहि मारि कृष्ण महि नाषा ॥ सब त्रिय मम गौरवते व्याही ॥ लाए नरक धनहि घरमाहीं ॥ दोय घरी मह भएउ बिवाहा ॥ मेरे कहे कीन्ह नर नीहा ॥ कुंडल छत्र इंद्र कहं दीन्हा ॥ जब हम कृष्णहि आज्ञा कीन्हा ॥ पारिजात सुर पुरते लाये ॥ सक्रंदन संग समर रचाये ॥ हम पति व्रत करि हरि बश कीन्हा ॥ पतिकर दान नारद हि दीन्हा ॥ को मेरे समहै संसारा ॥ मम सरूप लषि बस भरतारा ॥ दोहा ॥ हे रुक्मिनि सब तन सहित का तुम नहि कमनीय ॥ जो राधा राधा कहत कृष्ण चंद्र सम पीय ॥ ७४ ॥ हम सब राजसुता सुकुमारी ॥ कहँ अहि रिन दधि बेचन हारी ॥ वाह वाह यह अच्छो कीन्हो ॥ सबते उत्तम पदवी दीन्हो ॥ सुनि इमि सत भामा की बानी ॥ रानी पटरानी बौरानी ॥ कहहिं मान बश बचन सुऐसे ॥ पावहिं करत पसेरी कैसे ॥ गहिगहि उरमै गूढ़ गुमाना ॥ बासुदेव सन बचन बखाना ॥ तव मुख सुना जासु बड़ ताई ॥ जातें तुमहिं प्रीति अधिकाई ॥ जा बिछुरे तुम भयेउदासा ॥ जान चहत हम तिनके पासा ॥ सो सुनि हरि संगलै पटरानी ॥ सोलह सहस एक शतनारी ॥ दोहा ॥ जात भए राधा निकट मान कदन भगवान ॥ शोभा अवलोकत भई कहिन जाइ सामान ॥ ७५ ॥ छंद ॥ सामान्य कहि नहिं जाय शोभा जो हिकै जह है खड़ी ॥ सिरछत्र चामर चारु मुरछल व्यजन डाड़ी मनि जड़ी ॥ सुंदर वितान तन्यौ सुजान मतंग मोती झूमका ॥ बिछये गलीचा रगे रंगन बर बनाई भूमका ॥ सखि

यूथ चारहुँ ओर उडपति बदन राजहिं अति घनी ॥ जेहि देखि सुर अपसरा लाजहिं विविधिवानिक बर बनी ॥ श्री
राधिका सुख देखि शशि नभ कमल जल महं लुकि गये ॥ लखि चाल दुरे मराल मानस द्विरद जंगल चर
भये ॥ २ ॥ मुख कहहि गोपी कृष्ण माधव एक तन्मय ह्वै रही ॥ भगवान सबन समेत रूप निकेत द्रुत बहु पहुँ
चही ॥ सत्रा जिती आदिक त्रिया सब नखत सम राजत भई ॥ राधा वदन वर इंदु पूरन निरषि अति लाजत
भई ॥ ३ ॥ मुरछा विवस ह्वै नारि सब उठि कहहिं अपने थोक में ॥ यह धन्य रूप अनन्य ऐसो हैन तीनो लोक में
इमि कहत दरशन चहत उरसुख गहत श्रीपति जात मे ॥ राधा निकट सिर मुकुट वर अवरेखि त्रिय हरखात
मे ॥ ४ ॥ गोपी सुरानी लषि परस्पर परम सुख छावत भई ॥ पति देषि अति सुख धारि उततें राधिका आवत
भई ॥ जैजै भयो दुहुं ओर राधा कृष्ण जब मिलते भये ॥ सब ताप ताप कराल व्रज अवलान के द्रुत दुरि गये ॥
५ ॥ हरि पद परसि वृष भानु कन्या मुदित परिकरमा करी ॥ दीन्हो सिंहासन अति मनोहर बहुत जामहँ मनि
जरी ॥ शुभ चारु पाये चार जामहँ बहु श्री मंतक लगे ॥ चिंता मनिन के बने तकिया देखि सिगरे तम भगे ॥ ६ ॥
मधि पद्म राग चहू दिशा शसिकांत मनि दरसात हैं ॥ पीठक घने कौस्तुभ विराजत पारि जात विभात हैं ॥ भ
गवान कहँ बैठाइ राधा कहत जोरे कर दोऊ ॥ मम सकल जीवन जन्म सुकृत आजु पूरव कृत सोऊ ॥ ७ ॥ हम
कीन्ह नहि तव भक्ति पै तव कृपा प्रभु अब को कहै ॥ मम हेतु बहु दुख सहै ऐसो कौन कोउ के हित सहै ॥ वध

शंख चूर धर्यौ गोवर्द्धन पान दावा नलकर्यौ ॥ जहँ जहँ पर्यौ संकट विकट तहँ तहँ कृपा करिकै हर्यौ ॥ ८ ॥ इमि
भाषिकै पुनि रुक्मिनी सत भाम भालु कुमारि सों ॥ सत्या कलिंदी मित्र विंदा लक्ष्मना सुकुमारि सों ॥ मद्रा स-
हित षोडश सहस्रशत एक सों मिलती भई ॥ बर आसननि बैठाइ मनके सोक कहं गिलती भई ॥ ९ ॥ दोहा
बैठि सबन में राधिका बोली सुंदर बैन ॥ हम अनेक हरि एक हैं सब कहँ दायक चैन ॥ उड़पति एक चकोर
बहु एक सूर बहु कंज ॥ हम अनेक हरि एक तिमि कहत सबन मनरंज ॥ ७६ ॥ सवैया ॥ पद्म प्रभाव सिली
मुख जानत रत्न प्रभाव परीक्षक जानै ॥ विद्या निधान गुनै बर विद्यहिं काव्य प्रभाव कवी पहि चानै ॥ बात
रसीली रसीले गुने जन पंडित है सोइ वेद बखानै ॥ कृष्ण प्रभाव सुनो चित दै हरि भक्त सोई जगमें पहि
चानै ॥ दोहा ॥ यह सुनिकै सब त्रिय सहित भीष्मक सुता सुजान ॥ भानु सुतातें इमि कह्यौ जानि हृदय गुन
बान ॥ ७७ ॥ धन्य राधिका तुम जग माहीं ॥ जैसा सुना सु तैसा पाहीं ॥ जो त्रिलोक कोउ सकै न जानी ॥ सो तुम
जानत हौ ब्रज रानी ॥ अब करि कृपा चलहु मम डेरे ॥ जिमि हम सब आईं तव नेरे ॥ सबन सहित सुनि
भानु कुमारी ॥ प्रमुदित तिनके संग सिधारी ॥ चारु कनात बनात बनाई ॥ बने काम कछु बरनि न जाई ॥
गोपिन के शत यूथ समेता ॥ पूज्यौ रान्हिन नीति निकेता ॥ भोजन दै अंबर पहिराई ॥ बिबिध भांति की-
न्ही पहुनाई ॥ बिदा होइकै सिगरी गोपी ॥ डेरन गईं हरष आरोपी ॥ दोहा ॥ रात समै भीष्मक सुता गई

कृष्णके पास ॥ जागत देखि उदास अति चकित कहत सुख रास ॥ ७८ ॥ किमि नहिं नाथ नींद अजु आई ॥ सु- निदूमि बचन कहत यदुराई ॥ तुम राधिकहि बिबिधि विधि पूजा ॥ तिनको हमरो जीव न दूजा ॥ सो नित प यहि पान करि सोवत ॥ तुम न दीन सो आसहि जोवत ॥ तिहि न नींद कैसे मोहि आवै ॥ तातें दूध देहु मन भावै ॥ सो सुनि लै पद रानिन्ह रानिनि ॥ चली पियावन पय गज गामिनि ॥ उनटू पय मिश्री मधि डारी ॥ कनक कटोरा करन सुधारी ॥ राधहि सो रुकिमनी पिवाई ॥ बीरी सुंदर दीन्ह बनाई ॥ बिदा होय संगले सब बाला ॥ आई आगु जहाँ नंद लाला ॥ दोहा ॥ कहेउ पिवायो जादू पय राधा को हरि राय ॥ भूमि कहि कै श्री रुकिमनी सहित सौत समुदाइ ॥ ७९ ॥ चापन लगीं चारु पदनीरज ॥ देखि फफोलहिं भई अधीरज ॥ अबहिं रहे नहिं पग महं छाले ॥ कैसे यह प्रगटे दुख हाले ॥ कहत भई पीततें बिलखाना ॥ कारन आगु बता दुख नाना ॥ सो सुनिकै राधिका निवासा ॥ रानिन्ह सो यह बचन प्रकासा ॥ श्री राधा उर महं पगमेरो ॥ प्रिये सदा करत बसेरो ॥ ताते तुमजो पयहि पियावा ॥ अपने मन चातुरी दृढावा ॥ गरम रहो सो नरम करेजा ॥ जरेउ परम पद नाहि सहेजा ॥ भरम बिगत यह मरमहि जानो ॥ मोहि राधिकहिं येक पहिचानो ॥ दोहा ॥ हे नृप राधा कृष्ण सम यामहं है नहिं भेद ॥ भेद करहिं निरबेद गहि तिन्ह कह निंदत बेद ॥ ८० ॥ जानि एक तजि कै अभिमाना ॥ सबन श्यामसों बचन बखाना ॥ धन्य गोपिका पुन्य प्रकासा ॥ जो मिलि कीन्ह आप संगासा

लषन चहत हम तो न तमाशा ॥ कीजे कृपा कटाक्ष प्रकाशा ॥ तुम राधा गोपी हम अहहीं ॥ करहु कृपा जिमि यह फल लहहीं ॥ दीन बंधु तुम कृपा निधाना ॥ दीन बंधु यह जान जहाना ॥ सो सुनि बिहसि मनोज लजावन ॥ बोले चारु बयन मन भावन ॥ जो राधा की इच्छा होई ॥ करिहौं रासहिं पूछहु सोई ॥ सो सुनि गई सकल प्रभु रानी ॥ बंदि राधिकहिं बोलीं बानी ॥ दोहा ॥ रंभोरु प्राणि आनने सुंदरि रास निवास ॥ कीर्ति वंश की कीर्ति कर कीर्ति बिश्व अति जासु ॥ ८१ ॥ तुम परि पूरन तम की प्यारी ॥ हम तुमते पूछत ब्रजनारी हम अरु तुम केशव इत अहहीं ॥ तातें रासहिं अति शय चहहीं ॥ पूरन करहु मनोरथ मेरो ॥ राधा कहत बिहँसितन हेरो ॥ रासेश्वर सों पूछहु जाई ॥ तिन की करहु बिनय अधिकाई ॥ तिन की इच्छा तो कह देरी ॥ अगसर है न साम रथ मेरी ॥ सुनि रानिन भाषा समुझाई ॥ सब के हृदय रास की आई ॥ माधव पूरनि मानिसि भूपा ॥ माधव बिरच्यो रास अनूपा ॥ राधा कृष्ण सबन सह राजे ॥ रास बिलास हास रस साजे ॥ दोहा ॥ जितनी ब्रज की गोपिका अरु जितनी प्रभु बाल ॥ दोय दोय मधि एक मे मुरली धर गोपाल ॥ ८२ ॥ लागत रास रसिक प्रभु कैसे ॥ कनक नील मनि माला जैसे ॥ ताल मृदंग बेनु कल गाना ॥ तेहि क्षण परम मोद सर साना ॥ कोटि मदन छबि उर बन माला ॥ बालन मह निर्तत गोपाला ॥ राधा राम अनुज के संगा ॥ बढ़्यो केलि को अधिक उमंगा ॥ इहि बिधि नृत्य करत सो राती ॥ भूल समान सब

भई बिहाती ॥ करिकै रास सकल हरि रानी ॥ भई प्रेम बश अति हरषानी ॥ पुनि अभिमान आनि उर सोई ॥ क
हत कृष्ण मुख पंकज जोई ॥ देखा तब रासहि गिरधारी ॥ भा अनंद कहि जात न भारी ॥ दोहा ॥ ऐ सोहू प्रभु
रास कहुं भयो न ह्वै है सांच ॥ न्यारी सिगरी गोपिका और हमन को नाच ॥ ८३ ॥ हमरे बढ़े बढ़्यौ सुख भारी ॥
रास शिरोमणि यह गिरधारी ॥ तब हरि बिहँसि कहा मुसकाई ॥ यह पूछहु राधाते जाई ॥ सत भामा न स-
हित अभिमाना ॥ पूछेउ राधाते नरत्राना ॥ तब राधा मन माहिं बिचारो ॥ ये महिषी महिषी मति धारो ॥ म-
हिषी सन्मुष बाजी बीना ॥ कूदी सो गुन अतिहि प्रबीना ॥ तिमि महिषी ये हरिकी प्यारी ॥ बोली राधा हृ-
दय बिचारी ॥ जो यह रास भयो तुम जाना ॥ सो नहि वृंदा बिपिन समाना ॥ कहँ इत वृंदाबन बर बेली ॥
कुंज निकुंजन वल तित केली ॥ दोहा ॥ चारु बयार बहार युत अत्र कहा सरि कूल ॥ यमुना समना
जगत में रमना दमना शूल ॥ ८४ ॥ छप्पय ॥ कहां माधवी लता सुमन के सहित समूहा ॥ कहँ पक्षी कलकंठ
वचन बोलहिं सुख रूहा ॥ लोल कहां इत अलि समूह कुंजन मह लोलत ॥ ।शीतल मंद समीर कहा मन
के सुख खोलत ॥ उन्नग शृंग समेत कहँ गोबर्द्धन निर्झर झरत ॥ कलप वृक्ष बेलिन सहित उरमह अति
आनंद करत ॥ १ ॥ कूल कलिंदी कृष्ण कहां कछिनी कटि काछे ॥ छरी धरी पुनि अधर बेनु निर्त्तत बिधि
आछे ॥ कहँ बनमाल रसाल सुमन कर बर सिंगारा ॥ कहां अलक की झलक खलक मोहन सुखसारा ॥

कुंडल लोल कपोल पर तोल रहि गुर तान अति ॥ नक वेसर राजत चिबुक सिर केसर परमा भरति ॥२॥ कहँ शरीर कस-
मीर नीर चर्चित लोभे अलि ॥ दरसन परसन मन हरषन मरसन दुख विधि भलि ॥ तीन कोन चख करि चितवनि तिर-
छी चित मोहन ॥ करतें कर पकरन आलिंगन आनंद जोहन ॥ दुरन सुचारु निकुंज मैं छिप छिपकै दरसन करन ॥
चीर लेन पंकज करन बेनु वेत्र गहि जल तरन ॥ ३ ॥ पकरि प्रेमतें पानि परम रुचि हृदय लगावन ॥ आकर्षन चुंबन
भेदन मधुरे सुर गावन ॥ जलके मधि अस्नान रास रस गुप्त दिखावन ॥ हास प्रकास नवल रस रास मनावन ॥ जहाँ
जहाँ की बात जो तहाँ तहाँ नीकी लगत ॥ वृंदावन तजि अनत नहि चारु रासको रस पगत ॥ ४ ॥ दोहा ॥ सुनि राधाके
वचन कहँ ते सिमरी प्रभु बाल ॥ अभिमानहि तजती भई सुमिरि श्याम को ख्याल ॥ ८४ ॥ करि रासहि मोहन मन
भाए ॥ वृष रविकन्या संग लिवाए ॥ पट रानिन्ह रानिन्ह व्रज बालन ॥ साज समाज दास दल पालन ॥ लैकै द्वारावति च-
लि आये ॥ व्रज अवलन कह तितहि बसाये ॥ सिद्धाश्रम महात्म सुनि काना ॥ करत सडर अघ आप पयाना ॥ द्वार
चार सुत जोजन अहही ॥ चौगुन तासु प्रदक्षन कहही ॥ मध हरि दुर्ग दोय दश योजन ॥ पुनि नव योजन दूजो बर
धन ॥ तीजो दुर्ग बहुरि हरि केरो ॥ कोस अठाइस ताको घेरो ॥ तहँ मंदिर हरिके मन भाए ॥ गिनती में नव लाख
गनाए ॥ दोहा ॥ तहँ राधा मंदिर निकट लीला सर एक चारु ॥ सो आयो गो लोकतें तीरथ कर सरदार ॥ ८६ ॥ तहँ
नर आठै दिवस नहाई ॥ व्रत करि दान देइ हरषाई ॥ कोटि जन्म को पाप नसावै ॥ भरथ सुरत गोपुर तें आवै ॥ सहस

भानु दिन तापर सोई ॥ चढ़ै रूप मनमथ सम होई ॥ श्याम सरिस पीतांबर धरिकै ॥ सहस पार्षद नी संग करिकै
जय धुनि करत देव समुदाई ॥ गऊ लोक सो वर नर जाई ॥ और सुनहु तीरथ नर राई ॥ षोडश दश शत सत अधि
काई ॥ आठ और हरि तियके धामा ॥ फेरी तासु करै अभि रामा ॥ ज्ञान तीर्थ परि जातक जावै ॥ ज्ञान भक्ति वैराग-
हि पावै ॥ दोहा ॥ श्री हरिके उरमें बसैं सिद्धि समृद्धि हि पाइ ॥ रिद्धि सिद्धि पूजित परम रमा रमन पुर जाइ ॥ ८७ ॥ छप्पै ॥ हरि
मंदिर है जोजन पाँच बिशाल भूमि पति ॥ तहँते हरितन प्रभव कृष्ण सर शत धनु है अति ॥ शांब जांबु वति सुवन
न्हाइ जहँ भए कुष्ट गत ॥ ता दरशन तें नशत पाप परमा धर सोहत ॥ तहँतें पूरव की दिशा अष्टादश पद जाइकै ॥
तीरथ है बल देव को पुन्य देत अधिकाइकै ॥ १ ॥ दोहा ॥ भूमि प्रदक्षिन करि जहाँ रेवत सुता समेत ॥ यज्ञ कीन्ह अ-
स्थल सोइ सब तीरथ फल देत ॥ ८८ ॥ छप्पै ॥ सहस धनुष हरि मंदिर ते दक्षिन की ओरा ॥ है तीरथ हेरंब केर जहँ
पुन्य अथोरा ॥ प्रद्युम्न हिलै गो जव शंबर असुर चोराई ॥ पायो रुक्मिनि सुवन पूजि तितही गन राई ॥ तहँ नहाइ न-
र पुरट कर दान देइ आनंद युत ॥ पाप ताप ताके भगैं होइ सुभग हरि भक्त सुत ॥ १ ॥ हरि मंदिर ते द्विसत धनु प-
श्चिम दिशि भूपाल ॥ दान तीर्थ कल्याण कर अघ समूह कर काल ॥ ८९ ॥ छप्पै ॥ कृष्ण चंद्र जित दान दीन उर आ-
नंद संचन ॥ तह नर धनी नहाय सु देवै द्वैपल कंचन ॥ ताको चौगुन रजत रतन नव मोल महाना ॥ सत पट भूषन
सहस कौ श्रद्धा सह दाना ॥ अश्व मेध दश शत गुनो राज सूय शत जानियै ॥ एक कला फल नहिं तुलै सत्य हृदय

पहिचानियै ॥ दोहा ॥ बद्री बन यात्रा करै तातें जो फल होय ॥ दान तीर्थ महँ सतगुनो तातें जानै सोय ॥ ८० ॥ छप्पै
वृष महं जब रवि होंय तबै सैंधव बन जाई ॥ लाख गुनित फल होंइ दान करिकै तित भाई ॥ सोइ रवि मह उत्पल आ
रण यहि जो जन जावै ॥ तातें कोट गुनो फल दान तीर्थ महँ पावै ॥ एक महीना वास करि दान करहि नर नित्तजे ॥ संख्या
ताकी को करै बासु देव के हित्तजे ॥ १ ॥ दोहा ॥ चित्र गुप्त देवान जो देवाने होइ जाइ ॥ देवाने जानहि फलै श्रुति मुख
कहि न सकाइ ॥ ८१ ॥ सब महं उत्तम है हय दाना ॥ ताते गज बहु तीरथ जाना ॥ तातें भूमि दान अधिकाई ॥ बहुरि
अन्न दानन कर राई ॥ या सम और दान नहिं कोई ॥ त्रिप्ति पितर सुर नर कर होई ॥ दान तीर्थ महँ अन्नहि देई ॥ सो
बर बुद्धि बिष्णु पद लेई ॥ प्रिया मातु पितु दश दश पीढ़ी ॥ इक तिस चढ़हिं बिष्णु पुर सीढ़ी ॥ खग द्वै चार भुजा तन
श्यामा ॥ जाहिं बसन धरि पीत ललामा ॥ हरि घरते उत्तर अधकोशा ॥ माया तीरथ है बर कोशा ॥ दुर्गा दुर्गति हार
नि भारी ॥ लसत जहाँ बर सिंह सवारी ॥ दोहा ॥ जबँ हरिगे मनि हेत धसि रीछ गुफा नर नाह ॥ तहँ पूज्यौ तब देव-
की सुत दरशन के चाह ॥ ८२ ॥ आए अच्युत व्याह कराई ॥ तबतें सो प्रसिद्ध अधिकाई ॥ तहँ नहाइ पूजै जो माया
ता पर रहै तिनहिं की छाया ॥ दुर्ग दूसरे पूरब द्वारे ॥ इंद्र तीर्थ जानहु हरि प्यारे ॥ तहं नर न्हाइ इंद्र पुर जाई ॥ मिलै
रूप वैभव अधिकाई ॥ दक्षिन द्वार कुंड रवि गायो ॥ सत्राजित तहँ मनि कहं पायो ॥ तहा पद्मरागहि करि दाना
जात भानु पुर बैठि विमाना ॥ पश्चिम ब्रह्म तीर्थ नृप अहई ॥ तहँ नहाइ नर सब कछु लहई ॥ होइ विप्र हत्यारो कोऊ

दहै पाप हरि प्यारो सोऊ॥ दोहा॥ तौहूं सुर पुर पाव धरि ब्रह्म लोक सोइ जाइ। उत्तर द्वार महीप मनि तीरथ इक सरसाइ
९३॥ नाम लीन लोहित तेहि कहँई॥ तहाँ नील लोहित शिव रहई॥ मरुत देव ऋषि सात ऋषीशा॥ निवसहिं तहाँ
सुनहु नर ईशा॥ तह शंकरहि पूजि दश शीशा॥ जीत्यो इंद्रहि निशिचर ईशा॥ जो फल कैलाशहि नर लहई॥ ता-
को सत गुन नृप इत अहई॥ तीरथ लोहित नील नहाई॥ सो दहि पाप शंभु पुर जाई॥ सप्त समुद्रहि तीरथ तहँई॥
जहँ नहात को उपाप न रहई॥ हरि हर विधि यम रवि क्रतु अनला॥ सोम बरुन महि धन पति अनिला॥ वसहि प्रजन्या
दिक तट ताके॥ सिगरे अमर भरे परमाके॥ दोहा॥ सात कोटि ब्रह्मांड महँ तीरथ ते सब आय॥ सप्त समुद्रक महँ ब-
सहिं जो नर तहाँ नहाइ॥ ९४॥ द्वारावति यात्रा फल पावै॥ विष्णु सरिस सो नर अधिकावै॥ जो नहिं तहाँ कीन्ह अ-
स्नाना॥ ताकर श्रम सब वृथा बखाना॥ तृतिय दुर्गके पूरव द्वारा। रक्षत हनुमत बायु कुमारा॥ तिन्हहि देखि जो नर
शिर नावै॥ तिनके सम हरि भक्तिहि पावै॥ दक्षिन द्वारे चक्र सुदर्शन॥ अघ मरषण है तिनको दरशन॥ पश्चिम
द्वार जामवत भालू॥ तिन्हके देखत द्रवहि दयालू॥ उत्तर रक्षक विश्वक सेना॥ हरि पारषद मनुज अघ जेना॥ द्वारवती
द्वारन के बाहर॥ पिंडारक तीरथ नर नाहर॥ दोहा॥ ताके अब माहात्म कहं सुनिये जनक जनेश॥ जाहि सुमर अ-
घ नशत सब भाषत ज्ञान दिनेश॥ ९५॥ रैवत गिरि सागर के पासा॥ पिंडारक जानहु गुन रासा॥ उग्रसेन नृप सूयहि
कीना॥ तहाँ कृष्ण अज्ञा जब दीना॥ सब तीरथ कहँ भूप बोलायो॥ करि आदर इक ढिग बैठायो॥ सब तीरथ ताके मधि

भाई ॥ पावै राजसूय फल न्हाई ॥ होय भूप अघ औगुन धुनई ॥ वंदिनते विरदावलि सुनई ॥ मणि धन असन बसन त्रिय संगा ॥ भरै उमंग जित रिपु जंगा ॥ ताके द्वार खड़े गज राजा ॥ डंका आदि बजै बहु बाजा तोरन कनक ध्वजा फहराई ॥ छत्र चमर छवि बरनिन जाई ॥ दोहा ॥ मंडलीक की मंडली ठाढ़ी ताकी द्वार ॥ दसहु दिशा के मनुज मिलि ताकह करहि जुहार ॥ ९६ ॥ सवैया ॥ नहिं यासम तीरथ और अहै मरि मानव सुंदर मुक्ति लहै ॥ गहि बर्म सुशर्म सुधर्म सबै भव भर्म कुकर्महि पर्म दहै ॥ सोइ भोगी अरोगी सुयोगी सोई औ वियोगी सोई नहिं जाइ तहै ॥ विनश्याम अराम नकाम कछू यह सांच कलाम ललाम कहै ॥ दोहा ॥ जोइहि माधव मासमै करै प्रदक्षिन भूप ॥ द्वारावति बंदै बहुरि श्रद्धा आनि अनूप ॥ ९७ ॥ रिद्धि सिद्धि सब ताके करमै ॥ पुनि परलोक परम सो नरमै ॥ जब भोजन करि कै महि सोवै ॥ मौन गहै अरु थिर मन होवै मधु पूरनि मातें करि साधन ॥ वैशाखी लौ करै अराधन ॥ गिनि घन बुंदु सकै नर ज्ञाता ॥ पुन्य पार नहि पावै धाता ॥ जिमि तिथि महं हरि नासर मानौ ॥ नागन महं शेषहि पहिचानौ ॥ गरुड़हि गुरु नभ गनमहं जानौ वर पुरान महं भारथ आनौ ॥ बासुदेव देवन मैं देवा ॥ बिधि हर जासु न पावत भेवा ॥ तिमि तीरथ पुरियन के माहीं ॥ द्वारावती सरिस कोउ नाहीं ॥ दोहा ॥ धन्य जहाँ यदु मंडली राजत कृष्ण समेत ॥ अहइ भूमि बैकुंठ की सकल पाप हरि लेत ॥ ९८ ॥ छप्पै ॥ जहाँ विराजत बासुदेव निज चार व्यूह करि ॥ सुमिरत जाकहं शेश महेश

प्रजेश ध्यान धरि॥ उग्रसेन कहँ दीन्ह कृपा करि नगरी सगरी॥ बगर बगर महँ मुक्ति फिरै उगरी जहँ बगरी॥ ॥ जब जैहैं हरि धाम निज यह नगरी कहं सिंधु तब॥ अपने महं लेजाय हैं देखहि गे जगजीव सब॥ दोहा॥ रुकिमनि को मंदिर रहै ताहि लखैंगे लोग॥ हरि मूरत तामैं रुचिर राजति नासन सोग॥ ८८॥ तहँ ने ऐहै चारु अवाजा॥ सो सुनिहै जगके जन राजा॥ जो कोउ द्विज होइहि हरिदासा॥ ब्राह्मन के सब अंग रघुलासा॥ तरि सागर मंदिर महँ जाई॥ हरि मूरत लावै हरषाई॥ प्रान प्रतिष्ठा करि अस्थापै॥ तो कलियुग को जो नर व्यापै॥ तिनकर दरशन जे जन करैं॥ पूरन भाव हृदय महँ धरैं॥ सो जावै हरि धाम सुजाना॥ जोयोगिन कहँ दुर्ल्लभ जाना॥ यह हम तुम्हैं महात्म सुनायो॥ हरि नगरी को परम सुहायो॥ जो यह खंडहि सुनै सुनावै॥ सो द्वारिका वास फल पावै॥ दोहा॥ हे नरेस तुमकहं कह्यो चारु द्वारिका खंड॥ भक्ति मुक्ति कीरति करनि खंडन बहु पाखंड॥ गिरधर अघहर द्विरद दर करन कोटि कल्यान॥ भरन सुजन अमरन शरन हित अनुसरन महान॥ सोरठा॥ अहैं सकल जग व्याप्त सुमिरि नाम श्री कृष्ण कर॥ कीनो खंड समाप्त जासु द्वार का नाम वर॥ १००॥ ऽऽ॥ ऽऽ॥ इति श्री भाषा प्रकाशे कृष्ण प्रिये गिरधर दास विरचिते प्रेमपथ रचिते गर्गसंहितायां षष्ठं द्वारका खंडं समाप्तम् शुभ मस्तु

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगोपीजन वल्लभाय नमः ॥ अथ विश्वजित खंड लिख्यते ॥ सोरठा ॥ मंडन बहु ब्रह्मंड खंडन खलु पाखंड घन ॥ कहत विश्व जित खंड होत महत आनंद मन ॥ दोहा ॥ बासुदेव साक्षी नमो संकर्षन अनि रुद्ध परमा पति प्रद्युम्न पद बंदत करि मन शुद्ध ॥ गुरु ब्रह्मा हरि शूल धर पर ब्रह्म गुरु देव ॥ बंदत जिन्हके चरन कहँ जिन्ह दीन्हो यह भेव ॥ चौपाई ॥ हे शौनक यह तुमहि सुनावा ॥ अब कह सुनिहौ निज मन भावा ॥ सुनि ऋषि शौनक बोले बानी ॥ नृप बहुलाश्व कृष्ण प्रिय ज्ञानी ॥ नारदतें पुनि पूछेहु काहा ॥ बोले सुनत गर्ग मुनि नाहा ॥ राजसूय सुनि यादव पतिको ॥ बोले गुनि सहाँय हरि अतिको ॥ उग्रसेन भे मरुत महीपा ॥ कौन पुन्य करि कै कुल दीपा ॥ जाके ऐसे कृष्ण सहाई ॥ सुनि नारद बोले हर खाई ॥ भानु बंस भे मरुत प्रबीना ॥ चक्रवर्त्ती नृप सूयहि कीन्हा ॥ हिम गिरि उत्तर मखमहि कीन्हा ॥ आचारज संबर्त्त प्रबीना ॥ दोहा ॥ बहुत लगायो द्रव्य कहँ को करि सकै बखान ॥ बीस कोस कर कुंड करि कीन्हो यज्ञ महान ॥ १ ॥ ब्रह्म कुंड इक जोजन जानो ॥ द्वैद्वै कोसन के पहिचानो ॥ पाँच कुंड परमान अरंभा सहस हाथ ऊचो मख खंभा ॥ असी कोस मख मंडल लोना ॥ कदली तोरन मंडित सोना ॥ बिधि शिवादि निर्जर सब आए ॥ ऋषि ब्रह्मर्षि सुरर्षि सुहाए ॥ होतादिक्षित दस दस लाखा ॥ पाँच लाख अध्वर्य न राखा ॥ तितने उदगाता भे भारी ॥ अरु आए कोटिन व्रत धारी ॥ आज्य धार गज सुंड समाना ॥ परत कुंडमै अडग बखाना ॥ खाइ घने घृत कहँ हुत बाहा ॥ भयो अजीरन कहियै काहा ॥ दोहा ॥ विश्वे देवा भे तहाँ सबन परो सत अन्न ॥ लेहु लेहु पुनि

लेहु यह कहहि ज्ञानसंपन्न ॥ २ ॥ कोउ त्रिलोक महँ भूखो नाहीं ॥ भयो अजीरन सुरन तहाँहीं ॥ संवर्त हि दै जंबू दीपा । निपुत वि· २७५
भार दिय कनक महीपा ॥ शत अर्बुद हय गज लख दीने ॥ कोटिन दीने रतन नगीने ॥ पांच सहस हय शत गज पीने
कनक भार सत द्विज प्रति दीने ॥ सोनेके उछिष्ट सब रतन ॥ द्विज देवन त्यागे गुनि अति धन ॥ अजहु कनक गिरि अ-
हइ महाना ॥ शत योजन लौ तासु प्रमाना ॥ मरुत सरिस मखकोउ नहि कीन्हा ॥ यहहम सत्य हृदय निज चीन्हा ॥
यज्ञ कुंड तें कढ़ि नारायण ॥ दरसन दीन्ह प्रेम पारायण ॥ दोहा ॥ देखि भयो गद गद नृपति पर्यो चरन पर जाइ ॥ कह
न च ह्यो नहिं कहि गयो तिमि रहि गयो सचाइ ॥ ३ ॥ इमि नृप दसा मुकुंद निहारी ॥ बोले बानी बिहसि मुरारी ॥ हे
नृप तुम मोहिं बहु बिधि पूजा ॥ अस मख कीन्ह न कोउ जग दूजा ॥ माँगहु बर देवैं हम भाई ॥ जो देवन दुर्लभ अधि
काई ॥ सुनि महीप पूज्यो बिधि नाना ॥ गंधा सत फल फूल महाना ॥ पुनि पुनि बंदि दुहूँ कर जोरे ॥ बोले बचन प्रेम र-
ग बोरे ॥ हम जानत तजि तव पद सेवा ॥ बर बर अरुन अहै जग मेवा ॥ गंगा के तट खोदै कूआ ॥ ता सम को जग मू-
रख हूआ ॥ पैजो आप कहा वर माँगू ॥ तौ मैं कहत जानि बड़ भागू ॥ दोहा ॥ मम उरतें तुम्हरो चरन कबहू दूर न होय ॥
यह वर दीजे सुनि बचन कहत भूप मुख जोय ॥ ४ ॥ धन्य भूप मति निर्मल तोरी ॥ यहतो अहइ सु माँगु बहोरी ॥ जबहिं मि
श्री गोपाल बखाना ॥ तब बोले नृप मरुत सुजाना ॥ जौं बर देत देहु यह भावै ॥ पुर बैकुंठ भूमि पर आवै ॥ तहँ हम
होहिं भूप कबि काई ॥ तुम हमरी तिन करहु सहाई ॥ अस्त्र बीज चौकड़ी माहीं ॥ होइहि इहाँ इसत है नाहीं ॥ मम पुर

आवै भूमि अनूपा ॥ हम तव दास आप मम भूपा ॥ इमि कहि भे हरि अंतर ध्याना ॥ उग्रसेन सो मरुत महाना ॥ राजसूय मखकीन्ह अपारा ॥ नहिं अचरज करता करतारा ॥ दोहा ॥ मरुत भूप को चरित यह पढ़ै सुनै नर जौन ॥ भक्ति ज्ञान विज्ञान धन संतति पावै तौन ॥ ५ ॥ सो सुनि कह्यो नरेश्वर बानी ॥ राज सूय कीन्हो किमि ज्ञानी ॥ हरि सहाँय ते भाषहु मोहीं ॥ सुनि मुनि कहत नरेसहि जोहीं ॥ इक दिन उग्रसेन गुनि मर्मा ॥ हरिहि पूजि कह मध्य सुशर्मा ॥ हे प्रभु हम नारद मुख जाना ॥ मख महं महि पति सूय प्रधाना ॥ करन चहत सो तब बल स्वामी ॥ जग सागर बर पोतहि पामी ॥ तब हरि कहा भलो यह चाहा ॥ होइहि अतुल कीर्त्ति नर नाहा ॥ सब यादवन बोलाइ सुबीरा ॥ धरहु बिश्व जित मधिको बीरा ॥ यादव अहहि अंस सब मेरे ॥ जीतहिगे महि सूर बड़ेरे ॥ दोहा ॥ तब बोलाइ सब यादवन छप्पन कोटि बल ऐन ॥ महि अहि बल्ली नाखि कै भे नृप बोलत बैन ॥ ६ ॥ जंबू दीप सकै जो जीती ॥ सो यह पानहि लेइ सप्रीती ॥ मौन रहे सुनि यादव सगरे ॥ तब प्रद्युम्न आपु उठि अगरे ॥ लै तांबूलहि बोले बोला ॥ शंबर जीत प्रताप अतोला ॥ जीति सकल जंबू द्विप राजन ॥ लैहौं बलि बल आप महाजन ॥ द्विज गुरु भूनहते अघ जोई ॥ सो महि महि जीते बिनु होई ॥ सो सुनि सबन साधु कहि भाषा ॥ तिन्ह कहँ तिलक करन अभिलाखा ॥ गर्गा दिक आचारज आए ॥ बेद रिचा पढ़िकै नह वाए ॥ भूपति तिलक सीस महँ कीन्हा ॥ भेंट सबन तिनकहँ तब दीन्हा ॥ दोहा ॥ उग्रसेन असि देत भे आपद माल समान ॥ कवच दीन्ह बलदेव जू उत्तम

अति दुति मान॥७॥ निज शस्त्रन ते तुरत निकारी॥ त्रोन तीर धनु दीन्ह मुरारी॥ कुंडल क्रीट चवर पीतांबर॥ छत्रहि दीन्ह शूल गुनिनां बर॥ असि शत चंद दीन्ह वसुदेवा॥ उद्धव हाटक माल सुभेवा॥ शंख दक्षिना बर्त्त अ-कूरा॥ गर्ग बिजय पत्री मनि पूरा॥ चतुरानन आदिक सुर आए॥ शूली शूल दियो मन भाए॥ शिर मनिप-द्मराग बिधि दीना॥ बायु व्यजन यम दंड प्रबीना॥ शक्ति शक्ति धर पासहि पासी॥ सूरज गदा दीन्ह अति खासी॥ देत भए कुबेर मनि माला॥ चंद कांति मन चंद्र रसाला॥ दोहा॥ धरनी दीन्हो पादुका काली कुंतल दी-न॥ सहस नयन दीन्हो रथहि बरनन सुनहु प्रबीन॥ ८॥ सहस अश्व युत कंचन साजा॥ बिसकरमा कृत ज-लद अवाजा॥ सहस चक्र घुंघरू अरु घंटा॥ मिलिकै करहिं परस्पर टंटा॥ मन सम गति अरु सहस प-ताका॥ दीन्ह बिजय हित नायक नाका॥ तेहि छन वोजे वेनु मृदंगा॥ दुंदुभि शंख पटह मिलि संगा॥ मोती सुमन अक्षत फल लावा॥ सुरन कृष्ण नंदन पर नावा॥ हरि वल नृप गुरुके पद वंदी॥ चलन चहे प्रद्युम्न अनंदी॥ ऊध-वादि संग यादव मोजा॥ सूरसेन अरु अंधक भोजा॥ विष्णु दशा रह आदि [illegible]रा॥ चली कोटि छप्पन की भीरा दोहा॥ गद सारन आदिक चले भ्रात कृष्णके संग॥ शांव आदि केशव सुव[illegible] जीतन जंग उमंग॥ ९॥ कुंडल क्री-टकवच धनु धारे॥ चले सैन महं सुभट गरारे॥ गरुड हंस गज ताल पता[illegible]न॥ राजत अति रथ वाजि चलाकन चवर छत्र कंचन के राजहिं॥ तिनपै वीर धीर अति गाजहिं॥ दलम[illegible] राजहि कुंजर कारे॥ घंटा हेम जाल कहं

धारे ॥ कवित्त ॥ पर्वत समान हैं महान हाथी वान सह सैन सैन वीच शोभा देतते उतंग हैं ॥ मद्रदे सुभद्रदे सुहिम विंध शैलके सु कसमीर मलै तीर कैलास सुरंग हैं ॥ ऐरावत वंसवारे चारदंत चारु धारे तीन सुंड भूमि नभ चलत उमंग हैं ॥ चतुरंग रंग शोभा देत जग संग भारे सुभट तरंग कारे अंग सो मतंग हैं ॥ दोहा ॥ कोटि ध्वजाधर गज चले तितने डंका वान ॥ कोटि चले कोतल सुभग कोटिन सहित प्रधान ॥ १० ॥ घन सम गरजहिं चालत सीसा ॥ सिरपर सुंड धरहिं नर ईशा ॥ सीकर पटकत करत बनैठी ॥ भूमि कंपावत अंगरत ऐठी ॥ मद झरना सम झरत सुजाना ॥ इमि गज चले अमित नरत्राना ॥ यह ऐसी नर कौशल बिकटा ॥ मत्स कलिंग सुकुंतल निकटा ॥ कैकय कुरु बन कटक सुअंगा ॥ दारद गुर्जराट अरु बंगा ॥ केरल कौकन अरु वैदर्भा ॥ महाराष्ट्र आनर्त्त सुगर्भा ॥ शृंग यज्ञ का भोजक कच्छा ॥ सिंधुचाल सौवीरक अच्छा ॥ मालव कर्नाटक गंधारा ॥ अर्बुद अरु पांचाल विचारा ॥ दोहा ॥ ताजी टांगन पावनी बिविध रंग तैलंग ॥ आए इतने देसके जीतन जंग तुरंग ॥ परि पूरन तम कृष्णक बाजि शाल के जौन ॥ चलत बाजि सम जल दस्वन सिगरे आए तौन ॥ ११ ॥ श्वेत दीप बैकुंठ अजित पद ॥ तहँके हय आए सरूप हद ॥ हेम हार मुक्तन की माला ॥ चोटी कलगी बनी रसाला ॥ चँवर धरे मुख पट्टन साजे ॥ बने बिछौने सुंदर ताजे ॥ जाल परी शोभा अति होई ॥ अनिल समान चलत अति सोई तिनके पग मग परहिन कैसे ॥ साधु जगत रहि छुअ हिन जैसे ॥ लाँघहि सरिता बिवर पहारा ॥ चलत चपल बोलत

भल प्यारा॥ नीतर मोर हंस से नाचहिं॥ थिरकहिं जमहिं भ्रमहिं गति राचहिं॥ घने सपच्छ श्याम श्रुति केते। पीत पुच्छ सुंदर द्युति केते॥ दोहा॥ उच्चैःश्रवा तुरंग से वरन लोक के अश्व॥ जानहिं चलन चलाक चित सम दीरघ अरु ह्रस्व॥१२॥ नील पीत सित हरित लहरिया॥ कनक अकासी चित्र चुनरिया॥ विविध रंगके राजहिं घोरे॥ साजे साजन सुभग अथोरे॥ सुभट पास असि धनु सरचर्मा॥ शूल शक्ति धारे बरबर्मा॥ भयद परम राजहिं बल वाना॥ तिन कर यूथ न जाइ बखाना॥ लखि यदुसेना कहं तेहि पर्वा॥ बिस्मित असुर अमर नर सर्वा॥ चलत कार्ष्णि के यादव राजा॥ हरिबल सहित कहत नर ताजा॥ हे प्रद्युम्न कृष्ण की मरजी॥ जीतहु गे महि जीतन गरजी॥ सुनहु नीति सो राखेउ पासा॥ होइहि पुन्य शत्रु अघ नासा॥ दोहा॥ सुप्त मत्त जल बाल त्रिय शरनागत उन्मत्त बिरथ बिशस्त्र भगोल कहं हत हैनुक बहु सत्त॥१३॥ नृपहि उचित शरनागत रक्षन॥ आत्त ताड़ भट भिरत बिचच्छन॥ बाला बाल नपुंसक मारन॥ अहै नृपहि आपुहि संहारन॥ नृपकहं चहिय धर्म अभिलाषा॥ आदि राज मनुने यह भाषा॥ जेरन महं निरभय लड़ि मरहीं॥ ते रबि लोक जात तजि डरहीं॥ छत्री ह्वै रनतें जो भागें। रौरव नर्क तौन अनुरागें॥ नृपहि सैन सैनहि नृप रक्षे॥ रथी सारथी तेहि सो अक्षे॥ यादव तुम प्रद्युम्नहि रक्षहु॥ हरिसुत तुम द्वन कर दुख भक्षहु॥ गोद्विज सुर सुधर्म अरु बेदा॥ पूजनीय जग साधु अरेदा॥ दोहा॥ जासु सहाई बासु सुर तासु अहै जग जीत॥ सो सुनिकै बोलत भए कृष्ण सुवन भरि प्रीति॥ बेद विषु बानी गऊ तन

द्विज सुख सुर अंग ॥ साधु हृदय यह बिदित जग पूजनीय सो मंग ॥ १४ ॥ सूर सौरि हरि बल नृप गर्गा ॥ इनपद बंदि चले धरि पर्गा ॥ बिजय सुरथ चढ़ि चले तहाहीं ॥ बल हरि रहे राज के माहीं ॥ सोलह कोस परत है डेरा ॥ कंचन पूरित चारु बसेरा ॥ आगे सदल रहे कृत बर्मा ॥ पुनि अक्रूर भयानक कर्मा ॥ मंत्रिन सह उद्धव ता पाछे ॥ पुनि हरि सुवन अठारह आछे ॥ प्रद्यूमन वृक अरुन सुनंदन ॥ पुष्कर शांब वृहद्रवि अति धन ॥ बेद बाहु न्यग्रोध सुभानू ॥ दीप्तिमान श्रुत देव सजानू ॥ मधुक बिचित्र भानु सुबि रूपा ॥ वृहद भानु अति रुद्ध सभूपा ॥ दोहा ॥ पुनि गदादि प्रभु भ्रात सब चले संग यदु फोज ॥ अंधक वृक्ष दसार्ह मधु सूर सेन अरु भोज ॥ १५ ॥ छप्पन कोटि चले सरदारा ॥ तासु सेन को बरनै पारा ॥ तिनके चलत शब्द भोभारी ॥ शस्त्र बिखंडक धनुटंकारी ॥ गज चिकार हय हीं सनतरजनि रथ कर राव सुभट दल गरजनि ॥ छुटत भसुंडी बजत नगारे ॥ परम शब्द पूरे पुरसारे ॥ महा शब्द सुनि सुनि लघु भूपा ॥ डरि डरि गढ़नि छिपे गत रूपा ॥ यादव सागर चलेउ अपारा ॥ ताकर भयो भूमि पर भारा ॥ अमृत ध्वनि। टट्टट्टर कत शेष फण वव्वव्वाढ्यौ होल ॥ धद्ध द्धद्धरनी धसति कक्क क्कंपत कोल ॥ कक्क क्कंपत कोल क्ष्मपकिक मट्टट्टरकत ॥ चच्चच्चिकरि मतंगग्गहि भय भम्भम्भर कत ॥ तत्तत्तिपुर सुनह त्तनिकन अत्तत्त रकत ॥ जज्जज्जलधि उलट्टट्टपरि हट्टट्टरकत ॥ दोहा ॥ इहि बिधान ते बिजय हित चलत भए यदु यूह ॥ कृष्ण उतारहि भार भुव जानहु ज्ञान समूह ॥ १६ ॥ कह महीप मिथिला कर मुनिते ॥ प्रभु यह कथा कहहु मोहिं पुनिते ॥ कौन कौन पुरजीत्यौ राजा ॥ मोहिं

कहो सो कर्म दराजा ॥ तब नारद प्रियजाहि लराई ॥ बोले बानी चारु बनाई ॥ बाह बाह नृप भल तुम पूँछा ॥ बिन हरि भक्ति चरित सब छूछा ॥ महिरज जल धारा गिनिजावै ॥ पैहरि नाम पार नहि पावै ॥ षोड़श कोस परत है छाया ॥ ऐसे छत्र सहित यदुराया ॥ सबन सहित अति परमा छाए ॥ पहिले कच्छ देस महँ आए ॥ सुभ्र भूप गोकरन अहेरी ॥ आएउ सुनि पुरसेना घेरी ॥ दोहा ॥ ध्वजनी कह देखत भए रजते रजनी कीन ॥ दलिबे जोग जहान के उर अति शंका लीन ॥ १७ ॥ नागर डरे देषि दल सागर ॥ दुर्जय जानि भूप मति आगर ॥ घोरे अयुत पंच सत बारन ॥ लीने कनक दोय दस भारन ॥ दीन्हो भेट जादव हिजाई ॥ बैठत भो ढ़िग सीस नवाई ॥ मुदित प्रद्युम्न दीन्ह मनि माला ॥ भाषेहु राजकरहु छिति पाला ॥ जीति ताहिगे नगर कलिंगा ॥ तहँके नृपतें जाचेउ जंगा ॥ तब कालिंग सदन भडि योधा ॥ भिरेउ यादवन सों भरि क्रोधा ॥ बढ़ि अनिरुद्ध अकेले आगे गहि धनु लगन सबुते लागे ॥ सत सर भूपहि मंत्रिहि दस दस ॥ मारेउ गरजि बीर रन करकस ॥ दोहा ॥ साधु साधु सबहिन कहो तबै क्रुद्ध अनरुद्ध ॥ भिरत भए कालिंगते परम वीर जिन युद्ध ॥ १८ ॥ भुजंग प्रयात ॥ घने काटिडारे धरे हाथ सीसा ॥ उरुपाद पाटे मही चारु दीसा ॥ चले सर्पसे शायका दर्प धारे ॥ गना सघने बीरके भूमिडारे ॥ महीपाल दंती चढ़ो देषि सोई ॥ भिरो आयके काल के रूप जोई ॥ गदा गर्जिकै काम पुत्रै प्रहारे ॥ कहो की बचै ना अवेलेन मारी ॥ लगे सो गदा चित्तमे खेद आयो ॥ यदू बीर सारे धनू को बजायो ॥ सबै घेरिके बानके जाल ठारे ॥ कलिंगे सके

सैन मैं कोपि पाटे ॥ महाबीर कालिंग भो जोर कर्त्तो ॥ अकेलो सहस्रान सों धीर लर्त्तो ॥ भयो रोकतो बानते बानरे-
ला ॥ यथा सिंधुको रोकतो होय बेला ॥ दोहा ॥ सो लखिकै गद हरि अनुज गदा धारि लल कारि ॥ वाम हस्त ते
भो तजत कालिंगहि पर चारि ॥ १९ ॥ ताके लगे फाटि गो बारन ॥ पर्यौ भूमि कर कै चिक्कारन ॥ तब कलिंग प-
ति गदा पकरि कै ॥ लरन लग्यौ रन धीर अकरि कै ॥ दोउन गदा युद्ध अति कीन्हो ॥ समर भूमि शव दित करि दी-
न्हो ॥ गद कलिंगहि पकरि घुमाई ॥ पटकि वधन की करी उपाई ॥ तब व्याकुल कालिंग बिचारी ॥ गो प्रद्युम्न शरन
बल भारी ॥ दैबल कहत भयो कर जोरे ॥ देव देव तुम पर हित भोरे ॥ तुम सँग को करि सकै लराई ॥ आपु अखिल
जग नेता साँई ॥ इमि कलिंग कहँ जीतत भए ॥ पुनि मरु धन्व मगर चलि गए ॥ दोहा ॥ गिरिको दुर्गत हान जहँ गय
नामक भूपाल ॥ तहाँ पठायो ऊधवहि गए सुबुद्धि बिशाल ॥ २० ॥ गयके सभा जाय हरिदासा ॥ तहाँ जाय यह बचन
प्रकासा ॥ उग्रसेन नृपजीति महीपन ॥ करिहैं भूपति सूय यही पन ॥ परि पूरन तम कृष्ण सुतंत्री ॥ परि पूरन तम जाके
मंत्री ॥ प्रद्युम्नहि बलि लेन पठावा ॥ दीजै कै कीजै मन भावा ॥ सो सुनि कय ओठन फर कावत ॥ बोलत भयो बचन
रिसि छावत ॥ अल्पकाल महँ यादव बाढ़े ॥ नहि बलदेव बिनारन गाढ़े ॥ सुनि ऊधव हरि सुत ढिग आए ॥ तित को
सब बिरतांत सुनाए ॥ तब सब यादव बीर रिसाये ॥ निज दल कर द्रुत कूँच कराए ॥ दोहा ॥ मरदत तरु पत्तन गिरिन च-
लत भई जब सैन ॥ तबलै सँग अक्षोहिनी अभिरो गय बय ऐन ॥ २१ ॥ कुंजरते कुंजर रन करहीं ॥ रथते रथ हयते हय

लरहीं ॥ भिरहिं बीरते बीर दपटिकै ॥ त्यागत शस्त्र समूह झपटिकै ॥ तोप त्रिशूल भुसुंडी पट्टा ॥ धनु सर गहि गहि करहिं झपट्टा ॥ पगे बीर रस धरु धरु बक्कै ॥ सिर छेदन गहि खड्ग लपक्कै ॥ यदु भयते गयके जन मारे ॥ डरि दस दिसि महँ भगे बिचारे ॥ सो लखि एक धनुष टंकारत ॥ अगरो गय नृप रिपुन बिदारत ॥ सो लखि दीप्ति मान हरि छोरा ॥ सर समूह त्यागयो भरि जोरा ॥ हैते केतु सूत इक सरतें ॥ रथ सर बीस बरस सर सरतें ॥ दोहा ॥ सत सरते कैदयो धनुष गय गहि दूजो चाप ॥ बीस बान मारत भयो उर मधि लै अति दाप ॥ २२ ॥ ताते कछु व्याकुल ह्वै सोई ॥ गहेउ शक्ति तड़िता सम जोई ॥ गरजत ज्यों घुमाइ ललकारी ॥ सो उर धंसी तड़ित दुति भारी ॥ मुरछि परयो गय हरि सुत जोई ॥ गल महँ डारि धनुष धिसि आई ॥ गोलै प्रभु मनके आगे ॥ तुरत नगारे बाजन लागे ॥ देवन सुमन दृष्टि कहँ कीना ॥ गयते पूजि न कृष्ण प्रवीना ॥ गे अवंतिका मैं कुलदीपा ॥ जहाँ रहत गय सेन महीपा ॥ आनक दुंदुभि कर बहनोई ॥ दैके भेट मिले बड़ सोई ॥ दुहुन दुहूँ वंदयो नहि काला ॥ बढ़ा परस्पर प्रेम रसाला ॥ दोहा ॥ दादा बहिनहि वंदि कै प्रमुदित कृष्ण कुमार ॥ बिंद और अनु बिंदते कीन्ही मुदित जोहार ॥ माहिश्मतीपुरी पुनि आये ॥ मग नरमदा दरशकहु पाए ॥ लहर कलोल लोल अति करहीं ॥ तरुते तटपै सुमन सु झरहीं ॥ देव नदी सम नदी अपारा ॥ ना तट उतरे यदु भरतारा ॥ दूंदु नील नृप तहँ कर गावा ॥ सो यदु दल दिशि दूत पठावा ॥ सो हरि सुतहि कह्यो इमि आई ॥ मम रसन दुर्योधन राई ॥ हम कर देत हस्तिना पुरमें ॥ ताते अहैं अभै अति उरमें ॥ तजि तिन कहन दूसरहि दैहैं ॥ आए

हथा न दूत कछु पैहै॥ सोसुनि हसत भये यदु नाथा॥ ॥ बोले वचन हिलावत माथा॥ दोहा॥ गय कलिंग को हाल जबहो-
इहोइ तवभेंट॥ लातकि देवी बात तें नहि मानत मुखटेंट॥ २३॥ उग्रसेन यादवहि न जानत॥ लैहौं भेट शत्रु पहिचानत॥ सो
सुनि दूत भूप ढ़िग जाई॥ दीन्हा सब वृतांत सुनाई॥ जान्यो परम प्रबल यदु जंगा॥ पंच सहस गज नियत तुरंगा॥ अयुत
सुरथ अरु बहु धन लीन्हा॥ बर बलि दान प्रद्युम्नहि दीन्हा॥ बोली माहेश्वर ते होई॥ गे गुजराज महाबल सोई॥ ऋष्य-
नाम तहँ को नर राई॥ ग्रहि कहँ ग्रस्यो गरुड़ सम जाई॥ लै बलि तहँ ते आनंद छाए॥ चेदि नगर हरि नंदन आए॥ जहँ
नृप हरि फूफा दम घोषा॥ जासु सुवन शिशु पाल सदोषा॥ दोहा॥ ऊधव कहँ दम घोष ढिग भेजदयो बल ऐन॥ बंदि म-
हीपहि कहन मे हाष्ण सरवा बर बैन॥ २५॥ नृपकर उग्रसेन कहँ देहू॥ सो करिहै नृपसूय सनेहू॥ सो सुनि गहिउर कोप
कराला॥ बोलत भयो बचन शिशु पाला॥ अहो काल गत अहइ कुचाला॥ ब्रह्मा चाहत होन कुलाला॥ काक हंस मूरख
पुनि पंडित॥ दासकरै भूपन कहँ खंडित॥ भक्ष ययाति सापते सिगरे॥ यादव धन उनमद है बिगरे॥ नृप अकुलीन समा
ज अखेटा॥ मूरख के पुनि पंडित बेटा॥ निरधन धन कहँ पाइ अपारा॥ त्रिन समान जानत संसारा॥ मंत्री तासु मगध भैभा-
गा॥ मूरख सिंधु शरण अनुरागा॥ दोहा॥ उग्रसेन नकब को अहै भूप बतावहु मोहि॥ निज मुख सिद्ध होन चह वासुदेव कहँ
जोहि॥ २६॥ पहिले नंद अहिर के जायो॥ बहुरि शैशिर छल अपन बनायो॥ लाज नहीं है पितु जग जाना॥ मै जीतहुं यदु
नृप प्रधाना॥ फूले बहुत मत्त मद छए॥ कब जनमे कब राकस भए॥ इमि कहि चला चाप सर धारी॥ समुझायो दम-

चोष विचारी ॥ हे सुत सुनउ क्रोध नहिं कीजै ॥ याते सकल वस्तु जग छीजै ॥ अरथ धरम अरु मुक्ति सुकामा ॥
सब मिलहिं साम मह आमा ॥ दाम साम कहं अतिहि पियारा ॥ ताते देहु मिटै दुख भारा ॥ यादव चेदि अहै
सन बंधी ॥ या महँ सदा चाहिये संधी ॥ दोहा ॥ सुनत बचन दम घोष के गह्यो हृदय अपसोस ॥ साध्यो दम
अति रोस गहि दुष्ट शिरोमनि दोस ॥ २७ ॥ श्रुति श्रवा दम घोष पियारी ॥ शैरि श्वसा खलकी महतारी ॥ शि
सुपालहि गोदी बैठाई ॥ लैली बचन बिबिधि दुलराई ॥ हे सुत है नहिं दुखको सामा ॥ नाते दार शैरि तव मा-
मा ॥ राम कृष्ण दोऊ ए भाई ॥ तिनके सुत सों कहा लराई ॥ प्रेम समेत करो पहुनाई ॥ देहु बिबिधि धन ह-
रष बढ़ाई ॥ देखन जान चहत हम ताहीं ॥ है मम भ्रात सुवन सुचि जाहीं ॥ मेरे हृदय हुलास रसाला ॥ सो सुनि
कहत भयो शिशुपाला ॥ मम रिपु राम कृष्ण यदुसारे ॥ हतिहौं इन्हैं बानके मारे ॥ दोहा ॥ कुंडिन पुरमहँ ब्या-
हमै त्रिय हरि लीन्हेसि दुष्ट ॥ तासो मिलिये जाय किमि नहिं यह संमत पुष्ट ॥ २८ ॥ पच्छ करै जो यादव केरी
जगमहँ सोई अहै मम बैरी ॥ करिहौं पितहि कंस सम ख्याला ॥ तिनकरतो हम काल कराला ॥ सुनि दम घोष
मौनह्वै रहे ॥ उद्धव यह प्रद्युम्न हि कहे ॥ सैना बाहिनि ध्वजिनी प्रतिनी ॥ चतुरंगिनि अक्षौहिनि गतिनी ॥ दो-
उ दिसि दलकी भई तयारी ॥ तब बोले बहुलाश्व विचारी ॥ सैनादिक को लक्षन कहिये ॥ बोले बिप्र सुनो ज-
जो चहिये ॥ सत गजसहस सुरथ निरधारी ॥ अयुत तुरंग लाख पद चारी ॥ सैना लक्षन भाषहि गूनी ॥ चतु-

रंगिनी पासुहै दूनी ॥ दोहा ॥ अयुत सुरथ यह चार लखं गज बहोरि सत चार ॥ पैदल सत लख शस्त्र धर बाहि-
निनाम बिचार ॥ याकी दूनी जानिये ध्वजिनी हे भूपाल ॥ प्रति नाता कीद्वै गुनी जानहि सूर विशाल ॥ अयुत
नाग सत अयुत रथ दस करोड़ बर बाज ॥ बाजी के सत गुन मनुज कहहि अक्षोहिनि साज ॥ २९ ॥ सुनहुं सु-
भट संख्या जोहोई ॥ सत सँग लरै सूर है सोई ॥ भिरै सूर सत ते बलवंता ॥ ताकहँ प्रबल कहहिं सामंता ॥ सत
सामंत साथ जय पावै ॥ सो जग बीच गजी कहवावै ॥ निजहि सूत हय रथ कहँ जोई ॥ रक्षै रथी कहावै सोई
निज दलकी जो करइ सुरच्छी ॥ महारथी तेहि जानहु अच्छा ॥ निज दल रक्षै परदल मारै ॥ सो अतिरथी शंक
नहिं धारै ॥ चलेउ चैद्य लै सैन अपारा ॥ निदरि जनक जननी तेहि बारा ॥ बाहिनि ध्वजिनी लै बिधि भले ॥
द्युमत शक्त मंत्री द्वै चले ॥ दोहा ॥ अक्षोहिनि प्रति नालए रंग पिंग सरदार ॥ सबन बीच शिशुपाल सो अगरो
कुपित अपार ॥ देखि सैन सो शत्रुकी प्रलय सिंधु सम घोर ॥ कृष्ण कृपा वर पोत चढ़ि यादव चले अथोर
सखा सदल शिशुपाल को बढ़ि अति प्रबल द्युमान ॥ यादव के दल सो अभिरि करत भयो घमसान ॥ तोटक
दुहुके रनको अति शब्द भयो ॥ रजते सब अंबर पूरि गयो ॥ हय धावहि हीसत कुंजर पै ॥ गज चोट करै बढ़ि
कै नरपै ॥ १ ॥ निज सुंड उठाइ चलाइ पगै ॥ मुख मंडित सिंधुर लाल पगै ॥ बहु रंग बना तिन झूल बनै ॥
द्विप दौरहि मेघ समान घने ॥ शर तोमर शक्ति भुशुंडि गदा ॥ दशहूँ दिशि चालन लाग तदा ॥ बहु पैदल

मस्तकहीनभए॥बहु स्यंदन के अंग तोरि दए॥३॥बहु घोरन कीन्ह द्विधा हतिकै॥गज प्रान लियो बलको अतिकै॥करलै असि केतिक वीर चले॥सुमिरो अरिसागर बीच हले॥४॥बहु धावहिं मार पुकार करी॥ द्युति मान बरूथिनि खूब लरी॥अकरूर निहारि महा रिसि लै॥सर त्यागत सैन समीप चलै॥५॥प्रति ना तिनके भय भागि चली॥लखिसो करि कोप द्युमान बली॥सरके समुदाइहि छाड़तभो॥घन श्याम सखा कहँ आड़तभो॥६॥अकरूर द्विमान भिरे रिसिकै॥सरते भरि दीन्ह दसौ दिसिकै॥तब खड्ग सुफ- ल्क कुमार लयो॥सिगरे सर आसुहि काट दयो॥गहि शक्ति अकूर प्रचारत भे॥तड़िता सम घोर प्रहारत भे मुरछा कहँ खाइ द्युमान बली॥उठिकै गरज्यौ पुनि भांति भली॥८॥लखभार विनिर्मित धारि गदा॥दु- त मारेउ तर्जत पूरि मदा॥अकरूरहि भो दुख तासु लगे॥कछु व्याकुल से रस बीर पगे॥९॥दोहा॥लखि स- कोप अति सात्यकी मारि बज्र सम बान॥तासु सीस डार्यौ धरनि व्योम सिधार्यो प्रान॥३१॥सो लखि शक्ति शू- ल गहि तुरमै॥मारत भो सात्यकि के उरमै॥तब युयुधान बानको भारी॥शूलहि तोरि दीन्ह महि डारी॥शक्ति परिघ गहि परम कठोरा॥सात्यकि कहँ मारेउ भरि जोरा॥मुरछित भयो बीर बर करमा॥तब अभिरो सकोप कृतबर्मा॥तजि अनेक शायक अनियारे॥पूरन कर्यौ सुरथ दुख टारे॥शक्ति गदा तजि अति बलवाना॥चू- रकियो अरि बरको जाना॥कृत बरमा रथ तासु उठाई॥पटक्यौ योजन एक घुमाई॥ताछन सुभट शक्ति के मारे

रंग पिंग मंत्री द्वैभारे ॥ दोहा ॥ द्रुत बढ़ाइ निज सैन कहँ सर समूह कहँ छाइ ॥ दलत भए यादव दलहि सिं-
ह समान रिसाइ ॥ ३२ ॥ तिन्हहिं देखि यदु भए अधीरे ॥ गेसब शंब राय के तीरे ॥ तब हरि सुवन परम बल
वाना ॥ सबके मधि यह बचन बखाना ॥ हम मरिहैं दोउन कहं जाई ॥ इन सम औरन भट अधिकाई ॥ सो-
सुनि भानु रती पति भैया ॥ कहत बिहँसि कै केशव छैया ॥ जब त्रिलोक उतरहि रन काजा ॥ तब तुम मारेहु
शत्रु समाजा ॥ हम जैहैं इनके बध हेता ॥ यह सत सुनहु समर के हेता ॥ लावत काटि दुहूँ के सीसहि ॥ यह
हम कहत सत्य यदु ईशहि ॥ इमि कहि भानु चरम असि धारी ॥ चलेउ शत्रु की शैल बिदारी ॥ दोहा ॥ ताके
असिते सीस कर उरु उर पग करि सुंड ॥ कटे दिखाये भूमि महँ सुरथ बाजिके झुंड ॥ ३३ ॥ चलेउ खड़ग
कर तीछन धारा ॥ भानु भानु अरि सैन निहारा ॥ कटिते कटि कटि गिरहिं किते भट ॥ इत सम कीन्ह
पराक्रम परगट ॥ जेजे शस्त्र शत्रुके आए ॥ कछु रोके कछु काटि गिराए ॥ इमि दल मरदि भानु बल-
वाना ॥ रंग पिंग ढिग आइ तुलाना ॥ बाहि कृपान बीर बिधि मारे ॥ काटि सुरथ दुहु के महि डारे ॥ तेतव
गहि गहि चरम कृपाना ॥ महि रहि कीन्ह बीर विधि नाना ॥ तेहि छन बढ़ि भट भानु कराला ॥ काटि दियो
दुहु की असि ढाला ॥ बहुरि फिरावत उत्तम हाथा ॥ काटेउ रंग पिंग कर माथा ॥ दोहा ॥ लै कर महँ सिर दुहुन
कों भानु बीर बल बान ॥ जाइ दियो प्रद्युम्न कहं भोजय शब्द महान ॥ ३४ ॥ सुर यादव के दुंदुभि बाजे ॥ तेहि

छन सकल चेदि भट लाजे॥ रंग पिंग अरु शक्ति द्युमाना॥ इनकर वध सुनि चैद्य रिसाना॥ सैन सहित वजवावत भेरी॥ भिरो सकोप यदुन कहं टेरी॥ झूल सहित गज मत्त अनेका॥ चले शत्रु मरदत गहि टेका॥ कंचन रथ मधिझा झझनक्कहिं॥ वहु वीर नके बरम खनक्कहि॥ भूप सुनहु तेहि छन शिशुपाला॥ भोयादवी सैन को काला॥ मारि मरि सर जहर जराए॥ अगनित भट यम लोक पठाए॥ तेहि छन तहं रहि सके न एको॥ भागे भभरि प्रान कहले को॥ दोहा॥ सो लखिकै क्रतु दत्त रथ चढ़िकै कृष्ण कुमार॥ भिरत भए शिशुपाल सों लागे करन कुमार॥ रति नायक शिशुपाल दोउ निज निज शंख वनाइ॥ उभय सैन कहं बधिर करि अभिरे ओज बढ़ाइ॥ ३४॥ छंद॥ भे भिरत ओज बढ़ाइ अति बल दुहुन सर दुर्दिन कियो॥ तेहि काल मै शिशुपाल द्रुत अंगार अस्त्रहि तजि दियो यम दग्नि सुत जेहि दीन्ह तातें निकरि अनल संग्राम मै॥ यदु दल दहन लागे सकल नभते निकरि तेहि जाम मै॥ १॥ सो देखिकै परजन्य अस्त्र गोपाल नंदन तजत भे॥ जल बरषि सकल अंगार नास्यौ हरष यदुगन सजत भे॥ शिशुपाल तब गज अस्त्र कहं अरि सैन पर डारत भयो॥ जेहि मलय नामक सैल पै मुनि कुंभ संभव ने दयो॥ २॥ ताते निकरि बहु द्विरद शैल समान अति नरदत भए॥ द्रुत दौरि दौरि दपट्टि यादव यूथ कह मरदत भए॥ सो देखि जल चर केतु नर हरि अस्त्र कहं छाड़त भए॥ ताते निकरि भगवान दुख अरि जिसन महं माड़त भए॥ ३॥ अति रूप नखर कराल दंत बिसाल की दुति जगमगी॥ गर्जत कँपे भूधर सकल पग धरत पृथ

डगा अमी॥ गहि सकल द्विरद समूह कह महि मर्दिकै आनंद छए॥ नर केसरी भगवान ने जनि थान आनंद हिय वि-
भए॥ दोहा॥ परिघ तज्यो शिशुपाल तब अवनहि बचत पुकारि॥ हरि यम दंड प्रहारिकै मम महदीन्हो डारि १७
३५॥ सवैया॥ शिशुपाल तबै असि चर्म गह्यो॥ रिसि पूरि चल्यो रथको तजिकै॥ तजि दंडहि आयुध का-
टि दोउ॥ गहि पाय तबै अतिही सजिकै॥ हरि नंदन बाँधि लयो खल को॥ हँसि भाषत जात कहाँ भजिकै॥
पुनि खैंचत खैंचत म्यान असी॥ चह मारन हर्ष हृदै छजिकै॥ दोहा॥ तब गद पकरयो आइ कर बात कहा स-
मुझाइ॥ हरि मारन को प्रन कियो तव तेहि तजा सुनाइ॥ ३६॥ सवैया॥ इम घोष सुनी जब बात सबै॥ बहु भे-
ट लिए चलि आवत भे॥ सुनिकै रति नायक भ्रातन लै॥ बसु अंगन सों सिर नावत भे॥ बसु देव स्वसापति
देखि सोई॥ भरि आनंद आतुर धावत भे॥ जल मोचत लोचन ते सुत को॥ अघ सोचत कंठ लगावत भे॥ ॥
दोहा॥ धन्य धन्य प्रद्युम्न तुम चित्त सरल सुचि साधु॥ मम सुत सठ शिशुपाल को छमो सकल अपराधु॥
३७॥ हरि सुत कहत बुझाइ चनेरो॥ दोषन मेरो तव सुत केरो॥ काल करै सब औरन दूजो॥ दूमि कहि-
गुरु गुनि बहु विधि पूजो॥ सुतहि छुड़ाइ चैद्य तेहि काला॥ गए सदन गहि हरष बिशाला॥ सुनि बहु-
भूप चेदि पति हारी॥ भेट दीन्ह नहिं भिरे बिचारी॥ मनु तीरथ हरि सुवन नहाई॥ कौं करा देस गए हर
षाई॥ तहँ को मेधावी भूपाला॥ गरा दिसारत अरिकुल काला॥ बसिकै मद्र पुरी छन काजा॥ गयो जहाँ

हरि सुवनसमाजा ॥ बोला बचन विहसि के ऐसे ॥ का कादर के सम सब वैसे ॥ दोहा ॥ तुम अनेक हम एक हैं जीतहु तौ अब आइ ॥ सो सुनिकै भगवान सुत हँसि बोले नर राइ ॥ ३८ ॥ सिर पर सिर जग करहु न माना ॥ हरि माया बलत हि को जाना ॥ कह अनेक कह अगनित सैना ॥ होइहि अति अधर्म अघ ऐना ॥ कह्यौ मल्ल जो कोउ नहिं लरहू तौ मम पद मधि ते सुनि करहू ॥ तव गद नाम कृष्ण को भ्राता ॥ अभिरो धारि गदा रिसियाता ॥ तबसो गदहि गदहि तजि मारा ॥ गति ताकह गद फेरि प्रहारा ॥ गिरेउ मल्ल मुख श्रोनित धारा ॥ निकरि चली तन वृथा अपारा ॥ कहत बंदिकै कौं करण राजा ॥ यह हम आप परीच्छा साजा ॥ दोहा ॥ कहां कृष्ण भगवान हरि कहं हम प्राकृत जीव ॥ छमहु मोर अपराध सब सरन जानि वल सीव ॥ ३९ ॥ इमि कहि बंदि चरन बलि देई ॥ गो गृह नृप मेधाबी सेई ॥ बहुरि कटक गे नगर पंचावन ॥ तहँ नृप मौलि गयो सो कानन ॥ शांब पकरि ताकह लै आए ॥ बलि लै यादव चले सुहाए ॥ दंडक बन लषि सैन प्रचरिता ॥ देख्यौ सब ननि बिंध्या सरिता ॥ बहुरि पयोष्णी तापी न्हाए ॥ छेत्र सूर जाकर महं आए ॥ आर्याद्वै पायनी निहारी ॥ ऋष्य मूक गिरि गे धनुधारी ॥ गए प्रबर्षन जहा सुजाना ॥ नित बर्षत प्रजन्य भगवाना ॥ शंभु छेत्र लषि बरभो बेसा ॥ गत्रिगर्त्त अरु केरल देसा ॥ दोहा ॥ केरल पति अंबष्ट नृप मम मुखते सुनि तौन ॥ बिष्णु जानि भेंटहि दयो परम पराक्रम भौन ॥ ४० ॥ कृष्ण बेनी लखि दल संगा ॥ हरि सुत गए नगर तै लंगा ॥ तहाँ बिशाल यक्ष भूपाला ॥ बिहरत उपबन बीच रसाला ॥ त्रियन समेत बजै बर बीना ॥ सदा गान तानहि मै लीना ॥ ते मंदार

मालिनी नामा ॥ कहत बचन तहँ भई ललामा ॥ हे नृपतुम रन दुखहि न जाना ॥ सदा अस्य महँ दिवस बिताना ॥ ह-
मह नाहिं देषा यह बाता ॥ आई आजु तौन नर त्राता ॥ यादव पति लै सैन महाना ॥ जग जीतन हित कीन्ह पयाना
जीति चैद्य आदिक हर षाए ॥ तब पुर माहिं लरन हित आए ॥ दोहा ॥ गज चिकार हय हीं सनी रथ धुनि धनु-
टंकार ॥ नरगर जन को शब्द अति भरी व्यौम मह छार ॥ ४१ ॥ प्रलय सरिस यह आपद आई ॥ ताते भेंट देहु प्रभु
जाई ॥ बिहरहु बहुरि आइ नर राई ॥ प्रबल शत्रुते तजहु लराई ॥ सुनि विशाल दृग उर अनुमानी ॥ लै बलि गोह-
रि सुत ढिग ज्ञानी ॥ ताते पूजित कृष्ण कुमारा ॥ पंचा स्यर नहाइ सरदारा ॥ महा राष्ट्र गे तहँ को भूपा ॥ बिमल बिमल
मति भक्त अनूपा ॥ पूजित तहँते अति छबि छाये ॥ कर नाटक पति के पुर आये ॥ तहँ सहस्र जित नृप मति माना ॥ पू
जेउ जानि स्वयं भगवाना ॥ पुनि प्रद्युम्न चले हरषाये ॥ नगर करूष माहि चलि आये ॥ दोहा ॥ महा रंग पुर के नृपति
वृद्ध शर्म यह नाम ॥ श्रुत देवा शौरी स्वसा तासु तिया अभिराम ॥ ४२ ॥ हरि फूफी कर सुवन कराला ॥ दंत बक्र जान-
हु महिपाला ॥ चैद्य सरिस सो बीर्य निधाना ॥ माता पिता बचन नहिं माना ॥ परम कोप गहि लरिबे काजा ॥ चलेउ
अकेलो विगत समाजा ॥ कंस सरिस नर सुत यह रहेऊ ॥ दैत्य कराल क्रोध उर गहेऊ ॥ कज्जल सैल सरिस अति का-
ला ॥ जीभ कढी जिमि व्याल विशाला ॥ उच्च सरीर ताल दस बरनी ॥ जाके चलत डगत है धरनी ॥ लाख भार की
गदा नचावत ॥ तरु तोरत अरद्धंद मचावत ॥ तेहि लषि यादव डरे बिचारे ॥ भएउ कोला हल सबँन प्रचारे ॥ दोहा ॥

ला ॥ जीभ कढी जिमि व्याल विशाला ॥ उच्च सरीर ताल दस बरनी ॥ जाके चलत डगत है धरनी ॥ ला...
गदा नचावत ॥ ...

गुनि हरि सुत भेजत भए दस अक्षोहिनि सैन ॥ परम धीर धनु धरन सह बीर प्रबल रिपु जैन ॥ ४२ ॥ बान परश्वध बरछी भा-
ला ॥ तोप शतघ्नी शूल कराला ॥ घेर्यौ सबन शत्रुकहं कैसे ॥ रोकहि बाघहि बकरी जैसे ॥ दंत बक्र निज गदा प्रहारी ॥ मर्दन
लग्यौ द्विरद दल भारी ॥ सोने करबर सिक्कर सोहै ॥ घंटा घुंघुरू जटित बनोहै ॥ गहि गहि फेकत नभमहं कैसे ॥ जूल-
समूह अनिल अति जैसे ॥ गज रथ तुरग मनुज कहं गहि गहि ॥ फेकत नभमहं थिरु थिरु कहि कहि ॥ शत जोजन तेंऊ-
पर जाहीं ॥ श्रोनित श्रवत गिरहि महि माहीं ॥ प्रान रहै नहिं तिनके तनमैं ॥ पकरत आवत जात धरनिमैं ॥ दोहा ॥ प-
गतें करतें जानुतें उरते मरदेउ सैन ॥ गदा मारि ललकारि अति परम पराक्रम ऐन ॥ ४३ ॥ कीन्हो कैसो कर्म अपारा ॥ जिमि
कुंजर मरदै केदारा ॥ मथेउ जलधि जिमि हलि बाराहा ॥ बिक्रम परम कियो नर नाहा ॥ हरि सुत सिगरे तेहि छन धाए ॥ तनस
तें झाझर करि नाए ॥ दंत बक्र अति बिक्रम करिकै ॥ तिनको बल सब लीनो हरिकै ॥ कृतबरमा बढि सरतें पूरा ॥ असि सात्य-
की शक्ति अक्रूरा ॥ सारन आइ कुठार प्रहारा ॥ तब अरि गदा सात्यकिहि मारा ॥ तब अक्रूरहि क्रूर प्रहारी ॥ दियो शारनहिं
करते डारी ॥ कृत बरमा तहं दपटि चपेटे ॥ चारहु बिगत चेत महि लेटे ॥ दोहा ॥ शांब जांबवति सुत तबै गदा धारि बि-
कराल ॥ लरत भयो कारूष सों करत पैतरे चाल ॥ ४४ ॥ तब रद बक्र गदा तजि ताहीं ॥ पटक्यौ पकरि भूमि के माहीं ॥ शां-
ब तुरत उठि ताहि पछारा ॥ दोउन मूक अचूक प्रहारा ॥ गरजेउ दंत बक्र बल ओका ॥ भे थह रात सात द्वै लोका ॥ इ-
मि अवरेषि पराक्रम तासू ॥ गे प्रद्युम्न पास चलि तासू ॥ सहस तुरगं अरु सहस पताका ॥ अहइ प्रकास भानु

सम जाका ॥ इमि आवत हरि सुतहि निहारी ॥ कहत भयो कारूष प्रचारी ॥ अंधकादि ये यादव अंधे ॥ अल्प बु-
द्धि दुर्मद ते बंधे ॥ राज भ्रष्ट करि दीन्ह या याती ॥ करत निरत सोइ दृढ़ करि छाती ॥ दोहा ॥ इक हम अरु तुम सब
लरत धरमहि दीन्ह बहाइ ॥ पिता सरिस सुत होतहै कसन करहु इत आइ ॥ ४४ ॥ कृष्ण नंद करहो पशु रक्षक ॥ स-
दा अहिर जूठन कर भक्षक ॥ घृत दधि दूध तक्र नव नीता ॥ घर घर चोरत फिरै अभीता ॥ पर त्रिय लंपट सदा अ-
भागा ॥ मागध भय सागर दिशि भागा ॥ भयो अहीर सु यादव जाती ॥ राजा उग्रसेन सुत घाती ॥ राज सूयक-
हँ चाहत करना ॥ काल प्रबल कछु जाइ न बरना ॥ स्यारहु होन चहत मृगनाहा ॥ सुनि प्रद्युम्न कहा मति चाहा
यदुबल कुंडिन नगर दिखाना ॥ तेहि पुनि कहत नुच्छ अज्ञाना ॥ तब पितु कीन्ह मने गुनवाना ॥ तै खल बाप वि-
मुख नहि माना ॥ दोहा ॥ नंद गोप पति द्रोन बसु तै न जान यह हाल ॥ कृष्ण अंग संभूत ए गऊ लोक के ग्वाल
४५ ॥ राधा रास प्रगट सब गोपी ॥ हरि सरूप अव गुन गन लोपी ॥ परि पूरन तम कृष्ण कृपा निधि ॥ अमि-
त अंडपति जेहि सुमिरत बिधि ॥ जहँ सबते जलीन कहँवावैं ॥ तेहि यदु परि पूरन तम गावैं ॥ उग्रसेन हरि बर
ते राजे ॥ पूरब मरुत यग्य जिन साजे ॥ दुष्ट निरंकुस निंदक पापी ॥ रोवत वृथा जथा मति रापी ॥ सुनि रद बक्र
गदा सो भारी ॥ थिरु थिरु भाषि सुरथ पै मारी ॥ ताके लगे सहस तें घोरे ॥ व्याकुल ह्वै कै इत उत दौरे ॥ ग-
दा तज्यो तब कृष्ण कुमारा ॥ भो कछु बिकल असुर सरदारा ॥ दोहा ॥ तेहि छनते दोऊ लरे गदा पकरि कर

माहिं ॥ भूमि रवरेवै काल सं भाषि जात सोनाहिं ॥ ५६ ॥ गिरि गिरि गज गज हरि हरि जैसे ॥ तेउ भिरेम यंकर तैसे ॥ दंत बक्र तब लीन उठाई ॥ धरनि पछार्यो अतिहि रिसाई ॥ उठि प्रद्युम्न महा बलवाना ॥ पटक्यो तेहि महि सुमन समाना ॥ व्याकुल निकरा मुखते लोहू ॥ संभ्रम बस लरिसकान सोहू ॥ दंत बक्र पटके महि पाला ॥ यह ब्रह्मांड पुरन सह हाला ॥ कंपे दिग्गज सागर साता ॥ कोल सहित भो कमठ कपाता ॥ तब रुक्म जनक अरु माता ॥ आवत भये भेटले भ्राता ॥ पूजत भए तिन्हे हरि बेटा ॥ तिन्ह तब दीन्ह महीपहि भेटा दोहा ॥ बढ्यो परस्पर प्रेम अति तबसो नृप नरराइ ॥ कारुषहि प्रविसत भए निज सुत खलहि छोड़ाइ ॥ ५७ ॥ दक्षिन सिंधु नहावत भए ॥ नगर उशी नरके मधि गए ॥ कोटिन गऊ चरहिं जहं सुंदर ॥ डोलहिं गोप ज्ञान के मंदर तहं आभीर गए लै भेटा ॥ दधि माखन अरु दूध अरेटा ॥ लै हरि नंदन तिन कहं दीन्हा ॥ गज हय रथ धन बिबिध प्रवीना ॥ चंपावती पुरी पुनि आए ॥ जहं हैं मागद भूप सुहाए ॥ आगेसे तिन भेटहि दीया ॥ आदर लक्ष्मणा कुंवर अति कीया ॥ कमल सहस दस कंचल माला ॥ दीन्हो हरि सुत बुद्धि बिशाला ॥ पुनि तहंते यादव मुदकाए बर बिदर्भ कुंडिन पुर आए ॥ दोहा ॥ भीष्मक भूपति लाइके प्रद्युम्नहि निजधाम ॥ बिबिध भांति पूजत भये उर आनंद अभिराम ॥ ५८ ॥ माता मह कहं शीस नवाए ॥ कुंत दरद पुर पुनि चलि आए ॥ मलया चल चंदन जहं होई ॥ अति सुगंध चारुउ दिसि सोई ॥ तह अगस्त राजत मुनि नाथा ॥ हरि सुत धर्यो चरन पहं माथा ॥

हाथ जोरि बोले यह बानी ॥ दृश्य असत्य अहै जग ज्ञानी ॥ बहुरि सत्य करि मानत काहे ॥ कहहु भेद मोकहं मम चाहे ॥ तुम सरवज्ञ दिव्य दृग ज्ञाता ॥ सुनि बिचारि बोले मुनि बाता ॥ तुम परि पूरन सुत हरि अहहू ॥ मोकहं देत बड़ाई चहहू ॥ तौपूछन तुम जगहित हेता ॥ भाषत मैं एहि नीति निकेता ॥ दोहा ॥ जैसे घट जल सहित मैं ससि वह परत लखाइ ॥ तिमि माया ने पुरुष वह बिलग बिबिधि दरसाइ ॥ काँच माहिं मुख लखत है रसी माहिं अहिमान ॥ तिमि सरीर मति भिन्नहै पूरि रह्यो अज्ञान ॥ ४९ ॥ सुनि प्रद्युम्न कह्यो यह बानी ॥ किमि भ्रम छूटै भाषहु ज्ञानी ॥ दृढ़ बैराग्य कहहु मति माना ॥ सुनिकै मुनि यह बचन बखाना ॥ करि बिबेक नर ब्रह्महि भजई ॥ मनमय जानि जगत तजई ॥ जाइ परम पद सो नर राई ॥ जन्म मरन भय व्याधि लराई ॥ मोह क्षुधा पियास सुख सोका ॥ शिशु जुवान वृद्धापन थोका ॥ आधि व्याधि तजिकै सुख पावैं ॥ आत्म निरीह अहं ज्ञात भावैं ॥ शुद्ध गुना श्रय निष्कल ज्ञानी ॥ आत्म धरम पूरन पद जानी ॥ केवल ब्रह्म परावर जानै ॥ भूमि अंदर फिरत सुख मानै ॥ दोहा ॥ हम सतत सो जागई हमहि मरत सो नाहिं ॥ घूट रूप सो दुःख बिन नसत न सबके माहिं ५० ॥ पवन अग्नि नभ हास सुभूरी ॥ गुनन हिं अहहिं ब्रह्म महं भूरी ॥ कर्म कहैं कोउ काल बखानैं ॥ कर्त्ता कोउ ब्रह्म करि मानैं नहि लक्षन तें जान्यो जाई ॥ प्राज्ञान जीव कहै किमि भाई ॥ परमात्मा कोउ कहै सुजाना ॥ बासुदेव कहि कोउ बखाना ॥ देखि निगम जानै मनभाई ॥ अपने भ्रमत विश्व दरसाई ॥ जिमि चढ़ि नाव चलै जन जोई ॥ तट तरु चलत निरखै सोई ॥ घूमैजो तेहि घूमै धरनी ॥ तामहं लखत आपनी करनी ॥ करते लैजो दंड छमावै ॥ तासँग घूमत भूमि देखावै ॥ दोहा ॥ करिहै

अरु यह करत हौ मेरो तेरो भान ॥ सुखीदुखी अरि मित्र पुनि ज्ञान विना कल कान ॥ ५१ ॥ सत रज तम गुन माया केरे ।
विश्व व्याप्त अज्ञान बडेरे ॥ ऊरध सत्व सुराज समध्या ॥ अधो जाहि तम धरज मवध्या ॥ अंधकार गुन तें दर सातो ।
मान लियो दुख सुख कर नातो ॥ आवत जात नरक दिवि वासा ॥ दुख सुखके रोलरवत तमासा ॥ नभ महं घन छा-
वत पुनि काहे ॥ तिमि आतम गुन बीच दबाहे ॥ पक्ष भए खग खोतहि त्यागे ॥ सुखतें इत उत फिरिवे लागे ॥ तिमि
योगी सुख ज्ञानहि पाई ॥ सुखी चरै संसार बिहाई ॥ सुखद राह कहं जावै योगी ॥ जहां बिगत भय रहै अरोगी
दोहा ॥ सब घट महं ससि जिमि लखै सिरिव महं अमित शृंगार ॥ पर मात्मा तिमि एक जग घनो किए व्यवहार
५२ ॥ घट मठ महं जिमि नभ सब व्यापी ॥ तिमि तन पति सो मूरति थापी ॥ कृपण भक्त शातात्मा जोई ॥ ज्ञान
बिराग भक्ति थर होई ॥ तिन्ह कहं गुन कुदात नहिं कैसे ॥ जल महं कमलहि परसन जैसे ॥ ज्ञान पाइ बालक
सम होई ॥ महिमा मन्न कहै सब कोई ॥ मन्नहि मग्न ज्ञान नहिं अहई ॥ तैसे गुन बिज्ञानन रहई ॥ जिमि रवि उदै
दिखावै धामा ॥ ज्ञान उदय तिमि ब्रह्म ललामा ॥ जिमि इंद्री सब अपने करमन ॥ करत अहै नहिं दूजे धरमन ॥
तैसेइ ज्ञान पाइ नरहोई ॥ एक ब्रह्म रस जानै सोई ॥ दोहा ॥ कहत कोऊ बैकुंठ है कहत परम पद कोउ ॥ शंभुलक
है कोउ हरि कहै उत्तम वैष्णव जोइ ॥ ५३ ॥ केवल कहत महत कोउ गावै ॥ परम धाम कोउ अव्यय भावै ॥ अक्षर
परि काशा कोउ जानै ॥ कोउ गोलोक प्रकृति परमानै ॥ कोउ निकुंज बासी करि देखै ॥ भक्ति ज्ञान वैराग्य परेखै ॥

कृष्ण चंद्र पर केवल स्वामी ॥ करै ध्यान जो ज्ञानहि पामी ॥ भक्ति करै सो सब कुछ पावै ॥ साधन सब याके म-
धि आवै ॥ सुनि भागवत ज्ञान प्रद्युमन ॥ गहत भए अतिही आनंद मन ॥ न्हाइ ताम्र परनी कृत माला ॥ आये
राज पुरहि यदुपाला ॥ शाल्व भूप तित अति बल जिनको ॥ सखा द्विविद खल बानर तिनको ॥ दोहा ॥
कीश गयो प्रद्युम्न ढिग कंपत भो सह जोर ॥ दलहि दलन लाग्यौ प्रबल करत भयंकर सोर ॥ ५४ ॥ नखते ध्व-
जरथ छत्र पताका ॥ गजरथ हय मरदत रन बाँका ॥ मरदेउ यादव कोदल कैसे ॥ तीतिर गनमहं बिल्ली जैसे ॥
अमृत ध्वनि ॥ धद्धद्धद्ध वरिकै पप्प पूरत मग्ग ॥ कक्कक्क क्किलकारि करि सस्स स्सूर अडग्ग ॥ सस्स स्सूर अड-
ग्गग्ग हत तुरग्ग ग्गज्जत ॥ रूरू रूपटि वितुंड डुपटि बिगच्छ च्छज्जत ॥ चच्चच्चच्चिकर त्तत्त मना सस्स ज्जत ॥
नन्न न्नखर नखिन्न न्नर तन वव्व व्वज्जत ॥ १ ॥ कक्क क्कोटिन भांति सों तत्त त्तरकत तुच्छ ॥ घग्घग्घ ग्घहरात-
अति पप्प प्पूरे पुच्छ ॥ पप्प प्पूरे पुच्छ च्छटकि विगुच्छ च्छल्लत ॥ चच्च च्चरन प्रहारि अभित्त त्तलते दल्लत ॥
डड्डड्ड गरि अडग्ग ग्गिरि गहि मग्गग्गेरै ॥ सग्ग ग्गहत सुभट्ट ट्टरि परि हट्टट्टेरै ॥ २ ॥ तत्तत्तत्त त्तरुन गहि वव्व-
व्वोलै बोल ॥ डड्डड्डड्डोलै डगन नन्न न्नट्टै लोल ॥ नन्न न्नट्टै लोल ल्लपकि कलोल ल्लरैं ॥ धद्धद्धरणि बिधद्धद्ध
वरि कुरुद्धद्धरैं ॥ युद्ध द्धमकि विरुद्धद्ध रि चित्त दद्दद्दरैं ॥ रूरू रूट्ट मरक्क क्कट्ट रूपट्ट ट्टरैं ॥ ३ ॥ दोहा ॥ निज दल
भागत देखिकै आए कृष्ण कुमार ॥ कतुहि लावत कपि भयो करि गर्जना अपार ॥ ५५ ॥ कुंडलिया ॥ बानर

लखिकै कृष्ण सुत निज चापहि संधान ॥ मारत भए भुजंग सम लाग्यौ कीशहि बान ॥ लाग्यौ कीशहि बान गयो शत योजन ऊपर ॥ दोय पहर महँ डारि दियो लंकाके भूपर ॥ समर कीन्ह द्वै घरी निशाचर सोसु कोप भर। पुनि त्रिकूट परगयो कूदि अति दुर्मद बानर ॥ दोहा ॥ बहुरि गयो मैनाक पर सिंघल दीप निहारि ॥ भारत खंड हि आइकै हिम नगपै पगधारि ॥ ५६ ॥ प्राग्जोतिष पुरके मधि आई ॥ थिरत भयो बानर कर राई ॥ जीति शाल्व कहं लै बलि भारी ॥ गेमल्लार देश धनु धारी ॥ ताहि जीत बलि लै मन भाए ॥ दक्षिन मथुराके मधि आए सेत बंध रामेश्वर आई ॥ देख्यौ सिंधु वेग अधिकाई ॥ लीन्ह किनारे ऊपर बासा ॥ शांबादिक बुलाइ निज पासा मंत्रिन के मधि ऊधव बोली ॥ कहत कृष्ण सुत निज मन खोली ॥ नाम विभीषन कौन पराजा ॥ धनी धीर बर बीर दराजा ॥ बल करि बलि कहँ लेबो ताते ॥ होइहि किमि शोभा खोवाते ॥ दोहा ॥ तब ऊधव बोलत भए तुम देवन के देव ॥ पुरषोत्तम भगवान हरि कृष्ण चंद्र बर भेव ॥ ५७ ॥ तव माया जग अति बलवाना ॥ मोकहं पूछत मनुज समाना ॥ ब्रह्मादिक अनुसासन करहीं ॥ बंदत चरन सदा तुव डरहीं ॥ सोइ तुम पुरुष अहौ सुखरासा ॥ हम कह कहैं दास कर दासा ॥ सुनि प्रद्युम्न मसी मगवाई ॥ तत्र लिखो बर पत्र बनाई ॥ भोज राज कहँ तुम बलि देहू ॥ नातरु लिखत सपत सुनि लेहू ॥ सरको सेत बाँधि इत आई ॥ बलिलैहौ करि कठिन लराई ॥ लिखि इमि बाँधि बान भगवान ॥ धरि धनु माहिं श्रवन लगि ताना ॥ करि टंकारि तज्यौ सर सोई ॥ तीन लोक तब शब्दत

होई॥ दोहा॥ तरुन तरनि सम तेज धर शब्द करत सर जाई॥ लंकापति के सभा महँ गिर्यो अचानक आइ॥
५८॥ चकित तमीचर उठि उठि सारे॥ आयुध धरन लगे विकरारे॥ पढ़ेउ पत्र कहँ खोलि विभीषन॥ चहात
चतुर लग्यो दिशि दीषन॥ तेह छन तहँ उशना चलि आए॥ पूजि लंकपति बचन सुनाए॥ काकर वान भोज पति कीहै
काबलते बल माँगत सोहै॥ मोकहँ कहव आप अति ज्ञाता॥ मुनिके शुक्र वखान्यो वाता॥ इक इतिहास अहै अघभा-
री॥ सुनहु तौन निशिचर व्रत धारी॥ सनकादिक मुनि चारहु नंगे॥ गेवैकुंठ समेत उमंगे॥ तहँ जय विजय नगन शिशु
जानी॥ रोकेउ उमय पारषद मानी॥ तिन्ह तिन्ह पर अति कुपित ह्वै शाप तुरंतहि दीन्ह॥ असुर होहु अब जाइ तुम
तीन जन्म मति हीन॥ ५९॥ प्रथम भए दोउ शापहि पाई॥ कनक कशिपु कंचन दृगभाई॥ दितिके सुवन दैत्य सर-
दारा॥ तव हरि कोल रूप कहँ धारा॥ हिरण्याक्ष कहँ भरि रिस मारा॥ जल धारा पर धरनी धारा॥ कंचन कशिपु हि
भे कायाधव॥ दास हेत तेहि मारेउ माधव॥ पुनि दोउ भए विश्व वा धामा॥ रावन कुंभकरन यह नामा॥ तुमरे दे-
खत राघव मारा॥ अब दोउन लीनो अवतारा॥ क्षत्री दंत वक्र शिशु पाला॥ अहहिं अजौ दोउ वीर कराला॥ परि पू-
रन तम कृष्ण कहाई॥ यादव गन महँ जन्मे आई॥ दोहा॥ अहै विराजत द्वारका आप भोज कुल पाल॥ धर्म यज्ञ रन
शाल्व महँ करिहैं दोउ कर काल॥ ६०॥ दिग जै हित तिनके सुत आए॥ जंबु दीप जितिहैं मन भाए॥ उग्रसेन यादव
सिरत्राना॥ करिहैं राजसूय मति माना॥ हरि सुतने यह पत्र पठायो॥ तिन्हके धनुते सायक आयो॥ जाकर शब्द अब्द

लौं गयऊ॥ तेज सहित महि मंडल भरऊ॥ रामभक्त श्रीरामहि जानी॥ प्रमुदित भए निशाचर ज्ञानी॥ राक्षस पति
लै सैन अपारा॥ साजे भेट बिबिधि सरदारा॥ नभ मगते चलके बल ऐना॥ देखत भए यादवी सैना॥ हरि सुत श्याम
रूप धनु साथा॥ कोनप कह्यो जोरि दोउ हाथा॥ दोहा॥ नमो नमो भगवान प्रभु बासुदेव मति शुद्ध॥ संकर्षन प्र-
द्युम्न प्रभु नमो देव अनिरुद्ध॥ सफरी कूरम कोल जय नरहरि बामन नाम॥ राम राम अरु राम जय बुद्ध कल्कि
मति धाम॥ ६१॥ इमि कहि दसषद बिधि निरि नेसा॥ प्रद्युम्नहि पूज्यो तेहि देसा॥ कृष्ण कुमार हरषउर लीन्हा॥
प्रेमलक्षणा भक्तहि दीन्हा॥ मनि ससिकांत रतनकी माला॥ पद्मराग बिधि दत्त रसाला॥ पीतांबरइ नामकह
दीन्हा॥ लंका पतिहि बिदा पुनि कीन्हा॥ धरि उर मूरति सीस नवाई॥ गए बिभीषण आनंद छाई॥ ऋषभ शैल
देखत श्रीरंगा॥ कांची गए समेत उमंगा॥ काम कोषिण कावेरि नहाई॥ सह्य शैल आए यदुराई॥ लखेउ तहां
धावत नर रंगा॥ पुरु धूरिधर शिष्णु बहु संगा॥ ताली देहिं हसहिं तन पकरै॥ मुखपर पावहि सन्मुख अकरै॥
लखि हरिसुत ऊधवतें कहेउ॥ कोयह पुरु मत्त पथ गएउ॥ करहि अनादर विहसहि छोरे॥ सुनि ऊधव भाखेउ
कर जोरे॥ परम हंस यह हरि अवधूता॥ दत्त पूत मति अत्री पूता॥ दोहा॥ जा प्रसाद तें अमित नृप गहत भए
अहलाद॥ सहस चारु अरु यदु परन असुर राज पहलाद॥ ६२॥ मुनि तेहि बंदि आस नहिं थापी॥ बोले हाथ
जोरि परतापी॥ प्रभु नासहु मम संशय एतो॥ जग महं ब्रह्म भेद कह केतो॥ दत्ता त्रेय कह्यो समुझाई॥ जबलौं बस्तु

पशु मृग मनुज कीन्हो सबन अहार ॥ पान खाइ मंडित अतर नाच रंग चौबार ॥ ६४ ॥ होइ मुदित प्रद्युम्न सुहाए ॥ परसु पा
नि सो बचन सुनाए ॥ है प्रभु सकल सिद्धि तव पासा ॥ धन्य धन्य गुरु आनँद रासा ॥ राम कह्यौ हरिसुत तें बाता ॥ पूछत तुम
अजान से ताता ॥ लोक हेत महि जन्म तुम्हारा ॥ सुनि पुनि कृष्ण कुमार उचारा ॥ सब हरि भक्तन महको प्यारो ॥ हरि कर
तौन मोहि निरधारो ॥ राम कहा तब हृदय बिचारी ॥ लक्षन सुनहु दक्ष धनुधारी ॥ निष्किंचन हरि पद रत होई ॥ कथा
श्रवन कीर्त्तन कर जोई ॥ मग्न रहै हरि रूप लहर मै ॥ सो उत्तम अति हरिजन बर मै ॥ दोहा ॥ दांत महान सुजान मति जीव-
हि रक्षै जोइ ॥ शांत सुहृद सद कारुनी बरत तुच्छ गुन भौन ॥ ६५ ॥ मंगल ॥ पदरज सो सब भूमि करत जो पावन ॥ कृष्णचं
द्रकर भक्त सोई मन भावन ॥ जो विधि कर पद क्रतु पद नेकु न चाहत ॥ सारव भूमि भूप पद की मति ढाहत ॥ १ ॥ योग सि-
द्धि अरु मुक्तिहि दूरव हावत ॥ बासुदेव कर पदरज सीस चढावत ॥ अपने कीन्हे कर्म फलहि नहिं इच्छत ॥ आपु करत
हरि भक्त सबन कह सिच्छत ॥ २ ॥ हरि पदरज आशक्त सदा सुख साजत ॥ सुख दुःख तिनके तुल्य भक्ति भरि भ्राजत
ता कह जानहु भक्त धरे बर घृष्णहि ॥ एक भक्ति तजि और नहै प्रिय कृष्णहि ॥ ३ ॥ शिव ब्रह्मा अरु शेष रमा अपनो
पुर ॥ भक्ति सरिस नहिं है प्रिय केशव के उर ॥ सदा भक्त आधीन चलत तिनके अनु ॥ रुचि दायक जगदीश गहत
आनँद मनु ॥ ४ ॥ दोहा ॥ भक्त मुख्य यह जगत मैं जाके बस भगवान ॥ एहि हित मुक्तिहि देत हैं नहीं भक्ति को दान ॥
सोरठा ॥ परसराम के चैन सुनि भे बंदत चैन सह ॥ प्राची गे सह सैन गंगा सिंधु मिलाप जहं ॥ ६६ ॥ हरि सुत भूको भार

नृपतव कह्यो गोवर्द्धनमाहीं ॥ ७ ॥ कहिये कितने तीरथ आहीं ॥ मुख्य मुख्य मोहि कहिय बखानी ॥ मुनिबो गि.
ले गुनिके मुनि ज्ञानी ॥ तीरथ रूप शैल यह अहई ॥ वृंदावन सोपर मद्र रहई ॥

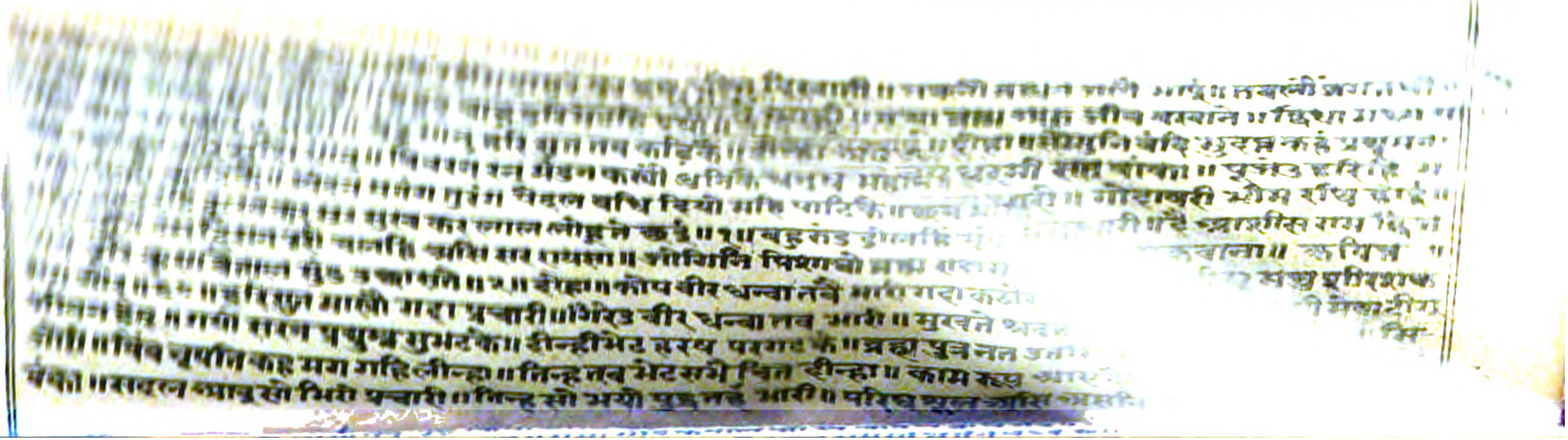

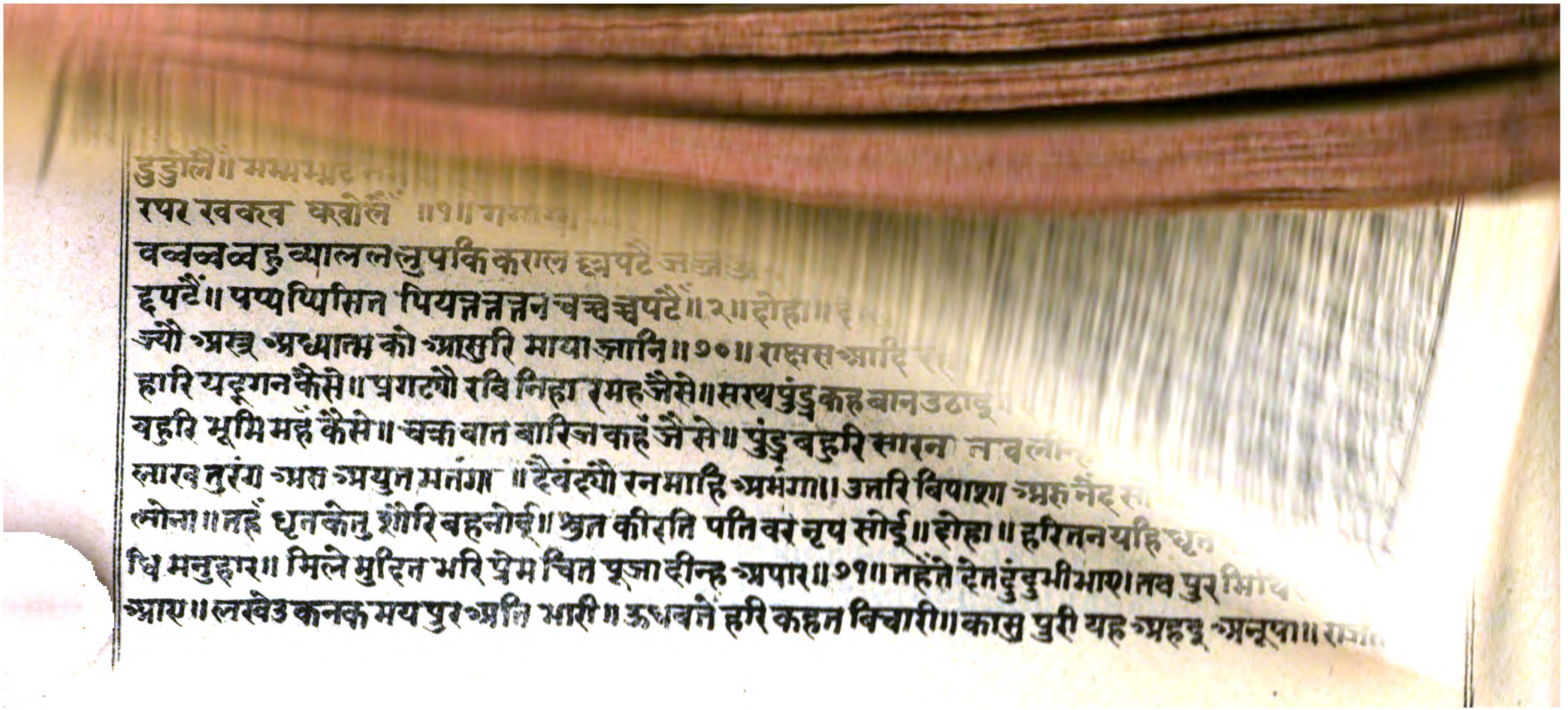

उतारत ॥ आए अंग धनुष टंकारत ॥ बन महँ गह्यौ अंग कोराजा ॥ लीन्ह भेट बजवावत बाजा ॥ बृहद बाहु डामर कर भूपा
सो न दीन्ह बलि कोप सरूपा ॥ तब उडीस डामर पुर ऊपर ॥ भेजो शांबहि जानि धनू धर ॥ तेहि सरसो पुर सब भरि दीन्हो ॥
जह कै तह जन हैं दुख लीन्हो ॥ बृहद बाहु डरि भेटहि दयो ॥ बंदि चरन निज धर चलि गयो ॥ लै अक्षोहिनि बंग नरेसा
भिरेउ वीर धनवा मट भेसा ॥ चंद्र भानु हरि सुत तब कढ़िकै ॥ दीन्हो अरि दल सरते मढ़िकै ॥ दोहा ॥ सदल बीर धन्वा नृ-
पहि छादित करि शशि भानु ॥ बिवरन रन मंडन कर्यौ धुनिकै धनुष महान ॥ ६७ ॥ छंद ॥ धुनिकै महान धुनहि सिरकर
चरन दीन्हो काटिकै ॥ स्यंदन मतंग तुरंग पैदल बधि दियो महि पाटिकै ॥ छन माहि तादल माहि भारी आपगा प्रगटत
भई ॥ कादरहि दुःखकर सूर सुख कर लाल लोहू ते छई ॥ १ ॥ बहु रुंड डोलहिं मुंड बोलहिं चुंच खोलहि वायसा ॥ धस
मारु द्युति दस दिसन पूरी चलहि असि सर रायसा ॥ जोगिनि पिशाचो ब्रह्म राक्षस भूत और सियारते ॥ चिकरहिं कपा
लन पूरि कुण बैताल मुंड उछासते ॥ २ ॥ दोहा ॥ कोप वीर धन्वा तबै मारी गदा कठोर ॥ ताके लगेन चलत भो चंद्र भानु
सम जोर ॥ ६८ ॥ हरिसुत मार्यौ गदा प्रचारी ॥ गिरेउ वीर धन्वा तब भारी ॥ मुखते श्रवत रुधिर गत चेतू ॥ बहुरि उठा लै-
जीवन हेतू ॥ गयो सरन प्रद्युम्न सुभटके ॥ दीन्ही भेट हरष परगटके ॥ ब्रह्म पुत्र नत उतरि बहोरी ॥ पुर आसी मग ए दल
जोरी ॥ विंब नृपति कह मग गहि लीन्हा ॥ तिन्ह तब भेट सभै चित दीन्हा ॥ काम रूप आए दै डंका ॥ राज कुमार पुंड्र तहँ
बंका ॥ सदल आइ सो भिरो प्रचारी ॥ तिन्ह सो भयो युद्ध तहँ भारी ॥ परिघ शूल असि असनि कुठारा ॥ चले दसौ दिसि

शस्त्र अपारा॥ पैशाची माया तबै पुंड्र कियो अति घोर॥ राक्षस गुह्यक गंधरव घोर करत हैं शोर॥ ६९॥ अमृत ध्वनि॥
सस्सस्सस्सोनित पिवै धद्धद्धद्धुनि मंड॥ गग्ग गोंद कपाल को खक्खेलैं कुषमंड॥ खरख्खेलै कुषमंड डुगरि अंड
डुडोलैं॥ भभ्भभ्भट नभ कस्सस्सकल रक स्सस्सोलैं॥ बब्ब व्विकट समस्त त्तत्तन बब्ब व्वोलैं॥ बब्ब व्वदन बिरुद्ध द्ध
रपर खक्ख क्खोलैं॥१॥ गग्गग्ग ग्गरजैं धवरि छच्छ छाई ज्वाल॥ घग्घ ग्घन घेरे घने बब्बब्ब व्वहु व्याल॥
बब्बब्बव्वहु व्याल ललुपकि कराल ल्लपटै जज्जज्जंग बिज रू रू रून जुझ रूपटैं॥ कक्क क्कुपित मरद्द द्दलन मरद्द
द्दपटैं॥ पप्प प्पिसित पियत्तत्तत्तन चच्चच्चपटैं॥२॥ दोहा॥ देखि बिकल अति यादवन कृष्ण दत्त धनु तानि॥ त-
ज्यौ अस्त्र अध्यात्म को आसुरि माया जानि॥७०॥ राक्षस आदि रहे खल जेते॥ ताते भए नासते तेते॥ रहे नि-
हारि यदूगन कैसे॥ प्रगट्यौ रवि निहार महं जैसे॥ सरथ पुंड्र कह बान उठाई॥ दोय घरी नभ माह घुमाई॥ पटक्यौ
बहुरि भूमि महं कैसे॥ चक्र बात बारिज कहं जैसे॥ पुंड्र बहुरि सारन तब लीन्हा॥ भेट कृष्ण नंदन कहं दीन्हा
लाख तुरंग अरु अयुत मतंगा॥ दैवंद्यौ रन माहि अभंगा॥ उतरि बिपाशा अरु नेंद सोना॥ आए के कय देस सो
लोना॥ तहं धृतकेतु शौरि बहनोई॥ श्रुत कीरति पति वर नृप सोई॥ दोहा॥ हरितन यहि धृतकेतु तब कीन्ह बिबि-
धि मनुहार॥ मिले मुदित भरि प्रेम चित पूजा दीन्ह अपार॥७१॥ तहंते देत दुंदुभी भाए। तब पुर मिथिला के मधि
आए॥ लखेउ कनक मय पुर अति भारी॥ ऊधवते हरि कहत बिचारी॥ कासु पुरी यह अहइ अनूपा॥ राजत भोग

ती सम रूपा ॥ सुनि ऊधव बोले गुन धामा ॥ जनक पुरी यह मिथिला नामा ॥ इत धृति रहत विदेह सुधरमी ॥ कृष्ण भगत भागवत सुकरमी ॥ सर्व धर्म मय वर व्यव हारा ॥ जासु अहै बहुलाश्व कुमारा ॥ जाकहं द्विज श्रुति देव समेता ॥ याद करत हरि कृपा निकेता ॥ सुरतें अजित मनुज तवकाहै ॥ कृष्ण भक्ति नित नित वाहै ॥ दोहा ॥ सुनि हरिसुत करते भए ब्रह्म चारिको रूप ॥ साथ शिष्य उधव लियो बिरचे वेष अनूप ॥ ७२ ॥ प्रमुदित चले परिक्षन काजा ॥ मिथिला नगर माहिं यदुराजा ॥ देख्यो सुंदर तहंकी शोभा ॥ जाकहं देखि इंद्र पुर लोभा ॥ वीर धरे सब शस्त्र रसाला ॥ भाषहि कृष्ण तिलक धर माला ॥ हरिके चित्र लिखे गृह द्वारा ॥ बहुरि नाम बहु बिबिधि प्रकारा ॥ दस अवतार सुरूप बनाए ॥ शंख चक्र अरु पद्म लिखाए ॥ गदा धनुषके चिन्ह अथोरे ॥ घर घर राजहिं तुलसी चौरे ॥ तहंके जन हरि जनमिर धारे ॥ ऊरध द्वादश तिलक सुधारे ॥ कुंकुम रचित पुंड्र सिर लागा ॥ बीच छापगोपीतन रागा ॥ दोहा ॥ गदा कमल की छापदै बहुरि देत हरि नाम ॥ शंख चक्र मकरी कमठ भुजके बीच ललाम ॥ धनुषपानि नंदक खडग उरमहं देहि सुजान ॥ हल मूशल अरु अंग महं शोभादेत महान ॥ ७३ ॥ सवैया ॥ चार कुमार वसिष्ठ पराशर गर्ग पुलस्त भली भरव बल्की ॥ संहित चारु पढ़ै वितनेजन भारत नाम उचारनकल्की ॥ वाल्मिकी रघुनायक को धरवेद श्रुती स्मृति पुन्य सुफल्की ॥ गावत गीत बजावत वाजन प्रेम बढ़ावतहैं मति भल्की ॥ नारद ब्रह्म भविष्य सुवामन विष्णु खगेश बराह सुमच्छा ॥ अग्नि ब्रह्मांड कुमार पिता मह कच्छप ब्रह्म वैवर्त

क अच्छा ॥ लिंग सुपद्म गनौ मरकंडेको भागवतौ सु अठारह स्वच्छा ॥ होहि पुरान गली विगली महं जो सुनिकै अघ
औगुन गच्छा ॥ २ ॥ दोहा ॥ विष्णु यज्ञ कोऊ करै धरै कृष्ण को ध्यान ॥ कृष्ण कृष्ण मुखतें कहैं राचेउ प्रेम महान ॥
७४ ॥ कोऊ करै कीरतन नाना ॥ कोऊ नाचै प्रेम महाना ॥ ताल मृदंग झाँझ अरु वीना ॥ मंदिर मंदिर बजहि प्रवीना ॥
नवधा भक्ति प्रेमतें पूरी ॥ गली गली महि लोटै रूरी ॥ इमि देखत हरिसुत पुर साजा ॥ सभा बीच अव रेख्यौ राजा ॥ या
ज्ञवल्क्य शुक गौतम व्यासा ॥ हम बशिष्ट सुर गुरु खग पासा ॥ बैठे सकल अकल धर भारी ॥ सकल बेदकी सकल
सुधारी ॥ तहँ तब जनक जनक धृति नामा ॥ बल पादुक पूजत बल धामा ॥ कृष्ण राम यह नाम विचारैं ॥ अति आनं-
द हृदय विस्तारैं ॥ दोहा ॥ चारु ब्रह्म चारिहि निरखि उठिकै मुदित नरेश ॥ कीन्ह दंडवत प्रेमतें पूजत भए विशेश ॥ ७५
अति सुंदर आस न बैठाई ॥ कहत बचन नृप सीस नवाई ॥ सफल जन्म मंदिर मम भएऊ ॥ तृप्त पितर सुर दुख सब गयऊ
साधु सुनि रहे तुक हरि भावन ॥ तुमरे क्षिति विचरहि क्षिति पावन ॥ ब्रह्म चार्य बोले सुनि बानी ॥ धन्य अहौ अवनी-
पति ज्ञानी ॥ धन्य पुरी अरु प्रजा तुम्हारी ॥ तव भाषेउ बिदेह व्रत धारी ॥ पुरी प्रजा सुत धन मम नाहीं ॥ ए सब कृष्ण चंद्र
के आही ॥ परिपूरन तम गोपुर बासी ॥ अमित अंड पति जग सुख रासी ॥ हरि बल प्रद्यूमन अनिरुद्धा ॥ चारि व्यूह भे
भूतल शुद्धा ॥ दोहा ॥ काय बचन मन बुद्धितें तन मन धन जन सर्ब ॥ कीन्ह समर्पन कृष्ण कहँ मम मति नहिं यह खर्ब
७६ ॥ ब्रह्म चारि पुनि कहत बिचारी ॥ हे नृप विष्णु भक्ति तोहि भारी ॥ देहैं मुक्ति कृष्ण भगवाना ॥ सुनि धृति मैथिल

बचन बखाना॥हमतौ कृष्ण दासके दासा॥चहतन मुक्ति भक्ति की आसा॥बहुरि विहसि बोले ब्रह्म चारी॥कहत अहै तुक भक्तिहि धारी॥तौ हरि सुत दिग जीतन भाए॥निकरे इत काहे नहिं आए॥सोतौ प्रेम बिबस जग गाए सुनिकै नृप पुनि बचन सुनाए॥विष्णु विश्व व्यापी सब ठौरे॥इत किमि नहि यह जानौरे॥बोले बहुरि कृष्ण सुत बानी॥तुम तब लखत निरंतर ज्ञानी॥दोहा॥जौं प्रगटैं नरसिंह से तौतौ सत्य महीप॥यह सुनिकै तुम्हरे पिता नृप मंडन कुल दीप॥२१॥जल भरि लोचन गद गद बोले॥जौ मोहि कछु हरि भक्ति अमोले॥तो प्रगटैं प्रद्युम्न कृपाकर॥जौं हम होंइ कृष्णके किंकर॥जौ हरि दास दास हम होंही॥तो प्रगटैं करुना कर योहीं॥नंदन नंदन तेहि काला॥प्रगटे करुना सिंधु दयाला॥ऊधव सहित रूप सो त्यागी॥दीन्ह दरश आनंद अनुरागी॥मेघ वरन वारिज से लोचन॥कर पल्लव भव ताप विमोचन॥पीतांबर फहरात मनोहर॥मुख छवि कोटि इंदु तें नोहर॥प्रगीत काल के बाल लाल रवि॥तैसी कंचन कुंडल की छवि॥दोहा॥कृष्ण सुवन कह देखि इमि जनक महा मति ऐन॥आठ अंगते नमित ह्वै बोले ऐसे बैन॥२२॥अहो धन्य अति भाग हमारे॥जो यह दरसन हम गन निहारे॥जिमि प्रगटे काया धव हेता॥दीन्ह दरस तिमि कृपा निकेता॥तब प्रद्युम्न कही रघुराई॥भूपति धन्य भक्ति अधिकाई॥अहो काहा कहिये तव बाता॥हम देषन हित आए ताता॥अबहि होंइ सारूप्य हमारा जग जस आयुष बढ़ै तुम्हारा॥इमि पूजित तब पितुते सोई॥आए निजसि बिरन दुख खोई॥मागध जीतन

हिन यदु सैना ॥ गए गिरी व्रज पुर जग जैना ॥ सुनिकै परम कोप विस्तारा ॥ कहत सभा महं जरा कुमारा ॥ दोहा ॥ तुच्छ सकल यादव अहैं कादर कादर चाह ॥ सो अब जग जीतन चहत मूरख खल सिरनाह ॥ ७९ ॥ मम भय मानि पुरहि संतापू ॥ गो समुद्र महं याकर बापू ॥ कीन्हो भस्म प्रबर्षन शैला ॥ छल करि गयो द्वारका गैला ॥ बधि तेहि सहु यादव समुदाई ॥ जिमि यह बंशहि जादु नशाई ॥ इमि कहि चलेउ परम रिस कीन्हे ॥ तेइस अक्षोहिनि संग लीन्हे ॥ गज समूह रद चार करारे ॥ सिंदुर चर्चित बदन सुधारे ॥ सुंड उठाइ नचावत भारे ॥ चलहिं उखारत विटप अपारे ॥ तिनमद लसहि मगध पति कैसे ॥ मध्य यूथ महं मेघवा जैसे ॥ रथ ध्वज हय चामर सह राजहिं ॥ चलत चक्र बहु बाजे बाजहिं ॥ दोहा ॥ बायु बेग से तुरग सब विविधि बरन उरहार ॥ चमर बिराजत चपल अति ऊपर सुभट सवार ॥ ८० ॥ अस्त्र नध्वनि डडुडुडुंका बजैं वव्व व्वारन रुंड ॥ भभ्भभ्भभटभीर चढ़ि फफ्फ फेकैं सुंड ॥ फफ्फफैं कैं सुंड डुगन वितुंड डुगरैं ॥ वव्व व्वीर निरवंग गहि चतुरं गगगरैं ॥ भभ्भभ्भेरि मृदंग गरजि रवावव्व गरैं ॥ ससस संगविरुद्ध कि अरु रुद्ध गरैं ॥ १ ॥ दद्दद्दद्देखिकै ससससत्रू सैन ॥ जज्जज्जज्जादवडरे जज्जज्जज्जगजैन ॥ जज्जज्जज्जगजैन सिरखि अनन्नग गाजे ॥ ससससखवज्जन्नन्निहु पुरडुर सजे ॥ कक्कोलर दद्द हरकत दिग्गजलज्जे ॥ जज्जरासुतन्न तेहि छन भभ्भय कज्जे ॥ २ ॥ दोहा ॥ दस अक्षो हिनि सैन ले शंख भिरत भोजाय ॥ तुमल युद्ध तेहि छन भयो दुहुदल सो नरराय ॥ ८१ ॥ केती वीर भल्ल कह धरिकै ॥ हय चढि मरदहि गर्जन अकरिकै ॥ शक्ति अरु सनि सर

वि. ८०१

शूल कृपाना ॥ मुगदर भिंडपाल अधिकाना ॥ मारहि चक्र बक्र रन भारे ॥ शत्रु सैन दिशि चलहि पचारे ॥ छरी
कुठार पटाक हैं झेलहिं ॥ मारि चपेटन्ह भूमि ढकेलहिं ॥ तोमर गदा परे महि माही ॥ तेहि गहि घने करहिं रन ता-
ही ॥ बहु कबंध धावहिं तेहि बारा ॥ मारु मारु धरु मारु पुकारा ॥ कंध बिगत कोउ बाहु विहीना ॥ समर समोरिन
के संग कीना ॥ बिद्या धर गंधरब निवरही ॥ मम पति कहत महत सुख भरहीं ॥ दोहा ॥ फिरहिन कोउ समरतें क्ष-
त्री अति रनधीर ॥ भेदि भानु पुर जातहैं ऊरध मरिकै बीर ॥ ८२ ॥ क्रोध भरे बहु वीरदपट्टहिं ॥ मारु मारु कहि
प्रबल झपट्टहिं ॥ कसि कटि केतिक जाइ लपट्टहिं ॥ केते कारत मस्तक भट्टहिं ॥ कटक माहिं केते कटकट्टहिं
मारहि मरहि लरहि नहिं हट्टहिं ॥ केते लरहिं गहे असि पट्टहिं ॥ बहु रनधीर परस्पर डट्टहिं ॥ धरु धरु मारु
मारु यह रट्टहिं ॥ बढ़े जाहि नहिं नेकु पलट्टहिं ॥ बहु श्रोनित के कीचर पट्टहिं ॥ केते गिरत उठत भट झट्टहिं ॥
केते कादर रनतें नट्टहिं ॥ केते अभिरैबिगत कपट्टहिं ॥ स्यार गीध मिलि श्रोनित चट्टहिं ॥ गीध आँतलै ल-
रन पगट्टहिं ॥ दोहा ॥ एहि बिधान रन घोर भो दुहू ओर भूपाल ॥ शंख दल्यो मागध दलहिं त्यागि बान बिकरा-
ल ॥ ८३ ॥ केते बीर लगे सरन कहिं ॥ केते मारन हेतु लपकहिं ॥ केते खड़े मारु धरु बकहिं ॥ केते समय लगी उर
जक्कहिं ॥ केते रनमद मत्त चलक्कहिं ॥ केते छरु बीरपन छक्कहिं ॥ केते शूल कृपान चमक्कहिं ॥ केतेके उर रुधिर ब
मक्कहिं ॥ केतेके उर समय धरक्कहिं ॥ केतेके बर केतु फरक्कहिं ॥ केते धीर समर सरक्कहिं ॥ केते नड़िता सरिस नरक्कहिं

केते भरि अति कोप करक्कहिं॥केते वधहिं अवल अह मक्कहिं॥केते धारे तीर तमक्कहिं॥केतेके तिर शूल झमक्कहिं॥दोहा॥एहि विधि नाती भालको समर भाल आसीन॥ मारि भाल भेदे भटन परम पराक्रमवीन॥८४॥सो लखि मगध भूप बल वाना॥बढ़िकै भिरो तजत बहु बाना॥दल बढ़ाइ बज्र बाजन भेरी॥बधे अमित रन धीरन टेरी॥शम्ब तरपि दस शायक मारो॥काटि धनुष डोरी महि डारे॥तब मागध पति गहि धनु दूजो॥दस सरतें प्रभु पुत्रहि पूजो॥तातें काटि धनुष महि डारो॥चार बानतें बाजि न मारो एक बानतें ध्वजा रथ साई॥सततें सुरथ दीन्ह महि नाई॥गरजेउ अमित बान पुनि मढ़िकै॥तब हरि सुत दूजे रथ चढ़िकै॥त्यागत तीर समूह अथोरा॥जरा संध कर स्यंदन तोरा॥दोहा॥तबै दृढ़रथ सुत बली चढ़ि मतंग रन धीर॥घन समान बरसन लग्यो कोटिन तीछन तीर॥८५॥इंद्र समान बितुंड चलाई॥हरि सुत कर रथ लीन्ह उठाई॥शम्ब समेत रथहि गज भारी॥नव योजन पहुं दीनेउ डारी॥हाहाकार भयो यदु दल में॥नव गद बीर गयो सो थल में॥परम धीर अरि जीति अचूका॥झपटि कुंजरहि मारेउ मूका॥कुंजर सिर सो कुलिस सम लागा॥उठिकै पुनि पहार दिशि भागा॥सो लखि हँसे दुहू दल बारे॥तब कर गदा जरासुत धारे॥मारेउ गदा गदहि रिस पागी॥तासु चोट हरि अनुजहि लागी॥दसभार को आयुध सोई॥मारेउ जरासुतहि गद जोई॥दोहा॥ताके लागे महि गिरयो उठि पुनि गदहि उठाइ॥सत योजन फेंक्यो भयो व्योम माहिं

वरियाइ ॥ ८६ ॥ गिरि कै सोऊ शत्रुहि लेको ॥ दस सत योजन ऊपर फेंको ॥ गिरि मागध पुनि भिर्यौ प्रचा
री ॥ गदतें गदत लेत मैं मारी ॥ तेहि छन शाम्ब तहाँ ते आई ॥ पटक्यौ मगधहि भूमि भँवाई ॥ सोलखि
प्रवल जरासुत योधा ॥ उठिकै कीन्ह काल सम क्रोधा ॥ मूका एक शाम्ब कहं मारा ॥ दूजो गद कहँ गर
जि प्रहारा ॥ तातें गिरे मुरछि महि दोऊ ॥ तेहि छन चेति कीन्ह नहिं कोऊ ॥ हाहा शब्द भयो तहँ भारी ॥
तब प्रद्युम्न चाप टंकारी ॥ बढ़ि अभिरे बजवावत भेरी ॥ साथ सुभग अक्षोहिनि घेरी ॥ दोहा ॥ गदा गदा
लै मगध पति प्रविसो अरि दल माहिं ॥ जैसे अग्नि सरूप धरि तिन कानन महँ जाहिं ॥ ८७ ॥ अमृत ध्वनि
भभ्भभ्भभ्भेदत भटन गग्ग ग्गदा प्रहार ॥ क क्क क्क क्क काल सम जज्जज्जरा कुमार ॥ जज्जज्जरा कुमार र्रन
मद हार र्रज्जै ॥ दद्दद्दलन वितुंड ड्डुगरि तुरंग ग्गज्जै ॥ सस्स स्सुरथ सर व्वव्वहत गरव्वव्वज्जै ॥ पप्प-
प्पच्छ गछ च्छ च्छ टकि सुअच्छ च्छज्जै ॥ १ ॥ दोहा ॥ इत मागध सैना झुकी उत मागध पति चंड ॥ यदु
अखंड सागर मथ्यौ बर उ दंड दोदंड ॥ ८८ ॥ सवैया ॥ इमि यादव को अहवाल लखी दुख भो निज धाम
तवै वलकों ॥ तुरतैं प्रगटे सोइ संगर मैं फैलाइ दियो अपने हलकों ॥ सव मागध सैनहि घींच लियो पु-
नि चंड प्रहारेउ मूशलकों ॥ सब योजन लौं सब बीर परे सब नाश कियो अरिके दलको ॥ १ ॥ दोहा ॥ यदु
देवन दुंदुभि दयो बरषे नभते फूल ॥ जैजै धुनि दस दिसि भए गो यादव को सूल ॥ ८९ ॥ प्रद्युम्नादिक योधा

भारे ॥ प्रमुदित सीस चरन परडारे ॥ दै आसीस हलायुध प्यारे ॥ तुरतहि द्वारावती पधारे ॥ तब सह देवतासु-
सुत आयो ॥ सुंदर भेट साजिकै लायो ॥ रथ द्वै लख दस कोटि तुरंगा ॥ दीन्हे साठ सहस्र मतंगा ॥ कीन्ह दं-
डवत बिबिध प्रकारा ॥ गए भवन मागध सरदारा ॥ हरि सुत फलगू गया नहाई ॥ जीतन चले देस समुदा-
ई ॥ हारि जरासुत की सुनि काना सभय भेट नृप देहिं महाना ॥ सरित गोमती सरजू न्हाए ॥ गंगा तट काशी
महं आए ॥ दोहा ॥ पार्ष्णि ग्राह काशी नृपति सुनिकै पदुवल कान ॥ सभय भेट देतो भयो परम वीर वल
वान ॥ ९० ॥ पुनि कोशल पुर गे हरषाई ॥ नंदी ग्राम बसे सचु पाई ॥ तहँ हरि सुसर नान जित भूपा ॥ नातिहि पूज्यो प्रेम स्व-
रूपा ॥ उत्तरेश दीरघ तम नामा ॥ गज नय पाल नाथ बल धामा ॥ बरहिन नृप बिशाल को मारी ॥ भेट दीन्ह अति प्रबल
बिचारी ॥ नैमिष पति हरि भक्त सुजाना ॥ प्रेम सहित पूज्यो विधि नाना ॥ गे प्रयाग पुनि न्हाय त्रिबेनी ॥ दीन्हो दान जानि
सुख श्रेनी ॥ गज द्वै अयुत लाख दस घोरे ॥ गऊ पद्म श्रुति लख रथ जोरे ॥ कनक भार दस रतन द्विलाखा ॥ एक ला-
ख पुनि मोती राखा ॥ दोहा ॥ बसन दीन्ह दस लाख नृप अरु द्वै लाख दुसाल ॥ पूजो विप्रन प्रेम भरि नंद लालके ला-
ल ॥ ९१ ॥ कंतित पति पौंड्रक विख्याता ॥ कृष्ण शत्रु सोउ भयो डिराता ॥ सोउ वलि देत भयो भरि शंका ॥ तवगे कान
कुब्ज दै डंका ॥ तहँ ते लै वलि गए समाजा ॥ कपिल सुदेस द्रुपद जहँ राजा ॥ सोऊ भेट दीन्ह हरषाई ॥ तव हरिगे पुर
बिंद बजाई ॥ सगरे प्रजा डरे भय रूपा ॥ दीरघ बाहु तहां कर भूपा ॥ संधि करन सो द्रुत वलि आयो ॥ मित्र होइ बर

...ध पुनि भिरयौ प्रचा ... मोलरिव ... गर

वचन सुनायो ॥ तुम सब प्रबल अहहु हम जाना ॥ करहु मनोरथ मोर महाना ॥ काँच पत्र महँ जल भरि टाँगी ॥ मा वि॰ रहु बान बीर विधि पागी ॥ दोहा ॥ पात्रहि लै नहिं नहिं फुटै जल न गिरै नहिं जाइ ॥ बान काँच घट बास में सुक्षम अर्ध समाइ ॥ ९२ ॥ तेहि देहौं कन्या मैं भाई ॥ नारद यह मोहि कहा बुझाई ॥ सो सुनिकै नरेश की वानी ॥ चकित भए यादव भट मानी ॥ तब प्रद्युम्न वाँस मग वाए ॥ हिंडोला से उभय गड़ाए ॥ ऊपर बाँधि रखी छबि छाए ॥ मध्य सजल सी सी लटकाए ॥ देखिताहि पुनि मारेउ बाना ॥ ऊपर तें अध होइ समाना ॥ आधो मधि बाहर पुनि आधो ॥ सोख्यौ बारि मंत्र भल साधो ॥ ॥ भाजन लेत न फूटा सोई ॥ गिरान जल यह अद्भुत होई ॥ दूजो सर पुनि हरि सुत मारा ॥ तैसेइ भयो सुभट ननिहारा ॥ दोहा ॥ ॥ दूजी सीसी टाँगि कै शांब बलायो बाना ॥ आधो कटि राजत भयो घन रवि किरनि समान ॥ ९३ ॥ तब युयुधान वान इक मारा ॥ फूटो काँच बही जल धारा ॥ हँसे सकल यह वचन बखाना ॥ तमहो दससत बाहुँ समाना ॥ अर्जुन भरत राम शिव करना ॥ द्रोन भीष्म भार्गव धुन भरना ॥ दूजी सीसी धरि अनि रुद्धा ॥ नीचे जाइ तज्यौ सुर सुद्धा ॥ सो नीचे तें ऊरध गएऊ ॥ पुनि उर पुर सोहत नभ भएऊ ॥ गिरान फूटा हिला न डोला ॥ साधु बोल सबहन मिलि बोला ॥ दीप्ति मान निज बान प्रहारा ॥ भेद काँच कढ़ि कै सर सारा ॥ शिला भेदि एक बहुरि समाना ॥ जल न गिरा न फुटा थहराना ॥ दोहा ॥ भानु तबै दृग मूंदि कै तज्यौ आपने बान ॥ सीसी॰

उलटी सी कियो सीधी बहुरि सुजान ॥ ९४ ॥ बहुरि बीचि सो बान समाना ॥ जलन गिरा काँच थहराना ॥ अ-
द्भुत करम भानुकर जाना ॥ साधुसाधु यह सबन बखाना ॥ इमि हरि सुबन अठारह बारे ॥ भेदेउ काँच बीरबि-
धि धारे ॥ चकित बिंदु नृप बिंदु न गिरेउ ॥ अतिहि अनंद ब्याह हित थिरेउ ॥ सबहिन करकरि दीन्ह बिबाहू ॥
मंगल कीन्हो दीरघ बाहू ॥ बरी लगे बजावन गावन ॥ सुमनस लगे सुमन बरषावन ॥ गत घट अयुत सु-
रथ दस लाखा ॥ चार लाख शिबिका कहँ राखा ॥ अर्बुद हय दासी लख दीन्हा ॥ तेहि हरि बिदा द्वारका
कीन्हा ॥ दोहा ॥ बिदा होइ ससुरारतें गे निषाद पुर मीन ॥ तहाँ सैन जित नाम नृप भेट मुदित चित दी-
न ॥ ९५ ॥ हृहद सेन भद्राकर राजा ॥ पूज्यो परम प्रेम चित साजा ॥ मथुरा गए यदू जित अंशी ॥ निब सत
सूरसेन मधुबंशी ॥ मिलि तिनतें निज पुरी निहारी ॥ कीन्ह प्रदक्षिन सुख धरि भारी ॥ गोपनंद यशुमति
हरष भानू ॥ गोकुल सबन मिले भगवानू ॥ सबन काहिं पूजेउ गुरु जानी ॥ पूजेउ तिन्हहि नंद नृप रा-
नी ॥ कछु दिन कीन्ह कृष्ण सुत बासा ॥ चले बिदा ह्वै सहित हुलासा ॥ भेंटलेत मगके महिपनतें ॥ जी-
तत चले सकल महिपनते ॥ कौरव जीतन हित मुद छाए ॥ सदल हस्तिना पुर चलि आए ॥ दोहा ॥ जहँ
कौरव सेना परी असी कोस के माहिं ॥ नाम धि चालिस कोस सो खास सैन निब साहि ॥ ९६ ॥ बीस कोस
महि नगर बनाये ॥ जहँ बहु बनिक धनी दरसाये ॥ हरजी अोर जरे जकुम्हारा ॥ बसन बना बन हार सुधारा

हलवाई रोतिनी ग्रोधुनियाँ ॥ खटिक हजामो पटुवा बनियाँ ॥ बारी माली ग्रोर लोहारे ॥ धोबी तेली क... रवे धनेरे ॥ तंबोली सोनार कसेरे ॥ भड भूँजे ग्ररु धने चितेरे ॥ नानि बेधी हः काक कुहारा ॥ वहु सरागा... वज्राज निहारा ॥ इन सब रीति बने वैपारी ॥ चहल पहल सब महल निहारी ॥ भानु मती बिरचहि वहु भांती ... नट नाचहि कहुँ नाचहिं भालू ॥ दोहा ॥ कहु नृत्यहि वानर ग्रक्ष डमरू करन बजाइ ॥ बंदी मागध सूत के गावहिं कहुँ समुदाय ॥ ८७ ॥ कहु करिकै द्वादश सिंगारा ॥ बार बधू कर नाच ग्रपारा ॥ कोउ कोउ कहे ग्रहै कछु होई ॥ पुर महँ परम कोलाहल होई ॥ हे नृप सिंधु सहित नृप जेते ॥ कौरव के ग्रनु चर... तेते ॥ चक्रवर्ति राजन के राई ॥ इनकर बल कछु कहो न जाई ॥ तिन के दीन्हे यदु समुदाई ॥ भूप भए रिजासु सहाई ॥ ता पुरमे हरिसुत की सेना ॥ प्रविशी छवि देखत छवि ऐना ॥ भएउ कोलाहल तहँ तब भारी ॥ डरे सकल पुरके नर नारी ॥ तेहि छन ऊधव कहँ समुझाई ॥ भूप सभा भेज्यो नरराई ॥ दोहा ॥ ऊधव तेहि छन जाइकै बुधि बिवेक ग्रधिकाइ ॥ धृतराष्ट्रहि देखत भए सह मंत्री समुदाइ ॥ ८८ ॥ सभा माहि महिपाल निहारा ॥ सूर सूर दित सूर ग्रपारा ॥ जहँ मद स्रवत चपल गज ठाढे ॥ कस्तूरी मंडित मुख गाढे ॥ लोल करन सिंदूर रंगारे ॥ दस दिसि वर लाखन सर सारे ॥ तिन महँ श्री धृतराष्ट्र महीपा मंत्री मंडित कुल गुरुदीपा ॥ भीषम करन द्रोन कृप राजहि ॥ शल्य धौम्य वाल्हीक विराजहि ॥ भूरिश्रवा

संजय छवि साजहिं ॥ विदुर दुशासन सकुनी गाजहिं ॥ लक्ष्मन अश्व त्थामा छाजहिं ॥ सोमदत्त भरव कोनु सुभाजहिं ॥ दुर्योधन सानुजन समाजहिं ॥ लखि जो सभा पुरंदर लाजहिं ॥ दोहा ॥ धरम धीर धृतराष्ट्र अति वर धृतराष्ट्र महीप ॥ देख्यो सकल समाज सह मति दराज कुलदीप ॥ ९९ ॥ कवित्त ॥ काल जिन जीत्यो सो विदित दसभाल जग तासु बाहु सहस उतारि लीन्हो मद है ॥ परसा धरन हारो ताहूको विदारि डारो हारो सोउ जाने कैसो सूरमा की हद है ॥ ताहीतें रिपून पैन भीषम समान कोऊ भीषम दिनेश जैसे ग्रीषम विशद है ॥ गंगा कुमार दास गिरधर उदार केरो बार पन ब्रह्म चारी धनु धारी जद है ॥ ऐसे ऐसे वीर वर जासु सभाके माहं ॥ तासु बड़ाई को करै सत्य सुनहुं नर नाहं ॥ १०० ॥ कवित्त ॥ तैसेई महान वीर द्रोन द्रोही दंड दाता जाके चेला विदित जहान कपिकेतु हैं ॥ कर्नके समान ह्वै है कौन रन कर्न वारो दुर्योधन तैसोई प्रचंड अरिहेतु हैं ॥ अश्व त्थामा विदित कृपात जग जाने धीर सकल सुभट भवसागर के सेतु हैं ॥ एक एक चाहैं डाहैं मंदिर सुरेराइ को चक्रवर्ती कौरव महान शोभा देतहैं ॥ दोहा ॥ इमि नरेरिव कुरु नाथ कहं करहिं जोरि तेहि काल ॥ ऊधवजू भारवत भए बानी परम रसाल ॥ १०१ ॥ श्री प्रद्युम्न कही यह गाथा ॥ उग्रसेन नामक यदुनाथा ॥ जंबु दीपके राजन जीती ॥ राजसूय करिहै भरि प्रीती ॥ जीते घने इने नर शक्रा ॥ मागध चैद्य शाल्व रद बक्रा ॥ इन आदिकन जीति इत आए ॥ दीजे बलि उर हर्ष बढाई ॥ यदु कुरु कीन्ह कलह जिमि होई ॥ आप चतुर गुन कीजे सोई ॥ छमहु मोर भाषा

हलवाई रतिनी औधुनियाँ ॥ खटिक हजामो पटुवा बनियाँ ॥ बारी माली और लहेरे ॥ धोबी तेली ल-
खे घनेरे ॥ तंबोली सोनार कसेरे ॥ भड भूँजे अरु घने चितेरे ॥ ननि बेधीहः काक खुहारा ॥ बहु सराफ
बज्जाज निहारा ॥ इन सब रीति बने बैपारी ॥ चहल पहल सब महल निहारी ॥ भानु मती बिरचहि बहु जालू
नट नाचहि कहुँ नाचहिं भालू ॥ दोहा ॥ कहुँ नृत्यहि बानर अजा डमरू करन बजाइ ॥ बंदी मागध सूत
के गावहिं कहुँ समुदाय ॥ ९७ ॥ कहुँ करिकै द्वादश सिंगारा ॥ बार बधू कर नाच अपारा ॥ कोउ कछु
कहै अहै कछु होई ॥ पुर महँ परम कोलाहल होई ॥ हे नृप सिंधु सहित नृप जेते ॥ कौरवके अनुबर्ती
तेते ॥ चक्रवर्ति राजन के राई ॥ इनकर बल कछु कूहो न जाई ॥ तिन के दीन्हे यदु समुदाई ॥ भूप भए ह-
रि जासु सहाई ॥ ता पुरमै हरिसुत की सैना ॥ प्रबिशी छबि देखत छबि ऐना ॥ भएउ कोलाहल तहँ तब
भारी ॥ डरे सकल पुरके नर नारी ॥ तेहि छन ऊधव कहँ समुझाई ॥ भूप सभा भेज्यौ नरराई ॥ दोहा ॥
ऊधव तेहि छन जाइकै बुधि बिबेक अधिकाइ ॥ धृतराष्ट्रहि देखत भए सह मंत्री समुदाइ ॥ ९८ ॥ सभा
माहि महिपाल निहारा ॥ सूर सूर दित सूर अपारा ॥ जहँ मद श्रवत चपल गज ठाढ़े ॥ कस्तूरी मंडित
मुख गाढ़े ॥ लोल करन सिंदूर रंगाए ॥ दस दिसि वर लाखन सर साए ॥ तिन महँ श्री धृतराष्ट्र महीपा
मंत्री मंडित कुल गुरु दीपा ॥ भीषम करन द्रोन कृप राजहि ॥ शल्य धौम्य वाल्हीक बिराजहि ॥ भूरिश्रवा

संजय छवि साजहिं ॥ विदुर दुशाशन सकुनी गाजहिं ॥ लक्ष्मन अश्व त्थामा छाजहिं ॥ सोमदत्त मख केतु सुभ्राजहिं ॥ दुर्योधन सानुजन समाजहिं ॥ लखि जो सभा पुरंदर लाजहिं ॥ दोहा ॥ धरम धीर धृतराष्ट्र अति वर धृतराष्ट्र महीप ॥ देख्यो सकल समाज सह मति दराज कुलदीप ॥ ९९ ॥ कवित्त ॥ काल जिन जीत्यो सो विदित दसभाल जग तासु वांहु सहस उतारि लीन्हो मदहै ॥ परसा धरन हारो ताहूको विदारि डारो हारो सोऊ जाते कैसो सूरमा की हदहै ॥ ताहीतें रिपून पैन भीषम समान कोऊ भीषम दिनेश जैसे ग्रीषम विशदहै ॥ गंगा कुमार दास गिरधर उदार केरो वार पन ब्रह्म चारी धनु धारी जदहै ॥ ऐसे ऐसे वीर वर जासु सभाके माहं ॥ तासु बडाई को करै सत्य सुनहुं नर नाहं ॥ १०० ॥ कवित्त ॥ तैसेई महान वीर द्रोन द्रोही दंड दाता जाके चेला विदित जहांन कपिकेतु हैं ॥ कर्नके समान ह्वै है कौन रन कर्न वारो दुर्योधन तैसोई प्रचंड अरिहेतु हैं ॥ अश्व त्थामा विदित कृपात जग जाने धीर सकल सुभट भवसागर के सेतु हैं ॥ एक एक चाहैं ढाहैं मंदिर सुरेशहू को चक्रवर्ती कौरव महान शोभा देतहैं ॥ दोहा ॥ इमि नरेखि कुरु नाथ कहं करहिं जोरि तेहि काल ॥ ऊधवजू भाखत भए बानी परम रसाल ॥ १०१ ॥ श्री प्रद्युम्न कह्यौ यह गाथा ॥ उग्रसेन नामक यदुनाथा ॥ जंबु दीपके राजन जीती ॥ राजसूय करिहै भरि प्रीती ॥ जीते घने इनै नर शक्रा ॥ मागध चैद्य शाल्व रद बक्रा ॥ इन आदिकन जीति इत आए ॥ दीजै बलि उर हर ष बढाई ॥ यदु कुरु कीन्ह कलह जिमि होई ॥ आप चतुर गुन कीजै सोई ॥ छमहु मोर भाषा

शूल कृपाना ॥ मुगदर भिंड पाल अधिकाना ॥ मारहि चक्र बक्र रन भारे ॥ शत्रु सैन दिशि चलहि प्रचारे ॥ छरी कुठार पटाकहँ झेलहिं ॥ मारि चपेटन्ह भूमि ढकेलहिं ॥ तोमर गदा परे महि माहीं ॥ तेहि गहि घने करहिं रनताहीं ॥ बहु कबंध धावहिं तेहि बारा ॥ मारु मारु धरु मारु पुकारा ॥ कंध बिगत कोउ बाहु विहीना ॥ समर समौरिन के सँग कीना ॥ बिद्या धर गंधरब निवरहीं ॥ मम पति कहत महत सुख भरहीं ॥ दोहा ॥ फिरहिन केते समरतें क्षत्री अति रनधीर ॥ भेदि भानु पुर जातहैं ऊरध मरिकै बीर ॥ ८२ ॥ क्रोध भरे बहु वीर दपट्टहिं ॥ मारु मारु कहि प्रबल झपट्टहिं ॥ कसि कटि केतिक जाइ लपट्टहिं ॥ केते काटत मस्तक भट्टहिं ॥ कटक माहिं केते कटकट्टहिं मारहि मरहि लरहि नहिं हट्टहिं ॥ केते लरहिं गहे असि पट्टहिं ॥ बहु रनधीर परस्पर टुट्टहिं ॥ धरु धरु मारु मारु यह रट्टहिं ॥ बढ़े जाहि नहिं नेकु पलट्टहिं ॥ बहु श्रोनित के कीच रपट्टहिं ॥ केते गिरत उठत भट झट्टहिं ॥ केते कादर रनतें नट्टहिं ॥ केते अभिरै बिगत कपट्टहिं ॥ स्यार गीध मिलि श्रोनित चट्टहिं ॥ गीध आँतलै लरत प्रगट्टहिं ॥ दोहा ॥ एहि विधान रन घोर भो दुहूँ ओर भूपाल ॥ शांव दल्यौ मागध दलहिं त्यागि बान बिकराल ॥ ८२ ॥ केते बीर लगे सर तक्कहिं ॥ केते मारन हेत लपक्कहिं ॥ केते खड़े मारु धरु बक्कहिं ॥ केते सभय लगी उर जक्कहिं ॥ केते रनमद मत्त बलक्कहिं ॥ केते छए बीर पन छक्कहिं ॥ केते शूल कृपान चमक्कहिं ॥ केते के उर रुधिर बमक्कहिं ॥ केते के उर सभय धरक्कहिं ॥ केते के बर केतु फरक्कहिं ॥ केते धीरे समर सरक्कहिं ॥ केते तड़िता सरिस तरक्कहिं

केते भरि अति कोप करक्कहिं ॥ केते वधहिं अवल अह मक्कहिं ॥ केते धारे तीर तमक्कहिं ॥ केतेके तिरशूल झमक्कहिं ॥ दोहा ॥ एहि विधि नाती भालुको समर भाल आसीन ॥ मारि भाल भेदे भटन परम पराक्रमवीन ॥ ८४ ॥ सो लखि मगध भूप बलवाना ॥ बढ़िकै भिरो तजत बहु बाना ॥ दल बढ़ाइ वज्र वांवत भेरी ॥ बधे अमित रनधीरन टेरी ॥ शाम्ब तरपि दस शायक मारो ॥ काटि धनुष डोरी महि डारे ॥ तब मागधपति गहि धनु दूजो ॥ दस सरतें प्रभु पुत्रहि पूजो ॥ तातें काटि धनुष महि डारो ॥ चार बानतें बाजि न मारो एक बानतें ध्वजा खसाई ॥ सतते सुरथ दीन्ह महि नाई ॥ गरजेउ अमित बान पुनि मढ़िकै ॥ तब हरिसुत दूजे रथ चढ़िकै ॥ त्यागत तीर समूह अथोरा ॥ जरा संध कर स्यंदन तोरा ॥ दोहा ॥ तबै वृहद्रथ सुत बली चढ़ि मतंग रनधीर ॥ घन समान वरसन लग्यौ कोटिन तीछन तीर ॥ ८५ ॥ इंद्र समान बितुंड चलाई ॥ हरिसुत कर रथ लीन्ह उठाई ॥ शाम्ब समेत रथहि गज भारी ॥ नव योजन पहं दीनेउ डारी ॥ हाहाकार भयो यदु दल में ॥ तब गद बीर गयो सो थल में ॥ परम धीर अरि जीति अचूका ॥ झपटि कुंजरहि मारेहु मूका ॥ कुंजर गिर्यौ कुलिस सम लागा ॥ उठिकै पुनि पहार दिशि भागा ॥ सो लखि हँसे दुहू दल बारे ॥ तब कर गदा जरासुत धारे ॥ मारेहु गदा गदहि रिस पागी ॥ तासु चोट हरि अनुजहि लागी ॥ दक्षभार को आयुध सोई ॥ मारेउ जरासुतहि गद जोई ॥ दोहा ॥ ताके लागे महि गिर्यौ उठि पुनि गदहि उठाइ ॥ सत योजन फेंकत भयो व्योम माहिं

वरियाइ ॥ ८६ ॥ गिरि कै सोऊ शत्रुहि लेको ॥ दस सत योजन ऊपर फेंको ॥ गिरि मागध पुनि भिर्यौ प्रचा
री ॥ गदतें गदत लेत मैं मारी ॥ तेहि छन शाम्ब तहाँ ते आई ॥ पटक्यौ मगधहि भूमि भँवाई ॥ सोलखि
प्रवल जरासुत योधा ॥ उठिकै कीन्ह काल सम क्रोधा ॥ मूका एक शाम्ब कहं मारा ॥ दूजो गद कहँ गर
जि प्रहारा ॥ तातें गिरे मुरछि महि दोऊ ॥ तेहि छन चेति कीन्ह नहिं कोऊ ॥ हाहा शब्द भयो तहँ भारी ॥
तब प्रद्युम्न चाप टंकारी ॥ बढ़ि अभिरे बजवावत भेरी ॥ साथ सुभग अक्षोहिनि घेरी ॥ दोहा ॥ गदा गदा
लै मगध पति प्रविसो अरि दल माहिं ॥ जैसे अग्नि सरूप धरि तिन कानन महँ जाहिं ॥ ८७ ॥ अमृत ध्वनि
भभ्भभ्भभ्भेदत भटन गग्ग ग्गदा प्रहार ॥ क क्क क्क क्काल सम जज्जज्जरा कुमार ॥ जज्जज्जरा कुमार र्रन
मद हार र्रज्जै ॥ दद्दद्दलन वितुंड ड्डुगरि तुरंग ग्गज्जै ॥ सस्स स्सुरथ सर व्व व्व हत गर व्व व्वज्जै ॥ पप्प-
प्पच्छ गछ च्छ च्छ टकि सुअच्छ च्छज्जै ॥ १ ॥ दोहा ॥ इत मागध सैना झुकी उत मागध पति चंड ॥ यदु
अखंड सागर मथ्यौ बर उ दंड दोदंड ॥ ८८ ॥ सवैया ॥ इमि यादव को अहवाल लखी दुख भो निज धाम
तवै वलकों ॥ तुरतैं प्रगटे सोइ संगर मैं फैलाइ दियो अपने हलकों ॥ सव मागध सैनहि घींच लियो पु-
नि चंड प्रहारेउ मूशलकों ॥ सब योजन लौं सब बीर परे सब नाश कियो अरिके दलको ॥ १ ॥ दोहा ॥ यदु
देवन दुंदुभि दयो बरषे नभते फूल ॥ जैजै धुनि दस दिसि भए गो यादव को सूल ॥ ८९ ॥ प्रद्युम्नादिक योधा

भारे ॥ प्रमुदित सीस चरन परडारे ॥ दै आसीस हलायुध प्यारे ॥ तुरतहि द्वारावती पधारे ॥ तब सह देवतासु सुत आयो ॥ सुंदर भेट साजिकै लायो ॥ रथ द्वै लख दस कोटि तुरंगा ॥ दीन्हे साठ सहस्र मतंगा ॥ कीन्ह दंडवत बिबिध प्रकारा ॥ गए भवन मागध सरदारा ॥ हरि सुत फलगू गया नहाई ॥ जीतन चले देस समुदाई ॥ हारि जरासुत की सुनि काना सभय भेट नृप देहिं महाना ॥ सरित गोमती सरजू न्हाए ॥ गंगा तट काशी महं आए ॥ दोहा ॥ पार्ष्णि ग्राह काशी नृपति सुनिकै पदुवल कान ॥ सभय भेट देतो भयो परम वीर वलवान ॥ ९० ॥ पुनि कोशल पुर गे हरषाई ॥ नंदी ग्राम बसे सचु पाई ॥ तहँ हरि सुसर नान जित भूपा ॥ नातिहि पूज्यो प्रेम स्वरूपा ॥ उत्तरेश दीरघ तम नामा ॥ गज नय पाल नाथ बल धामा ॥ बरहिन नृप बिशाल को मारी ॥ भेट दीन्ह अति प्रबल बिचारी ॥ नैमिष पति हरि भक्त सुजाना ॥ प्रेम सहित पूज्यो विधि नाना ॥ गे प्रयाग पुनि न्हाय त्रिबेनी ॥ दीन्हो दान जानि सुख श्रेनी ॥ गज द्वै अयुत लाख दस घोरे ॥ गऊ पद्म श्रुति लख रथ जोरे ॥ कनक भार दस रतन द्विलाखा ॥ एक लाख पुनि मोती राखा ॥ दोहा ॥ बसन दीन्ह दस लाख नृप अरु द्वै लाख दुसाल ॥ पूजो विप्रन प्रेम भरि नंद लालके लाल ॥ ९१ ॥ कंतित पति पौंड्रक विख्याता ॥ कृष्ण शत्रु सोउ भयो डिराता ॥ सोउ वलि देत भयो भरि शंका ॥ तवगे कान कुब्ज दै डंका ॥ तहँ ते लै वलि गए समाजा ॥ कपिल सुदेस द्रुपद जहँ राजा ॥ सोऊ भेट दीन्ह हरषाई ॥ तव हरि गे पुर बिंद बजाई ॥ सगरे प्रजा डरे भय रूपा ॥ दीरघ बाहु तहां कर भूपा ॥ संधि करन सो द्रुत वलि आयो ॥ मित्र होइ बर

वचन सुनायो ॥ तुम सब प्रबल अहहु हम जाना ॥ करहु मनोरथ मोर महाना ॥ काँच पत्र महँ जल भरि टाँगी ॥ मा
रहु बान बीर विधि पागी ॥ दोहा ॥ पात्रहि लै नहिं नहिं फुटै जल न गिरै नहिं जाइ ॥ बान काँच घट वास मैं
सुक्षम अर्ध समाइ ॥ ६२ ॥ तेहि देहौं कन्या मैं भाई ॥ नारद यह मोहि कहा बुझाई ॥ सो सुनिकै नरेश की
वानी ॥ चकित भए यादव भट मानी ॥ तब प्रद्युम्न वाँस मग वाए ॥ हिंडोला से उभय गडाए ॥ ऊपर बाँ-
धि रखी छबि छाए ॥ मध्य सजल सीसी लटकाए ॥ देखिताहि पुनि मारेउ बाना ॥ ऊपर तें अध होइ समा-
ना ॥ आधो मधि बाहर पुनि आधो ॥ सोख्यौ बारि मंत्र भल साधो ॥ ॥ भाजन लेत न फूटा सोई ॥ गिरा न
जल यह अद्भुत होई ॥ दूजो सर पुनि हरि सुत मारा ॥ तैसेइ भयो सुभट ननिहारा ॥ दोहा ॥ ॥ दूजी सीसी
टाँगि कै शांब बलायो बाना ॥ आधो कटि राजत भयो घन रवि किरनि समान ॥ ६३ ॥ तब युयुधान
वान इक मारा ॥ फूटो काँच बही जल धारा ॥ हँसे सकल यह वचन बखाना ॥ तमहो दससत बाहुँ समाना
अर्जुन भरत राम शिव करना ॥ द्रोन भीष्म भार्गव धुन भरना ॥ दूजी सीसी धरि अनि रुद्धा ॥ नीचे जाइ
तज्यौ सुर सुद्धा ॥ सो नीचे तें ऊरध गएऊ ॥ पुनि उर पुर सोहत नभ भएऊ ॥ गिरा न फूटा हिला न डोला ॥ साधु
बोल सबहन मिलि बोला ॥ दीप्तिमान निज बान प्रहारा ॥ भेद काँच कढ़ि कै सर सारा ॥ शिला भेदि एक
बहुरि समाना ॥ जल न गिरा न फुटा थहराना ॥ दोहा ॥ भानु तबै दृग मूंदिकै तज्यौ आपने बान ॥ सीसी

उलटी सी कियो सीधी बहुरि सुजान ॥ ९४ ॥ बहुरि बीचि सो बान समाना ॥ जलन गिरा काँच थहराना ॥ अ-
द्भुत करम भानुकर जाना ॥ साधुसाधु यह सवन बखाना ॥ इमि हरि सुवन अठारह वारे ॥ भेदेउ काँच बीरवि-
धि धारे ॥ चकित विंदु नृप बिंदु न गिरेऊ ॥ अतिहि अनंद व्याह हित थिरेऊ ॥ सबहिन कर करि दीन्ह बिबाहू ॥
मंगल कीन्हो दीरघ बाहू ॥ बंदी लगे बजावन गावन ॥ सुमनस लगे सुमन वरषावन ॥ गत षट अयुत सु-
रथ दस लाखा ॥ चार लाख शिविका कहँ राखा ॥ अर्बुद हय दासी लख दीन्हा ॥ तेहि हरि बिदा द्वारका
कीन्हा ॥ दोहा ॥ बिदा होइ ससुरार तें गे निशाद पुर मीन ॥ तहाँ सैन जित नाम नृप भेट मुदित चित दी-
न ॥ ९५ ॥ वृहद सेन भद्राकर राजा ॥ पूज्यौ परम प्रेम चित साजा ॥ मथुरा गए यदू जित अंशी ॥ निवसत
सूरसेन मधुबंशी ॥ मिलि तिनतें निज पुरी निहारी ॥ कीन्ह प्रदक्षिन सुख धरि भारी ॥ गोपनंद यशुमति
वृष भानू ॥ गोकुल सवन मिले भगवानू ॥ सवन कार्ष्णि पूजेउ गुरु जानी ॥ पूजेउ तिन्हहि नंद नृप ज्ञा-
नी ॥ कछु दिन कीन्ह कृष्ण सुत बासा ॥ चले विदाह्वै सहित हुलासा ॥ भेंट लेत मगके महि पनतें ॥ जी-
तत चले सकल महि पनते ॥ कौरव जीतन हित मुद छाए ॥ सदल हस्तिना पुर चलि आए ॥ दोहा ॥ जहँ
कौरव सैना परी असी कोस के माहिं ॥ तामधि चालिस कोस सो खास सैन निवसाहि ॥ ९६ ॥ बीस कोस
महि नगर बनाये ॥ जहँ बहु बनिक धनी दरसाये ॥ दरजी और जरेज कुम्हाँरा ॥ बसन बना वन हार सुधारा

हलवाई रतिनी औधुनियाँ ॥ खटिक हजामो पटुवा बनियाँ ॥ बारी माली और लहेरे ॥ धोबी तेली ल-
खे घनेरे ॥ तंबोली सोनार कसेरे ॥ भड भूँजे अरु घने चितेरे ॥ ननि बेधीहः काक लुहारा ॥ बहु सराफ
बज्जाज निहारा ॥ इन सब रीति बने बैपारी ॥ चहल पहल सब महल निहारी ॥ भानु मती बिरचहि बहु जालू
नट नाचहि कहुँ नाचहिं भालू ॥ दोहा ॥ कहुँ नृत्यहि बानर अजा डमरू करन बजाइ ॥ बंदी मागध सूत
के गावहिं कहुँ समुदाय ॥ ९७ ॥ कहुँ करिकै द्वादश सिंगारा ॥ बार बधू कर नाच अपारा ॥ कोउ कछु
कहै अहै कछु होई ॥ पुर महँ परम कोलाहल होई ॥ हे नृप सिंधु सहित नृप जेते ॥ कौरवके अनुबर्ती
तेते ॥ चक्रवर्ति राजन के राई ॥ इनकर बल कछु कूहो न जाई ॥ तिन के दीन्हे यदु समुदाई ॥ भूप भए ह-
रि जासु सहाई ॥ ता पुरमै हरिसुत की सैना ॥ प्रबिशी छबि देखत छबि ऐना ॥ भएउ कोलाहल तहँ तब
भारी ॥ डरे सकल पुरके नर नारी ॥ तेहि छन ऊधव कहँ समुझाई ॥ भूप सभा भेज्यौ नरराई ॥ दोहा ॥
ऊधव तेहि छन जाइकै बुधि बिबेक अधिकाइ ॥ धृतराष्ट्रहि देखत भए सह मंत्री समुदाइ ॥ ९८ ॥ सभा
माहि महिपाल निहारा ॥ सूर सूर दित सूर अपारा ॥ जहँ मद श्रवत चपल गज ठाढ़े ॥ कस्तूरी मंडित
मुख गाढ़े ॥ लोल करन सिंदूर रंगाए ॥ दस दिसि वर लाखन सर साए ॥ तिन महँ श्री धृतराष्ट्र महीपा
मंत्री मंडित कुल गुरु दीपा ॥ भीषम करन द्रोन कृप राजहि ॥ शल्य धौम्य वाल्हीक बिराजहि ॥ भूरिश्रवा

संजय छवि साजहिं ॥ विदुर दुशाशन सकुनी गाजहिं ॥ लक्ष्मन अश्व त्थामा छाजहिं ॥ सोमदत्त मख केतु सुभ्राजहिं ॥ दुर्योधन सानुजन समाजहिं ॥ लखि जो सभा पुरंदर लाजहिं ॥ दोहा ॥ धरम धीर धृतराष्ट्र अति वर धृतराष्ट्र महीप ॥ देख्यो सकल समाज सह मति दराज कुलदीप ॥ ९९ ॥ कवित्त ॥ काल जिन जीत्यो सो विदित दसभाल जग तासु वांहु सहस उतारि लीन्हो मदहै ॥ परसा धरन हारो ताहूकों विदारि डारो हारो सोउ जाते कैसो सूरमा की हदहै ॥ ताहीतें रिपून पैन भीषम समान कोउ भीषम दिनेश जैसे ग्रीषम विशदहै ॥ गंगा कुमार दास गिरधर उदार केरो वार पन ब्रह्म चारी धनु धारी जदहै ॥ ऐसे ऐसे वीर वर जासु सभाके माहं ॥ तासु बडाई को करै सत्य सुनहुं नर नाहं ॥ १०० ॥ कवित्त ॥ तैसेई महान बीर द्रोन द्रोही दंड दाता जाके चेला विदित जहांन कपिकेतु हैं ॥ कर्नके समान ह्वै है कौन रन कर्न वारो दुर्योधन तैसोई प्रचंड अरि हेतु हैं ॥ अश्व त्थामा विदित कृपात जग जाने धीर सकल सुभट भवसागर के सेतु हैं ॥ एक एक चाहैं ढाहैं मंदिर सुरेशहू को चक्रवर्ती कौरव महान शोभा देतहैं ॥ दोहा ॥ इमि नरेखि कुरु नाथ कहं करहिं जोरि तेहि काल ॥ ऊधवजू भाखत भए बानी परम रसाल ॥ १०१ ॥ श्री प्रद्युम्न कह्यौ यह गाथा ॥ उग्रसेन नामक यदुनाथा ॥ जंबु दीपके राजन जीती ॥ राजसूय करिहै भरि प्रीती ॥ जीते घने इनै नर शक्रा ॥ मागध चैद्य शाल्व रद बक्रा ॥ इन आदिकन जीति इत आए ॥ दीजै बलि उर हर ष बढाई ॥ यदु कुरु कीन्ह कलह जिमि होई ॥ आप चतुर गुन कीजै सोई ॥ छमहु मोर भाषा

यह भारवा॥ दूत कहे स्वामी कर भारवा॥ जो तुम कहिहो सोहम कहिहैं॥ हे नृप नेकहु गोइन रहिहैं॥ जब इमि ऊधव बात बखाने॥ सुनिकै कौरव अति रिसियाने॥ दोहा॥ लगे ओंठ फरकाइबे करतें मलि करवीर॥ कहत सु योधन आज सब जे जोधन महं धीर॥ १०२॥ कवित्त॥ कालकी कराल गति आजहै दिखात अहो स्यार आ ज मारत मृगेंद्र सिर लातरी॥ मेरो दियो खात मेरो कियो भूप जगख्यात सरप समान पै पीकै करै घातरी॥ का दर सदा के नही आदर भटन बीच बांदर सुकूदि आज बादर उडातरी॥ ऐसे खल अबल विचारे हैं अभल बात जाके बीच बैठि खात छेदैं सोई पातरी॥ दोहा॥ भीष्म द्रोन कृप करन जहं तहं मागत हैं भेट॥ लरिका सों यह कहहु तुम हमन देव कछु देंट॥ १०३॥ जाहिं भवन फिरि रविनिजलाली॥ नत यम सदन जाय है हा ली॥ सुनि ऊधव हरि सुत ढ़िग आए॥ तिनको सब विरतांत सुनाए॥ सुनि प्रद्युम्न कोपतें पूरे॥ बोले बचन अ बीरसे रूरे॥ हति हौं करुन सेनतें आजू॥ जो मति निबल गही दुरव साजू॥ मम सरतें मरिहैं ते कैसे॥ अ ध अंगज निज मनतें जैसे॥ तब यादव सब छपन करोरा॥ चले संग चतुरंग अथोरा॥ उततें चली कौर वी सैना॥ संग बीर कोटिन बलऐना॥ साठ सहस गज सहित पताका॥ चले सुभूषित जिमि नभराका॥ दोहा साठ सहस कुंजरन पर डंका बोलत भूप॥ द्विलख द्विरद पर सुभट बहु चले भयानक रूप॥ १०४॥ ते सब धरे लोहकर बरमा॥ करमह भल्ल भयानक करमा॥ चामीकर भूषित लख दोई॥ चले द्विरद चढ़ि बर छवि

वि· १८

सोई ॥ तितनेइ गज पर सुभट अभीता ॥ सुमन विभूषित अंबर पीता ॥ रक्त वसन भूषन गज झूला ॥ द्वैलख चले
सुभट रिपु शूला ॥ तैसेइ हरित कृष्ण सित पीरे ॥ चले द्विरद पर वर भटधीरे ॥ कोटिन गज इमि चले रसाला ॥ अ-
रु कोटिन छोटे नरपाला ॥ रथ चढ़ि चारु पताका राजे ॥ कोटिन सुरथ साज वर साजे ॥ अंग वंग सैंधवके घोरे ॥ अ-
मित सैन मधि इत उत दौरे ॥ दोहा ॥ इतनी सैना भूपकी निकरी सुनिए भूप ॥ भीषम करना दिकनकी कोटिन
औरु कुरूप ॥ १०५ ॥ लोह कवच धरि वहु सामंतक ॥ आए लरन हेत अरि अंतक ॥ मागध वंदी सूत सुजाना ॥ कोर-
वके गुन करहि वखाना ॥ भेरी शंख मृदंग जुझाऊ ॥ पूरि रहो वाजन कर राऊ ॥ सिंह केत घोरे अव दाता ॥ मुरछल
पंखा चंवर विभाता ॥ परत चार योजन लव छाया ॥ इंद्र दत्त अस छत्र सुहाया ॥ ताके नीचे सुभट सुयोधन ॥ लिये
संग यम गन से जोधन ॥ तथा सकल दुर्योधन भाई ॥ चढ़ि चढ़ि सुरथ चले हरषाई ॥ सोम दत्त भीषम कृप द्रोना
शल्य यज्ञ ध्वज विदुर सलोना ॥ दोहा ॥ कर्न धौम्य लक्ष्मन सकुल दुश्शासन वाल्हीक ॥ अश्वत्थामा भूरिसह सुंदर
सुभट अनीक ॥ १०६ ॥ तिन महँ लसत सुयोधन कैसे ॥ मरु तन माहिं मरुत पति जैसे ॥ द्वै प्रतिमा पांडवन पठाई ॥
कुरु सहाय हित सोउ संग आई ॥ षोडस अक्षोहिनि लै साथा ॥ चल्यौ सुयोधन कुरु कुलनाथा ॥ अमित और औ-
रन की सैना ॥ चली प्रमान तासु कछु हैना ॥ धरकी धरनि तिमिर दिशि छायो ॥ धूरसूर पै नूर छपायो ॥ सव दित भयो
सकल आकाशा ॥ संशय सुरउर प्रगट खुलाशा ॥ तेहि छन उमड़ि उभयदल राजा ॥ लरन लगे धरि धीर दराजा ॥ गज मर्दन

लागे पर सैना ॥ नृत्यहि तुरंग परम वल ऐना ॥ दोहा ॥ हयते हय गजतें द्विरद रथतें रथ रन होइ ॥ नरतें नर नृ
पतें नृपति लरहिं वरोवर जोर ॥१०७॥ सूत सूत गज वान महावत ॥ समर करहिं उरकोप वढावत ॥ खड्ग कुंत सर
शक्ति कुठारा ॥ मुद्गर गदा पट्ट कर धारा ॥ भिन्दिपाल अरु तोमर तोपा ॥ मुशल सुचक्र समर आरोपा ॥ एहि विधि
भयो भयद नर भारी ॥ लागी होन परस्पर मारी ॥ तहं प्रद्युम्न धनुष टंकारी ॥ भिरे सुधन नृपहि प्रचारी ॥ भट अनि
रुद्ध भीष्मके साथा ॥ दीप्ति मान सो कृप द्विज नाथा ॥ भिरे शाम्ब वाह्लीकस भरमें ॥ द्रोन भानु अभिरे तेहि थर-
में ॥ वृहद भानु अरु शल्य नरेसा ॥ मधु राधेय भयानक भेसा ॥ दोहा ॥ अश्व त्थामा वृक भिरे अरुन धौम्य
मुनि नाथ ॥ वेद वाहु शकुनी लरे लक्ष्मन पुष्कर साथ ॥१०८॥ संजय और सुनंदन संगा ॥ गद अरु विदुर की-
न्ह रन रंगा ॥ दुश्शासन शुत देव सुशरमा ॥ भूरिसाथ अभिरे कृत वरमा ॥ उद्धव अरु विकर्ण रन शूरा ॥ अभिरे यज्ञ
केतु अक्रूरा ॥ एहि विधि युटे सकल जयकेतू ॥ तेहि छन धुनि कमान झखकेतू ॥ समर वारवारिद से बरखत ॥
भे अरि प्रबल पराक्रम परखत ॥ दुर्योधन हरि सुवन परस्पर ॥ भिरिकै करत भए रन दुस्कर ॥ अमित अश्व रथ
गज वधि डारे ॥ दुहुन दुहूं दल प्रलय पसारे ॥ महा राज तेहि छन सुनि लीजै ॥ दुहुं दलके अगनित भट छीजै ॥
दोहा ॥ गिरहिं समर महं टूटिकै अगनित मोती भूप ॥ अंबर परते अवनि पै ताराके अनु रूप ॥१०९॥ इमि भो
समर सुनहु देकाना ॥ तेहि छन नृप सुत कुरु परधाना ॥ आहि समान दस सायक मारी ॥ काटेउ कवच कार्ष्णि

कर भारी ॥ भेदि बरम सर हृदय समाने ॥ रबि महँ किरण समान देखाने ॥ सहस बान तड़ितासे मारी ॥ बधे सहस रथके हय भारी ॥ सत सर मार धनुष कहँ काटो ॥ रथहि तोरि हरि सुत कहँ डाटो ॥ तब प्रद्युम्न सुरथ चढ़ि दूजे धनु हरिदत्त धारि रन पूजे ॥ एक बान मंत्रित बर मार्यो ॥ सो अरि सुरथ शीस पर धार्यो ॥ एक महूरत व्योम फिराई ॥ पटक्यो बहुरि भूमि पर आई ॥ दोहा ॥ गिरे सुरथ चूरन भयो मेरो हयन सहसूत ॥ पुनि दूजे रथ चढ़ि भिरो दुर्योधन मजबूत ॥ १०० ॥ गनिकै दश सर सर्प समाना ॥ मारेउ हरि पुत्रहि रिसियाना ॥ ताकहँ सहि इक सायक हयऊ ॥ सो रथ कहँ ऊपर लै गयऊ ॥ दवरि दूसरो सर तब भारो ॥ पुनि तीजो सर ताक प्रवारो ॥ लै तेहि सुरथ सहित सर सोई ॥ गो धृतराष्ट्र धाम बर जोई ॥ तहाँ गिरायो रथ कहँ भारी ॥ मुरछि परो महि पै ब्रत धारी तेहि छन इमि सुजीति कुरु नाथहि ॥ अरि दल दल्यो पपल करि हाथहि ॥ हाहा कार भयो कुरु दल मे ॥ सो लख भीषम भट तेहि थल मे ॥ धनु टंकार चले सर छाडत ॥ सिखि सम अरि दल बन भय माड़त ॥ दोहा ॥ श्वेतम श्रुसिर त्रान धर गौर किरीटी वृद्ध ॥ देवकृत कवि गंग सुत बैष्णव शास्त्र समृद्ध ॥ १११ ॥ सो अनिरुद्ध सेन महँ धसिकै ॥ बकरिन माहिं बाघ सेलसिकै ॥ सरतें छाइ दियो बर सारा ॥ हय गज रथ पदाति बहु मारा आयुध धरे बिदारन चाहत ॥ तबते बध्यो अमित भट वाहत ॥ ऊरध अधो बदन करि गिरहीं ॥ छिन्न भिन्न तन प्रानन थिरहीं ॥ कवच कटे सिर त्रान बिहीना ॥ भटरथ हय ध्वज चूरन कीन्हा ॥ भूषन शस्त्र रुधिर

की मारी॥ करि अस्तन सरकेस करारी॥ भोजन करन प्रान अरि नेता॥ महा भार्य जन रूप समेता॥ कुंडल वि-
रथके अंग कटेजे॥ सेंदूर रन रन धीर डजेजे॥ दोहा॥ भूत प्रेत नृत्यन लगे जंबुक गिद्ध उड़ाहिं॥ शंभु माल हित ३२२
सरसर बहु पिशाच लैजाहिं॥ ११२॥ अमृत ध्वनि॥ गग्गग्गग्गोमायु बहु रवकवकवेलें संबंध॥ जज्जज्जो
गिनि पिवैं भ भ्रभ्रमैं कबंध॥ भभ्रभ्रमैं कबंध धमकि मदंध इससें॥ वव्वव्वीर असङ्ख्य द्वयपकि करत द्वय द्वय
स्सें॥ गग्गग्गरजि सव्वव्व मकि अरव्वव्वस्सें॥ कक्क कीटकिल रक्त कवेलक रक कवस्सें॥ १॥ सस्सस्स स्सोनित-
सरित दृदृ दृसन बिरज्ज॥ घग्घग्घग्घोरे घने डडुडुवैं गज्ज॥ डडुडुडुबैं गज्जज्जंग विरज्ज ओध्धा॥ सस्सस्सुभट बधि
क्क क्करन अधिक्कक्क कोधा॥ चच्चच्चापविक स्सस्सुभट अक स्सस्सोधा॥ तत्ततमकि तरव्वव तोन परव्वव्वोधा॥ २
चद्द दृदृनु धर मरे घच्चघच्चने इकट्ठ॥ सस्सस्सस्सग्राम में पप्पप्पूरे ठट्ठ॥ पप्पप्पूरे ठट्ठ ठरकि सुलदृदृ ढ्ढोकैं॥ वव्वव्वी
रक्किट्ठ ठोर इक दृदृ ढ्ढोकैं॥ शश्शस्त्र विगदृदृ समकि सुसदृ ढ्ढोकैं॥ गग्गग्गाहि दृदृढ्ढलि इकदृदृ ढ्ढोकैं॥ ३॥ भभ्रभ्रीषम बानते
गेबहु जज्जज्जु हू॥ भभ्रभ्रट मेवसो सस्सस्समर अरुहू॥ सस्सस्समर अरुहू हूमकि असहू हुकैं॥ कक्क कुपित विरुहू हू
नकि अवहू हुकैं॥ हुहू कोल सुरुहू हूपटि सरबुहू हुकैं॥ पप्पप्रवल अवुहू हूपटि विजहू हुकैं॥ ४॥ दोहा॥ इहि विधि
भीषम के समर भीषम भई सभूमि॥ चारिद समबर ब्यो शरहि समर धुरंधर भूमि॥ ११३॥ छप्पै॥ जादिशि भीषम ल-
सत काल ताको जनु आयो॥ एहि विधान भरि जोर सकल यदु दल विचलायो॥ सो नरिवर अनिरुद्ध जुद्धमैं धनु टंकारसो

मारि अनेकन बांन काटि धनु भूपर डार्यौ॥ तबभीषम धनु आनि धरि तिनसो रन करते भए॥ बालक जानि सुसांत चित हस्त लोल लरते भए॥ दोहा॥ संगरमैं संतनु सुवन ब्रह्म अस्त्र कहँ छाड़ि॥ मर द्यौ सैना यादबी दश दिशि मैं भय माड़ि॥ १४ ॥ तब अनिरुद्ध जानि रन रोगा॥ करत भए ब्रह्मास्त्र प्रयोगा॥ द्वै ब्रह्मास्त्र भिरे रन कैसे॥ सूरय दोय महत दुति जैसे॥ भीषम अरु प्रद्युम्न कुमारा॥ धुनि धनु सहि बरषे शरदारा॥ मंडल सरिस सरासन दोऊ॥ सरकर अंतर पावन कोऊ॥ गहि कर लाख भारकी गदा॥ मारेउ हरि सुत सुत कहँ तदा॥ तेहि अनिरुद्ध हाथ महँ धारी॥ गंग सुतहि प्रचारि पुनि मारी॥ भीषम ताहि लियो निज ऊपर॥ गिरे मुरछि रविके समभूपर॥ इमि बूढ़े कौरवहि निहारी॥ कोपे कृपाचार्य धनु धारी॥ दोहा॥ शक्ति चारु तड़िता सरिस तज्यौ तुरंतहि डाटि॥ दीप्ति मान असि मारि कै दीन्हो बीचहि काटि॥ ११५॥ कृपाचार्य तब अति रिस कीन्हो ताकहँ बिरथ बिधन करि दीन्हो॥ द्रोन भानुतें भिरि बल माडा॥ अद्रि अस्त्र गिसि करिकै छाडा॥ तातें निकरि निकरि गिरि भारे॥ श्रमित किए यादव भट सारे॥ भानु देखि दल चूरन कोप्यौ॥ तजि अनिलास्त्र अनिल आरोप्यौ॥ तातें उड़े शैल सब भारी॥ द्रोन भानु तब भिरे प्रचारी॥ तब बाह्लीक क्रोध बिस्तारो अग्नि अस्त्र यदुदल परमारो॥ पर जन्यास्त्र शाम्ब तब मारी॥ शांति कीन्ह सो आपद भारी॥ तेहि क्षन कर्ण मधुहि मुरछाई॥ भिरेउ शाम्बतें ओज बढ़ाई॥ दोहा॥ बीस बान मारत भए सो अरि सुरथ उठाइ॥ अंबर गयो उड़ाइकै तहँ द्वै घड़ी घुमाइ॥ ११६॥ पटक्यौ एक कोस पर जाई॥ टूटो सुरथ धूरि उधराई॥ व्याकुल होइ शाम्ब तेहि काला॥ चल्यौ बहुरि

गहि गदा कराला ॥ सोललकारि कर्ण कहँ मारी ॥ मुरछि पर्यौ सूतज धनु धारी ॥ शाम्ब सुरथ चढि धनु टंकार्यौ ॥ भद्र
पतिहि सर बीस प्रहार्यौ ॥ सोम दत्त कहँ पाँच ललामा ॥ दश लक्ष्मन दश अश्वत्थामा ॥ षोड़शबान धौम्य गुन धाम
महि ॥ पाँच बान शकुनी सर नामहि ॥ दुःशासनहि बीस सर मारी ॥ संजयके तन साठ प्रहारी ॥ भूरिहि द्वै पचाश परिमा-
ना ॥ यज्ञकेतु कहँ कितनेहि बाना ॥ दोहा ॥ एहि बिधि सब कहँ मारिकै शाम्ब धनुष टंकारि ॥ हई रथी द्विरदी पदीव-
धि दीन्हे महि डारि ॥ ११७ ॥ सबन भयो लखि विस्मय भारी ॥ सावस शाम्ब कहहिं धनुधारी ॥ तेहि छन उठि रन गंगकु-
मारा ॥ ह्वै रथस्थ निज चाँप सुधारा ॥ तुरित सर्पसे दश शर मारी ॥ काट्यौ धनुष शाम्ब को भारी ॥ तेहि छन कर्ण द्रोन
गांगेया ॥ मिलिकै विक्रम कीन्ह अमेया ॥ त्यागत तिन्न तीर समुदाई ॥ यादव सैन दल्यौ अधिकाई ॥ दुर्योधन पुनि स्यंद-
न चढ़िकै ॥ लै सँग दश अक्षोहिनि बढ़िकै ॥ देत दुंदुभी घरतें कढ़िकै ॥ अभिरत भो सबेग रिसि मढ़िकै ॥ यादव कौरव
भिरि तेहि काला ॥ कीन्ह अमित बीरन कर काला ॥ दोहा ॥ अश्वत्थामा भीष्म कृप करण सुयोधन द्रोन ॥ प्रबल बरषि
शर शस्त्र कहँ बल बढ़ाइ निज यौन ॥ पावस सम नादत अतिहिं बर बिक्रम दरसाय ॥ बिचलायो यादव दलहिं चाँप
बजाइ बजाइ ॥ ११८ ॥ छंद ॥ निज चाप चारु बजाइ रन महँ रावसों पूरत भए ॥ कर चरन जंघा सीस कटितें शरनतें तूरत
भए ॥ तेहि काल लखिकै हाल उभय अजेय मन महँ जानिकै ॥ कुरु राज गादी बहुरि बर सुज जाति को अनुमानिकै ॥ १ ॥
दोउ सैनके मधि रथ चढ़े बलराम हरि प्रगटत भए ॥ बरताल केतु खगेश केतु निरखि सब आनँद गए ॥ दश दिसन जय

जय कारलावा सुमन सुरनावत भए॥ दुंदुभि बजहि नाचहि अपसरा गंधरब गावत भए॥ २॥ दोहा॥ कौरव यादव मुदि
तह्वै निज निज शस्त्रहि त्यागि॥ दुहु दिसि सो पूजत भए बंदि चरन सुख पागि॥ ११९॥ हाथ जोरि ठाढ़े दुहु ओरा॥ मुदित
निरेखहि नंद किशोरा॥ हरि निज पुत्रन को तेहि काला॥ खीझे करि सुनीत प्रति पाला॥ भीष्म आदि कहं बंदन करिकै
दुहुँ दलमैं आनंद वितरिकै॥ दुर्योधन तें मिलि मति माना॥ रामश्याम यह बचन बखाना॥ तुम अति सज्ञ बीर सिरता
जा॥ अहहु चक्रवर्त्ती महि राजा॥ क्षमहु बालकन कर अपराधू॥ जो कछु कटु कह क ह्यौ असासू॥ सो सब क्षमा छि
तीश्वर कीजै॥ नातरु बदले मोहिं कहि लीजै॥ कुरु यदुतें रन दुख कर जोई॥ हे भगवान कबहुँ नहिं होई॥ दोहा॥ हम
तुम संबंधी अहैं एहि बिधि बहु समुझाइ॥ आप भेट लीन्ही अमित परम चतुर यदुराय॥ १२०॥ एहि बिधि बिदा कौ
र वन कीन्हा॥ अति आनंद यादवन दीन्हा॥ राखी सकल नीति बिधि राजा॥ पुनि प्रमुदित बज वावत बाजा॥ सब
न समेत मोद सर साए॥ इंद्र प्रस्थ महँ केशव आए॥ भ्रातन सहित युधिष्ठिर राजा॥ आए मिलन प्रेम पथ साजा
बाजहिं दुंदुभि शंख सुबाजे॥ बर्षहि सुमन दूब दधि लाजे॥ हरितें मिलि पांडव भे कैसे॥ योगी पाय ब्रह्म पद जैसे॥ प्र-
द्युम्नादि धर्म्म कहँ बंदे॥ तिनहि देत आशीस अनंदे॥ मिले भीम अर्जुन सम भेवा॥ बंदे चरन नकुल सह देवा॥ दोहा॥
कुशल प्रष्ण करि बिबिधि बिधि परि पूरन तम ईस॥ अमित अंड पति जगत गुरु नमित शंभु बिधि शीश॥ १२१॥ प्रद्यु-
म्नादि सुतन यह भाषा॥ जीतहु जगत जौन अभिलाषा॥ हरि बल पंडु सुतन उरलाई॥ द्वारावती गए हरषाई॥ यह

मह चरित कृष्ण कर कहेऊ ॥ अब कह सुनिबे तब मन चहेऊ ॥ पुनि बोले मिथिला के राई ॥ जब द्वारका गए दोउ भाई
कहा कीन्ह हरि सुत तब कहिये ॥ महिं हरि रस तजि और न चहिये ॥ अद्भुत चरित अहै श्रवनीया ॥ भक्त सुफल
सुभक्त कर बीया ॥ अरथ रथी कहं अर्थ प्रदाता ॥ भक्ति मुक्ति का रन रन ज्ञाता ॥ किमि पुनि बिजय कृष्ण सुत की
न्हा ॥ कौन कौन नृपसों बलि लीन्हा ॥ दोहा ॥ सो कहिये श्री कृष्ण मन ज्ञान खानि बर बानि ॥ इमि महीप के वचन
सुनि बोले बीना पानि ॥ १२२ ॥ भले भूप हरि चरितहि पूछा ॥ जाविन जगत अहै सब छूछा ॥ हरि के गये धर्म गुनि
स्वारथ ॥ हरि सुत साथ दियो करि पारथ ॥ तिन के संग जंग उमदाये ॥ तुर्त तिगर्त नगर चलि आये ॥ तहं को भू-
पति रहेउ सुशर्मा ॥ सो भेटहि दीन्हो भरि भरमा ॥ लै बिराट तें बलि बल धारे ॥ सरस्वती कुरुक्षेत्र पधारे ॥ बहुरि
पृथूदक बिंदु सरोबर ॥ तृत बापी नहाइ यादव बर ॥ तीर्थ सुदर्शन होइ सुहाये ॥ सारश्वत कौशाम्बी आये ॥ भूप
कुशाम्ब भेट नहि दीन्हा ॥ दुर्योधन बस सो रिसि कीन्हा ॥ दोहा ॥ चारुदेष्ण १ भद्र चारु २ पुनि चारु ३ सुदेष्ण ४
सुचारु ५ ॥ चारुगुप्त ६ ससि चारु ७ बर चारु देह ८ सुबिचारु ९ ॥ १२३ ॥ एनव रुक्मिनि नंदन बारे ॥ ताके जीतन हे
त पधारे ॥ चढि घोरन पर घेरेउ नगरी ॥ पूरन कियो सरन तें सगरी ॥ ध्वज अराम ग्रह द्वार कंगूरा ॥ शर के बेग भए
सब चूरा ॥ तब डरिकै कुशाम्ब लै भेटहि ॥ दीन्हो आय रुक्मिनी बेटहि ॥ करि प्रनाम निज पुर महं आयो ॥ अरिभय
को दुख दूरि दुरायो ॥ तिमिसु देव सौबीर महीपा ॥ आभिरपति बिचित्र को दीपा ॥ सिंधु भूप चित्रांगद नामा ॥ काश्मीरी

सुमित्र बरधामा॥ लाक्षेश्वर पति धर्म महोजा॥ नृपगांधार सुनाम विडोजा॥ दोहा॥ इनसब हननें भेंट लै कृष्णा सु- वन बलवान॥ अर्बुद नगर मलेच्छ महं आए यादव त्रान॥ १२५॥ चंड यवन तह काल कुमारा॥ मम मुखनें सुनिक था अपारा॥ कृष्णहि शत्रु बापको जानी॥ लड़न चल्यो उर अति रिसिप्रानी॥ दशकडोर संग लिए मलिच्छा॥ चर- खत बान लरन की इच्छा॥ यवन जूथ लखि गुर बर तोलत॥ हरि सुत भए सैन महं बोलत॥ जोलावै सिर आज इहाँही करिहों मैं सेनापति ताही॥ सुनि कपि केतु बीर बिधि चाही॥ प्रविशो एक शत्रु दलमाही॥ बर्ष तप्पर कर धनु गांडीव हि परवत अरि दल दलि बर सीवहि॥ दोहा॥ सुरथ सुभट हय गजन कहं चल्यो करत द्वै टूक॥ समर सव्य साँची सरस बीर बली अनचूक॥ १२५॥ भुजंग प्रयात॥ घने छिन्न बाहू मही माहिं लोटैं॥ घने चोट खाए मही कोख सोटैं॥ भगे बीर भारे रथी औ मतंगी॥ सबै देख नाहीं अकेलो निरंगी॥ दशो कोटि मैं एक सो सव्य साची॥ महा बान कोजालवी माल राची॥ हृदै जानि कै कालसे म्लेच्छ सारे॥ भगे चंडके अय हाहा पुकारे॥ रवीके मरीची सबा बान सारे॥ अरी यूथनी हारको काटि डारे॥ तबै चंडनामा अती चंड सोई॥ तज्यो शक्ति भारी अरी ओर जोई॥ दियो काटि ताको तबै बान मारी॥ तबै चंड सक्रोध चापै सुधारी॥ तजो बान काट्यो धनू शव्य साँची॥ महा मारि सोठैं रलै रूप नाची॥ दोहा॥ यवन धरो दूजो धनुष तबहि पारथ डाँटि॥ अर्द्ध चंद्र सो बान तजि दीन्ह प्रतिज्ञा काटि॥ १२६॥ बहुरि विमत्सु खड्ग निज गहिकै॥ मारयो म्लेच्छ हि थिर थिर कहिकै॥ ताके लगे दोय ह्वै वारन॥ गिरेउ चिकारि सह्यो नहि भारन॥ तब

कर माहि खड्ग धरि चंडा ॥ चलेउ करत पैंतरा प्रचंडा ॥ तेहि छन अर्जुन असि बिधि ठाढी ॥ तुरित तासु सिर ली-
न्ही काटी ॥ सो सिर निज शर बीच लगाई ॥ तज्यो कानलौ चाप चढ़ाई ॥ गिरेउ जादु हरि नंदन आगे ॥ जयजय
करन अमर नर लागे ॥ बरस्यो सुमन पार्थ के ऊपर ॥ हरि सुत मुदित मिले नर भूपर ॥ जिष्णुहि कीन्ह सैन
कर नायक ॥ वेद मंत्र मंत्रित गुनि लायक ॥ दोहा ॥ यादव सैना पति भए परम बीर कपिकेतु ॥ चमर छत्र पंखन
सहित राजे रिपुजय हेतु ॥ १२७ ॥ बेगा बान अर्बुद पति डरिकै ॥ भेट दीन्ह कर संपुट करिकै ॥ मंद हाँस मौरंग नरेशा ॥
बलि दीन्हो बल जानि बिशेसा ॥ भरत खंड की जय दीमलहिकै ॥ हिमके दक्षिन चलेउ नहिकै ॥ सिंधु नदी नद
दीन्हो रस्ता ॥ हरि प्रभाव अरि भे सब अस्ता ॥ गिरिके पास पास सुख रसई ॥ श्रोनित पुर बारा ॥ सुर बसई
माँगत भए भेट यदुराई ॥ सुनि सो बान महान रिसाई ॥ द्वादश अक्षोहिनि दल साजी ॥ चलेउ लरन प्रचंड
अति गाजी ॥ तेहि छन पुरुष पुरातन बूढ़े ॥ शिवा समेत वृषभ आरूढे ॥ दोहा ॥ भूली शंभु कृपायतन आसु
आय वृषकेतु ॥ बानहि समुझावत भए ज्ञान सेतु हित हेतु ॥ १२८ ॥ परि पूरन तमगो पुर बासी ॥ अमित अंड-
नायक सुख राशी ॥ जासु कला हरि हर ब्रह्मादी ॥ सोइ यदुनंदन कृष्ण अनादी ॥ तिनके पोत्र तुम्हारे ब्याहो
बाहु काटि जिमि पन निर्बाहो ॥ तातें पूजनीय सनबंधी ॥ मिलहु मित्र बनि तजि मति अंधी ॥ है अति प्रब
ल यदूमति माना ॥ निज मूढी मति खोलहु बाना ॥ सो सुनि काम सुतहि बुल वाई ॥ भली विधान करी पहु

नाई ॥ प्रद्युम्नहि पूज्यौ सह सैना ॥ कुंजर अयुत दियो बल रैना ॥ कोटि तुरंग रथ पाँच सुलक्षा ॥ बिदा कियो वलि नंदन दक्षा ॥ दोहा ॥ तिनते पूजित सुचित चित राज राज के धाम ॥ भेटकाम आवत भए अलकानगरी काम १२९ ॥ श्री नंदा अरु अलक सुनंदा ॥ मंडित अलका झलक अमंदा ॥ रत्न सिढ़ी सोभित अलि नादित ॥ पुरी सुरी कुबेर समता दित ॥ अहि कन्या गंध्रविन डोलहिं ॥ कोकिल के सम बानी बोलहिं ॥ धनद नदीन्ह यदुहि बलदाना ॥ हे नृप लोक पाल मति माना ॥ हरि माया प्रेरित रिसि लैकै ॥ लरिहौं यह विचारि निरभैकै ॥ धन समान मद नहि जग कोऊ ॥ तातें अति बौराना सोऊ ॥ हेम मुकुट दूतहि समुझाई ॥ दीन यादवनमाहि पठाई सो करिकै हरि सुतहि प्रनामा ॥ बोले बचन जानि वल धामा ॥ दोहा ॥ राज राज अलका ध्रुपति लोक पाल धन नाथ ॥ यह बानी भाख्यौ अहै सुनिये सो सुख साथ ॥ १३० ॥ इंद्रदेव पति औरन होई ॥ तिमि हम धनपति औरन कोई ॥ नर पूजित सब अमर कहावैं ॥ नहि दैहौं बलि जौ चढ़ि आवैं ॥ लरिहौं तिनतें सहित समाजा यम पुर माहि पठै हौं आजा ॥ सो सुनि परम कोप विस्तारी ॥ बोले हरिसुत अति रिसि धारी ॥ यदु पतिराज राजके राजा ॥ जानत तिनहिं न कुमति दराजा ॥ पारिजात असि सभा सुधर्म्मा ॥ दीन्हेउ इंद्र भयानक कर्म्मा ॥ शाम्ब करन हय जलपति दीना ॥ है यह धनद महा मतिभीना ॥ भयो गरूर घनो धन पाई ॥ तातें बोलत बात बनाई ॥ दोहा ॥ परि पूरन तम जासु ढ़िग केशव रहत सदाहि ॥ अमित अंड मंडन

सभू देत न बल यह ताहि ॥१३०॥ जासिर कणसर सातहु लोका ॥ मंत्री जासु सदा बल ओका ॥ सोन देत बल तेहि अज्ञा
नी ॥ हम बलवान देत अभिमानी ॥ इमि कहि निजको दंड चढ़ाई ॥ पूरत भए नाद अधिकाई ॥ पूरत भयो सकल
ब्रह्मंडा ॥ पवि समान धनु चमक अखंडा ॥ निज निखंग ते सायक काढ़ी ॥ धनु धरि तनेउ तासु दुति बाढ़ी ॥ द्वादशरबि
समान सो जाई ॥ छत्र चमर दिय काटि गिराई ॥ धनपति केर छत्र जव गिरेऊ ॥ धनपति हृदय क्रोध अति थिरेऊ ॥ पु-
ष्पक पर चढ़ि सैन समेता ॥ निकरे धनद समर के हेता ॥ दोहा ॥ घंटा नाद महान बल पार्श्व मौलि भट सींव ॥ सैनापति
सुत दोय पुनि नल कूवर मनि ग्रीवं ॥१३१॥ झख शिशु मार सिंह हय मुखके ॥ चले पक्ष कढ़ि नाना रुपके ॥ आधे पीरे
आधे कारे ॥ ऊरध केस प्रचंड करारे ॥ बक्र दंत अति जिह्वा धारी ॥ ओंठ पर्यो अति सिर रन चारी ॥ मुखकराल अरु
बरसन धारे ॥ शर अस चरम भसुंड सुधारे ॥ परिघा सक्ति शरासन तोपा ॥ कठिन कुठार धरे रन रोपा ॥ रथ गज हय बिमा-
न चढ़ि धाए ॥ बंदिसूत गावहि छबि छाए ॥ यक्ष जंग हित कोटिन आए ॥ लरन हेत आतुर ह्वै धाए ॥ हर घरके बहु फि-
रत पिशाचा ॥ आए करन सरापहि साँचा ॥ दोहा ॥ भूत प्रेत बैताल बहु चक्र बाक उनमाद ॥ डाँकिनि ब्रह्म निसाचरा
कुश मांडहु अबिषाद ॥१३२॥ चढ़े मयूर षड़ानन आए ॥ मूषक पर गनेस छबि छाए ॥ बीर भद्र सैनाके आगे ॥ प्रमथ
न सहित समर अनुरागे ॥ यादव पक्ष भिरे इमि बढ़िकै ॥ दुहुँ दिशि परम कोपतें मढ़िकै ॥ बारन बारन करहि लराई ॥
बाजि बाजि बाजहिं बरि आई ॥ रथतें रथ गथि मार मचावहिं ॥ भटते भट फिरि तनहिं चबावहिं ॥ भयो दुहुन कर समर

अपारा॥ धूरि भरो नभ मंडल सारा॥ तेहि क्षन तजत बान बल सींवा॥ अरि दल दलत भयो मानि ग्रीवा॥ ताके बान लगे तन छिदि छिदि॥ गज रथ अश्व गिरे रन भिदि भिदि॥ दोहा॥ चंद्र भानु केशव सुवन सतभामा ते जौन॥ काट्यौ धनु मनि ग्रीव कों मारि पाँच सरतौन॥१३३॥ दश शर बहुरि यक्ष कहँ मार्‍यौ॥ तब मनि ग्रीव सत्य गहि डारो॥ आवत लखि पबि सरिस अडरतें॥ रबि शशि पकर्‍यौ बाँए करतें॥ फिरि फिराय गरज्यौ अति भारी॥ अति बल मनि: ग्रीव कहँ मारी॥ मुरछि गिर्‍यौ लखि हृदय दुख ठयो॥ नल कूबर राक्षस बपु पठयो॥ ते सब तजत बान की धारा॥ बिकल कर्‍यौ यादव दल सारा॥ दीप्तिमान प्रबिसो असि धारी॥ जिमि कै चीवड़ बसन मझाँरी॥ कर पग सीस करन अरु नाका॥ ओंठ उदर कुंडल रथ चाका॥ अश्व बितुंड द्विधा करि डारे॥ प्रलय सरिस बिक्रम बिस्तारे॥ दोहा॥ छिन्न भिन्न गत प्रान बहु भागे किते भगेल॥ यक्ष सैन अति दुख भयो हाहा दश दिसि फैल॥१३४॥ सो लखि परम प्रबल अरि परखत॥ नलकूबर अभिरोशर बरखत॥ पाँच बाँन कृत बरमहि मारा॥ पारथ कहँ दश बान प्रहारा॥ बीस सरप सम दीपति मानहि॥ लखि कृत बरमा धुन्यौ कमानहि॥ पाँच बान मार्‍यौ अरि खेदी॥ ते सब धसे कवच कहँ छेदी॥ भेदि शरीर धरनि मधि पैसे॥ बामी बीच व्याल बर जैसे॥ सो लखि सारथि कंचन माली॥ लै रथ भगो परम बुधि साली॥ घंटा नाद चल्यौ तब बढ़िकै॥ पार्श्व मौलि सह अति रिस मढ़िकै॥ बर्षत भए बान की धारा॥ बज्र समान कराल अपारा॥ दोहा॥ तेहि छन अर्जुन सुभट मनि मारि बान प्रति बान॥ मंडल सम धनु करत भो बिश्व बिदित बलवान॥१३५॥ लस्यौ तहाँ

अर्जुन धन कैसे ॥ चपल चाक पर जुगुनू जैसो ॥ काटि बान तिनके तेहि काला ॥ दोय कोसलौं बीर बिशाला ॥ अ
लख अटुट सर पंजर कीन्हो ॥ परदल कहँ गोपित करि दीन्हो ॥ मंत्रिन विगत प्रान अनुमानी ॥ भागे सकल यक्ष
अभिमानी ॥ कोटिन भूत चले तेहि काला ॥ तोरि तोरि सिरपहि रत माला ॥ डाँइन डुँगरी नरन चवावत ॥ गजन घु-
माइ अकाश पठावत ॥ दश दिशि भूत अमित भे गच्छत ॥ नर रथ हय मतंग कहँ भच्छत ॥ नर सिर प्रमथ दाँत
तर दाबहि ॥ यातु धान गहि गहिकै चावहि ॥ दोहा ॥ भरि भरि रुधिर कपाल महँ पिवत चले वैतात ॥ नाचन
लगे विनायका गावहिं प्रेत कराल ॥ १३६ ॥ शीशन लेहिं अमित उनमादा ॥ शिव माला हित करत कुनादा
कूषमड छटकहिं रन माहीं ॥ छोटे छोटे नरन चवाहीं ॥ मातृब्रह्म राक्षस अरु भैरव ॥ सिर कंदुक खेलहिं
करि भैरव ॥ गावहिं नाचहिं हसहिं पिशाचा ॥ संगर भूमि करहिं मिलि नाचा ॥ शिशुन पियावहिं रुधिर पि-
साची ॥ नर दृग काढ़ि खियावहिं नाची ॥ शिव गन कर दल इमि अव रेखा ॥ गर्जत कठिन कालके भेखा ॥
गद गहि लाख भारकी गदा ॥ मर्दत भयो प्रेत कहँ तदा ॥ कूषमांड उनमाद बिताला ॥ राक्षस ब्रह्म पिसा-
च कराला ॥ दोहा ॥ यातु धान अरु प्रमथ को काट्यौ सिर बलवंत ॥ डाँकिनि भूतिनि यूथ को बदन किये
विन दंत ॥ १३७ ॥ भागे भभरि भूत भय छाए ॥ धनी धनीके आगे आए ॥ जगत बिदित साँचहु अनुरागे ॥
भागत भूत मारके आगे ॥ कोपहि बीर भद्र बिस्तारे ॥ भारी गदा गदहि पुनि मारो ॥ सोऊ अपनी ताहि

प्रहारी ॥ मिलिकै कियो गदा रन भारी ॥ तब दोउ वीर गदाके टूटे ॥ मद्दत्र समान समर महँ जूटे ॥ करि अ-
ति युद्ध क्रुद्ध विस्तारो ॥ वीर भद्र कर वीर उखारो ॥ अट्ट हांस करि गद पर मारो ॥ सो पुनि तापर पकरि
पवारो ॥ वीर भद्र तब गदहि उठाई ॥ लख योजन नभ तज्यौ रिसाई ॥ दोहा ॥ गद गिरि कछु व्याकुल भ-
यो मद भरि उठा रिसाइ ॥ ऊपर योजन लाख लौं फेक्यौ आसु घुमाइ ॥ १३८ ॥ सो कैलास सिखर पर गिरेऊ
घटिका दोय चेतनहि थिरेऊ ॥ कारति केय तबै रिसि आई ॥ मारेउ रन निज शक्ति घमाई ॥ ऊषा पति
अरु शाम्बहि भेदी ॥ तिनको सुरथ हयन सह छेदी ॥ हय गज गजनर लाखन मारी ॥ दस दिसि फिरी करत फुफकारी
अहि सम धसी धरनि महँ जाई ॥ सो लखि शाम्ब महा रिसि छाई ॥ कीन्ह तहां इक लीला भारी ॥ धनु पर धार्यौ स-
रहि सुधारी ॥ कवित्त ॥ एक रूप तूनमै निकारत दिखायो दस जोरत धनुष बीच सत सर सायोहै ॥ खींचत सहस्र अ-
रु तजत सुलाख भयो अरि यूथ जात सो करोर दर सायोहै ॥ कोटिन सुभट भए प्रगट अपान तहांकेते कोस केतमैं
अधीर करि नायोहै ॥ सिखिके समेत सिखि बाहन बिसिख लगे विषधर काटे कैसो खेद उर पायोहै ॥ दोहा ॥ देखि
कछुक व्याकुल गुहहि मूषक चढ़े गनेश ॥ समर माहिं दौरत भए किए क्रोध आवेश ॥ छंद ॥ बर बदन मृग मद चारु
चर्चित बक्र तुंड सुहावनी ॥ नम कलित कुंकम ललित छवि सिंदूर चर्चित भावनी ॥ कर्पूर धूर समान धवल सुजान
कर्ण कुबर्णहै ॥ व्यालोल निकट कलोल षट पद दिसि सुगंधा भर्णहै ॥ १ ॥ शशिनिकट ते संगीत मानहु करत अलि

कल गानसों ॥ गुनिभीर गनपति तेहि दुरावति चपल अपने कामसों ॥ उरहार कंचन कनक मनिमय मुकुट मस्तक सो-
हई ॥ रद एक तन अस्थूल बरदुति देखि उपमा मोहई ॥ २ ॥ पट पीत आखु सवार पैज निचरन शब्द अपार है ॥ अंबुज
कुठार सुपास अंकुस लसत बर भुज चार हैं ॥ बर वरन आनंद करन संकट हरन क्रोधा बेस हैं ॥ तेहि काल हे नर पाल
यादव दलहि दलत गनेश है ॥ दोहा ॥ अंकुस पास कुठारतें करत चले संहार ॥ दौर दौर मूषक चढ़े भेयदु दुखद
अपार ॥ ४१ ॥ अमृत ध्वनि ॥ जज्जज्जज्जादव दलत कक्कक्कर करि लंब ॥ सस्सस्सस्समर जित भम्भम्भट हेरंब ॥ भम्भ
म्भट हेरंब व्वमकि दुअंब व्वज्जत ॥ रिस्सस्सवनसु दिस्सस्सरकि बिदस्सस्सज्जत ॥ मग्गग्गरजि अडग्गग्गहतसल
ग्गग्गज्जत ॥ धर्रर्रहसि गर्रर्रपटि समररज्जत ॥ १ ॥ दद्दद्दद्दद्द इक चच्चच्चवत मद्द ॥ मम्मम्मम्मूषक चढ़े बज्जव्वव्व
लहद्द ॥ बव्वव्वव्वल हद द्दद्दवरि मरद्दत द्दद्दैं ॥ जज्जज्जज्जुरू विरूरूपटि सुररूरूट्टैं ॥ पप्पप्पप्पास लपक्कक्करनरू-
पक्कक्कट्टैं ॥ बव्वव्वीर गनन्नन्नन्नर गिरनन्नन्नट्टैं ॥ २ ॥ पप्पप्पड फहरात है बव्वव्वाढ्यौ मोद ॥ सस्सस्सस्समर में थ-
थ्थथ्थलकै थोंद ॥ थथ्थथ्थलकै थोंद द्दवरि बिनोद द्दर्रै ॥ रूरूरूट्ट विकक्कक्कट निकट्ट द्दर्रै ॥ रूरूरूप्पप्पप्पारप्पप्पप्प
र्रै ॥ बव्वव्वल्ल करै जिमि मल्ल प्रबल्लल्लर्रै ॥ ३ ॥ धद्धद्धद्धनरत्तिओरसों कक्कक्कोपा बेस ॥ कक्कक्केशव सों लरत गग्गज्ज
बदन गनेस ॥ गग्गज बदन गनेस स्समर कुभेस स्ससैं ॥ कक्कक्कोप गरव्व व्वमकि सरव्व व्वरसैं ॥ भम्भम्भटन अल भ-
म्भभकि सलभ्भम्भरसैं ॥ मम्मम्मारत मूकक्करन असूकक्करमैं ॥ ४ ॥ दोहा ॥ बिष्णु कला हेरंब कहि कोप कियो बिक-

राल॥ झटकि पटकि झट लटकि सिर कीन्हो लोढा ढ़ाल॥१४२॥ शाम्बकेर रथ लीन्ह उठाई॥ पटकत भए हृदय रि-
सिआइ॥ गनपहि क्रुद्ध करत लखि युद्धहि॥ भे प्रद्युम्न कहत अन रुद्धहि॥ कृष्ण कला गनेस यह अहहीं॥
विचरतासु जादिसि ये रहही॥ हरि इनकहँ दीन्हो बरदाना॥ हर अस्थान करन कल्याना॥ ११॥ सो अरि पक्ष
गए गन राई॥ करि उपाय कछु देहु भगाई॥ आखु आसु भगिहै लखि बिल्ली॥ सो वनि करहु विनायकु खि-
ल्ली॥ इन कहँ पूजै ध्यावै जोई॥ ताहि न नेकु अमंगल होई॥ यहतो आए आपु सहाई॥ ताते इनहि भ्रमा बहु
भाई॥ दोहा॥ भे बिलार अनिरुद्ध तब जान्यौ नाहि गनेस॥ हरिकी माया प्रबल अति जानेहु सत्य जनेस॥
१४३॥ परम भयंकर करि फुफकारा॥ नखते द्रुत बहु भूमि बिदारा॥ गो मूषक सन्मुष रिस पागा॥ लै इक
रदसो आतुर भागा॥ गनपति पुनि पुनि रोकत ताही॥ सोकि रुकै सु काल भै जाही॥ पीछे पीछे चल्यौ
बिलारा॥ सप्त दीप सब सिंधु पहारा॥ नहिं हरि सुत मूरख पन ठए॥ पंच कहेते बिल्ली भए॥ मूश कारि
मूषपाके पाछे॥ इत उत सो दिखात छबि आछे॥ जहँ जहँ मूसा तहँ तहँ बिल्ली॥ यादव करन लगे लखि बिल्ली
जब गनेस रन त्यागि पराए॥ भागे भभरि यक्ष भय छाए॥ दोहा॥ पुष्पक बैठि कुबेर तब धनु गहि नौमिम-
हेस॥ गुह्यक की माया करी जो भय करी विसेस॥ छाए घन संवर्त्त से व्योम बीच सब ओर॥ ॥ परन लगी
पप घोर अति सोर भयो अति जोर॥ १४४॥ गजसे बिंदु सुंड सम धारा॥ बरषे परवत टूक अपारा॥ उड़हि

पहार हिमाचल विंधू॥ भए एकसे सातहु सिंधू॥ प्रलय जानिकै जकै सगरायुध॥ हरि हरि यदुभे कहतनि रायुध॥ लखि प्रद्युम्न चाप सर धरिकै॥ सत्य मयी बिद्या बिस्तरिकै॥ मध्य काम के बीजहि राखा॥ मुख महँ प्रन बधर्‍यो सुख चाखा॥ पुंख माहिं श्री बीजहि धारी॥ तज्यौ तडित सम शब्द अपारी॥ सोसर भयो नसावत माया॥ ज्ञान उदय जिमि भरम नसाया॥ जानि कुबेर कुबेर अपानी॥ गोगृह भागि राखि निज पानी॥ दोहा॥ यादव जय भाख्यौ सुरन बरषि प्रसून अपार॥ मनुज सबै हसतें भए जय जय कृष्ण उदार॥ तब डरिकै सँग भेटलै राज राज हित काज॥ आइ दयौ प्रद्युम्न कहँ साज बिबिधि बिधि साज १४५॥ छप्पै॥ दोय लाख गज दिये दोय सुंडा जिनकेरी॥ चार दंत मदवंत पवन सम चलत अदेरी॥ दस लख सुरथ जराऊ कंचन की दुति ताजी॥ बायु बेग सम जामे लागे बाजी ताजी॥ दस अर्बुद घोरे दये कौन बखानै चालकी॥ दीन्ही कंचन रतनकी चार लाख गनि पालकी॥१॥ पंजर बैठे दोइ लाख नाहर पुनि दीन्हा॥ चित्रित मृग बहु अरु अनेक चित्ता गुनि दीन्हा॥ कोटि सिकारी स्वान दियो अरु पक्षिन दीन्हा॥ हंस सुवा मैना सारस वर लक्षन दीन्हा॥ धरि धरि पिंजरा पुरट महँ इन सब कहँ देते भए॥ लाख लाख इक जात के गनि यादव लेते भए॥२॥ ऊँचो योजन आठ कोस छत्तिस लंबाई॥ विसुकरमा कृत कलसा लाख ध्वजा फहराई॥ मुक्तामनितें जटित सहस्र सिखर सरसाए॥ हरिको दियो विमान सोऊ

धन नायक लाये॥ सहस कल्प पादप दयो काम धेनु सत भेट किय॥ सत पारस चिंतामनी दिय अतिलै आनंद जिय
३॥ छत्र चँमर अरु व्यजन हेम सिंहासन सतवर॥ भूषन बिबिधि प्रकार रगीनं दिए बहु अंबर॥ दीन्ह दुसाले शस्त्र
अमित बाजन बहु रनके॥ बर तन रतनन जड़े धरे अगिनित सोननके॥ दीन्ह भार बर दार पुनि धन सर दार अपार
धन॥ पुनि सप्रेम बंदत भये नंद नंद नंदन चरन॥ ४॥ दोहा॥ करि प्रदक्षिना जोरि कर पूस्यौ उरमै ज्ञान॥ अस्तुति
करत नवाइ सिर जानि स्वयज्जग त्रान॥ १४६॥ तोमर॥ जय पर पुरुष भगवान॥ निर्गुन अनाम महान॥ तुम प्रकृ-
ति पुरुष प्रधान॥ मति मान ज्ञान निधान॥ कृत सर्व धाम निवास॥ बपु श्याम स्वयं प्रकाश॥ जय बासु देव महा-
न॥ बलदेव ज्ञान निधान॥ २॥ प्रद्युम्न जय अनिरुद्ध॥ यदुनाथ जय जयशुद्ध॥ कंदर्प दर्पण मार॥ जय मदन
गुण आगार॥ ३॥ जय पंच शर जय काम॥ जय दलन संवर नाम॥ कुश मेस भव भगवान॥ जय मीन केतु महा-
न॥ ४॥ मन मथ मुकुंद अनंग॥ झषकेतु जय रति रंग॥ जय पुरुष धनु जग जीत॥ बर आत्म भुवन अभीत॥
५॥ रति रति करण रति नाथ॥ जय बरसरासन हाथ॥ ६॥ दोहा॥ भूलिरह्यौ अज्ञान जग करता आपुहि मानि।
हमहि कियो करिहैं करत यह सुख दुख अनुमानि॥ १४७॥ सवैया॥ तनको अभिमान धरे अतिही करता निज
को करि मानतहैं॥ नहिं जासु ठिकान घड़ी एकहू तेहि ब्रह्म हुतें बढ़ि जानतहैं॥ गिरि धारण नाम भुलाय दियो
सुख दुःख वृथाहि प्रमाणतहैं॥ कबहूं जल ढारि दियो दृगतें रद काढि कबौं सुख आनतहैं॥ १॥ जग जीवन

मर्ण प्रमाण करैं गति तासु भविष्य दिखावतु हैं॥ जनमें सु मरे हितके मिलिकै मृत जीवत चाम बजावत हैं॥ गिरि धारण नाम बिना भवमें अवलंब नए कहु पावत हैं॥ तव नाहि रहो अब नाहि अहै नविचार हृदै अस लावत हैं॥ २॥ दोहा॥ क्षमहु मोर अपराध सब दीनंबधु हित लाग॥ दीजै इतनी चीज कहँ भक्ति ज्ञान बैराग॥ सोरठा॥ पढ़ै सुनै चित लाइ अस्तव यह प्रद्युम्नको॥ संकट ताको जाय कृपा करहिं प्रद्युम्न पितु॥ १४८॥ भए मुदित झखकेतु प्रबीना॥ पंकज राग शिरोमनि दीना॥ लीला छत्र चँवर सिंहासन॥ दैकरि अभय कियो संभाषन॥ हरिहि वंदि सँग हाथी हलका॥ जात भए कुबेर निज अलका॥ चले बहुरि अनिरुद्ध समेता॥ डरे भूप लखि यदु जग जेता॥ देत नगारे आनँद धारे॥ प्राग्जौतिष पुर बीच पधारे॥ नील नाम नृप नरक कुमारा॥ डलि बलि दीन्ह कीन्ह मनु हारा॥ गोपुर तहाँ दुविद कपि रहेऊ॥ निज रिपु जानि क्रोध पुनि गहेऊ॥ उठि कर पगतें नरन बिदारी॥ क्षण महँ यादव सैन विडारी॥ दोहा॥ रथ गज नर हय पकरिकै लांगूलहि लटकाय कोटि न डार्यौ सिंधु मैहँ कोपि नचाय नचाय॥ १४९॥ पुनि हरि सुवन बाण वर मारा॥ सोलै किष्किंधा महँ डारा॥ शर पुनि आइ निखंग समावा॥ षट्कुल बहुरि चलत हर षावा॥ देखत बर कुसमित बन सोभा॥ सरस सरोज शिली मुख लोभा॥ यक्षन सुंदर राह बताए॥ हरिकिं पुरुष खंड तव आए॥ रंग बल्लि पुर जहाँ न गीचे॥ हेम कूट परवत के नीचे॥ तहँ किं पुरुष भक्त सब आए॥ प्रेम पूरि यह अस्तुति गाए॥ अहो धन्य

मधुपुरी सुजाना ॥ जहँ भे प्रगट स्वयं भगवाना ॥ अहो धन्य यदु कुल रिपु घालक ॥ जहँ भे प्रगट विश्वप्रति पालक ॥ दोहा ॥ धन्य शौरिको भवन सो गऊ लोक की ठाम ॥ माथुर मंडल धन्य अति जहँ विचरे घनश्याम ॥ १५० ॥ गोकुल अहै धन्य तम भारी ॥ पितु गृहतें जहँ रहे मुरारी ॥ बल ग्वालन सह माधव खेले ॥ यसुमति दुग्धो धर मुख मेले ॥ वृंदावन परतें पर धन्या ॥ हरि पदरेणु विराजन अन्या ॥ जहँ गोचारत नित गोपाला ॥ संगलिए ग्वालन की माला ॥ दान मानकी लीला कीनी ॥ बनिता बहुरि रास रस भीनी ॥ सो कानन पुनीत मन भावै ॥ जाकर सुजस बेद सब गावै ॥ अहो धन्य वृषभान कुमारी ॥ लीलावती लालकी प्यारी हरि संग भानु सुता तट बिहरत ॥ जेहि लखि रति रति पति मन बिहरत ॥ दोहा ॥ अहो धन्य यमुना नदी वाम अंश ते जौन ॥ जातट सारस हंस अलि करहिं प्रेम भरि रौन ॥ १५१ ॥ अहो धन्य गोबर्द्धन शैला ॥ जो हरिके उउरतें कढ़ि फैलत ॥ व्रज मंडल महँ राजत सोई ॥ जाहि लखे पुनि जन्म न होई ॥ अहो धन्य मंडली यदुनकी जहँ परि पूरन तम छवि मनकी ॥ परम धन्य द्वारावति गाई ॥ श्री वैकुंठ लोकतें आई ॥ राजत राम सहित जगदीशा ॥ जहाँ पुन्य डोलत दश दीशा ॥ उग्रसेन कहँ कीन्ह धरापति ॥ हम बंदत सो हरिहि महामति यज्ञ हेत मकरध्वज स्वामी ॥ होत भए हमरे पथ गामी ॥ करि तितको दरसन हम आजू ॥ भए कृतारथ सहित समाजू ॥ दोहा ॥ ऐसे हरिके चारु यस विसद तिहूँ पुर माहिं ॥ ताहि कहा हम कहि सकै कृपा कीजिए

बाहि ॥१५२॥ इमि निज यस सुनि आँनद भीना ॥ शंब रारि निनकहँ धनु दीना ॥ हार रतन केयूर मनोहर ॥ मणि कुंडल किरीट बर अंबर ॥ भेट दीन्ह तहँ को नर नाहूँ ॥ चंद्र बेग सुत नाम सुबाहू ॥ हरि सुत दै इनाम चूड़ामनि ॥ पूछत भए हृदय आनंद गुनि ॥ रंग बल्लि यह पुरकर नामू ॥ किमिभो कहहु भूप बुधि धामू ॥ सुकर तबै बोल्यौ गहि सुख घन ॥ सागर जबै मथ्यौ सुर असुरन ॥ तेरह रतन चारु प्रगटाए ॥ तब पीयूष दरस सर पाए ॥ तेहि छन मुदित भए भगवाना ॥ लोचन ते जल बिंदु खसाना ॥ दोहा ॥ तातें तुलसी तरु भयो तासु धर्यौ हरि नाम ॥ रंगबल्लि सोभाभरी इहै खंड मैं धाम ॥१५३॥ यह परबत के तट तरु सोई ॥ हरि थापित परमा जुत होई ॥ रंगबल्लि वर सदा बिराजै ॥ यही नाम तें पुर यह छाजै ॥ हनुमत आर्षि सेन गंधर्बा ॥ नित इत आवत पूजन पर्बा ॥ समय मध्यान्ह माहि एदोऊ ॥ जिनसम राम भक्त नहिं कोऊ ॥ सुनि सम्बर रिपु तरुहि निहारी ॥ करि दंडवत पूजिकै भारी ॥ आगे चलि बन लख्यौ अपारहि जहँ झिल्ली झनकार झकारहि ॥ चित्ता सिंह द्विरद मतवारे ॥ जाब जाह जाज्याह निहारे ॥ खदिर बंस बट पीपर भोजा ॥ हरै बिसारिव मदार महोजा ॥ दोहा ॥ परम भयंकर बिपिनितें दस योजन के सर्प ॥ निकरि खान लाग्यौ गजन फुः कारत भरि दर्प ॥१५४॥ हाहा कार भयो तब भारी ॥ जरहिं स्वाँसतें पादप झारी ॥ भानु स्वभानु तथा अति भानू ॥ वृहद भानु स्वरभानु प्रभानू ॥ चंद्र भानु श्रीरबि प्रति भानू ॥ भानु मानु सह दस मति मानू ॥ सत्य भाम सुत बढ़िकै आगे ॥ अहि कहँ बान प्रहारन लागे ॥ तातें तुरित त्यागि तन खर्बा ॥ तुरतहि दिव्य भयो गंधर्बा ॥ स्वर्ग गयो प्रताप को ऐना ॥

हरि नंदन प्रविसे निज सैना ॥ सुनि बहुलाश्व बचन यहं कहेउ ॥ कोयह पूर्व गंधरब रहेउ ॥ किमिभो अजगर अजगुत एहू
सुनिमुनिकहतभएगुनएहू ॥ दोहा ॥ अर्षि सेन गंधर्ब को अनुज स्वमति असनाम ॥ कनक कूटपर बायुसुत हरिगुन कह-
हि ललाम ॥ १५५ ॥ नित रामहि पूजत हनुमाना ॥ चौदह घडी केर परिमाना ॥ ध्यान धरेउ कपि तहं यह जाई ॥ स्वांस
बडी कर दीन्ह जगाई ॥ श्राप दीन कपि कोपि कराला ॥ दीरघ स्वांस होसि तूं बाला ॥ तव धरि चरन जोरि कर भा वा
मैतव चरन सरन अभिलाषा ॥ ह्वै प्रसन्न तब हरि यह कहा ॥ द्वापर हरि सुत ऐहैं तहां ॥ तिन्ह सरते कढ़िहै तव प्रा-
ना ॥ तब पैहौ निज रूप सुजाना ॥ संत शाप ह्वै है सुख दाई ॥ सुनहु कथा चितदै नर राई ॥ चैत्र देस हरिसुत दल
आयो ॥ लखत माधवी वृंद सुहायो ॥ दोहा ॥ गिरहि रेनु जहं जलजकी रहे मत्त अलि झूलि ॥ लोल लवंग लतान ल-
गि सुमन रहे शुभ फूलि ॥ १५६ ॥ अयुत नाग वल जहं के नरहैं ॥ त्रेता सरिस चाल घर घरहैं ॥ जरा सेद मार पिकु
गंधा ॥ रहित रहहिं भरि आनंद कंदा ॥ आयुस अयुत सरिस जब सोना ॥ सुधा सरिस जल सरिस सलोना ॥ खा
नि मणिन की अमित रसाला ॥ प्रमुदित प्रमदा केलि विशाला ॥ घन बसंत तिलका वनि नगरी ॥ परम प्रेम तें
पूरित सगरी ॥ तहं शृंगार तिलक नरराई ॥ सो चैत्री बीरन बुलवाई ॥ आएउ लरन हेत बलवाना ॥ करत चापको
शब्द महाना ॥ जाम्बवती के सुत दस धाए ॥ ताके दलमहं बहु सर छाए ॥ दोहा ॥ शाम्ब सुमित्र सहस्र जित चि-
त्रकेतु पुर जीत ॥ बिजय सुकृत दुति भान पुनि अरु द्रुबिंदु सतजीत ॥ १५७ ॥ इनहि सैन निज मर्दत देखी ॥ गहि

त्रिशूल सो भूपति तेखी॥ शाम्बहि छेदि भूमि पर डार्यौ॥ अरु सरतें सबहिन महि पार्यौ॥ इहि बिधि तिनहिं सुताइ धरा पर॥ लसेउ अनल जिमि सूख रूख बर॥ गद तब आइ पकरि गज तासू॥ पटकत भो भ्रमाइ कै आसू॥ दूरि गिर्यौ गज सह नर राई॥ डरि कै दीन्ह भेट तब आई॥ अर्बुद हय रथ लक्षन बीने॥ अयुत मतंग मानो जहि दीने॥ जीति खंड किं पुरुषहि ऐसे॥ तब हरि बर्ष खंड महं पैसे॥ ताकी सींवा निषद पहारा॥ चले निषाद साथ रह दारा॥ दोहा॥ परम शब्द दल को सुनत तेहि छन अगिनित गिद्ध॥ उड़े कोशलौं रोस भरि औगुन ऐन प्रसिद्ध॥ १५८॥ गरुड़ सहित तीक्षन पग तुंडा॥ खान लगे चतुरंग क झुंडा॥ खगतें भर्यौ व्योम नरपाला॥ अंधकार अति भयो बिशाला॥ गरुड़ अस्त्र हरि सुवन प्रहारा॥ निकरे गरुड़ नभग भरतारा चरन नखन पर तुंड प्रहारे॥ गिद्ध कुलिंग गरुड़ गन बारे॥ भग्न दर्प भरि डरि खग सारे॥ भागि गए खगपति के मारे॥ तबलै शद अक्षोहिनि सैना॥ गए दशार्न देस यग जैना॥ तहँको नृपसु भोग बलवाना॥ बेद व्यासतेंहि सकल बखाना॥ हरि गुनि हरि पुत्रहि सो राजा॥ भेट दियो गहि हर्ष दराजा॥ दोहा॥ हरि सुत पूछ्यौ देसको भो दसार्न किमि नाम॥ मोहिं कहहु सो अवनि पति बुद्धि धाम अभिराम॥ १५९॥ कहत सुभोग सुनहु चित लाई॥ नर हरि हत्यौ कनक चख भाई॥ लखि प्रहलादहि आनँद पाए॥ जानि भक्त अति बचन सुनाए॥ तुमसे भक्त तासु पितु मारा॥ अबन मारिहौं बंस तुम्हारा॥ ताके मधि अघ रह्यौ अपारा॥ करिभो प्रेम नृसिंहहि भारा॥ लोचन

तें जल बहेउ ललामा॥ भएउ मंगला यन सरनामा॥ तब प्रहलाद मुदित बर पाई॥ बोले बानी सीस नवाई॥ हम पितु मातुहि पूज्यौ नाहीं॥ तिन रिन किमि न रहै मम माहीं॥ कह नृसिंह मेरे लोचन जल॥ भयो मंगला यन सर इहिथल॥ दोहा॥ मातु पिता त्रिय पित्र सुर गुर द्विज ऋषिसु प्रपन्न॥ सत सह दस रिन जातहै जेहि नहाय कै धन्य॥ १६०॥ तहं नहाहु तुम रिन सब जाई॥ याकर यह प्रभाव अधिकाई॥ जब एहि भांति बषानेउ माधव॥ रिन बिनमें नहाइ काया धव॥ दस रिन मुंच जाइ तेहि न्हाए॥ सो दसार्न तीरथ जग गाए॥ तहं हरि सुवन सबन सह गए॥ न्हाइ दान बहु देते भए॥ जो दसार्न की कथा सुनत है॥ तिन को रिन सब सीस धुनत है॥ कार्ष्णि बहुरि कुरु खंड पधारे॥ शृंग बान उत्तरहि निहारे॥ भद्रा गंगा न्हाइ परेख्यौ॥ बाराही नगरी कहँ देख्यौ॥ कुरु खंडेश गुना कर नामा॥ रहत चक्र बर्ती गुन धामा॥ दोहा॥ अश्व मेध सो दसम कहँ करत भयो सोइ भूप॥ देव ऋषिन संयुक्त अति परम प्रताप स्वरूप॥ १६१॥ श्याम कर्न घोरा कहँ छोरा॥ तासुत बीर धन्व प्रति जोरा॥ रक्षत दस अक्षोहिनि सैना॥ सोउ दल गैल मिल्यौ जग जैना॥ बीर चंद्र बसु आम बेग धर॥ ऋषि ग्रीमान कुंत शंकु बर॥ सेन चित्त गू नाम सुधारे नग्न जिती के ए दस बारे॥ सो मख अश्व पकरि हरखाए॥ हरि सुत समर माँहि लै आए॥ मदन भालके पत्रहि पढ़िकै॥ बिस्मित भए सदल सुख मढ़िकै॥ तब हय खोजत तिन्हन परेखा॥ दूरि धूरि पूरन बर देखा

कहहिं गुनाकर नृप चक्रबर्त्ती ॥ इत नहि चोर भ्रमहि भय धरती ॥ दोहा ॥ गऊ न आवत बिपिन तें बात चक्र नहिं होइ ॥ इत काहे अति उड़त रज कारन लखिये सोइ ॥ १६२ ॥ बिस्मित कुरु महीप की सैना ॥ सुनेउ शब्द धनुको जग जैना ॥ हय हिंसन करिंद्र चिक्कारा ॥ जानेउ है कोउ भूप अपारा ॥ तबऊधव हरि अज्ञापाई ॥ गए बीर धन्वाढ़िग भाई ॥ बंदित बै महीप के पुत्रहि ॥ कहत जोरि कर गिरा पबित्रहि ॥ उग्र सेन यादव महिपाला ॥ जंबू दीप जीतके हाला ॥ करि नृप सूय पुन्य तम ह्वैहैं ॥ अघकी सैल सत्य सब ध्वैहैं ॥ भेट लेन हित तिनके भेजे ॥ आए श्री प्रद्युम्न सहंजे ॥ भारत किंपुरुषहि हरिबरषहि ॥ जीत्यौ धना धीश गुरु बरषहि ॥ दोहा ॥ शत अक्षो हिनि संग है घने बीर बलवान ॥ जग ऐसो नहि समर जित शस्त्र धरन भट त्रान ॥ १६३ ॥ जासु सहाय कृष्ण जग दीशा ॥ तिनहि हर्यौ मख बाजि महीशा ॥ तिनके मिले होइ कल्याना ॥ बीर धन्व सुनि बचन बखाना ॥ कृत पूजित नर नाह गुनाकर ॥ नहिं देहौं बलि बीर गुना कर ॥ सूकर बिश्व सिंगबत पासा ॥ अहहि धरा पूजित गुन रासा ॥ तहँ तप कीन्ह पिता मम जाई ॥ अयुत बरष लौं उर हरखाई ॥ हरि तब कह्यौ मांगु बर दाना ॥ बंदि तबै मम बाप बखाना ॥ तुमहि त्यागि हम होहिं अजेया ॥ यह बर देहु दयाल अभेया ॥ दे बर गए बराह कृपाला ताते हौं अजेय नर पाला ॥ दोहा ॥ नब हय मेधहि करि चुके सकत जीति नहि सक्र ॥ तातें नहिं बलि

देइहै करिहै करिहै संगरवक्र॥ सुनि ऊधव हरिसुत ढिग आए॥ तित कर बर बिरतांत सुनाए॥ श्रुति कर्मा दशशां-
ति सुबाहू॥ वृषी बीर भद्रक भट नाहू॥ ऊर्न मास सोमक बर जोधा॥ कालिंदी सुत दस गहि क्रोधा॥ दस अक्षोहिनि
लै संग सैना॥ भिरे कुवेनन तें बढि बल ऐना॥ भारन तुमुल कहा नहि जाइ॥ मनहु सिंधु द्वै करत लराई॥ बाहन बा
हतु वीर बिराजे विविधि भाँति के बाजे बाजे॥ परिघ मुशल असि असनि भुसुंडी॥ चलन लगे बढि रथी बितुंडी॥
गदा पानिते भिरि भिरि तदा॥ मुरदन कह पहार बरलदा॥ दोहा॥ छन महँ तहँ प्रगटत भइ नदी भयानक भेस॥ रु-
धिर भर्यौ दसहू दिसन चालिस कोस असेस॥ १६५॥ पूर्न मास हरिसुत तेहि काला॥ विरचि बिबिधि बानन के जा-
ला॥ सुभट बीर धन्वा सो भिरिकै॥ कीन्हो युद्ध भयंकर थिरिकै॥ तेहि छन दसभट सो भिरि भिरिकै॥ कुरुपति बान
भर्यौ दस दिसिकै॥ पूर्न मास अति लाघव कीन्हो॥ घोरन मारि तोरि रथ दीन्हो॥ बिरथ तमकि कै तब कुरुईसा॥ मार्यौ
हरि पुत्रहि सरवीसा॥ पूर्न मास तजिसर अति बारे॥ काटि मध्यतें सरन बिदारे॥ करि लाघव तेंहि छन व्रत धन्वा॥ काट्यौ
धनुष डोरि बल अन्वा॥ लाखभारकी गदा उठाई॥ हरिसुत तिनपर तज्यौ घुमाई॥ दोहा॥ ताकहँ सहिकै परिघ कहँ
मारत भयो रिसाइ॥ आसु लियो हरिसुत तबै यवन प्रहार उठाइ॥ १६६॥ पारि पात्र अरि पर्वत भारा॥ ताहि गुनाकरसों
न उखारा॥ दुहुन गर्जि गिरि दोय पवारे॥ बीचहि चूर भये ते भरि॥ बहुरि बीर धन्वा बलवाना॥ मूका लरन लग्यौ घमसा-
ना॥ समर भयो न जात कहि भाई॥ हरिसुत अरि सुत लीन्ह उठाई॥ फेफ्यौ जाइ सभा नर पतिके॥ गिरेउ वीर धन्वा दुख अति

के ॥ रुधिर बमन लाग्यौ निज मुखतें ॥ कुरुगन निरखि भए गत सुखतें ॥ पूर्न मास परसुर समुदाई ॥ फूल बरषि जय गिरा सुहाई ॥ सुनहि बिकल लखि नृपति गुनाकर ॥ उठि मखतें कर लीन्ह चापसर ॥ दोहा ॥ जात देखि नर पाल कहँ क्रोध बिबस गुनि भेव ॥ हाथ पकरि भाख्यौ बचन बाम देव द्विजदेव ॥ ६६७ ॥ नृप तुम पूर्न तमहि नहि जाना ॥ सुर हित यदुकुल भे भगवाना ॥ भार उतारन भूको भाई ॥ द्वारावती बसे हरषाई ॥ हरि सुत प्रद्युमन इत आए ॥ यदुपति मखहित सैन सजाए ॥ सो सुनि कहौ गुनाकर बानी ॥ परि पूरन तम हरि अति ज्ञानी ॥ लक्षन तिनके कहिय अमोले ॥ बाम देव मुनि सुनि यह बोले ॥ यामहँ लीन तेज सब होई ॥ परि पूरन तम कहिये सोई ॥ पूरन अंश कला आवेशा ॥ सृष्ट और अंशांस बिशेसा ॥ परि पूरन तम कृष्ण न दूजे ॥ कोटि काज करिहै जग पूजे ॥ दोहा ॥ सुनि आचारज के बचन बैर बिहाइ नरेश ॥ बैष्णव धार्मिक मुदित चित आवत भो तेहि देस ॥ १६८ ॥ दैबलि नौमि प्रदक्षिन करिकै ॥ कहत बचन गद गद दृग भरिकै ॥ आज सफल कुल जन्म हमारा ॥ सफल भयो मम हय मख सारा ॥ भक्ति तुम्हारि परम पद दाता ॥ सदा होइ सत संगति ज्ञाता ॥ तुम निज भक्त हेत जग दीशा ॥ पाहि पाहि छमिये अघ ईसा ॥ तब प्रद्युम्न कह्यौ बड़ भागा ॥ तुम कहँ होइ ज्ञान बैरागा ॥ प्रेम लक्षना भक्ति समेता ॥ भागवती श्री सुंदर हेता ॥ इमिदै वर मख अश्वहि दीनो ॥ नृप पद बंदि गवन गृह कीनो ॥ कुरु खंडहि जय करि सह सैना ॥ गए हिरनमय महँ जग जैना ॥ दोहा ॥ श्वेत अद्रि जाखंड के सीमा जानहु श्वेत ॥ देव तहाँ के कमठ हरि पूजनीय बर देत ॥ १६९ ॥ पुष्प माल सरि तट वन भारी ॥ चित्र नाम फल फूल कतारी

तहँ नल नील बंशके बाँदर॥ रहहिं प्रबल भट चरहिं अकादर॥ द्वापर माहिं रामके राखे॥ तथा सकल संगर अभिलाखे॥ नख कर दंत चरन तें मारन॥ लागे गज हय पकरि प्रहारन॥ पूछि लपेटि हिरद रथ घोरे॥ पटकहिं अंबर जाहिं अतोरे॥ कपि ध्वजके ध्वज महँ लपटाए॥ तब कपिराज अतिहि रिसि राए॥ कूदि कोपि दृगन अरुनाई॥ सत योजन को रूप बनाई॥ बाँधि पूछिते सबकहँ पटका॥ बिह बल कीन्ह सकल बल सटका॥

दोहा॥ जानि मित्र निज वायु सुत राम दास बल धाम हाथ जोरि कै मुदित सब लागे करन प्रनाम॥१७०॥ मिलत कोउ कोउ कुशलहि पूछा॥ कोउ प्रमुदित चूमहि पद पूछा॥ तिनतें मिलिकै अशिष देई॥ कुसल पूछि समुझायो सेई॥ तें सब विदा होइ कै गए॥ कपि पारथ ध्वज बैठत भए॥ मकर देस हरि सुवन सिधारे॥ सदल मकर ध्वज देत नगारे॥ मकर नाम गिरि केर तरेटी॥ कढी भ्रमर मंडली अरेटी॥ कादन लगे सकल चतुरंगा॥ पौन अस्व छाडेउ रीति रंगा॥ तिनतें तेसब भ्रमर नसारे॥ डिंडिम नगर काम चलि आए॥ तहँ गज मुखके नरन निहारे॥ सबन हृदय लखि अचरज भारे॥ दोहा॥ बहुरि शिंशुंग नगर गए तहाँ शृंगधर लोग॥ स्वर्ग चर्चिता पुरी तिन स्वर्ग मई सुख जोग॥१७१॥ तहँके नर नारी छबि छाए॥ जात रूप सम रूप दिखाए॥ निशि कर कांता नदी किनारे॥ नागसुतन कहँ केलि निहारे॥ गये कृष्ण सुत सहित समाजा॥ रहेउ देव मुख तहँ को राजा॥ मेरे मुखतें यदुबल सुनिकै दीन्हो भेट जगत गुरु गुनिकै॥ तिनतें कह्यो कृष्ण सुत बानी॥ तुम सब किहि हित होत खुनि खानी॥ कारन यासु कहो

नृपतन कह्यो गोवर्द्धनमाहीं ॥ १ ॥ कहिये कितने तीरथ आहीं ॥ मुख्य मुख्य मोहि कहिय बखानी ॥ मुनिबो
ले मुनिके मनिज्ञानी ॥ तीरथ रूप शैल यह अहई ॥ वृंदावन मोपर मन रहई ॥ गो

नाई॥ सत योजन को रूप बनाइ॥ बाँध [illegible]
दोहा॥ जानि मित्र निज वायु सुत राम दास बल धाम हाथ जोरि कै मुदित सब लागे करन प्रनाम॥१७०॥ मिलत कोउ कोउ कुशलहि पूछा॥ कोउ प्रमुदित घूमहि पद पूछा॥ तिनतें मिलिकै आशिष देई॥ कुसल पूछि समुझायो सेई॥ तेसब विदा होइ कै गए॥ कपि पारथ ध्वज बैठत भए॥ मकर हंस हरि सुवन सिधारे॥ सदल मकर ध्वज देन नगारे॥ मकर नाम गिरि केर तरेटी॥ कढी भ्रमर मंडली अरेटी॥ काटन लगे सकल चतुरंगा॥ पौन अश्व काउेउ रीति रंगा॥ तिनतें तेसब भ्रमर नसाए॥ डिंडिम नगर काम चलि आए॥ तहँ राज सुखके नरन निहारे॥ सबन हृदय लखि अचरज भारे॥ दोहा॥ बहुरि त्रिशृंग नगर गए तहाँ शृंगधर लोग॥ स्वर्ग चर्चिता पुरी तिन स्वर्ग मई सुख जोग॥१७१॥ तहँके नर नारी छवि छाए॥ जात रूप सम रूप दिखाए॥ निशि कर कांता नदी किनारे॥ नासुतनकहँ केलि निहारे॥ गये कृष्ण सुत महित समाजा॥ रहेउ देव मुख तहँ को राजा॥ मेरे मुखतें यदुबल सुनिकै [illegible] भेद जगत गुरु गुनिकै॥ तिनतें कह्यो कृष्ण सुत बानी॥ तुम सब किहि हित होत खुति खानी॥ कारन यासु कहो [illegible]

बल वाना ॥ सुनि सुदेव मुख बचन बखाना ॥ अर्घ्यम पित्र पती यक बारा ॥ कमठ बिष्णु कर चरन पखारा ॥ ता-
तें यह सरिता सरसाई ॥ गिरि शृंग वत सीसतें आई ॥ दोहा ॥ मनु सुत रह्यो प्रसिद्ध कहि तिनके गुरु सु बसिष्ठ
अज्ञा पाइ चरावई नित सुरभी धर मिष्ठ ॥ तहां सिंह धोरवे हत्यो निशि महं कपिला गाइ ॥ तातें दीन्हो आप गुरु
पुरु भए नर राइ ॥ १७२ ॥ घूमत रह्यो भूमि भरि पीरा ॥ इत नहाइ भो स्वच्छ सरीरा ॥ चंद्र सरिस तन भयो ल-
लामा ॥ भई सरिस ससि कांता नामा ॥ तम सब तामे न्हाइ कृपाला ॥ तातें ससि सम कांति रसाला ॥ सदल मदन
सुनि सरित नहाए ॥ दान दिये उर हरष बढ़ाए ॥ जीति हिररामय खंडहि ऐसे ॥ रम्यक के मधि सम्यक जैसे ॥
नील नाम गिरि सींवा ताकी ॥ ताके उत्तर नगरी बाँकी ॥ परम कराल क कालक देसा ॥ तहं कलंक निशिचर खं-
ल भेसा ॥ कालनेमि सुत रहत दुजनमें ॥ भगेउ लंक नें रावन रनमें ॥ दोहा ॥ निसिचर गन सह कोपि सो सुनि नर
दल आगौनें ॥ कृष्ण बरन रासभ चढ्यो आयो रनहित तौन ॥ सिंह प्रशोषक ओज सह अपराजित बल नाम ॥
प्रबल ऊरधा गात्र वत महा शक्ति अभिराम ॥ एलस्मना कुमार दस बढ़िके धनु टंकारि ॥ सदल भिरे राक्षसन सों
भूप भयो रनभारि ॥ १७३ ॥ भुजंग प्रयात ॥ घने बान मारैं घने लक्ष कारैं ॥ घने मान वाभीति भागौ पुकारैं ॥ महा
राज भो युद्ध सो काल भारी ॥ भिरे हैं मनु ध्यान सों रात्रि चारी ॥ १ ॥ हरीके कुमारे सबै बान मारैं ॥ घने शत्रु को
काटिके भूमि डारैं ॥ लसें बानतें पूरिकै रात्रि चर्त्रा ॥ मलै शत्रु अंगे करै पीसि भर्त्रा ॥ २ ॥ भयो घोर संग्राम योंबीर

वि·

डोलैं॥ धरौ मारु ग्रौ मारु यों बीर बोलैं॥ कोऊ छिंदि भा षै कोऊ भिंदि भा षै॥ कोऊ ग्रश्व चारवै कोऊ ग्रश्व नारवै॥३॥ घने रात्रि चारे लरैं शस्त्र धारी॥ ग्रहे माल पूग्रा करैहै पुकारी॥ कलं काषि ग्रायो महा कोप छायो॥ महा हाँक दैदै प्रबीरै लरायो॥ डुटैं ग्रौ छुटैं ग्रौ जुटैं बीर भारे॥ करैं शस्त्र वरषा जनौ मेघ कारे॥ घने गिद्ध जंबूक रवीचैं सु ग्रातैं॥ रवगा॰ास रवाहीं करैं प्रेम घातैं॥ ५॥ विनासीस केते कहैं मारु मारु॥ धरौ ग्रौ लरौ युद्ध फोरौ कपारु॥ प्रलय कालसो कालभी काल सोई॥ नच्यौ काल ग्रान्द को काल जोई॥ जनौ शंभुले शूल भौ ग्रोर दोऊ॥ बिचार्यौ नजामे बचै बिप्व कोऊ॥ ग्ररे ग्राउरे ग्राउरे वीर दौरैं॥ घने कोपतें ग्रापुहीं॰ जाइ घैरैं॥७॥ ध्वजा छत्र नाना पताका फरक्कैं॥ लखे कादरा की सु छाती धरक्कैं॥ घने शूल व्योमा भशुंडी चमक्कैं॥ कृपा ना घने वीजुरी से दमक्कैं॥८॥ झपटैं दपटैं रपटैं लपटैं॥ कटा कट्ट कटैं पलटैं झपटैं॥ घने वीरको फेंकि ग्राकाश दी॰ न्हो॥ घने को मही मारिकै चूर कीन्हो॥ ९॥ घने शीस तोरैं धरैं मुकव माहीं॥ जनौं गांव बासी वसैं नाव वांहीं॥ घने मारुरे मारुरे मारु बक्कैं॥ घने ग्रांतवको काढ़िकै लाल नक्कैं॥१०॥ चढ़े सीतला वाहने रात्र चारी॥ करैं लट्ट कारी धरे शस्त्र धारी॥ घने वीर मारे मिले दोय भुक्कैं॥ किते ग्रापही सों रिसारे ग्ररुक्कैं॥११॥ बजे शंख ग्रौ दुंदुभी घोर बाजे॥ चहूं ग्रोर सों युद्ध के साज साजे॥ किते ढाल धारी धरे भट्ट लट्टैं॥ किते क्रोध पूरे गहे शस्त्र ग्रट्टैं॥१२॥ मरैं जायतें वी॰ र देविद् धामा॥ लखे जाम बैठी घनी देव वामा॥ घने गीध ग्रौ श्यार के यूथ जुट्टैं॥ लोहू मास मज्जा सु ग्रौ ग्रास लुट्टैं॥

घने बीर बाजैं घने शंख बाजैं॥ घने सांगवैं घने जंग साजैं॥ घने कोप पूरे तजी हद्द बद्दै॥ जनो त्यागि बांबी महा सर्प कद्दै॥१४॥ करै रात्रि चारी घनी भाँति माया॥ नसे अस्त्र सों विघ्न जो ज्ञान आया॥ भगो नाभगो नाक है शस्त्र धारी कंपे भूमि आकाश में शब्द भारी॥१५॥ लगे नाचिबे केतने तत्र रुंडा॥ परे भूमिके बीच कइ एक मुंडा॥ कटे अश्व वीरा सुरत्थो वितुंडा॥ वितुंडा घनेहैं भरे भिन्न सुंडा॥१६॥ तहां मोद पूरे लसैं बीर झुंडा॥ झपट्टै घने मद्य से धीर-गुंडा॥ परे अंगनाना कटे भूमि माहीं॥ लरवे जो रहे कादरैं धीर नाहीं॥१७॥ दोहा॥ तब प्रघोष हरि सुत प्रबल कपि पति अस्त्र उठाइ॥ मारयो ताते कढ़त भे हनुमान हरिराय॥१७४॥ गहि मुद्गर कर कुलिश समाना॥ लैन लगे निशिचर के प्राना॥ कज्जल गिरिसे रिपुन उठाई॥ फेकहिं अंबर पुच्छ फिराई॥ दुमि मारे गे निशिचर सारे॥ डरे देखि उर शेष दुवारे॥ तब कलंक हनुमानहि जानी॥ गदा भार लखकी गहि पानी॥ मारेउ मर्मकि कीशतब कूदे॥ मूक प्रहार हृदय अति मूंदे॥ नीदकि रीत उठ्यो सो बहुरो॥ तजेउ त्रिशूल कहत छिन ठहरो॥ गिर्यो कीशजब दीन्ह झपेटा॥ हनेउ चरन धरनी जब लेटा॥ ऊपर धरेउ लसुनिया सैला॥ प्रान गह्यो सुर पुर की गैला॥ दोहा॥ जयजय भो अरि मरि गयो हरिमे अंतर ध्यान॥ सुर हरि सुवन प्रघोष पर बरषे सुमन सुजान॥१७५॥ बहुरि सदल हरि सुवन सुहाए॥ चर मनु नगरी के मधि आए॥ कंचन मयी छई सुख नाना॥ निरखे यशवन जहँ सरसाना॥ हरि चंदन मंदार परिजाता॥ केतक चंपक कुटज विभाता॥ चारु बयार बहत सब

छिनहै ॥ माधवि फूलि रही सब दिनहै ॥ जारुधि परबत लावति भारी ॥ कोस सहस द्वै उच्च बिचारी ॥ ताके नीचे अहै बगीचा ॥ शत योजन सुंदर जल सींचा ॥ कोकिल सारस चक्र मयूरा ॥ हंस चकोर शब्द जग पूरा ॥ झरहिं फूल फल वर तरु गनतें ॥ मृग पति केलि करहि सुभगनतें ॥ दोहा ॥ नकुल सर्प एक सँगर मैं बैर बिगत नरराव ॥ अयुत अयुत कमलन सहित सों हहिं अयुत तलाव ॥ १७६ ॥ फूले तेसब अति छवि होती ॥ तिनमधि बारि बिंदु जलु मोती ॥ इमि वन देखि मुदित भगवाना ॥ तहँके नरसों बचन बखाना ॥ कासु पुरी यह कानन कासू ॥ नागर मोहि बतावहु आसू ॥ सुनिके तहँके जन सब कहहीं ॥ आज काल जो मनु नृप अहहीं ॥ बैवस्वत झख बिष्णु उपासी ॥ जगत गुरू गिरि मानव वासी ॥ तिन कर यह पुर बाग पहारा ॥ हरि पुर सरिस सरस निर धारा ॥ यह बैकुंठ धाम की धरनी ॥ आई इत अति आनँद करनी ॥ इत तप करत महा मनु सोई जाके बंश भूप सब कोई ॥ दोहा ॥ भानु बंश ससि बंश सब यग जिनते उत्पन्न ॥ करत तपस्या शैल पै विमल बुद्धि संपन्न ॥ १७७ ॥ श्राद्ध देव मनु कहँ जब जाना ॥ अपने पर पुरषहि पहिचाना ॥ यदुन सहित यदुकुल भरतारा ॥ मानव गिरि चढ़ि मनुहि निहारा ॥ सत रबि सरस कुटी आसीना ॥ शांख्य जोग धर परम प्रबीना ॥ व्यास बसिष्ठ बृहस्पति कीरा ॥ कहहिं कृष्ण यश पुलक शरीरा ॥ काम कियो दल सहित प्रनामा ॥ मनु जान्यौ मधु रिपु घन श्यामा ॥ उठिकै आसन दीन्ह अमोले ॥ बैठि सवन सह यह मन बोले ॥ बासु देव

संकर्षन नामी ॥ रति पति ऊषा पति पदु स्वामी ॥ पुरुष परात्म अनादि प्रकृति पर ॥ निर्गुण पर पुराण क-
रुणा कर ॥ दोहा ॥ बस करिकै मायहि करत बिश्व सकल कल्यान ॥ स्वच्छ अमल गुन रहित पर भजहु त-
जहु अभिमान ॥ १७८ ॥ जानि मनोमज यग जह झूठा ॥ भजिय कृष्ण अजईश अनूठा ॥ अगिनि अकाश
धूरि नहिं लागै ॥ उड़त एक सम संशय जागै ॥ तिन सम तुम निर्मल अबिकारा ॥ जैसे फटिक सुस्वच्छ बिचा-
रा ॥ रंग संगतें दरशत तैसा ॥ तिमि तुम यग दिखात गुनि जैसा ॥ लक्षन व्यंग बचन अस फोटा ॥ ज्ञान बुद्धि
पद जानन छोटा ॥ बेद न बेदत बेदन बेदा ॥ कह लौकिक सु तुच्छ निरबेदा ॥ कर्म काल बिज्ञान बिचारा ॥ यो-
ग ब्रह्म कोउ कोउ निरधारा ॥ जेहि जस आवा सो तस गावा ॥ इही अहै नहिं कोउ ठहरावा ॥ दोहा ॥ इंद्री म-
न गुन काल बुद्धि चितहु जहाँ नहिं जाइ ॥ बिस्फुलिंग सम जगत कढ़ि तुम सिखि माहिं समाइ ॥ १७९ ॥
देव हिरण्य गर्भ तुम अहहू ॥ जग कृत धृत हित जामन चहहू ॥ ऐसो रूप धारि मन माहीं ॥ हम जग हित
कछु समझत नाही ॥ सुनि मनु बचन कहत हरषाई ॥ मदन सदन सुख बदन नवाई ॥ तुम गुरु अहहु सु-
वृद्ध पिता मह ॥ क्षत्री पूजनीय या जगमह ॥ हम सब पालन योषन योगू ॥ तुमरे सुवन भुवन कृत भोगू
तुम सम साधु आतमा धारी ॥ जित इंद्री जग करुणा कारी ॥ नर अंतर तम काठन हारे ॥ साधु अहै नहिं
रवि निरधारे ॥ इमि कहि लै अज्ञापति बंदी ॥ निज सैना चलि गये अनंदी ॥ दोहा ॥ जीति रम्य कहि मेरु

के पूरबगे सह सैन ॥ केतुमाल बर खंड महँ सुनहुं कथा सह चैन ॥ १८० ॥ नील शैल तहँ सुंदर नगरी ॥ मनमथ सालि-
नि सुंदर सगरी ॥ माल्यवान गिरि सींवा ताकी ॥ चक्षु नाम तहँ गंगा बाँकी ॥ जहँ के पुरुष श्याम छबि सदना ॥ नलिन
नयन जनु सब वर बदना ॥ पीतांबर धर सब त्रिय लोला ॥ कीड़हि कंदुक करहिं कलोला ॥ अलि समूह गुंजहिं जहँ
आई ॥ शत योजन लौ सरस निकाई ॥ तहँ के पुरबासी सब आई ॥ गावन लगे सुयश अधिकाई ॥ पुरुष प्रधान आ-
दि हितकारी ॥ अंबु सयन कर पंकज धारी ॥ नमो रमापति ज्ञान निकेता ॥ देवनतें वंदित जग हेता ॥ दोहा ॥ प्रगट भ-
ए बसुदेव गृह बेरी दीन्ही काटि ॥ नंद राय गृह जाइकै ब्रज दीन्हो सुख पाटि ॥ १८१ ॥ यशुमति लालित प्रेम प्रकाशा ॥
कीन्हो कुटिल बकी करनाशा ॥ सकट प्रभंजन भंजन करिकै ॥ तृनावर्त्त के प्रानहि हरिकै ॥ मातहि विश्व रूप दरसावा
नाम प्रतापहि गर्ग सुनावा ॥ नव नव नीतहि चोरि अभीता ॥ मोही ब्रजकी बाल पुनीता ॥ फोरि दही घट दाम बँधा-
ए ॥ धनद तनय के श्राप छोड़ाए ॥ बच्छ चरावत बालक लीने ॥ बच्छासुर कहँ निज पुर दीने ॥ तृन सम बक असु-
रहि पुनि मारो ॥ जय जय जय देवन उच्चारो ॥ बिचरत बन अति लीला लालन ॥ मोहत सबन ग्वाल ब्रज बालन ॥ दो॰
गोग्वालन अघ लीलि गो ताकहँ कीन्हो नाश ॥ जैसे कृष्णसु नामसों अघ नाशत गुन राश ॥ १८२ ॥ आदि अनंत
क्षेत्र के दाता ॥ पूर्ण प्रधान पुरुष जग त्राता ॥ सत चित जगदाधार कृपाला ॥ विधि मन मोहन श्री गोपाला ॥ पुनि
बलदेव हर्यो खर प्राना ॥ काली नाथ्यो कृपा निधाना ॥ पावक पियो कियो अवलंबहि ॥ बहुरि हलायुध हत्यो प्रल-

वहि॥ गोचारत मुरली धुनि कीना॥ गोपी गनके मन हरि लीना॥ अंबर चोरौ यमुना तीरा॥ द्विज त्रिय अन्न भुजो बल बीरा॥ बरस्यौ बासव कोप बढ़ाई॥ इक अँगुरी गिरि लीन्ह उठाई॥ सातरातलौं तिमिभो ठाढ़े॥ पूज्यौ सुर पति संशय बाढ़े॥ दोहा॥ वरुन लोकतें नंद कहँ लाए करुना धाम॥ दरसायो ब्रज नरन कहँ पुनि बैकुंठ ललाम॥ १८३ रास माहिं ब्रज सुंदरि साथा॥ रमन कीन्ह प्रमुदित ब्रज नाथा॥ देखि तहाँ गोपिन कर माना॥ अंतर गतभे अंतर धाना पुनि तिनको जब गर्भ न सायो॥ तब निज रूप सरस दरसायो॥ बन ठन वृंदाबन बनवारी॥ मुकटन मंडित योबन सारी॥ कीन रास प्रमदन के संगा॥ बढ़्यौ उमंग सुरंग अनंगा॥ नंदहि फनितें दीन्ह छड़ाई॥ शंख चूड़ मार्‍यौ दौराई॥ वृषभ रूपधर परम गरिष्टा॥ मार्‍यौ माधव असुर अरिष्टा॥ सभय कंस केशी पठवायो॥ अश्व रूप सो गरजत आयो दोहा॥ मुख महँ करि कर गिरिधर लीन्हो ताके प्रान॥ नारद तें यदुपति सुन्यौ केशवको आख्यान॥ १८४॥ व्योमनाम असुरहि संहार्‍यौ॥ मिलि अक्रूर चलन चित धार्‍यौ॥ बिदा होइकै गोपी जनतें॥ दुःख दूर करि तिनके मनतें॥ जलमहँ निज सरूप देखरायो॥ लखि अक्रूरहि अचरज आयो॥ सबन सहित पुनि कुंज बिहारी॥ मथुरा नामा पुरी निहारी॥ रजकहि दीन्ह प्रानतें हीना॥ बर बर बहुरि बायकहि दीना॥ माली कुबिजा कहँ बर दैकै॥ भंजत भए धनुष निरभैकै॥ गजहि मारि मल्लन संहारी॥ कंसहि कीन्ह अप्रान मुरारी॥ मात पिता कर बंध निवारो॥ उग्रसेन सिर टीको सारो॥ दोहा॥ नंदहि पुनि कीन्ही बिदा यादव नगर बसाइ॥ पढ़ि बिद्या गुरु सुवन हित मार्‍यौ असुरहि जाइ॥ १८५॥

ऊधव कहँ गोपिन पहँ भेजो ॥ अक्रूरहि कुरु बंश सहेजो ॥ जरा सुतहि बहु बार हरायो ॥ यमनहि नृपगज वाइ जरायो ॥ अस्थल चारु द्वारका करेऊ ॥ कुंडिन पुर नृप कन्यहि हरेऊ ॥ तिनके सुत सम्बर कहँ नासा ॥ भालु सुता हरि व्याहि खुलासा ॥ शत धन्वा ते लिय सत सभामा ॥ कालिंदी कहँ व्याहि ललामा ॥ भेदि सात वृष कीन्ह बिबाहू ॥ सुता सरस जैजै नर नाहू ॥ दोहा ॥ भद्रा कैकय पति सुता करि बिबाह भगवान ॥ बहुरि लक्ष्मना तें कियो पटरानी परमान ॥ १०६ ॥ भौम प्रबल मद मंदिर ढाहो ॥ अबला षोड़श सहस बिबाहो ॥ सुर तरु सभा इंद्र ते लीन्हा ॥ जब तेहि दंड समर को दीन्हा ॥ बल रुक्मी कर किय संहारा ॥ बान बाहु पुनि कृष्ण बिदारा ॥ सोइ नृप उग्रसेन के काजा ॥ निज सुत पठयो सहित समाजा ॥ जो इत आये जीतत राजन ॥ हम सब बंदत तिनहिं महाजन ॥ मुनि हरि सुवन मुदित मनि हेमा ॥ भूषन बसन दिये भरि प्रेमा ॥ तहँ को नृप संबत्सर नामा ॥ दीन्ह भेट करि विनय ललामा ॥ तहँ तें बहुरि काम बन आए ॥ जहँ विधि कन्यहि देखि लोभाए ॥ दोहा ॥ मनमथ तहँ को भूप वर जग जेहि समनहिं और ॥ जेहि लखि गिरत सुगर्भ त्रिय सो निकस्यौ तेहि ठौर ॥ १०७ ॥ छंद ॥ तिहि ठौर निकस्यौ अँग सहित अनंग गुनि रँग रंग हैं ॥ सर पाँच धनुष चढ़ाइ छोड़्यौ हृदय पूरि उमंग हैं ॥ सो बान तें खग पशु मनुज सब काम तें मन भंग हैं ॥ महि गिरत लज्या त्यागि अति बिपरीति जंग कुसंग हैं ॥ दोहा ॥ सनमुख हरि सुत महँ मिल्यौ अंग समेत अनंग ॥ जिमि जल में

जल मिलत है जैजै भयो उमंग ॥ काम मिल्यो जब कामते भयो यदुन को काम ॥ काम बनहिं जीतत भए
भूमि हरि सुत बल धाम ॥ १८८ ॥ जीति केतु मालहि जग जैना ॥ गोभद्राश्व खंड सह सैना ॥ शैल गंध मा-
दन तहँ सींवा ॥ बहत नदी सीता बर जीवा ॥ वेदक्षेत्र सुंदर अश्व हारी ॥ जहँ निवसत हय ग्रीव सुरारी ॥
भद्र अश्व नृपति बल वाना ॥ पूजत विष्णहि बुद्धि निधाना ॥ तहँ प्रद्युम्न कियो निज डेरा ॥ आयो भूप
हरष उर घेरा ॥ दै बलि बैठो सीस नवाई ॥ कहत महत सच पाइ सुभाई ॥ तुम पूरन यदु पति भाषकेतु
प्रगटे जगत भले के हेतु ॥ तुम शंबर कहँ जीत्यो साई ॥ उत कच नाम तासु लघु भाई ॥ दोहा ॥ गोकुल मा-
ख्यो कृष्ण तेहि तासु अहै गुरु भ्रात ॥ शकुनि नाम तेहि बधिय प्रभु जीतन जोग प्रभात ॥ १८९ ॥ सुनि
प्रद्युम्न कहा सुलल्लामा ॥ काकर बंश नाम अरु ठामा ॥ ताकर बल पुनि कैसो होई ॥ भूपति भद्र अश्व
सुनि कहई ॥ दैसुत भए कश्यपहि भारे ॥ कक कशिपु कन काक्ष कारे ॥ नव सुतमें कन काक्षहि बलधर
शकुनि भूत संतापन शंबर ॥ हरि शुकादिक नव बल वाना ॥ तामधि दोय भये गत पाना ॥ जठर नाम गिरि
केरि तराई ॥ चंद्रावती पुरी सरसाई ॥ शकुनि बसत वट भ्रात समेता ॥ होइ यज्ञ जब विप्र निकेता ॥ भंग
करत तब जाइ रिसाई ॥ लायो इंद्र अश्व सो जाई ॥ दोहा ॥ काम धेनु अरु कल्प तरु लायो बल तें
जीत ॥ तातें इंद्रादिक डरत लड़तन भरि अति भीत ॥ १९० ॥ जगजीतन पुरा अहइ तुम्हारा ॥ तातें वारहु

असुर संहारा॥ चतुरव्यूह प्रद्युम्न कृपाला॥ हम बंदत धरि तव पद भाला॥ सुनि सो बचन काम भगवाना॥ नरनसुरन हंसि अभय बखाना॥ सदल कृष्ण सुत अमरख छाए॥ चंद्रावली पुरी महँ आए॥ मम मुखतें शकुनी सो सुनिके॥ सो सब उठाय कहत भो गुनिके॥ देखा देखा मम रिपु आयो॥ हतिहौं तेहि जिन भ्रातन सायो॥ शंबर हन्यो छली अभिमानी॥ हतिहौं तेहि अपनो अरि जानी॥ प्रथम मारिहौं यादव समुदाई॥ पुनि मारिहौं देव तनजाई॥ दोहा॥ सो सुनि हृष्ट महान बल हृष्ट भयो खल नाथ॥ आयो यदुगनतें लरन कोटि दैत्यले साथ॥ १६१॥ सो गुनिकै मन मथ धुनि धारी विरच्यो गिद्ध व्यूह अति भारी॥ तुंड भए अनिरुद्ध महारथ॥ वीरज सींव ग्रीव परमारथ॥ शंब पीठि अति सोभा सोई॥ दीप्तिमान गद पद भो दोई॥ पुच्छ भानु प्रद्युम्न उदरमें॥ भूमि रचि भिरे बीर सब थरमें॥ भोरन कठिन दनुज यदुगनसों॥ चले शस्त्र दुहु दिसि बर रनसों॥ दैत्य जूथ बढ़िके चल ओका॥ मारि मारि यादव दल रोका॥ तेहि छन भ कल यादवी सैना॥ व्याकुल भई जदपि जग जैना॥ सोलरिव दस सुत हरिके भारे॥ चले मित्र बिंदा सुक्र मारे॥ दोहा॥ एक हर्ष निल गद्ध पुनि पवन बन्हि उन्नाद॥ शुद्धि महा शव धनद शम चले सहित अह्लाद॥ १६२॥ तब हरिसुत धनु टंकारी॥ दलत भयो दानव दल भारी॥ गजरथ अश्व पदातिन मारे॥ कर पग सीस विगत करि डारे॥ बहु दैत्यन कर लीन्हो प्राना॥ तजि द्रुत तरनि तरुन सम बाना॥ एहि बिधि दहन देखि रन कानन॥ हृष्ट चलो बढ़ि चढ़ि पंचानन॥ दस सर मारि धनुष कह काटो॥ चार बानते हय सिर छाँटो॥ है सरथे सूतहि वधिडारा॥ ध्वजा तीन सरतें

वि- १५८

महि डारा ॥ बीस बानतें रथहि नशायो ॥ दूक दूजे रथ चढ़ि पुनि धायो ॥ जबहि दूक निज धनु धरि डाँटो ॥ तबहि दूक सोऊ धनु काटो ॥ दोहा ॥ तब दूक गहिकै गुरु गदा मार्‌यो कठिन कराल ॥ सहित केसरी तेहि लगी सुनहु तबै नर पाल ॥ १८३ ॥ तब मृगापति उछरो रिस धारी ॥ मर्दन लाग्यो सेना सारी ॥ करि हुंकार जीह थह राई ॥ दूकहि गिराय दयो मृगराई ॥ गहि दूक तेहि पटक्यो महि माहीं ॥ मर्दत भयो मर्‌यो हरि नाहीं ॥ उठिकै लरन चल्यो मृगराजा ॥ हरि सुत मार्‌यो मुष्टिद राजा ॥ पंचानन पंचता सिधाए ॥ हरष दूकहि तब शूल चलाये ॥ आवत लखि भय विन सो भूलहि ॥ गह्यो झपटि दूक ताके मूलहि ॥ असुर असिहि ललकारि प्रचारा ॥ नैदत भयो महि मंडल मारा ॥ सो असि असिते काटि महाना ॥ ताके सिर निज हत्यो कृपाना ॥ दोहा ॥ तातें ताको सीस कटि गिर्‌यो धरातल आइ ॥ कुंडल चौट समेत छवि सो कछु कही न जाइ ॥ १८४ ॥ तासु मरे सब दिति सुत भागे दइत दइत कहि रोवन लागे ॥ सुरन दीन्ह दुंदुभि सुख मूला ॥ दूक पर बरसत भे बहु फूला ॥ सो सुनि शकुनि परम रिस छाई ॥ चल्यो आप संग लै सब भाई ॥ गज चढ़ि चलो भूत संतापन ॥ दूक खर काल नाम सूकर पन ॥ महा नाम चढ़ि ऊंट रिसारा ॥ हरिश्मश्रु श्रुति मंगल छारा ॥ रथ जयंत मय निर्मित भारी ॥ बीस को स को अश्व कतारी ॥ शत पताक कामग अभिरामा ॥ कलस सहस पुनि चक्र ललामा ॥ सहस अश्व अरु आठ अपारा ॥ रथि रथ सरथ सरिस निरधारा ॥ दोहा ॥ शकुनि चलो चढ़ि बीर दिग करत शब्द विकराल ॥ द्वादस अक्षो

हिनि लिए शत्रु बंशको काल ॥१९५॥ गज चिकार हय हिंसन भारी ॥ शब्द भयो अतिशय भयकारी ॥ डगत धरा गिरि गिरत गरारे ॥ सिंधु उछलत करि ललकारे ॥ इंद्रादिकन भयो भय भारी ॥ आयो अरिदल तमकि मुरारी ॥ लखि अरिदल प्रद्युम्न कृपाला ॥ यादवगनसो बचन निकाला ॥ यह शरीर जग कर्म बनाये ॥ फेन सरिस सर भौतिक गायो ॥ आवत जात रहत नहिं वैसो ॥ बुध शोचहि न बाल कृत जैसो ॥ ऊरध सात्विक जाहिं सुजाना ॥ मध्यमाहि राजस परिमाना ॥ तामस जाहिं अधो चलि भाई ॥ कर्म विवस इमि भ्रमहिं सदाई ॥ दोहा ॥ घूमत मह घूमत लगे महिन फिरत यह साँच ॥ जस देखहु तसि लखि परै पट रँगीन पर काँच ॥ १९६ ॥ मंडल बर्तिहि जो सुख होई ॥ अधिक चक्र बर्ती पुनि जोई ॥ ताते अधिक इंद्र परि मानो ॥ यह विचारि जग तृन सम जानो ॥ वायु वेग जिमि घन नभ छावैं ॥ क्षन महँ बहुरि बिचलि कै जावैं ॥ तिमि तन होत कर्म संजोगा ॥ तुच्छ सकल नासी युग भोगा ॥ जबलौं बस्तु न परै दिखाई ॥ तबलौं दीप प्रयोजन भाई ॥ खग सम ज्ञानी फिरै असंगा ॥ छन छन प्रति न थिरै मन भंगा ॥ दृक सरिस घट प्रति घनो दिखाई ॥ दृक सिरिव प्रति अँगार सरसाई ॥ इमि हरि एक अनेक लखाई ॥ करहु बिवेक बुटेक दुराई ॥ दोहा ॥ ज्ञान निरूहरि भक्त जे सदा चित्त आनंद ॥ तिन हि न जग परसे सुनहु जल मह जलज स्वछंद ॥ १९७ ॥ शिशु समान सुख दुखहि नसाई ॥ जोगी बिचरहिं सुचित सदाई ॥ तनकी चेत रहत नहिं कैसे ॥ मत्तहि तनकर अंबर जैसे ॥ भानु उदय तम यथा नसाई ॥ भवन बस्तु सब सरस

दिखाई ॥ ज्ञान उदय तिमि गुन कर नासा ॥ सत्यानंद दिखात तमासा ॥ जिमि इंद्री निज गुन अनुसरहीं ॥ गुन दूजे को एक न करहीं ॥ तिमि योगी केशव पद त्यागी ॥ होत न दूजे पथ अनुरागी ॥ कोऊ परम पद करहि बखाना ॥ कोउ बैकुंठ कीन्ह परिमाना ॥ शांति कहत कोउ वृहत प्रतापी ॥ कोउ गोपुर कोउ अक्षर थापी ॥ दोहा ॥ निज निज मत अनुसार जग पर पद करहिं प्रकास ॥ कृष्ण सत्य अरु असत सब जानहु गिरिधर दास ॥ १९८ ॥ तातें लरहु डरहु मति भाई ॥ जामहँ दोऊ लोक भलाई ॥ सो सुनि यदु समूह भय त्यागी ॥ गहि गहि शस्त्र चले रिसि पागी ॥ भोरन सीता तट अति भारी ॥ सीता हित जिमि कपि निशिचारी ॥ रथतें रथ गजतें गजवाना ॥ पद चर पदचर हय हय जाना ॥ बहु मतंग अति भयद दिखाहीं ॥ उच्च सीस रन चिकरत जाहीं ॥ सुंड उठाइ दंत तें मारहिं ॥ हय पर चढ़ि भट भल्ल प्रहारहिं ॥ करतें पकरि सुरथ नरतेहीं ॥ कुपित फेंकि अंबर महँ देहीं ॥ पगतें बहु तन मरदहिं धाई ॥ करहिं दिरद इमि कठिन लराई ॥ दोहा ॥ तुरग सपक्ष उड़ाहिं नभ रन धावहिं भरपूर ॥ सुरथ द्विरद कहँ लांघिकै निकरि जाहि अति दूर ॥ १९९ ॥ शक्ति धरे बहु भट समुदाई ॥ छेदहिं गज रथ दपटि रिसाई ॥ बहु हय चढ़ि असि वाहत जाहीं ॥ करत अमित सिर करकी नाहीं ॥ घने करहिं बढ़िकै रन भारी ॥ मरहिं परस्पर वाहि कटारी ॥ खड़ग परस चक्रहि छटकाई ॥ काटहिं मस्तक ओज बढ़ाई ॥ तब भद्राके दश सुत भारे ॥ चले लरन हित चाप सुधारे ॥ जय सुभद्र रन जित अरु सूरा ॥ बाम आय

प्रहरन बलपूरा॥ अरिजित अरु सत्यक हत सेना॥ चले लरन हित ये अरि जेना॥ निरखि भूत संतापन योधा गज चढ़ि भिरत भयो भरि क्रोधा॥ दोहा॥ तातें निज दल ललित लखि रन जित धीर धुरीन॥ भिरत भयो बर सत बिशिष परम पराक्रम पीन॥ २००॥ सत सर असुरहि मारि प्रचारी॥ तबसो धारि सरासन भारी॥ धनु डोरी काट्यो रिसि छाई॥ तब रनजित धनु और चढ़ाई॥ तानि तज्यो शत तीर रिसाई॥ ते सब धसे कवच महं जाई॥ तेहि धनु षहि कवचहि गज राजहि॥ छेदि धसे महि बिवर दराजहि॥ तब कछु व्याकुल ह्वै बल वाना॥ गजहि बढ़ायो असुर महाना॥ आवत देषि द्विरद अरि धारी॥ मार्यो शंबर जीत प्रचारी॥ ताके लगो सुंड महि गिरी॥ रुधिर बहो उर शंका थिरी॥ तजि सवार कहं बारन भागा॥ करत चिकार महात भय पागा॥ दोहा॥ चंद्रावति नगरी गयो भागि भीरु गज राज॥ भयो शब्द दोउ सैन महं लखि हरि सुत कर काज॥ २०१ तब गहि चक्र भूत संतापन॥ अरि परत्यागत भयो महायन॥ सोलरिव रन जित चक्र घुमाई॥ ताहि काटि महि दीन गिराई॥ जठर शैल कर सिखर उबारी॥ मार्यो कृष्ण सुतहि ललकारी॥ गहि सो सिखर समर जित योधा॥ पुनि तापर पटक्यो अति क्रोधा॥ जठर हि तीन्ह उठाइ बहोरी॥ तज्यो चह्यो सो दान बहोरी॥ याते हतिहौं भाष्यो बानी॥ रवड़ो भयो उद्द भट गिरि पानी॥ देव कूट गिरि कह तब धारी॥ रन जित मारत भयो प्रचारी॥ ते सब जठर और सुर कूटा॥ परिके अरिके प्रानहि लूटा॥ दोहा॥ मर्यो करा ल

वि॰ १५॥

प्रचंड अति सुनहुं तबै तहँ तात ॥ तासु जोति तामहँ गई जानहुं सत्य सु बात ॥ २०२ ॥ सुर नरके तब बजे नगा
रे ॥ हरि सुन पर वर पुष्प पवारे ॥ मर्यो भूत संतापन जबहीं ॥ असुर न हाहा कीन्हो तबहीं ॥ काल नाभ
वृक शकुनी धाए ॥ हरि श्मश्रु अति नाभ रिसाए ॥ श्री प्रद्युम्न शकुनि संग लरहीं ॥ वृक अनिरुद्ध परम
रन करहीं ॥ काल नाभ अरु शाम्ब सुभाई ॥ दीप्ति मान अति नाभ लराई ॥ भानु हरिश्म श्रूते भरिकै
करत भए नर अनुपम थिरिकै ॥ तिन महँ बढ़ि अनिरुद्ध प्रचारी ॥ दलत भए वृक को दल भारी ॥ मर्द-
हिं मनुज दनुज के जूहा ॥ लसहि कटे कटि सीस समूहा ॥ दोहा ॥ गिरन लगे मरि मरि असुर पत्र पात
हत तुल्ल ॥ श्रोनित पूरे अंग सब जिमि तरु टेसू पुल्ल ॥ २०३ ॥ गज गत कुंभ परहिं महि भरिकै ॥ दंत रहि-
त भागहि चिक्करिकै ॥ द्विधा परहिं धरनी पर कैसे ॥ पबि प्रहार तें पर्बत जैसे ॥ फटे कुंभ गजमुक्ता दरस-
हिं ॥ बन महं नखत सरिस छबि परसहि ॥ कोउ डरि परहि भगहि कोउ आतुर ॥ दारहिं दरहिं कोऊ
रन चातुर ॥ कोउ महि गिरे रथिन सह भारे ॥ जिमि कपित्थ फल दंड प्रहारे ॥ छन महँ अरि दलमें नर ना-
यक ॥ रुधिन नदी प्रगटी भय दायक ॥ द्वीप द्वीप कच्छप कर घोरा ॥ सूइस सुरथ भिन्न अति घोरा ॥ केस
सिवार सर्प भुज भारी ॥ पद झख रेती रतन बिचारी ॥ दोहा ॥ शस्त्र छत्र सो सीप सम चमर शंख के रूप ।
चक्र सु मंडल मंडिता तट दल उभय अनूप ॥ २०४ ॥ छंद ॥ दल उभय अतिहि अनूप भूपति रुधिर की

सरिता भई ॥ बैताल भैरव भूत प्रेत पिशाच नृत्यहिं मुदमई ॥ करि घोर जोर सजोर पीवहिं मुंड माल बनावहीं ॥ बंदी सरिस संगर सुजस शंबर रिपूरन गावहीं ॥ १ ॥ लै जोगिनिनि संग भद्रकाली सिंह पै चढ़ि डोलहीं ॥ भरि रुधिर खप्पर पिवत रन धरु मारु बानी बोलहीं ॥ विद्या धरी अरु अप्सरा बर बरहिं झगरहिं नागरी ॥ अनरूप सूरहि बरहि कूरहि सकल आनंद आगरी ॥ २ ॥ बहु बीर बल करि प्रबल मरि रबि भेदि कहँ हरि पुरगए ॥ संग्राम महँ तन त्यागि कै दुर्लभ गतिहिं पावत भए ॥ बहु गृद्ध लैलै आँत जात अकाश बहु सुख छावते ॥ जनु दिबिनि बासी रुधिर सर हित भरन दाम बनावते ॥ ३ ॥ इक एक ते छिनि लेहि दूजेहि देहि प्रमुदित नाचहीं ॥ कोउ खाहिं अरुह मुहाहि केते खड़े इकतें जाचहीं ॥ एक कहहि के इत लरहु जाँचहु कहहु मूरख पनठयो ॥ ऐसे सदा बर्त्तहु भए नहिं अजहु मूरख पनगयो ॥ ४ तब कहहि ते उर चहहि तुमतो सत्य यह गाथा कही ॥ पर सूर जनको रुधिर दुर्लभ मिलत नहिं हम कहँ कहीं ॥ अवनी अकाश मनुष्य दानव खग सुरन ते भरि रह्यौ ॥ तेहि काल हे नरपाल मानहुं काल दुहुं दिशि लरि लह्यौ ॥ ५ ॥ दोहा ॥ निरखि युद्ध अनिरुद्ध को भगे असुर बिकराल ॥ सो सभ लखि रासभ चढ़ो वृक तब चलो बिसाल ॥ २०५ ॥ धनु टंकारि बान संधानी ॥ चल्यौ समर महँ बढ़ि अभिमानी ॥ दस सरतें बिशिषा सन काट्यौ ॥ बहुरि क्रुद्ध अनिरुद्धहि डाड्यौ ॥ दुसरो धनुष धारि अनिरुद्धा ॥ दस सरतें धनु काट्यौ क्रुद्धा ॥ तब त्रिशूल लै वृक ललकारी ॥ मारत भो हरि सुतहि प्रचारी ॥ अबहीं लेत प्रान मैं तेरो ॥ रे खल देखु पराक्रम मेरो ॥ तब अनिरुद्ध कह्यौ सुनु पापी ॥ बकहिं तेन

करि सकहि कदापी ॥ अबहि मारि तोहि महिमैं डारत ॥ नतह सपथ निज ऊपर धारत ॥ गोद्विज भून बालके मारे ॥ होइ न जो तब प्रान विदारे ॥ दोहा ॥ वृकहु शपथ करि बज्र सम मारेउ शूल घुमाइ ॥ बाम हस्ततें तेहिं धर्यो हरिसुत सुत हर षाइ ॥ २०६ ॥ मारत भे घुमाइ सो लागा ॥ खर सह भेद्यौ पुनि कढ़ि भागा ॥ तुरित धरातल माहिं समाना ॥ गोमय गिरि महं तड़ित समाना ॥ गिर्यो असुर खर भोगत प्राना ॥ उठि वृक गह्यौ गदा रिसि साना ॥ करि गर्जना काल सम सोई ॥ मार्यौ सुरथ शत्रु को जोई ॥ चूरन भयो काम सुत जाना ॥ तब कूदे यदु यूथ प्रधाना ॥ गहि असि आइ हाथ करि आड़े ॥ भुजा काटि डार्यौ भय माड़े ॥ तब वृक दबरो बद नहि वाई ॥ ताके चलत धरा थहराई ॥ जीभ बढ़ाइ क्रोध कहँ छाई ॥ लील गयो हरि सुतहि उठाई ॥ दोहा ॥ तिमिहि तिमिंगिल जिमि गिलै तिमि किय असुर कराल ॥ प्राण गयो नहिं भूप मनि दादा तासु कृपाल २०७ सवैया ॥ काम गए झष के मुखमैं जिमि मारेउ शत्रुहि चोट न आई ॥ गोप गए अघके मुखमैं अरि वृत्र हृदै जिमि गे सुरराई ॥ केशव जू बकके उरमें चलि जाइ सुभाँति निजातहि पाई ॥ तैसेइ ए वृक के उरमैं नहिं संशय पै अति होति रुवाई ॥ १ ॥ दोहा ॥ गद मार्यौ गरवी गदा मस्तक अरिके जाइ ॥ फूटो सिर निसरत भई रुधिरधार अधिकाइ ॥ २०८ ॥ कज्जल गिरिके सिरतें जानौ ॥ कुम कुमको नद कढ़ो महानो ॥ पारस असितें दोउ पद काट्यौ ॥ गिरेउ असुर भरि लोचन डाट्यौ ॥ असितें उदर भेदि तेहि काला ॥ कढ़त भए अनिरुद्ध कृपाला ॥ तूरन काटि

लीन्ह सिरतासू ॥ भगिगो निकरि तबै असु आसू ॥ सुर हर्षहि बर्षहि परसूना ॥ तिनतें मोद नरन कह दूना
तब महिपाल कह्यौ सुनि लीजै ॥ आगे कहा भयो कहि दीजै ॥ अद्भुत चरित सुनत चित चहहीं ॥ नारद भरे
प्रेम रँग कहहीं ॥ काल नाभ सूकर असवारा ॥ गर्जत चलो अधम सरदारा ॥ दोहा ॥ कृत बरमा अक्रूर कहँ बी-
स बीस सर मारि ॥ दस दस सर अर्जुन गदहि शतमन मथहि प्रचारि ॥ सात्यकि दीप्ति मतहि हत्यौ पाँच पाँच
अवनीश ॥ बीस बान अनिरुद्ध कहँ मारे उलै उररीश ॥ २०९ ॥ सोसर सबन घुमाइ घुमाई ॥ महि महँ दीन्ह गि-
राइ गिराई ॥ सुरथन हयन नसाइ नसाई ॥ सब उरशोक बसाइ बसाई ॥ साबस भाषि ताहि झषकेतू ॥ त-
जो अमोघ बान जय हेतू ॥ सो कोलहि समुद्र महँ नायो ॥ बहुरि दूसरो बान चलायो ॥ सो सर शत्रुहि व्योम
फिराई ॥ दीन पुरी चंद्रावति नाई ॥ गिरेउ बिकल खल पुनि रन आयो ॥ गहि गुरु गदा रिपुन बिचलायो ॥ ग-
ज रथ हय पदादि बधि डारत ॥ कोल नाभ सम काल प्रहारत ॥ कोउन कहँ घुमाइ नभ माहीं ॥ फेंकि करत
जीवन की नाहीं ॥ दोहा ॥ गिरहिं सकल नभते मृतक पटकत बहुरि फिराइ ॥ दलहि दलत लखिकै गदा शाम्ब
चलेउ रिसि आइ ॥ २१० ॥ काल नाभ हरि नंदन दोऊ ॥ भिरत भए जिन सम नहि कोऊ ॥ गदा युद्ध महँ निकरत
बन्ही ॥ चिनगारी अति नह्नी नह्नी ॥ टूटी गदा गदा गहि दूजी ॥ कहत असुर रन आसा पूजी ॥ एक बार महँ
हम तुम मारैं ॥ जीति हारि या माहि बिचारै ॥ इमि दोउन सलाह निरधारा ॥ काल नाभ निज गदा प्रहारा

ताकहँ सहि सु गदा निज झडदै॥ उरमहँ स्वरि प्रहारयो धडदै॥ गदा भिद्य उर रुधिर प्रचारा॥ गयो प्रान कढ़ि आसु अपारा॥ अरिके मरे सु जैजै कारे॥ नीचे ऊपर बजे नगारे॥ दोहा॥ सुरन श्राम्व पर सुमन तब बरषे प्रेम समेत॥ तबल्ला सुर अबलान के बजे सुनावन हेत॥ २११॥ महा नाभ तब ऊँट बढ़ाई॥ मुरवते त-ज्यौ ज्वाल अधिकाई॥ जरिबे लगी यादवी सैना॥ चारहु ओर दांउ कहु हैना॥ पगड़ी धोती कपड़ा पटके जरन लगे सब दल महँ भटके॥ जरे बाजामा घोरनके॥ भागहिं भट यादव ओरनके॥ झूलनके सहज-लत अमारी॥ दहत भगहि दिश महत चिकारी॥ चमर बिछौना छत्र पताका॥ घोरे सूत सुरथ सह चाका॥ ज-रन लगी यादव चतुरंगा॥ लखिभो मन सबहिन कर भंगा॥ दीप्ति मान अति आपद काजा॥ आपद अस्त्रहि त्यागयो राजा॥ दोहा॥ नाने निकरे मेघ गन प्रलय सरिस जल धार॥ नादि नादि बरषन लगे तेहि छन-चेरि अपार॥ पावस ऋतु रनमहँ भई निकस्यो इंद्र कमान॥ सारस मोर पपीहरा पूरयो शब्द महान॥ चप-ला चहुं चमकत भई गर्जत भाँति अचूक॥ डरे डरे डरकन लगे दशहु दिशा मंडूक॥ २१२॥ शांत अगिनि लखि शूल कराला॥ दीप्ति मान परदान बड़ाला॥ आवत ताहि देखि असि काढ़ी॥ काटेउ झांत तड़ित सम बाढ़ी॥ ऊँट चल्यो पकरन अति गतिसों॥ काटेउ कंठ नासु हिकमति सों॥ कंठ कटे सो लंबक ग्रीवा॥ गि-रयो धरनि के बीच अजीवा॥ शूल धारि धारन पर बैठी॥ असुर चल्यो निज मोक्षहि ऐंठी॥ दीप्ति मान हय

चढ़ि असिधारी॥ महा नाभते भिर्यौ प्रचारी॥ सन्मुख जाइ सु बाजि कुदाई॥ तजत शूल काट्यौ रिसि छाई॥ ब-
हुरि सीस असिवर कर काटौ॥ आनँद यादव दल महँ पाटो॥ दोहा॥ तासु सैन अति प्रबल लखि धनु धरि
त्यागत बान॥ छनमहँ सब मरदत भयो दीप्ति मान द्युतिभान॥ २१३॥ भो आनंद कछु कहो न जाई॥ किन्नर ना-
चहिं साज मिलाई॥ इहि बिधि तिन कर नाश निहारी॥ आयो हरिश्मश्रु धनु धारी॥ चढ़्यौ तिमंगल दीरघ
ठाढ़ी॥ सर्प समान जीह मुख काढ़ी॥ चलत चलत सो दलत दलत दल॥ बोलत भो यदु दलके मधि भल॥ तु-
म सब मेरे अहहु अहारा॥ तातें तृन सम तुच्छ बिचारा॥ त्यागि शस्त्र कर कूदहु आई॥ करि कुस्ती कहँ देत दि-
खाई॥ सुनि चुप होइ रहे सब बीरा॥ लरहु परस्पर भाषहिं भीरा॥ भानु नाम सत्राजित नाती॥ सुमिरत पितुहि
चल्यौ अरि घाती॥ दोहा॥ निज निज आयुध त्यागिकै दनुज मनुज बलवान॥ दैदै ताल कराल रन कीन्हो श-
ब्द महान॥ २१४॥ भुजतें भुजहि पकरि युग योधा॥ निज निज दिशि खींचहि करि क्रोधा॥ भानुज शतयोजन
लौं पाछें॥ लै गोपाल असुर विधि आछे॥ हरिश्मश्रु कहँ कृष्ण कुमारा॥ तितनी दूर गए लै पारा॥ अरिकहँ
करि पीछे पुनि धाई॥ भानु जानु महँ हाथ लगाई॥ पटकत भो उर मोदहि छाई॥ उठि हरि सुत कर कंठ लगा-
ई॥ दूजे करहि जान्हु महँ करिकै॥ पटक्यौ पहुमि बीर रस भरिकै॥ पुनि उठि दोउ ठोंकत निज तालहि॥ भिरत
भए सोधत पर कालहि॥ भानुहि नभदिशि असुर घुमाई॥ लख जोजन फेंक्यौ रिसि छाई॥ दोहा॥ गिर्यौ भानु

आकाश तें लगीत तन कछु चोट ॥ कृष्ण कृपा प्रहलाद सम उठे बाल सम लोट ॥ २१५ ॥ हरिश्मश्रु कहँ पक
रि घुमाई ॥ तितनेइ ऊपर तज्यौ रिसाई ॥ गिरिकै सो अति व्याकुल होई ॥ उठेउ प्रबल अरि सन्मुख जोई ॥ भिरे
बहुरि दोउ मूका बाँधी ॥ अपने अपने इष्ट अराधी ॥ बट तरु असुर भानु परमारो ॥ सो पुनि तापर फेरि पवा-
रो ॥ हरिश्मश्रु तब अतिहि रिसाना ॥ पकर्‍यौ कुंजर सुंड महाना ॥ मारत भयो घुमाइ कराला ॥ भानुहु तापर
गहि गज घाला ॥ इमिते उभय परस्पर भिरि भिरि ॥ कीन्ह पराक्रम फिरि फिरि थिरि थिरि ॥ गज गज मूक
मूक तरु तरुतें ॥ गिरि गिरि चरन चरन सिर सिरतें ॥ दोहा ॥ व्योम वानि भाषत भई याहि शंभु बर दान ॥
मुखको केश उखारि हो तब तन त्यागिहि प्रान ॥ २१६ ॥ सुनि हरिसुत गहिकै पद दोई ॥ भए घुमावत हरषि-
त होई ॥ बहुत घुमाइ भूमि महँ डार्‍यौ ॥ करते मुख कर केश उखार्‍यौ ॥ छाती पर धरि हाथ अचूका ॥ मारेउ
तम कि सीस मैं मूका ॥ कढ़िकै ताको प्रान सिधारा ॥ लखि रन अमरन दीन्ह नगारा ॥ भयो हरष बरषत
बर फूला ॥ परखत यादव कर बल मूला ॥ इमि हरिसुत के बल कहँ भाषा ॥ अबका तुमहिं अहै अभिलाषा
सो सुनिकै धृति सुवन उचारे ॥ जब सब अनुज शकुनि के भारे ॥ तबसो कीन्ह कहा रिस छाई ॥ सुनि ब्रह्मा
सुत कहत बुझाई ॥ दोहा ॥ अनुजन कहँ लखिकै मरो मनुजन तें तेहि काल ॥ दनुजन तें बोलेउ बचन शकुनी
सुभट कराल ॥ २१७ ॥ काल केय पौलोमक सुनहू ॥ कठिन काल की गति उर गुनहू ॥ काल नाभ जम जीतन हारा ॥

ताकहँ मनुज नरन महँ मारा॥ रवि जित शंबर तेहि इन मारा॥ कृष्ण उत्कचहि व्रज संहारा॥ देवन जित्यौ भू-
त संतापन॥ करिन सक्यौ सोउ रक्षन आपन॥ महा नाभरन हारे बायू॥ सोरन करते भोगत आयू॥ वृक
त्र्यंबक सों कीन्ह लराई॥ सोऊ मर्‍यौ मनुज करभाई॥ इंद्र सुवन जीत्यौ बल भारो॥ हरिश्मश्रु सोउ मरो
बिचारो॥ हृष्ट जगत जित मर्‍यौ लराई॥ आठ मरे मेरे लघु भाई॥ दोहा॥ तातें भूमि अयादवी करिहौं
यह प्रनठान॥ शाल्व जरासुत वक्र रद चेदि पाल अरु बान॥ २१८॥ असुर सुतलके लेब बुलाई॥ करिहौं
रन सँग जोरि सहाई॥ इन कँह मारि देवतन मारी॥ गिरि गहबर महँ दैहौं डारी॥ गो द्विज साधु बेद बि-
नु भूमी॥ करिहौं दशहु दिसा मह घूमी॥ यज्ञ श्राद्ध तीरथ अरु दाना॥ यह सब लैहौं शत अनुमाना॥ धन्य कंस सब दे-
वन जीतो॥ सो नहिं है नत लरत अभीतो॥ इमि कहिकै डंका बजवावत॥ भयो यदूदल सन्मुख आवत॥ लै धनुला-
ख भार को भारी॥ करत भयो टंकार सुरारी॥ ताते डगे तिहूँ पुर कैसे॥ चढ़त द्विरद लघु तरनी जैसे॥ दोहा॥ शेष विशे-
ष कँपात भे कच्छप छपत डेराइ॥ कोल हृदय अति होल भो लोल दिशा गजराइ॥ २१९॥ भटपर भट गिरते भय पागे
तजि रण सींव बिचलि कै भागे॥ दल बिचलत लखिकै भट सगरे॥ धरि धरि धनुष गदा दिक अगरे॥ इमि यदुदल
कह झुकत विलोकी॥ शकुनी लीन्ह शरन तें रोकी॥ विरचत बिबिधि बानके जाला॥ करत करोरन भटकर काला॥ च-
रन करन कर शीश नसावत॥ बीरन कहँ यम लोक बसावत॥ शरतें बीरन व्योम उडावत॥ परम पराक्रम निज दरसावत

मंडल सरिस चाँपसर सावत ॥ यदुदल बीच भयो भय आवत ॥ दश सरतें अर्जुनहिं उठाई ॥ दीन्हो चारकोस परनाई
दोहा ॥ गद कहँ द्वै दशबान तें रथ सह लीन्ह उठाउ ॥ छन लौं व्योम घुमाइकै दीन्हो दूरि गिराइ ॥ २२० ॥ चालिस सर
ते भट अति रुद्धहिं ॥ फेक्यौ दूरि पूरि उर क्रुद्धहिं ॥ षोडश कोस गिर्यौ सो जाई ॥ बहुरि अरिन पर बान चलाई ॥ शां
बहि रथ समेत द्रुत लेको ॥ दूरसु बत्तिस योजन फेको ॥ पुनि आवत मनमथहि निहारी ॥ लियउठाय सत सायक
भारी ॥ नभ घुमाइ द्वै घरी जथारथ ॥ फेंकिदियो सत कोश महारथ ॥ इमि जेजे भट सन्मुख आए ॥ शर पर धरि
धरि व्योम पठाई ॥ सोलषि विस्मित यादव सारे ॥ बहुरि बहुरि कै भिरे विचारे ॥ गद अनिरुद्ध शांब अरु पारथ ॥
लरन लगे धरि धीर महारथ ॥ दोहा ॥ सुरथ बैठि प्रद्युम्न तब तहतें द्रुत दौराइ ॥ शकुनी तें भिरते भए अरिकी घात
बचाइ ॥ २२१ ॥ छंद ॥ अरिकी सुघात बचाइ दस सर मारि धनुडोरी हई ॥ सर सहस तें हय बीसतें सारथिहि
बधि भट तालई ॥ अब मारिलेत पुकारि कै बहु बार हरि गरजत भए ॥ तेहि काल सकुनी कोप करि रथ दूसरे
ऊपर गए ॥ १ ॥ शत बान धनु महँ धारि कै लल कारि यह बोलत भयो ॥ यह बान है तव प्रान हर मम सत्य मन
तोलत भयो ॥ तोहिं मारिकै यदु सैन बिन हम करहिंगे सब भूमिको ॥ इमि भाषिकै हस तो भयो निज सुरथ पै
खल भूमिको ॥ २ ॥ दोहा ॥ सो सुनिकै प्रद्युम्न हँसि बोले बचन अनूप ॥ मैं करिहौं भाषत वृथा है परतंत्र स-
रूप ॥ २२२ ॥ कवित्त ॥ कालही करत सब निज अनुसार जग सुख दुख जीव पावैं ताके अनुमान तें ॥ खेत जिमि

बोय सोऊ, काल पाय बस्तु होय घन बरषावै बन काल परमानतें ॥ करिहौं करत मैंहौ करता कहहिं जौन बात सब झूठ तौन केवल अज्ञानतें ॥ गिरधर दास काल अहइ प्रधान जग भाषत असुर काहे मिथ्या अभिमान तें ॥ दोहा ॥ हँसि बोले शकुनी तबै मुनि सम भाषत बात ॥ तदपि त्रिगुन महँ जगत जन ऐसेइ भाषहिं तात २२३ इमि कहि कहि दोउ भिरे बढाई ॥ बलि बासव सम बाजु बजाई ॥ ताके शतशर सरप समाना ॥ काटेउ काम काढ़ि निजबाना ॥ लक्ष भारकी गदा उठाई ॥ शकुनि शत्रु पर तुरत चलाई ॥ बीचहि मारि गदा निज भारी ॥ तेहि प्रद्युम्न दीन सहि डारी ॥ तब शकुनी निज शूल प्रहार्यौ ॥ तेहि प्रद्युम्न शूलते बार्यौ ॥ गरजि कृष्ण सुत कुंतहि लैकै मार्यौ हृदय मध्य रिस छैकै ॥ सहि तेहि परिघ कठोर घुमाई ॥ हरि सुतके उर हत्यौ रिसाई ॥ तब मनमथ यम दंडहि धारी ॥ चूरन कीन्ह परिघ सो भारी ॥ दोहा ॥ सहस अश्व सूतहि हत्यौ पुनि अरि कंध प्रहारि ॥ मुरछि गिरा यो भूमिपै शंबरारि ललकारि ॥ २२४ ॥ त्रिभंगी छंद ॥ पुनि दंडहि धारी हृदय विचारी सैन सुरारी बीच धसे ॥ कुंजर पदचारी रथ हय भारी दीन्ह विदारी क्रोध फँसे ॥ भागहिं चिक्कारी त्राहि पुकारी काल निहारी भीत भरे ॥ सो समर बिहारी कर ललकारी सैना सारी आसु दरे ॥ १ ॥ दोहा ॥ उठि शकुनी करि क्रोध अति चढ़ि रथ धनु टंकारि ॥ दलत भयो यादव दलहि प्रद्युम्नहि पर चारि ॥ २२५ ॥ लषि सन्मुख कामहिं सर जोरी ॥ कहत भयो वर गिरा बहोरी ॥ कर्म प्रधान धरातल माहीं ॥ गुरइश्वरता समकोउ नाहीं ॥ ऊँच नीच कर्महि ते होई ॥

विजय पराजय है जग सोई ॥ सह गऊ सह जैसे बच्छा ॥ निज मानहि ताकत परितच्छा ॥ जैसे मानव निजकृ-
तकर्मा ॥ लहहिं सुफल जग बीच अभर्मा ॥ करि हम वीर कर्म रिपु जीती ॥ लहिहौं कहत सपथ की रीती ॥
सत्य करहु तुम कर्म बढ़ई ॥ नतरु समर महँ हरिहौं भाई ॥ सुनि बोले प्रद्युम्न बिचारी ॥ जो तुम कर्म कह्यो ध-
नु धारी ॥ दोहा ॥ काल बिना नहिं होत फल मुख्य काल बिख्यान ॥ किए पापको स्वाद जिमि दुनसुभ पुनि
न सुहात ॥ २२६ ॥ जब सब होइ तयार तयारी ॥ करता पाप करै तब भारी ॥ तातें करता अरु साभाना ॥ दोउन
तें जग होत बखाना ॥ जब सब साज होइ नहि पासा ॥ करता कैसे करै प्रकाशा ॥ करता पाक बनावे जोई ॥
काल पाइके पावे सोई ॥ तातें कर्म काल आधारा ॥ कालहि मुख्य चलावन हारा ॥ पारि पूरन तम अकथ
अनूपा ॥ है यह काल रसाल स्वरूपा ॥ तिनकहँ हम बंदत मति पीना ॥ काल कर्म जिनके आधीना ॥ शकुनी
कहत धन्य तुम ज्ञानी ॥ कैसी कहत अमृत सी बानी ॥ दोहा ॥ तुमरो दरसन पाइके होहिं कृतारथ जीव ॥ जे
तुमरे संग रहहिंतें धन्य भाग सुख सींव ॥ २२७ ॥ इमि कहिके उरगास्त्र प्रहारा ॥ दंत सक भे कहत अपारा ॥
बिच्छू गोजर काटन लागे ॥ सो लखि सभय यदू गन भागे ॥ हरि सुत गरुड़ अस्त्र तब मारे ॥ निकरे कोटिन
गरुड़ गरारे ॥ नील कंठ आदिक खग साथा ॥ नोचन लगे अहिन के माथा सब कहँ खाइ नसाइ भगाई ॥
अंबर ध्यान भए समुदाई ॥ तब शकुनी पिसाच की माया ॥ पढ़ि के यदुदल बीच चलाया ॥ भूतप्रेतकोटि

वि० ३०१

कढ़ि तातें ॥ लगे भटन दाहन उलकातें ॥ आसुनि माया ताहि बिचारा ॥ सत्व अस्त्र हरि नंदन मारा ॥ दोहा ॥ तातें कोटिन निकरिकै हरिजन वर भुज चारि ॥ छन महँ भूत पिशाच को करत भए संहार ॥ २२८ ॥ तब गुह्यक की माया कीन्हो ॥ व्योम बारि धरते भरि दीन्हो ॥ मूत्र रुधिर मज्जा मल हाड़हि ॥ बरषत भए अँगरर पहाड़हि ॥ काम तबै कोडास्त्र चलायो ॥ तातें हरि कर दरशन पायो ॥ घर घर स्वन करि आदि बराहा ॥ नख रदतें माया गिरि ढाहा ॥ इमि गुह्यकी नसाई माया ॥ पुनिन कोल कर दरशन पाया ॥ पुनि शकुनी अतिसै रिस छाया ॥ करत भयो गंधर्वी माया ॥ प्रगटी कोटिन त्रिय मृदु हाँसा ॥ हाव भाव सुकटाक्ष प्रकाशा ॥ बाजन लगे सुसाज रसाला ॥ नृत्य करन लागी बर बाला ॥ दोहा ॥ थिरकहि घुघुरू चरन के गिडि गिडाहि करताल ॥ सबकौ मन मोहत भई मायारूपी बाल ॥ २२९ ॥ ताकहँ जानि मोहनी माया ॥ ज्ञान अस्त्र हरि सुवन चलाया ॥ ताकर नाश देखि रिसि भीनो ॥ असुर राक्षसी मायाकीनी ॥ गिरि सपक्ष अंबर महँ पूरे ॥ गरजि गरजि घन धावहिं रूरे ॥ शिल तरु रुधिर अगिनि असिबाना ॥ बरषन लागे आयुध नाना ॥ भो अधाँर सूझै नहि नेको ॥ राक्षस चले शूल कर लेको ॥ दौरि दौरि इत उत रन माहीं ॥ हय नर कुंजर पकरि चबाहीं ॥ जातु धानि बहु निकरी डाइनि ॥ नर सिरखाहिं मौज जनु पाइनि ॥ सिंह व्याघ्र बाराह करारे ॥ निकरे बहु नर भक्षन हारे ॥ दोहा ॥ भागि गए यादव सकल लषि कै कृष्ण कुमार ॥ नरसिंहास्त्रहि तजत भे करन तासु संहार ॥ २३० ॥ प्रगटे तब नृसिंह विकराला ॥ चमकत शर नख जिह्व विसाला ॥ भयप्रद बदन रदन अति

चोखे॥ गरजत तरजत प्रगट अनोखे॥ लैलै सब सपक्ष गिरि भारी॥ रज सम कीन्ह क्रोध बिस्तारी॥ निशि-
चरि निशि चरि के समुदाई॥ व्याघ्र बराहन दीन्ह नसाई॥ बल प्रकाशि माया कहँ नाशी॥ अंतर ध्यान भए
बल राशी॥ माया गत लषि बिगत बिषादा॥ हरिसुत कीन्ह कंबु कर नादा॥ जय जय यदुन कीन्ह हरषा
ई॥ सुमन तजे सुमनस समुदाई॥ सरस सदल शकुनी बल वाना॥ भयो तौन छन अंतर ध्याना॥ दोहा॥
दै तेई माया कियो हियो कोपतें पूरि॥ जो सीख्यो मै दैत को शकुनि सुभट बिधि रूरि॥ २३१॥ शांबर तक
घन दस दिशि छाए॥ धार सुंड गज सी बरसाए॥ छन महँ सात सिंधु उमडाने॥ बात के बेग पहाड़ उड़ाने
बूड़ि गई महि बरषत पानी॥ भो अँधेर नहि सूझत पानी॥ सभय यदुन आयुध तजि दए॥ कृष्ण कृ-
ष्ण मुख भारवत भए॥ निज धनु तव प्रद्युम्न सुधारा॥ पढ़िकै कृष्ण अस्त्र कहँ मारा॥ नव कडोड बिद्रु-
त तेहि काला प्रगट भए श्री कृष्ण कृपाला॥ द्वारावति दिशितें चलि आए॥ माया रूपी तमहि नसाए॥
मेघ बरन अंबर तडितासे॥ मुक्त माल बक जाल प्रकाशा॥ दोहा॥ चार भुजा श्री बत्स उर बैजंती बरमा-
ल॥ क्रीट मुकट कंडुल ललित लोचन लोल बिशाल॥ २३२॥ नूपुर हार किंकिनी सौहै॥ निरषत कोटि मद-
न मन मोहै॥ कृष्णहि देषि हरष उर भीना॥ सब यादवन दंडवत कीना॥ देवन मुदित कुसुम बरषाए॥
तेहि छन हरि सारंग चढ़ाए॥ शरतें छेद्यो धनु धर तासू॥ लषि शकुनी गृह भागेउ आसू॥ हेति सघेंति

लियावन हेतु ॥ गयो पराक्रम सेन निकेता ॥ तब केशव यादवन बुलाई ॥ बोले वचन सुनहु समुदाई ॥ पूरव
शकुनी अनबन त्यागी ॥ कीन्ह महातप शिवहित लागी ॥ परबत पति सुमेरु के पासा ॥ बीति गए युग चार
खुलासा ॥ दोहा ॥ तब प्रसन्नह्वै शंभु प्रभु आइ दरश निज दीन्ह ॥ वर मागहु भाषत भए सुनि सो कहत प्रबी
न ॥ २३३ ॥ जौ मैं मरौं भूमिके महीं ॥ महि सिरपरसे उठौं तहाहीं ॥ नभ महँ जो मोहिं मारै कोई ॥ दोय घरीलौं
मृत्यु नहोई ॥ दैकै यह बरदान पुरारी ॥ बोले बहुरो गिरा बिचारी ॥ दीन एक शुक परम सुजाना ॥ कह्यो याहि
जानेहु निज प्राना ॥ जब यह मरिहो तब तुम मरिहो ॥ याते यासु जतन तुम करिहो ॥ सोशुक राख्यो यतन
कराई ॥ ताके मरे मरै सो भाई ॥ इमि कहि हरि खगपति नें बोले ॥ तात करहु यह काज अमोले ॥ चंद्रावती
पुरी महँ जाहू ॥ शत योजन बिस्तित खगनाहू ॥ दोहा ॥ सो सुनि आयसु शीश धरि चलत भए खग पाल ॥
जाइ पुरी देख्यो परम चंद्रावती बिशाल ॥ २३४ ॥ दुर्ग दुर्ग महँ बहु भट राजहिं ॥ परम भयंकर भट बिधि साज
हिं ॥ लघु स्वरूप धरि बिनता नंदन ॥ शकुनि भवन गो सर्प निकंदन ॥ खोजत शकुन मिल्यो तेहि काला
देख्यो बैठो शकुनि कराला ॥ तासु त्रिया मदाल सा नामा ॥ पतिसे ऐसे भाषत बामा ॥ हे प्रभु सब तव भ्रात
गरारे ॥ नर कर परे समर महँ भारे ॥ आए लरन हेतु भगवाना ॥ करहु मिलाप तजहु जनि प्राना ॥ सुनि
शकुनी भो कहत गरारा ॥ करिहौं सब यादव संहारा ॥ मृत्यु मोरि मम मरे न अहई ॥ अनन्तहि जीव रूप

शुक रहई ॥ दोहा ॥ चंद्र नाम उप द्वीप मैं गिरि मतंग पर जाई ॥ शकुनि बसत मम जीव तित राख्यौ जतन कराइ ॥ २३५ ॥ संख चूड़ अहि रक्षत ताही ॥ कोउ यह भेदहि जानत नाहीं ॥ यह सुनि गरुड प्रानके काजा ॥ चंद्रत द्वीप चले खग राजा ॥ बर समुद्र ऊपर नभ माहीं ॥ चले गरुड आनंद अवगाही ॥ सत योजन समुद्र के पारा ॥ बर सिंघल उपद्वीत निहारा ॥ पूछ्यौ नाम नागरन काहा ॥ सिंघल जानि चलन पुनि आहा लंका नाथि नभग भरतारा ॥ पांचजन्य बर दीप निहारा ॥ क्षुधित पक्ष पति सिंधु किनारे ॥ खानलगे गहि जल चर भारे ॥ तहँ एक नक्र द्वियोजन केरो ॥ ऐचो खगहि क्रोध उर प्रेरो ॥ दोहा ॥ गरुड लगे घीचन तटहि सो जलहु लै जात ॥ एक महूरत बीति गो हारि जीति बिनितात ॥ २३६ ॥ खग प्रचंड मारेउ निज तुंडा ॥ लागेउ सो मानहु यम दंडा ॥ झखबपु तजि बिद्याधर होई ॥ बोलत भयो बंदि पद सोई ॥ मैं बिद्याधर अहउ कृपाला ॥ नाम हेम कुंडल खग पाला ॥ नभ गंगा नहात एक बारा ॥ ऋषिक यूथ कहँन्हात निहारा ॥ बारि बूडि घीच्यौ गहि चरना ॥ मुनि तब साप कोप भइ बरना ॥ नक्र होसि तै बक्र कुचाली ॥ तबमैं कीन्ह बीनती हाली ॥ ऋषि दयाल तब कह्यौ बिचारी ॥ गरुड युद्ध महँ मुक्ति तुम्हारी ॥ सो तब कृपा मुक्ति मम भई ॥ मुनि अपराध व्याधि सब गई ॥ दोहा ॥ इमि कहि सो सुर उड़ि गयो नभ मग चले खगेश ॥ हरिनद्वीप आवत भए गतिहि प्रकाश बिशेस ॥ २३७ ॥ तहाँ करत तप मुनि तप धाना ॥ चारु अपांतर तम यह नामा ॥

तहँ यक पंख गरुड को खसेऊ ॥ पक्षीपति उर संशय बसेउ ॥ कह मुनि राखि पंख मम शीशा ॥ तब चलि जाहु मुदित खग ईशा ॥ खगपति लै तेहि मुनि सिर धार्यौ ॥ तहँ तैसेइ बहु पंख निहार्यौ ॥ पूछेउ विस्मित कारन तासू ॥ मुनि सो गुनि गुनि कीन्ह प्रकाशू ॥ जब जब होत कृष्ण अवतरा ॥ तब तब निपतत पक्ष तुम्हारा ॥ कल्य कल्य महँ प्रगटहि स्वामी ॥ करुना कारन अंतर्यामी ॥ अज अनंत प्रभु आनँद धामा ॥ कोटि कोटि मम तिनहि प्रनामा ॥ दोहा ॥ सुनि मुनि के पद बंदिके चलत भए खगराज ॥ रमणक उप द्वीपहि गए जहँ बहु सर्प समाज ॥ २३८ ॥ तिनतें लै बलि खग कुल दीपा जात भये आवर्तक द्वीपा ॥ सुधा पान करि आनँद मढ़िकै ॥ शुक्ल दीप अवरेख्यौ बढ़िकै ॥ मेरे कहे सो उत्तर जाई ॥ चंद्र द्वीप देख्यौ खगराई ॥ तजल दुर्ग देखे मुख फारी ॥ चंचु मध्य भरि लीन्हो बारी ॥ अग्नि दुर्ग महँ छोड्यौ सोई ॥ चुत्यौ हुतासन आनँद होई ॥ तहँ मतंग गिरि गुफा निहारी ॥ निकरे लाख असुर अति भारी ॥ बैनतेय तें भिरे प्रचारी तिनतें होत भयो रन भारी ॥ दोय घरी महँ सबन सँहारी ॥ जाहि लख्यौ सर्पहि सर्पारी ॥ दोहा ॥ करे कुंडली रहत नित जलमैं पिंजरा पास ॥ ऊपर फल छाया करे होइ ननेकह रास ॥ २३९ ॥ गुनि संदूक सर्पके अंका ॥ मारत भए चरन निःशंका ॥ पिंजरा त्यागि भाग गो नागा ॥ जानि सर्प अरि संशय पागा ॥ चोंच माहिं पंजरहिं उठाई ॥ उडि आकाश चले खगराई ॥ लागे संग असुर समुदाई ॥ बिबिधि प्रहार हि शोर मचाई ॥ तिन कहँ निज पग पक्ष प्रहारत युद्ध करत पंजरहि सभाँरत ॥ परम बेगतें बेग निधाना ॥ चले व्योम पथ खग सिर त्राना ॥ शुक गोसुक गो शब्द अपारा

सुनि शकुनी उर भयो खभारा॥ शूलपानि आकाशहि आयो॥ कोप भरो खगपाछे धायो॥ दोहा॥ ऊपर योजन कोटिपै
मार्यो तमकि त्रिशूल ताकहँ सहि अहि अरि लियो तज्यौन अरिको मूल॥ २५०॥ कह तकि चहत छुडावन सूआ॥
मोहि कहा मारत तैं मूआ॥ सात द्वीप सागर खग दौरा॥ पाछे शकुनि करत अति हौरा॥ लाखन बार बार कहँ की-
न्हा॥ पैखग खगहिं फेरि नहिं दीन्हा॥ योजन कोटि मेरु के ऊपर॥ दीन्हो त्यागि पिंजरहि भूपर॥ चूर चूर देख्यौ जब
शुग्गा॥ शकुनि नैन पोछत लै लुग्गा॥ इहि बिधान खग बधि खग नाथा॥ आइ कह्यौ केशव तें गाथा॥ शकुनी ता-
कर नाशनि हारी॥ निज नगरी चलि गयो सुरारी॥ लै संग अमित दैत्य बलवाना॥ आसु यदू दल पै घहराना॥ दोहा
उच्चै श्रवा तुरंग चढ़ि निजधनु कहँ टंकारि॥ छाइ दियो यदु सैन पर कोटिन सरललकारि॥ सोरठा॥ तब यादव स-
मुदाइ आयो जान महान अरि॥ चाँप चढ़ाइ चढ़ाइ लरन लगे रस वीर भरि॥ २५१॥ भुजंगप्रयात॥ भयो घोर
संग्राम सो काल माहीं॥ महीपाल मोते कह्यौ जात नाहीं॥ भिरे बीर भारे करैं लल्ल कारैं॥ घने शस्त्र डारैं खडे ह्वै
प्रचारैं॥ १॥ असी भिंडि पालैं गदा शक्ति घालैं॥ हृदै शत्रु सालैं भिरैं ठोकि तालैं॥ नभागो प्रचारैं महा बान डारैं॥
सिरैं काटि डारैं घनी मार मारैं॥ २॥ महा घोर देख्यौ अरी कोंप रेख्यौ॥ भरे जंग मैं द्वारका नाथ तेख्यौ॥ लियेहाथ
को दंड सारंग नामा॥ भिरे शत्रु सों कोपलै तौन ठामा॥ घने बान हे दैत्य के जे प्रहारे॥ अपाने शरै मारिसो काटिडा-
रे॥ तबै दैत्य कोप्यौ प्रलय काल रोप्यौ॥ महा जंग ऊमंग उत्तंग ओप्यौ॥ ४॥ दसै बान मारे जनौ साँप कारे॥ सोऊ

सांर्ङ्गके बानसों काटि डारे ॥ तबै चाँप ताको हरीनेसु काट्यौ ॥ लियो आसु दूजो दृगै काटि डाँट्यौ ॥ ५ ॥ भयो दोयपच्चा-
स रुपी महाना ॥ लग्यौ मारिबे शत्रुके बीर नाना ॥ हरीहो यकै पाँचसै दोय रूपा ॥ कियो क्रोधकै रोधजोधा अनूपा ॥
६ ॥ चले शस्त्र भारे महारंग राच्यौ ॥ मनो काल सों काल दैताल नाच्यौ ॥ तबै दैत्य लीनो महा शूल भारी ॥ तज्यौ कृष्ण
को मारि लीन्हो पुकारी ॥ ७ ॥ हरी ताहि काट्यौ घने बान मारी ॥ अपानी प्रहारी गदा लट्टकारी ॥ लगे ताहि मुर्छा ग-
ह्यौ दैत्य योधा ॥ उठ्यो द्वौ घरी मै भयो भूरि क्रोधा ॥ ८ ॥ गदा हस्त धारी कर्‍यौ शब्द भारी ॥ भिर्‍यौ कृष्ण सों ताल दै-
कै सुरारी ॥ गदा हाथलै कृष्ण हू दूरि आए ॥ भिरे मल्ल सेते दोऊ क्रोध छाए ॥ ९ ॥ प्रभूकी गदासे गदा तासु टूटी
जनौ गागरी दंडके चोट फूटी ॥ तबै ठोकि कै ताल गोपाल दानो ॥ भिरे कोप लेकै हरी दोय मानो ॥ १० ॥ दोहा ॥ शत
योजन भगवान कहँ फेक्यौ असुर उठाइ ॥ ताकहँ योजन सहसपै तज्यौ कोपि यदुराय ॥ २४२ ॥ भुजतें पकरि ताहि
भगवाना ॥ पटक्यौ महि महँगे दसमाना ॥ सो उठि जा रुधिशैल उठाई ॥ मार्‍यौ हरिके शीश घुमाई ॥ गहि गहि
गिरिहि परस्पर मेलैं ॥ जनु मिलिकै शिशु कंदुक खेलैं ॥ टूटत गिरि गुनि रमा निवासा ॥ फेंकि कर्‍यौ कछु अरि
पुर नाशा ॥ तब कर धारि ढाल तल वारी ॥ चल्यौ पैतरा करत सुरारी ॥ केशव काटि चर्म अति तासू ॥ चंड बानभे
मारत आसू ॥ सोशर तासु काटिकै शीशा ॥ आसु दियो महि डारि छितीशा ॥ धरनि धसोशर सिर महि छीयो ॥ बर
प्रभाव सो दानव जीयो ॥ दोहा ॥ करतें सिरधर कंधपै करै भयानकयुद्ध ॥ सातवार ऐसेइ भयो छायो अचरज शुद्ध २४३

सतईं बार उठ्यौ बल वाना॥ चल्यौ समर बनि काल समाना॥ एकाकी यदु सैनहि मर्दत॥ अति कराल घन सरिस ननर्दत॥ त्रिन बन महँ दावा सम दपटत॥ चल्यौ जहर धर सम तन लपटत॥ जात चवात गात रिसि याता॥ रथ गज हय नर धूरि मिलाता॥ पदतें करतें धरनि मरद्दत॥ गज पंकज बन सरिस अरद्दत॥ कोउन कहँ आकाश उडा घत॥ कोउन कहँ पगतें मिलिनवत॥ मत्त महान अरुझूत जुझूत सबहिन भयो काल सम सुझूत॥ ताहि देषि दल दस दिशि भग्गत॥ चिंता पग्गत यम सम लग्गत॥ दोहा॥ इहि विधान मर्दत भयो जंगी यादव जूह॥ मारि मारि दस दिशि कियो बहु मृतकन क ढूह॥ २४४॥ तब आरति यदु सैन पुकार्यौ॥ सोलषिकै हरि दया बिचार्यौ यह दूसरो काल गुरु भाई॥ किमि बचिहैं यादवस मुदाई॥ काल काल पै मारत काला॥ यह खल एक कालही घाला॥ अहै कुंभ कर नौ कर चाचा॥ कैधौं कालरूप धरि नाचा॥ इमि आरत लखि धनु टंकारी॥ तज्यौ सुदर्शन अस्त्र मुरारी॥ महा चक्र सो चल्यौ बिशाला॥ कोटि दिवाकर सम सुर साला॥ तुरतहि काटि लीन्ह अरि माथा॥ जिमि वृत्रा सुर कर सुर नाथा॥ दूजे शरतें हरि सिर सोई॥ फेक्यौ अंबर ऊरध जोई॥ दोहा॥ कह्यौ सवन तें कृष्ण इमि निज निज बान चलाइ॥ दोय घरीलौं नहिं गिरै जिमिसो करहु उपाइ॥ २४५॥ सुनितें यादव निज निज बाना॥ मारत भए बीर बिधिठाना दीप्तिमान शर मारत भएऊ॥ तातें सिरशत योजन गएऊ॥ तब निज बान शाम्ब भट मारा॥ तातें योजन गएउ हजारा अर्जुन शरतें अरिको शीशा॥ जोजन अयुत गयो नरईशा॥ ऊबा पति निजसायक नाखा॥ तातें गोनभ योजन

लावा॥ तब प्रद्युम्न तज्यो सरसाथा॥ दश लख योजन गो चलि माथा॥ तब श्रीकृष्ण बानतें सीसा॥ योजन कोटि
गयो अवनीसा॥ इहि बिधान द्वै जाम बिताए॥ पुनि निज सायक कृष्ण चलाए॥ दोहा॥ सो सर योजन कोटिपै
ऊरध तें तेहि काल॥ डालि दियो पाथोद में मर्‌यो असुर बिकराल॥ २३६॥ ताकर तेज कढ़्यो तेहि काला॥ लीन
कीन निज मध्य गोपाला॥ जैजै शब्द व्योम महँ भरऊ॥ प्रमुदित देवन दुंदुभि दरऊ॥ नाचहिं राचहिं प्रेम अ-
पसरा॥ यह सुख तीन लोक महँ पसरा॥ किन्नर ताल बजावहिं नाना॥ सिद्ध कारहिं अस्तुति कर गाना॥ सुर
बरषहिं फूलन बिधिनाना॥ मुनि गन अस्तुति करहिं सुजाना॥ बिधि शिवादि परसहिं प्रभु चरना॥ मुख तें॰
कहहिं जयति दुख दरना॥ भगे असुर हत शेष डेराई॥ तब केशव दुंदुभि बजवाई॥ ससुतसस सैन मनुज पुर हूता
गावहिं वंदी मागध सूता॥ दोहा॥ शंख चक्र अंबुज गदा धरे रूप घन श्याम॥ चंद्रा वति प्रवि सत भए लज्जत
कोटिक काम॥ २४७॥ पतिके मरे दुरित्त मदालसा॥ लैनिज सुत हरि दरस लालसा॥ हरिके चरन आइ तेहि रा-
खा॥ हाथ जोरि गद गद यह भाखा॥ भुवके भार न सावन हेतू॥ प्रगट भए यादव कुलकेतू॥ लै माया लीला दरशाया॥ जग
केहेत जयत यदुराया॥ मम सुत पालहु भीत विचारी॥ याके सिरकर धरहु मुरारी॥ मम पति कीन तौन फल पावा॥
अब यापर करिये शिशु भावा॥ सुनि हरि कर शिशु सिरपर कीना॥ पितको राज तिलक सिर दीना॥ कल्प अंत लौं आ
युश होई॥ ज्ञान विराग भक्ति संग सोई॥ दोहा॥ काम धेनु अरु कल्पतरु उच्चैश्रवा तुरंग॥ दियो इंद्र कह करि कृपा

वि·
[illegible]

जोसो जीत्यौ जंग ॥ २४८ ॥ करि तेहि बैष्णव दीन्हो राजू ॥ भेगत तौन सकल सुख साजू ॥ सुनि मैथिल नृप बोले ब-
चनहि ॥ अहो धन्य केशव के रचनहि ॥ के ये असुर परम पद पाए ॥ सुनिकै पुनि मुनि बचन सुनाए ॥ ब्रह्म कल्प म-
हँ हो गंधर्बा ॥ नाम परा बसु तेहि सुत सर्बा ॥ मंदर मंबर मंदी सौधक ॥ सुधन सुदेव महा बिल नामक ॥ मंदहास श्री
भानु समेता ॥ नवसुत ए अति रूप निकेता ॥ काम समान सरूप अपारा ॥ बिधि सन्मुख बैठे यक बारा ॥ गिरासु-
ता लखि बिधि बिपरीते ॥ तहाँ हसे ए नवहु अभीते ॥ दोहा ॥ ब्रह्मा के अपराध तें हिरन्नाक्ष गृह जाय ॥ नवसुत
ए प्रगटत भए नाम सुनहु नरराय ॥ शकुनी संबर हृष्ट वृक काल नाभ अति नाभ ॥ भूत संतापन उत्तकच हरिश्म-
श्रु जल दाभ ॥ २४९ ॥ कोल कल्प इन लिय अवतारा ॥ सुमुनि अपांतर तम यक बारा ॥ इन के भवन गए छबिधारे
पूजि मुनिहि इन बचन उचारे ॥ शुक मुक सुना सुयश हरि करो ॥ सोई मुक्ति प्रद निश्चै हेरो ॥ हम सब असुर भक्ति
नहि जाना ॥ नित दुःसंग दुष्टपन ठाना ॥ कहहु उपाइ मोहि अस स्वामी ॥ मुक्ति देहि जिमि खगपति गामी ॥ नव
कन काक्ष तनय की बानी ॥ सुनि बोले मुनि नायक ज्ञानी ॥ गुन तजि भजहि हरिहि जे कोई ॥ परम मुक्ति कहँ
पावत सोई ॥ सौरुद स्नेह काम भय क्रोधा ॥ मित्र पनो करिकै हरिसोधा ॥ दोहा ॥ कोउ प्रकार केशव भजै पा-
वै तिनकापास ॥ दीन बंधु बिन कृष्ण नहिं दूजो गिरि धरदास ॥ छप्पै ॥ इंद्रा दिक संबंध मित्र ब्राह्मन ह्वै
छूटे ॥ सोहृद करि प्रहलाद मोह तष्णा ते टूटे ॥ स्नेह रूप ह्वै सुत पासुनि अति आनँद लूटे ॥ भयते कनक

कशिपु आदिक हरि पुरलौ जूटे ॥ क्रोधहि करि भवते छुटे तुमरे पितु कंचन नयन ॥ श्रुति गन पायो ॥ काम करि वासुदेव दायक चयन ॥ दोहा ॥ कोउ प्रकार पारस परसि लोहो सोनो होइ ॥ ताते भजिय मकुंद पद जग पद पंचन लोइ ॥ २५१ ॥ सो सुनि शकुनि आदि ते सारे ॥ वैर भाव मन नीक बिचारे ॥ करिकै वैर विष्णुते राजा ॥ लरे असुर राम सहित समाजा ॥ सुनहु कथा अब करिउर प्रीती ॥ इमि भद्रा सुखंड कहँ जीती ॥ लैसंग यदुगन की अति सैना ॥ इला वृतहि आए जग जैना ॥ जहँ राजत इक परबत कैसे ॥ भूमि पद्म को केसर जैसे ॥ फुरत कनक मैं देव अस्थाना ॥ मेरु पहार मुकट जग जाना ॥ मंदर मेरु मंदरहु भारे ॥ कुमुद सुपार्श्व सुचार बिचारे ॥ ए गिरि चारहु दिसिहैं ताके ॥ कनक मए दुति भरे प्रभाके ॥ दोहा ॥ जांबू नद कंचन तहाँ स्वतह सिद्ध नरपाल ॥ जा कहँ पहिरहिं सुर वधू भूषन बिरचि रसाल ॥ २५२ ॥ कदम वृक्ष उद्भव मधु जहवां ॥ पीवहिं भाग्य वान नर तहवां ॥ शीत उस्न दुरगंध परि श्रम ॥ जासु पिये नहिं होत कवहुँ भ्रम ॥ बट उद्भव जहँ कामद पयहै ॥ मागे मिलत सुरथ गज हयहै ॥ सैया असन वसन सुख होई ॥ कल्प वृक्ष नामक तरु सोई तहँ सुंदर अस्थान अनूपा ॥ संकर्षन निवसहि सुख रूपा ॥ शिव गिरिजा सह करहिं बिहारा ॥ मनुज होहिं त्रिय भूभर तारा ॥ कनक कमल बसंत तरु माला ॥ इला लवंग जाइ फल जाला ॥ देव द्रुमादि मिलिंदन नादित राजत उत्तर खंड इलावृत ॥ दोहा ॥ देखि सकल शोभा तहाँ जीति खंड भगवान ॥ वलि तहँ के नृपतें लियो ॥

सुनिये नृप सज्ञान ॥ २५३ ॥ शोभन नाम तहाँ नर त्राता ॥ नृप मुचकुंद केर जामाता ॥ एकादसि करि जिन सुख पावा ॥ मंदर ऊपर बसत सुहावा ॥ अजहु करत सो राज समाजा ॥ लिये चंद्र भागहि नर ताजा ॥ लैबलि सो हरि सन्मुख आयो ॥ प्रेम सहित ताकहँ बैठायो ॥ तब नृप कह्यौ सुनहुं मुनि ताजा ॥ होइ गयो जब शोभन राजा ॥ तब का कीन्ह जनार्दन ज्ञानी ॥ सुनि भे कहत बिपंची पानी ॥ तहँ शर देखि कनक भय भारी ॥ अर्जुन कृष्णहि कहत बिचारी ॥ कनकलता अरु कमल समेता ॥ कासु कुंड यह कृपा निकेता ॥ दोहा ॥ कृष्ण कह्यौ पृथु पूर्ब नृप स्वायंभू के बंश ॥ सो इत तप किय कुंड यह अहइ सुतपको अंश ॥ जासु बारि पीवैं जन जोई ॥ पाप विगत सपुन्य सो होई ॥ इमि कहि तातें कृपा निधाना ॥ तपो भूमिगे मनुज प्रधाना ॥ आठ सिद्धि तहँ रूषहि धारी ॥ नृत्य करहिं आनँद विस्तारी ॥ ऊधव हरि तें बचन बखाना ॥ तपमहि कासु अहै भगवाना ॥ नाचहिं सिद्ध जहँ धरि रूपा ॥ सुनिकै केशव कहत अनूपा ॥ स्वायंभू मनु इत तप कीन्हा ॥ महि श्रेयसि सो अहहि प्रबीना ॥ इत बसु सिद्ध सदा रहि नाचहिं ॥ मानहु तपकी महिमा बाँचहि ॥ इत तपि मनुज देव सम होई ॥ पूजनीय देवन तें सोई दोहा ॥ इमि कहिकै भगवान हरि सैन सहित मतिमान ॥ उत कट देशहि जात भे बाजत विविधि निशान ॥ २५५ कनक कशिपु जित तप किय भारी ॥ पुनि लीलावति पुरी निहारी ॥ तहँ के नाह देव हुत बाहा ॥ मूरति मान बसत भरि चाहा ॥ सोउ श्रीकृष्णहि दैबलि दाना ॥ अग्नि कीन्ह अस्तुति विधि नाना ॥ देखि इलावृत इमि छवि

छाये॥ जंबू द्वीप बेद पुर आए॥ निवसत निगम मूर्ति धर तहवाँ॥ गिरा सभा सद राजति जहवाँ॥ उरवसि आदि
क नाचहि बाला॥ हाव भाव कहँ करहिं रसाला॥ वर गंधर्ब करहिं कल गाना॥ परि तोष हिं बेदै बिधि नाना॥
सैतुं वल विश्वा बसु नामा॥ शुभ दर्शन रथ चित्र ललामा॥ दोहा॥ एसब वीन मृदंग मुरु षष्ट वीन अरु ताल
बाजन बिबिधि बजाबहिं बेद सभा नरपाल॥ २५६॥ ह्रस्व दीर्घ प्लुत सरिस बखाना॥ अरु उदात्त अनुदात्त सु-
जाना॥ अनु नासिक निर अनु नासि कहू॥ भेद अठारह इमिसु अनि कहूं॥ आठ ताल सुर सात बखाने॥ तीन
ग्राम तित लसहिं सयाने॥ भैरव मेरु मालरहि डोला॥ माल कोश श्री द्वीप अमोला॥ एषट राग लसहिं तनु
धारी॥ पाँच पाँच इक इक कहँ नारी॥ आठ आठ आतमज बखाने॥ औरहु बिबिधि वंश सर साने॥ इन कर रं-
ग सुनहु नर त्राना॥ भैरव प्रथम बिभूति समाना॥ माल कोश रंग हरित अनूपा॥ मेघ मलार मोर समरूपा दोहा
हंस सरिसहिं डोलहै दीपक कनक समान॥ लाल रंग श्रीराग को इमि जानहु मति मान॥ २५७॥ तब इमि कहत
भए छिति पाला॥ ग्राम नृत्य सुर अरु जे ताला॥ इनके भाषहु भेद अमोले॥ सुनिकै बचन सुना रद बोले॥ रूप
क पंच रीक परमट पुनि॥ कमठ बिराट वलीक नाम गुनि॥ बहुरि कहिय कटिंजरा ताला॥ एसब तुम जानहु न-
रपाला॥ ऋषभ निषाद और गंधारा॥ तीन ग्राम ए भू भरतारा॥ तांडव राग गांधर्ब जानो॥ कैद बनाय अपस-
रस मानो॥ गुह्यक विद्या धर कर कहहीं॥ एते भेद नृत्य महँ अहहीं॥ हाव भाव अनु भाव बखाने॥ भेद अठार

कहो, तब ताले ॥ दोहा ॥ बूझि विधान यह सब कह्यो जोतुम पूछी बात ॥ रसिक सिरोमणि कृष्ण प्रिय अबकासु नि होत ॥ २५८ ॥ मैथिल कहत भए तेहि काला ॥ गगत नष अनु रागकी बाला ॥ तिनको नाम बखानहु ज्ञानी ॥ सुनि बोले नारद गुरु ज्ञानी ॥ काल देश अरु भेद बखानी ॥ छप्पन कोटि संख्या अनुमानी ॥ पंचम लालित महर्षि विलावल ॥ अरु वैराव सु माधव पिंगल ॥ सहित समूह आठ संताना ॥ भैरव के जानहु नरत्राना ॥ चित्रा और विचित्रा नामा ॥ वृत्त मलार अंध कारी बामा ॥ जैजै वंती बहुरि विचारी ॥ अहै पाँच भैरव की नारी ॥ हंस रहंस जल धारके दारा ॥ मल्लारी विहाग निरधारा ॥ दोहा ॥ नारि मेघ मल्लारकी ये पांचहु भूपाल ॥ आठ तनयके नाम अब कीजै श्रवन रसाल ॥ २५९ ॥ काम रूप कान्हरा बखानत ॥ सुख कल्याण बहुरि पहिचानत ॥ गौड कल्याण राग संजीवन ॥ मंद हास शुभ काम आठगन ॥ सर्मनि गुनाकरी गंधारी ॥ सुर गांधारि धना श्री भारी ॥ दीपक की ए पाँचहु नारी ॥ सुत करनाम सुनहु व्रत धारी ॥ सिंधु धवल आभीर विमोहक ॥ मारव पूर्वसु भासमु सोहक ॥ चंद्र काम सह आठ गनाए ॥ तिनतेहु माल कौश के जाए ॥ माधव कौशिक मारु मेराए ॥ कंतल अरु कान्हरा विचारा ॥ नायक सोभन सहित सुहाए ॥ माल कौशके सुवन गनाए ॥ दोहा ॥ गोरावटि गौरी बहुरि चतुर चंद्र कल नाम ॥ कर्नाटी बैराटिका पाँच अहैं वर बाम ॥ २६० ॥ गोर गोविंद हमीर पंच सर ॥ सारंग मरुतभि गारक सोगर ॥ अहैं आठ ए श्रीके बारे ॥ नाम पाँच त्रियके सुनु प्यारे ॥ त्रिवनि पूरबी मालव गौरी ॥ पाँच रंकिका पाँचहु गौरी ॥

हारि परज सुंदरी बसंती ॥ तैलंगी ये योबन वंती ॥ ए हिंडोल त्रिया गुण खानी ॥ आठ सुवन सुनिये नृपज्ञानी
मंग बसंतक कुमुद विमोदा ॥ शंक राभरन और प्रमोदा ॥ मेहन पुनि विभास सुरसाला ॥ इहि विधिराग भेद
नरपाला ॥ तब बोले नृप बुद्धि विशाला ॥ वेद अंग कहँ कहिय कृपाला ॥ दोहा ॥ विशद व्याख्या को प्रश्न।
सुनि कृष्ण दास मुनि नाथ ॥ बानी मन मानी कहत ज्ञानी गानी गाथ ॥ २६१ ॥ छप्पै ॥ वेद बदन व्याकर
ण नयन ज्योतिष पहिचानो ॥ रसना बर गांधर्व चरन पिंगल कहँ जानहु ॥ मीमांसा द्वै हस्त उदर धनु
वेद बखाना ॥ आयुर्वेद पीठि वर मनो वैशेषिक जाना ॥ सांख्य बुद्धि कहँ जानिये अहंकार यह न्याय कहि ॥ चित्त वेदी
त विहार थल राग रूप यह सकल चहि ॥ दोहा ॥ नृप पूछ्यो पुरवेद मह कीन्ह कहा भगवान ॥ मुनि कह सुनि हरि आ-
गमन चले वेद बुधिवान ॥ ग्राम ताल स्वर अप्सरा मान गंधरब वेद ॥ गिरा सहित हरि चरन गहि पूज्यो बहु बिधि
बेद ॥ २६२ ॥ कहत भए राधाबर बानी ॥ काकहँ बरहु वेद बर ज्ञानी ॥ हम प्रसन्न कछु दुर्लभ नाहीं ॥ निगम कहत
तव गुनि मन माहीं ॥ जौं प्रसन्न तव कृपा करीजे ॥ राधा सह मोहि दरसन दीजे ॥ गऊ लोकके रूप अनू पहि ॥ ल-
खहि सकल ए तिहुँपुर भूपहि ॥ सुनि हरि निज स्वरूप दरसायो ॥ राधा रसिक सहित सरसायो ॥ लखि सो छवि हे।
नीति निकेता ॥ सब महि मुरछि परे गत चेता ॥ मुदित सकल उठि पुनि नरपाला ॥ नाचन लगे ललित दै ताला ॥ वा-
जन बजे सजे सब रागा ॥ परम प्रेम सबके मन पागा ॥ दोहा ॥ तहँ हरिकी अस्तुति कियो सब नृप थकमहिपाल ॥०॥

कहत गिरा गद गद गिरा दृग जल गिरा रसाल ॥ २६३ ॥ त्रिभंगी छंद ॥ जेहि वेदन जाना रूप महाना वेदन जाना सो सबकी ॥ नरह्वै प्रगटाना ज्ञान निधाना मुद अधिकाना प्रभु अवकी ॥ वर पुरष प्रधाना आदि जहाना तिहुँ पुर त्राना बधनवकी ॥ मम भाग्य महाना दृग दरसाना हे भगवाना बलि छबिकी ॥ दोहा ॥ बानी की बानी सुनत बर बानी गंधर्ब ॥ सर सानी मति प्रेम मय कहत गहत सुख सर्ब ॥ २६४ ॥ सवैया ॥ यह स्याम सुगौर सरूप दोऊ पर धाम स्वधाम विराजतहैं ॥ लखि अंग अनंग अनंग रिपू मुख चारु समेतहु लाजतहैं ॥ मग सन्मुख सो अति आनि दया जगदीश महा छबि छाजत हैं ॥ जिनके पदके परसे परसे जरसे तरु पाप पै गाजतहैं ॥ दोहा ॥ तेहि छिन सगरी अप्सरा हरि पद सीस नवाइ ॥ वर अस्तुति लागीं करन प्रेमभरी नरराइ ॥ २६५ ॥ कवित्त ॥ जैसे तरु तरुन तमाल को रसाल अति तापर कनक बेलि तनक रसाल की ॥ सुंदर कसौटी बीच ललित लकीर जिमि मेघमैं चलाका जैसे शोभा प्रेम जाल की ॥ तैसेई अनूप रूप रूपहू के भूपरूप भव कूप काढ़िबे की डोरी लोल डाल की ॥ मूरति मनोहर सुनोहर सुरादिहू को देखीहै दृगन आज राधिका गोपाल की ॥ दोहा ॥ रूप ग्राम कहँ देषिकै तीनि ग्राम गुन ग्राम ॥ करि प्रनाम बोले बचन निरषि श्याम अभिराम ॥ २६६ ॥ सवैया ॥ जासु कृपा बिधि सृष्टि रचैं अरु विष्णु सु पालत लोक ललाम हैं ॥ शम्भु संहार करैं सबको बढ़ि बासव को सुर नायक नामहैं ॥ भानु प्रकाश करैं दह पावक चंद्र सुधा धर दायक कामहैं ॥ कृष्णसु ऐसे प्रभू गिरि धारन आठहु जाम तिन्हैं पर नाम है ॥ दोहा ॥ रूप रसाल गोपाल लखि सुख बिशाल नरपाल

कहत चरन पर भाल धरि सात ताल मति माल ॥ २६७ ॥ सवैया ॥ साहब आप निबाहब मोकहँ कोर कृपा दृगतें अब गाहब ॥ गाहब हाथनि गाहदया करि जानिकै दीन महा अघ दाहब ॥ दाह बडी भव पावक की तेहि दिए अमीजल तें अति चाहब ॥ चाह बनी रहै रूप दुकानन लाल दृगे मिलि मोद बिसाहब ॥ दोहा ॥ ज्ञान मान मति मान सब मान सुबुद्धि निधान ॥ कहत बंदि भगवान पद हृदय ज्ञान अधिकान ॥ ३६८ ॥ सवैया ॥ जापगतें सिरगंग कढ़ी वर न्हाए तरंग करै भव भंगा ॥ शीस चढ़ी जगदीश महेश के ब्रह्म कमंडल वासमु ढ़ंगा ॥ नामहिं लेत तरे बहु पेतसमुक्ति को खेत उयो सुख संगा ॥ ताकर ध्यान धरो नितही जन जाकहँ योगी धरै उर संगा ॥ दोहा ॥ तेहि छन स्वर करि मेघ स्वर राधा बरहि निहारि ॥ अस्तुति कहँ करिवे लगे जैजै देव मुरारि ॥ २६९ ॥ छप्पै ॥ सरद कमल ससरुचिर चलत लरिव वारन लज्जत ॥ रतन रचित अति मधुर मधुर स्वर नूपुर बज्जत ॥ अंकुस अंबुज कुलिस सुरथ घट बिंदु बिरज्जत ॥ अंगुरी पर नख नव सपेद नख तन सम छज्जत ॥ विधि बसिष्ठ शिव शेष मुनि बंदित बर आनंद करन ॥ उर धरत ताहि जैजै करन चारु उभय केशव चरन ॥ दोहा ॥ इमि सब तिनको कहव सुनि भैरवादि सब राग ॥ पृथक पृथक अस्तुति करत बढ़ो हृदय अनुराग ॥ सोरठा ॥ जिन निरख्यो सो अंग सो ताही की छवि कहत बाढ़ो हृदय उमंग देखि श्याम शोभा महत ॥ दोहा ॥ तामहं भैरव रागवर हरिके चरन निहारि ॥ वर अस्तुति लाग्यो करन बार बार बलि हारि ॥ २७० ॥ छप्पै ॥ पंकज वरुन विधि अर्कजादि धरैं ध्यान मुनिसे मलिंदन के मनके हरनहै

अंकुस कुलिश छत्र रथन बिराजमान कोमल अतिह नव नैनू के बरनहैं॥ परसै मसेस शेष ब्रह्मा बिबुधेश॥ जाहि निरखे बिशेष पाप लेसके दरनहैं॥ दर्शनीय पर्शनीय बंदनीय पूजनीय कमनीय पीयप्यारे कृष्ण के चरनहैं॥ दोहा॥ हरिकी उर अवरेखि कै राग मेघ मल्लार॥ हाथ जोरि भाषत भयो सुनहु भूमि भरतार २७१ कवित्त॥ गंभ खंभ सरिस ललाम लगै शोभा धाम मंडित सु बस्त्रनतें चारु रस पुरुहैं॥ चलत हलत शोभा अतिही अनंद ओभा प्रमदा प्रबीन और अंगन में गुरुहैं॥ किंकिनी झलक होत करत उदोत कामध्यान किये चार काम दायक सु कुरुहैं॥ बिसद बिशाल अहै रसाल शत्रु कुल काल रसिक सुखाल कृष्ण प्यारेके ये उरुहैं॥ दोहा॥ दीपक नामक राग वरसो कढ़ि कहँ अवरेखि॥ कुलदीपक भाषत भए आनंद आनि बिशेषि॥ २७२॥ कवित्त॥ केहरि सीकहिये तो बिचारि उर बीवर हौं कहाँ मृग बन चारी कहाँ रुधर है॥ कहौं जो कमान मूढ़तौहू जड़ जानि परै बेली जौं बखानौ तौ निसत्वता ठहरहै॥ चलत लचकि जात देखि लोग जकि जात थकि जात काम वाम छकि जात थरहै॥ कमर समान दुति किंकिनी के बीच वर समरस फेटा कृष्ण प्यारे की कमर है॥ दोहा॥ माल कोश गुनकोश तब कटि घर धनी निहार॥ वर बानी बोलत भयो उर आनंद निरधारि॥ २७३॥ कवित्त॥ चामीकर जाल आल बाल सों रसाल अति रतन समूह बीच राजमानही रहै॥ झाँझ सी झमक झट्ट झुकि कै झनकि जात थहरात बात वेग हलत सरीरहै॥ भक्तनके मनजे उड़ातहै उपाधि पाय॥

बांधिबे के हेत मानो सो जजीर है॥ भीरु भीर हरन अभीर जात मोद कर पाप भीर अरि कृष्ण प्यारे की मंजीर है॥ दोहा॥ श्रीधर की वर नाम लखि मुदित होइ श्रीराग॥ बर अस्तुति लागयो करन हृदय बढ्यो अनुराग॥ २७४॥ कवित्त॥ अ-
तिही अनूप रूप सुखमा स्वरूप भूप उदर अगाधि सिंधु मध्य कंज आभ है॥ बाकड़ी सुधाकी सोहै त्रिवली सोपा-
न ताकी रोमकी कतारी सो निकारी पर डाभ है॥ ढार चार ओरने सुढार है विचारि देखो ध्यान धरे जासु होत सब भांति
लाभ है॥ जनमें जहाँतें है जगत कार साज बिधि शोभा के निधान कृष्ण प्यारे की सुनाभ है॥ दोहा॥ कमल भाल
लखि कृष्ण की भृंग समूह समेत॥ कहत भयो हिंडोल हसि जैसो कृपा निकेत॥ २७५॥ कवित्त॥ अक्षर की पंक्ति जै
से कादर सुजान बीच उदर सुरोमनि तें लसत रसाल है॥ मिलिकै मिलिंद गन लेत अर बिंद रस बायु मकरंद मि-
लि चलत सुचाल है॥ जनो श्याम चूनरी पहिरि लीन्हो कंठ बीचकै धौं पद्म राग बीच नीलो जर्यो हार है॥ विश्व
मन रंजन गुहीहै चारु कंजनतें भंजन त्रितापं कृष्ण प्यारे की सुमाल है॥ दोहा॥ भैरव की त्रिय पांच तब पीतांव-
रहि निहारि॥ बर बरनन बरनन लगीं चरनन पै सिर डारि॥ २७६॥ कवित्त॥ पीत रंग बर्धन अनंग सुख संगराजै
मनो घन बीच चारु चंचला लै पटहै॥ कनक किनारा अति ललित लसत शोभा हलत चलत काम कुलत निपट
है॥ पापी मुख पीरो और दासन की पीर हरैं दुःख भव हेत कोटि भानुसी दपटहै॥ कपट कपट डारेरे मन गवाँर
भाट देखु नवनट कृष्ण प्यारे को सुपटहै॥ दोहा॥ भैरव के सुत आठ नव देखि कृष्ण की बाँह॥ अस्तुति कहँ लागे

करन सुनहु सचित नर नाहु॥ २७७॥ कवित्त॥ चार सिंधु सरिस अपार बिश्व भरतार देतहैं पदारथ सुचार शोभा-
धरहैं॥ चारि दिग दंती सुंड सरिस धरन हार चारु चार आयुधन भूषित सुघरहैं॥ भूषन बिभूषित अदूषित स-
कलभाँति जगत वितान चारु चोपसे रुचरहैं॥ चार वेद वंदित विचार के अधार भूत ललित अपार कृष्ण
प्यारेके ये करहैं॥ दोहा॥ रागत मेघ मल्लारकी पाँच प्रिया महिपाल॥ ते सब तव लागी करन अस्तुति अ-
तिहि रसाल॥ २७८॥ कवित्त॥ लाल रंग अतिहि रसाल सव शोभाजाल बिंब फल रूपपै अनूप सुख घरहैं
चिक्कन सुचाल चंद्र सुजन चकोरन के कोरनके रसिक करोरन के बरहैं॥ गोलसो अमोल लोल मोती पास
वेसर को रचित तमोल औ कपोल छवि करहैं॥ चार फल देन हारे भक्त मन लेन हारे अति प्रेम धर कृष्ण
प्यारेके अधरहैं॥ दोहा॥ राग मेघ मल्लार के आठ सुवन महिपाल॥ बदन सदन महँ रदन लखि अस्तुति
करत रसाल॥ २७९॥ कवित्त॥ अवसीसु केतु की भली भाँति लसैं कुंद की कतार क्रांति शोभाके सदन हैं॥
मोती एक जात ओर नखतनकी पात वनी सुंदर दिखात मुसकात जौन छनहैं॥ केवडा कपूर चूर उठत सु-
वास अति नास होत दुःख रास संकट कदन हैं॥ मदन महीप मन वदन सुखद चारु गदन सुवोल कृष्ण प्या
रेके रदन हैं॥ दोहा॥ दीपक की तहँ रागिनी पाँच गहे मति साँच॥ हाथ जोरि लागी करन कृष्ण नयन रस-
राच॥ २८०॥ कवित्त॥ कंजके से पत्र फूल भूले देखि मध्य अलि खंजनसे मीनसे चपल मोद मन हैं॥

चितवनि चित्तहू के चोरह्वै के मोह लेत ताने धन बीर जानो जगती जयन हैं॥ सुंदर गुलाबी लाल स्वामी आवीको र दोऊ मयन चयन दानी सुखमा अयन हैं॥ दोय कोर वारे दूहू ओर तीखे धार धारे असिते अधिक कृष्ण प्यारे के नयन हैं॥ दोहा॥ दीपक के सुत आठ तब मगुन लगन करि नैन॥ छवि सानी बानी कहत जैजै आनंद ऐन॥ २८१॥ कबित्त॥ कैधौं कंज अतिही अनूप देखि रूप रासि आई अहि सुता दोय वर छवि सोह हैं॥ कैधौं है कमान बलवान मन मथि केरे तानत सरोष राग शंकर के द्रोह हैं॥ कैधौं तजि कै मियान आड़ी असि कढ़ी दोय देखि रन बीच बहु बैरी के गरोर हैं॥ कैधौं शशि बीच सुधा पीवत भ्रमर आय जग मोह हारी कृष्ण प्यारे की ए भौंह हैं॥ दोहा॥ मालकोशकी रागिनी अनुरागिनी अनूप॥ पांचहु इन बोलन भई देषि कृष्ण को रूप॥ २८२॥ कवित्त॥ कुंडल के बीच तें कढ़ी हैं अति शोभा देत रवि तें जमुन धार सुंदर झलक हैं॥ कंचन के शैल पै तें झकत भुजंगिनी सी देखत हीं डसि लेत एक ही पलक हैं॥ बनी है उमेडि के जजीर भारी दुतिकारी॥ तामे बंधि कठि ऐसे कोऊ ना खलक हैं॥ शोभा की सी सीढ़ी और रचित फुलेल भेल मोहन मलक कृष्ण प्यारे की अलक हैं॥ दोहा॥ मालकोश के आठ सुत कुंडल कहं अवरेषि॥ ताही कहं बरनत भए परमा परम परेखि॥ २८३॥ कवित्त॥ बालरवि लाल से रसाल छबि देत देत मकर अकार चारु उत्तम अमल हैं॥ सकता सटकि मन भक्त को झटकि लेत रहे सो अटकि रवि संग तारा भल हैं॥ कानन की शोभा चतुरानन न भाषि सकै शंभु सहसानन नादि भूलत अकल हैं॥ अतिही सुडोल नग जटित अमोल जामें लोल छबि पूरे कृष्ण प्यारे के कुंडल हैं॥ दोहा॥ रागिनि

तब श्रीरागकी पागि हृदय महँ प्रेम॥ बहु विधि बर नत नशिका करन हेत निज छेम॥२८४॥ कवित्त॥ मानो दोय खं-
जन करै हैं रारि बीच आयशुक सो बचावै ऐसी उपमा प्रकाशहै॥ बेसर बिराजै छवि छाजै सो अनूप अति दोय शुक्र
बीच लीन्हो तुल्य रबि बासहै॥ कैधौं कीर चगत सुमोती बाल चंद्र जोती कैधौं उडुगन दोय शशिमै बिलासहै॥ श्या
म कंज कली जापै बैठै जो सपेद अली देखो कैशी भली कृष्ण प्यारेकी सुनासहै॥ दोहा॥ पुत्र तबै श्रीरागके सुमि-
रत श्री भगवान॥ सब तनकी अस्तुति करत उर आनँद महान॥२८५॥ कवित्त॥ लालहै तिलक शिर शोभाहै रसा-
ल अति मुकुट मनोहर सु बैजंयंती मालहै॥ भालहै सुबालन को पीत पट बेनु धरे छरी चारु धरी हाथ परमा विशालहै
सालहै मदन को दुसाल है सुकंधपर दरससुजाको देवतन को मोहालहै॥ हालहै न ऐसो रूपधिक सुरेसहू को जग
मुकुट मनि प्यारो नंदलालहै॥ तबहि राग हिंडोल की रागिनि पाँच सुजान॥ वंदि मकुंदहि बर बचन बोली हरषमहा-
न॥२८६॥ कवित्त॥ अतसी कुसुम सम सोभा चारु दरसात राधिका समेत सुख रूप रूप सालीहैं॥ यमुना के कूल
मैं कदंब तरु मूल राजैं अति अनुकूल देखि शूल जात हाली है॥ पार नाहि वेद पावै यसुदा नचावै ताहि वंदत
चरन शंभु क्रीडत गुवालीहैं॥ मंगल करन दुःख दरन हरन अघवारिद बरन बनमाली बनमाली है॥ दोहा॥
आठ सुवन हिंदोल के निज निज हाथ न जोर॥ विमल बुद्धि बोले वचन जैजै नंद किशोर॥२८७॥ कवित्त॥ हम-
रे समान जगपति तन कोऊ अहै पावन पतित नाहिं आप के समान है॥ पापीन हीं मोसों पाप हारी नहीं तोसों कोऊ

दीन हौं दयाल तुम विदित जहान है॥ अधम महीहौं तुम अधम उधारन हो दोउ ओर सम भाव मिल्यो भगवान है
करुना निधान औ आरति हरन हार आरति निवारो देखि करुना महान है॥ दोहा॥ इमि गगन कीन्ही विनय पूरि
हृदय आनंद॥ जेहि पढ़ि सुनि गुनि नर लहैं राधा पति गोविन्द॥५॥ २८८॥५॥ बेद गये जब शीश नवाई॥
तब हरि निज उद्यन समुझाई॥ द्वारावती चले हरषाई॥ यैठि सुरथ छवि बरनि न जाई॥ सुग्रीवा दिक चंचल घोरे
दारुक लाय सुरथ महं जोरे॥ गरुडध्वज चढि आनंद छावत॥ जयधुनि मंडित दिसि चमकावत॥ वेद पुरहि-
तजि कृपा निधाना॥ आए द्वारावती सुजाना॥ जब हरिगे प्रद्युम्न ससैना॥ गोनद काम दुर्धहि बलऐना॥ तहां बस
न मालतीसु नामा॥ शतयोजन की पुरी ललामा॥ तहां बसहिं गंधर्व गरारे॥ भारे वीर धनुष धरसारे॥ दोहा॥ केसर
लौंग इलायची जावित्री श्रीखंड॥ जाति फालादि अनेक तरु प्रगट सुवास अखंड॥ २८९॥ करहिं सुमन मधुप
मिलि नादा॥ दस दिशि पूरि रह्यो अह्लादा॥ तहं पतंग नामक महिपाला॥ करत सक्र सम राज रसाला॥ सुनि
प्रद्युम्ना गमन रिसाई॥ चल्यो सदल रन भेरि बजाई॥ रज गज हय ... धर्व सत कोटी॥ भिरे आय दोउ करि मतमो
टी॥ भल्ल गदा तोमर असि बाना॥ चलत दुहूं दिशि बिबिधि विधाना॥ तहं पतंग अति रथ धनु तानी॥ दलत भयो
दुहुं दल अभिमानी॥ तब गद धारि गदा इमि पल मैं॥ प्रलय काल पूरयो सब थल मैं॥ द्विरद सीस हति हय गज
चरना॥ रथ टूटे मनुजन कर मरना॥ दोहा॥ मारु भागु धरु पकरु लरु मति डरु डरु गरु काटु॥ हाय हाय अवनहि

वचत पट कुपछारोडा टु॥२९०॥छन महँ रुधिर नदी दश दीशा॥प्रमथ उड़ावहिं भटके सीशा॥सिंह चढ़ी काली लै डाकिनि॥पीवत रुधिर प्रेत अरु साकिनि॥तब पतंग गरजेउ रनमाहीं॥लक्ष द्विरद वाजा तनु माहीं॥ गदहि गदा घुमाइ निजमारी॥गद तेहि आपुनि गदा प्रहारी॥दोय घरी इमि लरे करारे॥तनतें चट चटाहिं अंगारे॥तब गंधर्ब गदा गहि भारी॥तमकि सीस महँ गद के मारी॥मुरछि पर्यौ गद धीर धुरीना॥ यदु दलभो हल चल वन छीना॥तब द्वारावति दिसिते आयो॥तेज कोटि रवि समसर सायो॥दोहा॥तातें प्रगटे गौर तन अतिबल श्री बलदेव॥भक्त हेत हल मुसल धर विक्रम जासु अभेव॥२९१॥घींचि घींचि हलतें अरि सारे॥मुशल मारि चूरन करि डारे॥रथ गज तुरग बीर समुदाई॥मर्दत भेहल मुशल चलाई॥विरथ पतंग भागि पुर आयो॥बहुरि लरन हित साज सजायो॥बल हलते लिय खींचि तहाँहीं॥सिगरी पुरी कामदुख माहीं॥टूटे गृह अराम अटारी॥हाहा शब्द होत भोभारी॥डरि पतंग गंधर्बन साथा॥बलि लायो पद नायो माथा खचित हेम मय सुखद विमाना॥मनि गामी ध्वज कलस महाना॥दस योजन लौं अम्बर छाए॥बिसु कर्मा के चारु बनाए॥दोहा॥तुरँगसु दस अर्बुद सुरँग चार लाख गजराज॥अर्बुद सहस सुरत्न वर सुरथ सजाए साज दोहा॥लौंग इलाची जात फल जाबित्री काशमीर॥इनकी किस्ती लाख भरि लाए गंध्रव बीर॥२९२॥कै प्रनाम करि दोउ कर जोरे॥कहत पतंग सुनहु प्रभु मोरे॥रामन विक्रम हम तब जाना॥तिल सम जासिर जग दरशाना

साना॥ देव देव श्री शेष अनंता॥ काम पाल प्रभु रेवति कंता॥ जैजे अच्युत देव परात्पर॥ आदु अनंत दिगंत धरा
धर॥ सुर मुनींद्र वंदत फनींद्वर॥ मुशली हली वली करुना कर॥ मैं पतंग तुम दीप समाना॥ मैं पतंग तुम जल
भगवाना॥ मैं पद वंदत दास तुम्हारा॥ कृपा करहु रोहिनी कुमारा॥ सुनि प्रमुदित बल आनंद लीन्हा॥ अभयदी-
न गंधर्वन दीन्हा॥ दोहा॥ वंदित सब यादवन तें कृष्ण सुतहि तिन तकि॥ राम गए द्वारावती विजय कीजियो भा-
खि॥ २९३॥ तब प्रद्युम्न सहल सुख छाए॥ चलि नँद मधुधारा तट आए॥ कनक शैल वे शंभक बनहै॥ मनि कोन-
हूं पक्षी तरुगन है॥ हेमावती पुरी सुर मंडित॥ वेत्र वती सरिवर उर भंडित॥ दानव कहं अगम्य अति अहई॥ व-
सु दिग पति की निधि तहं रहई॥ शक्र सखा तित करहिं निवासा॥ सब धन रक्षन दक्ष खुलासा॥ तहं हरि सुत
ऊधवहि पठाए॥ सो सुनि शक्र सखा ढिग आए॥ करि प्रनाम देवहि कर जोरी॥ करहित भाषत भए बहोरी॥
उग्रसेन नृप मन यदु मंडन॥ राजसूय करिहैं अरि खंडन॥ दोहा॥ जंबू द्वीपहि जीतिबे काहिनीहि आज्ञा दीन्ह॥
सो निज बलतें अति बली आठ खंड जय कीन्ह॥ २९४॥ अब सो खंड इलावृत आए॥ देहु तिन्हैं बलि कलह मिटा
ए॥ नतरु होइहै कठिन लराई॥ इंद्र सखा मुनि कहत रिसाई॥ देव मोहि पूजहि का नरहैं॥ सिद्ध अहौं सब निधि म-
म धरहैं॥ मम धर सब रिगपति कर धनहै॥ लाख द्विरद तब मेरे तनहैं॥ कोस कुबेर इंद्र सम बलहै॥ नहि दैहौं बलि
मम पन भलहै॥ ताक हैं कहहु देहि मोहिं भेटा॥ सुनि सो कह्यो जे जिते अखेटा॥ धनद भए जिमि तिमि ह्वै हौ तुम

वि-
१९८

चैत्र भूप सिंगार तिलक जिमि॥ जिमि सुभांग नृपहरि सुखंड कर॥ उत्तरेश बलवान गुनाकर॥ दोहा॥ शकुनी सम हाथ देइ
हौं बलि कहँ हे भूपाल॥ सुनि सकोप बोल्यौ बचन सक्र सखा तेहि काल॥ २९५॥ जबलौं हमन ताहि बलि देहीं॥ तब-
लौं रहु इतरे नर देहीं॥ तब ऊधव बोले नर नाहा॥ तुमहि दीन्ह हमनीक सलाहा॥ परि कुबुद्धि बस जौं नहिं मनिहौ॥ देउ
होइ तब आपुहिं जनिहौ॥ सुनि सो दृष्ट बंद कर लीन्हा॥ ऊधव कहँ तित जानन दीन्हा॥ चिंतत यादव दिन बहु गए॥
हम तब खबरि कहत सब भए॥ सुनि रिसाइ बजवावत टुंका॥ यदुभट चलत भए निःशंका॥ जिमि त्रिपुरारि त्रिपुर पुर जाई
शंबरारि तिमि चले सजाई॥ मकर केतु चापहि ठंकारी॥ भिरत भए बहु भटन प्रचारी॥ दोहा॥ दस अक्षोहिनि सैन लै
सक्र सखा रन धीर॥ भिरत भयो यदुजूह सों त्यागत तीछन तीर॥ २९६॥ तोमर॥ दुहुँ ओरतें भट क्रुद्ध॥ भो करत अ-
द्भुत जुद्ध॥ धरु मारु मारु पुकारि॥ अभिरे अनेक प्रचारि॥ १॥ बहु धनुष कहँ सँधान॥ त्यागहिं अनेकन बान॥ बहु
शीश डारहि छेदि॥ मारहिं हृदय कहँ भेदि॥ २॥ बहु बधहिं कुंजर जूह॥ बहु बधहिं तुरंग समूह॥ बहु सुरथ डार-
हिं तोरि॥ बहु भिरहिं भट सम जोरि॥ ३॥ बहु फिरहिं रन महि रुंड॥ शोभित परे बहु मुंड॥ बहु लरहिं सुरथी जूटि॥
अरि प्रान लेहिं सु लूटि॥ ४॥ बहु गजी द्विरदी बीर॥ संगर करहिं रन धीर॥ हय बाँह सों हय बाह॥ रन करहिं जय
के चाह॥ ५॥ पद चारि सो पद चारि॥ मिलि करहिं बहु बिधि मारि॥ कहु रथी द्विरदी क्रुद्ध॥ मिलि करहिं अ-
द्भुत युद्ध॥ ६॥ बहु रथी अश्व सवार॥ मिलि करहिं बहु बिधि मार॥ अश्वी गजी के साथ॥ रन करहिं हे नरनाथ

७॥सुरथी गजीतें जूटि॥कहु लरत पैदल ऊटि॥इहि भाँति संगर घोर॥नृप होत भो तेहि ठोर॥दोहा॥कटे शीश
कर करन पद कुंडल स्यंदन केत॥हय शिर सुंड बितुंड के रन महिं शोभा देत॥२९७॥गुरु तोमर॥बहु शूर बढ़ि
मरते भए॥अघ नासिते तरते भए॥जैसे गुबारा जात हैं॥तिमि जात शूर दिखात हैं॥१॥बहु भूत भैरव डोलते
धरु मारु बानी बोलते॥सिर खाहिं लैलै डाँकिनी॥हरषाहिं रन महँ शाकिनी॥चढ़ि सिंह डोलत कालिका
गरसोह सिरकी मालिका॥खग उड़हि लैलै आँतरी॥पुनि खाहिं भरि भरि पातरी॥३॥बहु श्यार भोजन करत हैं॥दु-
खदूर अपनो करत हैं॥निकरी रुधिर की आपगा॥रसबीर अति तहँ वापगा॥४॥अतिरंग राच्यो जंग मैं॥भटभिरहि पूरि
उमंग मैं॥मरि रुधिर सरित तरंग मैं॥भटतरहिं जैसे जंग मैं॥५॥यहि भांति संगर घोर भो॥धरु मारु धरु चहुं ओर भो॥जय कीन्ह
हम यह सोर भो॥प्रगटत उभय दल जोर भो॥६॥दोहा॥तब सारन बल को अनुज रोहिनि सुत रिसियाइ॥गज चढ़ि भो मर्दत सुर-
न रन को दंड बजाइ॥२९८॥तोटक॥अहिसे बहु सायक मारत भो॥बहु वीर द्विधा करि डारत भो॥मुकता गज के शिर ते जु खसैं॥नभ तें उ-
डुसे महि बीच लसैं॥सरतें अँधियार भयो रन मैं॥रवि के सम बान चले धन मैं॥लखि कै इमि बिक्रम सारन को
तजि देवन दीन्ह महा रन को॥२॥दल में अपने अति हानि लखा॥धनु तानि चलो बढ़ि सक्र सखा॥दस सायक
पारथ के तन दै॥अरु भानुहि बीस तिही छन दै॥३॥शत सायक शांबहि मारत भो॥तितनों अनिरुद्धहि डारत भो
गद के तन मैं शत दोय गनो॥सर सारन अंग सहस्र हनो॥४॥सब वीरन बान उठाइ लयो॥नभ के मधि जाइ

घुमाइ दयो ॥ सु कुम्हार के चक्र समान फिरे ॥ पुनि भूपर ते सब बीर गिरे ॥ ५ ॥ दोहा ॥ अश्व सूत सबके मरे बचे मुख्य वरवीर ॥ तेहि छन चढ़ि दूजे सुरथ भिर्यौ शांब रन धीर ॥ २९९ ॥ शत तें घोरन द्वै तें सूता ॥ दसवर सरतें धनु मज बूता सहस बानतें स्यंदन काट्यौ ॥ बहुरि बलिष्ट कोप भरि डाट्यौ ॥ सक्र सखा तब गजपर चढ़िकै ॥ मार्यौ शूल शांब कहँ बढ़िकै ॥ व्याकुल शांब भए तेहि काला ॥ गजहि बढ़ायो सुर धन पाला ॥ सोलह कोश उच्च गज भारी ॥ रद द्वै द्वै कोसन के धारी ॥ तीन सुंड अति करत चिकारा ॥ सिकरी पटकत बेग अपारा ॥ चतुरंगहि मरदत बढि हदतें ॥ मद पूरित पुस्कर रद पदतें ॥ भागे यादव के भट भारे ॥ व्याकुल महा द्विरद के मारे ॥ गद गहि गदा तदा रिसि-छाई ॥ गज मस्तक पर मार्यौ जाई ॥ दोहा ॥ पूट्यौ शिर गजराज को गिर्यौ धरापर आय ॥ बज्र लगे गिरिराज सम तरके नरन दबाइ ॥ ३०० ॥ गदा गहन चाह्यौ सुर सोई ॥ तबतें गद मार्यो तेहि जोई ॥ मुरछि पर्यौ पुनि अमर रिसाई ॥ भिर्यो मल्ल सम ताल बजाई ॥ सक्र सखा गद तें रन भारी ॥ भयो समर महँ हे व्रत धारी ॥ गद उठाइ श-त योजन फेको ॥ ताके पुर कंदुक सम लेको ॥ यादव दल महँ बजे नगारे ॥ मनुजन जय जय शब्द उचारे ॥ उठि घर सक्र सखा मति माना ॥ परंब्रह्म यदु नाथहि जाना ॥ लै बलि कहँ यदु दल महँ आयो ॥ अति धनवान महा छ-वि छायो ॥ क्रतु गज कुल के सहस वितुंडा ॥ चार दंत सित बरन वितुंडा ॥ दोहा ॥ हेम शैल के कोटि जग अति विशाल उनमत्त ॥ औरौ अगिनित देस के दिये दिखाइ महत्त ॥ ३०१ ॥ शत अर्बुद रथ हयन समेत ॥ लागे कलश

जल बहु केरे॥ नित्य काम रो अथुल बिसाला॥ पानि जाल बहु हिये सुजाला॥ पाव पाट राज देव प्रवाली॥ बर्चि
न मनिन्ह के सोभा बिसाला॥ इंद्र नीलमणि पै पावन लीला॥ दीन्हे दीठि मीन मुख मीना॥ बहुत बिलासि फेनाल लं
मानी॥ आसन अमलिन दे सुभानी॥ सोहै नवे के अंबर सु नवीने॥ भरि भरि हिरदे मानी दीने॥ सेवहीं चिंकी
पालकी सुनेका॥ दीन्ही चंवर एकनी एका॥ बजनन्ह बाजन बहु बीना॥ कोटि दीन पीयूष महा मन॥ दोहा॥
सभा सुधर्मा कामल बहु हीरा पन्ना लाल॥ बैठहिं तहं सुरेस इव सचिव सहित सिंहासन॥ कोटि दीन पीयूष महा मन॥ दोहा॥
मनी माहि दीनी॥ पद्मरागु बहु परम रंगीना॥ कोटि भार श्रीमंतक की भारी॥ सक्र सरबा मेदिन बिचारी॥ कोटिन्ह मं
रंजित दंड के॥ खडी भयो पद बंदि विनय के॥ मी लरिवहरवे सकल समाजा॥ बरषे सुमन देव तहं राजा॥ हं
कि सुत तव रतनी की माला॥ सक्र सरबा के कंठहि डाला॥ राज काजु यह कही सुभाई॥ महं नं मागो चलि कताई॥ नहीं
सुनत इंद्रका मद आयाऊ॥ सक्र बिनय किछु मुहाए॥ सक्र सरबा को सुनिके हानी॥ नन कीन्ह बलि दीन्ह बिचारी
दोहा॥ तह हरि सुनि दीए बिदाई॥ सक्र सरबा कीयो तहं आई॥ इंद्रहि आवत निसान॥ हरि
सभा मध्य बिराजि कै॥ सकल देव मुनि राज॥ इंद्रहि आवत देखि कै॥ उठे सकल मुनि राज॥ इंद्रहि आवत निसान॥
भए॥ इंद्र सभा मुनि राज उठायो॥ इंद्रहि आवत जानि हरष मुनि छायो॥ नहि छन भयो पुरंदर आवन
मयो॥ इंद्र पति महं बैठे यहु बाना॥ सुनहु बचन सभहि नृप जाना॥ लीला बती पुरी इंद्र यदुबन॥ नह कर नाथ ।

सुकृत विद्याधर॥तासु सुता सुभ सुंदरि नामा॥कहिन जात कछु रूप ललामा॥तहाँ स्वयंवर अहइ अनूपा
आए सकल देव अरु भूपा॥दोहा॥जेहि लखि मुरछि न होउ मैं सो मम पतिअनठानि॥लै माला देखति
सभा परम रूपकी खानि॥३०४॥चलहु तहाँ तुम भ्रातन साथा॥लखहु स्वयंबर बर यदुनाथा॥सो सुनि
काम सदल ऋतु संगा॥लीला वती गए सब उमंगा॥देखेउ तहाँ स्वयंवर भारी॥रत्न रचित जहँ सकल तयारी
छिरक्यो गलियन चंदन बारी॥मोतिन बंदन बार संवारी॥तहाँ दिव्य आसन पर जाई॥बैठे छवि कछु
बरनि न जाई॥गिरि सुमेरु परसिंह समाना॥लखहि सभा सद तेज महाना॥तहँ प्रजेश सुर रुद्रहु आए॥
चंद्र रवि मरुत अगिनि सुख छाए॥शशि जम वरुन धनद सुर नाहू॥देव बैद दोउ दीरघ बाहू॥दोहा॥वि
द्या धर गंधर्व अरु सिद्ध सु किन्नर आदि॥सब समाज बहुरो तहाँ व्याह हेत अहलादि॥३०५॥लख्यो
सदन हरि सुतहि खुलासा॥दूरि करी बिबाह की आसा॥तहँ सो बाल चली लै माला॥श्री रति उमा सची
छवि भाला॥सबन विलो कने उत्तम नारी॥शत शशिके सम आनन वारी॥तेहि लखि रहे सभा सद जेते
मुरछि परे पुथिवी तल तेते॥देख्यो कृष्ण सुतहि तब आई॥वर शोभा कछु कही न जाई॥पंकज से लोचन
सुख मोचन॥गुनि मन रोचन सहित सकोचन॥मुरछित परी भूमि पर सोई॥मन विचारि यह मम पति होई
डारी कंचन माला॥सुकृत कीन्ह लखि हरष विशाला॥तुरतहिं कर विवाह कर साजा॥व्याह रीन्ह

निज कन्यहि राजा॥ दोहा॥ मंगल शब्द बिवाह को सुनिन सके तब देव॥ बटुरि सकल धरु मारु कहि लगे जा
नावन भेव॥ सोरठा॥ करि धरि सर धनु ढाल असि असिनी तोमर परिघ॥ मारन लगे कराल लेहु बान कहँ
भाषि यह॥ ३०६॥ जलपहिं वृथा अल्प मति धारी॥ मारहु याहि छडावहु नारी॥ लालच बस नर कहान कर
हीं॥ अधरम धरहिं धरम परि ह रहीं॥ तेसब तेहि छन गरजहिं कैसे॥ सिंह सौंह सियार गन जैसे॥ तब प्रद्यु-
म्न सदल धनुतानी॥ गर्जि भिरे उर अति रिसियानी॥ लागे तजन तीर तेहि काला॥ कर सिर छेदि छेदि महिडा
रा॥ अमर मरन लागे तेहि काला॥ निर्जर जरे बान की ज्वाला॥ तीन त्रिदस भे त्रिदस बरूथा॥ कादर भए सूर सुर
जूथा॥ बिबुध बिगत बुध भे नर पाला॥ नभग भगे धरि दुःख बिशाला॥ दोहा॥ इहि बिधि जीति इलावृत हि कृ
ष्ण सुवन बलवान॥ दुंदुभि बजवा वत भए घहराने सुनि सान॥ ३०७॥ मुदित चित परमा विस्तारे। भरत खंड हरि
सुवन पधारे॥ देखत देश सुभेस नरेशा॥ गए द्वारका हरष बिसेशा॥ काम पठाये ऊधव जाई॥ नृप बल हरि कहँ सी
स नवाई॥ जोजो भए खंड प्रति चरिता॥ कह्यौ सकल सुख सरित बितरिता॥ उग्रसेन बल कृष्ण समेता॥ वृद्धन
सह निकरे अरि जेता॥ आगतें आनन के काजा॥ चले साजि सब मंगल साजा॥ छंद॥ सब साज मंगल साजि
कै बाजे बिबिधि बजवावहीं॥ नाचहिं मुदित मन बार त्रिय आनंद उर सर सावहीं॥ १॥ द्विज बहुत वेदन पढ़
हि अस्तुति सूत मागध गावहीं॥ मनि पुष्प अक्षत दूब लाजा द्रव्य दधि सु उडावहीं॥ २॥ कर कलस मंगल लिए

नारी दूब दधि पुंगी फला॥ संग शंख दुंदुभि बजहि आनंद बजहि सो सुख अति भला॥ ३॥ संग धूपदीप प्रसून आरति सजे अति सुखमा भए॥ हरि सुवन इत तें भूप उत तें प्रेम भरि सन्मुख भए॥ प्रद्युम्न असि धरि भूप सन्मुख दंडवत करते भए॥ हरि सूर बल बसुदेव आदिक वृद्ध पद परते भए॥ गुरु गर्गके पद बंदि कै मगसोक सगरो गिलत भे॥ तेहि काल सब अति धन्य कहि प्रमुदित परस्पर मिलत भे॥ ६॥ दोहा॥ गज चढ़ाइ हरि सुवन कहँ यदु नृप सहसमुदाय॥ द्वारावति प्रविसत भए दुंदुभि बहु बजवाय॥ घर घर प्रति मंगल भयो सुख सो भाषै कौन॥ कौन कथा सुनि हौ अबै सो भाषहु क्षिति रौन॥ ३०८॥ कह नृप उग्रसेन यदु राजा॥ लहि इमि जीति भरे सुख साजा॥ केहि विधि राज सूय कहँ कीन्हो सुनि सोई नारद कहि दीन्हो॥ उग्रसेन श्रीकृष्ण सहाई॥ यज्ञ करत भे अति अधिकाई॥ आचारज गरगादि बुलाए॥ नर पालन कहँ न्योति पठाए॥ सिगरे ऋषिन मुदित बुलवाए॥ शिष्य पुत्र लैते सब आए॥ बेद व्यास शुक पैल पराशर॥ दुर्वासा मइ त्रेय विप्रवर॥ जैमी भार्गव बय संपायन॥ राम दत्त सित वेद परायन॥ गौतम अत्रि बसिष्ट सुभंता॥ इनहि आदि आए बुधिवंता॥ दोहा॥ ब्रह्म संभु गुह रुद्र रवि चंद्र गणेशहु ताश॥ मरुत धनद अश्विन सुवन बसु बासव बल रास ३०९ सिद्ध यक्ष अप्सर विद्या धर॥ गंधर्व देव जूथ सह किन्नर॥ दानव दैत्य भूत वेताला॥ बलि प्रहलाद बान अरि काला॥ निसिचर गन सह निसिचर ईसा॥ हनूमान लीन्हे संग कीशा॥ जाम वंत संग रिच्छ समाजा॥ खगन सहित आए खगराजा॥ बासुकि

अहिन सहित चलि आए॥ अक्षय बट प्रयाग मन भाए॥ काम धेनु सँग धरनि विचारी॥ मेरु हिमादिक नग तनु धारी॥ गंगा यमुना नदिन समेता॥ सात पुरी आई मख हेता॥ रत नागर आए तेहि काला॥ मुर्छन मान राग सुर ताला॥ दोहा॥ नवा रन्य ऊखलन बहु चौदह गुह्य स्थान॥ दंडकादि कानन सकल आए तित नर ज्ञान॥ ३१०॥ जेते जगके तीरथ भारी॥ आए बन सर सरित सुधारी॥ गोबर्द्धन गिरि नायक आए॥ कृष्णादिक सु कुंड छवि छाए॥ वृंदाबन आदिक वन व्रजके॥ आवत भए सु साजहि सजके॥ नव उप नंद नंद नँद राजा॥ षट वृष भान सहित बर ताजा॥ कीरति यसुमति राधा आँई॥ सँग गोपी गन अति सुख छाई॥ सतहु जूथ शोभा से पूरे॥ अरु बहु ग्वाल जूथ बिधि रूरे॥ गोपी ग्वाल बसे नृप जहँवा॥ गोपी भूमि भइ बर तहँवा॥ तिन्हके तनतें गोपी चंदन॥ भोजेहि लगे मिलहि नँद नंदन॥ दोहा॥ गोपी चंदन धरत नर नारायन ह्वै जाइ॥ महिमा जासु महेश बिधि सेसहु सकत न गाय॥ ३११॥ चार बरन आश्रम सब आए॥ दुर्योधन धृतराष्ट्र सुहाए॥ भीष्म कर्ण शल्य धर्म वृकोदर॥ अर्जुन नकुल समेत सहोदर॥ नृप दमघोष और जय सैना॥ भीष्मम धृष्ट केतु जग जैना॥ बहुरि वृद्ध शर्मा अति सैना॥ भूप नग्न जित आनँद ऐना॥ धृत तव जनक जनक मिथिलेशा॥ अरु अनेक महि पाल सुभसा॥ अरु अनेक अवनीश सुआए॥ कहलौं नाम कहिय छवि छाए॥ सिंधु शैल रेवति मधि भूपा॥ भो पिंडारक तीर्थ अनूपा॥ तहाँ यज्ञ की करी तयारी॥ कुंड पाँच योजन को भारी॥ दोहा॥ ब्रह्म कुंड होतो भयो चार कोश को साँच॥ दोय दोय वर कोश के कुंड बनाये पाँच॥ दस बेदी मख

महँ भई वर विस्तार विचार ॥ यज्ञ खंभ कंचन बन्यो ऊची हाथ हजार ॥ ३१२ ॥ योजन पाँच सु मंडफ राजैं ॥ कनक वि-
तान सरस छबि छाजैं ॥ रंभ खंभ तोरन विस्तारे ॥ भोज विष्णु मधु अंधक भारो । सूर दसा रह महँ यदुराजा ॥ लसे यथा
सुर महँ सुर ताजा ॥ परि पूरन तम सह परिवारा ॥ राजहि कोकहि बरनै पारा ॥ उग्रसेन तहँ दिच्छा लीन्हा ॥ गरगहि वर
आचारज कीन्हा ॥ होता भेद सलाख सु होते ॥ तितने दिक्षित मंत्र उदोते ॥ पाँच लाख अध्वर उद गाता ॥ सुंड स-
रिस गज भार विभाता ॥ भोजन करि अगि निहि महि पाला ॥ भयो अजीरन तहँ तेहि काला ॥ दोहा ॥ कोऊ जीव ज-
हान भे भूखे रहे नभूप ॥ सोम पान करि देवता भए अजीरन रूप ॥ ३१३ ॥ उग्रसेन रुचि मती समेता ॥ चले नहान स-
कल जग जेता ॥ व्यासा दिक श्रुति रिचा उचारहिं ॥ नृप नहात आनँद बिस्तारहिं ॥ पतिनी सहित लसे नृप कैसे ॥
सहित दक्षिना वरमख जैसे ॥ मनुजन देवन दये नगारे ॥ नृप पर सुमन प्रसून पवारे ॥ चौदह नियुत कनक भरि हाथी
भूषित हय शत अर्बुद साथी ॥ विविधि रतन धन वस नरशाला ॥ गर्गहि देत भए नर पाला ॥ सहस द्विरद हय
अयुत सजाई ॥ सुवरन मन पचास लदवाई ॥ द्विज प्रति देत भए यदुराजा ॥ मरुत सरिस सब साजे साजा ॥ दोहा ॥
कंचन के बासन सकल रहे नए नित खात ॥ नित कहँ तजि तजि तुष्ट सब भए मुदित द्विज जात ॥ सोरठा ॥ लैलैं
अपनो भाग देव दनुज निसिचर नभग ॥ पूरि हृदय अनुराग कपि गिरि तरु तीरथ गए ॥ ३१४ ॥ सरि तन्ह के सह
सागर साता ॥ पूजि तभए भवन निज जाता ॥ जेजे तित जगती पति आए ॥ तेते प्रमुदित धाम सिधाए ॥ नँदा

सिगरोगोपाला॥ धाम गए भरि हरष विशाला॥ सब कहँ दान मान परिधाना॥ पूजेउ उग्रसेन मति माना॥ यह हम मखकर चरित बखाना॥ तित नहि काजित श्री भगवना॥ जो यह कथा कथइ सुनि गुनई॥ चारि पदारथ लै दुख धुनई॥ प्रभु पुरान हरि पूर्ण परेसा॥ पुज्य परम पर ब्रह्म सुभेसा॥ तिनकी कथा सुनहिं जे गावहिं॥ तिन के कुल तीरथ कहवावहिं॥ दोहा॥ चार व्यूह अवतार धरि मखको करि कै नाम॥ भारहरत भे भूमि को तिन्ह कहँ कोटि प्रनाम॥ यदु मंडन खंडन कलुख दंडन असुर घमंड॥ सुमिरि प्रातमार्त्तंड दुति भयो विश्व जित खंड॥ कृष्ण विना औरहि भजै सोनर पशू समान॥ तजि गंगा कूपहि खदै तट बैठो अज्ञान॥ सोरठा॥ कृष्ण कृष्ण करि जाप पूरन कीन्ही खंड कहँ॥ तिन को सकल प्रताप नहि मम बुद्धि बल यासु महँ॥ ३१५॥ इति श्री भाषा प्रकाशे कृष्ण प्रिये गिरि धर दास विरचिते प्रेम पथ रचिते गर्ग संहितायां सप्तम विश्व जित खंडं समाप्तम् शुभ मस्तु

श्रीगणेशायनमः॥ श्रीमद्वल्लभायनमः॥ अथ बलदेव खंड लिख्यते॥ सोरठा॥ खलहि चंड मार्त्तंड जन कमलहि मा
र्त्तंडसे॥ कहन हलायुध खंड होत पाप गन खंडसे॥ दोहा॥ श्याम गात गुरु भ्रात सह देवज्ञान अवदात॥ कृपाकरहु
करुना करन दीन बंधु तुम ख्यात॥ चौपाई॥ कह नृप हम हरिकर जस सुनेऊ॥ तुम्हरी कृपा भली विधि गुनेऊ॥
सुधा समान सुजस यदुबर को॥ अति रुचिकर दुख हर अघ हर को॥ षोडश सहस नारि हरि केरी॥ दस दस सुत
जेहि भाग्य बडेरी॥ मोहि अहै संदेह अथोरा॥ बलहिन मे किमि एकहु छोरा॥ कहहु जाहु जिमि यह संदेहू॥ मु-
नि भाषा तुम सुनहु बिदेहू॥ हे नृप सुनहु कथा हलधरकी॥ पाप हरन आनंद आकर की॥ इक दिन आक बिपा
क मुनीशा॥ गए हस्तिना पुरकी दीशा॥ शिष्यसु योधन भवन सिधाए॥ तिनहि सोऊसु पूजि बैठाए॥ दोहा॥ करि
प्रदक्षिना कुरु मुकुट दोउ कर जोरि बिदेह॥ बुधि बलतें पूछत भयो निज मन को संदेह॥ १॥ संकर्षण काके अ-
वतार॥ केहि हित तन धरनी में धार॥ जिन मम पुर कहँ हल तें खींचा॥ जिनके चलतें सब बल नीचा॥ गदा
युद्ध महँ मम गुर अहहीं॥ कहहु कथा सुनि सो मुनि कहहीं॥ कुरु जुबराज सुनो चित लाई॥ जामें अघ को ओ
घन साई॥ द्वापर अंत भूमि भरि भारा॥ गऊरूपधरि बिधिहि पुकारा॥ बिधि हरि सहित धरनि लिवाए॥ विष्णु
पास बैकुंठ सिधाए॥ तिनके कहे सकल सुर भाए॥ तब ब्रह्मांड के बाहर आए॥ बामन बिवर ब्रह्म द्रव धारा॥ बहु
अंडन के पीक निहारा॥ दोहा॥ लख्यौ जाइ विरजा नदी चलिकै ताके पार कोटिन रवि सम तेज लखि कीन्ही सबै जुहार

२॥ शेषहि लख्यो सकल सुखसदना॥ सित वपु उन्नत दसशत बदना॥ करी कुंडली सहित उमंगा॥ गऊलोक गिरिके उच्छंगा॥ वृंदारन्य यमुन गोबर्द्धन॥ कुंज निकुंज लख्यो सुख बर्द्धन॥ गोपी गोकुल संयुत लोका॥ करि प्रनाम प्रविसे सुर थोका॥ सखी वचन प्रेरित ते जाई॥ देख्यो राधा सहित कन्हाई॥ पीत बसन सिर मुकुट बिराजत॥ छवि लखि कोटि कंदरप लाजत॥ वर भूषन भूषित करुना कर॥ अलक झलक सब खलक मनोहर॥ कर अरबिंद माहिं अर बिंदा॥ कोटिन अंड ईश गोविंदा॥ दोहा॥ देवन बहु अस्तुति करी और कह्यो निज हाल॥ तब हरि आवन प्रन कियो दीन बंधु गोपाल॥ ३॥ पुनि भे शेषहि कहत तहाहीं॥ तुम बसु देव देवकी माहीं॥ जाइ बहुरि रोहिनि महँ जाई॥ नंद सदन जन्महि हरषाई॥ तब हम निज लेहै अवतारा॥ सुनि सो बचन सर्प सरदारा॥ आपुनि चारि सभा मह आई॥ चहै चलन की करन उपाई॥ सुनत सिद्ध चारन गंधर्बा॥ दुषित भये तेहि पर्वहि सर्बा॥ सुमति सूत रथ साज सुल्यायो॥ ताल ध्वज विशाल फहरायो॥ अरि मद दलन मुशल हद गाढ़े॥ भे निज रूपहि धरि धरि ठाढ़े॥ वर्मब्रह्म मय मूरति माना॥ सोउ सँग चाहो करन पयाना॥ दोहा॥ सुनहु भूप तेहि क्षन तहाँ भए आवते शेष॥ जौन रमा वैकुंठ के सहस बदन बर बेस॥ ४॥ पानिन पातंजलि संग जिनके॥ चारन चामर फेरहि तिनके॥ अहिन समेत पराक्रम पीना॥ भे संकर्षण वपु महँ लीना॥ पुनि आये वैकुंठ अजित तें॥ मंडित भूत प्रेत अगनित ते॥ अज इक पाद अहिर्बुध नादी॥ सेवहि सहस मुखहि

सर जाही॥ सोउ करि अस्तुति आनँद छाये॥ संकर्षण तनबीच समाये॥ स्वेत दीपके दस शत बदना॥ आ- व· ८१·
ये स्वेत बरन सुख सदना॥ अंबर नील प्रताप सुरंगा॥ कुमुदकुमुद अरुणादिक संगा॥ परम तेज धर परम प्रवीना॥
भये अनंत अंग महँ लीना॥ दोहा॥ बहुरि डूला दूत खंडतें आये दस शत नाथ॥ करत प्रकास दिनेश सम
नाम भवानी नाथ॥ ५॥ अर्बुद सहस नारि संग सोहैं॥ ते सब सुख निज पति को जोहैं॥ कुंडल कीट हार पटनी-
ला॥ करत प्रकाश स्वेत तन मीला॥ सोउ तिनके तन बीच समाये॥ तब धरनी धर फनिबर आये॥ लोक प-
ताक महा द्युति धारी॥ हरि तामसी कला बल भारी॥ सहस बदन अति उन्नत सोहै॥ मुकुट समूह देखि
शशि मोहैं॥ कुंडल एक सोह अधिकाई॥ संग देव मुनिके समुदाई॥ व्यास पराशर सनक सनंदन॥ नारद सनत
कुमार सनातन॥ सांख्यायन पुलस्त बागीशा॥ मैत्रेयादिक और मुनीशा॥ दो॥ महा शंख बासुकी कह कंबला श्व
धनराष्ट्र॥ काली तक्षक धनंजय श्वेतादिक अतिराष्ट्र॥ ६॥ सर्प समूह चवर सिर करहीं॥ अस्तुति बर बहु वि-
धि बिस्तरहीं॥ नाग सुता बंदित संग सर्वा॥ संग सोहहिं किन्नर गंधर्वा॥ सिद्धादिक गावहि भरि रंगा॥ त्रिपुर
हारके श्वर बल संगा॥ कालिकेय कलि कवच निवाता॥ इन्हहि आदि संग दानव जाता॥ रुद्र एकादस अ-
रु सुर सुरभी॥ तिनके संग यदुनाथ अरुर भी॥ वेनु मृदंग ताल डफ वीना॥ बजहिं सजहिं त्रिय राग नवीना॥ जा-
के इक सिर सब महि कैसे॥ कंजर शीस धूरि कन जैसे॥ भूधर परम तेज छवि छाये॥ संकर्षण के मध्य समाये

दोहा॥ चकित सबन लखि शेषतब शिष्य न भाख्यो बात॥ महि मंडल महं होहु तुम क्षत्री यादव जात॥७॥

हे सारथी सुमति मति माना॥ वसहु सोच तजि दूतहि सुजाना॥ जब हम तुमहि बोलावैं रनमैं॥ तुमतब तित आयहु सो छन मैं॥ हे तालाक मुशल हल बरमा॥ तुमहु बसहु दूत अद्भुत करमा॥ सुमिरन समय तुमहु दूमि कीजो॥ मोहि सुमिरित सानंद रहीजो॥ हे पाणिनि व्यासादिक मुनिवर॥ वासुकि आदिक सकल जहर धर॥ बरुन काम गो सह मरजादी॥ हे दानवनि घात कवचादी॥ हम यदु वंश लेव अवतारा॥ तहं तुम दरसन करेहु हमारा॥ मन महं कछु गलानि जनि आनेहु॥ औरहु अधिक हरष सुख मानेहु॥ दोहा॥ सो सुनि ते सब जात भे करि प्रनाम निज धाम॥ नागसुता गनते तबै बोले अहि पति राम॥८॥ तुम सबब्रज मंडल महं जाई॥ प्रगट होहु गोपी समुदाई॥ कबहु यमुन तट सबन समेता॥ करिहौं रास रूढ़ यह हेता॥ कलि निवात कवचन कर राजा॥ सो प्रनाम करि हेनर राजा॥ दै पुष्पा वलि दृगभरि वारी बोले वचन विचार विचारी॥ जित तुम तित हम रहे सदाई॥ अति वियोग दुख सह्यो नजाई॥ आज्ञा करहु सु गुनि मन माहीं॥ जहं तुम रहहु तहंइ हम जाहीं॥ सुनि कै चारु वचन नर पाला॥ कहत कलीते हली दयाला॥ भरत खंड जन महु गुनि मन मैं॥ कौरव पति धृत रष्ट्र सदन मैं॥ दोहा॥ तहां तुमारो होय गो दुर्योधन यह नाम॥ गदा युद्ध महं शिष्य मम ह्वैहो विक्रम धाम॥९॥ सोइ भयो तुमरो अवतारा॥ हरि माया वस ज्ञान नधारा॥ तेहि

छन तहां शेष की नारी॥ नाम नाग लक्ष्मी अति प्यारी॥ पतिहि जात गुनि अति दुख धारी॥ कोटि चंद्र सम मुख छवि भारी॥ बैठि महा रथ सखियन साथा॥ गई सभा महं जित अहि नाथा॥ पास बैठि निज हाथन जोरी बोली वचन निरखि मुख ओरी॥ जौ तुम मोहितजि जैहौ नाथा॥ तौ नहि प्रान करहि तन साथा॥ शेष कह्यौ तब वचन सुनाई॥ रेवति के विग्रह महं जाई॥ लीन होइ नर पुर मोहि भजहू॥ हे प्रिय प्रिया सोच सब तजहू दोहा॥ दुःख निवारन विश्व के कारन धारन धर्नि॥ वालन गति वारी त्रिया तिनतें कहत विवर्नि॥१०॥ कासु सुता कित रेवति नामा॥ सुनि बोले अनंत गुन धामा॥ कृष्ण कहे हम कश्यप भौना॥ शेष भये कद्रू के छौना॥ महि मंडल अखंड सिर मंड्यौ॥ गत श्रम होइ सकल दुख खंड्यौ॥ तब मनु चाक्षुष चक्षुष बेटा॥ सप्तदीप धृत राज अखेटा॥ परम प्रचंड जासु भुज दंडा॥ मंडित मंडल भूमि अखंडा॥ सिद्युम्नादि भए सुत ताही॥ भई सुता तिनके मख माहीं॥ ज्योतिष्मती नाम गुन रासी॥ पितु कहं व्याह जोग सोभासी॥ इक दिन पूछ्यौ कन्यहि ऐसो॥ तुम अपनो पति चाहत कैसो॥ दोहा॥ तब कन्या भाषत भई जो सब महं बलवान॥ तेहि मैं अपनो पति चहति सुनि नृप किय अनुमान॥११॥ इंद्रहि द्रुत बोलाइ बैठाई॥ पूछ्यौ मनु उरहरष बढ़ाई॥ तुमतें पर कोउ है बलवाना॥ सत्य कहो निर्जर सिर त्राना॥ सत्य समान धर्म नहि कोई॥ पाप अशक्ति सरिस नहि होई॥ सुनि विचार करिकै सुरनायक॥ बोलत भए वचन वर लायक॥ मैन वली हमते बड वायू॥ जावस सकल

सकल की आयू॥ इमि तहँ गये शक्र हरषाई॥ तब मनु पूछा बायु बोलाई॥ तुमतें अधिक कोऊ जग अह
ई॥ सुनत बचन बर मारुत कहई॥ गिरि हमते अधिकी सब अहहीं॥ मोते नहिं चल गति कहं लहहीं॥ दो॰
मनु तब भाष्यो गिरन तें तुमते कोउ बलवान॥ सुनिते तब भाषत भये सुनु कौरव सिरत्रान॥ १२॥ भू मंडल स-
बते बड़ अहही॥ जापर शैल समूहन रहहीं॥ तिनहिं बिदा करि मनु महि राई॥ पूछत भे भूखंड बुलाई॥ तुमते कौ-
न अहै बल धारी॥ सुनि बोलेउ भूखंड बिचारी॥ हमते बली शेष भगवाना॥ सदा नंद गुन सिंधु महाना॥ बासुदेव
सो आदि अनंता॥ सहस वदन जेहि बेद भनंता॥ शुक्ल प्रकाश मनहु कैलासा॥ कमल नैन रबि कोटिन भासा॥ फन
समूह मनि मंडित भारे॥ घन समूह नख तन तजि धारे॥ शक्ति सरूप भक्ति भय हारी॥ अच्युत आदि देव हलधारी॥
दोहा॥ रज सम सातहु दीप सह महि जाके इक भोग॥ जासु भजन करि लहहिं नहि नर कुरोग भव भोग॥ १३॥ सकके
कारन द्विरद विदारन॥ बल कृपाल अहि बर महि धारन॥ जगत मूल फणि गनके ईसा॥ तिनते बड कोउ हैन महीसा
तब भूखंड गयो चलि प्यारी॥ पितु आज्ञा लै सोई नारी॥ मम हित विंध्याचल पै जाई॥ लाख बरस तप किय अधि
काई॥ ग्रीष्म पंच हुत भुक कहँ तापै॥ पावस धार शीष निज थापै॥ निशिमहि सैन सीत जल ढाढ़ी॥ जके माहि
डुबाए डाटी॥ ताकर सुंदर रूप निहारी॥ मोहित भए सकल सुर झारी॥ ताहि लोभावन हित सब आये॥ जे अति
जगत प्रमाणिक गाये॥ दोहा॥ क्रतु यम बरुन कुबेर शिखि रबि ससि कुज बागीस॥ बुध उश नाशन तिन्हन महं

प्रथम कहत सुरईश ॥१४॥ हे सुंदरी तपत तप काहे ॥ हम सब करिहैं जो तोहि चाहे ॥ जोबन गये न जोबन आवैं ॥ सो सुनि कै सो अबला गावैं ॥ सहस बदन अनंत भगवाना ॥ मैं तिनकहं पति चहति अपाना ॥ सो सुनि हसे अमर अमर रवलै ॥ बोल्यो इंद्र मोहि किन रखलै ॥ वृथा साँप कहं चाहत स्वामी ॥ मैं ना केस इंद्र बड नामी ॥ नाग बाह भजु नागहि त्यागी ॥ तब यम कहत काम मति पागी ॥ मैं जग दंडन उत्तम नेता ॥ मोहि बर करहु जगत बर जेता ॥ धनद कह्यो मै धन कर स्वामी ॥ राज राज धन दायक नामी ॥ दोहा ॥ मोकहं अपनो पति करहु सब गुन धन आधीन ॥ तब बोले हुत बाह यह मोहि किन बरत प्रबीन ॥१५॥ देवन को मुख मै मरुत नायक ॥ बड़ो सुरन महं सबते लायक ॥ वरुन कह्यो मोहि व्याहहु चाहे ॥ सात सिंधु की वैभव जाही ॥ लोक पाल पाशी जग जाने ॥ सो सुनि सविता कहत सयाने ॥ जगत चक्षु मैं चाक्षुष कन्या ॥ तम नाशक विवाहु मोहि धन्या ॥ सोम करहु मोहि वरहु सचाहा ॥ नखत नाह पुनि औषधि नाहा ॥ द्विज पति तिय वल्लभ निशि कारी ॥ सुनि बुध कहत सुबात विचारी ॥ महि मम मातु जनक वाराहा ॥ जग मंगल मंगलु करु चाहा ॥ बुध मे कहत सुबुध मैं लायक ॥ मोहि वर करत सुनी सुख दायक ॥ दोहा ॥ देव गुरू बोलत भए देव गुरू मैं नारि ॥ धिसना अरु बागीस बरु मोहि कि न वरत बिचारि ॥१६॥ शुक्र कह्यो तब मैं भृगु वंसी ॥ दानव गुरु कवि दुख विध्वंसी ॥ विद्या निधि आनंद के रासी ॥ वरहु मोहि अहि आशा नासी ॥ तबै शनिश्चर वचन बखाना ॥ नहि जग कोउ मम सम बलवाना ॥ प्रबल सुरन पर गहि गहि पूरो ॥ लखि तेहि नासों लखि

नहिं पूरीं ॥ इमि कहि कहि सब रहे चुपाई ॥ ज्योतिष्मती अतिहि रिसि आई ॥ फरकत अधर अरुण दृग दोऊ॥ भृकुटी धन सम चंचल सोऊ॥ करि मम ध्यान क्रोध कहँ कीना॥ तीन लोक मधि अति दुख भीना॥ महि मंडल समेत विधि लोका॥ कंपत भयो सहित पुर थोका॥ दोहा॥ भयो भयंकर भय सबन तबते देव डेराय॥ थर थरात चिंता मगन गहे नारि के पाय॥ सोरठा॥ तब कछु गहि संतोष दोष जानि अति सबन को॥ पृथक पृथक सह रोष श्राप देत शनि आदि कहँ॥ १७॥ सवैया॥ छलते खल ताभरि बात कहे सबते बड़ बान बड़ी बनिरे॥ अ- बहीं कृश रूप निरेषन नीचसु पंगु लही सिसुखै हनिरे॥ मति मंद सु नामहु मंद परै नित तैलहि माखि खवाग निरे॥ शनि शंकठ दोषनि पूरि सदा रहु मोसनि ढ़ीठ भयो शनिरे॥ १॥ हे दिति नंदन के गुरु मूरख औरव बिहीन रहो तुम काना॥ हे धिषना तुम नारि कहा बहु जो उर कीन्ह महा अभिमाना॥ हे बुध बारह- म्हारो रहै जग छूछ सदा बिन पूछ सुजाना॥ हे कुज आनन बानु सो तब होइ जो आपहि सुंदर भाना २॥ हे शशि तोकह रोग छई अब होइ सदा यह श्राप हमारो॥ दांत बिना तुम होहु सदा दिन नाह सवा- द सुखै नहिं धारो॥ पानी पति लायक रूप बनेसु होइ जलंधर रोग अपारो॥ हे सिखि भक्ष अभक्षहु भ- जौं लखि मोकहं पाप बिचारो॥ ३॥ दोहा॥ धनपति तुम्हरे पुत्र्य कहि हरिहै निशिचर नीच॥ यमतु- मह मनुजाद तें भगिहौ रन के बीच॥ १८॥ सवैया॥ मद तोहि भयो सुर राज महा खल निंदा करैं॥

धरनी धरकी॥ कबहू कोउ भूप महा दिवि मैं तब राज करै छवि भाकर की॥ सचिवै अति चाह करै गो सोई तुम भागे रहो वतिया उकी॥ रजनी चर जीति कै कैद करै सब दोलत आइ हरै घरकी॥ दोहा॥ दुहि विधि दीन्हो आप तब सबकहं कठिन कराल॥ तब तातें बोलत भए क्रोध भरे सुरपाल॥ १६॥ रे मैंदीन्ह वृथा मोहि शापा॥ थोरेहि चात क्रोध अति व्यापा॥ तातें कबहुन सुत तोहि होई॥ नहि यह जन्म मिलै पति सोई॥ इमि कहिकै सब सुरन समेता॥ नाक गए चलि नाक निकेता। मुनि सो कीन्ह तहाँ तप भारी॥ तब तन ताप बिरंचि बिचारी॥ लैमरीचि आदिक कहं भाये॥ चढ़ि मराल सुचाल चलि आये॥ बोले सुंदर बचन विचारी॥ हे शिशु चक्षु कुमार कुमारी॥ तुम्ह तप कीन्हो प्रीति अनन्या॥ निजइच्छि तब बर मांगत कन्या॥ सो सुनि कढ़ि जलते पद बंदी॥ बोली दै कर जोरि अनंदी॥ दोहा॥ हे प्रभु अहि पति होहिं पति दीजै यह बरदान॥ सुनि ब्रह्मा भाषत भए देवन के सिर भान॥ २०॥ वैवश्वत मन बंदत माहीं॥ मिलिहैं तुम कहं मिथ्या नाहीं॥ बीस आठ चौकडी विताई॥ मिलिहै जो दुर्लभ अधिकाई॥ तबसो झिझिकि कह्यो रिजलाई॥ सब तब हाथ अहै सुर राई॥ आशु मिलै सो कर कछु उपाई॥ नतरु शाप देहौं रिसि पाई॥ सुनि विधि मन कर तासु बिचारा॥ दै धीरज यह बचन उचारा॥ तुम अनन्त पति रैवत धामा॥ ह्वै हो सुता रूप अभिरामा॥ तहां एक सै बारह जुग जैहैं॥ घडी सरिस बिचार महं ऐहैं॥ सो कछु होइ विकल्प न बाता॥ इमि कहि गे निज सदन विधाता॥ दोहा॥ तब सो रैवत भूप गृह भई

रेवती नाम॥ रूपशील जीवन जमा व्याह जोग अभिराम॥२१॥ पूछेउ रैवतसुता बोलाई॥ कस पति चाहति करउ उपाई॥ तब सो कहति भई पूरव सम॥ सबते बली जोनसो पति मम॥ तब रैवत त्रिय सुता समेता॥ रथ चढि चलत भए जग जेता॥ पूछत हित बिधि मंदिर आए॥ तिनकी सभा अजहुते छाए॥ अठाइस चौकडी बितानी॥ घरी समान सबन करि जानी॥ तुम अब नामहं निबसहु जाई॥ होइहिं व्याह काल कछु पाई॥ अहि लक्ष्मी सिर धरि पति बानी॥ जाइ रेवती मध्य समानी॥ तब संकर्षन भार उतारन॥ निज अवतार कीन्ह महि धारन॥ दोहा॥ यह भाषी हलधर कथा पुन्य बीज को खेत॥ अघ समूह को परसु सम आसु नासु करि देत॥२२॥ बोले दुर्योधन हरषाई॥ मैं अति धन्य अहो मुनि राई॥ संकर्षन कर भक्त अहौं मैं॥ तव प्रभाव यह मतिहि गहौं मैं॥ कहिय कृष्ण बल किमि अवतारे॥ बहुरि गुप्त किमि व्रजहि पधारे॥ मोहि कथा सब कहहु अमोले॥ प्राग बिपाक सुनत तब बोले॥ देवक सुता दीन्ह बसु देवहि॥ कीन्ह बिदा दै दान अमेवहि॥ कंस बहिन पहुंचावन काजा॥ चलेउ सुरथ चढि तोहि छन राजा॥ व्योम बानि तब भाषा हैहू याके अष्टम गर्भ मरैहू॥ सो सुनि कंस निकार कृपाना॥ लेन चह्यो भगिनी कर प्राना॥ शौरि बोध कीन्हो तबै खलको अति बुधिवान॥ कंस कैद करिकै दुहुन धरयो लेन संतान॥२३॥ प्रथम पुत्र जब दीन्हो शौरी॥ हन्यो न ताहि दया कछु दौरी॥ नारद कह्यो अंक गति वामा॥ तिम पुत्रन जानहु बल धामा॥ तब बोलाइ

भो शिशु कहँ मारो॥ इमि खट् सुत अज्ञान करि डारो॥ यादव गन तब भये पराए॥ सप्तम गर्भ शेष चलि आए॥ हरि अज्ञा तें लै तब माया॥ जाइ गर्भ रोहिनि महँ नाया॥ नंद भवन बसुदेव पियारी॥ निबसे जाय तहाँ हलधारी॥ गायव गर्भ भयो देवकी को॥ करत भये मथुराजन सकि को॥ भादव पंच दिवस बुधबारा॥ शुक्ल उच्च गृह पाँच बिचारा॥ दोहा॥ तुला लगन मध्यान्ह मैं बरसहिं सुमन सफूल॥ प्रगटे बलजयधुनि दिशन बाढ्यो हरष अतूल॥ २४॥ नंद कियो सब जातक करमा॥ गऊ नियुत दीन्ही भरि परमा॥ विविध भांति बजवाएउ बाजा॥ गोपन पहिराएउ सह साजा॥ देवकि अष्टम गर्भ मुरारी॥ प्रगटे प्रभु संतन हित कारी॥ हरि अज्ञा तें शौरि कुमारहि॥ लैद्रुत गए यमुन के पारहि॥ तहां सुता यशुमति के जाई॥ धरि सुत ताकहँ लीन्ह उठाई॥ आए भवन बंद भे तारे॥ प्रातसुता तब शब्द उचारे॥ आए कंस लै सुता रिसायो॥ पट कान हेत उठाय फिरायो॥ तुरत तमकि देवी ह्वै सोई॥ नभ महँ तडित सरिस द्युति होई॥ दोहा॥ बिद्याधर चारन सुमुनि सिद्ध देव गंधर्व॥ बंदित सो बोली गरजि गर्भ करत किमि खर्व॥ २५॥ रेखल भयो कालकहु तोरा॥ इमि कहि गई बिंध गिरि ओरा॥ कंस भगिनि मंदिर तब आयो॥ तिन कहँ बहु मनाय समुझायो॥ निज गृह जाइ सलाह बिचारो॥ गो द्विज देव शिशुन कहँ मारो॥ सो सुनि ते फिरि मारन लागे॥ काम रूप अघ औगुन पागे॥ नंद कीन्ह सुत उत्सव भारी॥ शिशु स्वरूप कहँ शेष मुरारी॥ लागे अलख करन ब्रज लीला॥ शिशु सम सुंदर रूप रसीला

कहत भए तब भूप सुयोधन ॥ बल हरि जन्म भूमि सुख शोधन ॥ कीन्ह चरित जो आनँद अतिमैं ॥ गोकुल मथुरा द्वारावति मैं ॥ दोहा ॥ कहहु सकल संछेप तें मोकहं प्राक बिपाक ॥ सो सुनि मुनि बोलत भए सुनहु श्याम कर साक २६ ॥ प्रथम पूतना कहँ वधि डारो ॥ सकट तृना वर्तहि पुनि मारो ॥ विश्व रूप दरसन दधि चोरन ॥ जमलार्जुन दरखत कर तोरन ॥ दुर्वासा माया कर दरसन ॥ गर्ग थकित सुनाम अघ मरसन ॥ बहुरि राधिका कृष्ण बिवाहा ॥ पुनि जिमि रास कीन्ह व्रज नाहा ॥ पुनि ब्रह्मांड दिखायो जौना ॥ कही कथा गोकुल की तौना ॥ जिमि वृंदाबन आप पधारे ॥ बत्सावक अघ असुरहि मारे ॥ गो चारत जिमि वृंदावन मैं ॥ गए सबन सह ताल विपिन मैं ॥ धेनुक असुर शीतला बाहन ॥ चल्यो घोर गर्जत रन चाहन ॥ दोहा ॥ आइ लात मारत भयो बल गहि ताको पाँव ॥ पटकि प्रान हरते भए मुदित किए सब गाँव ॥ २७ ॥ कालि दमन दावा नल पाना ॥ पुनि राधाकर प्रेम बखाना ॥ सामल सखी चरित सब भाषा ॥ दान मान कर रस जिमि चाषा ॥ रास शंख चूड़हि पुनि मारा ॥ शिव आसुरि जिमि त्रिय बपुधारा ॥ गोपन पूज्यो शैल समाजा ॥ तब रिसाइ धनलै सुरराजा ॥ व्रज वीरन मन माहिं बिचारा ॥ गरजि गरजि बरसेहु जलधारा ॥ गोवर्द्धन तब कान्ह उठायो ॥ दिवस सात जल बरसि सिरायो ॥ तबलै गऊ सभय सुर राई ॥ आय करी बिनती अधिकाई ॥ करि अभिषेक टेक पदमाथा ॥ सादर धाम गयो सुरनाथा ॥ दोहा ॥ अद्भुत गिरि धारन निरखि विस्मित सब गोपाल ॥ मोती तरु प्रगटाइ कै दरसायो नँदलाल ॥ २८ ॥ कवित्त ॥ श्रुतिरूपा

गं॰स॰ ११४

नृपतब कह्यौ गोवर्द्धनमाहीं ॥ ७ ॥ कहिये कितने तीरथ आहीं ॥ मुख्य मुख्य मोहि कहिय बखानी ॥ मुनिबो-
ले गनिके मुनि ज्ञानी ॥ तीरथ रूप शैल यह अहई ॥ वृंदावन मोपुर महं रहई ॥ गोपी गोप कृष्ण प्रिय सोई ॥

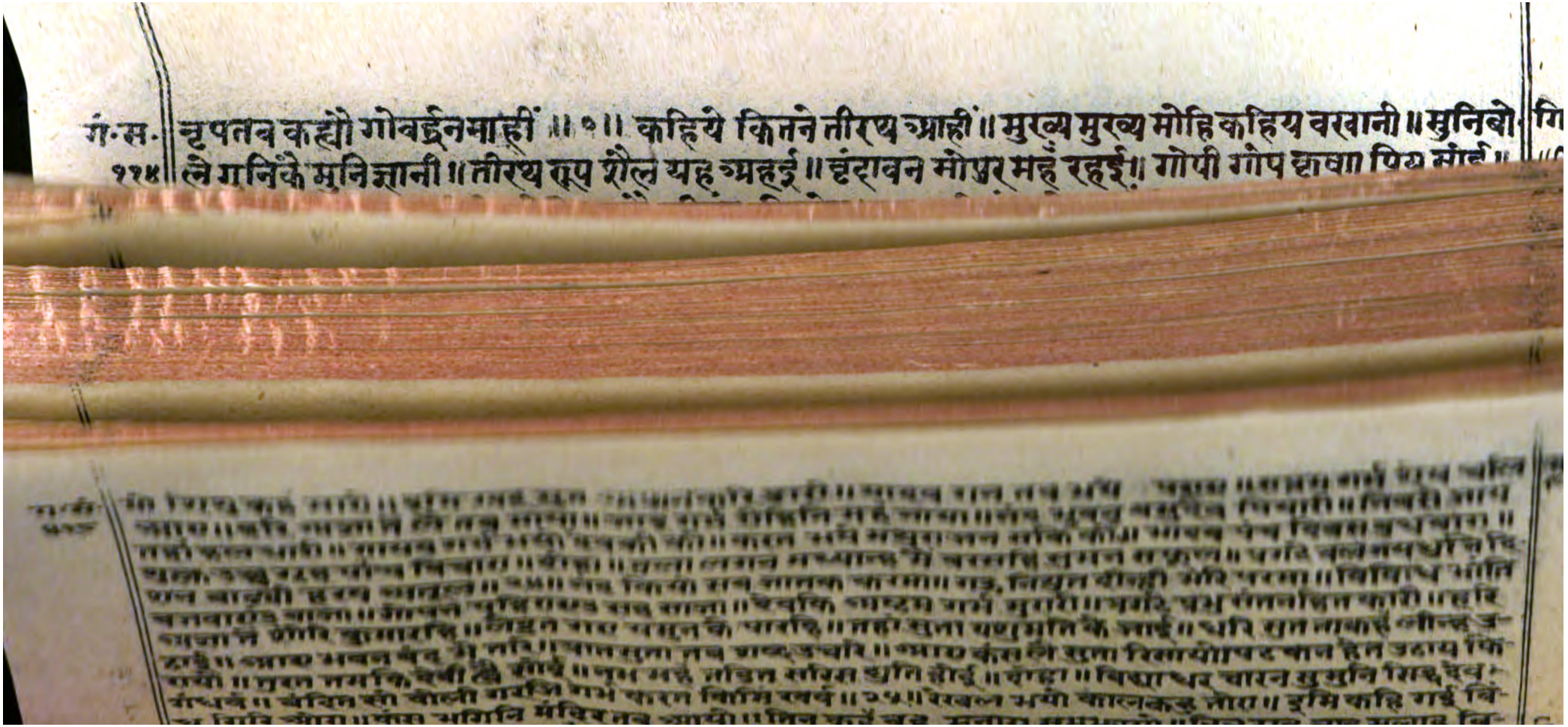

रवत कर तोरन॥ दुर्वासा माया कर दरसन॥ [illegible]
नि जिमि रास कीन्ह व्रज नाहा॥ पुनि ब्रह्मांड दिखायो जौना॥ कही कथा गोकुल की तौना॥ जिमि वृंदाबन आ-
प पधारे॥ बत्सावक अघ असुरहि मारे॥ गो चारन जिमि वृंदावन में॥ गए सबन सह ताल विपिन में॥ धे-
नक असुर शीतला बाहन॥ चल्यो घोर गर्जत रन चाहन॥ दोहा॥ आइ लात मारत भयो बल गहि ताकी पांव॥
पटकि प्रान हरते भए मुदित किए सब गांव॥२७॥ कालि दमन दावा नल पाना॥ पुनि राधाकर प्रेम बखाना॥
सामल सखी चरित सब भाषा॥ दान मान कर रस जिमि चाषा॥ रास शंख चूड़हि पुनि मारा॥ शिव आसुरि जि-
मि विष बपु धारा॥ गोपन पूज्यो शैल समाजा॥ तब रिसाइ धनलै सुरराजा॥ व्रज वीरन मन माहि विचारा॥ ग-
रजि गरजि बरसेहु जलधारा॥ गोवर्द्धन तब कान्ह उठायो॥ दिवस सात जल बरसि सिरायो॥ तबलै गउ सभ-
न सुर राई॥ न्याय करी बिनती अधिकाई॥ करि अभिषेक देक पदमाथा॥ सादर धाम गयो सुरनाथा॥ दोहा॥
[illegible] गिरि धारन निरखि विस्मित सब गोपाल॥ मोती तरु प्रगटाइ कै दरसायो नँदलाल॥२८॥ कवित्त॥ श्रुतिरूपा

ऋषिरूपा यज्ञ सीता रमा सरवी लोका लोका चल वारी तीन छत्र धारीहैं॥ कौशिला पुलिंदी श्वेत दीप वारी मैथि- ला सुऊरध वैकुंठ वारी भूमि गोपी प्यारीहैं॥ अवधनिवासिनी अजित पदवारी दिव्या विष्णु पुरवारी औ अदि- व्या जलधारीहैं॥ अप्सरा पुरंध्रीलता गोपी और वराहिअनी अहि कन्या सुतल निवासिनी विचारीहैं॥ दोहा॥ इन सबतें केशव कह्यो प्रमुदित रास विलास॥ भयो मनोरथ सबन कर उर आनंद प्रकास॥ २९॥ बट भांडीर निकट गोचारन॥ खेलत रहे सु जीतत हारत॥ असुर प्रलंब तहां वनि ग्वाला॥ बलहि पीठ धरि चल्यो कराला॥ मथुरा दिसा जात बल जाना॥ और खोलि निज मूकहि नाना॥ मारतहीं महि पर्यो प्रलंबा॥ प्रान विना बलवान प्र- लंबा॥ इक दिन ग्रीषम महं भगवाना॥ मुंजाटवी गए मति माना॥ प्रगटी तहं दावानल भारी॥ शिशुन पुकार्यो चाहि मुरारी॥ कृष्ण सबन कर नैन मुदाई॥ कीन्ह क्षणहि पान हरषाई॥ पुनि भत गाव गए भगवाना॥ द्विज पत्नी कर भोजन ठाना॥ दोहा॥ बरुन दूत गहि नंद कहं लैगो तिन्हइ छोड़ाइ॥ निजथल दरसावत भए गोपन हरि हरषाइ॥ ३०॥ विपिनि अंबिका महं इक वारा॥ निकस्यो सर्वसु दर्सन कारा॥ सो नंदराइ चरन गहि लीनो॥ तेहि बधि कृष्ण परम पद दीन्हो॥ और उभाउवत्स महं शिशु रूपा॥ व्योमासुर छल कीन्हिसि भूपा कंदर अंधर ग्वालन धरेऊ॥ हरिकरतें मारेउ सो मरेऊ॥ असुर अरिष्ट बैस वपु आयो॥ ताहू कहं हरि मारि गिरायो॥ नारद कहे कंस रिसि आई॥ गोरि बधन चह खड्ग उठाई॥ नारद कहे न किय संहारा॥ केसी

पठयो तेहि हरि मारा॥ इमि व्रज चरित किए व्रजराई॥ ताकहं शेषहु सकत न गाई॥ दोहा॥ मथुरा केर चरित्र
अब सुनहु भूप नर शूर॥ कंस पठायो कृष्ण हित व्रज मंडल अक्रूर॥ ३१॥ सो तित जाइ कह्यो यह बानी॥
नंद चले गोपन सह ज्ञानी॥ हरिहि जात लखि रोई बाला॥ तिनहिं बुझायो श्रीनंद लाला॥ हरिबल सुफ-
लक सुत रथ चढ़िकै॥ उतरे यमुना के तट बढ़िकै॥ अक्रूरहि निज धाम देखायो॥ मथुरा माह प्रात रथ
आयो॥ उपबन बसे नंदके संगा॥ लखन चले पुर सहित उमंगा॥ पुर नारिन ललचावत नाना॥ शिशु दल
सोहैं संग सुजाना॥ तहां रजक राजा कर देखा॥ बिबिधि बरन के बसन परेखा॥ कीन अनादर हरि तब मारा
लीनो बसन कीन सुख भारा॥ दोहा॥ पुनि लायक गुनि बाय कहि यदुनायक भगवान॥ सा रूपहि देतहि
भए सुख दायक मति मान॥ ३२॥ माली तें मिलि पूजा देखी॥ ताहि दियो हरि रूप विसेखी॥ मिलिके महा
जनन तेहि काला॥ धनु अस्थल महं मध्य कृपाला॥ सहस पुरुष मंडितसु बिसाला॥ क्रतु धनु सम लावो
ऋषि ताला॥ अष्ट धातु लख भार बनायो॥ शेष कुंडली सम छबि छायो॥ हरि धनु परसराम को दीनो॥ सब
न लखत उठाय सो लीनो॥ सूख दंडु जिमि दीरघ सुंडा॥ खंड करै बल चंड वितुंडा॥ तिमि भुज दंड अखंड उठाई
तीन टूक करि दीन्हो नाई॥ दिग्गज डगे भूमि थहराई॥ ब्रह्मांडे हलचल अधिकाई॥ दोहा॥ चाँप रक्षकन मारिकै ता-
दिन डेरा आय॥ प्रातगए महिरंग महं हरि हलधर दोउ भाय॥ ३३॥ द्विरद कुवलया पीड़हि मारयो॥ इक इक दंत कंध

पै धारयो॥ रंगभूमि पगटे नट बेखा॥ जेहि जसभाव सोतस हरि देखा॥ शल चारणूर कुश्ति मुष्टीका॥ वध्यो मल्ल ल.
मोशल यदु टीका॥ दोउ भाई जब सबन गिरायो॥ कंसतबै कटु बचन सुनायो॥ तुरत कूदि केहरी समाना॥ गए मंच
पर कृपा निधाना॥ मृत्यु सरिस लरिवे उठि गहि गंसा॥ असि अरु चर्म गहे कर कंसा॥ तबहरि गह्यो कंस रत्न
ताजहि॥ दैत्य शिरोमनि मानव राजहि॥ तबसो निकरि गयो हरि करतें॥ जिमि अहि निकरै मुख खर बरतें॥ दे.
कंस कंस सूदन उभय बिलसे सिंह समान॥ यदुपति बर रद हिरदको यदुपति चर्म कृपान॥ ३४॥ चल्यो कंस अ.
वर दिसि धाई॥ झपटि नाहि पटकी यदुराई॥ पुनि घुमाइ कै कृपा निधाना॥ डारयो मंचो परि नरजाना॥ टू टन
भयो मचको पावा॥ दानव उठा चोट नहि पावा॥ तबहरि तासु केस कर गहिकै॥ मामा मारनकी विधि चहिकै॥
धरनि गिराइ दियो भरि जोरा॥ ऊपर कूदे नंद किशोरा॥ बहुरि अनंत आप गिरि परे॥ तेहि छन कंस धरापति
मरे॥ महिकंपी सब दिग्गज डोले॥ हाहा शब्द भूपगन बोले॥ कच्च गहि हरष फिरायो भूपर॥ देव सुमन बरषे
हरि ऊपर॥ दोहा॥ सारूपहि देते भए दीनबंधु भगवान॥ बैर भावते भृंगसम भयो कंस कल्यान॥ ३५॥ कंसमरो
लरिवेको भाई॥ चलत भए असि चरम उठाई॥ मुक्कर लै बलि तिनकहँ मारा॥ भयो दिसन महँ जैजै कारा॥ कंसरा-
य की कृपा कराई॥ मातुल त्रिय की सुनो रोवाई॥ मात पिताके बंध छोडाए॥ यादव गन कहं बोलि बसा-
ए॥ नंदहि बिदा कीन्ह गोपाला॥ उग्रसेन कहं किय नरपाला॥ करि उपवीतहि विद्या हेतू॥ ॥

मे संदीपन विप्र निकेत॥ देन दक्षिना सागर जाई॥ ग्रसर मारि तित दीन्हो नाई॥ शंखहि लै जम मंदिर ग्राए॥ हिज सुतलै दीन्हो मनभाए॥ दोहा॥ व्रज महं भेज्यो उधवहि सो तित करि संवाद॥ जाइ कह्यो श्रीकृष्ण सों दुतको ग्रतिहि विषाद॥ ३६॥ तब प्रभु ग्रायग ए व्रज माहीं॥ लीला कीन्हो विविधि तहाहीं॥ ऋषिउधार करि मिलि गोपनतें॥ ग्रा ए मधुपुर वृंदा बनतें॥ इत बलदेव कोल ग्ररि मारो॥ जोरनमहँ ग्रति प्रबल गरारो॥ तमि बलदेव कृष्ण मधुबन में॥ कोटिन चरित किए यदुगन में॥ कृष्ण चरित संक्षेप बखाना॥ सुनहु द्वारका कर गुन गाना॥ जरासंधसे करी लराई दीन्हो सतरह बार भगाई॥ बहुरि द्वारका पुरी बनाई॥ निमिसमहँ सबन तहां पहुंचाई॥ नृप दृगतें जनहु यम नेसा॥ गिरि चढि कीन्हो नगर प्रवेसा॥ दोहा॥ ब्रह्म लोकतें ग्राय तब रैवत कन्या साथ॥ व्याहि दियो बलदेव कहुं गो तप हित नर नाथ॥ ३७॥ रुक्मिनि कुंडिन पुरतें हरी॥ निज विवाह गृह कीन्हो हरी॥ जांबवती भद्रा सत भामा नाग्न जिती कालिंदी नामा॥ बहुरि मित्र वृंदा लक्ष्मना॥ हरि विवाह कीन्हो ग्रापना॥ षोडश सहस एक सत नारी॥ कृष्ण विवाहेउ भौमहि मारी॥ हरि रुक्मिनि कहं मन मथ जाए॥ सो प्रद्युम्न नाम कहवाए॥ तिनके भेग्रनि रुद्र कुमारा॥ राजसूय यदुराज विचारा॥ लै चौडा मनमथ दल साजी॥ जीतन चले शक्र सम गाजी॥ जीतत गए काम दुख नदपै॥ पुरी बसंत मालती हदपै॥ दोहा॥ तहां पतंग गंधर्व तें गदतें भीरन घोर॥ गदा धारि लल-कारि कर दुहुन दिखायो जोर॥ सोरठा॥ गंधर्व गदा प्रहार गद मुर्छित महिमें गिरो॥ प्रगटे राम उदार बध्योरिपुन

हल मुशलते ॥ ३८ ॥ कवित्त ॥ भागिगो पतंग पुर मदल उताल अति हरषे सकल यदुबल बलवंत से ॥ बहुरो लरन हेत करत भयो उपाय मूरख बिचार्यौ नहीं वीर श्री अनंत से ॥ हलतें पकरि घींच लीन्हो है नगर सारो डरे सब जैसे निशाचर हनुमंत से ॥ ज्वर रूपी पुरी सो बसत मालती बिशाल भए काम पाल तहां मालती बसंत से ॥ दोहा ॥ हाहा कार महा भयो डरिलै भेट पतंग ॥ दीन्ह आय बलदेव कहं बंद्यो सहज उमंग ॥ ३९ तैसेइ शांव छोडावन आए ॥ हलतें तुमरो नगर ढहाए ॥ टेढ़ौ लगत आजलौं ज्ञानी ॥ तिमि खीच्यौ यमुना कर पानी ॥ और सुनहु चरित्र यक भारी ॥ भौम सखा सु दुबिद वन चारी ॥ प्रथम रह्यौ सुग्रीव सचिव सो ॥ नारद प्रेरित रिपु वनि जिवसो ॥ रैवत गिरि आयो बल भारा ॥ तहां लख्यो बल देव बिहारा ॥ बैठेउ साठ सखा मृग साखा ॥ बलतें अधम समर अभिलाखा ॥ करि गर्जना दिखावै अंगा ॥ कीन्हेसि परम रंग मै भंगा ॥ तोरि तोरि डारै तरु डारी ॥ नारिन देखि बजावै तारी ॥ दोहा ॥ बहुरि बारुनी कुंभलै फोरि हस्यौ अज्ञान ॥ तब सकोप हल मुशल लै उठेसु बल बलवान ॥ ४० ॥ बानर तब तरु शाल उखारी ॥ बलके मस्तक हत्यौ प्रचारी ॥ तब बल ताहि मुशल तें गहिकै ॥ मुशल हत्यौ शिर मारत कहिकै ॥ निवारि चली श्रोनित की धारा ॥ कढि हलतें कीन्ही किल कारा ॥ गहि गहि शाल सताल तमालन ॥ लग्यो आसु हलधर पै डारन ॥ तरुतें रहित कियो बन भारी ॥ सिला तजन लाग्यो बन चारी ॥ बल हल मुशल सकल बल भलतें ॥

अरिकी बार विफल किय चलतें ॥ तबसो कूदि मुष्टिनिज बाँधी ॥ चलेउ सबेग चलै जिमि आँधी ॥ मार्‍यो हृ
दय माहिं पुनि भागा ॥ अंगुरी अधम बिरावन लागा ॥ दोहा ॥ इहि विधान हरि भ्रात हरि हरि समान बलवा
न ॥ परम युद्ध करते भए सत्य सुनहु नरत्रान ॥ ४१ ॥ छप्पै ॥ नट्ट सरिस मरकट्ट समर परघट्ट दट्ट दट ॥ कटा
कट्ट करि झट्ट कीन्ह दहपट्ट अट्ट अट ॥ मारु मारु धरु रट्ट भट्ट वीकट्ट हट्ट हट ॥ शंकर्षण नीकट्ट ठट्ट दैताल
चट्ट चट ॥ पूर्‍यो हृदय कपट्ट अति अति तरुन लपट्ट न छट्ट छट ॥ ठट्ट तेज नट्ट तक बहु भट्ट झपट्ट लपट्ट पट
दोहा ॥ गहि भुजते गिरि पटकि कै मार्‍यो मूक अहीस ॥ वनन सहित नग डगत भो प्रभो प्राण बिन कीस ॥
कहां दास यह रामको कहां रामतें नास ॥ पाय कुसंग नसाय जग कोनहि गिरधर दास ॥ ४२ ॥ सुनिहैं तब पां-
डव को झगरा ॥ तब जैहैं तीरथ की डगरा ॥ द्विज पुरजन सब साज सुजाना ॥ लखिहैं तीरथ मुख्य महाना ॥
करि द्वारका प्रदक्षिण भाए ॥ सिद्धाश्रम पर मास नहाए ॥ सरस्वती सैंधव बन चरता ॥ जांबु माल उत्पल आ
बर्त्ता ॥ कवित्त ॥ अर्बुद सुहेमबंत सागर पृथूदकादि बिंदुसर त्रित कूप अत्रित सुदर्शना ॥ उशना अगिनि बा
यु सहित सौ दास गृह श्राद्ध देव आदि तीर्थ पश्चिम मैं पर्शना ॥ शंभु शैल कर बीर महा योग गन नाथ घन-
नाथ प्राग ज्योति रंग वल्ली दर्शना ॥ सीता राम क्षेत्र चैत्र देस औ वसंतटी का ओ दशार्न भद्रा कूर्म देस देखि
हर्षना ॥ १ ॥ पुष्प माला चित्र वन चंद्र कांता मनुशैल चक्षु गंगा काम शालिनी सुकाम वन मैं ॥ बेद क्षेत्र पृथु-

ग॰सं॰ ४२६

सीता तपो भूमि लीलावती बेद पुर गांधरब शक्र तीरथनमैं ॥ न्हाइ इमि उत्तर सु पूर बसिधाए पुनि ब्रह्म तीर्थ औ बिशाल चक्र तीर्थ घनमैं ॥ सरस्वती बद्री बन होयकै केदार गंगा यमुना औ हरद्वार पुन्यकेसदन मैं ॥ दोहा ॥ कुरुक्षेत्र मथुरा बहुरि पुष्कर संभव होय ॥ बैष्णव तब आवत भए अति उत्तम थल जोय ॥ ४२ ॥ कथा कथत तित सूत निहारा ॥ सौनक सुनहि सु प्रेम अपारा ॥ उठे सकल हलधरहि निहारी ॥ आवो धन्य धन्य हल धारी ॥ व्यास लोम हर्षन अभिमानी ॥ उठेन व्यासासन निज जानी ॥ तब बलदेव कोप बिसार्यो ॥ कर कुशतें शिर भू मधि डार्यो ॥ हाहा कार मुनिन अति कीना ॥ हत्या निज यदुनंदन चीन्हा ॥ तीरथ करिहौं द्वादस मासा ॥ प्रण करि पुनि यह कह्यो खुलासा ॥ बल बल बध करिहौं तेहि काला ॥ सोई आय गरज्यो बिकराला ॥ बडी जीह कज्जल गिरि भेसा ॥ अति बज्रांग लाल रंग केसा ॥ दोहा ॥ हयतें गहि मार्यो मुशल बलि बलि बलहि रिसाय ॥ मार्यौ असुर जय धुनि भई कंटक गयो नसाय ॥ ४४ ॥ करत रह्यो खल मख बिध्वंसा ॥ भलो भयो नास्यो मुनि गंसा ॥ सूत सुतहि गादी बैठाई ॥ तीरथ करन गये बल राई सरजू कौशिकि मान सरोबर ॥ गांडकि गौतमि अवध नगर बर ॥ नंदि ग्राम बर्हि ष्मति गए ॥ बह्मा बर तहि आवत भए ॥ दै प्रयाग महँ अयुत मतंगा ॥ चित्र कूटगे सहित उमंगा ॥ बिंध्याचल काशी नद शोना सर बिपास मैथिल पुर लोना ॥ गया होयगे गंगा सागर ॥ गो शत कोटि दियो गुन आगर ॥ दक्षिन गिरि

व॰ ४२५

महेंद्र गोदावरि ॥ पानी पंपासर मरि सुखभरि ॥ दोहा ॥ भीम रथी गुह क्षेत्र पुनि श्री गिरि व्यंकट जाय ॥ कांची कावेरी निरखि श्री रंगहि गिरि नाय ॥ ४५ ॥ कवित्त ॥ ऋषि भाद्रि सिंधु सेतु कृतमाला ताम्र पर्णी मलया चलहि जाइ कुबला चल जायकै ॥ दक्षिण समुद्र फालगुन पंच अप्सराख्य गऊ कण सूर्य्या रक तापी मैन हायकै ॥ सरित पयोष्णि निरबिध्य बनदंड काख्य रेवा माहिष्ममती औ अबंति कामे आयकै द्वारकामे जैहैं देषि तुमरो समर भूप धरौं पताका साका अतिसर साइकै ॥ दोहा ॥ यह बलदेव चरित कह्यो संगल करन महीप ॥ अवका सुनिबे चहत हौ कहौ तौन कुल दीप ॥ ४६ ॥ कहतसु योधन हे मुनि नाथा ॥ राम रमे किमि रमनिन साथा ॥ कालिंदी तट कैसी लीला ॥ कीन्हो करुणा करन सुसीला ॥ तब बोले मुनि प्राग बिपाका ॥ इक दिन बल ब्रज की दिसि ताका ॥ द्वारावति तें चढ़ि रथ आए ॥ नंद लखन अनंद उर छाए यसुदा नंद मिले मन भाए ॥ पुनि गोपन कहं कंठ लगाए ॥ सबन सहित करि प्रेम प्रकासा ॥ ऋतु बसंत तित कीन्ह निवासा ॥ तहंकी त्रिय बिहार चितदैकै ॥ बल पचांग गरव तें लैकै ॥ सिद्ध सई तन दुति बिस्तारी ॥ तिनहि मुदित इक दिन हलधारी ॥ दोहा ॥ पूरन शशि यमुना निकट शोभा कही न जाय ॥ रमन लगे संकट समन सब गोपी समुदाय ॥ ४७ ॥ छंद ॥ समुदाय अलि के भ्रसहि जहँ अवलोकि सुमन समूह को ॥ सीतल समीर सरीर परसत मिलि सुमन के जूह को ॥ यमुना पुलिन परमा भरी शोभा अनूपनि कुंजकी ॥ अति बिमल जल

भो शिशु कहँ मारो॥ इमि खट् सुत अप्रान करि डारो॥ यादव गन तब भये पराए॥ सप्तम गर्भ शेष चलि आए॥ हरि अज्ञा तें लै तब माया॥ जाइ गर्भ रोहिनि महँ नाया॥ नंद भवन बसुदेव पियारी॥ निबसे जाय तहाँ हलधारी॥ गायव गर्भ भयो देवकी को॥ करत भये मथुरा जन सकि को॥ भादव पंच दिवस बुधबारा॥ शुक्ल उच्च गृह पाँच बिचारा॥ दोहा॥ तुला लगन मध्यान्ह मैं बरसहिं सुमन सफूल॥ प्रगटे बलजय धुनि दिशन बाढ्यो हरष अतूल॥ २४॥ नंद कियो सब जातक करमा॥ गऊ नियुत दीन्ही भरि परमा॥ विविध भांति बजवाएउ बाजा॥ गोपन पहिराएउ सह साजा॥ देवकि अष्टम गर्भ मुरारी॥ प्रगटे प्रभु संतन हित कारी॥ हरि अज्ञा तें शौरि कुमारहि॥ लैद्रुत गए यमुन के पारहि॥ तहां सुता यशुमति के जाई॥ धरि सुत ताकहँ लीन्ह उठाई॥ आए भवन बंद भे तारे॥ प्रातसुता तब शब्द उचारे॥ आए कंस लै सुता रिसायो॥ पट कान हेत उठाय फिरायो॥ तुरत तमकि देवी ह्वै सोई॥ नभ महँ तडित सरिस द्युति होई॥ दोहा॥ बिद्याधर चारन सुमुनि सिद्ध देव गंधर्व॥ बंदित सो बोली गरजि गर्भ करत किमि खर्व॥ २५॥ रेखल भयो कालकहु तोरा॥ इमि कहि गई बिंध गिरि ओरा॥ कंस भगिनि मंदिर तब आयो॥ तिन कहँ बहु मनाय समुझायो॥ निज गृह जाइ सलाह बिचारो॥ गो द्विज देव शिशुन कहँ मारो॥ सो सुनि ते फिरि मारन लागे॥ काम रूप अघ औगुन पागे॥ नंद कीन्ह सुत उत्सव भारी॥ शिशु स्वरूप कहँ शेष मुरारी॥ लागे अलख करन ब्रज लीला॥ शिशु सम सुंदर रूप रसीला

कहत भए तब भूप सुयोधन ॥ बल हरि जन्म भूमि सुख शोधन ॥ कीन्ह चरित जो आनँद अतिमैं ॥ गोकुल मथुरा द्वारावति मैं ॥ दोहा ॥ कहहु सकल संछेप तें मोकहं प्राक बिपाक ॥ सो सुनि मुनि बोलत भए सुनहु श्याम कर साक २६ ॥ प्रथम पूतना कहँ वधि डारो ॥ सकट तृना वर्तहि पुनि मारो ॥ विश्व रूप दरसन दधि चोरन ॥ जमलार्जुन दरखत कर तोरन ॥ दुर्वासा माया कर दरसन ॥ गर्ग थकित सुनाम अघ मरसन ॥ बहुरि राधिका कृष्ण बिवाहा ॥ पुनि जिमि रास कीन्ह व्रज नाहा ॥ पुनि ब्रह्मांड दिखायो जौना ॥ कही कथा गोकुल की तौना ॥ जिमि वृंदाबन आप पधारे ॥ बत्सावक अघ असुरहि मारे ॥ गो चारत जिमि वृंदावन मैं ॥ गए सबन सह ताल विपिन मैं ॥ धेनुक असुर शीतला बाहन ॥ चल्यो घोर गर्जत रन चाहन ॥ दोहा ॥ आइ लात मारत भयो बल गहि ताको पाँव ॥ पटकि प्रान हरते भए मुदित किए सब गाँव ॥ २७ ॥ कालि दमन दावा नल पाना ॥ पुनि राधाकर प्रेम बखाना ॥ सामल सखी चरित सब भाषा ॥ दान मान कर रस जिमि चाषा ॥ रास शंख चूड़हि पुनि मारा ॥ शिव आसुरि जिमि त्रिय बपुधारा ॥ गोपन पूज्यो शैल समाजा ॥ तब रिसाइ धनलै सुरराजा ॥ व्रज वीरन मन माहिं बिचारा ॥ गरजि गरजि बरसेहु जलधारा ॥ गोवर्द्धन तब कान्ह उठायो ॥ दिवस सात जल बरसि सिरायो ॥ तबलै गऊ सभय सुर राई ॥ आय करी बिनती अधिकाई ॥ करि अभिषेक टेक पदमाथा ॥ सादर धाम गयो सुरनाथा ॥ दोहा ॥ अद्भुत गिरि धारन निरखि विस्मित सब गोपाल ॥ मोती तरु प्रगटाइ कै दरसायो नँदलाल ॥ २८ ॥ कवित्त ॥ श्रुतिरूपा

ऋषिरूपा यज्ञ सीता रमा सखी लोका लोका चल वारी तीन वृत्र धारीहैं॥ कौशिला पुलिंदी श्वेत दीप वारी मैथि-
ला सुऊरध वैकुंठ बारी भूमि गोपी प्यारीहैं॥ अवधनिवासिनी अजित पदवारी दिव्या बिष्णु पुर वारी औ अदि-
व्या जलंधारीहैं॥ अप्सरा पुरंध्रीलता गोपी और वरहिष्मती अहि कन्या सुतल निबासिनी बिचारीहैं॥ दोहा॥ इन
सबतें केशव कह्यो प्रमुदित रास विलास॥ भयो मनोरथ सबन कर उर आनंद प्रकास॥ २९॥ बट भांडीर निकट
गोचारत॥ खेलत रहे सु जीतत हारत॥ असुर प्रलंब तहां बनि ग्वाला॥ बलहि पीठ धरि चल्यो कराला॥ मथुरा
दिसा जात बल जाना॥ आंख खोलि निज मूकहि ताना॥ मारतहीं महि पर्यो प्रलंबा॥ प्रान विना बलवान प्र-
लंबा॥ इक दिन ग्रीषम महं भगवाना॥ मुंजाटवी गए मति माना॥ प्रगटो तहं दावानल भारी॥ शिशुन पुकार्यो
त्राहि मुरारी॥ कृष्ण सबन कर नैन मुंदाई॥ कीन्ह कृसानु पान हरषाई॥ पुनि भत गांव गए भगवाना॥ द्विज
पत्नी कर भोजन ठाना॥ दोहा॥ वरुन दूत गहि नंद कहं लैगो तिन्हइ छोड़ाइ॥ निज थल दरसावत भए गोपन
हरि हरषाइ॥ ३०॥ विपिनि अंबिका महं इक वारा॥ निकर्यो सर्वसु दर्सन कारा॥ सो नंदराइ चरन गहि
लीनो॥ तेहि बधि कृष्ण परम पद दीन्हो॥ आंख बुझउवल महं शिशु रूपा॥ व्योमासुर छल कीन्हिसि भूपा
कंदर अंधर ग्वालन धरेऊ॥ हरिकरतें मारेउ सो तरेऊ॥ असुर अरिष्ट बैस वपु आयो॥ ताहू कहं हरि
मारि गिरायो॥ नारद कहे कंस रिसि आई॥ शौरि वधन चह खड्ग उठाई॥ नारद कहे न किय संहारा॥ केसी

पठयो तेहि हरि मारा॥ इमि व्रज चरित किए व्रजराई॥ ताकहं शेष हु सकत न गाई॥ दोहा॥ मथुरा केर चरित्र
अब सुनहु भूप नर शूर॥ कंस पठायो कृष्ण हित व्रज मंडल अक्रूर॥ ३१॥ सो तिन जाइ कह्यो यह बानी॥
नंद चले गोपन सह ज्ञानी॥ हरि हिं जगत लखि रोई बाला॥ तिन हिं बुझायो श्रीनंद लाला॥ हरि बल सुफ-
लक सुत रथ चढ़ि कै॥ उतरे यमुना के तट बढ़ि कै॥ अक्रूरहि निज धाम देखायो॥ मथुरा माह प्रात रथ
आयो॥ उपवन बसे नंद के संगा॥ लखन चले पुर सहित उमंगा॥ पुर नारिन लखि चावत नाना॥ शिशु दल
सोहै संग सुजाना॥ तहां रजक राजा कर देखा॥ बिबिधि बरन के बसन परेखा॥ कीन अनादर हरि तब मारा
लीनो बसन कीन सुख भारा॥ दोहा॥ पुनि लायक गुनि बाय कहि यदु नायक भगवान॥ सो रूपहि देनहि
भए सुख दायक मति मान॥ ३२॥ माली तें मिलि पूजा देखी॥ ताहि दियो हरि रूप विसेखी॥ मिलिके महा
जनन तेहि काला॥ धनु अस्थल महं मध्य कृपाला॥ सहस पुरुष मंडित सु बिसाला॥ क्रतु धनु समलावो
ऋषि ताला॥ अए धातु लखि भार बनायो॥ शेष कुंडली सम छबि छायो॥ हरि धनु परशुराम को दीनो॥ सब
न लखत उठाय सो लीनो॥ सूख इंधु जिमि दीरघ सुंडा॥ खंड करै बल चंड बितुंडा॥ तिमि भुज दंड अखंड उठाई
तीनहू करि दीन्हो नाई॥ दिग्गज डगे भूमि थहराई॥ ब्रह्मांड हलचल अधिकाई॥ दोहा॥ चाँप परशन मारि कै ता-
हि नडेर आय॥ प्रात गए महि रंग महं हरि हलधर दोउ भाय॥ ३३॥ हिरद कुवलया पीड़हि मारो॥ इक इक दंत कंध

पै धार्यौ॥ रंगभूमि प्रगटे नट बेखा॥ जेहि जसभाव सोतस हरि देखा॥ शल चाणूर कुष्टि मुष्टीका॥ बध्यो मल्ल
तोशल यदु टीका॥ दोउ भाई जब सबन गिरायो॥ कंसतबै कटु बचन सुनायो॥ तुरत कूदि केहरी समाना॥ गए मंच
पर कृपा निधाना॥ मृत्यु सरिस लखि उठि गहि गंसा॥ असि अरु चर्म गहे कर कंसा॥ तबहरि गह्यो कंस खल
ताजहि॥ दैत्य शिरोमनि मानव राजहि॥ तबसो निकरि गयो हरि करतें॥ जिमि अहि निकरै मुख खर बरतें॥ दो
कंस कंस सूदन उभय बिलसे सिंह समान॥ यदुपति बर रद द्विरदको यदुपति चर्म कृपान॥ ३४॥ चल्यो कंस अं
वर दिसि धाई॥ झपटि ताहि पटको यदुराई॥ पुनि घुमाइ कै कृपा निधाना॥ डार्यो मंचो परि नरत्राना॥ टूटत
भयो मचको पावा॥ दानव उठा चोट नहि पावा॥ तबहरि तासु केस कर गहिकै॥ मामा मारनकी विधि चहिकै॥
धरनि गिराइ दियो भरि जोरा॥ ऊपर कूदे नंद किशोरा॥ बहुरि अनंत आप गिरि परे॥ तेहि छन कंस धरापति
मरे॥ महिकंपी सब दिग्गज डोले॥ हाहा शब्द भूपगन बोले॥ कच गहि कृष्ण फिरायो भूपर॥ देव सुमन बरषे
हरि ऊपर॥ दोहा॥ सारूपहि देते भए दीनबंधु भगवान॥ बैर भावते भृंगसम भयो कंस कल्यान॥ ३५॥ कंस मरो
लखि ताके भाई॥ चलत भए असि चरम उठाई॥ मुद्गर लै बलि तिनकहँ मारा॥ भयो दिसन महँ जैजै कारा॥ कंसरा
य की कृपा कराई॥ मातुल त्रिय की सुनो रोवाई॥ मात पिताके बंध छोडाए॥ यादव गन कहं बोलि बसा
ए॥ नंदहि बिदा कीन्ह गोपाला॥ उग्रसेन कहं किय नरपाला॥ करि उपबीतहि बिद्या हेतू॥ ✣॥

गे संदीपन विप्र निकेत॥ देन दक्षिना सागर जाई॥ असर मारि तित दीन्हो नाई॥ शंखहि लै जम मंदिर आए॥ द्विज सुतलै दीन्हो मनभाए॥ दोहा॥ व्रज महं भेज्यो उधवहि सो तित करि संवाद॥ जाइ कह्यो श्रीकृष्ण सों दूतको अतिहि विषाद॥ ३६॥ तब प्रभु आयग ए व्रजमाहीं॥ लीला कीन्हो विविधि तहाहीं॥ ऋषिउधार करि मिलि गोपनतें॥ आ ए मधुपुर वृंदा वनतें॥ इत बलदेव कोल अरि मारो॥ जोरनमहं अति प्रबल गरारो॥ इमि बलदेव कृष्ण मधुबन में॥ कोटिन चरित किए यदुगन में॥ कृष्ण चरित संक्षेप बखाना॥ सुनहु द्वारका कर गुन गाना॥ जरासंधते की लराई दीन्हो सतरह बार भगाई॥ बहुरि द्वारका पुरी बनाई॥ निमिमहं सबन तहां पहुंचाई॥ नृप डरतें जरासंध यम नेसा॥ गिरि चढि कीन्हो नगर प्रवेसा॥ दोहा॥ ब्रह्म लोकतें आय तब रैवत कन्या साथ॥ व्याहि दियो बलदेव कहं गो तप हित नर नाथ॥ ३७॥ रुक्मिनि कुंडिन पुरतें हरी॥ निज विवाह गृह कीन्हो हरी॥ जांबवती भद्रा सत भामा नाग्न जिती कालिंदी नामा॥ बहुरि मित्र वृंदा लक्ष्मना॥ हरि विवाह कीन्हो आपना॥ षोडश सहस एक सत नारी॥ कृष्ण विवाहेउ भौमहि मारी॥ हरि रुक्मिनि कहं मन मथ जाए॥ सो प्रद्युम्न नाम कहवाए॥ जिनके मेघनि रुद्ध कुमारा॥ राजसूय यदुराज विचारा॥ लै चौंडा मनमथ दल साजी॥ जीतन चले शक्र सम गाजी॥ जीतत गए काम दुख नदपै॥ पुरी बसंत मालती हदपै॥ दोहा॥ तहां पतंग गंधर्व तें गदतें भीरन घोर॥ गदा धारि लल-कारि कर दुहुन दिखायो जोर॥ सोरठा॥ गंधर्व गदा प्रहार गद मुर्छित महिमें गिरो॥ प्रगटे राम उदार बध्योरिपुन

हल मुशलते ॥ ३८ ॥ कवित्त ॥ भागिगो पतंग पुर मदल उताल अति हरषे सकल यदुबल बलवंत से ॥ बहुरो लरन हेत करत भयो उपाय मूरख बिचार्यौ नहीं वीर श्री अनंत से ॥ हलतें पकरि घींच लीन्हो है नगर सारो डरे सब जैसे निशाचर हनुमंत से ॥ ज्वर रूपी पुरी सो बसत मालती बिशाल भए काम पाल तहां मालती बसंत से ॥ दोहा ॥ हाहा कार महा भयो डरिलै भेट पतंग ॥ दीन्ह आय बलदेव कहं बंद्यो सहज उमंग ॥ ३९ तैसेइ शांव छोडावन आए ॥ हलतें तुमरो नगर ढहाए ॥ टेढ़ौ लगत आजलौं ज्ञानी ॥ तिमि खीच्यौ यमुना कर पानी ॥ और सुनहु चरित्र यक भारी ॥ भौम सखा सु दुबिद वन चारी ॥ प्रथम रह्यौ सुग्रीव सचिव सो ॥ नारद प्रेरित रिपु वनि जिवसो ॥ रैवत गिरि आयो बल भारा ॥ तहां लख्यो बल देव बिहारा ॥ बैठेउ साठ सखा मृग साखा ॥ बलतें अधम समर अभिलाखा ॥ करि गर्जना दिखावै अंगा ॥ कीन्हेसि परम रंग मै भंगा ॥ तोरि तोरि डारै तरु डारी ॥ नारिन देखि बजावै तारी ॥ दोहा ॥ बहुरि बारुनी कुंभलै फोरि हस्यौ अज्ञान ॥ तब सकोप हल मुशल लै उठेसु बल बलवान ॥ ४० ॥ बानर तब तरु शाल उखारी ॥ बलके मस्तक हत्यौ प्रचारी ॥ तब बल ताहि मुशल तें गहिकै ॥ मुशल हत्यौ शिर मारत कहिकै ॥ निवारि चली श्रोनित की धारा ॥ कढि हलतें कीन्ही किल कारा ॥ गहि गहि शाल सताल तमालन ॥ लग्यो आसु हलधर पै डारन ॥ तरुतें रहित कियो बन भारी ॥ सिला तजन लाग्यो बन चारी ॥ बल हल मुशल सकल बल भलतें ॥

अरिकी वार विफल कियु चलतें ॥ तबसो कूदि मुस्टिनिज बांधी ॥ चलेउ सबेग चलै जिमि आँधी ॥ मारयो हृ
दय माहिं पुनि भागा ॥ अगुरी अधम बिरावन लागा ॥ दोहा ॥ इहि विधान हरि भ्रात हरि हरि समान बलवा
न ॥ परम युद्ध करते भए सत्य सुनहु नरज्ञान ॥ ४१ ॥ छप्पै ॥ नदृ सरिस मरकदृ समर परघदृ ददृ दट ॥ कटा
कदृ करि झदृ कीन्ह दहपदृ अदृ अट ॥ मारु मारु धरु धदृ भदृ वीकदृ हदृ हट ॥ शंकर्षणनीकदृ ठदृ दैताल
चदृ चट ॥ पूरयो हृदय कपदृ अति अति तरुन लपदृ न कदृ छट ॥ ठदृ तेज नदृ तकचदृ भदृ झपदृ लपदृ पट
दोहा ॥ गहि भुजते गिरि पटकि कै मारयो मूक अहीस ॥ वनन सहित नग डगत भो प्रभो प्राण बिन कीस ॥
कहां दास यह रामको कहां रामतें नास ॥ पाय कुसंग नसाय जग कोनहि गिरधर दास ॥ ४२ ॥ सुनिहैं तव पां-
डव को भागा ॥ तव जैहैं तीरथ की डगरा ॥ द्विज परजन सब साज सुजाना ॥ लखिहैं तीरथ मुख्य महाना ॥
करि द्वारका प्रदक्षिणा भाए ॥ सिद्धाश्रम पर मास नहाए ॥ सरस्वती सैंधव बन चरता ॥ जांबु माल उत्पल आ
वर्त्ता ॥ कविन्न ॥ अर्बुद सुहेमवंत सागर पृथूदकादि विंदुसर त्रित कूप अत्रित सुदर्शना ॥ उशना अगिनि बा
यु सहित सो दास गृह आदृ देव आदि तीर्थ पश्चिम में पर्शना ॥ शंभुशैल कर बीर महा योग गन नाथ घन-
नाथ प्राग ज्योति रंग वह्नी दर्शना ॥ सीता राम क्षेत्र चैत्र देस औ वसंतटी का औ दर्शनं भद्रा कूर्म देस देखि
हर्षना ॥ १ ॥ पुष्य माला चित्र वन चंदृ कांता मनुशैल चक्षु गंगा काम शालिनी सुकाम वनमें ॥ बेद क्षेत्र पृथु-

सीता तपो भूमि लीलावती बेद पुर गांधरब शक्र तीरथनमैं ॥ न्हाइ इमि उत्तर सु पूर बसिधाए पुनि ब्रह्म
तीर्थ औ बिशाल चक्र तीर्थ घनमैं ॥ सरस्वती बद्री बन होयकै केदार गंगा यमुना औ हरद्वार पुन्यकेस
दन मैं ॥ दोहा ॥ कुरु क्षेत्र मथुरा बहुरि पुष्कर संभव होय ॥ बैष्णव तब आवत भए अति उत्तम थल जोय ॥
४२ ॥ कथा कथत तित सूत निहारा ॥ सौनक सुनहि सु प्रेम अपारा ॥ उठे सकल हलधरहि निहारी ॥ आवो
धन्य धन्य हल धारी ॥ व्यास लोम हर्षन अभिमानी ॥ उठेन व्यासासन निज जानी ॥ तब बलदेव कोप बि-
स्मार्यो ॥ कर कुशतें शिर भू मधि डार्यो ॥ हाहा कार मुनिन अति कीना ॥ हत्या निज यदुनंदन चीन्हा ॥ ती
रथ करिहौं द्वादस मासा ॥ प्रण करि पुनि यह कह्यो खुलासा ॥ बल बल बध करिहौं तेहि काला ॥ सोई
आय गरज्यो बिकराला ॥ बडी जीह कज्जल गिरि भेसा ॥ अति बज्रांग लाल गंग केसा ॥ दोहा ॥ हयतें गहि
मार्यो मुशल बलि बलि बलहि रिसाय ॥ मार्यौ असुर जय धुनि भई कंटक गयो नसाय ॥ ४४ ॥ करत रह्यो
खल मख बिध्वंसा ॥ भलो भयो नास्यो मुनि गंसा ॥ सूत सुतहि गादी बैठाई ॥ तीरथ करन गये बल राई
सरजू कौशिकि मान सरोबर ॥ गांडकि गौतमि अवध नगर बर ॥ नंदि ग्राम बर्हि ष्मति गए ॥ बह्मा बर
तहि आवत भए ॥ दै प्रयाग महँ अयुत मतंगा ॥ चित्र कूट गे सहित उमंगा ॥ बिंध्याचल काशी नद शोना
सर बिपास मैथिल पुर लोना ॥ गया होयगे गंगा सागर ॥ गो शत कोटि दियो गुन आगर ॥ दक्षिन गिरि

महेंद्र गोदावरि॥ पानी पंपासर मरि सुखभरि॥दोहा॥ भीम रथी गृह सेव पुनि श्री गिरि व्यंकट जाय॥
कांची कावेरी निरखि श्री रंगहि गिरि नाय॥४५॥ कवित्त॥ ऋषि भादि सिंधु सेतु कृतमाला ताम्र परणी
मलया चलहि जाइ बावला चल जायकै॥ दक्षिण समुद्र फालगुन पंच अप्सरास्य गऊ करा सूर्य्या रक
तापी मैन हायकै॥ सरित पयोष्णि निरविंध्य बनदंड कारव्य रेवा माहि क्षमती ग्रो अवंति कामे ग्रायकै
कुरुक्षेत्र जैहैं देखि तुमरो समर भूप धरो पताका साका ग्रतिसर साइकै॥दोहा॥ यह बलदेव चरित कहो
मंगल करन मरीष॥ ग्रवका सुनिवे चहत हो कहो तौन कुल दीप॥४६॥ कहतसु योधन हे मुनि नाथा॥
राम रमे किमि रमनिन साथा॥ कालिंदी तट कैसी लीला॥ कीन्हो करुणा करन सुसीला॥ तब बोले मुनि
प्राम विपाका॥ एक दिन बल व्रज की दिसि ताका॥ द्वारावति तें चढ़ि रथ ग्राए॥ नंद लखन ग्रानंद उर छाए
यसुदा नंद मिले मन भाए॥ पुनि गोपन कहं कंठ लगाए॥ सबन सहित करि प्रेम प्रकासा॥ ऋतु बसंत तिन
न कीन्ह निवासा॥ तहंकी त्रिय विहार चित देकै॥ बल पचांग गरव तें लैकै॥ सिद्ध सई तन दुति विस्तारी॥ तिन
हि मुदित एक दिन हलधारी॥दोहा॥ पूरन शशि यमुना निकट शोभा कही न जाय॥ रमन लगे संकट समन
सब गोपी समुदाय॥४७॥ छंद॥ समुदाय ग्रलि के भ्रमहि जहं ग्रवलोकि सुमन समूह को॥ सीतल समीर
समीर परसत मिलि सुमन के जूह को॥ यमुना पुलिन परमा भरी शोभा ग्रनूपनि कुंज की॥ ग्रति बिमल जल

शसि सहित आभा बास पंकज पुंजकी ॥ कोकिल मयूर सुराग पूरहि मत्त मधुकर डोलहीं ॥ जनु भाटलै प-
हिरावनी गुनगान करते डोलहीं ॥ तहं कुनित नूपुर रुनित कंकन चारु कंचन करधनी ॥ सिर मुकट कुंडल
करन पंकज पत्रकी शोभा घनी ॥ त्रिय सहित विहरत भद्र बपु बलभद्र प्रभु त्रिभुवन धनी ॥ मुखलस-
त चंद्र समान पूरन सखी सब उडुगन बनी ॥ पट नील बजत बिसाल वंशी सात सुर बर तालसो ॥ आव-
ज उपंग मृदंग बीना चंग मिलि करतालसो ॥ ३ ॥ तहं बरुन पठई बारुनी बहु सुमन गंधव ढावती ॥ अ-
लि यूथ नादित वृक्ष को टरतें भई तब आवती ॥ अव रेखि इमि मद पान करि बल कमल लोचन रंग
रंगे ॥ मनमथ सहाई रास श्रम जल बिंदु कहुं परिबे लगे ॥ ४ ॥ मद चुवत मत्त बितुंड सम भुज दंड
सुंड हिराज हीं ॥ कबहूं सिंघासन बैठि लै हल मुसल अतिहीं छाजही ॥ सशि कोटि सम आनन लसत
मन बसत लटकन मुकटकी ॥ मुरली बिसाल बजाइ गावत बहुरि टेकन लकुटकी ॥ ५ ॥ सिर खौर
राजत भौंर गंजै का ससीरसु बासतें ॥ इमि रमत तरुनिन सहित अति श्रम भयो अनुपम रासतें ॥ जल
रमन की इच्छा करी बिहबल हली मद रंग पगे ॥ रवि सुता यमुना नाम कहि इत आउ यह टेरन लगे
६ ॥ दोहा ॥ जब यमुना आई नहीं हलतें ऐंचि फनीश ॥ कोप बचन बोलत भए सुनहु तौन अवनीश ॥
४८ ॥ टेरत नहि आई मदधारी ॥ करिहौं शतधा मुशल प्रहारी ॥ सुनत सभय आई करजोरे ॥ कहत

बचन करि विविधि निहोरे॥ हलधर संकर्षण बल रामा॥ तब बिक्रम नहि जान्यो बामा॥ जासिर यह महि मंडल रहई॥ राई सरिस एक फन बहई॥ छमिय चूक अपनी दिसि जोई॥ संत हृदयन संग सम होई॥ सरित शैल पादप अज्ञानी॥ इन्ह सबकी जड़ जात बषानी॥ सो सुनिकै बिहंसे हल पानी॥ छोड़ दियो यमुना कर पानी॥ पुनि जल प्रबिसि कीन्ह अति क्रीड़ा॥ लखि जेहि होत सुरेसहि ब्रीड़ा॥ दोहा॥ जलतें कढि यमुना तबै अंबर अभरन लाय॥ भेट दीन्ह बलदेव कहं नीलांबर समुदाय॥ ४९॥ पृथक पृथक गोपिन पहराई॥ आपु बसन आभरन बनाई॥ माल पहिरि राजे बल देवा॥ सोउ कोउ कहिन सकै बर भेवा॥ तब पुर यमुना गंध्रप नगरी॥ हलते तिरछी लागत सगरी॥ यह जस सुनै रास कर जोई॥ होत पुराय धर प्रानन सोई॥ यह बल रास कह्यो हम भाई॥ कह सुनिहौ सो कहत बुझाई॥ कहत सुयोधन भूप प्रवीना॥ बल पंचांग गर्ग किमि कीना॥ गोपिन कहं सो मोते भाखो॥ सुनि मुनि नाह कथन अभिलाखो॥ दोहा॥ हे नृप इक दिन गर्ग मुनि यमुना न्हाइ सचैन॥ ब्रज मंडल आवत भए गुनी ज्ञान के ऐन॥ ५०॥ तहा एकांत ललित तरु छाया यमुना तट सुंदर छबि छाया॥ बैठि कृष्ण के ध्यानहिं धार्यो॥ गोपिन इमि मुनिबरहि निहार्यो॥ अहि कन्या सब सुरत सभांरी॥ कीन्ह दंडवत मुनिहि बिचारी॥ दोउ कर जोरि कहत सब ऐसे॥ श्रीबलदेव उपासिय कैसे तब मुनि पांचहु अंगहि दीन्हा॥ तिन्ह तब ताको धारन कीन्हा॥ सुनिहौ कहा कहौ सो भाई॥ तब बोले

ग॰सं॰ ४३०

दुर्योधन राई॥ कहउ मोहिं पद्धति भगवाना॥ तब मुनि प्राग बिपाक बषाना॥ तात सुनहु पद्धति कर भेवा॥ जाते सुबस होत बलदेवा॥ दोहा॥ भूधर हलधर मुशल धर अहिबर बल बलवान॥ भक्ति बिना नहिं होत बस कोटि यज्ञ जप दान॥ गुरु मुकुंद मैं प्रीति अति साधु जनन महं बास॥ किमि नहोहिं ताके सुबस गिरि धर गिरिधर दास॥ ५१॥ ब्रह्म महूरत उठि सुख साथा॥ गवैं राम कृष्ण की गाथा॥ गुरु महि बंदि धरै महिपाऊ॥ नित्य कृत्य करि उर सह चाऊ॥ बैठ कुशासन ध्यानसु धारै॥ कर उछंग धरि नाक निहारै॥ ध्यान करैं बल केर रसाला॥ गौर सरीर गले बनमाला॥ नील बसन द्युति चंद्र समाना॥ इहि बिधि ध्यान धरै मतिमाना॥ तीन काल संध्या कह करई॥ मौनी शुद्ध क्रोध परि हरई॥ काम लोभ मद मोह बिहीना॥ सत्य बचन महि सैन प्रबीना॥ अंबर क्षौम पाय साहारी॥ एक बेर भोजन द्वै बेर वारी॥ दोहा॥ इमि मन कहं एकाग्र करि करै प्रीति के भेव॥ तापर होत प्रसन्न अति देव देव बल देव॥ ५२॥ अबका सुनन चहत मति माना॥ सुनि धृतराष्ट्र कुमार बखाना॥ पटल कहिय अघ पटल बिदारन॥ मुनि तब कह्यौ सुनहु महि धारन॥ बल कर पटल सकल सुख दाता॥ इहि नारद कहं कह्यो बिधाता॥ अहइ गुप्त अति उत्तम चीजा॥ प्रणव कहैं पुनि मनमथ बीजा॥ चतुर्थ्यंत द्वै कहि पुनि स्वाहा॥ मंत्रराज यह हे नर नाहा॥ षोड़श अक्षर सब अघ तपई॥ षोड़श सहस वृती नर जपई॥ इहां उहां तेहि सिद्धि अपारा॥ जपता पूजै सहित प्रकारा॥ पंचबरन को कमल बनावै

च॰ ४३०

वत्तिस दलके सर सरसावैं ॥ दोहा ॥ थंडिल पै इमि विरचि कै धरै सिंहासन हेम ॥ तापर श्री बलदेव कों थापै
उरभरि प्रेम ॥ ५३ ॥ छप्पै ॥ प्रणव नमो भगवते बहुरि पुरुषोत्तमाय कहि ॥ कहि संकर्षणाय पुनि कहै सहस्र
शब्द चहि ॥ अरु बदनाय महानंताय बखानै स्वाहा ॥ बांधसि दावा यह मंतरतें प्रणवै नर नाहा ॥ प्रणव
जय जया नंद बलदेव भाखि बलभद्र पुनि ॥ काम पाल तालांक कहि कालिंदी भंजन सुगुनि ॥ दोहा ॥
आवीरा बिर्भूय मम सन्मुखो भवे तेति ॥ मंत्र करै आवाहनहि उर आनंद समेति ॥ ५४ ॥ छप्पै ॥ पणव न-
मस्ते बहुरि सीर पाने हल गहई ॥ सु मुशल धर अरु रौहिणेय नीलांबर चहई ॥ राम रेवती रमण नमस्ते
स्तू यह भाखै ॥ आसन पाय नहान अर्घ मधुपर्कहि भाखै ॥ धूप दीप नैवेद्य पट भूषण अरु पुष्पांजली
गंधारति उपबीत तें पूजै रामहि बिधि भली ॥ प्रणव विष्णवे मधुसूदन बामन सु त्रिबिक्रम ॥ श्रीउष्णी
धर ऋषी केश पुनि पद्मनाभ क्रम ॥ दामोदर संकर्षण बासुदेव प्रद्युमन ॥ पुनि अनिरुद्ध अधोक्षज
पुरुषोत्तम सु कृष्ण धन ॥ इति पाद गुल्फ जानू उरु कमर उदर को खास हित ॥ प्रष्टि भुजा कंधर करन नाक
अधर दृग सिर सहित ॥ दोहा ॥ पृथक अंग कहि देवतहि पूजयाम यह भाखि ॥ पूजै सबन विधान सह ध्यान इष्ट
कर राखि ॥ ५५ ॥ संख चक्र असि पंकज गदा ॥ कौस्तुभ वान मुशल हल मुदा ॥ धनु बन माल सुमति दारुक अ-
थ ॥ खगपति अंकित ताल अंक रथ ॥ बंसी बेत्र पीत पट नामा ॥ कुमुद कुमुद लोचन श्रीदामा ॥ सह श्रीवत्स प्रणव

तें चहिकै॥ पूजै नाम सहित नम कहिकै॥ ग्रह दिगपाल विनायक व्यासा॥ दुर्गा विष्वक् सेन खुलासा॥ निज निज थान
कमल पर धरिकै॥ पूजै मंत्र रीत अनुसरिकै॥ थाली पाक विधान अगिनि कीं॥ पूजै रंगे प्रेम मैं मनकों॥ पूरव मूल मंत्र
कहं लेई॥ सहस पचीस सु आहुत देई॥ दोहा॥ द्वादस अक्षर मंत्र ते आठ सहस करहोम॥ चतुर्व्यूह के मंत्र तें तितनोइ
करे सु सोम॥ ५८॥ देवहि नौमि प्रदक्षिण करिकै॥ आचार जहिं देहि मुद भरिकै॥ कनक वसन भूषन गोदाना॥ द्विजन जें-
वावैं पुनि पकवाना॥ आचारज कहं शीश नवावै॥ ले आशीस अनंद वढ़ावै॥ यह वलदेव पटल हम कहा॥ भये सिद्ध जे-
हि चहिये कहा॥ सर्व सिद्धि पावैं नर सोई॥ जाके पास पटल यह होई॥ इच्छा औरहु है कछु ज्ञाता॥ तव वोले दुर्यो-
धन बाता॥ वल अस्तोत्र कहौ मुनिराई॥ सर्व सिद्धि कर सुखद सदाई॥ सो सुनि प्राग विपाक उवाचे॥ धन्य महीप रा-
म रंग राचे॥ दोहा॥ वलको अस्तव राज यह विरच्यो वेद व्यास॥ सुनहु तौन कैवल्य प्रद होइहि संकट नास॥ ५९॥
छप्पै॥ देवाधि देव अनंत भगवन कामपाल नमोस्तुते॥ श्री शेष भूधर राम पूरन सीर धर यादव हिते॥ निज धाम
आनन सहस रेवति रमण संकर्षण हरे॥ वलदेव अच्युत भ्रात हल धर पुरुष श्रेष्ठ मुशल धरे॥ १॥ वलभद्र वल
तालांक गौर सुनील पट परमा भरे॥ खर रुक्म कूट प्रलंव मुष्टिक वल वलारि कृपाकरे॥ कूष्मांड वधकर यमुन
भेदन कूप कर्ण विदारनं॥ हस्तिना पुर कर्ष कद्विवरअरि भूमि मंडल धारनं॥ २॥ यदुइंद्र व्रज मंडल विमंडन गुरुसु
योधन भूपके॥ तीरथ करनि कंसा नुजांतक जयद मित्र अनूपके॥ जयदेव अच्युत पर परमते मुशल हलधर वल

प्रभू॥ बंदित मुनीन्द्र फनीन्द्र वरद्युति जगत पति ब्रजपति विभू॥ ३॥ दोहा॥ याहि पढ़ै हरि पद लहै दहैं सोक संता-
प॥ सोइ मिलै वह जो चहै पृथ्वी पुरै प्रताप॥ गांधारी सुत बोले बाता॥ जो बल वर्म दीन्ह मुनिज्ञाता॥ सो मोहिं दीजै
मुनि सिरताजा प्राग विपाक कह्यो सुनु राजा॥ जल नहाइ वर अंबर धारी॥ मार्जन करै कुशासन भारी॥ बंदि सुमिरि ब-
ल कहं नर सोई॥ धरै कवच कहं सब सुख होई॥ छप्पै॥ गऊ लोक पति परम मोहि अरिगन महं रक्षैं॥ महि मंडल जा-
सिरस रसप सर्म उनमहि रक्षैं॥ सीर पानि सेनाके मधि सबहन मह रक्षैं॥॥ हली बली सरदार सदा मोहि रनमह रक्षैं॥
मुशली रक्षैं दुर्ग महं संकर्षण रक्षैं विपिनि॥ जलसु यमुन जल वेग हर नीलांबर रक्षैं अगिनि॥ १॥ राम नाम बल धाम
सदा वायू महं रक्षैं॥ नभ महं बल जग विदित चारु आयू महं रक्षैं॥ बासु देव बसुदेव सुमन परवत महं रक्षैं॥ सहस्र शी-
र्षा विषके मधि आनंद गहि रक्षैं॥ रौहिनेय वतु राग तें काम पाल विपदा हरन॥ धेनुकारि वतु काम ते रिसिते वतु
बानर दरन॥ २॥ महा मोहतें वल्क लारि करुना करि रक्षैं॥ महा मोह तें माग धारि आनंद भरि रक्षैं॥ वृष्णि धुरं-
धर प्रात सदा सब लायक रक्षैं॥ पहर दिवसकी समय सु मथुरा नायक रक्षैं॥ पातु मध्य दिन गोप सरव पातु
स्वराट् परान्ह महि॥ सायं काल फणिंद्र वतु पर प्रदोष आनंद गहि॥ ३॥ बीरज जासु दुरंत सु अर्ध निसा महं रक्षैं
पिछिली निसि महं ईश अपानहि सामहं रक्षैं॥ देखन मैं करि कृपा सदा प्रलंब अरि रक्षैं॥ यदु उत्तम अधस-
दा परम करुना करि रक्षैं॥ ऊरध महं बलभद्र वतु सब दिसिते बलदेव पुनि॥ पुरुषोत्तम अंतर अवतु नाग इंद्र

वाहर सु गुनि ॥ दोहा ॥ अंत रात माँते सदा मोहि पातु भगवान ॥ इमि यह बर्म तुम्हैं कह्यो सुनहु भूप मति
मान ॥ ५९ ॥ देव असुर के भय कह नासन ॥ अघइं धन कहं प्रगट हुतासन ॥ विघ्न समूहहि आसुनिका
सन ॥ बल कर बर्म सकल सिद्धा सन ॥ सुनि कै वचन नीति पथ सोधन ॥ बोलत भए भूप दुर्योधन ॥ बल कर
भाषहु दस सत नामा ॥ प्राग विपाक कहत मति धामा ॥ साधु भूप मति उत्तम तोहीं ॥ सुर दुर्लभ जो पूछा
मोहीं ॥ कहत नाम हम सहस प्रवीना ॥ गर्ग जाहि गोपिन कहं दीना ॥ ॥ छप्पै ॥ ॥ प्रणव अश्व अरु
श्री बल भद्र सहस्र नाम कहि ॥ कहै स्तोत्र मंत्रस्य गर्ग आचारज ऋषि चहि ॥ कहै अनुष्टप् छंद बहुरि
संकर्षण आनै ॥ परमात्मा देवता तबै बल भद्र बखानै ॥ इति बीज मरे वति शक्ति पुनि अनंतेत कील कमश्री ॥
बल भद्र प्रीति अर्थे जपे विनियोगहि भाषै सश्री ॥ दोहा ॥ इहि विधान संकल्प करि धरि आनंद महान ॥
सहस नाम सुमिरन करै प्रथम करै बल ध्यान ॥ छंद ॥ शोभित किरीट सु किंकिनी कंकन कनक अभिराम हैं
मुख कमल अलक कपोल कुंडल लसित पूरन काम हैं ॥ कैलास गिरि सम रूप अंबर नील अरु बन दाम
हैं ॥ श्री काम पाल विशाल कर हल मुशल भल छवि धाम हैं ॥ १ ॥ कवित्त ॥ बलभद्र रामभद्र संकर्षन कामपा
ल रेवती रमण देव हलायुध राम हैं ॥ श्वेत वर्ण बलदेव नील बासा महा वीर सीर पानि पद्म पानि वेनु पानि
नाम हैं ॥ अच्युतसु अच्युत के भाई वीर वासुदेव वासुदेव कला औ अनंत अभिराम हैं ॥ ताल अंक मुशली

हली वली सुरोहिनेय हाय यदु उत्तम प्रताप वल धाम हैं ॥ १ ॥ ऊर्धग प्रवल वल सहस वदन धारी फूर्ति का-
धर स्वराट् बसु औ अनंत हैं ॥ बसुमती भर्तार बसु उत्तम यदुबर यादवेंद्र माधव सुदानी भगवंत हैं ॥
द्वारकेश माथुरेस मानी परिपूर्ण तम पुरुष पुरान पूर्ण परम गनंत हैं ॥ शाश्वत प्रकृत पर वृष्णि हित म
हामति शेषध्रुव औ प्रधान भगवान संत हैं ॥ २ ॥ परमात्मा अंतरात्मा जीवात्मा पुरुषोत्तम चतुर्व्यूह चतुर्मूर्ति चतु-
र्वेद बुद्ध हैं ॥ चतुर्पद प्रकृती संघात ससमुखी संधिबुद्धि सख ज्ञानवान अहंकार सुद्ध हैं ॥ महात्मान इंद्रियेस देवा
त्म कर्म शर्म अद्वितीय निराकार भूमि सत्ता क्रुद्ध हैं ॥ साकार गगनाकार अंबर्द द्वितीय बारि जल तेज निर्मलाभ
आदि अनिरुद्ध हैं ॥ ३ ॥ हिरन्मय नीरंजन बीरज बिराज ऋष्ण मान औस्मराट फनी फनिक फनीस हैं ॥ दस सत
फन फनीहार औ महौज फनी फन सफूर्ति फुत कारी उतकर महीस हैं ॥ प्रभू विभू मनिधर स्वामी वितली सुतली
अतली तला तली महातली तलीस हैं ॥ पाताली औ भोगतली दंत धारे महावल काम पाल शंखचूड़ वासुकी महीस
हैं ॥ ४ ॥ कंबलाश्व देवदत्त धृतराष्ट्र अति बाहु बारुनी धनंजय सु मत्तमद कीस हैं ॥ मदतें छकित नैन पद्म नैन पद्म
माली मधुश्रवा नाग सुता जुत बनमाली हैं ॥ कोटि काम रूप धारे नूपुरी सिखंडी दंडी कुंडली कटक्की कट कांगदी
सु माली हैं ॥ कटि सूत्री मुकुटी कमंडली महाग्नि काल कालि काल कलिःप्रिय रुद्र बपु बाली हैं ॥ ५ ॥ प्रलय
महा हिलय भाष्यकार उरंगम शास्त्र वान पतंजलिपातिनि अभंग हैं ॥ फक्कि का भूकात्यायिनि फोटा यन॰

यज्ञ हरि याज्ञिक हरिन कृष्ण वामन भुजंग हैं॥ विष्णु प्रभ विष्णु हंस करमी निवात वर्मी योग ईस श्रीबैकुंठ सूकर सुढंग हैं॥ नारद विशेष मित सनक कपिल मत्सदेव मंगलाख्य कूर्म दत्त जित जंग हैं॥ ६॥ पृथू कल्कि नारायण नर औ परसु पानि धन्वंतर ऋषभ नृसिंह राम चंद्र हैं॥ काकुत्स्थ करुना सिंधु राघवेंद्र कौशलेंद्र दासरथी सूर रघु उद्वह अमंद हैं॥ राजकुल त्राता सर्व लक्षण भरत भ्राता कौशिल्या पुत्र शत्रु ताप कर स्वछंद हैं॥ लषन रिपूघ्न भर्त कवची निषंगी खड्गी शली हल कोष्ठ और भोगता विलंद हैं॥ ७॥ गोधांगुलि त्रान बहु शंभु धनु नास कर यज्ञ त्राता यज्ञ कर्ता सु मारीच मारीहैं॥ ताड़ कारि पत्र बाक्य करण विराध अरि बिभीषन मित्र बन ईस असुरारीहैं॥ मुनि प्रिय हरषी कबंध शत्रु दंड केश चित्र कूट बासी राम मुनि बेष धारीहैं॥ पंचबटी ईश बन विहर मतंग नेता राजिव नैन भानु मान सुख रारीहैं॥ ८॥ सुग्रीव सखा हनुमान हित वालि रिपु सेतु कारि रावणारि लंका को जरावने॥ पुष्प कस्थि जानकी विरह वान लव नारि अवध निवासी सुर अर्चित बिभावने॥ सूर्य्य बंसी चंद्र बंसी बंसीधर श्रीनिवास गोपति गोवृंद ईस गोपी गोप पावने॥ गोकुलेश गोप पुत्र गोगनेश पूतनारि बक शत्रु सकटारि गोयुत सुभावने॥ ९॥ त्रिनावर्त घाती धेनुकारि वत्स शत्रु जानो केशि हा प्रलंब शत्रु व्योमहा गुपाल हैं॥ दूध पान अग्नि पान वृंदावन लतावान वृषभ निकंदन यशोदा नंदलाल हैं॥ भव्य शिशु लालित सु द्रोणी रास मंडलेस गिरि हित गिरिधारी शंख चूड़ काल हैं॥ कालिंदी भेदन नवल सुखरास रास कर गोपी सत जूह

हित लोचन बिशालहैं ॥१०॥ व्रज रक्ष शक्र जित बर वृषभानु नंद नंद को अनंद देत नंदराय सुतहैं ॥ श्रीनिवा-
सकंस शत्रु काली हा मुकुंद बीर रजकारि मुष्टिकारि चाराडूरारि उतहैं ॥ कूट हंता तोशलारि शल शत्रू मद्दत्रयु-
द्धी कंस धनु भंजन महान बल युतहैं ॥ कंस के अनु गहंता कंसके अनुज हंता मुनिमहं दात्म वान परमाब-
हुतहैं ॥११॥ गजहंता कंस हंता कालहंता मागधारि म्लेच्छहा कलंक हासु पांडव सहाई हैं ॥ श्यामलांगचा-
र भुज शोम उपगवी प्रिय युद्ध कर उद्धवेस मंत्री मंत्र दाई हैं ॥ बीर हासु बीर शत्रु शंख चक्र गदापानि जोत
ज्योतिष्मती पति हरि भाईहैं ॥ रेवती हरष कर्ता रेवती के चित्र हर रेवतीके प्रिय रेवतीके प्रान राईहैं ॥१२
धृति नाथ धराध्यक्ष दाना ध्यक्ष धननाथ रैवताद्रि वासी मैथिला च्युत चरनहैं ॥ गर्बा भक्त बत्सल सुयोधन
गुरु सुजान मान प्रद गदा शिष्यकार प्रेमतनहैं ॥ सुर शत्रु मर्दन क्षमीय मुदा अति सुद्ध कल्पवृक्ष कल्पवृक्षी
कल्पवृक्ष बनहैं ॥ कौरवेस धन्वी ईस श्रीशीमंत मति मान कूप कर्ण शत्रु कुशमांड जित रैमारन हैं ॥१३॥ सैव्य
मधु माधवनि सेवित गांडीवी वृष्ट पुष्ट अंग तुष्ट औ बलिष्ट हर्ष गरहैं ॥ रैवत दमाद सौभ पौंड्रकारि औ
सु नंदी सिखरी महा बल दुविद प्रान हरहैं ॥ काशी के बिनासी मार चक्र कासी नृप नाशी कौरवेस पूजित
दयाल दीर्घ करहैं ॥ बिश्व कर्मा वेद धर्मा देव शर्मा हेम बर्मा महाराज सिद्ध गीत धीर छत्र धरहैं ॥१४॥ महाराज
लक्षनसु सिद्ध कथा कीर्न नासा तारा अक्ष बिंब ओठ स्वेत छवि धनहैं ॥ चामर प्रवीजित प्रचंड मंड मेघ लाख्य

पद्म नाभ पीन अंस द्युति रासि मनहैं॥ पापहा कपाट बक्ष सुंदर आजान बाहु बास हित कारी औ विभूतिई-
सजनहैं॥ बंधु मोक्ष ईक्षन सुदंत वक्र शिशुपाल शाल्व शत्रु शाल बाहु तीरथ करनहैं॥ नैमिष बनेस औ अ-
जात शत्रु गोमती सुगंडकी बनेस औ बैजयंती धरहैं॥ पद्मधर शौन न्हाए बिपासी प्रयाग तीर्थ सरयू समुद्र-
सेतु गया सिर करहैं॥ अंधनद पुलह पुलस्त वान गंगा सिंधु शत्रु गोदावरी नाथ तीरथ बिचर हैं॥ वेनी गो-
दा भीम रथी ताम्र पर्णी महा पुन्या कृतमाला वटोदका पयस्वनी बरहैं॥१६॥ कृष्ण बेना गंगा रेवा औ काबेरी
भागी रथी प्रतीग्ती सु प्रभा वेनी सरन त्रिवेनी धरहैं॥ सिद्धासन विंदु सर विंदु जंबू औ प्रभास सैंधव सु पुष्कर बदरि
बन यात्रा कर॥ कुरक्षेत्र पतिराम जाम दग्नि महा मुनि इल बल तनय शत्रु गुन सिंधु गुनाकर॥ विश्व जित
विश्व नाथ तीनलोक बिजय कर सुदामा दरिद्र हर शत्रु कुल नास कर॥१७॥ गद गद्य गद भ्राता पूर्ण्णार्णव
गुण सिंधु गुनयात्री रंग वली जलाकारी भलहैं॥ भूत औ भविष्य बर्त्त मान सुता दृष्टम वह रषी औ
बसंत मालषी बिकर्षी करहैं॥ निर्गुन सगुन हीन विग्रह बृहत रूप आदि औ अनादि निर अंतर अछल
हैं॥ प्रत्य धाम निरानंद गुना तीत सम साम्य सम दृष्ट कल्यक गुना गृही सबलहैं॥१८॥ गूढ़ रूढ़ गुन
गौन गुना भास नित्यक्षर अक्षर विकार विंकूज मुख ब्रह्म हैं॥ सार्थक पीयूष समबुद्धि सम प्रभु साथ
आप रन सर्व वित शंकर स्वयंभु हैं॥ अक्लेद्य छेद्य सिष्य कोक के निवर्त्त काथ ब्रह्मा कवि ब्रह्म धर व्यापक सु

शंभुहैं॥ उपाय काधि भूत अधिदेव औध्यात्म सेव आश्रय अपाने श्रेष्ठ नासक निशुंभहैं॥ १९॥ महावा
यु महा बारि श्रेष्ठारूप अंकथित वोधक प्रबोधी गुन तेइस भरतहैं॥ प्रेरक आवेश अंश अंसिक धरौ पर-
स्थ महा जनतप सत्य भूर्भुवश्च गतहैं॥ त्रिधा ईश प्रकृति नैमित्तिक आत्यंतिक मैलय विसर्ग सर्ग सर्ग
आदि मतिहैं॥ अध औ निरोध गत मन्वंतर अवतार मनु मनु पुत्र अघ बर्जित प्रबरहैं॥ २०॥ सोभाव संभु शक्र
स्वायंभू कृत सहाय देवालय देव गिरि मेरु हेम हारहैं॥ गिरिश गनेश गौरी गिरि गौह्वर गौरी सहेम अर्चित
विंध्य तीन कूटा धारहैं॥ शिसिर पतंग कंक सु मैनाक पारि भद्र जारुधि सु बेल शैल शैल सरदार हैं॥ कालं-
जर वृहत्सानु नंदि केशि दरी बानु संजादक वृक्ष पारिजात पुज्य चारुहैं॥ २१॥ जयंतांग कृजयंत औजयंत
वृत्र शत्रु देव लोक कुमुद ससी मंदार नामहैं॥ दिग्जया कुलाख्या बंधु सुधा सिंधु मृग पुष्य पुनर्बसु अभिजित
हस्त गुनधाम हैं॥ वैधृत श्रवण ऐंद्र ब्रह्मा श्राद्ध शुक्ल सुभ बितीपात शिव देव मय अभिराम हैं॥ भास्कर उदय
औ नक्षत्र ईस शिशु मार बीचक्षन ब्रह्म लोक स्वामी को प्रनामहैं॥ २२॥ नायक बैकुंठ देव कोट ब्रह्म अंडकर
बहुत ब्रह्मांड पति गोलोकेशि ईशहैं॥ गोलोक धाम धिष्ण गोपिका के कंठ भूष ह्रीधर श्रीधरलीला धर
नक्षितीस हैं॥ धुरी अट्ट राज धर कुंत धारी शूली गजी घर्घसुनु बीर भासी अंत धरा धीसहैं॥ शूल शूचीअ-
र्थी गज गज चर्मधर भारी मुंड माली व्याली बारि पति श्रुति ईसहैं॥ २३॥ दंडी औ कमंडली बेताल भृत्य भूत

ग॰सं॰ स्वामी कूषमांड संवृत प्रथम ईस कालहैं॥ पशुपति मृड़ानी ईस मृड़ वृष कृतांत कूट भैरव संहर्त्ता वीर भद्र काल व॰
४६० हैं॥ कलपांत षड़ानन दक्ष यज्ञ नास कारी शर्प्य राशी विषामी शिवार्थ प्रद पालहैं॥ धनुष टंकारी हस्ती ह-
स्त तर्क विंदु पंडित वल तववतुत पाव नूपुर सुतालहैं॥ २३॥ विद्यावान वेद याजी शांख्य शास्त्री वैद्य पती
मीमांसी सुक राव नाम गौतम कणादि हैं॥ वादी वाद नैयाय कनय धारी धर्म शास्त्री सर्व शास्त्र तत्वग प्रा
कृति भाषा आदिहैं॥ वैय्या कर्ण कीनि और शब्द वैयासक जानो पंच रात्र संहि तारव्य काव्य मरयादि
हैं॥ स्मृति कर पुराणीक काव्य ज्ञाता कविराज वैद्य वैद्य वान अलंकार बाहसादिहैं॥२४॥ वाक्यस्फोट पदस्फो
टवृतिअर्थवान स्वच्छ लक्षनार्थ उज्वल शृंगार हास्य नामहैं॥ अद्भुत भयानक अश्वत्थ पंच भोजी अंब री-
ष अंगयव क्रीतय वसत धामहैं॥ अैल वंश वर धन प्रह्लाद रक्षक स्निग्ध उतरीय धरना विश्रामहैं॥
पूरन उच्चहेम कंचु पीत बासी सित वासी रक्त वास दिव्य अंग दिगवास कामहैं॥ २५॥ नाना मणि समा
समा कीर्न नाना रत्नतन धारे नाना पुष्प धर पुष्पी पुष्प धनु पूजेहैं॥ नाना अंग रागधर नाना पुष्प रस
वासी नाना वर्णमय वर्ण नानावास कूजेहैं॥ नाना पद्म धर कोशी नाना वास वेनु धर रत्न साल धारी धौत वस्त्र धर कूजे
हैं॥ पीतोष्णि सासितोष्णी सरक्तोष्णीसश्यामोष्णी सदिव्य अंग दिव्योपम सुखमा प्रपूजेहैं॥ २६॥ गोलो कांक कृत औ
उत संग मथुरास्य माथुर मधुपुरेस खंजसे नयन हैं॥ दधि हर्ता दुग्ध हर्ता नवनीत चोर तक्री तक्र भोजी चक्र धारी

दधिचोर वनहैं॥ प्रभावती वद्धकार दामोदर दमी दाम सिकता विहारी बाल केलि सुखमनहैं॥ धूलि धूसरांग व्रज अर्भ-
क कलिंदी कूल विदा नाख्य मुक्त केश मधुरे वचन हैं॥२७॥सुधी काक पक्षधर कुली कोला हली जल पंक प्रांगले-
पक वृंदा वृंदावन चारीहैं॥ वंसीवट तटस्थित महावन बास करलोक अर्क वन बासी साधु प्रिय भारीहैं॥ साधी सो
सुगत साध्व रंग नाथ विंद्धते समुक्त नाथ साधस्पति सुयश कीर्त्ति धारीहैं॥ रंग रंज नाख्य राग खट गम प्रयुक्त चारु रा-
गिनी रमण मेघ मल्लार कारीहैं॥ दीपक श्री मालकोश भैरवादि लोल सुर जाति सुर मृदु जान ताल मान कारीहैं॥
२८॥ अक्षर कला अगम्य श्यामा ईश औ प्रमान शतानंद शत फन शत क्रतु आसुप्तहैं॥ उर्वर स्वप्न ऊर्जस्फूर्जा
विज्वर ज्वरन पूज्यज्वर कर्ता ज्वरेसक सुसुप्तहैं॥ जांब वान जंबुक अंश की औ द्विपारि शत्रु जंबू द्वीप ईस और त्रि-
जरा प्रसुप्तहैं॥ शाल्मलि शाल्मली द्वीप्त क्षप्त क्षवन ईस कुशा धारी कुश कौशी कौशिक प्रगुप्तहैं॥ २९॥ कुशस्थ
ली स्वामी काशी नाथ कुश विग्रहाख्य भैरवाख्य शासन महीपहैं॥ दाशारह भोज वृष्णि अंधक निवास दाता अभि
द्योत प्रभि द्योत शात्वत प्रदीपहैं॥ सूर सेन भोज स्वामी अंधकेश आहु काख्य उग्र वाक उग्रसेन द्वीपहैं॥ उग्रसेन प्रि-
य प्रिय पार्थ पार्थ प्रियसभा स्वामी सुधर्माधि ईस वृष्णि चक्र कछितीपहैं॥ ३०॥ सभा शील सभा दीप सभा अग्नि
सभा सूर्य्य सभा चंद्र सभा भास सभापति नामहैं॥ सिंचित प्रजार्थ पद सद्योदय प्रजा भर्ता प्रजा पाल तत्पर अनूप गुन
ग्रामहैं॥ द्वारका नगर चारी द्वारका विग्रह कारी द्वारका के दुःख हारी द्वारका सुठामहैं॥ जगमाता जग त्राता जग भर्ता

जगभ्राता जग मित्र जगत्सखा औ विगादि रामहैं॥ ३१॥ श्री ब्रह्मराय देव ब्रह्म पद रजशीस धारी ब्राह्म हरष कारी मुश-
ली ब्रह्मराय हैं॥ ब्रह्म पाद सेव कसु ब्रह्म सेवा कार कारव्य ब्रह्म पाद्य जल पूत विप्र मुख्य धन्यहैं॥ विप्रहित विप्रगीत
विप्र पाद जल प्रीत विप्र यादवारि प्रिय सुकथ अनन्यहैं॥ विप्र भक्त विप्र गुरु विप्र विप्र पदगामी विश्ववाप द्वारका
सु मंगल प्रजन्यहैं॥ ३२॥ अक्षोहिनि पति योधा प्रतिना समेत क्रोधा उग्रवंती चतुरंग गज कोटि चाई हैं॥ रथ कोटिज-
य केतु सांमंतक धृतपाद महारथी अतिरथी रथी विश्व साईहैं॥ नारायण अस्त्र रण श्लाघी ब्रह्म अस्त्र धारी जैत्र
रथ सुस्थित रणोद्भवलराई हैं॥ मदोत्कट युद्ध बीर देवासुर भयदेत करि कर्ण पाद धरि कुंतकविदाई हैं॥ ३३॥ प्रोच्च-
भट्ट प्रति भट्ट संमर्दक अग्र जाख्य वान वर्षी सूत मद कुंडल धरनहैं॥ रन मंडलाख्य खड्ग खंडित विसूर अंग षोड़
शाब्द षट चारु अक्षर वरनहैं॥ बीर घोपक्लिष्ट वपु ब्रज्र अंग ब्रज्र भेदी रुग्न वर्ण भग्न दंड अट्ट हास पनहैं॥ शत्रुभा
र्सनाख्य पट्ट धारी पट्ट नारी पति पट्ट धारी पट हाख्य वाद प्रिय मनहैं॥ ३४॥ हुंकार गर्जित महान स्वन साधु भक्तप-
राधीन औ स्वतंत्र साधु आभरन हैं॥ अश्व तंत्र साधु मय साधु ग्रस्त साधु चित्त साधु ज्ञाति साधु प्रिय साधु जाकोध-
नहैं॥ साधु चारी परमा सुयोधनाख्य साधु वश्य साधु केसमूह हेत आनंद अयन हैं॥ शुभ अस्य दाता विश्व त्राता
साधु चित वारे वाधा गत राधापति मंगल करनहैं॥ ३५॥ दोहा॥ यह सहस्र बर नाम बर कह्यौ सुनहु नरनाथ॥
अहै भद्र वलभद्र को परम पुन्य की गाथ॥ ६१॥ शता वर्त्त करि विद्या लहई॥ चार बर्ग फल आनंद गहई॥ श्री विभूति

वल ओज अपारा॥ येहि पढ़ि पावै मनुज अपारा॥ गंग यमुन तट सुरगृह माहीं॥ सहस वार एहि जपै तहाहीं॥ सिद्ध होइ
कछु कहो न जाई॥ सुत अर्थी पावै सुत भाई॥ धन अर्थी धन पावै राजा॥ रोगी तजै रोग को साजा॥ कैदी मनुज कैद
तें छूटै॥ अयुत वार जो पढ़ि सुख लूटै॥ पुर श्चरन विधिते करि यज्ञा॥ तर्पन द्विजपूजन सर्वज्ञा॥ गऊ दान पुनि
पटल सु पद्धति॥ अस्तव कवच नाम यह पद्धति॥ दोहा॥ तासु वार वारन घने खड़े डुलावहि कान॥ मंडलीक
ठाढे रहै वर मंडली समान॥ ६२॥ जो निशि काम पढ़ै सुख रूपा॥ जीवत मुक्त गुनहु तेहि भूपा॥ ताके गृह नित
वसहि अनन्ता॥ स्वभग स्वरूप सरस भगवंता॥ पापी अपने पाप नसाई॥ गऊ लोक निवसै सुख पाई॥ हे बहुला-
श्व कथा सुनि एहू॥ ॥ दुर्योधन उर प्रगटा नेहू॥ पूज्यो प्राग विपाकहि भारी॥ धारेउ पांच अंग व्रत धारी॥ बिदा
होइ मुनि प्राग विपाका॥ गे आश्रम जाका जग साका॥ यह अनंत की कथा अपारा॥ कहै सुनै जो गुनै उदारा॥ ब्र-
ह्मा नंद ब्रह्म मय सोई॥ ता सम जग जन और न कोई॥ दोहा॥ खल खंडन खंडन दलन व्रज मंडन सुख रूप॥ दंडन
द्विविद समेत भज कीन्हो खंड अनूप॥ करतल वंसी मुशल हल हित सित असित स्वरूप॥ राम श्याम अभिराम अ-
ति वसहु हृदय यदु भूप॥ सोरठा॥ ह्वै वानी मधि व्याप्त कीन्हो खंड समाप्त वर॥ दासहि भोज सप्राप्त सुमिरत गिरि
धर मुशल धर॥ ६३॥ इति श्री भाषा प्रकाशे कृष्ण प्रिये गिरिधर दास विरचिते प्रेमपथ रचिते गर्ग संहितायां
अष्टम बलदेव खंड समाप्त शुभ मस्तु राधाकृष्ण॥

श्रीगणेशायनमः अथ विज्ञापन खंड लिख्यते॥ श्री गोपी जन वल्लभाय नमः॥ सोरठा॥ यह जग जासु विनुंड सो अखंड गिरि वर धरन॥ वर विज्ञान क खंड कर विज्ञान चाहत धरन॥ दोहा॥ जगत बीच जाकी भगति लगति परम हित रूप॥ प्रेम पगति अति मति ठगति वरनत सुमति अनूप॥ चौपाई॥ कहत जनक गहि सुंदर मतिको॥ जो मारग श्री कृष्ण भगति को॥ कहहु तौन जिमि होउ भगत में॥ बोले मुनि यह सार जगत में॥ कथिहौं व्यास कथित अख्याना॥ जातें दूरहि दुरत भगवाना॥ हरि निज भुज बल सभा सुधर्मा॥ लाए इंद्र जीति वर परमा- मंडल जहं वैदुरज मनिको॥ कोटिन खंभ कनक मनि वनिको॥ विश्व कर्म विरच्यो अति छवि सों॥ पद्म राग महि अधि कति रवि सों॥ वर वितान वहु तने तनावन॥ मनि झालरि झूलरि लटकावन॥ सिंहासन मधि रतन वनक के॥ छाजहिं कोटिक कलश कनक के॥ दोहा॥ नृत्य करहि गंधर्विनी आनन सत शशि तूल॥ पद नूपुर कटि किंकिनी कर कंकन सिर फूल॥१॥ विद्या धरी करहि कल गाना॥ वाजहिं बाजन सुरंग समाना॥ चंदन और चित्र रथ वनसे॥ लजहि सर्वतो भद्र सुवन से॥ पारिजात भरि वानिन महकत॥ सरस सुगंध दसहु दिसि लहकत॥ सर जह लाख सरोजन राजत॥ भ्रमरे भ्रमहि इतै उत भाजत॥ चालिस कोस सभा विस्तारा॥ ऊंचो योजन पांच निहारा॥ तोरन ध्वजा पताका माला॥ तहं सिंहासन लसत रसाला॥ जापर बैठि होइ वासव सो॥ जग चातुरी धरै तब सबसो॥ जो तापर बैठे नर राई॥ षट विकार ताकरन सिजाई॥ दोहा॥ सभा सुधर्मा धर्म

मय भासत भानु समान ॥ जबलौं तित निवसै मनुज तबलौं अमर अमान ॥ २ ॥ छप्पन कोटि विराजहिं यादव ॥ हरि सुख वर वरसहि जनु भादव ॥ अति परिवार उदार चारु छवि ॥ सो प्रशोभा कहि सकै कौन कवि ॥ उग्रसेन की उग्रसैन है ॥ चैन सहित सब विश्व जैन है ॥ राजत तित अति राजी राजा ॥ आए तितहिं व्यास मुनि ताजा ॥ श्याम सरीर सोह सिर जटा ॥ नील शैल पर जिमि घन घटा ॥ सभा सहित नृप कीन्ह प्रनामा ॥ बोलेउ आसन अभिरामा ॥ जन्म भवन भो सफल हमारा ॥ लखि मन हरषन दरस तुम्हारा ॥ जा महँ रहैं प्रसन्न कन्हाई ॥ ३ ॥ सो मोकहं कहिये मुनिराई ॥ दोहा ॥ जहां साधु के पद परैं तहां सकल आनंद ॥ तुहूं लोक सुख सो रहै कृपा करहिं गोविंद ॥ ३ ॥ इक छिन वास करहिं जहं संता ॥ तहं निज धाम करहिं भगवंता ॥ पूरव जन्म सुकृत मम काहा ॥ जाते भए यदू नर नाहा ॥ हरि नाती तुमसे मुनि आए ॥ कहिए मौन हमारे भाए ॥ सो सुनि कहत भए द्वैपायन ॥ धन्य भूप भगवत परायन ॥ तुम पूरव नृप मरुत महाना ॥ कीन्ह यज्ञ वर दिय भगवाना ॥ ताके फल धन सामल स्वामी ॥ यह पद दियो प्रेम पद पामी ॥ अमित अंडपति प्रभु परि पूरन ॥ गऊ लोक पति विभु करुना तन ॥ राधा रवन भवन मे तुमरे ॥ जिमि निवसत तिमि नहि उर हमरे ॥ दोहा ॥ तुम सम धन्यन अन्य जग पायो सुख हरि जन्य ॥ भक्तहि सींचत प्रेम जल श्याम श्याम घन जन्य ॥ ४ ॥ तब यदुनायक वचन उचारा ॥ अहो धन्य अति भाग हमारा ॥ कर्म कैर दृढ लक्षण कहहू

जग बहु बाद भ्रमहिं द्रुत दहहू॥ सुनिकै इमि नर वरकी बाता॥ कहत बाद रायन विज्ञाता॥ जग सब कर्म सू
त महं गाथा॥ किए फलहि पावहिं नर नाथा॥ सहित निमित्त कर्म हैं जेते॥ अहहिं बंध कारी जग तेते॥ जे नि
ष्काम करहिं शुभ कर्मा॥ सोई मुक्त अहैं गत भरमा॥ सत रज तम माया के गुन हैं॥ या महं फसे सकल जग
जन हैं॥ सतसुर पुर रज महि तम नरका॥ हरि पुर जाहिं प्रेम पथ गरका॥ दोहा॥ पंच अगिनि कहं तपहिं जे
कानन कीन्हे ओक॥ ते जोगी जन जात हैं सप्त ऋषिन के लोक॥ ५॥ संन्यासी वरत्रिती विदंडी॥ सत्य लोक
निवसहिं दुति मंडी॥ करि अष्टांग जोग कहं जोगी॥ होहिं महर जन पुरके भोगी॥ मखकर वसहिं शक्र रज
धानी॥ व्रती भानु पुर ससि पुर दानी॥ तीरथ याजी सिषि पुर माहीं॥ सत्य संध वारुन महं जाहीं॥ शैव शंभु
पुर वैष्णव हरिके॥ स्मार्त स्वर्ग सर पूजन करके॥ पितृ भक्ति जे करहिं सुजाना॥ ते जन जाहिं पितृ अस्थाना॥
प्रजा पती कहं पूजहिं जोई॥ तिनकर वास दक्ष पुर होई॥ भूती भूतहि यक्षी यक्षन॥ प्रेती प्रेतन रक्षी रक्षन॥
दोहा॥ पापी यमपुर जात हैं सहैं यातना घोर॥ निज निज कीन्हे कर्म सब भ्रम हिं लोक की ओर॥ ६॥ ब्रह्मा आ
दि लोक है जेते॥ हे नृप पुनरावर्ती तेते॥ करम वायु वस मनुज गुवारा॥ अध ऊरध दिसि भ्रमै विचारा॥ करम
भरम मय जाल महाना॥ नर झख कठिन सकै नरत्राना॥ तातें त्यागि करम व्यवहारा॥ भजहु कृष्ण निष्काम
उदारा॥ प्रेम लक्षण ज्ञान विरागा॥ लै हरि भजहु कर्म करि त्यागा॥ कृष्ण चरन सरसी रुह ध्यावहु॥ जातें सिगरो

दुःख नसावहु ॥ मुक्त सोई जो कृष्णहि ध्यावै ॥ उग्रसेन सुनि वचन सुनावै ॥ पुनरावर्ती सिगरे लोका ॥ मोहिन चहिये तिनके थोका ॥ दोहा ॥ कृष्ण चंद्र कर लोक जो अच्युत कीन्ह प्रकास ॥ ताकहं मोहि वषानिए सुनि बोले मुनि व्यास ॥ ७ ब्रह्म अंडते पर गो लोका ॥ नासत सोक कृष्ण कर ओका ॥ आवा गवन रहित तेहि गुनहू ॥ यह ब्रह्मांड कथा अब सुनहू ॥ जोजन कोटि पचास वषाना ॥ दुहु दिसितें सत किय परमाना ॥ ऐसे कोटिन अंडन भूपा ॥ देखै तहतें मनुज अनूपा ॥ रवि ससि अग्नि जहां नहि जाहीं ॥ काम क्रोधकी गतिहै नाहीं ॥ जरा मृत्यु भ्रम लोभविमोहा ॥ काम वासना तहां न सोहा ॥ शब्द ब्रह्म जेहि कहै न बानी ॥ मन की निपट पंगु गति जानी ॥ केवल भक्ति तहां पहुं चावै ॥ अलख अकथ तेहिको कहि गावै ॥ दोहा ॥ उग्रसेन बोले बचन तुम मोहि यहदृढ़ कीन्ह ॥ कृष्ण भक्ति बिन नहि अहै कोउ हित साधत पीन ॥ ८ ॥ तब रुचि मोहिं भई अति भारी ॥ सनते अधिक भक्ति हरि प्यारी ॥ कै विधि भक्ति भेद हरि केरो ॥ पृथक सुनन चाहत मन मेरो ॥ कहि कै कीजै मोहि निकंदन बोले सुनत परासर नंदन ॥ धन्य पुरी द्वारावति एहू ॥ धन्य भूप जेहि कृष्ण सनेहू ॥ जेहि सुनि महा अघी अघ दाहै ॥ सो हम कहत तुम्हारे चाहै ॥ निरगुन सगुन भेदहै दोई ॥ याके बीच सुनहु तुम सोई ॥ हिंसा दर्प मान मर करनो ॥ भिन्न भाव अरु द्वेषहि धरनो ॥ क्रूरत क्रोध हृदय महं होई ॥ तामस भक्ति जानि ये सोई ॥ दोहा ॥ अति धनतें मन मानतें यत्न सहित नरजोन ॥ परमेश्वर कहं पूजई राज समानहु तोन ॥ वैर विगत जो हरि भजै

वि॰ ८८

मोक्ष हेत सुचि संत॥ ताकहं सात्विक जानिये कृपा करहिं भगवंत॥ ८॥ आरत अर्थार्थी जिज्ञासु॥ ज्ञानीजो कर भक्ति प्रकासु॥ चार प्रकार भक्ति ए हरि के॥ भजहिं मोद अति उरमहं भरि के॥ सगुन भूप ए नंदसुवन के॥ दीनबंधु राधिका रवन के॥ निर्गुन भक्ति जोन गिरधर के॥ तेसव हेतुहि खंडन कर के॥ भजहिं एक निर्गुन गोपाला॥ सर्वाधार उदार दयाला॥ सिंधु सरित सुख निर्गुन भक्ती॥ एकहि रस जिमि अक्षर पंक्ती॥ सा रसभोम राज विधि पद को॥ लेहिन ते रवि ससि की हद को॥ सालोक्यादि मुक्ति नहि लेहीं॥ यद्यपि तिन्हे जनार्दन देहीं॥ दोहा॥ सामीपहि नहिं लेन है तजि साधुन को संग॥ निपट निकट नृपके वसे मान होत है भंग॥ १०॥ स्वामीकार स्वरूप नहिं लेहीं॥ दास भूत भगवंत सनेही॥ तजि संकल्प विकल्प कालपना॥ भजहिं कृष्ण गुनिके हित अपना॥ शांत उपेक्षा गत सम दरसी॥ सदा अनन्य सोक आकरसी॥ तिन कहं बातहो न सो पदमे॥ ब्रह्म विसद सुखहद जग जदमें॥ सो तजि ब्रह्म और नहिं जाने॥ सर्व एक रस सम पहिचाने॥ श्रवन नास ईक्षन जिमि अहहीं॥ श्रवन वासवी छन गति गहहीं॥ तजि निज गुन गुन करहिन दूजे॥ तिमितें ब्रह्म भजहिं जग पूजे॥ तिन कहं जग सुख प्राप्तन कैसे॥ करहि स्वाद व्यंजन कर जैसे॥ दोहा॥ निर्गुन के गुनकी करे परम फजी हति होइ॥ ऊंट बैल को जोति के मंजिल न पहुंचो कोइ॥ ११॥ ताते भक्ति योग पर सबते॥ सोनिष्काम अचूप सरबते॥ सुमिरन भजन श्रवन पद सेवा॥ अर्चन वंदन दास सुभेवा॥ सखापनो

अरु आत्म निबेदन ॥ नवधा भक्ति बखानी बेदन ॥ प्रेम भक्ति युत भावत भावन ॥ दुर्लभ भक्ति सोई जग पाव
न ॥ हरि प्रसन्न ताजे जन चाहैं ॥ सदा सवन पर दया निबाहैं ॥ कृष्ण चरन पंकज के भँवरा ॥ सदा जासु मन
हरि दिसि दवरा ॥ सुमिरहिं आठ जाम हरि कैसे ॥ पतिव्रता निजपति कहं जैसे ॥ सुमिरत जिनके पुलकहिं रोमा ॥
नित्यानंद पियो जनु सोमा ॥ दोहा ॥ कृष्ण बिष्णु गोबिंद हरि भाषहिं ऐसी बात ॥ आठ जाम घन श्याम पद ते-
भागवत सुभात ॥ नभ जल जोति वात शशि सब महं देखत कृष्ण ॥ सदा नंद सुक कंध धर सोई धिष्णा धिष्ण ॥
१२ ॥ छप्पै ॥ जदु धुरीन को ध्यान सदा चिंतत सोइ दरशन ॥ तही के मधि मदन बिरह सोई दुख करषन ॥ गावहिं
नाचहिं हसहिं थिरहिं रोवहिं पुनि धावहिं ॥ अति उदार उनमत्त सरिस जग मैं दरसावहिं ॥ जित इंद्री आनंद मय त्रासतजे
भवफंदके ॥ तिनकहँ निश्चै जानहू रूपनंदके नंदके ॥ दोहा ॥ तिनको करि दरसन मनुज होत कृतारथ रूप ॥ मृत्यु दूरि डर-
ती रहै नमै प्रेतके भूप ॥ १३ ॥ छप्पै ॥ बाम गदा पुनि दक्षिनि चक्र सुदरसन नामा ॥ आगे सारंग पांच जन्य पाछे अभि
रामा ॥ नंदक नामा खड्ग ढाल सत चंद्र महाना ॥ सब दिसि रक्षा करहिं जथा प्रानी निज प्राना ॥ ऊपर छाया करत तेहि
महा जलज परमा भरो ॥ गरुड़ उड़ावहिं अशुभ कहँ पक्षहि धुनि सुख बिस्तरो ॥ १ ॥ जहँ जहँ जावहिं संत कृष्ण तित
राजहिं राजा ॥ पृथ्वी पावन करहिं तीर्थ सम सब सुख साजा ॥ जहाँ साधु छन बैठे सोई थल तीरथ होई ॥ तहाँ मरैं जे
लोग लोक हरि गवनै सोई ॥ दूरहिं तें लषि संत कहँ आधि व्याधि नसि जाहिं सब ॥ प्रेत पिसाचौ डाकिनी देखि साँम्हा

रहि सकहिं कब ॥ २ ॥ दोहा ॥ नदी सिंधु नद नार सब दुख प्रद बनके ॥ जीव ॥ मारग संतहि देत हैं जानि स्वरूप अती
ब ॥ ज्ञान विशिष्ट अजात रिपु परम महान विरक्त ॥ तिनहिं नहीं पति बंध कछु सदा कृष्ण आशक्त ॥ तप करिकै श
त जन्म नर जनमत भारत माहिं ॥ तब तिनकी संगति मिलति भूपति ऐसे नाहिं ॥ २४ ॥ कवित्त ॥ जाके कुल हरि
भक्त होत हैं उदोत नाम पावन है सोई बंस सुंदर जगत में ॥ माता पिता दारा के सुदस पुरखा नतारे तिनको दरस पा
प दूरत चलत हैं ॥ परसे पिपील कीट मक्षरादि मुक्त होत पावै भक्ति चारु पद पंकज लगत में ॥ गिरिधर लाल
ताये सदाई निहाल रहैं अति खुसिहाल रहै प्रेम के पगत में ॥ दोहा ॥ संयम जोग तप तीर्थ व्रत मखतें मिलैन
श्याम ॥ बिनासु संगत साधुकी यह सत गिरा ललाम ॥ देस रहित जो द्विजन तें कीटस्लेच्छ सोबीर ॥ हरिजन अति
पावन करहिं दूरि हरहिं भव पीर ॥ २५ ॥ यह हरि भक्त कथा मैं कहा ॥ उग्रसेन तुम सुनिहो कहा ॥ कह नृप परिपूर
न नाम श्यामा ॥ जोगिन कह अगम्य अभिरामा ॥ दंतवक्र भो तिनमहं लीना ॥ मोहि अहै यह अचरज पीना ॥ सा-
धुहि दुर्लभ खल किमि पावा ॥ बेद व्यास सुनि बचन सुनावा ॥ हे नृप जीवहि गुन व्यवहारा ॥ नहीं नेक यासु
अधिकारा ॥ कोऊ भावते भजै मुकुंदा ॥ पावै पद निर्बान अदुंदा ॥ स्नेह काम भय क्रोध लगनतें ॥ सो हद करि
सो मिलै मोहनतें ॥ कोउ विधि लोहा पारस लगाई ॥ कंचन होइ जगत जगमगाई ॥ दोहा ॥ भजन किए भगवान
के जोगी भए सनाथ ॥ निशिचर दानव देह्य करि तरे महा भव पाथ ॥ २६ ॥ कुंडलिया ॥ कृष्णहि गोरी गन मिलीं

काम बिबस नरनाथ॥ कंसादिक खल बैर करि मिले श्यामके साथ॥ मिले श्यामके साथ चैद्य आदिक करि रोखा॥ नं-
द यशोदा शौरि आदि सुत सम परिपोषा॥ मित्र भाव यदु बस सुवस कीन्हो हरि धिष्णहि॥ कोऊ भावतें ध्यावै
सोनर पावै कृष्णहि॥ दोहा॥ काम क्रोध मद लोभ भय हरि महँ करै सुजान॥ ताहि मिलत भगवान हैं यह
युग चारि प्रमान॥ छप्पै॥ बच्छ पांच जन शंख चूड़ अरु द्विबिद बकी बक॥ मधु कैटभ केशी प्रलंब रावन अरु
धेनुक॥ कनक कसिपु कनकाक्ष आदि सिगरेबि बहिर्मुख॥ सदा कियो जग पाप दियो जीवन कहँ अति
दुख॥ सकल समर लरि लरि मरे तरे भरे आनंद हिय॥ दुख जरे बैर बिधि उरधरे करे कृष्ण भल मुक्ति दि-
य॥१॥ नारद सुर गुरु असित परासर बान सनंदन॥ बलि बसिष्ठ प्रहलाद बिभीषन शुक मुनि नंदन॥
सनक सनातन सनत कुमार मरीचि महा मति॥ द्वै पायन आदिक मुनीस हरि चरन गहारति॥ गिरिधरन
भजत सब दुख दह्यो लह्यो परम आनंद हिय॥ तिनहूँ कहँ पावन परम सदा कृष्ण भल मुक्ति दिय॥२॥
गाधि मरत अर्जुन रुक्मांगद जनक प्रियव्रत॥ अंबरीष सुग्रीव बालि सुत गरुड हनू मत॥ रीछ राज गृद्धेस
भसुंडी काक ज्ञान धर॥ गुह बायक उद्धव सुदाम आदिक हरिजन बर॥ कुंती तारा द्रोपदी कुबजा गौतम
नारि सह॥ अनुसूया भद्रा तरीं सकल सुभद्रा प्रेम मह॥३॥ दोहा॥ जिन जिन जाबिधि हरि भज्यो तिन तिन
ताबिधि पाव॥ उडो कबूतर दस दिशा निज छतरी पर आव॥१८॥ कवित्त॥ योग व्रत तीरथ नियम स्नान

शन यज्ञ सांख्य छंद दक्षिना तें ही ऐसी प्रीति है ॥ जैसी श्री गोपाल जीको भगति सप्रेम कीन्हे सदातें सु-
जान जान लीजै यही रीति है ॥ जेजे भय पार या अपार भवसागर तेतेतेतेई भक्त जन दुख लीन्हो जीत
है ॥ नाहीं तौ कपार कर धार रोए सब जीव लिखित कपार करधार यह भीत है ॥ १ ॥ नरक निकारनी है
भवदुख मारनी है अतिसुख धारनी है भवसिंधु तारनी है ॥ संकट संहारनी है करम बुहारनी है पापछय
कारनी है कालकी भखारनी है ॥ भयते उबारनी है प्रेमकी सीवारनी है गिरिधर प्यारनी है बेदन बिचा-
रनी है ॥ भगति गोपाल की सुधारनी है नर देहं जगत आधारनी है जगत उधारनी है ॥ २ ॥ भानकी बुआ-
मारी सुख दानकी महानकी है बेद औ पुरान की शिवादिक बखानकी ॥ खानकी सकल पुराय ज्ञानकी सुत्रान की
सी गिरिधर जान कीकें जानकी निसानकी ॥ सानकी सरस शत्रु प्रानपै कृपान कीसी सीढ़ीके समान भगवान के
मकानकी ॥ कानकी दुकान की मिठाई कुल कानकी है गुरुदेव कानकी भगति जदुमानकी ॥ ३ ॥ दोहा ॥ दिव्य
लता भगवति भगति संत हृदय शुभ संत ॥ सदा प्रफुल्लित रहत है प्रेम सुबास बसंत ॥ १९ ॥ मोह मेघ उजियार
हि नासत ॥ पुस्तक तडिता तहां प्रकासत ॥ कातिक भक्त भगत दीपावलि ॥ करत प्रकास नास सोकावलि ॥ भ-
वते बिजय देत जय कारन ॥ जिमि बिजयादिन बिजय अधारन ॥ परम भक्ति हरिकी बिसालिकी ॥ धरहि भक्त
उर रुचिर सालिका ॥ सांख्य योग दुहुं दिसि है जाके ॥ बेद भाव सब कीला ताके ॥ कथा छत्र सिर फरै सुजाना

भक्ति सिद्धी चढ़ि हरि पुर जाना॥ सो सुनि उग्रसेन यह कहहीं॥ कर्म ग्रसित गृहस्थ सब ग्रहहीं॥ केहि प्रकार ने सेवा करहीं॥ अरु आचरन कहा आचरहीं॥ दोहा॥ जामें तिन कह हरि मिलैं कहिये सहित हुलास॥ ज्ञान एस मुनि व्यास तब बोले सकल खुलास॥ २०॥ बिन सत संग नहीं यह पावै॥ प्रथमा चरन इहै श्रुति गावै॥ कृष्ण चंद्र सेवा विधि जोना॥ हे नृप तुमहिं कहत हम तोना॥ गुर वंसी नंद नंदन वल्लभ॥ अस गुर करै न तेहि सुख दुर्ल्लभ॥ तिनते विधिहि करै अभ्यासा॥ सेवा कर पर कार खुलासा॥ बिना भक्ति सब साधन वृथा॥ बिना लोन को व्यंजन जथा॥ निर्गुरु जन कहं लखिवे मानव॥ पुन्य हीन जिमि बनहि कृसानव॥ उत्तर मुख हरि मंदिर करिये॥ तहं उन्नत सिंहासन धरिये॥ सत चित आनंदहि धरि ध्याना॥ आगे धरै नीन भो पाना॥ दोहा॥ सुंदर बसन बिछाय कै खंड पाट लघु पाट॥ सिंहासन पीठक सहित साजै हे नरनाथ॥ २१ सब दिसि तोरन बीच फुहारे॥ जाली विविधि प्रकार सुधारे॥ अंगन पुनि मंडप सरसावै॥ तहं तुलसी अस्थान बनावै॥ भवन द्वार है हिरद बनावै॥ है कृत्रिम के सुर बैठावै॥ गरुड़ सिखर पर चक्रसु दीखै॥ द्वार नाम माधव कै लीखै॥ शंख पद्म धनु गदा बनावै॥ भात दोउ दिसि भावहि भावै॥ द्वार खड़ मंदिर कै पाछे लिखै मुशल हल कौं विधि आछे॥ गो गोपी गोपन सुख छाये॥ सिंहासन के पीठि बनावै॥ कल्प वृक्ष देहली लिखावै॥ द्वार कपाट बिजय जय भावै॥ दोहा॥ वृंदावन गंगा यमुन गोवर्द्धन वर कुंज॥ जहां तहां

वि. १०८

बिरचै सुभग चीर हरन सुख पुंज ॥ २२ ॥ राम बनावै केलि अपारा ॥ पंच बटी पुनि चित्र पहारा ॥ रावनरास स-
मर बनवावै ॥ पैनहिं सीता हरन लिखावै ॥ दस अवतार चित्र सर सावै ॥ नर नारायन आश्रम भावै ॥ साध पुरी अरुती-
न सु ग्रामा ॥ नव आरन्य नवो खर धामा ॥ इमि करिकै मंदिर निर्माना ॥ कृष्ण बरन थापै भगवाना ॥ बाम चर-
न महि धरे अनूठा ॥ दक्षिन पदको एक अगूठा ॥ बंसीवेत्र धरे बर ठाकुर ॥ गुर करतें पधराय सरुचिउर ॥ सेवाकरै
तथा गुरु सिच्छा ॥ कहत जाइ हरि यह नव इच्छा ॥ दोहा ॥ नहिं मेरी सामर्थ कछु सदा दास सम दीन ॥ ताकेऊपर
द्रवतहैं दीनबंधु मति पीन ॥ सोरठा ॥ दस सत बाजी मेघ राज सूय मख सत तथा ॥ लेत नसाइ निषेध नर सुनि
हरि अर्चन कथा ॥ २३ ॥ आठ पहर हरि ध्यावै जोई ॥ दुर्लभ बिश्व भागवत सोई ॥ जेते यज्ञ यगत महं अहहीं
हरि सेवा कल एकन लहहीं ॥ दरसन करहि कृष्ण कर जौना ॥ कोटि जन्म अघ नासै तौना ॥ जे सेवहिं दर-
सहि पद पद परसहिं करत सुनत उर हरषहिं ॥ अंत काल तें चढि रथ भारी ॥ चले जाहिं गोलोक सुखारी
ब्रह्म महूरत उठि नर सोई ॥ गुर गोविंद नाम कहं लेई ॥ बंदि धरनि कहं कर पग धोई ॥ बैठे आसन सुस्थिर होई ॥
कर उछंग धरि समै सबेरा ॥ ध्यानकरै गुर गोबिंद केरा ॥ दोहा ॥ शांत ज्ञान मुद्रा धरे स्वस्तिकास नसि पीन ॥ श्याम
सरूप किशोर तन धारे बेनु प्रवीन ॥ २४ ॥ प्रात समै जब सौचहि करै ॥ अश्व क्रांत मंत्र उच्चरै ॥ एक लिंग महंगुद महं
तीनी ॥ दसकर बाम मृत्तिका लीनी ॥ तीन तीन पद रिषि रिषि करमै ॥ लाय मनुज धोवै गुनि धरमै ॥ याते दुगुन लगावै

सोई॥ बानप्रस्थ ब्रह्म चारी जोई॥ तिनते दुगुन जती जो जोगी॥ आधी मृदा लगावै रोगी॥ अर्ध शूद्र त्रिय ताकी लावै॥ शौच बिगत नक्रिया फलपावै॥ कंटक बट कपाट तरु छीरा॥ ब्रह्म वृक्ष सुगंध जुत बीरा॥ गिर्गुंडी कोदारु बिहाई॥ करै दंत धावन हरषाई॥ दोहा॥ आयु शबल यश क्रांति सुत पशु बशु मेधा सेबि॥ देहु ब्रह्म प्रज्ञा हमै हेबनस्पती देबि॥ २५॥ कहि मंत्रहि दातुन करि सोई॥ रबिहि प्रनाम करै कर धोई॥ प्रहलादादिक भक्तन वंदी॥ तुलसि मृदालै न्हाइ अनंदी॥ छप्पै॥ अवध मधू पुरि माया काशी कांचि अवंती॥ द्वारावति सह सात पुरी निर्बान करंती॥ शालिग्राम अरु नंदि ग्राम पुनि शंभल ग्रामा॥ न्हात समै महं लेइ सबै ए सुंदर नामा॥ दंडक सैंधव पुष्कर कुरु नैमिष हिमवंत बर॥ जंबु मार्ग उत्पल बिपिन अर्बुद नवसे पुन्य कर॥ दोहा॥ गंगा यमुना अष्ट कहि पढि बर अंबर धारि॥ बसु मुद्रा द्वादस तिलक धारै अंग सुधारि॥ तब घंटा कोनाद करि जय कहि ताल बजाइ॥ मुदित जगाबहि के सबहि उठिय कृष्ण यह गाइ॥ ३६॥ भोग धरै हरि भजन उचारै॥ तब मंगल आरती उतारै॥ हरि अन्हवाइ बसन पहिरावै॥ भूषन चारु सिंगार धरावै॥ करि आरति पकवान अनेका॥ राज भोग राखै सबि बेका॥ राज भोगकी आरति करिकै॥ सैन करावै आनंद भरिकै॥ लेइ प्रसाद प्रेम अधिकाई॥ हरि प्रसादतें परपद जाई॥ शंखनाद करि बहुरि उठावै॥ एक जाम जब दिन रहि जावै॥ जथा भांति तब भोगहि धरई॥ संध्या रती तबै नर करई॥ बहुरि भोग धरि रजनी मुखमैं॥ सैनारती करै

भरि सुखमैं ॥ दोहा ॥ सैन करावहिं केशवहि बहुरि नैन मति मान ॥ कहा राज सेवा तुम्हे राजाहूही विधान ॥ ज-
नमाष्टमि राधाष्टमी राम नवमि अनकूट ॥ नरहर चौदसि द्वादसी वावन दिन सुखलूट ॥ २७ ॥ अधिक अ-
धिक सेवा विस्तारै ॥ अरु जो करै सो बहु कुल तारै ॥ हे नृप अब विधान जो दूजा ॥ कहत कृष्ण की सुंदर पूजा
न्हाइ क्रिया करि नित्य अपानी ॥ पाँच बरन को थंडिल आनी ॥ वारिज बत्तिस दलको रचई ॥ वेद मंत्र तें शो-
भा सचई ॥ तामधि हरि सिंहासन धरई ॥ तामहं हरि अस्थापन करई ॥ भू राधा विरजा त्रिय तीनी ॥ तहां वि-
राजे आनंद भीनी ॥ अष्ट कानि का पंकज माहीं ॥ अष्ट सखी थापै सुतहीं ॥ आठ सखा मन मोहन केरे ॥
बैठावै केशव के नेरे ॥ दोहा ॥ षोडश बत्तिस दल कमल तहं जो रचै सुरंग ॥ षोडश बत्तिस सखिन कहं बैठावै
सउमंग ॥ २८ ॥ छप्पै ॥ शंख चक्र अरविंद गदा नंदक सर सारंग ॥ कौस्तुभ वंशी क्षेत्र मुशल हल वन मालसंग
नीलांबर श्रीवत्स पीन अंबर खगनायक ॥ गरुड अंक तालाक सुमति हारुक चित चायक ॥ नंद सुनंद प्र-
चंड बल चंड कुमुद कुमुदाक्ष सह ॥ विष्वक सेन महा बलहि सविधि थापि पूजै सुतह ॥ दोहा ॥ दिग दिग-
पाल गनेश विधि दुर्गा नव ग्रह व्यास ॥ षोडस मातहि तापिकै पूजै सहित हुलास ॥ आवाहन आसन अरघ
पाद्य स्नान मधुपर्क ॥ धूप दीप उपवीत पट भूषन नव दुति अर्क ॥ गंध भोग अक्षत सुमन वारि आचमन
पान ॥ पुनि दक्षिना प्रदक्षिना विनै आरती जानि ॥ २९ ॥ बहुरि दंडवत अस्तुति करई ॥ सुनहु नैन जिमियह

अनुसरई ॥ आवाहन महं पुष्प सुजाना ॥ आसन महं कुशदोय बषाना ॥ पाद्य माहिं दुर्बा अरु श्यामा ॥ बिष्णु क्रांता धरै ललामा ॥ सुंदर पुष्प अर्घ महं नावै ॥ पुनि नहान की बारि बनावै ॥ चंदन कुंकुम अगर कपूरा ॥ नाय सुगंध करै भरपूरा ॥ अमला कमल मधुपर्क माहीं ॥ धूप मध्य बसु गंध तहांहीं ॥ धूप कपूर पीत उपवीता ॥ अंबर पीतांबर भरि प्रीता ॥ भूषन कनक गंध महं चंदन ॥ तुलसी सुमन तिलक रोरी गन ॥ दोहा ॥ अक्षत महं रंगे अछत षटरस साजै भोग ॥ जल महं गंगा यमुन जल धरे हरै भव सोग ॥ ३० ॥ जाती फल कंकोल मिलाई ॥ देइ आचमन आनंद छाई ॥ बीडा महं लायची लवंगा ॥ कनक दक्षिना देवै चंगा ॥ फिरै प्रदक्षिन अस्तुति गावै ॥ गऊ आरती महं छबि छावै ॥ प्रेम लक्षना भक्ति बढावै ॥ अष्ट अंग महि बीच नवावै ॥ द्वादस अक्षर मंत्र बखानी ॥ सिखा बांधि सुचि बैठे ज्ञानी ॥ धरि उपचार पास सब सुंदर ॥ तब पूजै हरि जगत पुरंदर ॥ अब उपचार मंत्र कहं कहियत ॥ जाके कहे सकल सुख लहियत ॥ बेद मंत्र तेहि जानहु राजा ॥ प्रथमहि आवाहन सुखसाजा दोहा ॥ गो लोकेश रमेश प्रभु दामोदर गोबिंद ॥ माधव यदुपति रमा पति आसन लेहु मकुंद ॥ ३१ ॥ इमि कहि आसन देइ सुजाना ॥ ताकर मंत्र सुनहु मति माना ॥ पद्म राग मय उच्च सिंहासन ॥ खचित लसुनिया कोमल आसन ॥ हे बयकुंठ बिकुंठा सुख कर ॥ लीजै करुना करि आसन बर ॥ तब वर पाद्य देइ नर ज्ञानी ॥ तहं यह सुंदर मंत्र बखानी ॥ निर्मल जल कंचन बरतन मैं ॥ हे जगदीश लेहु यह छनमैं ॥ बिंदु सरोवर तें मंग वायो ॥

लीजै पाद्य दास यह ल्यायो ॥ तब नहान को मंत्र बखानै ॥ हे यदुनाथ लेहु अस्नानै ॥ चंदन कुम कुम रव-
सते बासित ॥ है जल आप योग सुख भासित ॥ दोहा ॥ तब मधुपर्कहि देइ नर कहि यह मंत्र अनूप ॥ मध्य
दिवस रवि ताप हर अति सुंदर सित रूप ॥ विष्णु लेहु मधुपर्क यह पीतांबर जगदीश ॥ इमि कहि धूपै देहि
पुनि मंत्र सनुहु नर ईश ॥ ३२ ॥ चंदन लौंग मिल्यौ बर बासा ॥ सुखद अमर नर कहं सुख रासा ॥ संद्य बा-
स पुर भरै अनूपा ॥ धूप लेहु द्वारावति भूपा ॥ दीप देइ तब सहित बिधाना ॥ तासु मंत्र सुनिये नर त्राना ॥
तम हर ज्ञान रूप सुख दाई ॥ गो घृत सरस कपूर मिलाई ॥ जगत दीप मम दीपहि लीजै ॥ चारु जोति
द्युति दस दिसि भीजै ॥ इमि कहि मख उपबीतहि देवै ॥ तहं यह मंत्र कहत सुख लेवै ॥ कनक बरन मंत्रन
विधि बन्यो ॥ शुभ सब काज मध्य अति गुन्यो ॥ परम रूप कारक तब प्रीता ॥ लीजै यज्ञ यज्ञ उपबीता ॥
दोहा ॥ पीत बरन द्युति भाल मलै निज निर्मित सुख रूप ॥ पद्म बरन पीतांबरहि लीजै हे यदु भूप ॥ ३३ ॥
भूषन देइ कहै मन भायो ॥ यह मनि हेम मिलाय बनायो ॥ करि कै कृपा कृपानिधि मोपै ॥ बार बार यह बि-
नती तोपै ॥ जग भूषन यह भूषन लीजै ॥ पढि यह मंत्र गंध तब दीजै ॥ संध्या ससि सम शोभित भायो ॥
कुम कुम केसर अगर मिलायो ॥ जासु गंध यह जगत कहीजै ॥ करुना सिंधु गंध कहं लीजै ॥ इमि कहि
पुष्प देइ नरपाला ॥ मंत्र पढै यह लेहु गोपाला ॥ पारि जात तुलसी हरि चंदन ॥ बर मंदार जगत आनं-

दंन ॥ पुष्पक भूषन पुष्पहि लीजे॥ दास जानि निज कृपा कीजै ॥ दोहा ॥ अक्षत देवे मंत्र यह पढै अहो नरपाल
मुक्ता कीन विधि पूर्व यह ब्रह्मा वर्तरसाल ॥ सीच्यो याकहं विष्णु हरि रख्यो रुद्र अनूप ॥ अक्षत अक्षत लीजिए
कहिदै भोग अनूप ॥३४॥ सुंदर रसने सरस बनायो ॥ यसुमति कियो अतिहि सुख पायो ॥ बेद बेद्य नैवेद्यहि
लीजै ॥ पढि इमि मंत्र बहुरि जल दीजै ॥ गंगोत्तरि कर सीतल चारु ॥ कनक पात्र महं धरयो सुधारु ॥ नि-
र्मल बासित श्रीपति ज्ञानी ॥ सारंपानी लीजै पानी ॥ तब आचमन देइ मन भायो ॥ कहै जाय फल पुष्प
मिलायो ॥ अरु कंकोल सरिस सर साना ॥ आचमन लीजै कृपा निधाना ॥ राधा श्री बिरजा भू नायक ॥ क-
हि इमि पान देइ नरलायक ॥ जाबित्री जायफल सुपारी ॥ लौंग लायची खदिर सुधारी ॥ दोहा ॥ वास सहित
श्रम मूल हर जगत मूल सुख मूल ॥ प्यारे पात दुकूल धरलीजै यह तांबूल ॥३५॥ तब दक्षिना देइ मतिमा-
ना ॥ कहै सुनीजै कृपा निधाना ॥ नाकपाल वसुपालन बंदित ॥ चरन चार अरविंद अनंदित ॥ दक्षिना दि-
पति दक्षिनानायक ॥ लीजै दक्ष दक्षिना लायक ॥ तब प्रदक्षिना करै सु सोई ॥ सकल तीर्थ व्रतको फल जोई
लहै दान मख को सब सोई ॥ करै प्रदक्षिन जो सुचिहोई ॥ तब आरती करै हरि दासा ॥ तहां करै यह मंत्र प्रका-
सा ॥ दीप चारु प्रज्वलित सु मंगल ॥ गोघृत रच्यो बनी बाती भल ॥ आरत हरन आरती लीजै ॥ इहि कहि ब-
हुरि प्रार्थना कीजै ॥ दोहा ॥ हरि मम सम नहि पातकी तुम सम नहि पापारि ॥ यह विचारि करिकै करिय निज-

दूक्षित गिरिधारि ॥ ६६ ॥ नमसकार तब करै सुजाना ॥ तहां अहै यह मंत्र महाना ॥ नमो अनंत सहस्र मूर्त्तये सहस पाद दृग सीस बाहवे ॥ सहस नाम पुरुषाय शाश्वते ॥ सहस कोटि युग धरन श्रीपते ॥ नमो नमो कहि सुखहि बढावै ॥ हाथ जोरि तब अस्तुति गावै ॥ ज्ञान पात्र सद सत परस्वामी ॥ महत शांत सद सत फलगामी ॥ बिभु प्रभु ब्रह्म देवते दुर्गम ॥ सदा सुदामा धीस हरन तम ॥ जगदा धार कृष्ण करुना कर ॥ बंदे बिश्वनाथ राधाबर ॥ इहि बिधान भगवानहि पूजै ॥ मंत्र चारु निज मुखतें कूजै ॥ दोहा ॥ सर्बांगहि पूजै मनुज हरि कहं बर बिधि चारु ॥ तासु मंत्र सुनिये नृपति जाते द्रवहि उदार ॥ ३८ ॥ छप्पै ॥ प्रणव नमो नारायणाय पुरुषाय बखानै ॥ महात्मने सु बिसिद्ध सत्व धिष्णा यहि आनै ॥ बहुरि महा हंसा पधी मही मंतर एहू ॥ पठि के प्राणायत करै जानहु बुधि गेहू ॥ श्रीधर रिषिकेशन खानि कै पद्म नाभ दामो दरहि ॥ संकर्षन बासुदेव पुनि प्रद्युमन अनिरुद्ध कहि ॥ १ ॥ बहुरि अधोक्षज पुरुषोत्तम श्री कृष्णाय नमः ॥ पाद गुल्फ जानूर कटि उदर पीठि भुजा महं ॥ कंध करन नासिक अधर लोचन सिर माहीं ॥ पृथक मंत्र जुत पूजयाम कहि पूजै चाही ॥ सखि सखा संख असि चक्र गद पद्म बान धनु हल मुसल ॥ बन माल नीलांबर पीत पट श्रीबत्स वेत्र बंशी कुशल ॥ २ ॥ गरुड अंक तालांक सुमति दारुक प्रचंड बल ॥ चंड कुमुद कुमुदाक्ष सुनंद खगपति भल ॥ बिष्वक सेन व्यास शिव बिधि दुर्गा दिगपालन ॥ बरुन बिनायक नवग्रह षोडश मात्र रसालन ॥ प्रणव पूर्ब

पूजन करैं थाली पाक बिधान करि॥ पूजि अगिनि सब साज धरि आहुति देवै प्रेम भल॥ ३॥ बासुदेव ब-
सुदेव संकर्षन श्री पद्युम्न अनिरुद्ध॥ सात्ववतांपतये नमः मंत्र कहै यह शुद्ध॥ याते करि सत आहुती देफेरी
धरि भोग॥ करि प्रनाम यह मंत्र कहं कहै दहै भव रोग॥ सवैया॥ ध्यानके जोग सदा यह मूरति देखि रहै न-
हिं कामहि धीरज॥ सेस महेस दिनेस गनेस से धारत हैं नितहीं पद की रज॥ आरत नासन बिश्व नदीपति
पोत समान सु नाम अही रज॥ पूरष उत्तम बंदत हौं तुम्हरे दोउ पाद मनोनव नीरज॥ दोहा॥ इहि बिधि बं-
दि मुकुंद कहं करै आरती भक्त॥ लीन्हे बैष्णव मंडली परम प्रेम आशक्त॥ ४०॥ घंटा बीना झांझ मृदंगा॥ की
र्तन करै बजावैं संगा॥ नाचहिं जय जय कहि भरि प्रेमा॥ हरि यस कहहिं गहहिं नहिं नेमा॥ हरिहि बंदि
पुनि सेज्जा घरमें॥ सैन करावै गुनि निज घरमें॥ ऐसे जौन करत है सेवा॥ रगरहिं नाक नाक के देवा॥ अंत
जात सो सुरभी लोका॥ जोगिन कहं दुर्लभ जो ओका॥ हरि सेवा बिधान हम भाषा॥ अब तुम काह सुनन
अभिलाषा॥ बोले उग्रसेन नृप ज्ञानी॥ सिद्ध भयों मैं सुनि तव बानी॥ पद्धति कृष्ण चंद्र की प्यारी॥ सुनिमैं भयों भक्ति अधिका
री॥ दो॥ अहो लोक अति मूढ सब बंधे मोहकी पास॥ ज्ञान बिरागहि नहिं छुवै होहिंन गिरिधर दास॥ ४१॥ जगत मोहका
रन किमि भयो॥ कहिय जो मम मन संसै ठयो॥ कृष्णद्वै पायन तब भाषा॥ सुनहुं जौन तुम मन अभिलाषा॥ जिमि शिशु
सीसा महं मुख लखई॥ दूजो गुन भरि क्रोध बिलखई॥ तिमि हरि बिंब पर्यो माया में॥ जाब कहै हम बसि कायामें॥ तन

के गुनते माया माहीं॥ बँधा जीव कछु जानौं नाहीं॥ शिशु कर काँच पात्र सम जीवन॥ रज्जु माहिं अहि भान वृथा मन रज तम सत मय जगत रचाया॥ मिथ्या सत्य लषहु यह माया॥ मन बिलास यह बिभ्रम रासी॥ लोल चक्र सम जगत बिनासी॥ दोहा॥ मैं करिहौं अरु करत हौं मेरो तेरो एहु॥ सुखी दुखी यह सब वृथा कहहिं कुमति के गेहु॥ ४२॥ उग्र सेन बोले हरषाई॥ कृष्ण लक्षनहि देहु बताई॥ केते कै बिधि कहहिं मुनीसा॥ बोले व्यास सुनहु अवनीसा॥ जनम मरन सुख दुख भय मोहा॥ अहंकार बियाधि मद द्रोहा॥ घट बढ़ देस देस के माहीं॥ एसब अहैं ब्रह्म महं नाहीं॥ सो आत्मा निरीह सब गामी॥ सिद्ध अमल गुन आश्रय नामी॥ आप अकल पर आतम मंगल॥ बिप्र कथित बहु रूप बिश्व भल॥ सो जागत सोवत जग जबहीं॥ कोउ न जान सो जानै सबहीं॥ सबहि लषै सब तेहि कोउ नाहीं॥ भजिय ताहि सुख धरि मन माहीं॥ दोहा॥ जिमि नभ पवनहु ता समहि सबस हँमल बिनु भूप॥ तिमि पर गुनतें तेहि लखौ सद्ध फटिक अनुरूप॥ ४३॥ लक्षन पद अरु व्यंगस्फोटा॥ बाक्य अर्थ तरकौ पुनि छोटा॥ जो अजान बेदहु ते अहई॥ लौकिक मनुज ताहि का कहई॥ कर्म कहैं करता पुनि कहहीं॥ काल कहहि योगहि गुनि कहहीं॥ केहि बिचार कोउ उर अहलादत॥ ताकहं ब्रह्म बेद प्रति पादत॥ छुऐ न जाहि काल गुनि माया॥ इंद्री चित बुधि मनन समाया॥ महत ताहि श्रुति कहत बखानी॥ बिस्फुलिंग सम सृष्टि समानी॥ हिरन गर्भ पर तत्व बखानै॥ बासुदेव कोउ कहि सन मानै॥ सोइ निरूप को रूप बिचारी॥ बिचरहिं बिगत संग ब्रत धारी॥ दोहा॥ एक इंदु जल पात्र बहु बहु अँगार सिखि

एक॥ परमात्मा तिमि एक सो तन प्रति भांति अनेक॥ ४४॥ तमतमाम रवि कहँ लखि होई॥ गृहकी बस्तु जाय सब जो-
ई॥ ज्ञान उदय अज्ञान नसाई॥ परमात्मा तब परै दिखाई॥ जिमि इंद्री इक करमहिं करहीं॥ तिमि मुनि निज निज
मत अनु सरहीं॥ एक अनंत परम जग दीसा॥ साश्वत रूप सुनहु नरईसा॥ हरि साक्षात परम पुरुषोत्तम॥ कृष्णचं-
द्र प्रभु परि पूरन तम॥ भक्त हेत कैवल्य प्रदाता॥ परमा नंद रूप बिज्ञाता॥ ब्रह्मा तब नहिं पारहि पावैं॥ बेद भेदना-
ना विधि गावैं॥ सो तुमरे घर राजत राजा॥ तिनकहं मैं बंदत सुख साजा॥ दोहा॥ इमि कहि तिनतें लै बिदा ब्यास
देव भगवान॥ देखत यादव जूथ के ह्वै गये अंतर धान॥ ४५॥ हे नृप यह सुख तुमहिं सुनावा॥ वर बिज्ञान खंड
मन भावा॥ कृष्ण भक्त बर्धन अधिकाई॥ स्रोतन कहँ सब विधि सुखदाई॥ गर्ग संहिता गर्ग बनाई॥ सब दुख ह-
रन चार फल दाई॥ गऊलोक बृंदावन गिरिवर॥ माधुरि मथुरा द्वारावति बर॥ बिश्व जीत हलधर बिज्ञाना॥ पृथ-
क रुचिर नव खंड बखाना॥ जिमि नव खंड द्वीप थह केरे॥ तिमि हरि खंड सष्ट नव हेरे॥ चतुर बरग प्रद गरग बखा-
नी॥ सरग सिढ़ी सम सब सुख खानी॥ जथा रतन नव कनक जराए॥ पहिरत हृदय परम छबि पाए॥ दोहा॥ त-
था संहिता चार फल देत करत सब हेत॥ स्वर्ग बिसर्ग प्रबर्ग प्रद जानहु नीति निकेत॥ ४६॥ जो यह गर्ग संहिता
गावै॥ परम पुनीत होय फल पावै॥ इतहि अतिहि सुख तेहि सर साई॥ अंत समय गो लोकहि जाई॥ बंध्यासु-
नै लालसा करिकै॥ केवल कृष्ण भक्ति मन धरिकै॥ थोरेहि काल होहिं गृह छोरा॥ बिचरहिं करि कलोल दस

ओए ॥ रोगी तजै रोग कर सोगा ॥ निर्धन लहै महाधन भोगा ॥ बंध्यो बंधते भयते भीता ॥ छूटै लहै सकल मन चीता
लहै न जात गात सुख छावै ॥ जो इहि कातिक के मधि गावै ॥ सो रथांग बरती नृप होई ॥ पूजित लघु राजन ते सोई
दोहा ॥ सिंधु देस के तुरग वह विधि वितुंड महान ॥ तासु द्वार झूमत रहैं सोभा सरस सुजान ॥ ४७ ॥ कनक शृंग खुर
जत सबच्छा ॥ ताम्र पीष्टि तम भूषन अच्छा ॥ द्वै गो देइ खंड प्रति जोई ॥ सकल मनोरथ पावै सोई ॥ निस
कारन जो सुनै बिदेहू ॥ कथा जथा विधि सहित सनेहू ॥ ताके उर अरविंद निवासी ॥ होहिं कृष्ण प्रभु करुना
रासी ॥ इमि कहि नारद आनँद मए ॥ सब के हृदय व्योम चलि गए ॥ सुनि बहुलाश्व कथा यह भारी ॥ भज्यो
कृष्ण कहं दृढ व्रत धारी ॥ हे मुनि गन यह तुमकहं कहा ॥ सुनै पढ़ै तिन सब कछु लहा ॥ सुनि मुनि शौनक ऋ
षिन समेता ॥ बोलत भए बचन अघ जेता ॥ दोहा ॥ धन्य कृतारथ आज हम तुमरे दरसन पाइ ॥ भक्ति ल
ह्यौ श्री कृष्ण की भ्रम सब गयो नसाइ ॥ ४८ ॥ मुनि उर बिसद सरोवर हंसा ॥ सब सुख करन भरन यदुबं
सा ॥ बिश्व अंश सब बिष्णु प्रसंसा ॥ सुंदर सूर बंस अवतंसा ॥ करते धरनि गिरायो कंसा ॥ तेहि बंदत ह
म करि अघध्वंसा ॥ इमि कहि तिन तें गर्ग मुनीसा ॥ बिदा होत भे महत मुनीसा ॥ चतु वर्ग प्रद स्वर्ग
सिरोमनि ॥ भाष्य चलत भे चतुर महा मुनि ॥ गर्गा चलगे गर्गा चारज ॥ तहं हरि चरन ध्यान किय
आरज ॥ शरद सरोज सरिस रुचि वंता ॥ जहं बहु बसहिं सिली मुख संता ॥ कुलिस कंज विन्हित बर

राजैं॥ झनक झनक नव नूपुर बाजैं॥ दोहा॥ ताप निवारन जगत के अरुन दृष्टि बर बर्न॥ उर अंतर ध्या-
वन भये राधा वर के चर्न॥ ४८॥ कवित्त॥ करनी सकल सुख हरनी सकल दुख भरनी सकल रूप सुमनिर-
साल की॥ तरनी समुद्र भव बरनी मुनीन सब अरनी कृसानु प्रेम परम बिसाल की॥ झरनी तुरस बिंदु
धरनी मकुंद जूकी धरनी सुफल रूप जैसा कर्म काल की॥ नरनी सुधरनी उधरनी बरबानी चारु पान-
तम तरनी भगति नंदलाल की॥ दोहा॥ इमि यह प्रोहित संहिता प्रोहित बरनव रान॥ दास साधु उर
धारिहैं तजिहैं नाहिं सजान॥ ५०॥ छंद॥ तजिहैं नहीं सठ जन्म चरित गोपाल के अनमोल है॥ नहिं
काव्य को पर कार करहिं बिचार बुध सुख को लहैं॥ पिंगल सुनत नर होत पिंगल चहिय उमिर बिरंचि
की॥ भ्रम त्यागि गिरिधर दास गिरि धर भजहु यह मन संचि की॥ दोहा॥ बेद व्योम गृह चंद्रमा संवत-
राशि जुत बार॥ कृष्ण पक्ष तिथि काम की भादों मास बिचार॥ भई समापत संहिता बल्लभ चरन प्रसा-
द॥ बैषाद जनसुनि करहिं गे उर अतिहीं अहलाद॥ बल्लभ बल्लभ ब्रज मुकुट बल्लभ तिनके होत॥ जेय-
ह सुंदर संहिता धारन करहिं बहोत॥ गिरिधर स्याम दयाल गुरु कीन्ही कृपा कृपान॥ पूरन भयो मनो-
र्थ मम उदै हृदय खुसिहाल॥ जाके सरिता रेत में पर अमित ब्रह्मंड॥ सोई कृष्ण कीजे कृपा श्री विज्ञान सु-
खंड॥ सोरठा॥ पुस्तक कीन्ह समाप्त कृष्ण कृष्ण गोविंद भजि॥ नवहु खंड में व्याप्त परम प्रेम सबनेम

तजि ॥५१॥ इति श्री भाषा प्रकाशे कृष्ण प्रिये गिरि धर दास विर चिते प्रेम पथ रचिते गर्ग संहितायां नवमं विज्ञान खंडं समाप्तम् शुभमस्तु श्रीरस्तु श्री गोपी जन वल्लभाय नमः श्री राधा कृष्णाय नमो नमः ॥ ॥

इति गर्गसंहिता समाप्ता

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
तथा मय तसवीर सटीक	बिनय पत्रिका बा॰ मो॰	कबिकुलकल्पतरु	नानार्थनौ संग्रहावली	अमर विनोद	दानलीला व नागलीला
तथा जिल्द बंधी	बिनय पत्रिका बा॰ शि॰	रसराज	ब्रह्म सार	वैद्यजीवन	दोहावली रत्नावली
तथा मोटे अक्षरोंकी म-		सत्सई सटीक	शिव सिंह सरोज	औषधि संग्रह कल्पवल्ली	गोकर्ण महात्म
ये तसवीर	पुराण	सत्सई	भक्त माल	अमृत सागर	श्रीगोपालसहस्रनाम
तथा मय छेपक	देवी भागवत	सभा बिलास	रामाभिषेक नाटक	वैद्य मनोत्सव	हनुमान बाहुक
रामायण तुलसीकृत		तुलसी शब्दार्थ	इन्द्र सभा		सत्य नारायण सटीक
के सातों काण्ड	वेदांत	भजनावली	बिक्रम बिलास	ज्योतिष	जनक पच्चीसी
१ बाल काण्ड	योगवाशिष्ठ	प्रेम रत्न	बैताल पच्चीसी	जातक चंद्रिका	आनन्दामृतवर्षिणी
२ अयोध्या काण्ड	प्रबोध चंद्रोदय नाटक	युगल बिलास	सिंहासन बत्तीसी	जातकालंकार	बनयात्रा
३ आरण्य काण्ड		चित्र चंद्रिका	पद्मावती खण्ड	दैवज्ञ भरण	कायस्थ दर्पण निर्णय
४ किष्किन्धा काण्ड	काव्य	बारह मासा बलदे॰ प्रसादछ॰	शुक बहत्तरी	ज्ञान स्वरोदय	बिहार विंद्रावन
५ सुन्दर काण्ड	सूर सागर	मनोहर लहरी	बकावली सुमन	रमल सार	समर बिहार विंद्रावन
६ लंका काण्ड	कृष्ण सागर	गंगा लहरी	चहार दरवेश	इन्द्र जाल	कल्प भाष्य
७ उत्तर काण्ड	विश्राम सागर	जमुना लहरी	किस्सा हातम ताई		
रामायण शब्दार्थकोष	प्रेम सागर	जगद् बिनोद	अपूर्व कथा	मुनफ़रक़ात	दरसी
रामायणका इतिहास	ब्रज बिलास		किस्सा गुलरू सनोबर	शनिश्चर की कथा	अक्षरावली
रामायण मानसदीपिका	ब्रज बिलास छोटा	राग	सहस्र रजनी चरित्र	ज्ञान माला	स्वयम्बोध
रामायण कबितावली	कृष्ण प्रिया	राग प्रकाश	राबिसन का इतिहास	गोपीचंद भरतरी	ज्ञान चालीसी
रामायण गीतावली	बिजय मुक्तावली	लावनी		कथा श्री गंगाजी	दोहावली
रामायण गीतावली	अनेकार्थ	शृंगार बत्तीसी	वैद्यक	अवधयात्रा	बाला बोध
सटीक	छन्दोर्णव पिंगल	क़िस्सा वग़ैरह	निघण्ट भाषा	भरतरी गीत	विद्यार्थीकी प्रथम पु-

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
किताब जंत्री	अक्षरारम्भ	इतिहासतिमिरनाशक	क्षेत्रचन्द्रिका २ भाग	तथा कबूलियत	मजमूआ ऐक्ट अवध
गणित कामधेनु	वर्णप्रकाशिका १ भाग	१ भाग	सकीलदायरा	रजिस्टर दाखिलखा-	लगान १९ सन् १८६८ ई०
लीलावती	तथा २ भाग	२ भाग	रेखागणित १ भाग	रिज तुलबा मदर्सा	प्रख्ता दारी २६ स० १८६६ ई०
पटवारियोंकी पुस्तक ४	सूरजपुरकी कहानी	३ भाग	तथा २ भाग	रजिस्टर हाज़री पाठशा-	वगैरा
चार भाग	धर्मसिंहका वृत्तांत	अवधदेशीय भूगोल	बीजगणित १ भाग		ऐक्ट इस्टाम्प दस्तावे-
	शिक्षावली	इंग्लिस्तानका इतिहास	तथा २ भाग	**क़ानून**	ज़ात १८ स० १८६९ ई०
सरिश्ते तालीमकी	शिशु बोध	भारतवर्षीय इतिहास	रामायण तुलसीकृत	पटवारियोंके क़ायदे	ऐक्ट तालुकदारान मक़ाम
पुस्तकें	पत्रहितैषिणी	हितोपत्रिका	बालकांड	उर्दू कैथी महाजनी	ज अवध २९ स० १८७० ई०
	पत्रदीपिका	बालाभूषण	अयोध्याकांड	टिकट के लइसन्सका	ऐक्ट चौपायोंका मदास्व-
संस्कृत	विद्याचक्र	पद्यसंग्रह	आरण्यकांड	ऐक्ट २ सन् १८७८ ई०	लतबेजा १ स० १८७७ ई०
ऋजुपाठ	विद्यांकुर	भाषाकाव्यसंग्रह	किष्किन्धाकांड		ऐक्ट मज़मूआ जाब्ता फ़ौ-
१ भाग	पदार्थविद्यासार	कवित्तरत्नाकर १ भाग	सुन्दरकांड	**नागरी**	जदारी १० स० १८७२ ई०
२ भाग	पदार्थज्ञानविटप	तथा २ भाग	लंकाकांड	ऐक्ट लगान मगर्बी व	ऐक्ट मालगुज़ारी मगर्बी
३ भाग	भोजप्रबन्धसार	मंगलकोष	उत्तरकांड	शिमाली १० सन् १८५९ ई०	व शिमाली १९ स० १८७३ ई०
धात्वर्णव	राजनीति	अंकप्रकाश	गुटका	इंडियन पिनल कोर्ट	तरमीम मज़मूआ जाब्ता फ़ौ-
नागरी व कैथी	भाषालघुव्याकरण	गणितप्रकाश १ भाग	१ भाग	मजमूआ ज़ाबिता फ़ौज-	जदारी ११ स० १८७४ ई०
	तथा २ भाग	तथा २ भाग	२ भाग	दारी ऐक्ट २५ सन् १८६१ ई०	तकावीके क़ायदे-
वर्णमाला कैथी	भाषातत्त्वदीपिका	तथा ३ भाग	३ भाग	ऐक्ट इस्टाम्प १ सन् १८६२ ई०	सवाल जवाब पुलिस
१ भाग तथा २ भाग	भाषाचन्द्रोदय	तथा ४ भाग	हिदायतनामा मुदर्रिसान	ऐक्ट रजिस्टरी २८ स० १८६६ ई०	अवध रुहेल खण्ड रेल-
तथा कैथी फ़ारसी	भूगोलतत्त्व	गणितक्रिया	पशुचिकित्सा	ऐक्ट इस्टाम्प अदालत २६	वेका दस्तूरुल अमल
नागरी हरूफ़ मुफ़र्रदात	भूगोलदर्पण	क्षेत्रप्रकाश	पट्टा बखत कैथी	सन् १८ [illegible]	





